क्या
आप जानते
हैं?
सैय्यद शाह आले रसूल हसनैन मियाँ बरकाती
नज़्मी मारहरवी

किताब को पढ़ने से पहले
इस किताब को स्कैन करने वाले
और इस काम मे हिस्सा लेने वालो के हक़ में

दुआ फरमाएं

अल्लाह अज़्ज़वजल हमारे तमाम
सगीरा व क़बीरा गुनाहों को मुआफ़ फ़रमाये
और ईमान पर इस्तेक़ामत अता फ़रमाये!

PDF BY:
Muhammad
Qamar Raza Hanfi
+917987647363

عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَالَمْ يَعْلَمْ۔

(इन्सान को सिखाया जो वह नहीं जानता था. अल-कुरआन)

क्या आप जानते हैं?

(इस्लामी मालूमात की इन्साइक्लोपीडिया)

लेखक

सैय्यिद शाह आले रसूल हसनैन मियाँ बरकाती

नज़्मी मारेहरवी

सज्जादा नशीन व मुतवल्ली

दरगाहे बरकातिया नूरिया अमीरिया, मारेहरा शरीफ

प्रस्तुति

बज़्मे बरकाते आले मुस्तफ़ा (रजिस्टर्ड)

मुंबई

नाम किताब: क्या आप जानते हैं?
लेखक : सैय्यिद शाह आले रसूल हसनैन मियाँ बरकाती नज़्मी मारेहरवी
इशाअ़ते जदीद: मुहर्रमुल हराम १४३६हि / २०१४
कंपोज़िंग : मुहम्मद ज़ुबैर क़ादरी (9867934085)
सफ़हात : 656
क़ीमत :

तक़सीम कार

फ़ारूक़िया बुक डिपो
मटिया महल, जामा मस्जिद, देहली-६

फ़ेहरिस्त

इन्तेसाब

ऐ अल्लाह! मैं ने इस किताब में जो कुछ लिखा है इस का सवाब मेरे वालिदे माजिद मुरशिदे आलम, अलम बरदारे मस्लके बरकातियत, ताजदारे मारेहरा, नाशिरे फ़िक्रे आला हज़रत, दुरवेशे कामिल, वारिसे हफ़्त अक़ताब मारेहरा मुत्तहरा मौलाना मौलवी हाफ़िज़ क़ारी मुफ़्ती हकीम अलहाज सैय्यिद शाह आले मुस्तफ़ा सैय्यिद मियाँ क़ादरी बरकाती नूरी क़ासमी रहमतुल्लाह अलैहि और मेरी वालिदा माजिदा ख़ानदाने बरकात की सरताज दुल्हन रहमतुल्लाह अलैहा को अता फ़रमा और इस किताब को कल मैदाने महशर में मेरे लिये मेरे गुनाहों की बख़्शिश का ज़रिया बना दे। या अल्लाह या रहमान या रहीम! इस किताब की तरतीब में जाने अन्जाने में जो ग़लती हुई हो उसे अपने हबीबे मुकर्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदक़े व तुफ़ैल में माफ़ फ़रमा। इस किताब की तय्यारी और इशाअत के सिलसिले में जिन जिन लोगों ने मेरी मदद की है उन्हें अज्रे अज़ीम अता फ़रमा। आमीन या रब्बल आलमीन बिजाहिन् नबिय्यिल अमीनिल-करीमि अलैहि व अला आलिहि अफ्ज़लुस्-सलातु वत्तसलीम व सल्लल्लाहु तआला अला ख़ैरि ख़लक़िह सैय्यिदिना मुहम्मदिवं व अला आलिही वसह्बिहि अजमईन वबारिक वसल्लम।

सैय्यिद शाह आले रसूल हसनैन मियाँ बरकाती नज़्मी मारेहरवी
सज्जादा नशीन व मुतवल्ली, दरगाहे बरकातिया नूरिया अमीरिया,
मारेहरा मुत्तहरा, ज़िला एटा (यूपी)
हाल मुक़ीमः मुंबई
१२ रबीउन्नूर १४३१ हिजरी

प्रस्तावना

बिस्मिल्ला-हिर रहमा-निर्रहीम

नह्मदुहू व नुसल्ली व नुसल्लिमु अ़ला रसूलिहिल करीम अ़लैहि व अ़ला आलिही व सहबिही अफ्ज़लुस्-सलाते वत्तस्लीम.

यह आज से लगभग चालीस साल पहले की बात है। कानपुर से अहले सुन्नत व जमाअ़त का एक रिसाला इस्तिक़ामत डायजेस्ट नाम से हर माह पाबन्दी से निकलता था। इसके सम्पादक (एडीटर) मरहूम ज़हीरुद्दीन साहिब क़ादरी बरकाती ने मुझ से फ़रमाइश की कि मैं उनके रिसाले के लिये कुछ लिखूँ। मैं सोच में पड़ गया कि क्या लिखूँ? मेरा मुआ़मला यह है कि मैं आम रविश से हट कर काम करना चाहता हूँ। रिसालों में अलग अलग विषयों पर बहुत से लेखक छपते रहते हैं। तीन चार पन्नों में एक ही विषय पर मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में रौशनी डाली जाती है। मैं ने सोचा क्यों न ऐसा सिलसिला शुरू करूं कि लोगों को कम से कम मेहनत में ज़्यादा से ज़्यादा मालूमात हासिल हो।

उन दिनों मैं भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के पत्र सूचना कार्यालय में काम करता था। हमारे विभाग से समाचार पत्रों के लिये एक ख़ुसूसी सेवा शुरू की गई थी, जिस का शीर्षक था **क्या आप जानते हैं?** इस सेवा के अन्तर्गत अवाम के फ़ायदे के लिये किसी एक विषय के बारे में मुख़्तलिफ़ मालूमात सिर्फ़ एक या दो पन्नों में पेश की जाती थी। मैं ने यही शीर्षक अपनाया और ऐसी इस्लामी मालूमात इकट्ठी करनी शुरू कीं जो आम तौर पर लोगों की जानकारी में नहीं हैं या फिर दीन की बड़ी बड़ी किताबों में मौजूद हैं, जिन्हें ख़रीद कर पढ़ना आम आदमी के बस की बात नहीं है। मेरे काम करने का तरीक़ा यह था कि मैं एक दीनी किताब चुन लेता और काग़ज़ क़लम लेकर बैठ जाता। एक एक पन्ना पढ़ता जाता और उस एक पन्ने में कोई अनोखा नुक्ता नज़र आता तो उसे नोट कर लेता। इस सिलसिले में मुझे बड़ी अजीब और चौंका देने वाली बातें पढ़ने को मिलीं। इस्तिक़ामत डायजेस्ट में मेरा यह पन्ना इतना मक़बूल हुआ कि लोगों के ख़त आने लगे। कुछ लोग सिर्फ़ एक पन्ने के लिये रिसाला ख़रीदते थे। कोई दस बारह साल तक यह सिलसिला चला, फिर मेरी मस्रूफ़ियत बढ़ गई। इस बीच इस्तिक़ामत डायजेस्ट का रूप भी बदल गया। उस वक़्त तक यह डायजेस्ट सुन्नी दुनिया का नम्बर वन रिसाला बन चुका था। उन्ही दिनों हाफ़िज़ साहिब मरहूम इंगलैंड के दौरे पर गए। यहाँ किसी मेहरबान ने हाफ़िज़ साहिब मरहूम को यह सलाह दी कि इस रिसाले को अंग्रेज़ी में भी निकाला जाए। हाफ़िज़ साहिब की नियत तो

अच्छी थी मगर इस को क्या किया जाए कि उन्हें अंग्रेज़ी रिसाले के लिये बा-सलाहियत आदमी नहीं मिल पाए। नतीजा यह हुआ कि ग़लत सलत अंग्रेज़ी ने रिसाले का हुलिया ही बिगाड़ कर रख दिया। रिसाले की साख पर बुरा असर पड़ा, जग हंसाई हुई सो अलग। कुछ अर्से बाद वह डायजेस्ट छपना ही बन्द हो गया।

मगर मेरे मुतालए का सिलसिला बन्द नहीं हुआ। क्या आप जानते हैं का पन्ना इतना लोक प्रिय हुआ कि मुल्क के दूसरे अख़बारों और रिसालों में इसके समान्तर शीर्षकों के अन्तर्गत मज़मून छपने लगे, किसी ने शीर्षक दिया: क्या आप नहीं जानते, किसी ने लिखा: इस्लामी हैरत अंगेज़ मालूमात वग़ैरह वग़ैरह

मैं ने अपने तीसरे नअ़तिया दीवान "तनवीरे मुस्तफ़ा" में नअ़तों के साथ साथ इस्लामी मालूमात का यह ज़ख़ीरा भी थोड़ा बहुत शामिल किया जिसे काफ़ी सराहा गया। अगले दीवान "इरफ़ाने मुस्तफ़ा" में क्या आप जानते हैं के शीर्षक से कुछ ज़्यादा मालूमात शामिल की गई और पाँचवें दीवान "नवाज़िशे मुस्तफ़ा" में हर नअ़त के बाद एक पन्ना इन मालूमात का रखा गया। मेरे पढ़ने वालों ने इस तरीक़े को बहुत पसन्द किया। यहाँ से मुझे प्रेरणा मिली कि मैं अपने इस ख़ज़ाने को किताबी शकल दूँ। मेरे कुछ करम फ़रमा अह्बाब ने यह ज़ोर दिया कि मैं इस किताब को ज़रूर छपवाऊं ताकि इसे हमारे सुन्नी मदरसों के निसाब में शामिल किया जा सके। तजवीज़ अच्छी थी इस लिये मैं ने काम शुरू कर दिया। मालूमात को तरतीब देने का भी और इस किताब को छपवाने के लिये अपनी तन्ख़्वाह में से हर माह पैसे बचाने का भी। मज़ामीन काफ़ी बिखरे हुए थे, उन्हें अलग अलग अध्याय की शक्ल में तरतीब देने में काफ़ी मेहनत करनी पड़ी। मेरी इस मेहनत का सुबूत मेरे पाठकों को अगले पन्नों में मिल जाएगा।

क्या आप जानते हैं का उर्दू रूप बाज़ार में आया और इतना मक़बूल हुआ कि इसके एक के बाद एक कई एडीशन छापने पड़े। मेरे चाहने वालों ने मेरी इस किताब को ज्यों का त्यों क़ुबूल कर लिया। मगर जो लोग मुझे नहीं जानते थे उन्हों ने मुझे ख़त लिखे कि आप ने इस किताब में मालूमात तो बहुत उमदा जमा की हैं मगर हवाले नहीं दिये हैं। जिन दिनों मैं यह मालूमात जमा कर रहा था, उन दिनों मुझ से यह भूल ज़रूर हुई कि जिस किताब से जो मालूमात उठाई थीं उस किताब का नाम भी लिख लेता। इस ज़रा सी भूल के लिये मुझे फिर नए सिरे से मेहनत करनी पड़ी और फिर से अपनी

लायब्रेरी खंगालनी पड़ी ताकि हवाले तलाश कर सकूँ। जो लोग मुझे जानते हैं वह मेरी इस आदत से वाकिफ़ हैं कि मैं अपने क़लम से कोई ऐसी बात नहीं लिखता जो किसी मरहले पर क़ाबिले गिरफ़्त हो। मैं ने इस किताब की तरतीब में भी यही कोशिश की है कि जो कुछ लिखूँ वह पूरी ज़िम्मेदारी के साथ लिखूँ। सही और मुस्तनद स्रोत से लिखूँ। उलमाए किराम यह फ़ैसला अच्छी तरह कर सकते हैं कि इस किताब में जो कुछ है वह बड़ी किताबों से लिया गया है।

मैं ने अपनी हद भर कोशिश की है कि इस किताब में कोई मतभेद वाली बात न लिखूँ, फिर भी अगर किसी पाठक को इन पन्नों में कोई आपत्तिजनक बात नज़र आए तो वह मुझे उसकी सूचना ज़रूर दें। अगर किसी की इस्लाह से मेरी आक़िबत सुधर सके तो वह मेरी खुश नसीबी होगी।

मैं ने कोशिश तो यही की है कि अपनी ज़बान सरल और सबकी समझ में आने वाली रखूं ताकि मेरे लिखे हुए का मज़ा हर व्यक्ति उठा सके। फिर भी कहीं कहीं आप को मेरी भाषा कुछ ज़्यादा गाढ़ी लगे तो इस के लिये मुझे माफ़ कर दीजियेगा कि शायद वह गाढ़ा पन उस मज़मून की मुनासिबत से हो।

मैं ने इस किताब को हिन्दी ज़बान में इस लिये पेश किया है ताकि हमारी नई नस्ल जो उर्दू ज़बान से तक़रीबन अनजान है वह भी इसे पढ़ सके और अपनी मालूमात में इज़ाफ़ा कर सके। हिन्दी रूपान्तर करते समय मैं ने अस्ल किताब के रूप में कुछ तब्दीली की है। कुछ अध्याय बढ़ाए हैं, साथ ही मालूमात में भी ख़ासा इज़ाफ़ा किया है। मेरा यह दावा आज भी बरक़रार है कि यह किताब आप को एक भरी पुरी लायब्रेरी का मज़ा देगी। अल्लाह तआला मेरी इस ख़िदमत को क़ुबूल फ़रमाए और इसे मेरी और मेरे परिवार की मग़फ़िरत का ज़रिया बनाए। आमीन

ये प्रस्तावना मैं ने आज से पाँच साल पहले उस वक़्त लिखी थी जब क्या आप जानते हैं का हिन्दी रूप छपने के लिये जा रहा था। क्या आप जानते हैं (हिंदी) भी सुन्नी हल्क़ों में बेहद मक़बूल हुआ। लेकिन इन्सान किसी एक चीज़ पर टिक कर नहीं बैठता। अब लोगों की यह फ़रमाइश शुरू हुई कि उर्दू किताब पर नज़्रे सानी की जाए और उसे हिन्दी रूप जैसा हवालों से भरपूर बना कर छापा जाए। यह ज़िम्मेदारी भी मैं ने अपने कन्धों पर ले ली और फिर से मेहनत करके हिन्दी और उर्दू दोनों किताबों पर नज़्रे सानी की। पुरानी ग़लतियाँ सुधारीं। नए सिरे से किताब को तरतीब दिया। बहुत सी बातें बढ़ाईं। और इस तरह यह दोनों किताबें नए रूप में आप की ख़िदमत में पेश

करने की सआदत हासिल कर रहा हूँ। अब यह किताब अपने मौजूदा रूप में एक ही वक़्त में कुरआन और हदीस की मआलूमात का डायजेस्ट (मजमूआ) भी है, तारीख़ भी है, सीरत की किताब भी और फ़िक़्ही मसाइल का ज़ख़ीरा भी। अल्लाह तआ़ला मेरी यह मेहनत कुबूल फ़रमाए। आमीन

आप की दुआ़ओं का तलब गार

नज़्मी

पहला अध्याय

नूरे मुहम्मदी, ख़िल्क व खुल्के मुस्तफ़ा और मरतबए नबुव्वत

१) ख़ालिके कायनात जल्ला जलालहू ने सब से पहले नूरे मुहम्मदी तख़्लीक फ़रमाया। ह़दीस शरीफ़ में है: अव्वला मा ख़लकल्लाहु नूरी यानी अल्लाह तआ़ला ने सब से पहले मेरा नर बनाया। एक दूसरी हदीस में नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: अना मिन नूरिल्लाहि वल ख़लक़ा कुल्लुहुम मिन नूरी। यानी मैं अल्लाह तआ़ला के नूर से हूँ और कायनात की सारी चीज़ें मेरे नूर से बनाई गई हैं। (सीरते रसूले अ़रबी, लेखक अल्लामा नूर बख़्श तवक्कुली)

२) हज़रत जाबिर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ जाबिर, बेशक अल्लाह तआ़ला ने सब चीज़ों से पहले अपने नूर से तेरे नबी के नूर को पैदा फ़रमाया। पैदाइश के बाद यह नूर अल्लाह ने जहाँ चाहा दौरा करता रहा। उस वक़्त न लौह थी न कलम, न जन्नत न दोज़ख, न सूरज न चाँद, न इन्सान न जिन्न। इस के बाद इसी नूर से तमाम मख़लूक़ की आफ़रीनश की तफ़सील है। (शरहुल मवाहिब ज़ुरक़ानी, मुहम्मद बिन हुसैन बिन मसऊद बग़वी)

३) अल्लाह तआ़ला ने पहले अपने नूर से अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूर बनाया, फिर जब आ़लम को पैदा करना चाहा तो इस नूर के चार ह़िस्से किये, पहले से क़लम, दूसरे से लौह, तीसरे से अ़र्श बनाया और फिर चौथे टुकड़े के चार हिस्से किये और इन से अ़र्श व कुर्सी उठाने वाले मलाइका और बाक़ी फ़रिश्ते पैदा किये। (सीरते रसूले अ़रबी)

४) हज़रत कअ़ब अहबार से मन्कूल है कि जब अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमको पैदा करना चाहा तो जिब्रईल अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि सफ़ेद मिट्टी लाओ। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम जन्नत के फ़रिश्तों के साथ उतरे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र शरीफ़ की जगह से मुट्ठी भर सफ़ेद चमकती दमकती ख़ाक उठा लाए और फिर वह मुट्ठी भर ख़ाक जन्नत के चश्मए तस्नीम से गूंधी गई यहाँ तक कि सफ़ेद मोती की तरह हो गई जिसकी बड़ी किरन थी। इसके बाद फ़रिश्ते उसे लेकर अ़र्श और कुर्सी के चारों तरफ़ और आसमान और ज़मीन में फिरे यहाँ तक कि तमाम फ़रिश्तों ने आप की रूहे अनवर और माद्दए अतहर को आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से पहले पहचान लिया। (सीरते रसूले अ़रबी)

५) एक रिवायत में आया है कि मौलाए करीम सुब्हानहु व तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नूर को हज़रज आदम अलैहिस्सलाम के अंगूठों के नाखुनों में आईने की तरह चमकाया। उन्होंने देखते ही अंगूठों को चूम लिया और आँखों पर मसह किया। (सीरते रसूले अरबी)

६) अल्लाह तआ़ला ने हज़रते आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से दो हज़ार साल पहले हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम अपने नाम के साथ लिखा। (सीरते रसूले अ़रबी)

७) मुस्लिम शरीफ़ में हज़रते जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि सय्यिदे आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं उस पत्थर को पहचानता हूँ जो मेरे नबी बना कर भेजे जाने से पहले मुझे सलाम किया करता था। (सही मुस्लिम)

८) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला ने तख़्लीके कायनात से दो हज़ार साल पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम मुहम्मद रखा। (सीरते रसूले अ़रबी)

९) रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइश से कुछ अर्सा पहले आप को ख़्वाब में देखा कि एक सोने की ज़न्जीर आप की पीठ से निकली कि ज़मीन में एक तरफ़ मश्रिक़ में है और एक तरफ़ मग़रिब में है और इसके बाद वह ज़न्जीर एक दरख़्त हो गई कि इसकी पत्तियों पर ऐसा नूर है कि सूरज से सत्तर दर्जे ज़्यादा चमक रहा है कि वैसा नूर उन्हों ने कभी नहीं देखा था और इस नूर की किरनें हर लम्हा बढ़ती जा रही थीं और मश्रिक़ और मग़रिब वाले इस दरख़्त से लिपटे हुए हैं और अ़रब और अजम के लोग इसे सज्दा कर रहे हैं और कुरैश के कुछ लोग इस के साथ लटके हुए हैं और कुरैश के ही कुछ लोग इसे काटना चाहते हैं। जब इस के पास आते हैं तो एक ह़सीन जवान उन्हें पकड़ कर उन की पीठें तोड़ डालता है और उन की आँखें फोड़ डालता है। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने यह ख़्वाब कुरैश की एक जादू टोना करने वाली औरत से बयान किया। उस ने तअ़बीर बताई कि तेरी पीठ से एक लड़का पैदा होगा कि मश्रिक़ और मग़रिब के रहने वाले उस के मुरीद होंगे और ज़मीन व आसमान के रहने वाले उसकी ह़म्द करेंगे। इसी वजह से हज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब ने आप का नाम मुहम्मद रखा। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (नुज्हतुल क़ारी शरह बुख़ारी, मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ बरकाती रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि)

१०) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कअ़बे का कअ़बा हैं इसी लिये आप

की विलादत पर कअ़बए मुअ़ज़्ज़मा ने हज़रत बीबी आमिना ख़ातून के मकान या मक़ामे इब्राहीम की तरफ़ सज्दा किया था। (मदारिजुन नबुव्वत, अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी)

११) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वालिदा माजिदा हज़रत आमिना रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं: मुझे पता ही न चला कि मैं हामिला हो गई हूँ। न ही मुझे कोई बोझ महसूस हुआ जो इन हालात में आ़म औरतों को महसूस होता है। मुझे सिर्फ़ इतना मालूम हुआ कि मेरे माहवारी के दिन बन्द हो गए हैं। एक दिन मैं ख़्वाब और बेदारी के बीच में थी कि कोई आने वाला मेरे पास आया और उस ने पूछा: आमिना तुझे मालूम है कि तू हामिला है। मैं ने कहा: नहीं। फिर उस ने मुझे बताया: तुम हामिला हो और तुमहारे बत्न में इस उम्मत का सरदार और नबी तशरीफ़ फ़रमा हुआ है। जिस दिन यह वाक़िआ पेश आया वह पीर का दिन था। (अल-वफ़ा, इब्ने जौज़ी, जि:१, पन्ना:८८)

१२) कअ़ब अहबार कहते हैं: मैंने तौरात शरीफ़ में देखा कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत के वक़्त से आगाह किया था और मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को वह निशानी बता दी थी। आप ने फ़रमाया था: वह सितारा जो तुम्हारे नज़्दीक फ़ुलाँ नाम से मशहूर है जब अपनी जगह से हरकत करेगा वही वक़्त मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत का वक़्त होगा और यह बात बनी इस्राईल में ऐसी आम थी कि उनके उलमा एक दूसरे को बताते थे और अपनी आने वाली नस्ल को इस की ख़बर देते थे। (अस्सीरतुन नबविय्या, अहमद बिन ज़ैनी दिहलान, जिल्द: १)

१३) फ़र्शे ज़मीन का वह मक़ाम जो अल्लाह तआला के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दमे नाज़ को सबसे पहले बोसा देकर अ़र्श का पाया बना वह हज़रत अक़ील बिन अबी तालिब और उन की औलाद की मिल्कियत में रहा। फिर हज्जाज के भाई मुहम्मद बिन यूसुफ़ सक़फ़ी ने एक लाख दीनार क़ीमत अदा करके उसे ख़रीद लिया और इस जगह को अपने मकान का हिस्सा बना लिया। चूंकि यह मकान सफ़ेद चूने से बना हुआ था और इस पर पलस्तर भी सफ़ेद चूने का था इस लिये इसे अल-बैदा कहा जाता था। यह अर्से तक दारे इब्ने यूसुफ़ के तौर पर मशहूर रहा। हारून राशीद के दौरे ख़िलाफ़त में उसकी बीवी ज़ुबैदा ख़ातून हज के लिये मक्कए मुकर्रमा हाज़िर हुई तो उस ने यह मकान ख़रीद कर उस की जगह एक मस्जिद तअ़मीर करा दी। सऊदी दौर में यहाँ एक दारुल हदीस बना दिया गया। आज कल यहाँ

लाइब्रेरी है जो कभी कभी खुलती है वरना अकसर बन्द रहती है। (ज़ियाउन्नबी, जिल्दः २, पीर करम अली शाह अज़हरी)

१४) इमाम अल्लामा अबुल फ़रज अब्दुर्रहमान बिन जौज़ी लिखते हैं कि सब से पहले अर्बिल के बादशाह अल मलिकुल मुज़फ़्फ़र अबू सईद ने मीलादुन्नबी की महफ़िल की शुरूआत की। उस ज़माने के मशहूर मुहद्दिस हाफ़िज़ इब्ने दिहया ने ख़ास इस मक़सद के लिये एक मीलाद नामा अत्तनवीर फ़ी मौलिदिल बशीरिन्नज़ीर तहरीर किया। बादशाह अबू सईद ने उन्हें एक हज़ार अशरफ़ी इनाम के तौर पर पेश की। (ज़ियाउन्नबी, जिल्दः २)

१५) सिब्त इब्नुल जौज़ी ने अपनी किताब मिरातुज्ज़मान में उस दावत का ज़िक्र किया है जो मलिक मुज़फ़्फ़र मीलाद शरीफ़ के मौक़े पर किया करता था। एक शख़्स जो उस दावत में शरीक था बयान करता है कि मैंने भेड़ बकरियों के पाँच हज़ार सर, दस हज़ार मुर्ग़ियां, फ़ीरीनी के एक लाख सकोरे और हलवे के तीस हज़ार थाल खुद देखे। इस तक़रीब पर मलिक मुज़फ़्फ़र तीन लाख दीनार ख़र्च करता था। (मुहम्मद रसूलुल्लाह, अल्लामा मोहम्मद रज़ा)

१६) हज़रत इकरमा से मरवी है कि जिस दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत हुई तो इब्लीस ने देखा कि आसमान से तारे गिर रहे हैं। उस ने अपनी ज़ुर्रियत से कहाः रात को वह पैदा हुआ है जो हमारे निज़ाम को दरहम बरहम कर देगा। उसके लश्करियों ने कहाः तुम उस के क़रीब जाओ और उसे छूकर जुनून में मुब्तिला करदो। जब इब्लीस इस नियत से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़रीब जाने लगा तो हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने उसे ठोकर लगाई और दूर अदन में फेंक दिया। (अस्सीरतुन-नबविय्या, ज़ैनी दिहलान, जिल्दः १)

१७) रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत से पहले यह बात मशहूर हो चुकी थी कि नबी आख़िरुज्ज़माँ की विलादत का ज़माना क़रीब आ गया है और उन का इस्मे गिरामी मुहम्मद होगा। कई लोगों ने इस आरज़ू में अपने बच्चों के नाम मुहम्मद रखे कि शायद यह सआदत उन के हिस्से में आए। अल्लामा इब्ने सय्यिदुन नास ने छः ऐसे बच्चों के नाम गिनाए हैं जो इस नाम से मौसूम हुए। वह यह हैं: (१) मुहम्मद बिन औहीहा बिन अलजलाह अलऊसी (२) मुहम्मद बिन मुस्लिमा अन्सारी (३) मुहम्मद बिन बरा अलबकरी (४) मुहम्मद बिन सुफ़ियान बिन मुजाशअ (५) मुहम्मद बिन हमरान अलजअफ़ी (६) मुहम्मद ख़ुज़ाई अस्सलमी। (उयूनुल असर, जिल्दः १)

१८) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सब से पहले आप की

वालिदा माजिदा सय्यिदा आमिना ने दूध पिलाया, फिर यह शर्फ़ अबू लहब की लौंडी स्वैबा को नसीब हुआ। जिन दूसरी ख़ुश नसीब ख़्वातीन ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दूध पिलाने की सआ़दत हासिल की उन में ख़ूला बिन्ते मुन्ज़िर, उम्मे ऐमन, हलीमा सअ़दिया और बनी सअद की एक और ख़ातून शामिल है। सब से ज़्यादा यह शर्फ़ हलीमा सअदिया के हिस्से में आया। उन्हों ने लगातार दो साल तक यह ख़िदमत अन्जाम दी (अस्सीरतुन-नबविय्या, ज़ैनी दिहलान)

१६) एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने एक सहाबी को देखा कि वह किसी को यह कह कर शर्म दिला रहे थेः ऐ काली माँ के बेटे। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बड़े ग़ुस्से से फ़रमायाः पैमाना छलक गया, किसी सफ़ेद रंग वाली माँ के बेटे को किसी सियाह रंग वाली माँ के बेटे पर कोई फ़ज़ीलत नहीं, सिवाए तक़्वा के। पस मुहम्मद सफ़ेद रंग वाली माँ का बेटा है उस की परवरिश काले रंग वाली माँ (उम्मे ऐमन) ने की है। वह बएक वक़्त इन दोनों का बेटा है। (ख़ातिमुन नबीय्यीन, जिल्दः १)

२०) रूह की तरक़्क़ी के नौ दर्जे हैंः (१) मोमिन, (२) आ़बिद, (३) ज़ाहिद, (४) आ़रिफ़, (५) वली, (६) नबी, (७) मुरसल, (८) उलुल अ़ज़्म और (६) ख़ातिम। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में यह कुल दर्जे जमा हैं मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मर्तबा किसी में नहीं। (तफ़सीरे नईमी, मुफ़्ती अहमद यार ख़ाँ)

२१) ज़ुहूरे नबुव्वत की शरूआ़त रूयाए सादिक़ा यानी सच्चे ख़्वाबों से हुई जिनकी मुद्दत ६ माह थी। सूरए इक़रा का नुज़ूल रमज़ान शरीफ़ में हुआ। इस तरह साबित हुआ कि सच्चे ख़्वाबों की शुरूआत रबीउल अव्वल शरीफ़ से हुई। इस तरह रबीउल अव्वल को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते पाक से चार ख़ुसूसियात हासिल हुईंः विलादत, ज़ुहूरे नबुव्वत, तकमीले हिजरत और विसाल। (तफ़सीरे नईमी)

२२) इमाम शअ़बी ने फ़रमाया कि बिअ़सते अक़दस के शुरू के तीन साल हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम वही लाने की ख़िदमत पर मामूर थे, फ़िर यह ख़िदमत हज़रत जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम को सौंपी गई। उन्हीं की विसातत से पूरा क़ुरआन नाज़िल हुआ। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, मुअत्ता इमाम मालिक, मुस्नदे इमाम अहमद)

२३) हुज़ूर सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहले नींद में ६ माह लौहे मेहफ़ूज़ की सैर कराई गई, फिर २३ साल बेदारी में। २३ साल का ४६ वाँ हिस्सा ६ माह होता है। इसी लिये कहा गया है कि मोमिन का सच्चा

ख़्वाब नबुव्वत का ४६ वाँ हिस्सा होता है। (नुज्हतुल क़ारी)

२४) सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बिअ़सते अक़दस के बारहवें बरस मक्का शरीफ़ में क़ियाम के ज़माने में रजब की २७ वीं तारीख़ को दोशम्बे की रात में मेअ़राज हुई। (बुख़ारी शरीफ़)

२५) सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेअ़राज की शब मक्के से बैतुल मक़दिस तक बुराक़ पर, बैतुल मक़दिस से आसमाने दुनिया तक मेअ़राज (एक सीढ़ी) पर, वहाँ से सातवें आसमान तक फ़रिश्तों के परों पर और वहाँ से सिद्रतुल मुन्तहा तक हज़रते जिब्रईल के बाज़ू पर और सिद्रा से अर्श तक रफ़ रफ़ पर तशरीफ़ ले गए। नुज़ूल यानी वापसी भी इसी तरतीब से हुई। (बुख़ारी)

२६) शबे मेअ़राज हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़मीन पर अम्बियाए किराम की इमामत फ़रमाई और आसमानों पर फ़रिश्तों की। (सीरते रसूले अ़रबी)

२७) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मेअराज की शब सवारी के लिये जो बुराक़ अ़ता हुआ था वह गधे से कुछ बड़ा और ख़च्चर से कुछ छोटा था। चेहरा इन्सान का सा, दुम ऊंट की सी, खुर बैल के से और पीठ सफ़ेद मोती जैसे चमक रही थी। उस की रानों में दो पर थे। उस की लगाम जन्नत की हरीर की थी। (तफ़सीरे नईमी)

२८) शबे मेअ़राज नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बैतुल मक़दिस में तमाम रसूलों की इमामत फ़रमाई। यह कौन सी नमाज़ थी इसमें उलमा के दो क़ौल हैं। कुछ उलमा फ़रमाते हैं कि यह नमाज़ अ़र्श की तरफ़ परवाज़ करने से पहले बैतुल मक़दिस में पढ़ाई। उस सूरत में यह इशा की नमाज़ हुई। कुछ उलमा का क़ौल है कि सय्यिदुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सफ़रे मेअ़राज से वापसी पर यह नमाज़ पढ़ाई। उस सूरत में यह फ़ज्र की नमाज़ हुई। कुछ उलमा कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेअ़राज को जाते वक़्त और वहाँ से वापसी पर, दोनों वक़्त इमामत फ़रमाई। (तफ़सीरे नईमी)

२९) सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शबे मेअ़राज हक़ तआला से दस हज़ार कलिमे समाअ़त फ़रमाए। (सीरते रसूले अ़रबी)

३०) सय्यिदे आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वाक़ए मेअ़राज में फ़रमाया है कि मैंने हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम को मछली के पेट में देखा। (बुख़ारी)

३१) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़ुरआने मजीद में ११ जगह या अय्युहन नबिय्यु कह कर मुख़ातब फ़रमाया गया है। (क़ुरआन नम्बर, सय्यारा डाइजेस्ट)

३२) क़ुरआने अज़ीम में इस्मे मुहम्मद चार जगह आया है और इस्मे अहमद एक जगह। (क़ुरआन नम्बर, सय्यारा डाइजेस्ट)

३३) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअ़त मुतलक़न वाजिब है चाहे अक़्ल में आए या न आए। अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसा हुक्म दें जो हम को क़ुरआन के हुक्म से अलग मालूम हो तब भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअ़त लाज़िम है। (तफ़सीरे नईमी)

३४) ला इलाहा इल्लल्लाह में बारह हुरूफ़ हैं। इसी तरह मुहम्मदुर-रसूलुल्लाह, अबू बक्र सिद्दीक़, उमर इब्ने ख़त्ताब, उस्मान इब्ने अफ़्फ़ान, अली इब्ने अबी तालिब सब में बारह ही हुरूफ़ हैं। (तफ़सीरे नईमी)

३५) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना हर आक़िल व बालिग़ मुसलमान पर उम्र में एक बार फ़र्ज़ है। (बुख़ारी शरीफ़)

३६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे पास जिब्रईल, मीकाईल, इस्राफ़ील, और इज़्राईल अलैहिमुस्सलाम आए। जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जो आप पर दुरूद भेजेगा मैं उस का हाथ पकड़ कर पुले सिरात से उतारूंगा। मीकाईल अलैहिस्सलाम ने कहा कि मैं आप के हौज़े कौसर से उसे पानी पिलाऊंगा। इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम ने कहा कि मैं अल्लाह के सामने सज्दा करूंगा और जब तक उसकी मग़फ़िरत न होगी सज्दे से सर न उठाऊंगा। इज़्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा कि मैं उस की रूह इस तरह निकालूंगा जिस तरह अम्बिया की। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

३७) हदीस शरीफ़ में है कि जिस शख़्स ने मेरा नाम अज़ान में सुना और मुहब्बज से अंगूठे चूम लिये और चूम कर आँखो पर मले, वह कभी अंधा न होगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

३८) आज कल अक्सर लोग हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नामे मुबारक के साथ सलअ़म, अ़म, और दूसरे निशान लगाते हैं। इमाम जलालुद्दीन सियूती रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि पहला वह शख़्स कि जिसने दुरूद शरीफ़ का ऐसा इख़्तिसार किया उसका हाथ काटा गया। अल्लामा तहावी का क़ौल है कि नामे मुबारक के साथ दुरूद का ऐसा इख़्तिसार लिखने वाला काफ़िर हो जाता है क्योंकि अमबियाए किराम की शान को हलका करना कुफ़्र है। (नुज़हतुल क़ारी)

३९) क़ुअदए अख़ीरा में तशह्हुद (अत्तहियात) के बाद दुरूद शरीफ़ पढ़ना सारे उलमा के नज़्दीक सुन्नत है मगर इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक फ़र्ज़ है। दुरूद पढ़े बिना सलाम फेर दिया तो नमाज़ नहीं होगी। (तफ़सीरे नईमी)

४०) इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक क़अदए अख़ीरा में अत्तहिय्यात के बाद सलाम फेरा जा सकता है। (तफ़सीरे नईमी)

४१) एक शख़्स हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे पाक लिखता तो उस के साथ सल्लल्लाहु अलैहि लिखता वसल्लम न लिखता। ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़्वाब में उसपर इताब फ़रमाया कि तू खुद को ४० नेअमतों से महरूम रखता है, यानी लफ़्ज़ वसल्लम में चार हुरूफ़ हैं और हर हर्फ़ के बदले दस नेकियाँ है, लिहाज़ा इस हिसाब से चालीस नेकियाँ होती हैं। (तफ़सीरे नईमी)

४२) हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि जज़्बुल क़ुलूब में फ़रमाते हैं कि एक शख़्स काग़ज़ की बचत के ख़्याल से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नामे पाक के साथ दुरूद नहीं लिखता था तो उस का हाथ सड़ने लगा। (सीरते रसूले अरबी, अल्लामा नूर बख़्श तवक्कुली)

४३) मसनवी शरीफ़ में है कि एक बार सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शहद की मक्खी से पूछा कि तू शहद कैसे बनाती है? उसने अर्ज़ किया: या हबीबल्लाह, हम चमन में जाकर तरह तरह के फूलों का रस चूसते हैं फिर उसे मुंह में लिये अपने छत्ते तक आते हैं और वह उगल देते हैं, वही शहद है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: फूलों का रस फ़ीका और कसीला होता है और शहद मीठा, यह मिठास कहाँ से आती है? शहद की मक्खी ने अर्ज़ किया कि हम चमन से लेकर अपने छत्ते तक रासते भर आप पर दुरूद पढ़ते आते हैं उसी की बरकत से शहद में लज़्ज़त और मिठास पैदा होती है।

४४) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़ाती नाम दो हैं: मुहम्मद और अहमद। बाक़ी सिफ़ाती नाम २०१ हैं और मदारिजुन नबुव्वत की रिवायत के मुताबिक़ एक हज़ार हैं। (तफ़सीरे नईमी)

४५) जिस दस्तरख़्वान पर मुहम्मद नाम का मुसलमान मौजूद हो उस खाने में बड़ी बरकत होती है। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

४६) एक इस्राईली सौ बरस का गुनहगार था। मरने के बाद लोगों ने उसे घूरे पर डाल दिया। रब तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को वही की कि मेरे इस बन्दे को ग़ुस्ल, कफ़न, नमाज़ के बाद दफ़्न करो। उसने एक बार तौरात में मुहम्मद नाम देखकर उसे चूमा था और आँखों से लगाया था। हमने उसके गुनाह माफ़ कर दिये। (रूहुल बयान)

४७) जिस शख़्स के लड़कियाँ ही होती हों और बेटा न हो, वह गर्भ के शुरू में अपनी बीवी के पेट पर उंगली से लिख दिया करे: जो इस पेट में है

उस का नाम मुहम्मद है। इन-शा अल्लाह बेटा ही होगा। मगर यह अमल
हमल के चार माह के अन्दर चालीस रोज़ तक करे। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

४८) सय्यिदुना फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ कीः या
रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला आप को कितना चाहता है कि आप के शहरे पाक
के ख़स व ख़ाशाक की भी क़समें याद फ़रमाता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि
वसल्लम ने फ़रमायाः तुम ने यह कैसे जाना? अर्ज़ कीः आप के शहर की
क़सम क़ुरआन ने याद फ़रमाई तो शहर के ख़स व ख़ाशाक और गली कूचे
भी तो इसी में हैं। (इब्ने असाकिर, तजल्ली अलयक़ीन)

४९) बाबा नानक ने इस्मे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में
फ़रमाया है कि किसी नाम के अदद निकाल कर उन्हें चौगुना करो और फिर
दो मिला कर पाँच गुना करो, फिर उसमें से बीस बीस निकालते जाओ। जब
इतने बचें कि बीस न निकल सकें तो उन्हें नौ गुना करो, दो और मिलाओ तो
९२ का अदद हासिल होगा जो सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्मे पाक
मुहम्मद का अदद है। (तफ़सीरे नईमी) नज्मी ने इस फ़ारमूले को अलग अलग
तरीक़ों से आज़माया है और बिल्कुल सही पाया है।

५०) उलमा फ़रमाते हैं कि दुरूद शरीफ़ में शिफ़ा है कि यह हमारी पहली
माँ हज़रते ह़व्वा रज़ियल्लाहु अन्हा का मेहर है। इसका वाक़िआ यूँ है कि एक
दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने हज़रते ह़व्वा से क़रीब होना चाहा।
अल्लाह तआला का हुक्म हुआः ऐ आदम, तुम ह़व्वा को उस वक्त तक छू
नहीं सकते जब तक कि उसका मेहर अदा न कर दो। हज़रत आदम
अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ कियाः ऐ रब, यह मेहर क्या है और कैसे अदा होगा?
जब कि मेरे पास तो कुछ भी नहीं। अल्लाह तआला ने फ़रमायाः तुम मेरे
ह़बीब पर १७ बार दुरूद भेजो, यही ह़व्वा का मेहर है। हज़रत आदम
अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ कियाः ऐ मेरे रब, मैं क्या दुरूद भेजूँ, तू ही मुझे
तअलीम फ़रमा। अल्लाह तआला ने फ़रमायाः यूँ कहो, अल्लाहुम्मा सल्ले अला
मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मद। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने यह दुरूद
पढ़ा तब हज़रत ह़व्वा से क़ुरबत की इजाज़त मिली। (तफ़सीरे नईमी)

५१) तफ़सीरे सावी में है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का
नामे पाक सुरियानी ज़बान में, जो तौरात की ज़बान है, मुनहामन्नुन है जिसके
मानी हैं मुहम्मद यानी तारीफ़ किया हुआ। ख़्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु
अन्हु ने कअ़ब अहबार से रिवायत की कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि
वसल्लम का इस्मे मुबारक अहले जन्नत के नज़्दीक अब्दुल करीम है, दोज़ख़ियों

की ज़बान पर अब्दुल जब्बार, अर्श वालों की ज़बान पर अ़ब्दुल मजीद, बाक़ी तमाम फ़रिश्तों की ज़बान पर अ़ब्दुल ह़मीद और सारे नबियों के यहाँ अब्दुल वहाब है। शयातीन की ज़बान पर अब्दुल क़ाहिर, जिन्नात की ज़बान पर अब्दुर रह़ीम, पहाड़ों पर अ़ब्दुल ख़ालिक़, ख़ुश्कियों में अब्दुल क़ादिर, दरियाओं में अब्दुल मुहैमिन, कीड़े मकोड़ों की ज़बान पर अ़ब्दुल ग़यास, वहशी जानवरों की ज़बान पर अब्दुर्रब, तौरात में मौज़ मौज़, इन्जील में ताब ताब, ज़बूर में फ़ारूक़, बाक़ी आसमानी सहीफ़ों में आक़िब है। रब के यहाँ त़ाहा और मुह़म्मद है। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (तफ़सीरे सावी)

५२) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इस्मे मुबारक आसमान पर अह़मद, ज़मीन पर मुहम्मद और ज़मीन के नीचे मेह़मूद है। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। (सीरते रसूले अ़रबी)

५३) सरकारे अब्दे क़रार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिस्मे अतहर और कपड़ों पर मक्खी नहीं बैठती थी। कुछ उलमाए अ़जम ने कहा है कि मुह़म्मदुर रसूलुल्लाह में बिना नुक़्ते वाला अक्षर हैं क्योंकि नुक़्ता मक्खी से मुशाबह होता है और अल्लाह तआ़ला ने आप के जिस्मे मुबारक के साथ साथ इस्मे पाक को भी इस मुशाबिहत से मेह़फ़ूज़ रखा है। (तवारीख़े ह़बीबे इलाह)

५४) लफ़्ज़ अल्लाह में भी चार हुरूफ़ हैं और लफ़्ज़ मुह़म्मद में भी। लफ़्ज़ अल्लाह में भी कोई नुक़्ता नहीं है और लफ़्ज़ मुह़म्मद में भी नहीं। जिस तरह़ ला इलाहा इल्लल्लाह में कोई नुक़्ता नहीं है उसी तरह मुह़म्मदुर रसूलुल्लाह में भी कोई नुक़्ता नहीं है। (तवारीख़े ह़बीबे इलाह)

५५) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कभी जमाही नहीं आई। (सीरते रसूले अ़रबी)

५६) असह़ाबे फ़ील का वाक़िआ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादते अक़दस से ५५ दिन पहले पेश आया था। (ज़ियाउन्नबी, जि: १)

५७) सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस वक़्त पैदा हुए, दोनों हाथ ज़मीन पर रखे, सरे मुबारक आसमान की तरफ़ उठाए हुए, बदन बिल्कुल पाक साफ़ और उससे कस्तूरी जैसी सुगन्ध निकलती हुई, ख़त्ना किये हुए, नाफ़ कटी हुई और आँखें क़ुदरते इलाही से सुरमा लगी हुई थीं। (नुज्हतुल क़ारी)

५८) इमाम अबू इस्ह़ाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपनी सीरत में हिशाम बिन अर्वह से यह रिवायत नक़्ल की है कि उनके वालिद ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को यह कहते सुना कि एक यहूदी तिजारत के लिये मक्कए मुकर्रमा में मुक़ीम था। जब नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत

की रात आई तो उसने कुरैश की एक मजलिस में आकर पूछाः क्या आज तुम्हारे यहाँ कोई बच्चा हुआ है? लोगों ने कहा हमें कोई इल्म नहीं। यहूदी ने हैरत से कहाः अल्लाहु अक्बर। फिर बोलाः तुम अपने घर वालों से इस बारे में ज़रूर पूछना और मेरी इस बात को मत भूलना कि आज की रात इस उम्मत का नबी पैदा हुआ है, उसकी निशानी यह है कि उसके दोनों कन्धों के बीच बालों का एक गुच्छा उगा हुआ होगा। लोग अपने अपने घर चले गए। हर एक ने अपने अपने घर जाकर पूछाः क्या कुरैश के किसी घर में आज कोई बच्चा पैदा हुआ है? पता चला कि आज अब्दुल्लाह इब्ने अब्दुल मुत्तलिब के घर एक बच्चा हुआ है जिसका नाम उन्हों ने मुहम्मद रखा है। वह लोग उस यहूदी के पास गए और उसे बताया कि उनके कबीले में एक बच्चा पैदा हुआ है। उसने कहाः मुझे वहाँ ले चलो मैं भी उस बच्चे को देखना चाहता हूँ। वह लोग हज़रत बीबी आमिना के घर आए और कहाः हमें अपना बच्चा दिखाइये। आप ने अपने नूरानी फ़रज़न्द को उनके सामने पेश किया। उस यहूदी ने बच्चे की पीठ से कपड़ा हटाया और बालों का उगा हुआ एक गुच्छा देखते ही बेहोश होकर गिर पड़ा। जब उसे होश आया तो लोगों ने उससे पूछाः तेरा ख़ाना ख़राब, तुझे क्या हो गया था? उसने बड़ी ही हसरत से कहा कि आज बनी इस्राईल के घराने से नबुव्वत रुख़सत हो गई। ऐ कुरैशियो, तुम्हें खुश ख़बरी कि यह नौ मौलूद तुम्हें बड़ी बलन्दी की तरफ़ ले जाएगा। मश्रिक और मग़रिब में तुम्हारे नाम की गूंज सुनाई देगी। (अस्सीरतुन नबविय्या, अहमद बिन ज़ैनी देहलान, जिः १)

५९) हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से पहले यहूद का यह तरीक़ा था कि जब कभी काफ़िरों और मुश्रिकों से जंग होती थी और उन्हें ऐसा महसूस होता कि वह जंग हार जाएंगे तो उस वक़्त तौरात को सामने रखते और वह जगह खोल कर, जहाँ हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफ़ात और कमालात का ज़िक्र होता, वहाँ हाथ रखते और यूँ दुआ मांगतेः ऐ खुदा हम तुझ से तेरे उस नबी का वास्ता देकर अर्ज़ करते हैं, जिस की बेअसत का तूने हम से वादा किया है, आज हमें अपने दुश्मनों पर फ़त्ह दे। अल्लाह तआला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदके में उन्हें फ़त्ह देता। (रूहुल मआनी, कुर्तबी)

६०) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में एक नया पैदा हुआ बच्चा लाया गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ बच्चे मैं कौन हूँ? उस एक दिन के बच्चे ने निहायत साफ़ ज़बान में कहाः आप अल्लाह के रसूल हैं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तू

सच कहता है, अल्लाह तुझे बरकत दे। बच्चे ने फिर कोई बात नहीं की।
अपने वक़्त पर बरस डेढ़ बरस के बाद बोलना शुरू किया। सब उसे मुबारक
यमामा कहते थे। यह वाक़िआ हज्जतुल वदाअ़ में हुआ। (गुल्दस्तए तरीक़त,
सय्यिद अब्दुल्लाह शाह साहब नक़्शबन्दी)

६१) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु की हाँडी में अपना पाक थूक डाल दिया था तो चार सेर जौ और तीन सेर गोश्त में दो हज़ार आदमियों ने खाना खाया और खाना भी ख़त्म नहीं हुआ। (सीरते रसूले अरबी)

६२) इमाम जलालुद्दीन सियूती रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपनी किताब ख़साइसे कुब्रा में हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक हज़ार मोअ़जिज़े गिनाए हैं। कुछ उलमा और मुहद्दिसीन ने लिखा है कि तीन हज़ार मोअ़जिज़े हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सादिर हुए। (तोहफ़तुल वाइज़ीन, मुहम्मद अब्दुल अहद)

६३) हिन्दुस्तान के दिया शहर के राजा ने अपने महल से चाँद के दो टुकड़े हो जाने का मोअ़जिज़ा देख कर अपना एलची हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में भेजा और इस्लाम कुबूल कर लिया। सवानेह हरमैन में राजा का इस्लामी नाम अब्दुल्लाह लिखा है। (सीरते रसूले अरबी)

६४) सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सीनए मुबारक चार बार खोला गया। पहली बार जब हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रते हलीमा के घर थे, दूसरी बार जब आप की उम्रे शरीफ़ दस बरस की हुई, तीसरी बार वही की शुरूआ़त से पहले और चौथी बार शबे मेअ़राज में। (सीरते रसूले अ़रबी)

६५) हज़रते कबशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अपने उस मशकीज़े का मुंह काटकर रख लिया था जिस से साक़िए कौसर हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुंह लगा कर पानी पिया था। मदीनए मुनव्वरा में बीमारों को यह चमड़े का टुकड़ा घोल कर पिलाती थीं जिसकी बरकत से उन्हें शिफ़ा होती थी। (तफ़सीरे सावी)

६६) हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी वफ़ात से पहले वसियत की थी कि मेरे पास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाले मुबारक और नाख़ुन हैं, वह मेरे कफ़न में मेरी आँखों और मुंह पर रख दिये जाएं ताकि क़ब्र की मुश्किल आसान हो। (तफ़सीरे सावी)

६७) हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की टोपी में हुज़ूरे

अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मूए मुबारक था जिसे पहन कर वह जंग करते थे। (तफ़सीरे सावी)

६८) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जुब्बए मुबारका था जिसे धोकर बीमारों को पिलाती थीं। (तफ़सीरे सावी)

६६) हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ सुर्ख़ रंग के बाल थे जो एक डिब्बे में रखे हुए थे। लोग उन बालों से नज़रे बद और दूसरी बीमारियों का इलाज किया करते थे। (तफ़सीरे सावी)

७०) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मशहूर कुन्नियत अबुल क़ासिम है मगर हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिवायत की है कि आप की कुन्नियत अबू इब्राहीम भी है। चुनान्चे हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इन लफ़्ज़ों से सलाम किया अस्सलामु अलैका या अबा इब्राहीम यानी ऐ इब्राहीम के बाप आप पर सलामती हो। (ज़ुरक़ानीः जिः ३)

७१) हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक बोरिया था जिसे मोड़ कर आप उसे हुजरे की तरह बना लेते थे और उसी में नमाज़ अदा फ़रमाते थे। दिन में उसी को बिछाकर उस पर तशरीफ़ फ़रमा होते थे। (सीरते रसूले अ़रबी)

७२) हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तीन तलवारें थीं, एक का नाम ज़ुलफ़िक़ार, दूसरी का नाम मासूर और तीसरी का नाम तबार था। (मदारिजुन नबुव्वत)

७३) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी और दूसरे नबियों की मिसाल ऐसी है जैसे कोई महल हो जिस में कुल तअ़मीर निहायत ख़ूबसूरत हुई हो, सिर्फ़ एक ईंट की जगह ख़ाली छोड़ दी गई हो। देखने वाले उस में घूम फिर कर देखते हों। उनको इमारत देख कर हैरत होती हो लेकिन उस एक ईंट की जगह ख़ाली होने से ख़ूबसूरती की तकमील न होती हो, मुझ से ही इस इमारत की तकमील हुई है और मुझ पर ही पैग़म्बरों का सिलसिला ख़त्म हुआ है। कुछ रिवायतों में है, फ़रमायाः मैं ही वह ईंट हूँ और मैं ही ख़ातिमुल अम्बिया हूँ। (नुज्हतुल क़ारी)

७४) हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला ने अपने पास लिख रखा है कि मैं ख़ातिमुल अम्बिया हूँ और मेरा ख़ातिमुन्

नबीय्यीन होना खुदा ने उस वक़्त लिख दिया था जब आदम अलैहिस्सलाम मिट्टी और पानी की हालत में थे और मैं तुम को अपनी इब्तिदाई हालत के बारे में ख़बर देता हूँ। मैं इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ हूँ और अपनी माँ का वह ख़्वाब हूँ जो मेरी पैदाइश के वक़्त उन्हों ने देखा था कि उनके अन्दर से एक नूर निकला था जिससे शाम के महल जगमगा उठे थे। (बुख़ारी शरीफ़)

७५) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरे लिये अल्लाह से वसीले की तलबगारी करो। सहाबा ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! यह वसीला क्या चीज़ है? फ़रमायाः जन्नत में सबसे बड़ा मर्तबा है जो सिर्फ़ एक आदमी को मिलेगा और मुझे उम्मीद है कि वह एक आदमी मैं ही हूँ। (बुख़ारी शरीफ़)

७६) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः क़ुरबानी मेरे लिये फ़र्ज़ की गई है और तुम्हारे ऊपर फ़र्ज़ नहीं की गई और मुझ पर चाश्त की नमाज़ वाजिब की गई मगर तुम्हारे उपर नहीं। (बुख़ारी शरीफ़)

७७) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस ने मुझे ख़्वाब में देखा उसने मुझ ही को देखा क्योंकि शैतान मेरी सूरत नहीं बन सकता। (बुख़ारी शरीफ़)

७८) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मज़ारे अक़दस पर रोज़ सुब्ह सत्तर हज़ार फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं, पर बिछाते हैं, इस्तिग़फ़ार करते हैं, शाम तक दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं। शाम को आसमान पर चढ़ जाते हैं और दूसरे सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उतरते हैं। इसी तरह सुब्ह तक रहते हैं। क़ियामत तक यह सिलसिला चलता रहेगा। जब क़ियामत का दौर होगा, हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सत्तर हज़ार फ़रिश्तों के घेरे में बाहर तशरीफ़ लाएंगे।(नुज्हतुल क़ारी)

७९) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चौंतीस बार रूहानी मेअराज हुई। (सीरते रसूले अरबी)

८०) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जो शख़्स मेरा नाम लिख कर उसके आगे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लिख देता है तो जब तक वह तहरीर बाक़ी रहेगी, फ़रिश्ते उस के लिये मग़फ़िरत तलब करते रहेंगे। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

८१) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुस्ले मुबारक का पानी चार बोतलों में भर कर एक बोतल हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने ली, एक

हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम ने, एक हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम ने और एक हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम ने ली। हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम नज़्अ के वक़्त मोमिनों के मुंह में उसका एक क़तरा डाल देते हैं जिससे मौत की सख़्ती आसान हो जाती है। हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम मुन्कर नकीर के सवालों के वक़्त एक क़तरा डाल देते हैं, इससे जवाब में सहूलत होती है। हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम क़ियामत के दिन एक क़तरा चेहरे पर छिड़क देंगे, इससे क़ियामत की दहशत से अम्न मिलेगा। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम क़ियामत के दिन एक क़तरा आँखों पर मल देंगे जिससे दीदारे ख़ुदावन्दी के मुशाहिदे की ताक़त हासिल हो जाएगी। (तोह़फ़तुल वाइज़ीन)

८२) हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु के घर सहाबए किराम की दावत थी। एक कपड़े का दस्तर-ख़्वान लाया गया जो बहुत मैला था। आप ने वह दस्तर-ख़्वान भड़कते हुए तन्नूर में डाल दिया। सारा मैल जल गया लेकिन दस्तर-ख़्वान के कपड़े के तार भी गर्म न हुए। साथियों ने पूछा: ऐ सहाबिए रसूल, आग में कपड़ा क्यों न जला और इतना साफ़ कैसे हो गया? हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: एक दिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस दस्तर ख़्वान से अपना हाथ और मुंह पोंछा था, उस दिन से आग इसे नहीं जलाती। (मसनवी शरीफ़)

८३) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरकश का नाम काफ़ूर था। (बुख़ारी शरीफ़)

८४) उलमा का कहना है कि दुनिया व आख़िरत के तमाम पानियों से अफ़ज़ल और मुक़द्दस वह पानी है जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उंगलियों से निकला, यहाँ तक कि यह पानी ज़मज़म से भी अफ़ज़ल है। (तफ़सीरे नईमी)

८५) एक बार हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु के बाग़ में तशरीफ़ ले गए। सरकार के क़दमों की बरकत से उन का बाग़ साल में दो बार फ़सल देने लगा। (बुख़ारी शरीफ़)

८६) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: रूए ज़मीन पर जितने पेड़ पत्थर ढेले हैं, मैं क़ियामत के दिन उन सब से ज़्यादा आदमियों की शफ़ाअ़त करूंगा। (बुख़ारी शरीफ़)

८७) हुज़ूरे अक़्दस या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लौकी बहुत पसन्द थी। फ़रमाते थे लौकी मेरे भाई यूनुस अलैहिस्सलाम का दरख़्त है। (तोह़फ़तुल वाइज़ीन)

८८) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो जान बूझ कर

मुझ पर झूट बांधे, वह अपना ठिकाना जहन्नम में बनाए। यह हदीस मुतवातिर है। इस हदीस के सिवा किसी और हदीस की रिवायत में अशरए मुबश्शिरा जमा नहीं हुए। (बुख़ारी शरीफ़)

८६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब बैतुल ख़ला तशरीफ़ ले जाते थे तो अंगूठी मुबारक या तो उतार कर बाहर ही रख जाते थे या जेब में या मुंह में डाल लेते थे क्योंकि अंगूठी पर मुहम्मदुर रसूलुल्लाह लिखा हुआ था। (शुमाइले तिर्मिज़ी, इमाम अबू ईसा तिर्मिज़ी)

६०) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मेहशर के दिन का सज्दा एक हफ़्ते तक रहेगा जिस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसी हम्द करेंगे जो कभी किसी ने न की होगी। (बुख़ारी शरीफ़)

६१) हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु के सर में दर्द था। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्ते मुबारक की बरकत से जाता रहा। उस हाथ की बरकत यह हुई कि हज़रत साइब की उम्र सौ साल हुई, न कोई बाल सफ़ेद हुआ और न कोई दांत गिरा। (बुख़ारी)

६२) मुहरे नबुव्वत नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गर्दन के नीचे दो कन्धों के बीच एक पारए गोश्त था जिस पर कुछ तिल थे, कबूतरी के अन्डे या मसहरी की घुंडी के बराबर। पारए गोश्त निहायत नूरानी और चमकदार था। सियाह तिल, आस पास बाल, यह सब मिलकर बहुत ख़ूबसूरत मालूम होते थे। नीचे से देखो तो पढ़ने में यूँ आता था: अल्लाहु वहदहू ला शरीका लहु। ऊपर से देखो तो यूँ पढ़ा जाता था: तवज्जहु हैसु कुन्ता फ़इन्नका मन्सूरुन। इसे मुहरे नबुव्वत इस लिये कहते हैं कि पिछली आसमानी किताबों में इस मुहर को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ातिमुन्-नबीय्यीन होने की निशानी क़रार दिया गया था। वफ़ाते अक़दस के वक़्त यह मुहरे नबुव्वत ग़ायब हो गई थी। इस में इख़्तिलाफ़ है कि विलादते अक़दस के वक़्त मौजूद थी या नहीं। कुछ मोहद्दिसीन फ़रमाते हैं कि शक़्क़े सदर के बाद फ़रिश्तों ने जो टाँके लगाए थे उनसे यह मुहर पैदा हो गई थी। सही यह है कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादते पाक के वक़्त अस्ल मुहर मौजूद थी मगर उसका उभार उन टाँकों के बाद हुआ। (सीरते रसूले अरबी)

६३) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अबरुओं (भवों) के बीच एक रग थी जो ग़ुस्से की हालत में सुर्ख़ हो जाती थी। (बुख़ारी)

६४) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब चलते थे तो यूँ मेहसूस होता था जैसे आप ऊंचाई से उतर रहे हों। (बुख़ारी शरीफ़)

९५) हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने जद्दे करीम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से बहुत ज़्यादा मुशाबह थे। (बुख़ारी शरीफ़)

९६) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: मैं ने सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सरे मुबारक और रेशे अक्दस में सिर्फ़ १४ सफ़ेद बाल शुमार किये। (बुख़ारी शरीफ़)

९७) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अंगूठी चाँदी की थी और उसका नगीना हबश का अक़ीक़ था। (शुमाइले तिर्मिज़ी)

९८) सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चादर की लम्बाई चार गज़ और चौड़ाई ढाई गज़ की थी। (ज़ुर्क़ानी)

९९) मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तहबन्द शरीफ़ आधी पिंडलियों तक रहता था। (बुख़ारी शरीफ़)

१००) हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तलवारे मुबारक का क़ब्ज़ा (दस्ता) चाँदी का बना हुआ था। (शुमाइले तिर्मिज़ी)

१०१) मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अक्सर दस्तारे मुबारक के नीचे एक छोटा सा रुमाल रखते थे जो तेल से भीगा रहता था। (बुख़ारी शरीफ़)

१०२) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब खाना खाते थे तो अपनी उंगलियों को तीन बार चाटते थे। (बुख़ारी शरीफ़)

१०३) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सारी उम्र न तो चौकी पर बैठ कर खाना खाया और न ही चपाती खाई। (बुख़ारी शरीफ़)

१०४) हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बेहतरीन सालन सिरका है। (बुख़ारी शरीफ़)

१०५) जिस बिस्तर पर रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आराम फ़रमाते थे वह चमड़े का था और उसमें खजूर की मूंझ भरी हुई थी। (बुख़ारी शरीफ़)

१०६) मुफ़स्सिरीने किराम कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अगर ऐसा हुस्न दिया जाता कि देखने वाले मिस्र की औरतों की तरह हैरत ज़दा होकर हाथ काट लेते तो यह रहमत की सिफ़त के ख़िलाफ़ होता। हज़रते आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुस्न दिल में पैवस्त हो जाता था। अगर मिस्र की औरतें देख लेतीं तो हाथों के बदले अपने दिलों को काट डालतीं। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१०७) क़ब्रे अनवर का वह हिस्सा जो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिस्मे पाक से मिला हुआ है वह कअ़बए मुअ़ज़्ज़मा बल्कि अर्शे

आज़म से भी अफ़ज़ल है। दिल वाले कहते हैं कि हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा का सीना, हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़ानू, हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की गोद जो मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आराम गाह थी, वह भी अर्शे मुअल्ला से कहीं अफ़ज़ल है। (रूहुल बयान)

१०८) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़्वाब में देखा कि आप के सामने कुछ गायें ज़िब्ह की जा रही हैं और देखा कि आप की तलवार टूटी हुई है मगर बाद में पहले से बेहतर हो गई है। आप के ख़्वाब की तअबीर की सूरत में बद्र की ग़नीमत में जुलफ़िक़ार मिली जो मुनब्बिह इब्ने हज्जाज सहमी की तलवार थी। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह तलवार अपने लिये पसन्द फ़रमा ली और ग़ज़वए ख़न्दक़ में मौला अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम को बख़्श दी। चूँकि इस तलवार के मुख़्तलीफ़ परत थे इस लिये इसे जुलफ़िक़ार यानी जोड़ और परत वाली तलवार कहते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१०९) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़रीन यानी साथ रहने वाला शैतान मुसलमान हो गया था। यह ख़ुसूसियत सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदक़े में दूसरे नबियों को भी हासिल रही। (बुख़ारी शरीफ़)

११०) रिवायत है कि एक अरब देहाती ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़ुल्क़ कैसा था? फ़रमाया: पहले तू यह बता कि दुनिया किस क़दर है और क्या क्या चीज़ दुनिया में है? देहाती बोला: मैं यह बातें कैसे जान सकता हूँ? हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि जब तू दुनिया का हाल बयान नहीं कर सकता कि जिसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया: मताअद्दुनिया क़लील यानी दुनिया थोड़ी पून्जी है तो मैं किस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ुल्क़ का हाल बयान करूँ जिस को अल्लाह तआला ने फ़रमाया: व इन्नका लअ़ला ख़ुलुकिन अज़ीम। (बुख़ारी शरीफ़)

१११) कुछ उलमा कहते हैं कि तमाम दुनिया के पानियों से ज़मज़म अफ़ज़ल है मगर ज़म-ज़म से भी अफ़ज़ल वह पानी है जो एक मौक़े पर मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उंगलियों से जारी हुआ था। इसकी वजह यह है कि ज़म ज़म तो एक नबी के तलवे से जारी हुआ था और यह पानी सैय्यिदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक उंगलियों से निकला था। (तफ़सीरे नईमी)

११२) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं रसूले अकरम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी मदद पुरवा हवा के ज़रिये की गई और क़ौमे आ़द पछवा से हलाक हुई। (बुख़ारी शरीफ़)

११३) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं मुस्तफ़ा जाने रह़मत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हाँडी की तह की चीज़ यानी खुरचन बड़े शौक़ से खाते थे। (बुख़ारी शरीफ़)

११४) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कच्ची प्याज़ खाने से मना फ़रमाया है अलबत्ता पुख़्ता प्याज़ खाने की इजाज़त दी है। (बुख़ारी शरीफ़)

११५) हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु का कहना है कि हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से लहसन के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो आख़िरी खाना खाया है उस में पुख़्ता लहसन पड़ा हुआ था। (बुख़ारी शरीफ़)

११६) मुस्तफ़ा जाने रह़मत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खजूर और मक्खन को निहायत मरग़ूब रखते थे। (बुख़ारी शरीफ़)

११७) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम्हारे खाने का सरदार नमक है। (बुख़ारी शरीफ़)

११८) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़ारसी ज़बान के सात अल्फ़ाज़ मरवी हैं: (१) एक बार अंगूर का तबाक़ लाया गया। इत्तिफ़ाक़ से सहाबा की एक जमाअ़त मौजूद थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः अल-इनबु दो दो। यानी दो दो अंगूर तक़सीम किये जाएं। (२) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया गया कि फ़रिश्तों ने लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम को किस चीज़ से रज्म किया था? फ़रमायाः बसंगो कलूख़ यानी पत्थरों और ढेलों से। (३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रते अमीरे मुआ़विया के जुब्बे पर जूँ देखी तो फ़रमायाः या मुआ़विया, हाज़ा सिपुश। यानी ऐ मुआ़विया यह जूँ है। (४) जंगे उहद में सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों में ख़लत मलत हो गए यहाँ तक कि सहाबा ह़ाज़िर आए और कुछ ऊंट साथ लाए ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक पर सवार हो जाएं। फ़रमायाः हाज़ा शुतुर। यह ऊंट है। (५) हज़रते आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के हाथ में एक ताज़ा सेब था। मज़ाक़ में पूछाः यह सेब किसे दूँ? हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुरा बिदह यानी मुझे दो। (६) एक दिन सुब्ह सवेरे सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा के मकान पर तशरीफ़ ले गए। हज़रत

अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आवाज़ दीः मन अलल बाब? यानी दरवाज़े पर कौन है? फ़रमायाः मन्म मुहम्मद यानी मैं मुहम्मद। (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) (७) मुश्रिकों ने पूछा कि अल्लाह एक है या दो? इरशाद फ़रमायाः ऊ यकी अस्त। यानी अल्लाह एक है। (सब्र सनाबिल शरीफ़)

११९) मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मी (बे पढ़े) थे यानी बज़ाहिर लिखना पढ़ना नहीं जानते थे। मगर अपने उन बेशुमार उलूम के बाइस जो आप के बातिन में जगमगा रहे थे एक बार आप ने कातिब से कहाः दवात में उम्दा रौशनाई डाल, क़लम को थोड़ा तिरछा रख, बिस्मिल्लाह की बे को नुमायाँ लिख, सीन के शोशे ज़ाहिर कर, अल्लाह का नाम ज़ेबाई से लिख, मीम को जोफ़दार रख और इसे अन्धा मत लिख। (सब्र सनाबिल शरीफ़)

१२०) अरबी ज़बान में वही के मानी हैं इशारा करना, लिखना, पैग़ाम देना, दिल में डालना, छुपा कर बोलना और दूसरे के ख़्याल में अपना ख़्याल डालना। लेकिन अहले लुग़त कहते हैं कि इस लफ़्ज़ के अस्ल मानी हैं "दूसरों से छुपा कर किसी से चुपके चुपके बात करना।" क़ुरआने पाक में यह लफ़्ज़ अपने अस्ल मफ़हूम के अन्दर तीन मानी में आया हैः (१) फ़ितरी हुक्म, जैसे तेरे पर्वरदिगार ने शहद की मक्खियों को वही किया। और इस लिये कि तेरे पर्वरदिगार ने ज़मीन को वही किया। (२) दिल में बात डालना जैसेः और जब मैं ने हवारियों को हुक्म किया कि मुझ पर और मेरे पैग़म्बर पर ईमान लाओ और हम ने मूसा की माँ को वही किया कि इस बच्चे को दूध पिलाओ। (३) चुपके चुपके बात करना जैसेः यह एक दूसरे को चिकनी चुपड़ी बात वही करते और यह शैतान लोग अपने दोस्तों को वही करते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१२१) उलमा ने वहिये मुहम्मदी की सात क़िस्में क़रार दी हैंः (१) रूयाए सादिक़ा यानी सच्चे ख़्वाब देखना। (२) दिल में फूंकना या दिल में डालना। (३) घन्टी की तरह आवाज़ आना। (४) फ़रिश्ते का अपनी अस्ल सूरत में नमूदार होना। (५) फ़रिश्ते का किसी की शक्ल में आना। (६) वह बात चीत का ढंग जो मेअराज की रात में पेश आया था। (७) बिला वास्ता बात चीत। (बुख़ारी शरीफ़)

१२२) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में जुम्ला अम्बियाए किराम की शान थी। आप हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की तरह झुटलाए गए फिर भी साबिर व शाकिर ही पाए गए। आप ने हज़रत यहया अलैहिस्सलाम की तरह बयाबानों और बस्तियों में अल्लाह की आवाज़ पहुंचाई। आप ने हज़रत अय्यूब

अलैहिस्सलाम की तरह सब्र व शकीबाई के साथ घाटी में तीन साल तक घेराव
के दिन गुज़ारे फिर भी आप का दिल अल्लाह की शुक्र गुज़ारी से लब्रेज़ और
ज़बान हम्दे इलाही में लगी रही। आप ने नूह अलैहिस्सलाम की तरह क़ौम के
भटके हुए लोगों को पोशीदा और ज़ाहिर में, ख़लवत व जलवत में, मेलों और
जलसों में, गुज़रगाहों और राहों पर, पहाड़ों और मैदानों में इस्लाम की तब्लीग़
फ़रमाई और लोगों को उन के बुरे आमाल से नफ़रत दिलाई। आप ने हज़रत
इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तरह नाफ़रमान क़ौम से अलाहिदगी इख़्तियार करली
और हिजरत की। आप हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की तरह शबे हिजरत
दुशमनों के घेरे से निकलने में कामयाब हुए। हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने
मछली के पेट में रह कर फिर नैनवा में अपनी मुनादी को जारी किया था।
नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन दिन ग़ारे सौर के शिकम में रह
कर फिर मदीनए मुनव्वरा में कलिमतल्लाह की आवाज़ को बलन्द फ़रमाया।
मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल को फ़िरऔन की गुलामी से आज़ाद कराया
था। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शुमाली अरब को शाहे
कुस्तुन्तुनिया की गुलामी से और मश्रिक़ी अरब को किसराए ईरान से और
जुनूबी अरब को शाहे हजश के तौक़े गुलामी से निजात दिलाई। आप ने
हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरह अपने ईज़ा रिसाँ और सितम पेशा
बिरादराने मक्का के लिये नज्द और सलम से ग़ल्ला बहम पहुंचाया और
आख़िर में फ़त्हे मक्का के दिन सब को आम माफ़ी देकर पाबन्दे एहसान
फ़रमाया। आप एक ही वक़्त में मूसा अलैहिस्सलाम की तरह साहबे हुकूमत भी
थे और हारून अलैहिस्सलाम की तरह साहबे अमानत भी। आप ने सुलैमान
अलैहिस्सलाम की तरह मक्का में बैतुल्लाह तअमीर किया जो क़ियामत तक के
लिये अल्लाह को याद करने वालों से भरा रहेगा। इसे आज तक बुख़्त नस्सर
जैसा कोई सियाह बख़्त वीरान न कर सका। (तफ़सीरे नईमी)

१२३) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुर्ता (क़मीज़) बहुत
पसन्द था। कुर्ते की आस्तीन न तंग रखते थे न ज़्यादा खुली, दरमियानी साख़्त
ज़्यादा पसन्द थी। आस्तीन कलाई और बांह के जोड़ तक पहुंचती थी। सफ़र
(खुसूसन जिहाद) के लिये जो कुर्ता पहनते थे उस के दामन और आस्तीन की
लम्बाई ज़रा कम होती थी। क़मीस का ग्रेबान सीने पर होता था जिसे कभी
कभार मौसम के हिसाब से खुला रखते थे और इसी हालत में नमाज़ पढ़ते
थे। कुर्ता पहनते हुए पहले सीधा हाथ डालते फिर बायाँ। (शुमाइले तिर्मिज़ी)

१२४) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सर पर अमामा बांधना

बहुत पसन्द था। एक रिवायत के मुताबिक़ अमामे की लम्बाई सात गज़ होती थी। अमामे का शिम्ला बालिश्त भर ज़रूर छोड़ते थे जो पीछे की जानिब दोनों शानों के बीच पड़ा रहता था। मौसम के तक़ाज़े को देखते हुए आख़िरी बल ठूड़ी के नीचे से लेकर गर्दन के गिर्द भी लपेट लेते थे। कभी अमामा न होता तो कपड़े की एक धज्जी (रुमाल) पट्टी की तरह सर पर बांध लेते थे। एक रिवायत यह है कि ऐसा सिर्फ़ बीमारी ख़ुसूसन सर दर्द की हालत में किया होगा। सफ़ेद के अलावा ज़र्द रंग का अमामा भी सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्तेमाल फ़रमाया है। फ़त्हे मक्का के मौक़े पर आप सियाह अमामा बांधे हुए थे। अमामे के नीचे टोपी भी इस्तेमाल में रही। (शुमाइले तिर्मिज़ी)

१२५) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओढ़ने की चादर चार गज़ लंबी सवा दो गज़ चौड़ी होती थी। कभी लपेटते, कभी एक पल्लू सीधी बग़ल से निकाल कर उल्टे कान्धे पर डाल लेते। यही चादर कभी कभार बैठे हुए टांगों के गिर्द लपेट लेते और कभी उसे तह करके तकिया बना लेते। अहम लोगों के इस्तक़बाल के लिये चादर उतार कर बिछा भी देते। (बुख़ारी)

१२६) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी कभार तंग आस्तीन का रूमी जुब्बा भी ज़ेबे तन फ़रमाया है। कभी तीलसानी क़िस्म का किसरवानी जुब्बा भी पहना है जिस के गिरेबान के साथ रेशमी गोट भी लगी थी। (बुख़ारी)

१२७) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नअले पाक (मुक़द्दस जूता) प्रचलित अरबी परम्परा के मुताबिक़ चप्पल या खड़ाऊँ की सी शक्ल का था जिसके दो तस्मे थे एक अंगूठे और साथ वाली उंगली के बीच रहता, दूसरा छुंगलिया और उस के साथ वाली उंगली के बीच। यह एक बालिश्त दो उंगल लम्बा था। तलवे के पास से सात उंगल चौड़ा और दोनों तस्मों के बीच पंजे पर से दो उंगल का फ़ासला था। (बुख़ारी शरीफ़)

१२८) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुराबें और मोज़े भी इस्तेमाल फ़रमाए हैं। शाह नजाशी ने सियाह रंग के सादा मोज़े तोहफ़े के तौर पर भेजे थे, आप ने उन्हें पहना और उन पर मसह फ़रमाया। इसी तरह हज़रत दिहयह कल्बी ने भी मोज़ों का तोहफ़ा पेश किया था उन को आप ने फटने तक इस्तेमाल किया। (सीरते रसूले अरबी)

१२९) हिजरत फ़रमाते हुए नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मे मोअबद के ख़ैमे से हो कर गुज़रे थे। जब उन का शौहर अबू मोअबद घर पर आया और अपने ख़ाली बर्तनों को दूध से भरा देखा तो पूछा: "इतना दूध कहाँ से आया?" उम्मे मोअबद ने कहा: "यह बरकत है एक शख़्स की जो

अभी इधर से गुज़रा था।"उस ने कहा: "ज़रा उस का हाल तो बताओ।" इस पर वह बोलीं: "मैं ने एक शख़्स को देखा जिस की नज़ाफ़त नुमायाँ, जिस का चेहरा रौशन, जिस की बनावट (नख शिख) में हुस्न था। न मुटापे का ऐब, न दुबलापे की खोट, अच्छे चेहरे वाला, हसीन आँखें कुशादा और सियाह, पलकें लम्बी, आवाज़ में खनक, गर्दन सुराही दार, दाढ़ी घनी, भवें कमानदार और जुड़ी हुई, ख़ामोशी में वक़ार का मुजस्समा, बात चीत में सफ़ाई और दिलकशी, सर से पावँ तक हुस्न, सौंदर्य में अपनी मिसाल आप, दूर से देखो तो हसीन तरीन, क़रीब से देखो तो और भी हसीन व जमील, बोल चाल में मिठास, न बेकार बातें करे और न ज़रूरत के वक़्त ख़ामोश रहे, बात चीत ऐसी जैसे पिरोए हुए मोती, ऐसा बीच का क़द जिस में न नफ़रत दिलाने वाली लम्बाई न शान घटाने वाली कोताही, अगर दो शाख़ों के बीच में एक शाख़ हो तो वह देखने में तीनों से तरो-ताज़ा दिखाई दे और क़दरो क़ीमत में उन सब से ज़्यादा अच्छा नज़र आए। उस के साथ उस के कुछ जाँ-निसार थे जो उसे घेरे रहते थे, जब वह बोलता तो सब ख़ामोश हो जाते, जब कोई हुक्म देता तो सब तअमील के लिये टूट पड़ते। सब का मख़दूम, सब का मुताअ, तुर्श रूई से पाक और पकड़ वाली बातों से मुबर्रा।" अबू मोअबद बोले: "ख़ुदा की क़सम यह वही क़ुरैशी मालूम होता है जिस का ज़िक्र मैं मक्के में सुन कर आया हूँ। मैं इरादा भी कर चुका हूँ कि उस की सोहबत नसीब हो। अगर इस की सबील नज़र आई तो मैं यह ज़रूर करूंगा।" (कबीर नजफ़ी)

१३०) सफ़र और हज़र में सात चीज़ें हमेशा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहतीं। (१) तेल की शीशी (२) कंघी (हाथी दांत की भी) (३) सियाह रंग की सुरमे दानी (४) कैंची (५) मिस्वाक (६) आईना (७) लकड़ी की एक पतली खपची। (सीरते रसूले अरबी)

१३१) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने के रास्ते में बहुत कष्ट उठाए लेकिन सख़्त तरीन दिन वह था जब आप तबलीग़े इस्लाम के लिये ताइफ़ गए। वहाँ दअवते इस्लाम के जवाब में लोग सख़्त बद-अख़लाक़ी से पेश आए। ओबाशों लफ़ंगों को पीछे लगा दिया। यह गुन्डे आप पर टूट पड़े और पत्थर मारने शुरू कर दिये। आप जिधर का रुख़ करते यह टोला आप के पीछे पथराव करता चला आता। हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने जिस्म को आप की ढाल बना रखा था। इतना पथराव हुआ कि बदने मुबारक लहू-लुहान हो गया और नअलैने मुबारक ख़ून से भर गए। आख़िर आप ने बड़ी मुश्किल से एक बाग़ में अंगूर की बेलों में पनाह ली। हज़रत ज़ैद

रज़ियल्लाहु अन्हु ने जिस्मे अतहर का ख़ून पोंछा। नअलैने मुबारक में इतना ख़ून जम गया था कि आप वुज़ू करते वक़्त मुश्किल से अपने पावँ निकाल सके। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "यह मेरे लिये सख़्त तरीन दिन था। मैं दुखी दिल के साथ बाग़ से निकल कर आ रहा था कि अचानक बादल के एक टुकड़े ने मेरे ऊपर साया कर लिया। मैं ने जो नज़र उठा कर देखा तो जिब्रईल अलैहिस्सलाम थे।" उन्हों ने कहाः जो कुछ आप के साथ हुआ है, हक़ तआला ने उसे देखा और अगर आप की मर्ज़ी हो तो ताइफ़ के दोनों पहाड़ों को एक दूसरे से मिला कर यहाँ की सारी आबादी को तहस नहस कर दिया जाए। मैं ने कहाः नहीं, मैं इन की हलाकत और बर्बादी नहीं चाहता, मुझे खुदा के फ़ज़्ल से उम्मीद है कि हक़ तआला इन्ही में से ऐसे लोग पैदा करेगा जो खुदाए वहदहू की इबादत करेंगे और उस के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराएंगे। ग्यारह साल बाद यही ताइफ़ वाले थे जो हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुशमनी से दस्तबरदार हो कर आप के क़दमों में गिर पड़े थे। (तफ़सीरे नईमी)

१३२) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार अर्ज़ कियाः "या रसूलल्लाह! क्या बात है कि आप फ़साहत में हम से बालातर हैं हालांकि आप हम से कभी जुदा नहीं हुए।" फ़रमायाः मेरी ज़बान इस्माईल अलैहिस्सलाम की ज़बान है जिसे मैं ने ख़ास तौर से सीखा है इसे जिब्रईल अलैहिस्सलाम मुझ तक लाए और मेरे ज़हन नशीन करा दी। (तफ़सीरे नईमी)

१३३) हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने सरकारे अब्द क़रार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक बार सवाल किया कि आप अपने मसलक की वज़ाहत फ़रमाएं। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "इरफ़ान मेरी पूंजी है, अक़्ल मेरे दीन की अस्ल है, मुहब्बत मेरी बुनियाद है, शौक़ मेरी सवारी है, ज़िक्रे इलाही मेरा मूनिस है, एतेमाद मेरा ख़ज़ाना है, हुज़्न मेरा रफ़ीक़ है, इल्म मेरा हथियार है, सब्र मेरा लिबास है, खुदा की रज़ा मेरी ग़नीमत है, आजिज़ी मेरे लिये वजहे एजाज़ है, ज़ोहद मेरा पेशा है, यक़ीन मेरी ताक़त है, सिद्क़ मेरा सिफ़ारिशी है, ताअत मेरा बचाव है, जिहाद मेरा किरदार है और मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में है।"(बुख़ारी)

१३४) बुराक़ लफ़्ज़ बर्क़ से माख़ूज़ है। इस सवारी की रफ़्तार बिजली की तरह तेज़ थी इस लिये इसे बुराक़ कहा गया है। बर्क़ की रफ़्तार एक लाख छियासी हज़ार मील फ़ी सेकिन्ड है और रिवायतों में आया है कि बुराक़ ऐसी तेज़ रफ़्तार सवारी थी कि जहाँ निगाह की हद ख़त्म होती थी वहाँ इस का

पहला क़दम पड़ता था। (सीरते रसूले अरबी)

१३५) मुस्नदे इमाम अहमद बिन हम्बल और सीरते इब्ने इस्हाक़ की रिवायत यही है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शबे मेअराज सफ़र से वापसी पर बैतुल मक़दिस में नबियों और फ़रिश्तों की इमामत फ़रमाई। (तफ़सीरे नईमी)

१३६) मेअराज के सफ़र में हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहले आसमान पर हज़रते आदम अलैहिस्सलाम से मिले। उन के दाएं तरफ़ जन्नत वाले थे और बाएं तरफ़ दोज़ख़ वाले। पहले आसमान पर सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नहरे कौसर भी देखी जिस के किनारों पर जवाहर के महल बने हुए थे। दूसरे आसमान पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुलाक़ात हज़रते यहया अलैहिस्सलाम और हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम से हुई। तीसरे आसमान पर हज़रते यूसुफ़ अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिले। चौथे आसमान पर हज़रते इद्रीस अलैहिस्सलाम ने आप से बात चीत की। पांचवें आसमान पर हज़रते हारून अलैहिस्सलाम और छटे आसमान पर हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम से मिले। सातवें आसमान पर सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुलाक़ात हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से हुई। (बुख़ारी शरीफ़)

१३७) यहूदियों ने एक जादूगर लबीद बिन अअसम के ज़रिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू करवाया था। उस से आप को और तो कोई नुक़सान नहीं पहुंचा अलबत्ता यह असर ज़ाहिर हुआ कि आप नहीं किये हुए दुनियावी कामों के बारे में यह ख़्याल करने लगे कि कर चुके हैं। चालीस दिन तक जादू का असर रहा। इस के बाद आप ने सेहतयाबी के लिये दुआ की और फ़रिश्तों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जादू की सारी तफ़सील बताई। आप ने हज़रत अली और हज़रत अम्मार बिन यासिर को एक कुंवें पर भेजा। उस कुंवें से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मोमी तस्वीर बरामद हुई उस में सुइयां छिदी हुई थीं और एक धागा बन्धा हुआ था जिस में ग्यारह गाँठें थीं। इस मौक़े पर अल्लाह तआला ने सूरए फ़लक़ और सूरए नास नाज़िल फ़रमाई। इन की हर आयत पढ़ने से एक एक गिरह खुलती गई और सुइयां निकलती गईं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर से जादू का असर उतरता गया। (बुख़ारी शरीफ़)

१३८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मैं तुम्हारे पास पाक साफ़ शरीअत लाया हूँ। ख़ुदा की क़सम अगर मूसा बिन इमरान ज़िंदा होते तो उन के लिये भी मेरे इत्तिबाअ के सिवा कोई गुन्जाइश न रहती।" (बुख़ारी शरीफ़)

१३९) इब्ने असाकिर ने कअबे अह़बार से रिवायत की है कि आदम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे हज़रत शीस अलैहिस्सलाम को वसियत की थी कि तुम अल्लाह के ज़िक्र के साथ मुहम्मद का नाम भी लिया करो क्योंकि मैं ने उनका नाम अर्श के सुतून पर लिखा देखा है जबकि मैं रूह और मिट्टी के बीच था फिर मैं ने घूमना शुरू किया तो आसमान में कोई जगह ऐसी न देखी जहाँ मुहम्मद न लिखा हो। न जन्नत में कोई महल और कोई बालाख़ाना देखा मगर उस पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम लिखा हुआ था। और मैं ने उन का नामे मुबारक हूरों के सीनों पर, जन्नत के दरख़्तों की शाख़ों पर, तूबा दरख़्त और सिदरतुल मुन्तहा के पत्तों, हिजाबात के किनारों, फ़रिश्तों की आँखों में लिखा देखा। तुम उन का ज़िक्र कसरत से किया करो क्योंकि फ़रिश्ते भी हर घड़ी उन का ज़िक्र करते हैं। (रूहुल मआनी)

१४०) हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं मैं ने अपने वालिद से पूछा कि अपने हमनशीनों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत कैसी थी? उन्हों ने कहा: "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमेशा ख़न्दा पेशानी से रहने वाले, नर्म अख़लाक़ वाले, सहूलत की ज़िंदगी बसर करने वाले, न दुरुश्त-ख़ू थे न बद मिज़ाज, न बेहूदा बातें करने वाले, न ऐब तलाश करने वाले। जिस चीज़ की ख़्वाहिश न होती उस से तग़ाफ़ुल बरतते, न उस का ऐब बयान करते न उस में रग़बत ज़ाहिर फ़रमाते। तीन चीज़ें आप ने खुद तर्क फ़रमा दी थीं: शक करना, माले कसीर जमा करना और ग़ैर मुफ़ीद बातें करना। तीन चीज़ों से आप ने लोगों को छोड़ दिया था: किसी की मज़म्मत नहीं फ़रमाते थे, किसी को आर (शर्म) नहीं दिलाते थे और किसी की छुपी हुई बात का तजस्सुस नहीं फ़रमाते थे। सिर्फ़ वही कलाम करते जिस में आप को सवाब की उम्मीद होती थी। जब बात चीत फ़रमाते तो सुनने वाले इस तरह ख़ामोश हो जाते जैसे उन के सरों पर चिड़ियाँ बैठी हों। फिर जब आप ख़ामोश हो जाते तो लोग कलाम करते। मुसाफ़िर और ग़रीब के बात करने या सवाल करने में उस की बेअदबी पर सब्र फ़रमाते। उस वक़्त सहाबा उसे दूर हटाना चाहते तो आप फ़रमाते जब किसी ज़रूरत मन्द को देखो कि कुछ तलब करता है तो उस की मदद करो। सिवाए तलाफ़ी करने वाले के किसी की मदहो सना क़बूल न फ़रमाते। आप किसी की बात बीच में से न काटते जब तक कि वह खुद ही अपनी बात न काटे। हिल्म और सब्र का संगम थे। आप को न तो कोई चीज़ ग़ज़बनाक करती न बेज़ार। एहतियात सिर्फ़ चार चीज़ों पर मुन्हसिर थी: नेकी के अख़ज़ करने में कि उस की पैरवी करें, बदी के तर्क

करने में कि उस से बाज़ रहें, उम्मत की भलाई के कामों में दिल से ग़ौरो फ़िक्र करने में और उन कामों को क़ाइम करने में जिन से उम्मत की दुनिया और आख़िरत जमा हो।" (तफ़सीरे नईमी)

१४१) हज़रत उस्मान इब्ने तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि फ़त्हे मक्का और हिजरत से पहले मैं पीर और जुमेरात को कअबा खोला करता था। एक रोज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाय कि मेरे लिये आज कअबा खोल दो। मैं ने आप की बड़ी बेअदबी की मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहुत बुर्दबारी फ़रमाई और फ़रमाया कि ऐ उस्मान, बहुत जल्द वह वक़्त आने वाला है कि तुम यह चाबी मेरे हाथ में देखोगे, फिर मैं जिसे चाहूँ दूँ। मैं बोला अगर ऐसा हुआ तो कुरैश हलाक हो जाएंगे और कअबा ज़लील हो जाएगा। फ़रमायाः नहीं, रब्बे कअबा की क़सम, कअबे को उसी दिन इज़्ज़त मिलेगी। मुझे यक़ीन हो गया कि ऐसा हो कर रहेगा क्योंकि इस मुबारक ज़बान की कोई बात ख़ाली नहीं जाती। यहाँ तक कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उमरए क़ज़ा के लिये ज़िलक़अदा सन सात हिजरी में बैतुल्लाह तशरीफ़ लाए और मैं ने आप की सजधज देखी तो मेरे दिल का हाल बदल गया, दिल में ईमान आगया। मौक़ा ढूंढा मगर ख़िदमत में हाज़िर न हो सका यहाँ तक कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने वापस हो गए। एक रोज़ दिल बहुत बेचैन हुआ तो अन्धेरे मुंह मक्के से भागा। रास्ते में ख़ालिद बिन वलीद और अम्र बिन आस से मुलाक़ात हुई। उन का हाल भी मेरे जैसा ही था। चुनान्चे हम तीनों मदीनए मुनव्वरा हाज़िर हुए और रसकर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्ते अक़दस पर बैअत करके मुसलमान हो गए। फिर फ़त्हे मक्का के दिन जो कि रमज़ान सन आठ हिजरी में हुई, हम तीनों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ ही मक्का आए तब मुझ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चाबी मंगवाई। हज़रते अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने चाहा कि चाबी उन्हें दे दी जाए। मैं डर की वजह से चाबी न मांग सका। मुझे वाक़िआ याद था और मैं समझता था कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा के मुक़ाबले में मुझ ग़ैर की क्या हैसियत है। मगर उन के करम के कुरबान, फ़रमायाः अब्बास अगर तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाए हो तो चाबी मुझे दे दो। चाबी लेकर फ़रमायाः उस्मान कहाँ हैं? मैं बोला हुज़ूर हाज़िर हूँ। फ़रमायाः लो यह चाबी, यह हमेशा तुम्हारे पास रहेगी। (बुख़ारी शरीफ़)

१४२) किसी नबी की किताब मोअजिज़ा न थी। कुरआन हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हमेशा ज़िन्दा रहने वाला मोअजिज़ा है इस लिये

और रसूलों को किताब नबुव्वत के दावे के कुछ अर्से बाद मिली मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत के ज़हूर की शुरूआत नुज़ूले कुरआन ही से हुई। (तफ़सीरे नईमी)

१४३) इब्ने सअद दारमी ने अपनी मुस्नद में, बेहक़ी ने दलाइलुन नुबुव्वत में और इब्ने असाकिर ने सैय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सलाम से रिवायत की कि तौरात में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के औसाफ़ कुछ यूँ बयान हुए हैं: "ऐ नबी हम ने आप को शाहिद, मुबश्शिर, नज़ीर, उम्मी और लोगों का मुहाफ़िज़ बनाकर भेजा। तुम मेरे बन्दे, मेरे रसूल हो। मैं ने तुम्हारा नाम मुतवक्किल रखा। तुम न सख़्त दिल हो न सख़्त ज़बान, न बाज़ार में शोर मचाने वाले, बुराई का बदला बुराई से न दोगे बल्कि दरगुज़र और माफ़ी से काम लोगे। अल्लाह तुम्हें वफ़ात न देगा यहाँ तक कि तुम्हारे ज़रिये टेढ़ी उम्मत को सीधा कर देगा और लोग कहने लगेंगे ला लिाहा इल्लल्लाह। रब तआला तुम्हारे ज़रिये अन्धी आँखें, बहरे कान, पर्दे वाले दिल खोल देगा। (तफ़सीरे नईमी)

१४४) इब्ने सअद और इब्ने असाकिर ने हज़रत सुहैल मौला ख़ैसमह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि मैं ने इन्जील में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के औसाफ़ यूँ पढ़े: "वह न तो पस्ता कद हैं न दराज़ कद, गोरा रंग है, दो ज़ुल्फ़ों वाले हैं, उन के दो कन्धों के बीच मुहरे नबुव्वत है, वह सदका कुबूल न करेंगे, ऊंट और ख़च्चर पर सवार होंगे, अपनी बकरी खुद दोह लिया करेंगे, पैवन्द वाले कपड़े पहन लेंगे। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद से होंगे। उन का नाम अहमद होगा।" (तफ़सीरे रूहुल मआनी, तफ़सीरे ख़ाज़िन)

१४५) बेहक़ी ने दलाइलुन नबुव्वत में वहब बिन मुनब्बिह की रिवायत से नक़्ल किया है कि अल्लाह तआला ने ज़बूर में फ़रमाया कि ऐ दाऊद तुम्हारे बाद एक नबी आएंगे जिन का नाम अहमद और मुहम्मद होगा। वह मेरी नाफ़रमानी कभी नहीं करेंगे। मैं उन पर कभी नाराज़ न होऊंगा। उन की उम्मत मर्हूमा होगी। उन्हें नवाफ़िल का सवाब नबियों की तरह दूंगा। उन पर नबियों के से फ़राइज़ लाज़िम कर दूंगा। कियामत में उस उम्मत का नूर नबियों के नूर की तरह होगा। मैं उन पर पिछले नबियों की तरह हर नमाज़ के लिये वुज़ू, हर जनाबत के लिये ग़ुस्ल, हज्ज, जिहाद फ़र्ज़ करूंगा। ऐ दाऊद, मैं ने मुहम्मद और उन की उम्मत को तमाम नबियों, तमामा उम्मतों पर पांच चीज़ों से अज़मत दी है: उन की भूल चूक माफ़ होगी। वह गुनाह करके तौबा करेंगे तो उन्हें बख़्श दूंगा और वह जो काम आख़िरत के लिये करेंगे मैं उस का बदला उन्हें दुनिया में भी दूंगा। जब वह मुसीबतों में इन्ना लिल्लाह पढ़ेंगे तो

उन्हें बड़ा सवाब दूंगा। उन की दुआएं कुबूल करूंगा। (रूहुल मआनी, ख़ाज़िन)

१४६) मुस्लिम शरीफ़ में है कि एक दिन नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हाथ उठा कर रो रोकर उम्मत के हक़ में दुआ कर रहे थे कि जिब्रईले अमीन अलैहिस्सलाम ने हाज़िर होकर रोने की वजह पूछी। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हम को अपनी उम्मत का ग़म रुला रहा है। जिब्रईले अमीन अलैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में जाकर यही अर्ज़ किया। अल्लाह तआला का इरशाद हुआ कि मेरे मेहबूब से कह दो कि हम आप को आप की उम्मत के बारे में राज़ी करेंगे। हदीस शरीफ़ में है कि जब यह इरशाद नाज़िल हुआ तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तक मेरा एक उम्मती भी दोज़ख़ में रहेगा, मैं राज़ी न होऊंगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१४७) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का असाए मुबारक उन के सीनए अक्दस तक लम्बा था। इसके नीचे लोहे का गोला भी था जिससे ज़रूरत के वक़्त इस्तंजे का ढेला भी तोड़ा जा सकता था और जंगल में नमाज़ पढ़ने के वक़्त सामने गाड़ कर सुतरे का काम भी लिया जाता था। (तफ़सीरे नईमी)

१४८) जब हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीनए मुनव्वरा में तशरीफ़ लाए और हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम जैसे यहूदी आलिम ईमान से मुशर्रफ़ हुए तो एक दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम से पूछा कि रब तआला फ़रमाता है कि यहूदियों और ईसाइयों के उलमा इस मेहबूब को ऐसा जानते और पहचानते हैं जैसा अपने बेटों को। ऐ अब्दुल्लाह, तुम भी तो यहूदी आलिम थे ज़रा इस पहचानने की हक़ीक़त तो बयान करो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: "क़सम है उस ज़ात की जिस की क़सम खाई जाती है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हम अपने बेटों से ज़्यादा जानते पहचानते हैं क्योंकि बेटे के मुताल्लिक़ तो यह गुमान हो सकता है कि उस की माँ ने ख़यानत की होगी मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में तो किसी शुबह की गुन्जाइश ही नहीं है।" (तफ़सीरे कबीर, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, तफ़सीरे अज़ीज़ी)

१४९) तफ़सीरे सावी में अबू तालिब के अशआर नक़्ल किये गए है जिन का अनुवाद यह है: "मैं यक़ीन से जानता हूँ कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीन सारे दीनों से बेहतर है। अगर मुझे मलामत का ख़ौफ़ और क़ौम के तअनों का अन्देशा न होता तो मैं यह दीन ज़रूर कुबूल कर लेता। ऐ मुहम्मद, आप अपना काम बख़ूबी अन्जाम देते जाइये जब तक मैं क़ब्र में दफ़्न न हो जाऊं तब तक यह कुफ़्फ़ार आप का कुछ नहीं बिगाड़

सकते। आप ने मुझे इस्लाम की दअवत दी है, मुझे यकीन है कि आप मेरा भला चाहने वाले हैं और मुझे अच्छी चीज़ की तरफ बुला रहे हैं, मगर मलामत के डर से मैं इस्लाम कुबूल नहीं कर सकता।" (तफ़सीरे सावी)

१५०) अबू जहल का दोस्त अख़नस इब्ने कैस एक बार उसे तन्हाई में ले गया और बोलाः "अबू जहल, सच बता कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सच्चे हैं या नहीं?" सच बोल दे, मैं किसी से कुछ नहीं कहूंगा। अबू जहल बोलाः वह बिल्कुल सच्चे हैं। उन की ज़बान से झूट कभी नहीं निकला। मैं इस लिये उन्हें नहीं मानता कि उन के ख़ानदान यानी कुसई इब्ने किलाब में पहले ही से बहुत सी अज़मतें जमा हैं, अगर नबुव्वत भी उन में पहुंच जाएगी तो दूसरे कुरैशियों के लिये क्या बचेगा। (रूहुल मआनी, ख़ाज़िन, तफ़सीरे कबीर)

१५१) एक बद दीन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे दिल लगी में लंगड़ा कर मुंह बनाए हाथ नाक पर रखे चल रहा था। आप ने मुंह फेर कर फ़रमायाः तू ऐसा ही हो जा। वह बदबख़्त बिल्कुल वैसा ही हो गया। (तफ़सीरे नईमी)

१५२) जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ताइफ़ वालों को तब्लीग़ फ़रमाई तो वहाँ के सरदार इब्ने अब्दुल अली इब्ने अब्दे कलाँ ने बहुत गुस्ताख़ी की। हज़रत जिब्रईले अमीन अलैहिस्सलाम पहाड़ों के फ़रिश्ते इस्माईल के साथ हाज़िर हुए। अर्ज़ कियाः "या रसूलल्लाह! रब तआला ने इस फ़रिश्ते को भेजा है। आप हुक्म दें अख़्शबैन पहाड़ मिला दिये जाएं जिससे यह लोग दानों की तरह पिस जाएं।" मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "नहीं यह लोग ज़िन्दा रखे जाएं। अगर यह ईमान न भी लाए तो इन की औलाद ईमान ले आएगी।" (तफ़सीरे इब्ने कसीर, बुख़ारी, मुस्लिम शरीफ़ वग़ैरा)

१५३) किसी मस्त हाल से किसी ने पूछा कि अल्लाह तआला के ९९ नाम क्यों हुए, पूरे सौ क्यों न हुए। उलमा व मशाइख़ इस की बहुत बारीक वुजूह बयान करते हैं। मगर उस मस्त ने कहाः सौ का अदद अपने मेहबूब के लिये ख़ाली रखा गया क्योंकि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुद इस्मुल्लाह हैं। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१५४) सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि हर चीज़ अल्लाह तआला की अब्द है मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब्दुहू हैं। अब्द और अब्दुहू में चन्द तरह के फ़र्क हैं। (१) अब्द वह जो अल्लाह की रज़ा चाहे, अब्दुहू वह कि अल्लाह जिस की रज़ा चाहे। (२) अब्द वह जो अपनी अब्दियत पर नाज़ करे कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, अब्दुहू वह कि जिस की अब्दियत पर कुदरत नाज़

करे, रब तआला खुद फ़रमाए मैं मुहम्मद का रब हूँ। (३) अब्द वह कि उस की शान रब से ज़ाहिर हो, अब्दुहू वह कि रब की शान उस से ज़ाहिर हो। (४) अब्द वह कि जो किसी के लिये बने, अब्दुहू वह जिस के लिये दूसरे बनें। (५) अब्द वह जो रब से मिलना चाहे, मगर अब्दुहू वह कि रब जिस से मिलना चाहे। (६) अब्द वह जो रब की रहमत के पास जाए मगर अब्दुहू वह कि रब की रहमत उसे तलाश करे, उस के पास आए। (७) अब्द वह कि जो कुछ न हो, अब्दुहू वह जो कुछ न हो कर भी सब कुछ हो। (८) अब्द वह जो अपने काम का खुद ज़िम्मेदार हो, अब्दुहू वह जिस के हर काम की ज़िम्मेदार अल्लाह की रहमत हो। (९) अब्द वह जो किसी के लिये बने, अब्दुहू वह कि जिस से सब कुछ बने। (१०) अब्द वह कि करना भी उस का हो और काम भी उस का, अब्दुहू वह कि करना तो उस का हो मगर काम रब का। (तफ़सीरे नईमी)

१५५) हदीस में है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तीस मर्दों की कुव्वत दी गई थी और हुलियतुल औलिया में है कि चालीस जन्नती मर्दों की कुव्वत अता की गई थी और तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि जन्नत के एक मर्द को दुनिया के सौ मर्दों के बराबर कुव्वत होगी। इस हिसाब से हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुनिया के चार हज़ार मर्दों के बराबर कुव्वत दी गई थी। इस कुव्वत से मुबाशिरत की कुव्वत मुराद है। (तफ़सीरे नईमी)

१५६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: आलिम को आबिद पर इतनी फ़ज़ीलत है जितनी मुझे एक अदना मुसलमान पर। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१५७) मदीने के रहने वालों ने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से क़हत की शिकायत की तो उम्मुल मोमिनीन ने फ़रमाया: देखो, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्रे अतहर के ठीक ऊपर छत में एक सूराख़ कर लो कि आसमान और क़ब्रे अनवर के बीच कोई चीज़ आड़ न बने। सहाबए किराम ने ऐसा ही किया। उस साल बहुत ज़ोरों की बारिश हुई और ऊंट इतने मोटे हो गए कि चर्बी से फटे जा रहे थे। उस साल का नाम ही बहुत ज़्यादा सरसब्ज़ी का साल हो गया। (मिश्कात व ज़ुरक़ानी)

१५८) बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत ख़ुबाब बिन अरत रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार ख़ानए कअबा के साए में चादरे मुबारक का तकिया लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे। हम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपनी मुसीबतों की शिकायत की और अर्ज़ किया कि हुज़ूर हमारे लिये दुआ क्यों नहीं फ़रमा देते। तो आप ने फ़रमाया कि तुम से पहले लोग ज़मीन में दाब दिये जाते थे, आरे से चीर कर टुकड़े टुकड़े कर

दिये जाते थे, लोहे की कंघियों से उन के सर का गोश्त नोच लिया जाता था मगर उन्हें कोई मुसीबत दीन से नहीं रोक सकती थी। कसम है रब की यह दीन पूरा हो कर रहेगा, दुनिया में अम्नो अमान का दौर दौरा होगा कि सनआ से हज़रमौत तक लोग बेधड़क जाएंगे मगर तुम जल्दी करते हो। (बुख़ारी शरीफ़)

१५९) मसीहियों के मशहूर अमरीकी सहमाही रिसाले मुस्लिम वर्ल्ड में एक मसीही फ़ाज़िल ने अप्रैल १९५० में लिखा है कि इस्मे मुहम्मद और इस जैसे दूसरे नाम यानी अहमद, महमूद, हामिद वग़ैरा से ज़्यादा मर्दाना नाम दुनिया में चला हुआ नहीं है। (सय्यारा डाइजेस्ट)

१६०) चाँद के दो टुकड़े हो जाने का वाकिआ रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मशहूर मोअजिज़ात में से है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कियाम मक्के में था और हिजरत को अभी पांच साल का ज़माना बाक़ी था कि मक्के के मुश्रिकीन ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा अगर आप अल्लाह के रसूल हैं तो हमें कोई मोअजिज़ा दिखाइये। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के हुक्म से चाँद की तरफ़ उंगली से इशारा कर दिया। लोगों ने देखा कि चाँद दो टुकड़ों में फटा हुआ है। हदीसों में यह ख़बर एक नहीं दस सहाबा से रिवायत हुई है जिन में हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद, हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास और हज़रत अनस बिन मालिक वग़ैरहुम शामिल हैं। और सबसे बढ़ कर कुरआने मजीद की सूरए कमर इस मोअजिज़े की शाहिद है। (बुख़ारी शरीफ़)

१६१) ख़ैबर के दिन हुज़ूरे अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम बिन मुश्किम की बीवी ज़ैनब बिन्ते हारिस यहूदिया ने बकरी के गोश्त में मिला कर ज़हर दिया था। (बुख़ारी शरीफ़)

१६२) हज़रत आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मुख़्तलिफ़ चीज़ें उमदा और मअमूली पेश की जातीं तो आप बीच के दर्जे की चीज़ को पसन्द फ़रमाते, न बहुत उमदा, न बहुत मअमूली। (बुख़ारी शरीफ़)

१६३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी और दुनिया की मिसाल ऐसी है जैसे कोई सवार किसी दरख़्त के साए में दम लेता है और फिर आगे रवाना हो जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

१६४) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आईना देखते तो फ़रमाते: अल्लाह का हज़ार हज़ार शुक्र है जिस ने मेरी सूरत और सीरत दोनों अच्छी बनाई हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१६५) हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु अपने वालिद सय्यिदुना इमाम हुसैन शहीदे करबला रज़ियल्लाहु अन्हु के वास्ते से अपने दादा हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं आदम अलैहिस्सलाम के पैदा होने से चौदा हज़ार साल पहले अपने पर्वरदिगार के हुज़ूर एक नूर (रूह) था। (तफ़सीरे नईमी)

१६६) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत दो क़िस्म की हैः एक वह जिन के हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबी हैं और जिन पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मानना और आप पर ईमान लाना फ़र्ज़ है। इसे उम्मते दअवत कहते हैं। दुसरी वह जिन्हों ने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सही तौर पर मान भी लिया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान भी ले आए। इन्हें उम्मते इजाबत कहते हैं। सारा आलम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मते दअवत है और हम मुसलमान उम्मते इजाबत हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१६७) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "ऐ मुसलमानो, तुम से उम्मतों का अदद पूरा हुआ। अब सब में तुम अफ़ज़ल और अल्लाह तआला को ज़्यादा मेहबूब हो। (तिर्मिज़ी)

१६८) एक बार अल्लाह तआला ने अपने मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पयाम भेजा कि तुम कहो तो मैं मक्के के दो पहाड़ों को जिन्हें ख़शबैन कहते हैं सोने का बना दूँ कि वह तुम्हारे साथ रहें। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अर्ज़ की कि मैं यह चाहता हूँ कि एक दिन दे कि शुक्र बजा लाऊं। एक दिन भूखा रख कि सब्र करूं। (बुख़ारी)

१६९) जब हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोहे सफ़ा पर पहली बार लोगों को दअवते आम दी तो दअवते हक़ की सब से पहली मुख़ालिफ़त अबू लहब ने की थी और बड़ी हिक़ारत से कहा थाः "तुम ग़ारत हो, क्या यही बकवास सुनाने के लिये तुम ने हम को बुलाया था। (बुख़ारी)

१७०) हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन कामों से उम्र भर परहेज़ किया। तकब्बुर से, बहस और तकरार से और लायअनी और फ़ुजूल बातों से। इसी तरह आप ने तीन बातों से लोगों को हमेशा मेहफ़ूज़ रखा। कभी किसी की मज़म्मत या तौहीन नहीं फ़रमाई, किसी को ऐब नहीं लगाया, न किसी से उस की ज़ात के मुताल्लिक़ कुरेद कुरेद कर कोई बात पूछी। आप सिर्फ़ ऐसे मौक़ों पर कलाम फ़रमाते जब आप को यक़ीन होता कि यह बात अल्लाह तआला को खुश और राज़ी करने

वाली है। (बुख़ारी शरीफ़)

१७१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने कोई ऐसा नबी नहीं भेजा जिस ने बकरियाँ न चराई हों। सहाबा ने अर्ज़ कियाः "या रसूलल्लाह! क्या आप ने भी?" फ़रमायाः "मैं मक्के वालों की बकरियाँ उजरत पर चराया करता था।" (बुख़ारी शरीफ़)

१७२) उलमाए किराम हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वुजूदे गिरामी से दुनिया को मिलने वाली रहमत के बारे में कहते हैं कि मिट्टी को आप की यह रहमत मिली कि वह पाक करने वाली हो गई। और पानी को तूफ़ान से रोक दिया गया, और हवा शैतानों के रास्ते से सलामत हो गई और आंधी कुफ़्फ़ार को हलाक करने से मेहफ़ूज़ हो गई और आग सदक़ात के जलाने से बच गई और आसमान शैतानों की रसाई और बातों को चोरी छुपे सुनने से मेहफ़ूज़ हो गया। (तफ़सीरे नईमी)

१७३) कुछ उलमा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इस्मे मुबारक और आप की कुन्नियत दोनों को जमा करके नाम रखने से मना करते हैं और एक एक करके रखने को जाइज़ बताते हैं यानी या तो अबुल क़ासिम नाम रखो या मुहम्मद नाम रखो। इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि का मज़हब यह है कि बिल्कुल मना है और इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि का मज़हब यह है कि बिल्कुल जाइज़ है और तीसरा मज़हब यह है कि अबुल क़ासिम नाम रखना उस शख़्स के लिये नाजाइज़ है जिस का नाम मुहम्मद नहीं है। (तफ़सीरे नईमी)

१७४) एक हदीस में है कि जो क़ौम किसी मशवरे के लिये जमा हुई और उन में कोई एसा है जिस का नाम मुहम्मद है तो यक़ीनन अल्लाह तआला उन के काम में बरकत देगा। (तफ़सीरे नईमी)

१७५) हदीस में है कि जिस का नाम मुहम्मद होगा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस की शफ़ाअत फ़रमाएंगे और जन्नत में दाख़िल करवाएंगे। (तफ़सीरे नईमी)

१७६) एक रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़रमाया मुझे क़सम है अपने इज़्ज़ो जलाल की, किसी एक पर अज़ाब न करूंगा जिस का नाम ऐ मेहबूब तुम्हारे नाम पर है। (तफ़सीरे नईमी)

१७७) हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम से रिवायत है कि फ़रमायाः कोई दस्तरख़्वान नहीं कि बिछाया गया हो और उस पर लोग खाने आएं और उन में अहमद या मुहम्मद नाम वाले हों मगर यह कि हक़ तआला उस घर को जिस में यह दस्तरख़्वान बिछाया गया हो उसे रोज़ाना दो बार पाक न फ़रमाए। (तफ़सीरे नईमी)

१७८) ख़तीबे बग़दादी ने अपनी सनद के साथ यह हदीस रिवायत की कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वालिदा हज़रत बीबी आमिना ने फ़रमाया कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए तो मैं ने देखा कि एक बहुत बड़ी बदली आई जिस में रौशनी के साथ घोड़ों के हिनहिनाने और परिन्दों के उड़ने की आवाज़ थी और कुछ इन्सानों की बोलियां भी सुनाई देती थीं। फिर एक दम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे सामने से ग़ायब हो गए और मैं ने सुना एक एलान करने वाला एलान कर रहा था कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मशरिक़ और मग़रिब में गश्त कराओ और उन को समुन्द्रों की भी सैर कराओ ताकि तमाम कायनात को इन का नाम, इन का हुलिया, इन की सिफ़त मालूम हो जाए और इन को तमाम जानदार मख़लूक़ यानी जिन्न व इन्स, फ़रिश्तों और चरिन्द परिन्द के सामने पेश करो और इन्हें हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की सूरत, हज़रत शीस अलैहिस्सलाम की मअरिफ़त, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की शुजाअत, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ख़ुल्लत, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की ज़बान, हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की रज़ा, हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की फ़साहत, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की हिकमत, हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम की बशारत, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शिद्दत, हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम का सब्र, हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की ताअत, हज़रत यूशअ अलैहिस्सलाम का जिहाद, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़, हज़रत दानियाल अलैहिस्सलाम की मुहब्बत, हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम का वक़ार, हज़रत यहया अलैहिस्सलाम की इस्मत, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ज़ोहद अता करके इन को तमाम पैग़म्बरों के कमालात और अख़लाक़े हसना से सजा दो। इस के बाद वह बादल छट गया फिर मैं ने देखा कि आप रेशम के सब्ज़ कपड़े में लिपटे हुए हैं और उस कपड़े से पानी टपक रहा है और कोई पुकारने वाला एलान कर रहा है कि वाह वाह क्या ख़ूब, मुहम्मद को तमाम दुनिया पर क़ब्ज़ा दे दिया गया और कायनात की कोई चीज़ बाक़ी न रही जो उन के क़ब्ज़े में न हो। अब मैं ने चेहरए अनवर देखा तो चौदहवीं के चाँद की तरह चमक रहा था और बदन से पाकीज़ा मुश्क की ख़ुश्बू आ रही थी। फिर तीन शख़्स नज़र आए, एक के हाथ में चाँदी का लोटा, दूसरे के हाथ में सब्ज़ ज़मर्रुद का तश्त, तीसरे के हाथ में एक चमकदार अंगूठी थी। अंगूठी को सात बार धोकर उस ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोनों शानों के बीच मोहरे नबुव्वत लगा दी फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रेशमी कपड़े में लपेट कर उठाया और

एक लम्हे के बाद मेरे सिपुर्द कर दिया। (ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जिल्दः १)

१७९) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ादिमा उम्मे ऐमन का नाम बरकत है। यह आप को आप के वालिद हज़रत अब्दुल्लाह से मीरास में मिली थीं। बचपन में यही आप को खाना खिलाती थीं, कपड़े पहनाती थीं, आप के कपड़े धोती थीं। आगे चल कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने आज़ाद किये हुए गुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु से इन का निकाह कर दिया था जिन से हज़रत उसामा बिन ज़ैद पैदा हुए। (तफ़सीरे नईमी)

१८०) हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु अन्हा का बयान है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान खुली तो सब से पहला जो कलाम आप की ज़बाने मुबारक से निकला वह यह थाः "अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन व सुब्हानल्लाहि बुकरतौं व असीला। (मदारिजुन नबुव्वत)

१८१) ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब में लिखा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिल्कियत में सात घोड़े, पांच ख़च्चर, तीन गधे और दो ऊंटनियां थीं। (जिल्दः ३, पानः ३८६)

१८२) सही रिवायतों से मालूम होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ाते अक़दस के वक़्त जो सवारी के जानवर मौजूद थे उन में एक घोड़ा था जिस का नाम लुहैफ़ था, एक सफ़ेद ख़च्चर था जिस का नाम दुलदुल था। इस की काफ़ी लम्बी उम्र हुई। हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने तक ज़िंदा रहा। एक अरबी गधा था जिस का नाम उफ़ैर था, एक ऊंटनी थी जिस का नाम अज़बा और क़सवा था। इसी ऊंटनी पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत फ़रमाई और इसी की पीठ पर हज्जतुल वदाअ में आप ने अरफ़ात और मिना का ख़ुत्बा पढ़ा था। (तफ़सीरे नईमी)

१८३) एक बार हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुबारक असा अपने दस्ते मुबारक में लेकर मस्जिदे नबवी के मिम्बर पर ख़ुत्बा पढ़ रहे थे कि अचानक जहजाह ग़िफ़ारी नाम का एक बदनसीब उठा और हज़रत उस्माने ग़नी के हाथ से इस मुबारक तबर्रुक को लेकर तोड़ डाला। इस बेअदबी पर उसे अल्लाह तआला की तरफ़ से यह सज़ा मिली कि उस के हाथ में कैन्सर हो गया और पूरा हाथ सड़ गल कर गिर पड़ा और इसी अज़ाब में वह हलाक हो गया। (दलाइलुन नबुव्वत, जिल्दः ३, पानः २११)

१८४) नबुव्वत के एलान के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्कए मुकर्रमा में दो या तीन हज किये लेकिन हिजरत के बाद मदीनए

मुनव्वरा से सन दस हिजरी में आप ने एक हज फ़रमाया जो हज्जतुल वदाअ के नाम से मशहूर है। हज के अलावा हिजरत के बाद आप ने चार उमरे भी अदा फ़रमाए। (तिर्मिज़ी, बुख़ारी व मुस्लिम)

१८५) इब्ने अबी हातिम ने सय्यिदुना अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से एक हदीस बयान की है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मेअराज के सफ़र पर सातवें आसमान से निकले तो एक नहर मुलाहिज़ा फ़रमाई जो याक़ूत और ज़मर्रुद के संगरेज़ों पर जारी है। उसके प्याले सोने, चाँदी, याक़ूत, मोती और ज़बरजद के हैं और उस का पानी शहद से ज़्यादा मीठा और दूध से ज़्यादा सफ़ेद है। फ़रमायाः ऐ जिब्रईल यह क्या है। अर्ज़ किया यह हौज़े कौसर है जो अल्लाह तआला ने आप को अता किया है। (तफ़सीरे नईमी)

१८६) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुर्ग़ और फ़ालूदा खाया है। आप को मिठाई और हलवा बहुत पसन्द था और फ़रमाते थे कि मोमिन मीठा होता है, हलवा पसन्द करता है। (तफ़सीरे मदारिक)

१८७) हारिस इब्ने आमिर इब्ने नौफ़िल इब्ने अब्दे मनाफ़ इब्ने क़ुसई इब्ने किलाब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सख़्त दुशमन था। खुल्लम खुल्ला आप को झुटलाता था मगर जब अपने घर पहुंचता तो घर वालों से कहता कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) झूट बोलने वालों में नहीं, वह बिल्कुल सच्चे हैं। (रूहुल मआनी)

१८८) हिजरत से पहले कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने अरब के यहूदियों की एक जमाअत को, जिन में मालिक इब्ने सैफ़ भी था, हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुनाज़िरा करने के लिये बुलाया। मालिक इब्ने सैफ़ यहूदियों का बड़ा आलिम था। क़ुरैश का मक़सद था कि लोगों के सामने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेइल्मी या यहूदी उलमा के मुक़ाबले में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि अलैहि वसल्लम की बेबसी लोगों पर ज़ाहिर हो और लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान न लाएं। मालिक बिन सैफ़ मुनाज़िरे के लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने हाज़िर हुआ तो हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस से पूछाः मालिक बिन सैफ़, क्या तू तौरात जानता है? वह बोलाः इस वक़्त अरब में मुझ से बड़ा तौरात का आलिम कोई नहीं। फ़रमायाः तुझे क़सम है उस रब की जिस ने मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरात उतारी, क्या तौरात में यह आयत है कि अल्लाह तआला मोटे पादरी को नापसन्द फ़रमाता है। वह बोला कि हाँ। फ़रमायाः तू बहुत पला हुआ मोटा आलिम है। तौरात के हुक्म के मुताबिक़ तू अल्लाह की बारगाह का मरदूद है कि तू अपनी क़ौम से रिश्वतें

लेकर हराम ख़ोरी करके ख़ूब मोटा हुआ है। तू मुझ से मुनाज़िरा बाद में करना पहले तौरात के हुक्म के मुताबिक़ अपना ईमान साबित कर। इस पर मालिक घबरा गया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ मुंह करके बोलाः अल्लाह ने किसी बशर पर कुछ न उतारा, न वही न किताब। उस की इस बेकवास पर खुद यहूदी उसे लअनत मलामत करने लगे और बोले कि तू ने तौरात शरीफ़ के नुज़ूल का ही इन्कार कर दिया। वह बोला कि मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गुस्सा दिलाया जिस से मैं आपे से बाहर हो कर यह कह बैठा। यहूदी बोलेः फिर तू हमारी सरदारी के क़ाबिल नहीं कि तू गुस्से में हमारे मज़हब का ही ख़ात्मा कर डालता है। उसे मन्सब से हटा कर उस की जगह कअब बिन अशरफ़ को अपना पादरी अमीर मुक़र्रर कर लिया। (तफ़सीरे ख़ाज़िन, तफ़सीरे कबीर, मदारिक वग़ैरा)

१८९) इमाम अहमद रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत की कि मैं ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि क्या आप मुझे इजाज़त देते हैं कि मैं आप के बराबर दफ़्न की जाऊं? फ़रमायाः यह कैसे मुमकिन है। वहाँ सिर्फ़ मेरी, अबू बक्र, उमर और ईसा इब्ने मरयम की क़ब्र की जगह है। (मुस्नदे अहमद)

१९०) सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिस्म के हालात शरीअत हैं, दिले मुबारक के हालात तरीक़त, रूहे पाक के हालात हक़ीक़त, सरे शरीफ़ के हालात मअरिफ़त, इन्ही चार चीज़ों यानी शरीअत, तरीक़त, हक़ीक़त और मअरिफ़त का नाम दीन है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दीनुल्लाह हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१९१) अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमायाः मैं ने उम्मते मुहम्मदिया को दो नूर अता फ़रमाए हैं ताकि उन्हें दो अन्धेरियाँ न सतायें। एक नूर क़ुरआन, दूसरा नूर रमज़ान। दो अन्धेरियाँः एक क़ब्र की, दूसरी क़ियामत की अन्धेरी। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१९२) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अमीरे मक्का से ज़मज़म मदीने मंगवाया करते थे। (तफ़सीरे नईमी)

१९३) एक दिन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा कहीं गई हुई थीं। जब वापस आईं तो दरवाज़ा खोला, अन्दर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक तख़्त पर पावँ लटकाए बैठे थे। दरवाज़े की तरफ़ देख कर फ़रमायाः कौन है? हज़रत सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा बोलीं: आप की कनीज़ आयशा। फ़रमायाः कौन आयशा? हज़रत सिद्दीक़ा ने अर्ज़ कियाः मैं अबू बक्र की बेटी आयशा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कौन अबू बक्र? हज़रत आयशा सिद्दीक़ा फ़रमाती हैः मैं ने दरवाज़ा बन्द कर दिया और मैं किसी दूसरी बीवी के घर चली गई। जब वापस आई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछाः आयशा आज घर में खाने का कोई इन्तिज़ाम नहीं है?. हज़रत आयशा ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मैं हाज़िर हुई थी लेकिन आप ने ऐसा ऐसा फ़रमाया तो मैं दूसरी बीवी के यहाँ चली गई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ आयशा तू सच्ची है। मेरा कोई ऐसा वक़्त भी मेरे रब के साथ होता है कि मुक़र्रब फ़रिश्ता और नबीये मुरसल भी आए तो उस को भी दख़ल हासिल न हो। (शरहे हदाइके बख़्शिश, जिल्दः ७, अल्लामा मुहम्मद फ़ैज़ अहमद उवैसी रज़वी)

१६४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा आप के दरवाज़े पर नाखुनों से दस्तक देते थे। (शिफ़ा शरीफ़ लेखक क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि)

१६५) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि एक रात (ग़ालिबन शबे बरात) जनाब सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन के घर तशरीफ़ फ़रमा थे। रात के आख़िरी हिस्से में सरकार जन्नतुल बक़ीअ की तरफ़ तशरीफ़ ले गए और वहाँ दफ़्न हज़रात को सलाम किया और उन के लिये मग़फ़िरत की दुआ फ़रमाई। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे सहाबा से यह भी रिवायत है कि जनाब रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अक्सर बक़ीअ में तशरीफ़ ले जाते और वहाँ दफ़्न सहाबा पर सलाम भेजते और उन की मग़फ़िरत की दुआ फ़रमाते थे। हदीस में आया है कि जन्नतुल बक़ीअ में दफ़्न सत्तर हज़ार लोग बिना हिसाब किताब जन्नत में दाख़िल होंगे। (तफ़सीरे नईमी)

१६६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तीन शख़्स मुझे न देख सकेंगेः पहला माँ बाप का नाफ़रमान, दूसरा सुन्नत तर्क करने वाला, तीसरा मेरा तज़्किरा सुन कर मुझ पर दुरूद न भेजने वाला। अल्लाहुम्मा सल्ले अला सय्यिदना व नबिय्यना मुहम्मदिन व अला आले सय्यिदना व अला असहाबि सय्यिदना मुहम्मदिन व बारिक व सल्लिम। (तफ़सीरे नईमी)

१६७) अबरहा को यूनानी इतिहासकार अबरामस और सुरियानी इतिहासकार अबराहाम लिखते हैं जिस का हबशी तलफ़्फ़ुज़ अबरहा है। यह शख़्स नकटा था इस लिये अशरम कहलाता था। अबरहा बाज़न्तीनी कलीसा को मानता था और बहुत ही कट्टर ईसाई था। उस ने बड़े बड़े शहरों में गिरजा घर बनवाए। सब से बड़ा गिरजा अपनी राजधानी सनआ में बनवाया जिसे अरब अलकैस कहते थे। इस के असर से नजरान में तौहीद परस्त मसीहियों का

ख़ात्मा हो गया और रोमन कैथलिक कलीसा क़ायम हो गया। अबरहा ने हुक्म जारी किया कि लोग कअबे की बजाय उस के बनाए हुए गिरजा में हज के लिये आयें। इस एलान पर गुस्सा हो कर किसी अरब नौजवान ने रात को छुप कर उस के कलीसा को नापाक कर दिया। इस बेहुरमती पर अबरहा ग़ज़बनाक हो गया और कअबे को ढाने के इरादे से अरब पर चढ़ाई कर दी। उस की फ़ौज में साठ हज़ार सिपाही और तेरह या नौ हाथी थे। रास्ते में यमन के सरदार ज़ूनफ़र ने मुक़ाबला किया मगर नाकाम रहा। ख़सअम के इलाक़े में अरब सरदार नुफ़ैल बिन हबीब ने रास्ता रोका मगर वह भी मारा गया। अबरहा की फ़ौज ताइफ़ पहुंच गई। ताइफ़ के क़बीले बनू सक़ीफ़ ने इस डर से कि वह उन के बुत लात को नुक़सान न पहुंचाए, उस की इताअत की और एक शख़्स अबू रग़ाल को रहबर के तौर पर उस के साथ कर दिया। अबू रग़ाल ने लशकर को मक्के का रास्ता दिखाया मगर मक्के से नौ दस मील के फ़ासले पर वह मर गया। बाद में अरब उस की क़ब्र पर पत्थर मारते थे और ताइफ़ वालों को इस बेग़ैरती और ग़द्दारी पर तअने देते थे। (तफ़सीरे नईमी)

१९८) मस्जिदे नबवी में एक चबूतरा था जिस पर छप्पर पड़ा हुआ था इसे सुफ़्फ़ा कहते थे। जिन मुहाजिरों का कोई ठिकाना नहीं होता था वह यहीं रहते थे। (बुख़ारी शरीफ़)

१९९) उम्मते मुहम्मदिया को एक ख़ुसूसियत यह भी हासिल है कि उस ने अपने नबी से बहुत कम सवाल किये। दूसरी उम्मतों की तरह अपने रसूल को सवालों से परेशान नहीं किया। क़ुरआने करीम में उम्मते मुहम्मदिया के कुल चौदा सवाल नक़्ल हैं। आठ तो सूरए बक़रा में हैं। एक सूरए मायदा में कि क्या क्या चीज़ें हलाल हैं? एक सूरए अनफ़ाल में कि अनफ़ाल का क्या मसरफ़ है? एक सूरए बनी इस्राईल में कि रूह क्या है? एक सूरए कहफ़ में कि ज़ुल क़रनैन के क्या हालात हैं? एक सूरए ताहा में पहाड़ों के बारे में, एक सूरए नाज़िआत में क़ियामत के बारे में। (तफ़सीरे नईमी)

२००) सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़ौल है कि जिस ने मेरी वफ़ात के बाद मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उस ने गोया मेरी ज़िंदगी में मुझ से मुलाक़ात की। (बुख़ारी शरीफ़)

२०१) मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो सिर्फ़ मेरी ज़ियारत के लिये मदीने आया न कि दुनियवी ग़र्ज़ से तो मुझ पर वाजिब है कि उस का क़ियामत के दिन शफ़ीअ बनूं। (बुख़ारी शरीफ़)

२०२) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के अख़लाक़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुद ऊंट के आगे चारा डाला करते, घर में झाड़ू देते, जूता सीते, कपड़े में पैवन्द लगाते, बकरी का दूध दोह लेते, ख़ादिम के साथ खाना खाते और जब वह थक जाता तो उस के साथ मिल कर चक्की पीसते। आप बाज़ार से सौदा सुलफ़ खुद उठा कर लाने में शर्म मेहसूस नहीं करते थे। अमीर ग़रीब से मुसाफ़हा करने में पहल करते। किसी तरह की दअवत होती, आप उसे हक़ीर न समझते, चाहे वह अदना क़िस्म की खजूरें ही क्यों न हों। आप नर्म अख़लाक़ वाले और नर्म ख़ू थे, तबियत में करम ही करम था। किसी का मज़ाक़ न उड़ाते, किसी से तीखा कड़वा न बोलते। हर एक से ख़न्दा पेशानी के साथ पेश आते। सख़ी ऐसे कि सख़ावत में फ़ुज़ूल ख़र्ची न होती। इन्तिहाई नर्म दिल थे, हर मुसलमान के साथ रहम दिल थे। आप ने कभी सैर हो कर डकार न ली और न ही किसी तरह के लालच की वजह से किसी चीज़ की तरफ़ हाथ बढ़ाया। (तफ़सीरे नईमी)

२०३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया गया: या नबी आले मुहम्मद कौन हैं? फ़रमाया: हर मुत्तक़ी। (तफ़सीरे नईमी)

२०४) इस में उलमा का इख़्तिलाफ़ है कि बैतुल मक़दिस में वह नमाज़ जिस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नबियों रसूलों की इमामत फ़रमाई थी। वह नमाज़ नफ़्ल थी या फ़र्ज़। अगर फ़र्ज़ नमाज़ थी तो इशा की नमाज़ थी या फ़ज्र की नमाज़? हदीसे मेअ़राज की तफ़सील से मालूम होता है कि बैतुल मक़दिस में तशरीफ़ लाना आसमान पर चढ़ने से पहले है। तो यह नमाज़ इशा की होगी और उस क़ौल के मुताबिक़ जिस में कहा गया है कि यह नमाज़ पढ़ाना आसमान से उतरने के बाद है तो यह सुब्ह की नमाज़ होगी और कुछ उलमा ने इसी को तरजीह दी है क्योंकि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब तमाम कमाल और बरकतें लेकर उतरे तो नबियों और रसूलों पर अपने फ़ज़्ल और शर्फ़ के इज़हार के लिये यह नमाज़ पढ़ी। (तफ़सीरे नईमी)

२०५) अबू जहल का अस्ली नाम अम्र बिन हिशाम था। लोग उसे उस की हिकमत और दानाई की वजह से अबुल हिकम कह कर बुलाते थे। अबू जहल का ख़िताब मुसलमानों का दिया हुआ है। (नुज़्हतुल क़ारी)

२०६) हज़रत अरबाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्हों ने फ़रमाया कि ग़ज़वए तबूक में एक रात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: ऐ बिलाल, क्या तुम्हारे पास खाने की कोई चीज़ है? उन्हों ने अर्ज़ किया: हुज़ूर आप के रब की क़सम, हमारे

तोशेदान ख़ाली हो चुके हैं। रसूले आकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अच्छी तरह देखो और अपने तोशेदान झाड़ो। सब ने अपने अपने तोशेदान झाड़े तो कुल सात खजूरें मिलीं। आप ने उन्हें एक दस्तरख़्वान पर रखा फिर उन पर अपना मुक़द्दस हाथ रखा और फ़रमाया: खाओ अल्लाह के नाम से। हम तीनों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ के नीचे से एक एक उठा कर खाने लगे। हज़रत बिलाल फ़रमाते हैं: मैं बाएं हाथ में गुठलियां रखता जाता था। पेट भर खाने के बाद जब मैं ने गिना तो वह चव्वन थीं। इसी तरह हमारे दोनों साथियों ने भी पेट भर खाया। जब हम लोग सैर हो गए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना हाथ उठा लिया। वह सात खजूरें उसी तरह मौजूद थीं। (ख़साइसे कुब्रा, अल्लामा जलालुद्दीन सियूती रहमतुल्लाहि अलैहि)

२०७) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिब्रईले अमीन अलैहिस्सलाम ने आकर कहा कि परवर्दिगारे आलम फ़रमाता है: आप जानते हैं कि किस चीज़ के साथ आप के ज़िक्र को मैं ने बलन्द किया है। मैं ने कहा: अल्लाह तआला ही ज़्यादा जानता है। कहा: इस तरह पर कि इज़ा ज़ुकिरता ज़ुकिरत मइया यानी जब आप का ज़िक्र हो तो मेरे साथ ज़िक्र किया जाए और मैं ने पूरे ईमान के लिये आप के ज़िक्र के साथ अपने ज़िक्र को लाज़िम किया यानी ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह और मैं ने आप के ज़िक्र को अपना ज़िक्र, आप की इताअत को अपनी इताअत क़रार दिया है। लिहाज़ा जो कोई भी आप का ज़िक्र करेगा वह मेरा ही ज़िक्र होगा और आप की इताअत मेरी ही इताअत होगी। मैयं युतिइर रसूला फ़क़द अताअल्लाह यानी जिस ने रसूल की इताअत की उस ने अल्लाह की इताअत की। और आप की पैरवी को अपनी मुहब्बत का हिस्सा क़रार दिया: फ़त्तबिऊनी युहबिब कुमुल्लाह यानी फ़रमा दो मेरा इत्तिबाअ करो अल्लाह तुम्हें मेहबूब बना लेगा। (बुख़ारी शरीफ़)

२०८) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान के ख़त्म तक बिस्तर पर तशरीफ़ नहीं लाते थे। (बुख़ारी शरीफ़)

२०९) मशहूर तारीख़ी तलवार ज़ुलफ़िक़ार का यह नाम इस लिये पड़ा कि इस में १८ दनदाने थे। पहले यह तलवार मुनब्बिह बिन हज्जाज सहमी की मिल्कियत में थी। बद्र की ग़नीमत में आई थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास रहती थी। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ग़ज़वए ख़न्दक़ में मौला अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम को बख़्श दी थी। हारून रशीद तक इस का

पता चलता है। वह खुद भी कभी कभी इस तलवार को लगाया करते थे। (मदारिजुन-नबुव्वत)

२१०) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अंगूठी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु के पास थी। फिर सय्यिदुना उमरे फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हु के पास रही फिर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु को मिली। जब उन की ख़िलाफ़त को ६ बरस बीत गए तो वह एक दिन अरीस नामी कुंवें पर बैठे हुए थे कि हाथ से निकल कर कुंवें में गिर पड़ी। तीन दिन तक तलाश किया गया, कुंवें का सारा पानी भी निकाला गया मगर अंगूठी न मिली। (बुख़ारी शरीफ़)

२११) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मिम्बरे शरीफ़ के तीन दर्जे थे। हुज़ूर सब से ऊपर के दर्जे में बैठते थे और बीच के दर्जे में क़दम शरीफ़ रखते थे। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु अपने अहदे ख़िलाफ़त में अदब की वजह से नीचे के दर्जे पर खड़े होते थे और जब बैठते तो पावँ सब से नीचे रखते थे। (नुज़्हतुल क़ारी)

२१२) अबू यअला रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दौलत ख़ाने में कई दिन तक खाना नहीं पका। जब भूख का ग़लबा हुआ तो अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात के घरों में तशरीफ़ ले गए मगर किसी के पास कुछ न पाया। फिर हज़रत ख़ातूने जन्नत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ लाए और पूछा कि घर में खाने को कुछ है? अर्ज़ किया: नहीं या रसूलल्लाह! वहाँ से वापस ही हुए थे कि किसी पड़ोसी ने हज़रत ख़ातूने जन्नत के घर दो रोटियाँ और कुछ गोश्त भेजा। ख़ातूने जन्नत ने सोचा कि अगर्चे हमें ज़रूरत है फिर भी यह खाना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश करूंगी। इस ख़्याल से वह खाना एक बर्तन में रख दिया और हज़राते हसनैने करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में भेजा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए। हज़रत बीबी साहिबा ने वह खाना अपने बाबा जान की ख़िदमत में पेश किया। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा: फ़ातिमा यह खाना कहाँ से आया? अर्ज़ किया: यह अल्लाह की तरफ़ से है। अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रिज़्क बहम पहुंचाता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुस्कुराए और फ़रमाया: अल्हम्दु लिल्लाह, मेरी फ़ातिमा मरयम की तरह है। वह भी ग़ैबी खाना पाकर यही कहा करती थीं। फिर वह खाना सब घर वालों ने खाया और उसमें इतनी बरकत हुई कि मुहल्ले भर में तक़सीम किया गया। (रूहुल बयान, रूहुल मआनी)

२१३) जैसी मुकम्मल तारीख़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लिखी गई ऐसी दुनिया में किसी की नहीं लिखी गई। हयाते पाक का हर वाकिआ तारीख़ में आया और इस एहतियात के साथ आया कि बाक़ायदा उस के लिये सनदें बनीं। जो रावी किसी सनद में आ गया उस की भी तारीख़ लिख दी गई। मुसलमान के सिवा कोई दीन वाला अपने पेश्वा की इतनी मुकम्मल और मुस्तनद सवानेह उमरी बयान नहीं कर सकता। (तफ़सीरे नईमी)

२१४) रिवायत है कि मदीनए मुनव्वरा में एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया। उस की मुट्ठी बन्द थी। उस ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा: अगर आप अल्लाह के रसूल हैं तो बताइये कि मेरी मुट्ठी में क्या है? आप ने फ़रमाया: तेरी मुट्ठी में खजूर की जली हुई गुठलियां हैं। उस ने अपनी मुट्ठी खोली तो वाक़ई जली हुई गुठलियाँ निकलीं। वह बोला: अब आप इन को ज़मीन में बो दें, इन में से अभी पेड़ निकले जिस का फल मैं खाऊं। तब मैं आप पर ईमान ले आऊंगा। दोनों आलम के मालिक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गुठलियों को दस्ते मुबारक में लिया और ज़मीन में बो दिया। फिर उन पर थोड़ा सा पानी डाला। उसी वक़्त खजूर का पेड़ निकल आया और उस में उसी वक़्त ख़ोशे पैदा हुए और पक भी गए और खजूरें गिरने लगीं। वहाँ मौजूद लोगों ने इन खजूरों को ख़ूब जी भर के खाया। यह देख कर बहुत सारे लोग आप पर ईमान ले आए। आज भी मदीनए मुनव्वरा में इन खजूरों की नस्ल बाक़ी है। इस खजूर को हिल्ला कहते हैं और इसे खाने से आज भी जली हुई खजूर की बू आती है। (खसाइसे कुब्रा)

२१५) हज़रत रबीआ बिन कअब अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि एक रोज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे मुख़ातब करके फ़रमाया: मांग लो जो मांगना चाहते हो। मैं ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! जन्नत में आप की रिफ़ाक़त का तलबगार हूँ। आप ने फ़रमाया: और कुछ? मैं ने अर्ज़ किया: बस यही मतलूब है। आप ने फ़रमाया: तो फिर अपने मतलूब के हुसूल के लिये कसरते सुजूद से मेरी मदद करो। (यानी मेरे दुआ करने के साथ तुम नवाफ़िल का भी एहतिमाम करो।) (सुनने अबू दाऊद)

२१६) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मग़फ़ल रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! मुझे आप से मुहब्बत है। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो कुछ कह रहे हो सोच समझ कर कहो। तो उन्हों ने तीन बार कहा: या रसूलल्लाह! ख़ुदा की क़सम मुझे आप से

मुहब्बत है। आप ने फ़रमायाः अगर मुझ से मुहब्बत रखते हो तो फिर फ़क्र और फ़ाक़े के लिये तय्यार हो जाओ क्योंकि जो मुझ से मुहब्बत रखता है फ़क्रो फ़ाक़ा उस की तरफ़ इस से ज़्यादा तेज़ी से आता है जिस तेज़ी से पानी ऊंचाई से ढलान की तरफ़ बहता है। (तिर्मिज़ी)

२१७) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस ने मेरी सुन्नत से मुहब्बत की उस ने मुझ से मुहब्बत की और जिस ने मुझ से मुहब्बत की वह जन्नत में मेरे साथ होगा। (तारीख़े इब्ने असाकिर)

२१८) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान हैः तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह अपनी ख़्वाहिशात को मेरी लाई हुई शरीअत के ताबेअ न करदे। (मिशकात शरीफ़)

२१९) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी उम्मत का हर शख़्स जन्नत में दाख़िल होगा सिवाए उस शख़्स के जिस ने इन्कार किया। सहाबए किराम ने पूछाः या रसूलल्लाह! ऐसा कौन शख़्स होगा जो जन्नत में जाने से इन्कार करे? फ़रमायाः जिस ने मेरी इताअत की वह जन्नत में जाएगा और जिस ने मेरी नाफ़रमानी की उस ने इन्कार किया। (अल-हदीस)

२२०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सर से क़दमे मुबारक तक ऐसा मुकम्मल हुलिया शरीफ़ लिखा गया कि किसी का न लिखा जा सका। अज़वाजे मुतह्हरात ने घर के अन्दर की ज़िन्दगी और सहाबए किराम ने घर के बाहर की ज़िन्दगी का ऐसा नक़्शा पेश किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिन रात की मसरूफ़ियात के बारे में किसी को कुछ शक व शुबह बाक़ी न रहे। (तफ़सीरे नईमी)

२२१) शाम के यहूदी आलिमों में से दो आलिम हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। जब उन्हों ने मदीनए मुनव्वरा को देखा तो एक दूसरे से कहने लगाः नबीये आख़िरुज़्ज़माँ के शहर की यही सिफ़त है जो इस शहर में पाई जाती है। जब आस्तानए अक़दस पर हाज़िर हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शक्ले मुबारक और आला अख़लाक़ को तौरात के मुताबिक़ देख कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहचान लिया और अर्ज़ कियाः आप मुहम्मद हैं? आप ने फ़रमायाः हाँ। फिर पूछाः क्या आप अहमद हैं? फ़रमायाः हाँ। अर्ज़ करने लगेः हम एक सवाल पेश करते हैं, अगर आप ने सही जवाब दे दिया तो हम आप पर ईमान ले आएंगे। फ़रमाइये कि अल्लाह की किताब में सब से बड़ी गवाही कौन सी है?

इस पर आयते करीमाः शहिदल्लाहु अन्नहु ला इलाहा इल्ला हुवा (अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं) नाज़िल हुई जिसे सुन कर वह दोनों मुसलमान हो गए। (रूहुल मआनी, रूहुल बयान, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान वग़ैरा)

२२२) ताजदारे हरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी तरफ़ झूटी निस्बत ऐसी मामूली चीज़ नहीं जैसी दूसरों की तरफ़ होती है। जो शख़्स जान बूझ कर मेरी तरफ़ झूटी बात मन्सूब करे वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले। (शैख़ैन व तिर्मिज़ी)

२२३) मुस्लिम ने हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सितारे अमान हैं आसमान के लिये, जब सितारे जाते रहेंगे तब आसमान पर वह आएगा जिस का उस से वादा है यानी शक़ होना और फ़ना हो जाना। और मैं अमान हूँ अपने अस्हाब के लिये। जब मैं तशरीफ़ ले जाऊंगा तब मेरे अस्हाब पर वह आएगा जिस का उन से वादा है यानी मुशाजरत (लड़ाई झगड़े, मत भेद, फ़साद) और मेरे सहाबा अमान हैं मेरी उम्मत के लिये। जब मेरे सहाबा न रहेंगे तब मेरी उम्मत पर वह आएगा जिस का उन से वादा है यानी झूट का ज़हूर, बुरे अक़ीदे और काफ़िरों का तसल्लुत। (अहमद)

२२४) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हमले मुबारक की निशानियों में एक निशानी यह थी कि कुरैश के जितने चौपाए थे उस रात सब ने कलाम किया और कहाः रब्बे कअबा की क़सम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमल में तशरीफ़ फ़रमा हुए। वह तमाम दुनिया की पनाह और अहले आलम के सूरज हैं। (अल-अम्नु वल उला लि-नाइतिल मुस्तफ़ा बि'दाफ़िइल बला, लेखक इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि)

२२५) हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम लाते ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ कीः बेशक मैं हुज़ूर की सिफ़त तौरात में पाता हूँ। ऐ नबी, बेशक हम ने तुझे भेजा गवाह और अपनी उम्मत के तमाम अहवाल व अफ़आल पर मुत्तलअ और बाख़बर और ख़ुशख़बरी देता हुआ और डर सुनाता हुआ। अल्लाह तआला इस नबी को न उठाएगा यहाँ तक कि लोग ला इलाहा इल्लल्लाह कह दें और इस नबी के ज़रिये से अन्धी आँखें, बहरे कान और ग़िलाफ़ चढ़े हुए दिल खुल जायें। (इब्ने असाकिर, दारमी, बेहक़ी)

२२६) अल्लाह तआला ने अपने नबी शअया अलैहिस्सलाम को वही भेजीः बेशक मैं एक नबिय्ये उम्मी को भेजने वाला हूँ जिस के ज़रिये से बहरे कान

और ग़िलाफ़ चढ़े हुए दिल और अन्धी आँखें खोल दूंगा और उस के सबब गुमराही के बाद हिदायत दूंगा। उस के ज़रिये से जहालत के बाद इल्म दूंगा, उस के वसीले से गुमनामी के बाद नेकनामी दूंगा, उस के ज़रिये से नाशनासी के बाद शनाख़्त दूंगा, उस के वास्ते से कमी के बाद कसरत दूंगा, उस के सबब मोहताज के बाद ग़नी कर दूंगा, उस के वसीले से फूट के बाद यकदिली कर दूंगा, उस के वसीले से परेशान दिलों, मुख़्तलिफ़ ख़्वाहिशों, बिखरी हुई उम्मतों में मेल कर दूंगा। (इब्ने अबी हातिम ने वहब बिन मुनब्बिह से रिवायत किया)

२२७) हज़रत राफ़ेअ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब अल्लाह तआला ने अर्श बनाया उस पर नूर के क़लम से, जिस का तूल मश्रिक़ से मग़रिब तक था, लिखाः अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। मैं उन्ही के वसीले से दूंगा और उन्ही के वास्ते से लूंगा। उन की उम्मत सब उम्मतों से अफ़ज़ल है और उन की उम्मत में सब से अफ़ज़ल अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु।

२२८) तौरात के सफ़रे चहारुम में हैः अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कहाः बेशक हाजिरा के औलाद होगी और उस के बच्चों में वह होगा जिस का हाथ सब पर बाला है और सब के हाथ उस के आगे फैले हैं आजिज़ी और गिड़गिड़ाने में। वह हैं मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। क़ुर्बान तेरे ऐ बलन्द हाथ वाले, ऐ दो जहाँ के उजाले, हम्द उसके वजहे करीम को जिस ने हमारी आजिज़ी और मोताजी के हाथ हर लईमे बे क़ुदरत से बचाए और तुझ जैसे करीम, रऊफ़ो रहीम के सामने फैलाए। (तोहफ़ए इस्ना अशरिया)

२२९) तोहफ़ा में ज़बूर शरीफ़ से मन्क़ूल हैः ऐ अहमद! रहमत ने जोश मारा तेरे लबों पर। मैं इस लिये तुझे बरकत देता हूं, तू अपनी तलवार हिमाइल कर कि तेरी चमक और तेरी तारीफ़ ग़ालिब है। सब उम्मतें तेरे क़दमों में गिरेंगी। सच्ची किताब लाया अल्लाह। बरकत और पाकी के साथ मक्का के पहाड़ से भर गई ज़मीन अहमद की हम्द और उस की पाकी बोलने से। अहमद मालिक हुआ तमाम ज़मीन और सब उम्मतों की गर्दनों का। ऐ प्यारे अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मम्लूको! ख़ुशी और शादमानी है तुम्हारे लिये मालिक प्यारा सरापा करम सरापा रहमत है।

२३०) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वालिदा माजिदा बीबी आमिना रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती थीं: जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे

शिकम से पैदा हुए, मैं ने देखा सज्दे में पड़े हुए हैं। फिर एक सफ़ेद अब्र ने आसमान से आकर उन्हें ढाँप लिया कि मेरे सामने से ग़ायब हो गए। फिर वह पर्दा हटा तो मैं क्या देखती हूँ कि हुज़ूर एक ऊनी सफ़ेद कपड़े में लिपटे हुए हैं और सब्ज़ रेशमी बिछौना बिछा है और गौहरे शादाब की तीन चाबियाँ हुज़ूर की मुट्ठी में हैं और एक कहने वाला कह रहा है कि कामयाबी की चाबियाँ, नफ़ा की चाबियाँ और नबुव्वत की चाबियाँ सब पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ब्ज़ा फ़रमा लिया। फिर और अब्र ने आकर हुज़ूर को ढाँप लिया कि मेरी निगाहों से छुप गए। फिर रौशन हुआ तो क्या देखती हूँ कि एक सब्ज़ रेशम का लिपटा हुआ कपड़ा हुज़ूर की मुट्ठी में है और पुकारने वाला पुकार रहा है: वाह वाह, सारी दुनिया मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुट्ठी में आ गई। ज़मीन और आसमान में कोई मख़लूक़ ऐसी न रही जो उनके क़ब्ज़े में न आई हो। (अबू नुऐम हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रावी)

२३१) हाफ़िज़ अबू ज़करिया यहया बिन आइज़ अपने मोलिद में हज़रत अब्दुल्लह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने हज़रत आमिना ज़हरिय्या रज़ियल्लाहु अन्हा का क़ौल नक़्ल फ़रमाया: जन्नत के ख़ाज़िन रिज़वान अलैहिस्सलाम ने सय्यिदुल कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत के बाद आप को अपने परों में ले कर गोशे अक़दस में अर्ज़ की: हुज़ूर के साथ नुसरत की कुन्जियां हैं और रोअब व दबदबे का जामा हुज़ूर को पहनाया गया है। जो हुज़ूर का चर्चा सुनेगा उस का दिल डर जाएगा और जिगर काँप उठेगा अगर्चे हुज़ूर को देखा न हो, ऐ अल्लाह के नायब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

२३२) सहीहैन में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: बेशक मेरे कई नाम हैं: मैं मुहम्मद हूं, मैं अहमद हूं, मैं माही यानी कुफ़्र और शिर्क का मिटाने वाला हूं कि अल्लाह तआला मेरे ज़रिये से कुफ़्र मिटाता है। मैं हाशिर यानी मख़लूक़ को हश्र देने वाला हूं कि मेरे क़दमों पर तमाम मख़लूक़ का हश्र होगा। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। (मालिक, अहमद, अबू दाऊ तयालिसी, इब्ने सअद, बुख़ारी व़ मुस्लिम, तिर्मिज़ी, निसाई, तबरानी, हाकिम, बेहक़ी)

२३३) इब्ने असाकिर ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरा नाम क़ुरआन में मुहम्मद है, इन्जील में अहमद और तौरात में उहीद है और मेरा नाम उहीद इस लिये हुआ कि मैं अपनी उम्मत से नारे दोज़ख़ को दफ़ा फ़रमाने वाला हूं।

२३४) सही बुख़ारी, सही मुस्लिम और मुस्नदे इमाम अहमद में सय्यिदुना इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है उन्हों ने हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ की कि हुज़ूर ने अपने चचा अबू तालिब को क्या नफ़ा दिया। खुदा की क़सम वह हुज़ूर की हिमायत करता और हुज़ूर के लिये लोगों से झगड़ता था। फ़रमायाः मैं ने उसे सरापा आग में डूबा हुआ पाया तो मैं ने उसे खींच कर पावँ तक की आग में कर दिया।

२३५) इब्ने असाकिर ने रिवायत की है कि फ़त्हे ख़ैबर के दिन एक ख़च्चर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर बात करने लगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस से पूछाः तेरा नाम क्या है? उस ने जवाब दियाः या रसूलल्लाह! मेरा नाम यज़ीद बिन शहाब है। मेरे दादा की नस्ल से साठ ख़च्चर पैदा हुए। उन की पीठ पर पैग़म्बर के सिवा कोई दूसरा नहीं चढ़ा। मेरे दादा की नस्ल में से अब मेरे सिवा कोई बाक़ी नहीं है। अब आप के सिवा कोई दूसरा पैग़म्बर भी नहीं है। मैं अब तक इस उम्मीद और इन्तिज़ार में जी रहा हूँ कि आप मेरे ऊपर सवारी करेंगे। मैं एक यहूदी के पास था, वह यहूदी मुझे भूखा रखता था। जब आप का शौक़ मुझ पर ग़ालिब आया तो मैं जान बूझ कर लंगड़ाने लगा ताकि वह यहूदी मुझ पर सवार न होने पाए। आज मैं आप की ख़िदमते अक़दस में आ गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अब तू अपना ग़म भूल जा। मैं तेरा नाम यअफ़ूर रखता हूं। इस के बाद वह ख़च्चर हमेशा सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में रहा। आप की सोहबत का उस पर ऐसा असर हुआ कि अक़्ल दंग रह जाती है। कभी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस से फ़रमाते कि जा फ़ुलाँ शख़्स को बुला ला। वह फ़ौरन उस शख़्स के घर जाता और अपने सर से उस के दरवाज़े को ठोंकता। जब वह शख़्स बाहर आता तो यह इशारे से उसे समझा देता कि तुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम याद फ़रमा रहे हैं। वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कलाम को समझ लेता था। जब सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रहलत फ़रमाई तो यह शिद्दते ग़म से तड़पने लगा। आप की जुदाई को बरदाशत न कर सका आख़िर आक़ा से जुदाई के जुनून में एक कुवें में गिर कर जान दे दी।

२३६) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक बार एक भेड़िये ने एक बकरी को दबोच लिया। चरवाहे ने बकरी को भेड़िये से छुड़ाना चाहा तो वह इन्सानी आवाज़ में बोलाः अल्लाह से डर, वह रज़्ज़ाक़ सब को रिज़्क़ देने वाला है। तू इस रिज़्क़ को मुझ से मत छीन। इस गुफ़्तगू

से चरवाहा बहुत हैरान हुआ और बोलाः कमाल है जानवर भी बोलता है। भेड़िया बोलाः मेरा कलाम करना कुछ अजीब नहीं है बल्कि हैरत की बात यह है कि तू अल्लाह के पैग़म्बर को छोड़ कर एक बकरी के लिये यहाँ खड़ा है। अल्लाह की तरफ़ से आज तक कोई ऐसा रसूल पैदा नहीं हुआ। अल्लाह के हुज़ूर उन से बुजुर्ग व बरतर कोई नहीं है। जन्नत के सारे दरवाज़े उन पर खुले हुए हैं और जन्नत के सब लोग उन के अरहाब हैं। जन्नत के फ़रिश्ते, हूरो ग़िल्माँ सब रात दिन उन का इन्तिज़ार करते हैं। तेरे और उस पैग़म्बर के बीच उस छोटे से गोह के सिवा कोई और चीज़ हाइल नहीं है। तू अब फ़ौरन उन की ख़िदमत में हाज़िर हो कर इस्लाम क़ुबूल कर ले। चरवाहा बोलाः मैं अभी जाता हूँ मगर मेरी बकरियों को कौन चराएगा? भेड़िये ने कहाः तेरी बकरियों को मैं चराता रहूंगा और जब तक तू लौट कर न आए मैं इन की देख भाल करूंगा। चरवाहा मदीने की तरफ़ रवाना हुआ और सय्यिदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर सारा माजरा कह सुनाया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अज़ान का हुक्म दिया। सब लोग जमा हो गए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चरवाहे को हुक्म दिया कि सब लोगों के सामने अपना अहवाल सुनाए। चरवाहे ने सारा वाक़िआ फिर से दोहरा दिया। वह यहूदी था फ़ौरन ईमान ले आया। फिर जंगल जाकर देखा तो वाक़ई भेड़िया बकरियों की निगरानी कर रहा था। यह देख कर चरवाहा बहुत खुश हुआ और एक बकरी भेड़िये को दे दी। (सीरते रसूले अरबी)

२३७) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आम तौर पर हर दो शम्बे को रोज़ा रखा करते थे। अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! आप इतनी पाबन्दी से दो शम्बे का रोज़ा क्यों रखते हैं? फ़रमायाः इसी दिन मैं पैदा हुआ और इसी दिन मैं मबऊस हुआ और मुझ पर क़ुरआन नाज़िल हुआ। (सही मुस्लिम)

२३८) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिजरत से पहले हरमे मक्का में जब भी नमाज़ अदा फ़रमाते तो हजरे असवद और रुक्ने यमानी की दीवार को क़िब्ला बनाते और कअबे को अपने और बैतुल मक़दिस के बीच रखते। (ज़ियाउन्नबी, जिल्दः २)

२३९) अगर्चे मक्के के सारे मुश्रिकीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ पहुंचाने और बुरा भला कहने में अपनी सी कोशिशों में लगे रहते थे, लेकिन पांच सरदार इन मज़ालिम में दूसरों से बाज़ी ले गए थे। इन पांचों के नाम यह हैं: वलीद बिन मुग़ीरा, आस बिन वाइल, हरस बिन कैस, असवद

बिन अब्दे यगूस और असवद बिन मुत्तलिब। (ज़ियाउन्नबी, जि: २)

२४०) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मअमूल था कि जब आप के पास किसी की शिकायत पहुंचती तो आप यह कभी न कहते कि फुलाँ शख़्स का क्या हाल है बल्कि यूँ फ़रमाते: उन क़ौमों का क्या हाल है जो ऐसा करते हैं या ऐसा कहते हैं। (अबू दाऊद)

२४१) अम्बियाए किराम में से सिर्फ़ नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ही हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम को उन की अस्ल शक्ल में देखा। (ज़ियाउन्नबी, जि: २)

२४२) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबए किराम को समझाने के लिये ज़मीन पर एक सीधी लकीर खींची फिर उस से निकलती हुई कई लकीरें खींचीं और अपनी बात की वज़ाहत करते हुए फ़रमाया: यह सीधी लकीर सिराते मुस्तक़ीम है जो चलने वालों को सीधा मन्ज़िल तक पहुंचा देती है। इस सीधी लकीर से निकलने वाली दूसरी सब लकीरें दूसरे रास्ते हैं जो भले ही इस सीधे रास्ते से निकलते हैं मगर मन्ज़िल पर पहुंचाने के बजाए कहीं और ले जाते हैं। (मुस्नदे अहमद, जि: १)

२४३) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शव्वाल दस नबवी में तब्लीग़ की ग़र्ज़ से ताइफ़ तशरीफ़ ले गए मगर वहाँ के लोगों ने आप के साथ बदसुलूकी की जिस की वजह से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शदीद ज़ख़्मी हो गए। ताइफ़ से वापसी पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वादीए नख़्ला में दस दिन ठहरे। इस दौरान नसीबैन (तुर्की) से आने वाले जिन्नों की एक जमाअत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुई। उन्हों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से क़ुरआन सुना और आप पर ईमान लाए। उस वक़्त सूरए अहक़ाफ़ की आयतें नाज़िल हो रही थीं। यह वाक़िआ जिस जगह पेश आया वह अस्सैलुल कबीर था। इस से पहले नबुव्वत के इब्तिदाई दौर का वाक़िआ है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्के से उकाज़ा जा रहे थे। रास्ते में आप ने चन्द सहाबा के साथ सुब्ह की नमाज़ अदा की। इस बीच जिन्नों की एक जमाअत वहाँ गुज़री जो मुश्रिकीन थे और रिसालत का इन्कार करने वाले थे। उन्हों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बाने अक़्दस से क़ुरआन की तिलावत बहुत ग़ौर से सुनी और आप पर ईमान ले आए। उस मौक़े पर सूरए जिन्न नाज़िल हुई थी। (अतलसे सीरते नबवी)

२४४) अल्लामा क़ुर्तबी ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से नक़्ल किया है कि एक बार मुश्रिक इकट्ठे हो कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे अगर आप सच्चे हैं तो चाँद को दो टुकड़े करके दिखाइये। उस रात को चाँद की चौदहवीं रात थी। अल्लाह के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने रब से अर्ज़ की कि कुफ़्फ़ार ने जो मुतालिबा किया है उसे पूरा करने की कुदरत अता की जाए। चुनान्चे चाँद दो टुकड़े हो गया। कुछ किस्सा गोयों ने इस वाक़ए पर मज़हका खेज़ इज़ाफ़े किये हैं कि चाँद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गिरेबान में दाख़िल हुआ और आस्तीन से निकल गया। उलमा ने कहा है कि इस की कोई अस्ल नहीं है, यह सरासर बातिल है। (ज़ियाउन्नबी, जि: २)

२४५) अल्लामा सुलैमान नदवी ने अपनी किताब ख़ुत्बाते मद्रास में लिखा है कि अभी अभी संस्कृत की एक पुरानी किताब मिली है जिस में लिखा है कि मलाबार के राजा ने अपनी आँखों से चाँद को दो टुकड़े होते देखा है। (ज़ियाउन्नबी, जि: २)

२४६) मेअराजुन्नबी पर इल्मे तबीइयात के माहिरों ने दो एतिराज़ किये हैं। पहला ऐतिराज़ रफ़तार की तेज़ी से मुताल्लिक़ है, दूसरा यह कि क्या ख़ाकी जिस्म के लिये यह मुमकिन है कि फ़ज़ा में रौशनी की रफ़तार से भी तेज़ परवाज़ कर सके। मेअराज की रिवायतों से साबित होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कायनात के उफ़के आला तक तशरीफ़ ले गए और वापस भी तशरीफ़ ले आए। दुनिया के मशहूर साइन्सदाँ और रियाज़ीदाँ अल्बर्ट आइन स्टाइन के नज़्दीक कायनात के दायरे के कुत्र के एक कोने से दूसरे कोने तक अगर रौशनी सफ़र करे तो उसे यह मुसाफ़त तय करने के लिये तीन हज़ार मिलियन नूरी साल का अर्सा दरकार है जब कि रौशनी की अपनी रफ़्तार तीन लाख किलोमीटर फ़ी सेकिन्ड है। अव्वल तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जिस्मे ख़ाकी से तशबीह देना ही ग़लत है। दूसरे यह कि जब बुलाने वाला अल्लाह और जाने वाले रसूलल्लाह तो इस सफ़र का इहाता दुनिया के पैमाने किस तरह कर सकते हैं। नज़्मी लिखता है:

मेअराज का किस्सा कुरआँ में कुछ यूं ही नहीं मज़कूर हुआ
यह बात कोई मामूली नहीं जब नूर की जानिब नूर चले

२४७) इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम दोनों ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चार उमरे किये। एक उमरे के सिवा बाक़ी तीनों उमरे माहे ज़ी क़अदा में अदा किये। चौथा उमरा जो हज के साथ अदा किया वह ज़िलहज्ज में फ़रमाया। (इब्ने कसीर अस्सीरतुल नबविया)

२४८) हज़रत नाफ़ेअ रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते है कि आप ने बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस दुनिया से इन्तिक़ाल करते वक़्त जो आख़िरी बात इरशाद फ़रमाई वह यह थी: मैं ने जिन लोगों की जान, माल और आबरू की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी उठाई है, उस की लाज रखना, उस पर आंच न आने देना। (अल-अहकामुस सुल्तानिया लेखक अबू यअला मुहम्मद बिन अल हुसैन अलफरा अल-हम्बली)

२४९) सन ग्यारह हिजरी माहे सफ़र की उन्तीसवीं तारीख़ पीर का दिन था कि एक सहाबी का इन्तिक़ाल हुआ। उन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने के लिये रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नतुल बक़ीअ तशरीफ़ ले गए। अपने जाँनिसार की तजहीज़ो तकफ़ीन के बाद जब सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापस तशरीफ़ ला रहे थे कि रास्ते ही में सर दर्द शुरू हुआ। दर्द की शिद्दत के बाइस तेज़ बुख़ार चढ़ गया। यही बीमारी आख़िरकार अल्लाह के मेहबूब बन्दे की अपने रब्बे करीम से मुलाक़ात का ज़रिया बन गई। इस बीमारी की मुद्दत मुख़्तलिफ़ रिवायतों में तेरह, चौदह या पन्द्रह दिन बताई गई है। (ज़ियाउन्नबी, जि: ४)

२५०) मिस्र के हुक्मराँ मुक़ूक़स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में दो कनीज़ें नज़्र की थीं। एक का नाम मारिया और दूसरी का नाम शीरीं था। हज़रत मारिया क़िब्तिया को सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़ौजियत में ले लिया और शीरीं का निकाह हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु से हो गया। शाहे मिस्र ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बिन्हा का शहद, ख़ुश्बू, मिस्र के मशहूर क़िबाती कपड़े के बीस जोड़े और एक शीशे का प्याला भी नज़्र किया था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस प्याले से शर्बत नोश फ़रमाते थे। शाहे मिस्र के तोहफ़ों में एक ख़च्चर दुलदुल था जो हज़रत अमीरे मुआविया के दौर तक बाक़ी रहा। यह सफ़ेद रंग का था। बादशाह ने एक माहिर तबीब भी भेजा था। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम वापस चले जाओ। हम लोग उस वक़्त तक खाना नहीं खाते जब तक हमें भूख न लगे और खाते वक़्त भी हम पेट भर नहीं खाते। लिहाज़ा हमें तबीब की ज़रूरत नहीं पड़ती। (अत्तबक़ातुल कुब्रा, जि: १)

२५१) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: जिस वक़्त रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूहे मुबारक जिस्मे अतहर से निकल कर सूए रफ़ीक़े आला रवाना हुई तो मैं ने ऐसी ख़ुश्बू सूंघी जो मैं ने आज तक कभी नहीं सूंघी थी। (इब्ने कसीर, अस्सीरतुन नबविया, जि: ४)

२५२) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हर काम में जहाँ तक

मुमकिन होता तियामुन (दायें हाथ से शुरू करने) को पसन्द फ़रमाते थे। कंघी करने और जूता पहनने में भी तियामुन का ख़्याल रखते। (शमाइले नबवी)

२५३) उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती है: मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के दिन आप के सीनए मुबारक पर अपना हाथ रखा। कई हफ़्तों तक मेरे हाथ से ख़ुश्बू आती रही। कई हफ़्ते मुझे भूख नहीं लगी। न खाना खाया और न वुज़ू की ज़रूरत मेहसूस हुई। (इब्ने कसीर, अससीरतुन नबविया, जि: ४)

२५४) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि जब रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मर्ज़ में शिद्दत हो गई तो आप ने हम सब को हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर जमा फ़रमाया। हम ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! हुज़ूर का विसाल कब होगा? फ़रमाया: मुक़र्ररा घड़ी बिल्कुल क़रीब आ रही है। मैं अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाने वाला हूँ। और सिदरतुल मुन्तहा मेरी मन्ज़िल होगी। हम ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! हुज़ूर को गुस्ल कौन देगा? फ़रमाया: मेरे अहले बैत में से जो मर्द और मेरे क़रीबी रिश्तेदार होंगे उन के साथ फ़िरिश्तों की कसीर तादाद होगी जो तुम्हें देखेंगे पर तुम उन्हें न देख सकोगे। फिर हम ने अर्ज़ किया: हम हुज़ूर को कफ़न किन कपड़ों में देंगे? फ़रमाया: अगर तुम चाहो तो जो लिबास मैं ने पहन रखा है उसी में कफ़ना देना या यमन की चादरों में या मिस्र के सफ़ेद कपड़ों में। फिर अर्ज़ की: हुज़ूर की नमाज़े जंनाज़ा कौन पढ़ाएगा? फ़रमाया: जब तुम मुझे गुस्ल दे चुको और ख़ुश्बू लगा कर कफ़न पहना चुको तो मेरी क़ब्र के किनारे पर मेरी चारपाई रख देना फिर एक साअत के लिये मेरे पास से बाहर चले जाना। सब से पहले मेरे दो दोस्त और हमनशीन मेरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ेंगे यानी जिब्रईल और मीकाईल। इस के बाद इस्राफ़ील और मलकुल मौत मलाइका के एक लशकरे जर्रार के साथ यह सआदत हासिल करेंगे। इस के बाद मेरे अहले बैत के मर्द मेरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ेंगे फिर उन की मस्तूरात यह सआदत हासिल करेंगी फिर यके बाद दीगरे फ़ौज दर फ़ौज मुझ पर दाख़िल होना और नमाज़े जनाज़ा पढ़ना। फिर अर्ज़ किया गया: या रसूलल्लाह! आप को क़ब्र में कौन उतारेगा? फ़रमाया: मेरे अहले बैत के मर्द जितना कोई मेरे क़रीब हो उन के साथ बेशुमार फ़रिश्ते जो तुम्हें देखेंगे मगर तुम उन्हें न देख सकोगे। (इब्ने कसीर, अस्सीरतुन नबविया, अबू बक्र अल बेहक़ी दलाइलुन नबुव्वत, जि: ७)

२५५) हज़रत अम्र बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मदीनए मुनव्वरा में दो आदमी क़ब्र खोदा करते थे। उन में से एक हज़रत अबू तल्हा

अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु लहद यानी बग़ली क़ब्र खोदते थे और दूसरे हज़रत अबू उबैदा बिन अल जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु जो सन्दूकी क़ब्र बनाते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल पर सहाबा ने तय किया कि इन दोनों में से जो पहले आएगा वह यह काम करेगा। तो पहले अबू तल्हा अन्सारी आए और उन्हों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये बग़ली क़ब्र तय्यार की। (मिशकात शरीफ़)

२५६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह दुआ फ़रमाते थे: ऐ अल्लाह, मेरे बाद मेरी क़ब्र को सनमे माबूद न बना देना। हदीस में है कि उस मर्ज़ में जिस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सेहतमन्द न हो सके, फ़रमाया: यहूद और नसारा पर अल्लाह की लअनत हो, उन्हों ने नबियों की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: अगर यह ख़दशा न होता तो सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मज़ार खुले मैदान में होता। बस ख़तरा यह था कि उसे सज्दागाह न बना लिया जाए। (मालिक)

२५७) मुस्लिम में है कि एक यहूदी औरत ज़हर आलूद बकरी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में लाई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस में से कुछ तनावुल फ़रमाया। उसे पकड़ कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस से जवाब तलबी की। तो उस ने कहा: मैं आप को मार डालना चाहती थी क्योंकि आप ने मेरे बाप, मेरे शौहर, मेरे चचा, मेरे भाई को क़त्ल किया है। उस के बाप का नाम हारिस, चचा का नाम यसार, भाई का नाम ज़ुबैर और शौहर का नाम सलाम बिन मुश्किम था। अबू दाऊद में है कि यह मरहब की बहन थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे क़त्ल नहीं कराया क्योंकि यह मुसलमान हो गई थी। मगर उस बकरी से हज़रत बिशर बिन बरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ खा लिया था जिस की वजह से तीसरे दिन उन की वफ़ात हो गई। उन के क़िसास में इस औरत को क़त्ल करवा दिया गया। अबू दाऊद में यह भी है कि ज़ैनब ने पूछा: या रसूलल्लाह! आप को कैसे पता चला कि गोश्त में ज़हर है। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: उसी दस्त ने बताया। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़हर का असर दूर करने के लिये सर या कांधे पर सिंगी (पुछना) लगवाई थी। (नुज्हतुल क़ारी)
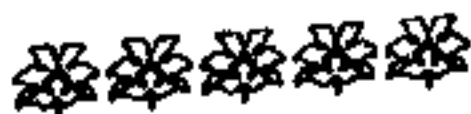
दूसरा अध्याय

तख़लीके कायनात, मक़ामाते मुक़द्दसा और अल्लाह की मख़लूक़

१) ख़ालिके कायनात अज़्ज़ व जल्ल ने सब से पहले नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तख़लीक़ फ़रमाया। (बुख़ारी शरीफ़)

२) मुसन्निफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ जाबिर, बेशक अल्लाह तआला ने तमाम चीज़ों से पहले अपने नूर से तेरे नबी के नूर को पैदा फ़रमाया। पैदाइश के बाद यह नूर अल्लाह ने जहाँ चाहा दौरा करता था। उस वक़्त न लौह थी न क़लम, न जन्नत न दोज़ख़, न सूरज न चाँद, न इन्सान न जिन्न। उस के बाद उसी नूर से तमाम मुख़लूक़ात की पैदाइश की तफ़सील है। (नज़्हतुल क़ारी)

३) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि पिछली उम्मतों के मुक़ाबले में मेरी उम्मत की मुद्दत इतनी है जितनी अस्र के वक़्त से सूरज छुप जाने की मुद्दत। (तफ़सीरे नईमी)

४) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने ज़मीन और आसमान की पैदाइश से पचास हज़ार साल पहले मख़लूक़ात की तक़दीरों को लिखा। (लौहे महफ़ूज़ में सब्त फ़रमा दिया) (मुस्लिम, मिशकात)

५) क़ज़ा की तीन क़िस्में हैं: क़ज़ाए मुबरम हक़ीक़ी, क़ज़ाए मुअल्लक़ महज़ और क़ज़ाए मुअल्लक़ शबीह ब मुबरम। क़ज़ाए मुबरम हक़ीक़ी वह क़ज़ा है कि इल्मे अलाही में भी किसी किसी चीज़ पर मुअल्लक़ नहीं। इस क़ज़ा की तब्दीली नामुमकिन है। औलिया की इस क़ज़ा तक रसाई नहीं बल्कि अम्बियाए किराम और रुसुले इज़ाम भी अगर इत्तिफ़ाक़ से इसके बारे में कुछ अर्ज़ करना चाहें तो इन्हें इस ख़्याल से रोक दिया जाता है। जैसा कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम पर अज़ाब रोकने की बहुत कोशिश की यहाँ तक कि अपने रब से झगड़ने गले जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया: (तर्जमा) यानी इब्राहीम क़ौमे लूत के बारे में हम से झगड़ने लगे। लेकिन चूंकि क़ौमे लूत पर अज़ाब होना क़ज़ाए मुबरम हक़ीक़ी था इस लिये हुक्म हुआ: ऐ इब्राहीम, इस ख़्याल में न पड़ो बेशक तेरे रब का हुक्म आ चुका और बेशक उन पर अज़ाब आएगा फेरा न जाएगा। (पारा: १२, रुकूअ: ७) क़ज़ाए मुअल्लक़ महज़ वह क़ज़ा है कि फ़रिश्तों के सहीफ़ों में किसी चीज़

मसलन सदक़ा या दवा वग़ैरा पर मुअल्लक़ होना ज़ाहिर कर दिया गया हो। इस क़ज़ा तक अकसर औलिया की रसाई होती है, उन की दुआ और तवज्जोह से यह क़ज़ा टल जाती है। क़ज़ाए मुअल्लक़ शबीह बह मुबरम वह क़ज़ा है कि इल्मे इलाही में वह किसी चीज़ पर मुअल्लक़ है लेकिन फ़रिश्तों के सहीफ़ों में उस का मुअल्लक़ होना मज़कूर नहीं, इस क़ज़ा तक ख़ास अकाबिर की रसाई होती है। हज़रत सय्यिदुना ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु किसी के बारे में फ़रमाते हैं कि मैं क़ज़ाए मुबरम को रद कर देता हूँ। इसी क़ज़ा के बारे में हदीस शरीफ़ में इरशाद हुआ कि बेशक दुआ क़ज़ाए मुबरम को टाल देती है। (बहारे शरीअत)

६) सात आसमान यकशम्बे के दिन पैदा हुए। एक आसमान से दूसरे आसमान तक पांच सौ बरस की मुसाफ़त है। (तफ़सीरे नईमी)

७) सूरज, चांद और सितारे दो शम्बे के दिन पैदा फ़रमाए गए। (तफ़सीरे नईमी)

८) फ़रिश्तों की तख़लीक़ मंगल के दिन हुई। (तफ़सीरे नईमी)

९) पानी बुध के रोज़ पैदा हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

१०) दोज़ख़ जुमेरात के दिन पैदा फ़रमाई गई। (तफ़सीरे नईमी)

११) ज़मीन दो शम्बे के दिन पैदा हुई। एक परत से दूसरी परत तक पांच सौ बरस की मुसाफ़त है। (तफ़सीरे नईमी)

१२) अर्शे आज़म के छः लाख पर्दे हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१३) इन्सान जिन्नात का दसवाँ हिस्सा हैं और जिन्न व इन्स खुश्की के जानवरों का दसवाँ हिस्सा और यह सब मिल कर परिन्दों का दसवाँ हिस्सा और यह सब मिल कर दरियाई जानवरों का दसवाँ हिस्सा। यह सब मिल कर ज़मीन के फ़रिश्तों का दसवाँ हिस्सा और यह सब मिल कर आसमान के फ़रिश्तों का दसवाँ हिस्सा। सातवें आसमान तक यही तरतीब है। (तफ़सीरे नईमी)

१४) पहले पहल अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को आसमान में और जिन्नात को ज़मीन में बसाया था। यह वाक़िआ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से साठ हज़ार बरस पहले हुआ था। यह जिन्नात ज़मीन में सात हज़ार साल तक आबाद रहे, फिर इन का आपस में बुग्ज़ और हसद शुरू हुआ, चुनान्चे इन्हों ने आपस में खूब लड़ाई झगड़ा और रक्तपात किया। उस वक़्त तक इब्लीस, जिस का नाम अज़ाज़ील था, अल्लाह के दरबार में काफ़ी मक़बूल था और तमाम फ़रिश्तों में बड़ा आलिम और इबादत गुज़ार था। उसे हुक्म हुआ कि अपने साथ फ़रिश्तों की जमाअत ले कर जा और जिन्नात को ज़मीन में से

निकाल कर जज़ीरों और पहाड़ों में आबाद कर दे। चुनान्चे इब्लीस ने ऐसा ही किया। जो फ़रिश्ते इब्लीस के साथ आए थे वह इस ज़मीन पर बसा दिये गए। इस तरह अब फ़रिश्तों के दो हिस्से हो गए, एक ज़मीन वाले दूसरे आसमान वाले। हक़ तआला ने इस ख़िदमत के बदले इब्लीस को आसमान और ज़मीन की बादशाहत और जन्नत के ख़ज़ाने अता फ़रमाए, लिहाज़ा यह कभी ज़मीन पर इबादत करता कभी आसमान में कभी जन्नत में। पर एक सज्दा न करने के जुर्म में अल्लाह तआला की बारगाह से धुतकार दिया गया। (तफ़सीरे नईमी)

१५) दोज़ख़ की आग दुनिया की आग से सत्तर हिस्सा गर्मी में ज़्यादा है और दोज़ख़ का सब से मामूली अज़ाब है आग की जूतियाँ। (बुख़ारी शरीफ़)

१६) इमाम कुर्तबी ने तफ़सीर के माहिरों के कथन लिखे हैं कि अर्श एक तख़्त और जिस्मे मुजस्सम है जिस को अल्लाह तआला ने पैदा करके फ़रिश्तों को इस के उठाने और ताज़ीम और तवाफ़ करने का हुक्म दिया है। जिस तरह ज़मीन पर कअबा पैदा करके बनी आदम को इस के तवाफ़ और इस्तक़बाल का हुक्म दिया है। (तफ़सीरे नईमी)

१७) इमाम क़ुशैरी का क़ौल है कि एक फ़रिश्ते ने कहा: इलाही मैं अर्श देखना चाहता हूँ। अल्लाह तआला ने उसे तीस हज़ार पर अता फ़रमाए जिन के ज़रिये वह तीस हज़ार बरस उड़ा। फिर इरशाद हुआ: क्या तुम अर्श पर पहुंच गए? फ़रिश्ते ने अर्ज़ किया: इलाही अर्श की क़ामत का दसवाँ हिस्सा भी तय नहीं हुआ। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१८) सअलबी ने हज़रत अली बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि अल्लाह तआला ने अर्श से पहले तीन चीज़े पैदा फ़रमाईः हवा, क़लम और मछली। फिर मुख़्तलिफ़ अनवार से अर्श पैदा किया। इस के सब्ज़ नूर से हर तरह की सब्ज़ी, ज़र्द नूर से ज़र्दी, सुर्ख़ नूर से सुर्ख़ी और सफ़ेद नूर से नूरुल अनवार और दिन की रौशनी ज़ाहिर हुई। फिर इस के सत्तर लाख तब्के किये, हर तब्क़ा मुख़्तलिफ़ आवाज़ों में अल्लाह तआला की बड़ाई बयान करता रहता है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१९) रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने मुझ से जहन्नम की तारीफ़ बयान की कि अल्लाह तआला ने जहन्नम पैदा करके हज़ार बरस तक उस की आग भड़काई, वह सुर्ख़ हो गई। फिर हज़ार बरस भड़काई, वह सफ़ेद हो गई। फिर हज़ार बरस भड़काई, वह सियाह हो गई। अब वह अन्धेरी रात की तरह सियाह है, न तपिश में कमी हो न अंगारे बुझें। (ज़ुब्दतुल वाइज़ीन)

२०) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि क़ियामत के दिन दोज़ख़ को सातवीं ज़मीन के नीचे से इस हालत में लाया जाएगा कि उस के चारों तरफ फ़रिश्तों की सत्तर सफ़ें होंगी हर सफ़ की तादाद जिन्न और इन्सान की तादाद से सत्तर हज़ार बार ज़्यादा होगी। फ़रिश्ते उस की लगामें खींचते होंगे। जहन्नम के चार पावँ होंगे, एक से दूसरे पावँ में लाख बरस का फ़ासला होगा और तीस हज़ार सर होंगे, हर सर में तीस हज़ार मुंह, हर मुंह में तीस हज़ार दांत, हर दांत कोहे उहद से तीस हज़ार गुना बड़ा होगा और हर मुंह में दो होंट, हर होंट की चौड़ाई दुनिया के बराबर होगी। हर होंट में लोहे की एक ज़ंजीर, हर ज़ंजीर में सत्तर हज़ार हल्क़े होंगे, हर हल्क़े को बहुत से फ़रिश्ते थामे होंगे। इस हालत में जहन्नम को अर्श की बाएं तरफ़ लाकर रखेंगे। (दक़ाइक़ुल अख़बार)

२१) जहन्नम के सात दर्जे हैं, एक सईर, इस में झुटलाने वाले रहेंगे। दूसरा लज़ा, तीसरा सक़र जो बे नमाज़ियों के लिये होगा। चौथा जहीम जो ख़्वाहिशों की पैरवी करने वालों के लिये होगा, पांचवाँ जहन्नम, छटा हाविया और सातवाँ हुतमा। यह दर्जा चुग़लख़ोरों के लिये ख़ास है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

२२) इब्ने अबी शैबा हसन से रिवायत करते हैं कि दोज़ख़ी एक दिन में सत्तर हज़ार बार जलाया जाएगा और जब उस का चमड़ा गल सड़ कर गिर पड़ेगा तो वह फिर पहले जैसा कर दिया जाएगा। (दुर्रे मन्सूर)

२३) जन्नत के आठ दरवाज़े हैं: एक सोने का जवाहिरात जड़ा हुआ जिस पर कलिमए तय्यबा लिखा हुआ है, यह पैग़म्बरों, शहीदों और सख़ियों के दाख़िल होने का दरवाज़ा है। दूसरा बाबे मुसल्लीन, इस से वह लोग दाख़िल होंगे जो वुज़ू और नमाज़ की पाबन्दी का ख़्याल रखते हैं। तीसरा बाबुल मुज़क्कीन यानी ज़कात देने वालों का दरवाज़ा। चौथा नेकियों का हुक्म और बुराइयों से मना करने वालों का दरवाज़ा, पांचवाँ नफ़्सानी ख़्वाहिशात को तोड़ने वालों का दरवाज़ा, छटा हज और उमरा अदा करने वालों का दरवाज़ा, सातवाँ जिहाद करने वालों का, आठवाँ मुहर्रमात से नीची निगाह रखने वालों और माँ बाप के साथ सिलए रहमी करने वालों का। (दक़ाइक़ुल अख़बार)

२४) जन्नतें आठ हैं: एक दारुल जलाल जो सफ़ेद मोती की बनी हुई है, दूसरी दारुस्सलाम सुर्ख़ याक़ूत की, तीसरी जन्नतुल मावा सब्ज़ ज़बरजद की, चौथी जन्नतुल ख़ुल्द ज़र्द मूंगे की, पांचवीं जन्नतुन्नईम सफ़ेद चाँदी की, छटी दारुल क़रार सुर्ख़ सोने की, सातवीं जन्नतुल फ़िरदौस, इस की एक ईंट सोने की है, एक चाँदी की, एक याक़ूत की, एक ज़बरजद की और गारा मुश्क का,

आठवीं जन्नते अदन एक सफ़ेद मोती की बनी हुई है और तमाम जन्नतों से बालातर है। दो दरवाज़े सोने के हैं और दोनों में ज़मीन आसमान जितना फ़ासला है। सोने चाँदी की ईंटों और मुश्क के गारे से बनाई गई है। इस की मिट्टी सरासर अम्बर है और इस की कंकरियां सरबसर मोती हैं। इस में नहरे कौसर है जो रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये मख़सूस है। इस के अलावा नहरे काफ़ूर, नहरे तस्नीम, सलसबील, नहरे रहीक़, पानी, दूध और शहद की नहरें भी इसी में हैं। (दक़ाइक़ुल अख़बार)

२५) हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये दो हौज़ होंगे: एक मौकिफ़ में सिरात के पहले होगा और दूसरा जन्नत में। दोनों का नाम कौसर होगा। और सही यह है कि मीज़ान के पहले होगा। (तफ़सीरे नईमी)

२६) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे हौज़ की लम्बाई चौड़ाई बराबर है और वह एक माह की राह है और पानी उस का दुध से ज़्यादा सफ़ेद और मुश्क से ज़्यादा खुश्बूदार और उस के आबख़ोरे गिन्ती में और चमकने में आसमान के सितारों की तरह हैं। जो शख़्स उस का पानी पियेगा, प्यासा न होगा। (बुख़ारी शरीफ़)

२७) हदीस में है कि पुले सिरात की मुसाफ़त तीन हज़ार बरस की है। एक हज़ार बरस उस की चढ़ाई, एक हज़ार बरस उस का उतार और एक हज़ार बरस बराबर है। एक और हदीस में है कि पुले सिरात की मुसाफ़त पन्द्रह हज़ार बरस की राह है, पांच हज़ार बरस चढ़ाई, पांच हज़ार बरस उतार और पांच हज़ार बरस बराबर है और यह बाल से भी ज़्यादा बारीक और तलवार की धार से ज़्यादा तेज़ है। यह जहन्नम की पीठ पर रखा हुआ है। इस से वही शख़्स पार उतरेगा जो अल्लाह के ख़ौफ़ से दुबला न हो गया हो। (तफ़सीरे नईमी)

२८) हदीस में है कि अर्श के ३६० पाए हैं। हर पाए का अरज़ दुनिया से सत्तर हज़ार गुना ज़्यादा है। हर दो पाए के बीच सत्तर हज़ार मैदान हैं और हर मैदान में सत्तर हज़ार आलम हैं। (तफ़सीरे नईमी)

२९) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कुर्सी में सातों आसमान इस तरह रखे हुए मालूम होते हैं गोया लम्बे चौड़े जंगल में एक छल्ला पड़ा है और अर्श कुर्सी से इतना बड़ा है जितना लम्बा चौड़ा जंगल उस छल्ले से। (तफ़सीरे नईमी)

३०) रिवायत है कि अल्लाह तआला ने आसमान और ज़मीन पैदा करने से पहले एक जौहर पैदा किया जो आसमान और ज़मीन से दुगना था फिर उस

पर अपने जलाल की नज़र डाली। वह जौहर पिघल कर पानी हो गया फिर पानी पर नज़र की, फौरन खौलने लगा और उस में से झाग और धुवां उठा और पानी हैबते इलाही से कपकपा उठा। यह थरथरी कियामत तक पानी की ज़ात में मौजूद रहेगी। फिर उस धुवें से आसमान और झाग से ज़मीन बनाई। इस के बाद अल्लाह तआला ने अर्श के नीचे से एक फ़रिश्ता ज़मीन पर भेजा जिस ने सातों ज़मीनों के नीचे जाकर ज़मीन को अपने कंधे पर रख लिया। उस का एक हाथ मश्रिक़ में और एक मग़रिब में है। उस ने दोनों हाथ फैला कर ज़मीन को अपने कब्ज़े में कर रखा है, लेकिन उस फ़रिश्ते को कदम रखने की टिकाऊ जगह न थी। अल्लाह तआला ने फिरदौस से एक बैल भेजा जिस के सत्तर हज़ार सींग और चालीस हज़ार पावँ हैं। फ़रिश्ते ने उस के कोहान को पकड़ कर खड़ा होना चाहा मगर पावँ न टिक सके। इस लिये अल्लाह तआला ने जन्नत के आला दर्जे से सब्ज़ याकूत की एक सिल भेजी जिस का दल पांच सौ बरस की राह का है। यह उस बैल के कोहान से लेकर दुम तक बिछाई गई और फ़रिश्ते के दोनों क़दम इस पर टिक गए। इस बैल के सींग ज़मीन के किनारों से बाहर निकले हुए हैं और यह दरिया में खड़ा है। दिन में दो बार साँस लेता है। इस के साँस लेते वक़्त दरिया चढ़ जाता है और रोकते वक़्त दरिया उतर जाता है। लेकिन चूंकि इस बैल के पावँ टिकाने की जगह न थी इस लिये अल्लाह तआला ने तमाम आसमानों और ज़मीनों के दल के बराबर एक पत्थर पैदा करके उस पर बैल के पैर टिका दिये और चूंकि इस पत्थर के रखने की कहीं जगह नहीं थी इस लिये एक बड़ी मछली पैदा की जिस का नाम नून, कुन्नियत बल्हूत और लकब यम्हूत है। वह पत्थर उस मछली की सिर्फ़ पीठ पर रखा हुआ है, बाक़ी जिस्म ख़ाली है और यह मछली दरिया पर, दरिया हवा की पीठ पर और हवा अल्लाह की कुदरत और उस के हुक्म से ठहरी हुई है। कअब अहबार कहते हैं कि शैतान ने एक बार इस मछली को बहकाने को यह कहा कि इस बोझ को अपनी पीठ पर से फेंक दे। मछली ने अभी इरादा ही किया था कि अल्लाह तआला ने एक जानवर भेजा जो फौरन उस के नथुने में घुस कर दिमाग़ में जा उतरा। मछली ने निहायत तकलीफ़ में अल्लाह तआला से फरियाद की, चुनान्चे वह जानवर दिमाग़ से निकल आया। कअब का कौल है मछली उस की तरफ़ और वह मछली की तरफ़ टिकटिकी बांधे देखता रहता है। इधर मछली ने बुरा इरादा किया और उधर वह नथुने में दाख़िल होने के लिये आगे बढ़ा। यह वही मछली है जिस की अल्लाह तआला ने नून वल कलम में क़सम याद फ़रमाई है। (तफ़सीरे सअलबी)

३१) मेअराज जन्नत की एक सीढ़ी थी जिस में दस डन्डे थे। एक चाँदी का, एक सोने का, और दोनों जानिब से उस का एक रुख़ सुर्ख़ याकूत का और दूसरा रुख़ सफ़ेद याकूत का और उस पर जन्नत के मोती और दूसरे जवाहिरात जड़े हुए थे। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने इसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये खड़ा किया। इस का निचला पाया बैतुल मक़दिस के पत्थरों पर और ऊपर के पाए अर्श तक पहुंचे। एक डन्डे से दूसरे डन्डे के बीच इतनी मुसाफ़त थी जितनी ज़मीन और आसमान के बीच। उस का पहला डन्डा यानी सब से निचला डन्डा असमाने दुनिया के करीब था। इसी तरह सातों आसमानों तक सात डन्डे हुए। आठवाँ डन्डा सिदरा के पास और नवाँ कुर्सी के पास और दसवाँ अर्श तक। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पर चढ़ने का इरादा किया तो आसमाने दुनिया से लगा पहला डन्डा नीचे हो गया और सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस पर सवार हो गए और वह डन्डा आप को लेकर ऊपर चढ़ गया। इसी तरह आप अर्श तक पहुंचे। (फ़ुतूहाते इलाहिया)

३२) इब्ने अबी हातिम ने हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम से रिवायत किया कि जन्नत में दो मोती हैं एक सफ़ेद, नाम उस का वसीला है। यह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उन के अहले बैत के वास्ते और एक ज़र्द है, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उन की आल के वास्ते। (ज़ुरक़ानी)

३३) आसमाने दुनिया मौज से बना है। दूसरा आसमान सफ़ेद मरमर का है, तीसरा लोहे का, चौथा तांबे का, पांचवाँ चाँदी का, छटा सोने का और सातवाँ आसमान सुर्ख़ याकूत का है और कुर्सी सुर्ख़ याकूत की है, और अर्श सुर्ख़ याकूत का है और आसमान के दरवाज़े ख़ालिस सोने के हैं और उन में क़ुफ़्ल लगे हैं और कुन्जियाँ उन में हक़ सुब्हानहू व तआला के इस्मे आज़म की हैं। (अल-कल्यूबी)

३४) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने लौहे मेहफ़ूज़ को सफ़ेद चाँदी से बनाया, इस के पन्ने सुर्ख़ याकूत के हैं और कलम उस का नूर है और तहरीर उस की नूर है। (ज़ुरक़ानी)

३५) हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबए किराम से फ़रमाया: क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे नीचे क्या है? सहाबा ने अर्ज़ किया: अल्लाह और अल्लाह का रसूल बेहतर जाने। फ़रमाया: वह ज़मीन है। फिर फ़रमाया: जानते हो उस के नीचे क्या है? सहाबा ने फिर अर्ज़ किया: अल्लाह और उस का रसूल ही बेहतर जाने। फ़रमाया: दूसरी ज़मीन है, एक

ज़मीन से दूसरी ज़मीन के बीच पांच सौ बरस की मुसाफ़त है। यहाँ तक कि आप ने सातों ज़मीनों को गिनाया। फिर फ़रमायाः क़सम है उस ज़ात की जिस के कब्ज़ए कुदरत में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जान है, अगर तुम सब से नीचे की ज़मीन की तरफ़ से एक रस्सी लटकाओ तो वह खुदा पर उतरे। मतलब यह कि अल्लाह तआला का इल्म जैसे ऊपर की जानिब मुहीत है वैसे ही नीचे की जानिब भी। अल्लाह को हर ज़र्रे की ख़बर है यहाँ तक कि सातवीं ज़मीन की जानिब रस्सी लटकाई जाए तो वहाँ भी अल्लाह के इल्म, कुदरत और सल्तनत पर उतरेगी। (तफ़सीरे नईमी)

३६) खजूर के दरख़्त की पैदाइश हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की बची खुची मिट्टी से है। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

३७) वह तन्नूर जिस से तूफ़ाने नूह शुरू हुआ कूफ़ा में है। (तफ़सीरे नईमी)

३८) हम सब को अल्लाह तआला ने पानी से बनाया। हम जमा हुआ पानी हैं और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को हवा से बनाया, आप हवा यानी नफ़ख़े जिब्रईल पर खिंची हुई रब्बानी तस्वीर हैं। (तफ़सीरे नईमी)

३९) इकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि दुनिया की उम्र अव्वल से आख़िर तक पचास हज़ार बरस की है। अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता किस कदर गुज़री है और किस कदर बाक़ी है। (फ़ासी)

४०) अर्श नूर से पैदा हुआ और एक रिवायत में है कि सुर्ख़ याकूत से। इस के सात हज़ार कंगूरे हैं और एक कंगूरे से दूसरे कंगूरे तक सात सौ बरस की राह है और यह चार फ़रिश्तों की गर्दन पर रखा हुआ है। (तफ़सीरे नईमी)

४१) एक रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने अर्श सब्ज़ ज़मर्रुद से और उस के पाए सुर्ख़ याकूत से पैदा किये। (तफ़सीरे नईमी)

४२) अर्श के नीचे सूर है जिस की लम्बाई तीन सौ बरस की राह है। हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम पीठ झुका कर सूर लिये अल्लाह तआला के हुक्म के इन्तिज़ार में खड़े हैं। (तफ़सीरे नईमी)

४३) सूर नूर से बना एक सींग है। अल्लाह तआला ने इस में ग्यारह दायरे पैदा किये। हर दायरे का फैलाव ज़मीन और आसमान के बराबर है। (तफ़सीरे नईमी)

४४) अल्लाह तआला ने रहमत के सौ हिस्से किये, इन में से ९९ हिस्से अपने पास रखे और एक हिस्सा दुनिया में नाज़िल फ़रमाया। (तफ़सीरे नईमी)

४५) आसमान और इन्सान की तरकीब एक सी है। वहाँ सात आसमान हैं यहाँ सात आज़ा (अंग) हैं। आसमान में बारह बुर्ज हैं, इन्सान में बारह सूराख़

हैं: दो आँखें, दो कान, दो नथुने, पाख़ाना पेशाब के दो रास्ते, दो छातियां, एक मुंह और एक नाफ़। आसमान के बुर्जों में छः जुनूबी हैं और छः शिमाली, उसी तरह इन्सान के छः सूराख़ दाईं तरफ़ हैं, छः बाईं तरफ़। आसमान में सात ग्रह हैं, इन्सान में सात कुव्वतें, सुनने की, देखने की, सूंघने की, चखने की, छूने की, समझने की, बोलने की। (ज़ोहरतुर रियाज़)

४६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दोज़ख़ में ऊंट की गर्दन के बराबर साँप और बिच्छू हैं जिन के सिर्फ़ एक बार डसने की जलन चालीस साल तक रहेगी। (दक़ाइक़ुल अख़बार)

४७) सात सहाबा से यह हदीस आई है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी है कि अर्श पर और हर आसमान और जन्नत के हर दरवाज़े पर और सब पत्तों पर लिखा हुआ है ला-इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह। (तफ़सीरे नईमी)

४८) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जन्नत की दीवार में एक ईंट सोने की, एक चाँदी की है। इस का गारा ख़ालिस मुश्क का। इस में घास की जगह ज़ाफ़रान मिली है। कंकरियाँ मोती और याक़ूत हैं। (गुल्दस्तए तरीक़त)

४९) नूर एक मिनट में एक करोड़ बीस लाख मील की मुसाफ़त तय करता है। (तफ़सीरे नईमी)

५०) कुछ सितारे एक साअत में आठ लाख अस्सी हज़ार मील हरकत करते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

५१) बिजली एक मिनट में ५०० बार ज़मीन के गिर्द घूम सकती है। (तफ़सीरे नईमी)

५२) जन्नत का सब से बड़ा दरख़्त तूबा है जिस की जड़ें सोने की, बीच का हिस्सा सुर्ख़ याक़ूत का, चोटी मोतियों की, टहनियाँ ज़बरजद की, पत्ते सुनदुस के हैं। इस की सत्तर हज़ार शाख़ें हैं। बड़ी शाख़ अर्श से जा मिली है और छोटी शाख़ आसमाने दुनिया की तरफ़ झुकी हुई है। दुनिया में तूबा की नज़र सिर्फ़ सूरज पर है। (तफ़सीरे नईमी)

५३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हूरों का चेहरा सफ़ेद, सुर्ख़, सब्ज़, ज़र्द चार रंगों से, बदन ज़ाफ़रान, मुश्क और काफ़ूर से, बाल लौंगों से, पावँ की उंगलियों से लेकर घुटनों तक ख़ुश्बूदार ज़ाफ़रान से, घुटने से लेकर सीने तक अम्बर से, सीने से सर तक काफ़ूर से बनाया है। एक एक के सीने पर अल्लाह का और उस हूर के शौहर का नाम

लिखा हुआ है। (दकाइकुल अख़बार)

५४) इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि मीज़ान के दो पल्ले हैं एक मश्रिक़ में और एक मग़रिब में। मीज़ान कोहे क़ाफ़ से बड़ी है। (तफ़सीरे नईमी)

५५) हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह तआला ने अक़्ल के दस हिस्से किये, नौ मर्दों के लिये, एक औरत के लिये। और शह्वत के दस हिस्से किये, नौ औरतों के लिये एक मर्दों के लिये। (तफ़सीरे नईमी)

५६) इमाम तिर्मिज़ी ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हजरे असवद जब जन्नत से नाज़िल हुआ तो दूध से ज़्यादा सफ़ेद था, बनी आदम की ख़ताओं ने इसे सियाह कर दिया। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

५७) लौहे मेहफ़ूज़ की तहरीर आसमान और ज़मीन की पैदाइश से पचास हज़ार साल पहले हुई। (तफ़सीरे नईमी)

५८) कातिबे तक़दीर फ़रिश्ता जो रहमों (बच्चे दानियों) पर मुक़र्रर एक ही फ़रिश्ता है, वह सारे आलम की हामिला (गर्भवती) औरतों का निगराँ है। (तफ़सीरे नईमी)

५९) माँ के रहम (गर्भाशय या बच्चे दानी) में वीर्य चालीस दिन तक उसी हालत में सफ़ेद रंग का रहता है, फिर सुर्ख़ रंग का ख़ून हो जाता है, फिर चालीस दिन के बाद जम कर गोश्त। सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं चूंकि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का ख़मीर चालीस साल तक गूंधा गया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का क़ियाम कोहे तूर पर चालीस दिन रहा इस लिये नुत्फ़े पर हर चिल्ले के बाद इन्क़िलाब आता है फिर पैदाइश के बाद अन्फ़ास की मुद्दत चालीस दिन है। कमाले अक़्ल चालीस बरस में होता है। अहले सुन्नत मय्यत का चालीसवाँ इसी बिना पर करते हैं कि चालीस में इन्क़िलाब है। (तफ़सीरे नईमी)

६०) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने बैतुल मक़दिस में इतनी तेज़ रौशनी की थी कि इस की रौशनी में औरतें तीन मील तक चर्ख़ा कात लेती थीं। (तफ़सीरे नईमी)

६१) उस वादी का नाम जिस में अस्हाबे कहफ़ हैं, रक़ीम है। (तफ़सीरे नईमी)

६२) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब अल्लाह से मांगो, जन्नतुल फ़िरदौस ही मांगो क्योंकि वह जन्नतों में सब के बीच और सब से बलन्द है और उस पर अर्शे रहमान है और उसी से जन्नत की नहरें जारी

होती हैं। (तफ़सीरे नईमी)

६३) अर्श उठाने वालों का क़िब्ला अर्शे आज़म है और मलाइकए बररह का क़िब्ला कुर्सी और मलाइकए सफ़र का क़िब्ला बैतुल मअमूर है। (तफ़सीरे कबीर)

६४) इन्सान में दो रूहें हैं एक सुल्तानी जिस का मक़ाम दिल है, इसी से ज़िन्दगी क़ायम। दूसरी हैवानी है जिस का मरकज़ दिमाग़ है जिस से होश व हवास बरक़रार। रूहे हैवानी सोने की हालत में निकल जाती है और रूहे सुल्तानी मौत के साथ ख़ारिज होती है। (तफ़सीरे नईमी)

६५) फ़लके आज़म यानी अर्शे आज़म की हरकत मश्रिक़ से मग़रिब की तरफ़, बाक़ी की मग़रिब से मश्रिक़ की जानिब। फिर अर्श की हरकत इतनी तेज़ कि एक दिन में पूरा दौरा कर जाए। आठवें आसमान की रफ़्तार इतनी सुस्त कि छत्तीस हज़ार साल में दौरा पूरा कर सके। पहला आसमान जिस पर चाँद है तक़रीबन २८ दिन में दौरा तय कर जाए और चौथा आसमान जिस पर सूरज है ३६५ दिन यानी एक साल में, आसमाने ज़ुहल तीस साल में, आसमाने मुश्तरी बारा साल में, आसमाने मिर्रीख़ दो साल में दौरा पूरा करता है। (तफ़सीरे कबीर)

६६) ज़मीन और आसमान की पैदाइश से पहले पानी था। क़ुदरत ने उस पर झाग पैदा किये, वह झाग चालीस बरस तक एक जगह मेहफ़ूज़ रहे फिर वही झाग फैला दिये गए, इसी फैले हुए झाग का नाम ज़मीन है। इस झाग की पैदाइश आसमान और ज़मीन की पैदाइश से पहले है और इस का फैलाव इस के बाद। जहाँ झाग मेहफ़ूज़ रहे थे वहीं आज कअबए मुअज़्ज़मा है। फिर आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से दो हज़ार साल पहले बैतुल मअमूर के ठीक नीचे फ़रिश्तों ने कअबा शरीफ़ की इमारत बनाई। पैमाइश में बैतुल मअमूर के बराबर ताकि आसमान के फ़रिश्ते तो बैतुल मअमूर का तवाफ़ किया करें और ज़मीन के फ़रिश्ते कअबे का। (तफ़सीरे नईमी)

६७) मक़ामे इब्राहीम वह पत्थर है जिस पर खड़े हो कर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम कअबा शरीफ़ की तअमीर फ़रमाते थे। आप के क़दम की जगह रेत या गारे की तरह इतनी नर्म हो गई थी कि उस पर आप के क़दमों के निशान बन गए जो अब तक मौजूद हैं। तअमीरे कअबा के बाद इसी पत्थर पर खड़े हो कर जबले बू क़ुबैस में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आवाज़ें दी थीं कि अल्लाह के बन्दो इस घर की तरफ़ आओ। इस पत्थर पर क़दम रख कर आप ने अपनी बहू यानी हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की ज़ौजा से अपना सरे मुबारक धुलवाया था। यह पत्थर हज़ारों साल गुज़रने के बाद आज

भी इसी तरह मेहफ़ूज़ है। रब तआला ने इस पत्थर को इतनी अज़मत बख़्शी कि सारे हाजियों के सर इस की तरफ़ झुका दिये। (तफ़सीरे नईमी)

६८) कद्दू दूसरी सब्ज़ियों से इस लिये अफ़ज़ल है कि इस दरख़्त के नीचे हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को मछली के पेट से बाहर आने पर रखा गया था। काफ़ी अर्से तक मछली के पेट में रहने की वजह से हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का जिस्मे मुबारक ख़ास तौर से आप की खाल बहुत नर्म हो गई थी। डर था कि आप के जिस्म पर मक्खियाँ बैठें जिस से आप को तकलीफ़ हो। अल्लाह तआला ने आप के लिये कद्दू का दरख़्त उगा दिया कि मक्खियाँ इस के क़रीब नहीं जातीं। (नज़्हतुल क़ारी)

६९) अल्लाह तआला ने मक्कए मुकर्रमा के इलाक़े में कोहे अरफ़ात के पीछे मैदाने नोअमान में आदम अलैहिस्सलाम की पुश्त पर दस्ते क़ुदरत फेर कर उन से उन की औलाद यहाँ तक कि क़ियामत तक पैदा होने वाले लोग उसी तरतीब से निकाले जिस तरतीब से पैदा होंगे। यह सब च्यूंटियों की शक्ल में थे। फिर इन पर अपनी तजल्ली डाली, अपना जमाल दिखा कर उन से फ़रमायाः क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? सब ने एक ज़बान हो कर कहाः हाँ हम गवाही देते हैं कि तू ही हमारा रब है। रब तआला ने यह अहदो पैमान इस लिये लिया ताकि क़ियामत में न कह सको कि ऐ मौला हम तेरे रब होने से बेख़बर रहे, हमें माफ़ी दे दे। (तफ़सीरे नईमी)

७०) रूहे इन्सानी चार बार इन्सानी जिस्म में पड़ती है। एक मीसाक़ के दिन डाली गई थी, दूसरी माँ के पेट में, फिर मौत के वक़्त निकाल ली जाती है फिर क़ब्र में सवाल जवाब के लिये, फिर मेहशर में सूर फूंकते वक़्त, जिस के बाद जन्नत दोज़ख़ में न निकाली जाएगी। हाँ कुछ गुनहागार मोमिन दोज़ख़ में मुर्दा कर दिये जायेंगे फिर निकाल कर जन्नत में भेजे जायेंगे। (तफ़सीरे नईमी)

७१) हदीस शरीफ़ में है कि मीसाक़े अज़ल का एक अहद नामा हजरे असवद में मेहफ़ूज़ है। हजरे असवद ख़ानए कअबा में लगा हुआ है। कल क़ियामत में यह पत्थर इस तरह आएगा कि इस के आँखें, ज़बान, मुंह वग़ैरा सब कुछ होगा। (तफ़सीरे नईमी)

७२) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हरमे मक्का में जो कबूतर रहते हैं, यह उन कबूतरों की नस्ल है जिन्हों ने हिजरत की रात ग़ारे सौर में अन्डे दिये थे। नबीये रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन के हक़ में दुआ फ़रमाई कि क़ियामत तक उन की नस्ल बाक़ी रहे, चुनान्चे यह दुआ क़बूल हुई। (तफ़सीरे नईमी) फ़क़ीरे बरकाती को एक उमरे के

दौरान मदीनए मुनव्वरा में कुछ अहबाब ने बताया कि नज्दी खुबसा आज कल इन कबूतरों के पीछ हाथ धोकर पड़ गए हैं। जहाँ जहाँ कबूतर बड़ी तादाद में दाना चुगने उतरते हैं वहाँ ज़हर मिला हुआ दाना डाला जाता है। इस तरह बेशुमार कबूतर हलाक कर दिये गए। इस के अलावा नज्दी मलाइना ने छोटे बच्चों को गुलेलें दे कर इस मुहिम पर लगाया है कि रातों को घूम फिर कर कबूतरों के बसेरों पर जाकर उन्हें मारें।

७३) नबीये मुकर्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बैतुल मक़दिस की तरफ़ मुंह करके लग भग सोलह महीने नमाज़ पढ़ी है और यही ज़मीन मेहश्शर की है। यहीं से आदमी जन्नत और दोज़ख़ की तरफ़ भेजे जाएंगे। (तफ़सीरे नईमी)

७४) मक्का में एक रोज़ा एक लाख रोज़ों के बराबर है, एक रकअत नमाज़ एक लाख रकअत के बराबर, एक रुपया की ख़ैरात एक लाख रुपये की ख़ैरात के बराबर है। इसी तरह मक्का मुकर्रमा में एक नेकी करना एक लाख नेकी करने के बराबर है। जो मुसलमान मक्के में मरा वह क़ियामत के दिन पैग़म्बरों के गिरोह में उठेगा। (सही हदीस)

७५) सुल्तान क़ाइत बाई ने रौज़ए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तीसरा गुम्बद नीले रंग का बनवाया था। सन बारा सौ तैंतीस (१२३३ हिजरी) में सुल्तान मेहमूद बिन अब्दुल हमीद ख़ाँ सानी ने नई तामीरात करा के सन बारा सौ पचपन (१२५५) हिजरी में सब्ज़ रंग चढ़ाया। यही गुम्बदे ख़ज़रा आज भी मौजूद है और करोड़ों आशिक़ाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिलों की धड़कन बना हुआ है। (तफ़सीरे नईमी)

७६) जिस साल अस्हाबे फ़ील का वाक़िआ हुआ, अरब में ख़सरा और चेचक उसी साल पहली बार नज़र आई और उसी साल पहले पहल अरब में स्पन्द, इन्द्रायण और आक वग़ैरा क़िस्म के बद मज़ा और नागवार पौदे देखे गए। (तफ़सीरे नईमी)

७७) जिन्न आग से पैदा किये गए हैं, यह सब इन्सानों की तरह ज़ी-अक़्ल और रूह तथा बदन के मालिक होते हैं, इन में बच्चे भी पैदा होते हैं, खाते पीते हैं, मरते जीते है। इन में अच्छे भी होते हैं और बुरे भी। (तर्ईदुल लहफ़ान मिन मकाइदिश- शैतान, अल्लामा सूफ़ी शब्बीर अहमद चिश्ती)

७८) कुछ उलमा ने लिखा है कि रूहें जुम्ओ की रात छुट्टी पाती हैं और फैलती हैं। पहले अपनी क़ब्रों पर आती हैं, फिर अपने घरों में। (तफ़सीरे नईमी)

७९) कअबए मुअज़्ज़मा बैतुल मक़दिस से चालीस साल पहले बनाया गया था। (तफ़सीरे नईमी)

८०) जन्नत और दोज़ख़ के बीच रौशनदान होंगे, मुसलमान कभी कभी अपने काफ़िर दुशमन का हाल मालूम करना चाहेगा तो रौशनदान से झांक कर देख लेगा कि काफ़िरों की खोपड़ियों में भेजा खौल रहा है। (तज़्किरतुल कर्तबी)

८१) रूह की तरक़्क़ी नौ क़िस्म पर है:- पहले मोमिन, दूसरा आबिद, तीसरा ज़ाहिद, चौथा आरिफ़, पांचवाँ वली, छटा नबी, सातवाँ मुरसल, आठवाँ उलुल अज़्म, नवाँ ख़ातिम। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में यह कुल मर्तबे मौजूद हैं मगर हुज़ूर का मर्तबा किसी में नहीं। (तफ़सीरे नईमी)

८२) ख़ानए कअबा की मौजूदा तामीर ५ शव्वाल १०४० हिजरी को पूरी हुई। मौजूदा इमारत कुस्तुन्तुनिया के हुक्मराँ सुल्तान अम्मार बिन सुल्तान अहमद ख़ाँ ने तामीर की। (तफ़सीरे नईमी)

८३) मौजूदा ख़ानए कअबा की तअमीर के दौरान हर रोज़ चालीस हज़ार मन बोझ ऊंटों के मिट्टी और कंकर के निकाले जाते थे। (तफ़सीरे नईमी)

८४) इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मस्जिदे हराम सारी दुनिया का क़िब्ला है और ख़ानए कअबा उस मस्जिद का क़िब्ला है। (तफ़सीरे नईमी)

८५) सफ़ा और मरवा किसी ज़माने में मस्जिदे हराम के पास दो पहाड़ियां थीं, अब मामूली बलनदियाँ रह गई हैं। सफ़ा हरम शरीफ़ के दायें तरफ़ है और मरवा बाईं जानिब। दोनों के बीच ४६३ क़दम यानी तक़रीबन सात फ़रलांग का फ़ासला है। (तफ़सीरे नईमी)

८६) पहले ख़ानए कअबा का ग़िलाफ़ मुख़्तलिफ़ रंगों का होता था ख़लीफ़ा मामूनुर रशीद ने सफ़ेद रंग का ग़िलाफ़ चढ़ाया। मेहमूद ग़ज़नवी के ग़िलाफ़ का रंग ज़र्द था, मिस्र के फ़ातिमी ख़लीफ़ा सफ़ेद रंग के ग़िलाफ़ भेजते थे, ख़लीफ़ा नासिर अब्बासी ने शुरू में सब्ज़ रंग का ग़िलाफ़ बनवाया था फिर सियाह रेशम का बनवा कर भेजा। इस के बाद सियाह ग़िलाफ़ ही बनवाया जाता रहा है। (तफ़सीरे नईमी)

८७) ग़िलाफ़े कअबा के चारों तरफ़ ज़री के काम की पट्टी बनाने और उस पर कअबे से मुताल्लिक़ क़ुरआनी आयतें लिखवाने का सिलसिला सब से पहले ७६१ हिजरी में मिस्र के सुल्तान हसन ने शुरू किया था। (तफ़सीरे नईमी)

८८) मक्के की बाबत कुछ लोगों का ख़्याल है कि यह बाबुली ज़ुबान का लफ़्ज़ है जो सय्यिदुना इब्राहीम अलैहिस्सलाम के मुल्क की ज़ुबान थी। (तफ़सीरे नईमी)

८९) जबले बू-क़ुबैस सफ़ा के नज़्दीक बैतुल्लाह शरीफ़ के बिल्कुल सामने

पड़ता है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि यह सब से पहला पहाड़ है जो दुनिया की सतह पर नज़र आया। एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ तूफ़ाने नूह के बाद हजरे अरावद इस पहाड़ पर अमानत के तौर पर मेहफ़ूज़ रहा। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चाँद के दो टुकड़े करने का मोअजिज़ा जिस का बयान कुरआन में है इसी पहाड़ पर दुनिया वालों को दिखाया गया। (तफ़सीरे नईमी)

९०) मस्जिदे क़ुबा मुसलमानों की सब से पहली मस्जिद है, इसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने दस्ते मुबारक से तअमीर फ़रमाया था। मस्जिदे हराम, मस्जिदे नबवी और मस्जिदे अक़सा के बाद यह तमाम मस्जिदों से अफ़ज़ल है, यहाँ दो रकअत नमाज़ का सवाब एक उमरे जैसा है। (तफ़सीरे नईमी)

९१) मस्जिदे नबवी की तअमीर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी सहाबा के साथ पत्थर ढोते और शेअर पढ़ते जाते। एक शख़्स जो मिट्टी ढो रहा था आगे बढ़ के अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! अपने हिस्से की ईंटें मुझे दे दीजिये, इन्हें मैं ले जाऊं। फ़रमाया: दूसरी उठा लो। तुम मुझ से ज़्यादा अल्लाह के मुताज तो नहीं। एक और शख़्स जो गारा बनाने में माहिर था उसे देख कर फ़रमाया: अल्लाह उस पर रहम फ़रमाए जिसे किसी सनअत में कमाल हासिल हो। फिर उसे ताकीद फ़रमाई कि तुम यही किया करो इस में तम्हें ख़ूब महारत है। (अल-हदीस)

९२) मस्जिदे सख़रा (क़िब्लए अव्वल) में उस पत्थर की ज़बान है जिस ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कलाम किया था। (तफ़सीरे नईमी)

९३) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिजरत के तीन मक़ामात मदीना, क़िन्नसरीन और बहरैन इल्हाम के ज़रिये बताए गए कि इन में से किसी मक़ाम को आप हिजरत कर जायें। बाद में मदीने की नशानदही कर दी गई। (तफ़सीरे नईमी)

९४) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जन्नत में बुक़आ नामी हूर मुश्क, अम्बर, काफ़ूर और ज़ाफ़रान चार चीज़ों से बनी है। इस का ख़मीर नहरे हैवान के पानी से तय्यार किया गया है। अल्लाह तआला के कुन फ़रमाने से वह पैदा हुई है। तमाम हूरें उस की आशिक़ हैं। उस के एक बार थूकने से समुन्द्र का खारी पानी मीठा हो जाए। उस के सीने पर लिखा है जो शख़्स मुझ जैसी हूर का ख़्वाहिशमन्द हो तो उसे चाहिये कि मेरे रब की इताअत करे। (तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन, फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी)

९५) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने के कई नाम तय्यबा, मदीनतुन्नबी रखे। इसे आप हबीबा और मेहबूबा भी कहते थे। मुहद्दिसीन ने दलीलों के साथ मदीनए मुनव्वरा के ९९ नाम बयान किये हैं। अल्लाह तआला ने इस शहर को ताबा (पाक) फ़रमाया है। (तफ़सीरे नईमी)

९६) मदीने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ियाम की जगह की पहचान करने के लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ही हुक्म से आप की ऊंटनी की मुहार खोल दी गई। ऊंटनी उस हिस्से पर जहाँ अब बाबे जिब्रईल है आ बैठी, फिर उठकर दस पन्द्रह क़दम चली और इत्मिनान से बैठ गई। यह आराज़ी सहल और सुहैल दो यतीम अन्सार की थी जो असअद बिन ज़ुरारा की निगरानी में थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अभी ऊंटनी से उतरे भी न थे कि वह उठ खड़ी हुई, वहाँ पड़ी ज़मीन का एक बड़ा सा चक्कर लगाया और पहले वाली जगह पर आकर बैठ गई। ऊंटनी ने ज़मीन के जिस हिस्से का चक्कर लगाया था वही हिस्सा रियाज़ुल जन्नह या जन्नत की क्यारी क़रार पाया। (तफ़सीरे नईमी)

९७) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने में पहले पहल हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु के मकान में क़ियाम फ़रमाया। क़ियाम की मुद्दत सात माह रही। (तफ़सीरे नईमी)

९८) उलमा फ़रमाते हैं कि रियाज़ुल जन्नह दर अस्ल जन्नत का बाग़ीचा है इस लिहाज़ से इसे ज्यूं का त्यूं जन्नत में मुन्तक़िल कर दिया जाएगा और फ़ना या मअदूम नहीं किया जाएगा। (ज़ियाउन्नबी, पीर मुहम्मद करम अली शाह अज़हरी)

९९) बाबे जिब्रईल के क़रीब गुम्बदे ख़ज़रा से मिला हुआ सब से बड़ा मीनारा रईसा है, तहज्जुद की अज़ान इसी पर होती है। इशा बाद मस्जिदे नबवी बन्द हो जाती। तहज्जुद की अज़ान के लफ़्ज़ मुहम्मदुर रसूलुल्लाह पर सारी मस्जिद रौशनी से मुनव्वर हो जाती और सारे दरवाज़े एक साथ खुल जाते हैं। (तफ़सीरे नईमी) मौजूदा सऊदी बादशाह ने जब से हरमैन शरीफ़ैन की ख़िदमत संभाली है तब से मस्जिदे नबवी शरीफ़ रात भर खुली रहती है। (नज्मी)

१००) मस्जिदे नबवी में बाबुस्सलाम पर दूसरा मीनारा तुर्की तर्ज़े तामीर का है। साठ मीटर ऊंचे इस मीनारे को नासिर बिन मुहम्मद क़लाऊन ने बनवाया था। (तफ़सीरे नईमी)

१०१) मक्कए मुअज़्ज़मा हिजाज़े मुक़द्दस का मशहूर शहर है जो मश्रिक़ में जबले बू-क़ुबैस और मग़रिब में जबले क़ुऐ क़िआन दो बड़े पहाड़ों के बीच वाक़े है। इस के चारों तरफ़ छोटी छोटी पहाड़ियों और रेतीले मैदानों का

सिलसिला दूर दूर तक चला गया है। (सीरते मुस्तफ़ा, अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी)

१०२) हुजरए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चारों तरफ़ की जाली सुल्तान क़ाइत बाई ने ८७६ हिजरी में नसब कराई। (तफ़सीरे नईमी)

१०३) भवन निर्माण कला के माहिरों का कहना है कि मस्जिदे नबवी इस्लामी दुनिया की सब से खूबसूरत, मज़बूत और मुस्तहकम इमारत है जो अभी सदियों तक बरक़रार रहेगी। (तफ़सीरे नईमी)

१०४) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मेरा मिम्बर हौज़े कौसर पर है। (तफ़सीरे नईमी)

१०५) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मदीने की घाटियों में फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं ताकि ताऊन दाख़िल न हो न दज्जाल। (तफ़सीरे नईमी)

१०६) कोहे उहद के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि यह जन्नत के दरवाज़े पर निगहबानी का फ़रीज़ा अन्जाम देगा। (तफ़सीरे नईमी)

१०७) मदीने की खजूर अजवा के बारे में हदीसों में है कि जो कोई इस के सात दाने नहार मुंह खाए वह अस्सी रोज़ जादू या ज़हर के असर से हर तरह महफ़ूज़ हो जाता है। (बुख़ारी शरीफ़)

१०८) मस्जिदे क़ुबा का मौजूदा ख़ूबसूरत रूप त्यूनिस के सद्र हबीब बू-रक़ीबा का तअमीर कराया हुआ है। (तफ़सीरे नईमी)

१०९) कुछ यहूदी ज़ाहिर में ईमान लाए थे। उन्हों ने मस्जिदे क़ुबा के नज़्दीक एक मस्जिद इस ग़र्ज़ से बनाई थी कि वहाँ जमा हो कर इस्लाम के ख़िलाफ़ मीटिंग करें, जलसे और मन्सूबा बन्दियाँ करें। यही मस्जिदे ज़िरार थी, इस का बानी अबू आमिर राहिब इस्लाम का बदतरीन दुश्मन था। (नुज़्हतुल क़ारी)

११०) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर सनीचर को मस्जिदे क़ुबा तशरीफ़ फ़रमा होकर वहाँ नवाफ़िल अदा करते थे। ख़ुलफ़ाए रिशिदीन भी इस सुन्नत पर सख़्ती से अमल करते थे। हज़रत उमरे फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि अगर यह मस्जिद क़ुबा की जगह सनआ (यमन) में होती तो ख़ुदा की क़सम हर सनीचर को वहाँ पहुंचने में देर न करता। (तफ़सीरे नईमी)

१११) बीरे अरीस मस्जिदे क़ुबा के सामने एक बाग़ के कुंवें को कहते हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अक्सर इस कुंवें की मुंडेर पर तशरीफ़ फ़रमा होते थे। हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार सुन्नते नबवी के

इतिबाअ में कुंवें की मुंडेर पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि आप के हाथ से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अंगूठी (मोहरे नबुव्वत) कुंवें में गिर गई। लाख तलाश किया गया पर न मिली। इस वाक़ए के बाद से इस कुंवें का नाम बीरे ख़ातम यानी अंगूठी वाला कुंवाँ पड़ गया। (बुख़ारी शरीफ़)

११२) उलमा फ़रमाते है कि दूसरी मस्जिदों में सफ़ का दायाँ हिस्सा बाएं से अफ़ज़ल होता है मगर मस्जिदे नबवी में बायाँ हिस्सा दाएं से अफ़ज़ल है क्योंकि वह रौज़ए अक़दस से क़रीब है। (तफ़सीरे नईमी)

११३) जब संगे असवद कअबे की दीवार में क़ायम किया गया तो उस की रौशनी दूर दूर तक जाती थी। जहाँ जहाँ तक इस की रौशनी पहुंची वहाँ तक हरम की हदें मुक़र्रर हुईं जिन में शिकार करना मना है। (तफ़सीरे नईमी)

११४) हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम को हुक्म हुआ, वह अपने परों पर शाम या फ़िलिस्तीन की कुछ ज़मीन उठा लाए। पहले उसे ख़ानए कअबा के गिर्द सात बार तवाफ़ कराया गया फिर उसे मक्कए मुअज़्ज़मा से कुछ मील दूर दो पहाड़ियों पर रख दिया गया। इसी लिये उस का नाम ताइफ़ पड़ा। यहाँ की आबो हवा निहायत खुशगवार रहती है और यहाँ नफ़ीस मेवे कसरत से पैदा होते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

११५) ख़ानए कअबा पांच पहाड़ों के पत्थरों से बनाः तूरे सीना, तूरे ज़ैता, कोहे जूदी, कोहे लिब्नान और कोहे हिरा। (तफ़सीरे नईमी)

११६) हज हमेशा से कअबे का ही हुआ। बैतुल मक़दिस का हज कभी न हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

११७) पिछले ज़माने में एक शख़्स था असाफ़ और एक औरत थी नाइला। उन्हों ने ख़ानए कअबा में बुरी नियत से एक दूसरे को हाथ लगाया। अल्लाह तआला का अज़ाब नाज़िल हुआ और वह दोनों पत्थर हो गए। इब्रत के लिये असाफ़ को तो सफ़ा पहाड़ी पर रख दिया गया और नाइला को मरवा पर ताकि लोग उन्हें देख कर गुनाह के ख़्याल से बचें। कुछ ज़माने के बाद जहालत का दौर हुआ तो लोगों ने उन की पूजा शुरू कर दी। जब वह सफ़ा और मरवा के बीच दौड़ते तो ताज़ीम के इरादे से उन्हें भी छू लेते। मुसलमानों को बुत परस्ती की इसी मुशाबिहत की वजह से सफ़ा और मरवा के बीच दौड़ना ना-पसन्द हुआ जिस की तसल्ली के लिये अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में आयत नाज़िल फ़रमाई और मुसलमानों को इत्मिनान दिलाया गया कि जिस तरह कअबे के अन्दर जाहिलियत के ज़माने में काफ़िरों ने बुत रखे थे, अब इस्लाम के दिनों में बुत उठा दिये गए और कअबा शरीफ़ का तवाफ़

दुरुस्त रहा उसी तरह मुश्रिकों की बुत परस्ती से सफ़ा और मरवा के शिआइरे दीन होने में कुछ फ़र्क़ नहीं आया। (तफ़सीरे कबीर, तफ़सीरे नईमी)

११८) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि मिना को मिना इस लिये कहते हैं कि जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तौबा के बाद अरफ़ात से यहाँ पहुंचे तो हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: कुछ तमन्ना करो। आप ने जन्नत की आरज़ू की, लिहाज़ा इस जगह का नाम मिना हुआ यानी ख़्वाहिश की जगह। हो सकता है कि इसे इस लिये मिना कहा जाता हो कि मिना के दिनों में रोज़ा रखना हराम है। यह दुनियावी ख़्वाहिशात यानी हलाल गिज़ा और जिमाअ हासिल करने का ज़माना है। (तफ़सीरे नईमी)

११९) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हजून (मक्कए मुअज़्ज़मा का क़ब्रस्तान) और बक़ीअ (मदीनए मुनव्वरा का क़ब्रस्तान) के किनारे पकड़ कर जन्नत में इस तरह झाड़ दिये जायेंगे कि यहाँ के तमाम मदफ़ून वहाँ पहुंच जायेंगे। (तफ़सीरे कबीर, रूहुल बयान)

१२०) हदीस शरीफ़ में है कि जो एक घड़ी भी मक्कए मुअज़्ज़मा की गर्मी बर्दाश्त कर ले वह दोज़ख़ से दो सौ साल की राह दूर रहेगा। (तफ़सीरे कबीर, रूहुल बयान)

१२१) बक्का बक्कुन से बना जिस के मानी हैं कुचल डालना। चुंकि शहरे मक्का के दुश्मन अस्हाबे फ़ील कुचल दिये गए, इस लिये इसे बक्का कहा जाता है। और मक्का मक्कुन से बना यानी चूस लेना, ख़ुश्क कर देना। चुंकि यह शहर हाजियों के गुनाहों को जज़्ब कर लेता है इस लिये इसे मक्का कहते हैं। मक्कए मुअज़्ज़मा के बहुत नाम हैं: मक्का, बक्का, उम्मे रहम, बशाशा, हातिमा, उम्मुल क़ुरा, बलदे अमीन, अलमामून, सलाह, क़ादिस, मुक़द्दस, रास, मुबय्यिना। (तफ़सीरे ख़ाज़िन, तफ़सीरे कबीर)

१२२) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बाग़े फ़िदक अभी तक वक़्फ़ चला आरहा है क्योंकि नबी की मीरास तक़सीम नहीं होती। (नुज़्हतुल क़ारी)

१२३) तफ़सीरे मदारिक में है अगर एक साल लोग कअबे को ख़ाली कर दें तो कअबा ग़ायब हो जाएगा और दुनिया बरबाद हो जाए। (तफ़सीरे नईमी)

१२४) जन्नतुल बक़ीअ का ज़िक्र तौरात में यूँ था: एक क़ब्रस्तान खजूर के दरख़्तों से घिरा हुआ होगा। सत्तर हज़ार आदमी इस में से उठेंगे जिन के चेहरे चौधवीं के चाँद की तरह चमक रहे होंगे। (तफ़सीरे नईमी)

१२५) बद्र उस मशहूर जगह का नाम है जहाँ १७ रमज़ान सन दो हिजरी को हक़ और बातिल के बीच फ़ैसला-कुन मशहूर ग़ज़वा हुआ था। बद्र नाम के

एक शख़्स ने यहाँ एक कुंवाँ खुदवाया था उसी के नाम पर कुंवें का, फिर इस जगह का नाम पड़ गया। (नुज़्हतुल क़ारी)

१२६) मुज़्दलिफ़ा का दूसरा नाम जमअ भी है इस का एक सबब तो यही है कि लोग दुनिया के कोने कोने से आकर यहाँ जमा होते हैं। दूसरी वजह यह है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हज़रत हव्वा ने यहाँ इकट्ठे रात गुज़ारी थी। (तफ़सीरे नईमी)

१२७) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इन्सानी दुनिया की उम्र सात हज़ार साल है। हम छटे हज़ारे में पैदा हुए। (तफ़सीरे नईमी)

१२८) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूर के फ़रिश्ते की हालत बयान करते हुए फ़रमायाः उस की दाईं जानिब जिब्रईल अलैहिस्सलाम हैं और बाईं जानिब मीकाईल अलैहिस्सलाम। (तफ़सीरे नईमी)

१२९) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब जन्नती जन्नत में और दोज़ख़ी दोज़ख़ में दाख़िल हो जायेंगे तो मौत को एक मेंढे की शक्ल में लाकर ज़िब्ह कर दिया जाएगा। फिर एक पुकारने वाला पुकारेगाः ऐ जन्नत वालो, अब मौत नहीं है, ऐ दोज़ख़ वालो, अब मौत नहीं है। (बुख़ारी शरीफ़)

१३०) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमायाः ख़ुदा ने ज़मीन हफ़्ते के दिन पैदा की और उस पर पहाड़ इतवार के दिन बनाए और दरख़्तों को पीर के दिन पैदा फ़रमाया और बुरी चीज़ें मंगल के दिन पैदा कीं और रौशनी को बुध के दिन पैदा किया और जुमेरात के दिन ज़मीन पर मवेशी और चौपाए पैदा करके फैलाए और सब से आख़िर में जुम्अे के दिन नमाज़े अस्र के बाद बिल्कुल आख़िर घड़ी में आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया। (तफ़सीरे नईमी)

१३१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जन्नत में ऐसी खिड़कियां हैं जिन का बाहरी हिस्सा अन्दर से और अन्दरूनी हिस्सा बाहर से नज़र आता है। यह अल्लाह से मुहब्बत रखने वालों, अल्लाह के लिये आपस में मिलने जुलने वालों और अल्लाह की राह में ख़र्च करने वालों के लिये तय्यार की गई हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१३२) अल्लाह तआला फ़रमाता हैः ख़ुलिक़ल इन्सानु हलूअन यानी इन्सान बे-सब्रा पैदा किया गया। किताब लुब्बे लुबाब में मक़ातिल से रिवायत है कि हलूअ कोहे क़ाफ़ के पीछे एक जानवर है जो रोज़ाना सात जंगलों को तर घास

से ख़ाली कर देता है और तमाम सूखी घास पात को खा लेता है। सात दरिया का पानी पीता है। गर्मी और सर्दी में बेताब रहता है और हर रात इस ख़्याल में गुज़ारता है कि कल क्या खाएगा। अल्लाह तआला ने इन्सान को बेसब्री में इस जानवर से तश्बीह दी है। (सबए सनाबिल शरीफ)

१३३) चार सिफ़तें इन्सान में चार अनासिर की वजह से पैदा हुई। अव्वल तकब्बुर जो आग से पैदा हुआ, दूसरे शहवत जो हवा का नतीजा है, तीसरे हिर्स जो पानी की फ़ितरत है, चौथे बुख़्ल जो ख़ाक की सफ़्त है। (तफ़सीरे नईमी)

१३४) किसी ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछाः जन्नत कहाँ है? फ़रमायाः सातों आसमानों के ऊपर और दोज़ख़ सातों ज़मीनों के नीचे है। (मुआलिमुत तन्ज़ील, हुसैन बिन मसऊद अबू मुहम्मद नक्वी शाफ़ई)

१३५) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआला के पास रहमत के सौ हिस्से थे उन में से एक हिस्सा करके तमाम जिन्न, इन्स, जानवर और परिन्द को इनायत फ़रमा दिया जो वह आपस में इस्तेमाल करते हैं और वहशी जानवर अपने बच्चों पर करते हैं। बाक़ी ९९ हिस्से अपने पास रखे जो अपने बन्दों पर क़ियामत के रोज़ इस्तेमाल फ़रमएगा। (तफ़सीरे नईमी)

१३६) सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं अल्लाह तआला ने आसमान को तारों से संवारा, फ़रिश्तों को जिब्रईल अलैहिस्सलाम से संवारा, जन्नत को हूरों से संवारा, पैग़म्बरों को सय्यिदि अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से संवारा, दिनों को जुम्ए से संवारा, रातों को लैलतुल क़द्र से संवारा, महीनों को रमज़ान से संवारा, सज्दों को कअबा शरीफ़ से संवारा, किताबों को क़ुरआन मजीद से संवारा और क़ुरआन शरीफ़ को बिस्मिल्लाह से संवारा। (तफ़सीरे नईमी)

१३७) हज़रत इकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नती औरतें और मर्द हमेशा ३५ साल के जवान रहेंगे। उन का क़द आदम अलैहिस्सलाम की तरह साठ हाथ का होगा। उन के दाढ़ी नहीं होगी, सब की आँखें क़ुदरती तौर पर सुरमा लगी हुई होंगी, हर एक के जिस्म पर सत्तर (७०) जोड़े होंगे, हर जोड़े का रंग अलग होगा, और वह जोड़े ऐसे शफ़्फ़ाफ़ होंगे कि उन सब का रंग ऊपर से नज़र आएगा। रोज़ाना उन का हुस्नो जमाल बढ़ेगा, न कभी बूढ़े होंगे, न दुबले, न कमज़ोर और न उन के कपड़े कभी मैले होंगे। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

१३८) तफ़सीरे रूहुल बयान में है कि इन्सान जिन्नात का दसवाँ हिस्सा और जिन्न व इन्स ख़ुश्की के जानवरों का दसवाँ हिस्सा और यह सब मिल कर परिन्दों का दसवाँ हिस्सा और यह सब मिल कर दरियाई जानवरों का

दसवाँ हिस्सा और यह सब मिल कर ज़मीन के फ़रिश्तों का दसवाँ हिस्सा और वह सब मिल कर पहले आसमान के फ़रिश्तों का दसवाँ हिस्सा और वह सब मिल कर दूसरे आसमान के फ़रिश्तों का दसवाँ हिस्सा, सातवें आसमान तक यही तरतीब है। फिर यह तमाम मख़लूक़ कुर्सी के फ़रिश्तों के मुक़ाबले में बहुत कम हैं, वह सब मिल कर अर्शे आज़म के एक पर्दे के फ़रिश्तों के मुक़ाबले में बहुत कम हैं। ख़्याल रहे कि अर्शे आज़म के छः लाख पर्दे हैं और हर पर्दे में उसी क़द्र फ़रिश्ते, फिर यह तमाम मख़लूक़ उन फ़रिश्तों के मुक़ाबले में, जो अर्शे आज़म के आस पास घूमते रहते हैं, ऐसे हैं जैसे दरिया के मुक़ाबले में एक बूंद। उन की गिनती रब ही जानता है। (तफ़सीरे नईमी)

१३९) तफ़सीरे अज़ीज़ी में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश का वाक़िआ इस तरह बयान किया गया है: हक़ तआला ने हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि तमाम रूए ज़मीन में से सियाह, सफ़ेद, सुर्ख़, हरी, नीली, पीली, मीठी, खारी, नर्म, ख़ुश्क हर किसम की एक मुट्ठी भर ख़ाक लाओ। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने ज़मीन पर आकर ख़ाक उठानी चाही मगर ज़मीन ने सबब पूछा। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने रब का हुक्म बताया। ज़मीन ने अर्ज़ किया: मैं इस से ख़ुदा की पनाह पकड़ती हूँ कि तू मुझ से ख़ाक को उठा कर इन्सान बनाए जिस की वजह से मेरा कुछ हिस्सा जहन्नम में जाए। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम वापस आ गए। अल्लाह तआला ने फिर हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम को बारी बारी भेजा मगर वह भी उसी तरह ख़ाली हाथ लौट आए। आख़िर में अल्लाह तआला ने मलकुल मौत हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम को भेजा। उन्हों ने ज़मीन की एक न सुनी बल्कि फ़रमाया: मैं तो अल्लाह के हुक्म का ताबेदार हूँ, तेरी आजिज़ी और ज़ारी की वजह से रब की इताअत नहीं छोड़ सकता। इसी लिये उन्हें जान निकालने का काम सौंपा गया कि तुम ने ही इस ख़ाक को ज़मीन से अलग किया है, तुम ही इसे मिलाना। अब उन्हें हुक्म हुआ कि इस ख़ाक का मुख़्तलिफ़ पानियों से गारा बनायें। चुनान्चे उस पर चालीस रोज़ बारिश हुई। उन्तालीस दिन तो रंज और ग़म का पानी बरसा और एक दिन ख़ुशी का। इसी लिये इन्सान को रंज और ग़म ज़्यादा होता है और ख़ुशी कम। फिर इस गारे को मुख़्तलिफ़ हवाओं से इतना सुखाया कि खनखनाने लगा। फिर फ़रिश्तों को हुक्म हुआ कि इस गारे को मक्का और ताइफ़ के बीच वादिये नोअमान में अरफ़ात पहाड़ के नज़्दीक रखें। फिर हक़ तआला ने अपने दस्ते क़ुदरत से इस गारे को हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का जिस्म बनाया

और सूरत तय्यार की। फ़रिश्तों ने कभी ऐसी सूरत देखी न थी, अब जो देखी तो हैरत में पड़ गए और उस के चारों तरफ़ घूमने लगे। इस पुतले की ख़ूबसूरती देख कर हैरान थे। इब्लीस को भी इस सारे ऐलान की ख़बर हो चुकी थी, वह भी इस पुतले को देखने आया और इस के चारों तरफ़ फिर के बोला कि ऐ फ़रिश्तो, तुम इसी का तअज्जुब करते हो? यह तो एक अन्दर से ख़ाली जिस्म है जिस में जगह जगह सूराख़ हैं और इस की कमज़ोरी का यह आलम है कि अगर भूखा हो तो गिर पड़े और अगर ख़ूब पेट भर कर खाले तो चल फिर न सके। इस खोखले पुतले से कुछ न हो सकेगा। फिर बोला: हाँ इस के सीने की बाईं तरफ़ एक बन्द कोठरी है, यह ख़बर नहीं कि उस में क्या है। शायद कि यही लतीफ़ए रब्बानी की जगह हो जिस की वजह से यह ख़िलाफ़त का हक़दार हुआ। फिर रूह को हुक्म हुआ कि इस पुतले में और इस के गढ़ों में भर जाए। जब रूह पुतले के पास पहुंची तो जिस्म को तंग और अन्धेरा पाया, अन्दर जाने से झिजक गई। कुछ रिवायतों में आया है कि तब नूरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वह पुतला जगमगा दिया गया यानी वह नूर आदम अलैहिस्सलाम की पेशानी में अमानत के तौर पर रख दिया गया। अब रूह आहिस्ता आहिस्ता दाख़िल होने लगी। अभी सर में थी कि आदम अलैहिस्सलाम को छींक आई और ज़बान से निकला अल्हम्दु लिल्लाह। हक़ तआला ने फ़रमाया यरहमुकल्लाह, यही अब सुन्नत है। जब रूह कमर तक पहुंची, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने उठना चाहा मगर गिर पड़े क्योंकि नीचे के धड़ में रूह पहुंची ही न थी। जब तमाम बदन में रूह फैल गई तो हुक्म हुआ कि फ़रिश्तों के पास जाकर उन्हें सलाम करो और सुनो वह क्या जवाब देते हैं। तब आदम अलैहिस्सलाम उधर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया: अस्सलामो अलैकुम। उन्हों ने जवाब दिया वअलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाह। इरशादे इलाही हुआ कि यही अल्फ़ाज़ तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के लिये मुक़र्रर किये गए। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि मौला मेरी औलाद कौन है? तब उन की पुश्त पर दस्ते क़ुदरत फेर कर उस से सारी इन्सानी रूहें निकाली गईं और आदम अलैहिस्सलाम को दिखाई गईं और उन्हें काफ़िर, मोमिन, मुनाफ़िक़, मुश्रिक, औलिया, क़ुतुब, अम्बिया दिखाए गए। (तफ़सीरे नईमी)

१४०) सय्यिदुना अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हिन्दुस्तान की ज़मीन हरी भरी है और ऊद और करन्फल वग़ैरा ख़ुश्बुएं इस लिये वहाँ पैदा होती हैं कि आदम अलैहिस्सलाम जब इस ज़मीन पर तशरीफ़ लाए तो

उन के जिस्म पर जन्नती दरख़्त के पत्ते थे और पत्ते हवा से उड़ कर जिस दरख़्त पर पहुंचे वह हमेशा के लिये ख़ुश्बूदार हो गया। (तफ़सीरे नईमी)

१४१) मीसाक़ के दिन रूहों की चार सफ़ें थीं। पहली सफ़ नबियों की, दूसरी सफ़ औलिया अल्लाह, तीसरी सफ़ आम मुसलमानों की और चौथी में काफ़िरों की रूहें। रब ने फ़रमायाः क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? नबियों ने जमाले इलाही देखा और किसी आड़ या पर्दे के बिना यह कलाम सुना और अर्ज़ किया बला यानी हाँ। इसी लिये वह दुनिया में नबुव्वत और रिसालत और कलामे इलाही के मुस्तहिक़ हुए। औलिया अल्लाह ने नबियों की रूहों के पर्दे से यह अनवार देखे और कलामे इलाही सुन कर बला कहा। लिहाज़ा वह नबियों के समर्थक और इल्हाम के मुस्तहिक़ हुए। आम मुसलमानों ने दो वास्तों यानी अम्बिया और औलिया के ज़रिये सुन कर उलूहियत का इक़रार किया लिहाज़ा वह भी दुनिया में नबियों के उम्मती और वलियों के फ़रमाँ बरदार बने और बिना देखे अल्लाह की ज़ात पर ईमान लाए। काफ़िरों ने बहुत से पर्दों के पीछे से इस ख़िताब की आवाज़ सुनी मगर मक़सद नहीं समझा, ऐसे ही बला का शोर सुना और ख़ुद भी बिना सोचे समझे बला कह दिया। जब दुनिया में आए तो सब भूल गए। (तफ़सीरे नईमी)

१४२) जन्नत के सौ दर्जे मुजाहिदीन के लिये ख़ास हैं जिन के दरमियानी हिस्से का नाम फ़िरदौस है इसी पर अर्शे इलाही है और यहीं से जन्नत की नहरें जारी होती हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१४३) मशअरे हराम मुज़्दलिफ़ा में एक पहाड़ का नाम है इसी को क़ुज़ह और मीक़दह भी कहते हैं। जाहिलियत के ज़माने में लोग अरफ़ात से वापस आकर तमाम रात इस पर आग जलाते थे। इस्लाम ने हुक्म दिया कि यह बेहूदा बात है, यहाँ आकर अल्लाह का ज़िक्र करो। (तफ़सीरे नईमी)

१४४) कुर्सी वह चीज़ है जो अर्श के नीचे और सातों आसमानों के ऊपर है जिसे फ़लसफ़ी आठवाँ आसमान या फ़लके बुरूज कहते हैं। हदीस शरीफ़ में है कि कुर्सी के मुक़ाबले में आसमान और ज़मीन ऐसे हैं जैसे किसी जंगल में अंगूठी और यही मुनासिबत कुर्सी को अर्श के मुक़ाबले में है। (दुर्रे मन्सूर)

१४५) कुर्सी को चार फ़रिश्ते उठाए हुए हैं। एक फ़रिश्ता हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की शक्ल पर है, दूसरा गिध की शक्ल में, तीसरा बैल की शक्ल में और चौथा शेर की शक्ल पर। (रूहुल बयान)

१४६) कुछ रिवायतों में है कि अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों और कुर्सी उठाने वाले फ़रिश्तों के बीच सत्तर पर्दे ज़ुल्मत के और सत्तर पर्दे नूर के हैं। हर पर्दे

की मोटाई पांच सौ बरस की राह है। अगर यह पर्दे न होते तो अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों के नूर से कुर्सी उठाने वाले फ़रिश्ते जल जाते। (तफ़सीरे नईमी)

१४७) जूँ को पकड़ कर ज़िंदा छोड़ देना हाफ़िज़ा कमज़ोर कर देता है। (तफ़सीरे नईमी)

१४८) रेशमी कपड़े में जूँ नहीं पकड़ती इस लिये ख़ारिश की बीमारी और जूँ की ज़ियादती में मर्द को रेशम पहनना जाइज़ है। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अब्दुर रहमान बिन औफ़ और ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हुमा को जूँ की शिकायत पर रेशम पहनने की इजाज़त दी थी। (तफ़सीरे नईमी)

१४९) कुछ रिवायतों में है कि मेंडक अल्लाह का बहुत ही ज़िक्र करता है इस की तस्बीह सुब्हानल मलिकिल कुद्दूस है। कुछ रिवायतों में है कि मेंडक को न मारो कि यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर नमरूद की आग बुझाने की कोशिश करता रहा था। (रूहुल बयान)

१५०) क़ियामत के बाद कोहे तूर, कअबए मुअज़्ज़मा, मस्जिदे नबवी, बैतुल मक़दिस जन्नत में रखे जाएंगे। (रूहुल मआनी)

१५१) मक़ामे इब्राहीम यानी वह पत्थर जिस पर खड़े हो कर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ख़ानए कअबा की तअमीर की थी, अपने अन्दर यह करामत रखता था कि जब सय्यिदुना इब्राहीम को ऊंचा होने की ज़रूरत होती थी तो वह पत्थर भी ऊंचा हो जाता था और जब आप नीचे होना चाहते थे तो वह नीचे हो जाता था। इस पत्थर पर आज तक सय्यिदुना इब्राहीम अलैहिस्सलाम के क़दमों के निशानात हैं। (तफ़सीरे कबीर, रूहुल मआनी, रूहुल बयान)

१५२) कअबए मुअज़्ज़मा की बुनियाद आज से तक़रीबन चार हज़ार साल पहले २२०० क़ब्ले मसीह में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उन के बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने रखी थी। (तफ़सीरे नईमी)

१५३) तूर वह मशहूर पहाड़ है जो वादिये मुक़द्दस तुवा में वाक़े है जिस पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को नबुव्वत अता हुई। यहीं तौरात दी गई। यह पहाड़ दमिश्क़ से क़रीब है। (तफ़सीरे नईमी)

१५४) बैतुल मक़दिस से तीस किलोमीटर दूर अलख़लील बस्ती में ग़ारे अम्बिया है जिस में सत्तर हज़ार पैग़म्बरों के मज़ारात हैं। (सफ़रनामए फ़िल्तैन)

१५५) जहन्नम अल्लाह के सख़्त जेलख़ाने का नाम है। यह अस्ल में चाहे नम था यानी गहरा कुंवाँ या जहनाम था यानी बहुत ही गहरा कुंवाँ। इस के किनारे और थाह में साढ़े सात हज़ार साल का फ़ासला है यानी ज़मीन और आसमान के फ़ासले से बहुत ज़्यादा कि ज़मीन और आसमान का फ़ासला सिर्फ़

पांच सौ साल का है। इस में गर्म और ठन्डे दोनों तरह के तबक़े हैं जिन्हें हरूर और ज़महरीर कहते हैं हरूर गर्म, ज़महरीर ठन्डा। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

१५६) मुस्लिम और बुख़ारी ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से एक हदीस नक़्ल फ़रमाई कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला ने मख़लूक़ पैदा करने का फ़ैसला किया तो एक तहरीर अपने दस्ते क़ुदरत से लिख कर अपने पास अर्श के ऊपर रख ली कि मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब से ज़्यादा है। (तफ़सीरे रूहुल मआनी)

१५७) तारीख़ी वाक़िआ मशहूर है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कअबए मुअज़्ज़मा से बुत निकाले तो सारे बुतों का चूरा करवा के सड़क पर बिछा दिया कि उस पर गधे घोड़े पेशाब करें, लोग क़दमों से रौंदें। मगर जो बुत हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के नाम के थे उन्हें दफ़्न करा दिया। (तफ़सीरे नईमी)

१५८) सौर पहाड़, जिस की एक ग़ार में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हिजरत के मौक़े पर पनाह ली थी, मक्कए मुअज़्ज़मा से मौजूदा रास्ते से पांच मील दूर है। इस पहाड़ को सौर इस लिये कहते हैं कि एक बार इस पर एक शख़्स सौर इब्ने अब्दे मनात ने क़ियाम किया था। उसी की निस्बत से इस का नाम जबले सौर हो गया। इस पहाड़ का अस्ल नाम अतहल है। (रूहुल बयान)

१५९) हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत में एक ख़ास महल है जिसे अदन कहते हैं। इस के चारों तरफ़ बेशुमार महल और बाग़ हैं। इस के पांच हज़ार दरवाज़े हैं। इस में नबी, शहीद या सिद्दीक़ जाएंगे। (रूहुल मआनी)

१६०) हज़रत अता इब्ने साइब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अदन जन्नत की एक नहर है जिस के दोनों तरफ़ बेशुमार महल और बाग़ हैं। (तफ़सीरे कबीर, तफ़सीरे रूहुल मआनी)

१६१) एक बार हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रिश्तों से पूछा क्या रब को नींद और ऊंघ आ सकती है। अल्लाह का हुक्म पहुंचा कि तुम अपने हाथों में दो पानी से भरी हुई शीशियां लो। आप ने इस पर अमल किया। कुछ देर बाद नींद का झोंका आया तो हाथ से शीशियां गिर कर टूट गईं। वही आई कि ऐ मूसा जब तुम नींद में दो शीशियां न संभाल सके तो अगर हमें नींद आती तो हम ज़मीन और आसमान कैसे संभालते। (तफ़सीरे कबीर, रूहुल बयान)

१६२) मुस्लिम और बुख़ारी वग़ैरा में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने फ़रमाया कि इन्सान का नुत्फ़ा चालीस रोज़ तक रहमे मादर में उसी रंग पर रहता है, फिर चालीस दिन तक जमे हुए ख़ून की शक्ल में, फिर चालीस दिन तक गोश्त के लोथड़े की शक्ल में रहता है। फिर अल्लाह तआला उस पर एक फ़रिश्ता भेजता है जो उस की तमाम कैफ़ियत लिख जाता है कि यह लड़का है या लड़की, बद बख़्त है या ख़ुश नसीब, उसे कैसा रिज़्क़ मिलेगा, कब मरेगा, कैसे काम करेगा। यह तमाम बातें एक सहीफ़े में लिख कर उस बच्चे के गले में डाल देता है। (ख़ाज़िन, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

१६३) रूह तीन तरह की है: पहली रूहानिया जो जिगर या सीने में रहती है। दूसरी सुल्तानिया जो दिल में रहती है और तीसरी जिस्मानिया जो गोश्त, ख़ून, रगों और हड्डियों में रहती है। (तफ़सीरे नईमी)

१६४) नबियों और रसूलों की रूहें जन्नते अदन में रहती हैं, उलमा की रूहें जन्नतुल फ़िरदौस में, नेक लोगों की रूह जन्नते इल्लीयीन में, शहीदों की रूह जन्नती परिन्दों के पोटों में, गुनहगार मोमिन की रूह क़ियामत तक अधर में, मोमिनीन की औलाद की रूह मुश्क के पहाड़ में, काफ़िरों की सिज्जीयीन में और मुनाफ़िक़ों की दोज़ख़ में। (ज़ुब्दतुल वाइज़ीन)

१६५) दजला और फ़ुरात नामी दो दरियाओं के दरमियान वाक़ेअ सरज़मीन ज़मानए क़दीम से मेसूपोटामिया या अलजज़ीरा या माबैनुन नहरैन कहलाती है। मेसूपोटामिया का बेशतर इलाक़ा अब इराक़ में शामिल है। (अतलसुल क़ुरआन, दक्तूर शौक़ी अबू ख़लील)

१६६) मक्कए मुकर्रमा के मुख़्तलिफ़ नाम हैं: मक्का, बक्का, उम्मुल क़ुरा, अल-बैतुल हराम, अल-बैतुल अतीक़, अल-बलदुल अमीन, बैतुल्लाहिल हराम, अन-नसासह, मआद, उम्मे रहम, अल-हातिमह, अर-रास, सलाह, अल-अर्श, अलक़ादिस, अल-मुक़द्दसह, अन्नास्सह, अल-बास्सह, कौसी। (अल मोअजमुल बल्दान, जि: ५)

१६७) मदीनए मुनव्वरा को ताबह भी कहा जाता है। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने इस प्यारे शहर का नाम ताबह रखा है। (सही मुस्लिम, मुस्नदे अहमद, जि: ५)

१६८) याक़ूत हमवी ने मोजमुल बल्दान में मदीनतुन्नबी के उन्तीस नाम लिखे हैं जिन में से कुछ यह हैं: अज़रा, क़ुदिसयह, आसिमह, सकीना, महबूबह, मुख़्तारह, महबूरह, मुहर्रमह, मुबारकह, मर्हूमह, महफ़ूज़ह।

१६९) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु रब्बिल आलमीन की तफ़सीर में कहते हैं कि अल्लाह तआला ने अपनी मख़लूक़ को चार तरह बनाया है:

फ़रिश्ते, जिन्न, इन्सान और शयातीन। फिर इन चारों के दस हिस्से किये, इन में नौ हिस्से फ़रिश्ते हैं, एक हिस्सा शैतान (चाहे जिन्न हों या इन्सान), फिर इन तीनों को दस हिस्से किया, उन में नौ हिस्से शैतान हैं, एक हिस्सा जिन्न व इन्सान। फिर इन दो को दस हिस्से किया, उन में से नौ हिस्से जिन्न हैं, एक हिस्सा इन्सान, फिर इन्सान को १२५ हिस्से किया, उन में से सौ हिस्से हिन्द में भेजे, यह सब के सब दोज़ख़ी थे, बारह हिस्से रोम में पैदा किये, यह भी जहन्नमी हुए, छः हिस्सों को मश्रिक़ में ठिकाना दिया और छः को मग़रिब में, यह भी दोज़ख़ी रहे, अब सिर्फ़ एक हिस्सा रह गया, उस के ७३ हिस्से किये, उन में ७२ हिस्से गुमराह और बिदअती हैं, सिर्फ़ अहले सुन्नत वल जमाअत का एक हिस्सा नजात पाने वाला रहा। इन का हिसाब अल्लाह के हवाले, चाहे बख़्श दे चाहे अज़ाब करे। (तफ़सीरे नईमी)

१७०) अल्लाह तआला ने सूर के ग्यारह (११) दायरे बनाए हैं। यह नूर का बना हुआ एक बड़ा सींग है और इस के हर दायरे का अरज़ आसमान और ज़मीन के बराबर है। यह तीन बार फूंका जाएगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१७१) रिवायत है कि अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम को जहन्नम के दारोग़ा मालिक की तरफ़ भेजा कि दोज़ख़ से थोड़ी सी आग खाना पकाने के लिये हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को ला दें। मालिक ने कहाः ऐ जिब्रईल कितनी आग चाहिये? फ़रमाया छुहारे की बराबर। मालिक बोलेः इतनी आग दे दूं तो तमाम आसमान व ज़मीन पिघल कर बह जाएं। जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने कहाः इस से आधी दे दो। जवाब दियाः इस क़दर दे दूं तो न आसमान से मेंह बरसे न ज़मीन पर सब्ज़ा उगे। जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने निदा की कि इलाही कितनी आग लूं? हुक्म हुआ कि एक ज़र्रे की बराबर। जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने ज़र्रा बराबर आग लेकर उसे सत्तर नहरों में सत्तर सत्तर बार ठन्डा किया फिर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पास लाए। आप ने उसे एक ऊंचे पहाड़ पर रख दिया, सारा पहाड़ पिघल गया और आग अपने अस्ल मरकज़ की तरफ़ चली गई। पत्थरों और लोहे में धुवां बाक़ी रह गया जो आज तक मौजूद है। यह आग उस ज़र्रे के धुवें से पैदा हुई है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१७२) कअबए मुअज़्ज़मा के पास नेकी का सवाब एक लाख और बैतुल मक़दिस के पास पचास हज़ार के बराबर है। (तफ़सीरे नईमी)

१७३) अरब के कुफ़्फ़ार कअबए मुअज़्ज़मा का तवाफ़ नंगे हो कर करते थे, मर्द भी और औरतें भी और तवाफ़ की हालत में हाथों से तालियां और

मुंह में उंगलियां देकर सीटियां बजाते थे। इन हरकतों को बेहतरीन इबादत समझते थे। (तफ़सीरे नईमी)

१७४) सय्यिदुल अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत से एक हज़ार साल पहले तुब्बअ बादशाह हुमैर बिन वरआ मक्कए मुअज़्ज़मा पहुंचा और सात जामए फ़ाख़िरा कअबे पर पहनाए। उस वक़्त से कअबे पर ग़िलाफ़ डालना शुरू हुआ और सही यह है कि सअद बिन कर्ब अल-हमीरी ने सब से पहले कअबे पर चादर का जामा पहनाया। (तफ़सीरे नईमी)

१७५) जन्नतुल बक़ीअ का ज़िक्र तौरात में यूँ था: एक क़ब्रस्तान दो पथरीली जगहों के बीच है जिस का नाम नख़ील है। इस में सत्तर हज़ार आदमी ऐसे उठेंगे जिन के चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकते होंगे। (तफ़सीरे नईमी)

१७६) मस्जिदे नबवी में आग लगने का पहला वाक़िआ पहली रमज़ान ६५४ हिजरी में हुआ। इस में मिम्बरे नबवी का बाक़ी हिस्सा भी जल गया। (तफ़सीरे नईमी)

१७७) अरब के कुफ़्फ़ार ने यमन में एक घर बनाया था बैते ख़शम, जिसे वह कअबए यमानिया कहते थे। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबए किराम को भेज कर उसे जलवा दिया। (तफ़सीरे नईमी)

१७८) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ जिब्रईल, क्या जहन्नम के दरवाज़े हमारे दरवाज़ों की तरह हैं? अर्ज़ किया: नहीं वह कुशादा और ऊपर नीचे हैं और सत्तर बरस की मुसाफ़त पर एक दूसरे से दूर हैं और हर दरवाज़ा दूसरे से सत्तर गुना ज़्यादा गर्म है। अल्लाह के दुशमनों को जहन्नम के दरवाज़ों पर लाया जाएगा तो दोज़ख़ के दारोग़ा तौक़ और ज़न्जीरें लेकर उन का सवागत करेंगे। फिर ज़न्जीरें उन के मुंह में डाली जाएंगी जो पीछे निकल आएंगी और उन के बाएं हाथ को गर्दन से बाँध दिया जाएगा और दाएं हाथ को उल्टा करके पीठ के पीछे जकड़ दिया जाएगा और हर शख़्स को उस के शैतान के साथ ज़न्जीरों में बांध कर मुंह के बल घसीटा जाएगा, फ़रिश्ते लोहे के गदा से उन्हें मारेंगे। कोई भी इस दुख से निकलना चाहेगा तो फिर उसे उसी में धकेल दिया जाएगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिब्रईल इन दरवाज़ों में रहने वाले कौन हैं? अर्ज़ किया: सब से निचले दरवाज़े में मुनाफ़िक़ और अस्हाबे मायदा से कुफ़्र करने वाले और आले फ़िरऔन हैं। इस जगह का नाम हाविया है। दूसरे दरवाज़े में मुश्रिकीन हैं। इस जगह का नाम जहीम है। तीसरे दरवाज़े में साबी हैं इस का नाम सक़र है। चौथे दरवाज़े में शैतान और उस के मानने वाले और मजूसी हैं, इस का नाम लज़ा है। पांचवें

दरवाज़े में यहूदी हैं, इस का नाम हुतमा है। छटे में ईसाई हैं, इस का नाम सईर है। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हया करते हुए जिब्रईल अलैहिस्सलाम रुक गए तो आप ने फ़रमाया कि सातवें दरवाज़े वालों के बारे में भी बताओ। अर्ज़ किया इस में आप की उम्मत में से गुनाहे कबीरा वाले होंगे जो बिना तौबा किये मर गए। (तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन, फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी)

१७६) आद के दो बेटे थे एक का नाम शद्दाद दूसरे का नाम शदीद। दोनों ज़बरदस्ती बादशाह बन बैठे। कुछ दिन बाद शदीद मर गया और अकेला शद्दाद सारी दुनिया का बादशाह हो गया। वह अक्सर किताबें देखा करता था। एक दिन जन्नत का ज़िक्र सुना और यह कहा कि मैं आसमानी जन्नत की तरह ज़मीन पर एक जन्नत बनाऊंगा। चुनान्चे उस ने दूसरे बादशाहों से मशवरा किया और यह कहा कि मैं उसी तरह की एक जन्नत बनाना चाहता हूँ जिस की तारीफ़ अल्लाह तआला ने अपनी किताबों में बयान फ़रमाई है। उन्हों ने कहा कि हुक्म आप का, मुल्क दुनिया आप का। शद्दाद ने हुक्म दिया कि मश्रिक़ से मग़रिब तक जहाँ कहीं सोना चाँदी मौजूद हो, सब जमा कर लिया जाए। फिर राज-मिस्त्री बुलाए गए और उन में से तीन सौ ऐसे कारीगर चुने गए जिन के हाथ के नीचे हज़ार हज़ार दूसरे राज थे। यह लोग दस बरस तक मुल्क को छानते फिरे। आख़िर ज़मीन के एक ऐसे टुकड़े को चुना जिस में हरियाली, नहरें और दरख़्त बहुत सारे थे और यहाँ तीन मुरब्बअ मील में एक बाग़ की बुनियाद डाली गई जिस की एक ईंट सोने की थी एक चाँदी की। जब यह बन कर तय्यार हो गया तो उस में नहरें जारी कीं और ऐसे नक़्ली दरख़्त लगाए जिन के तने चाँदी के और शाख़ें सोने की थीं। शाख़ों में मोती और याक़ूत जड़े गए। इस बाग़ में याक़ूत और बिल्लौर के महल तय्यार हुए। नहरों में मोती और दूसरे जवाहिरात डाले गए और दरख़्तों में मुश्क और अम्बर बसाया गया। इन तमाम तय्यारियों के बाद शद्दाद को ख़बर दी गई कि बाग़ तय्यार है। चुनान्चे वह अपने वज़ीरों के साथ उस की सैर के लिये निकला। शद्दाद के आदमियों ने तमाम ज़माने का सोना चाँदी ज़बरदस्ती छीन लिया था। एक यतीम लड़के के गले में दो दिरम चाँदी की क़ीमत की कोई चीज़ थी। जब उसे छीना गया तो लड़के ने आसमान की तरफ़ देख कर कहा: इलाही तू जानता है कि यह ज़ालिम तेरी मख़लूक़ के साथ क्या कर रहा है। ऐ अल्लाह हमारी मदद कर। चुनान्चे लड़के की दुआ पर फ़रिश्तों ने आमीन कही। अल्लाह तआला ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भेजा और जब एक दिन रात की मुसाफ़त रह गई तो जिब्राईल अलैहिस्सलम ने चीख़ मारी और शद्दाद वग़ैरा

उस बाग़ में दाख़िल होने से पहले हलाक हो गए। (जुब्दतुल वाइज़ीन)

१८०) जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से ज़मीन पर तशरीफ़ लाए तो बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया: इलाही, मैं यहाँ न तो फ़रिश्तों की तस्बीह सुनता हूँ और न कोई इबादतगाह ही देखता हूँ जैसे आसमान में बैतुल मअमूर देखता था जिस के चारों तरफ़ फ़रिश्ते तवाफ़ करते हैं। जवाब में इरशाद हुआ: जाओ हम जहाँ निशान बताएं वहाँ कअबा बनाकर उस के चारों तरफ़ तवाफ़ करलो और उस की तरफ़ मुंह करके नमाज़ भी अदा करो। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की रहबरी के लिये उन के साथ चले और उन्हें वहाँ लाए जहाँ से ज़मीन बनी थी यानी जिस जगह पानी पर झाग पैदा हुआ था और फिर यही झाग फैलकर ज़मीन बनी थी। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने वहाँ अपना पर मार कर सातवीं ज़मीन तक बुनियाद डाल दी जिस को फ़रिश्तों ने पांच पहाड़ों के पत्थरों से भरा: कोहे बू-कुबैस, कोहे लिब्नान, कोहे जूदी, कोहे हिरा और तूरे ज़ैता। बुनियाद भर कर निशान के लिये चारों तरफ़ की दीवारें उठा दीं। उस की तरफ़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम नमाज़ पढ़ते रहे और उस का तवाफ़ भी करते रहे। कुछ रिवायतों में है कि खुद बैतुल मअमूर उतार कर उस बुनियाद पर रख दिया गया। गोया बुनियाद दुनियवी पत्थरों की रही और इमारत बैतुल मअमूर की। तूफ़ाने नूह तक कअबा इसी हाल में रहा। इस तूफ़ान के वक़्त वह इमारत आसमान पर उठा ली गई और कअबे की जगह ऊंचे टीले की तरह रह गई। मगर लोग बराबर बरकत के लिये यहाँ आते थे और आकर दुआएं मांगते थे। फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने तक कअबा इसी हाल में रहा। जब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और बीबी हाजिरा इस मैदान में आकर ठहरे और उन की वजह से यहाँ कुछ आबादी हो गई तब हज़रत हाजिरा के इन्तिक़ाल के बाद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को हुक्म हुआ कि आप इस्माईल को साथ लेकर यहाँ कअबे की इमारत बनाएं। इस की निशानी इस तरह क़ायम फ़रमाई कि एक बादल का टुकड़ा भेजा गया ताकि उस के साए से कअबे की हद मुक़र्रर कर ली जाए। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने उस साए की मिक़्दार ख़त खींचा और इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उस ख़त पर यहाँ तक ज़मीन खोदी कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने की बुनियाद नमूदार हो गई। इस बुनियाद पर इमारत बनाई। उस की ऊंचाई नौ हाथ और रुक्ने असवद से रुक्ने शामी तक की दीवार ३३ हाथ और रुक्ने शामी से रुक्ने ग़रबी तक की दीवार २२ हाथ और रुक्ने ग़रबी से रुक्ने यमानी तक

की दीवार ३१ हाथ और रुक्ने यमानी से फिर रुक्ने असवद तक ३० हाथ। लिहाज़ा उस वक़्त यह कअबा एक मुस्ततील की शक्ल का था जिस की लम्बाई चौड़ाई से ज़्यादा और लम्बाई की पुर्वी पशिचमी दीवारों में एक ग़ैर मेहसूस सा फ़र्क़ था। इस का दरवाज़ा ज़मीन से मिला हुआ था जिस में किवाड़ न था। कुछ दिनों बाद तुब्बअ हुमैरी ने इस दरवाज़े में किवाड़, ज़न्जीर और ताले लगवाए। यह भी ख़्याल रहे कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ख़ानए कअबा के अन्दर दाएं तरफ़ एक तग़ार सा बनाया था जो ख़ज़ाने की तरह था कि कअबे में जो कुछ नज़राने या तोहफ़े आएं. इस में रखे जाएं। इस के दो दरवाज़े थे, एक दाख़िल होने का दूसरा निकलने का। कअबा बनाने वाले ख़लीलुल्लाह थे और उन्हें गारा और पत्थर उठा कर देने वाले ज़बीहुल्लाह, अलैहिमस्सलाम। इस इमारत में तीन पहाड़ों के पत्थर लगाए गए: कोहे बू-क़ुबैस, कोहे हिरा और कोहे वरक़ान। इब्राहीम अलैहिस्सलाम से पहले किसी ने यहाँ इमारत न बनाई थी मगर आप के बाद कई बार इस की तामीर और मरम्मत हुई। चुनान्चे एक बार क़बीलए इमालिक़ा और जुरहुम ने इसे बनाया। फिर दोबारा क़ुसई इब्ने किलाब ने इस की तामीर की जिस में छत मुक़िल दरख़्त की लकड़ी की बनाई जिस पर तख़्तों की जगह खुरमे की लकड़ी डाली। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्रे शरीफ़ २५ बरस की थी तो क़ुरैश को इस की तअमीर करनी पड़ी। इस की वजह यह हुई कि एक औरत वहाँ ख़ुशबू सुलगाती थी। एक बार अचानक उस से चिंगारी उठी और छत जल गई। इस से पहले सैलाब वग़ैरा से कअबे की दीवारें भी फट चुकी थीं लिहाज़ा क़ुरैश के सरदारों ने जमा हो कर वलीद इब्ने मुग़ीरा को अमीरे तअमीर मुक़र्रर किया और कअबे को गिरा कर दोबारा बनाया गया। मगर आपस में यह तय किया कि इस में हलाल माल ही ख़र्च हो। चूंकि उस वक़्त अक्सर मालदार सूद ख़ोर थे इस लिये हलाल माल बहुत कम जमा हुआ। इस की कमी की वजह से उन्हों ने इमारत छोटी कर दी और कुछ फ़र्क़ भी कर दिये। अव्वल यह कि तामीरे इब्राहीमी से चन्द गज़ ज़मीन छोड़ कर उसे हतीम क़रार दिया जिस में अब भी कअबे का परनाला गिरता है। दूसरे यह कि दो की जगह एक ही दरवाज़ा रखा और वह भी ज़मीन से इतना ऊंचा कि जिसे चाहें जाने दें और जिसे चाहें न जाने दें। तीसरे यह कि ख़ानए कअबा के अन्दर लकड़ी के सुतूनों की दो सफ़ें बनाईं। हर सफ़ में तीन तीन सुतून थे। चौथे यह कि इस की ऊंचाई दुगनी कर दी यानी पहले नौ हाथ थी अब १८ हाथ। पांचवें यह कि ख़ानए कअबा के अन्दर रुक्ने शामी के करीब एक ज़ीना बनाया जिस से छत

पर चढ़ सकें। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक बार मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कअबे के बराबर ज़मीन में इब्राहीमी बुनियाद खोल कर दिखाई जिस में ऊंट के कोहान की शक्ल में पत्थर लगे हुए थे और फ़रमायाः ऐ आयशा, कुरैश ने रुपये की कमी की वजह से इब्राहीमी बुनियाद का कुछ हिस्सा छोड़ दिया। अभी लोग नौमुस्लिम हैं, अगर उनके भड़क जाने का डर न होता तो हम मौजूदा कअबे को गिरा कर इब्राहीमी बुनियाद पर मुकम्मल बनाते। फिर आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत की वजह से हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दोबारा कअबए मुअज़्ज़मा बनाया जिस को इब्राहीमी बुनियाद पर मुकम्मल किया। कुरैश के फ़र्क़ को दूर कर दिया, हतीम को ख़ानए कअबा में दाख़िल किया और उस में ज़मीन से लगे हुए पूरब पच्छिम दरवाज़े रखे गए। यमन से खुश्बूदार मिट्टी (जिसे अरस कहते हैं) मंगवा कर चूने में मिलवा कर गारे की जगह इस्तेमाल की। इस के दरवाज़ों पर अन्दर बाहर मुश्क और अम्बर से कहगल की गई। दीवारों पर निहायत क़ीमती रेशमी ग़िलाफ़ चढ़ाया जिसे कसवा या ग़िलाफ़े कअबा कहते हैं और जिस का रिवाज अब भी है। (तफ़सीरे अज़ीज़ी, शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी)

१८१) कअबए मुअज़्ज़मा को सब से पहले ग़िलाफ़ पहनाने वाले का नाम असअद है जो शाहे यमन था जिसे तुब्बअ कहते हैं। यही मदीनए मुनव्वरा को आबाद करने वाला है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात के शौक़ में उस ने यहीं सुकूनत इख़्तियार कर ली थी। उस की क़ौम के कुछ लोग भी यहीं बस गए। यही मदीनए तय्यबा की पहली आबादी थी। (तफ़सीरे नईमी)

१८२) कअबे की मौजूदा इमारत सन १०४० हिजरी में बनी। (तफ़सीरे नईमी)

१८३) कअबए मुअज़्ज़मा और मक्कए मुकर्रमा के बारे में अज़ल से फ़ैसला हो चुका था और इस के मुताल्लिक़ लौहे मेहफ़ूज़ पर लिखा जा चुका था कि यह जगह बड़ी हुरमत वाली होगी। (तफ़सीरे नईमी)

१८४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि मुबारक है शाम। अर्ज़ किया गयाः क्यों? फ़रमायाः वहाँ फ़रिश्ते अपने पर फैलाए हुए साया कर रहे हैं। शाम को शाम कहने की वजह या तो यह है कि इसे साम बिन नूह ने बसाया था या यह कि वह मक्कए मुअज़्ज़मा से शाम यानी बाईं तरफ़ वाक़े है। या यह कि वहाँ पहाड़ शाम्मात की तरह हैं यानी सुर्ख़ और सफ़ेद मिट्टी की तरह। (तफ़सीरे नईमी)

१८५) मक्का लफ़्ज़ की तहक़ीक़ में दो राएं पाई जाती हैं। कुछ का गुमान है कि जुनूब से आने वाल कुछ अरब कबीले सब से पहले इस आबादी में आबाद हुए थे इस लिये इस शहर का नाम भी उन्हीं की ज़बान का एक लफ़्ज़ होगा। उन के ख़्याल में मक्का यमनी लफ़्ज़ मकरब से लिया गया है। यह लफ़्ज़ मक और रब दो लफ़्ज़ों से बना है। यमनी ज़बान में मक बैत को कहते हैं। लिहाज़ा मकरब के मानी बैतुल्लाह हुए। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से २०० साल पहले के यूनानी माहिरे जुग़राफ़िया बतलीमूस ने अपनी किताब में इस शहर को मकारूबा के नाम से याद किया है। बक्का, मक्का की दूसरी लुग़त है। यमन वाले कभी कभी मीम को बे से बदल दिया करते थे। मकारबा का सही उच्चारण मकाराबा है। मकाराबा मश्रिक़ी आरामी लुग़त में वादिये अज़ीम या वादिये रब को कहा जाता है। दूसरी राए में मक्का का क़दीम अस्ल नाम बक्का है। कुरआने मजीद में इन दोनों नामों से इस शहर को याद किया गया है। (तफ़सीरे नईमी)

१८६) फ़ुरात नदी की कुल लम्बाई दो हज़ार सात सौ अस्सी किलोमीटर है जिस में से साढ़े छः सौ किलोमीटर शाम में और बारह सौ किलोमीटर इराक़ में है। सैंकड़ों किलोमीटर का फ़ासला तय करके यह नदी अल-क़रबा के मक़ाम पर दजला नदी से आ मिलती है। (अतलसुल कुरआन)

१८७) इराक़ की मशहूर नदी दजला एक हज़ार नौ सौ पचास किलोमीटर लम्बी है। यह अल-अज़ग़ के करीब तुर्की के पहाड़ों से निकलती है। (अतलसुल कुरआन)

१८८) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का शहर ऊर अल-नासिरिया के बिलमुक़ाबिल फ़ुरात नदी से चन्द किलोमीटर के फ़ासले पर है। (अतलसुल कुरआन)

१८९) सरन्दीप (श्री लंका) जज़ीरा नुमाए दकन की जुनूबी रास कुमारी के जुनूब मश्रिक़ में हिन्द महासागर (बहरे हिन्द) के अन्दर वाक़े है। आबनाए पाक इसे भारत से अलग करती है। इस में एक पहाड़ी की चोटी पर इन्सानी क़दम का निशान है जो मक़ामी मुसलमानों के नज़्दीक हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पावँ के निशान हैं। बुध मत के पैरोकार इसे गौतम बुध का निशान ख़्याल करते हैं और हिन्दू इसे अपने किसी देवता से मन्सूब करते हैं। (अतलसुल कुरआन)

१९०) जिद्दा एयरपोट का हज टर्मिनल पांच लाख मुरब्बअ मीटर से ज़्यादा क्षैत्र में फैला हुआ है। (अतलसुल कुरआन)

१९१) बाबुल के मानी हैं ख़ुदा का दरवाज़ा। फ़ुरात नदी के बाएं किनारे

पर स्थित यह शहर अपने उरूज के ज़माने में बड़ा खुशहाल था। इस के मुअल्लक (लटके हुए) बाग़ मशहूर थे जिन्हें बख़्त नस्सर ने छः सौ ईसवी पूर्व के लगभग तअमीर किया था। यह बाग़ात दुनिया के सात अजूबों में शुमार होते हैं। (अतलसुल कुरआन)

१९२) कुरआने करीम के मुताबिक़ हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती कोहे जूदी पर उतरी थी। इंजीले मुक़द्दस में इसे कोहे अरारात कहा गया है जिस की ऊंचाई सोलह हज़ार नौ सौ छियालीस फुट (पांच हज़ार एक सौ पैंसठ मीटर) है। कहा जाता है कि इस की बर्फ़ से ढकी चोटी पर यह किश्ती आज भी मौजूद है। (अतलसुल कुरआन)

१९३) याजूज और माजूज दो तुर्क क़बीले थे। यह बड़े जंगजू और मज़बूत लोग थे। अपने पड़ोसियों पर लूट मार के लिये हमले करते रहते थे। वह लोगों पर हमला करते, उनके घर बार तबाह करते, उन की क़ीमती चीज़ें लूट लेते, किसी को कैद करते किसी को क़त्ल करते। (अतलसुल कुरआन)

१९४) शहरे अफ़सोस जिस में अस्हाबे कहफ़ का वाक़िआ पेश आया तक़रीबन ग्यारहवीं सदी ई० पू० में तअमीर हुआ था और बाद में यह बुत परस्ती का बहुत बड़ा मरकज़ बन गया था। यहाँ चाँद देवी की पूजा होती थी जिसे डायना कहा जाता था। इस का भव्य मन्दिर प्राचीन काल के अजूबों में गिना जाता है। (अतलसुल कुरआन)

१९५) अस्हाबे कहफ़ ने जागने के बाद अपने जिस साथी को खाना लाने के लिये बाज़ार भेजा था उस का नाम यमलीख़ा था। (अतलसुल कुरआन)

१९६) कुरआन में जिस साबी फ़िर्क़े का ज़िक्र है वह एक खुदा को मानते थे। सब साबी तीन नमाज़ें पढ़ते थे। किसी मय्यत को छूने के बाद वह खुद को गुस्ल के ज़रिये पाक करते थे। सुअरों, कुत्तों और पंजे वाले परिन्दों और कबूतरों का गोश्त उन के यहाँ हराम था। ख़त्ने की रस्म उन के यहाँ नहीं थी। तलाक़ सिर्फ़ क़ाज़ी के हुक्म से वाक़े हो सकती थी और एक आदमी के निकाह में दो औरतें नहीं हो सकती थीं। (अतलसुल कुरआन)

१९७) यूसुफ़ जूनवास हिमैरी बादशाहों में से था। वह बहुत कट्टरपंथी यहूदी था। उस ने नजरान के ईसाइयों पर सख़्त ज़ुल्म किये। कुछ मोमिनीन ने अपने अक़ीदे से मुर्तद होने से इन्कार कर दिया था। यूसुफ़ जूनवास ने खाई खोदने का हुक्म दिया और उस में हर तरफ़ आग जला दी। फिर अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि वह हर साहिबे ईमान मर्द और औरत को बाहर लाएं और उन्हें आग पर खड़ा करके पेश्काश करें। अगर वह दीन छोड़ दें तो

ठीक वरना उन्हें आग में झोंक दें। एक औरत अपने बच्चे को गोद में उठाए आई। आग में छलांग लगाने से ज़रा हिचकिचाई तो बच्चा बोल उठाः माँ, मज़बूत रह। बिला शुबह तू हक़ पर है। क़ुरआन में खाई खोदने वालों को अस्हाबे उख़्दूद कहा गया है। (सही मुस्लिम, अज़्ज़ुहद)

१९८) अस्हाबे फ़ील यानी हाथी वालों से मुराद अबरहा बिन अशरम हबशी का लशकर है। अबरहा यूसुफ़ ज़ूनवास के बाद यमन का हाकिम बना। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत वाले साल पाँच सौ इकहत्तर ईसवी में कअबा ढाने के लिये मक्कए मुकर्रमा की तरफ़ चला ताकि अरब लोगों को कअबे की बजाए क़ुल्लैस गिरजा की तरफ़ मुतवज्जिह करे जो उस ने सनआ में बनवाया था। इस लशकर की सरबराही हाथियों के सिपुर्द थी। सब से आगे एक बहुत बड़ा हाथी था जिस का नाम मेहमूद था। जब अबरहा ने मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होना चाहा तो यह हाथी बैठ गया। लाख जतन किये गए मगर हाथी न उठा। लेकिन जब उस का मुंह शाम की तरफ़ किया तो वह भाग उठा। यमन की तरफ़ रुख़ किया तो दौड़ने लगा मगर मक्के की तरफ़ एक इंच भी न चला। (अतलसुल क़ुरआन)

१९९) अस्हाबे फ़ील को रास्ता बताने वाला एक ग़द्दार शख़्स अबू रिग़ाला था। उस की क़ब्र ताइफ़ के रास्ते में मुग़म्मस मक़ाम पर है। अरब आज भी उस की क़ब्र को पत्थर मारते हैं। (अतलसुल क़ुरआन)

२००) जबले सौर मक्कए मुकर्रमा से साढ़े चार किलोमीटर जुनूब में है। इस पहाड़ पर एक ग़ार में नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हिजरत के दौरान तीन दिन और तीन रातें गुज़ारीं। ग़ार का दहाना तक़रीबन एक मीटर चौड़ा है। इस की लम्बाई अट्ठारह बालिश्त और चौड़ाई ग्यारह बालिश्त है। जबले सौर की ऊंचाई सात सौ उन्सठ मीटर है। इस ग़ार में खड़े हों तो सर छत से लगता है। (आँ-हुज़ूर के नक़्शे क़दम पर लेखक प्रोफ़ेसर अब्दुर रहमान अब्द)

२०१) मस्जिदे क़ुबा के अन्दर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसे पाक लिखी है कि जो शख़्स घर से पाक साफ़ हो कर निकला और इस मस्जिद में दाख़िल हो कर दो रकअत नमाज़ पढ़ी उसे हज्जे असग़र यानी उमरे का सवाब मिलेगा। (अतलसे सीरते नबवी)

२०२) तमाम अरबी इतिहासकार इस बात पर सहमत हैं कि यसरिब दर अस्ल सय्यिदुना नूह अलैहिस्सलाम की नस्ल में से एक आदमी का नाम था जिस ने इस शहर की बुनियाद रखी थी। उस के नाम पर इस शहर का नाम

भी यसरिब पड़ गया। (अतलसे सीरते नबवी)

२०३) हज़रत नाफ़ेअ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: मुझे सय्यिदुना अब्दुल्लाह इबने उमर रदियल्लाहु अन्हु ने बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक दौर में मस्जिदे नबवी कच्ची ईंटों से बनाई गई थी। इस की छत खजूर की शाख़ों से तय्यार की गई थी और इस के सुतून खजूर के तने थे। (बुख़ारी शरीफ़)

२०४) यरोशलम की पहली तबाही शाहे बाबुल (इराक़) बुख़्ते नस्सर के हाथों हुई जब पांच सौ छियासी ई० पू० में उस ने हैकले सुलैमानी और बैतुल मक़्दिस को मिस्मार (तबाह) कर दिया। दूसरी तबाही रूमियों के दौर में नाज़िल हुई। रूमी जनरल टायटस ने सन सत्तर ईसवी में यरोशलम शहर और हैकले सुलैमानी दोनों तोड़ डाले। इस तबाही से हैकले सुलैमानी की एक दीवार का कुछ हिस्सा बचा हुआ है जहाँ दो हज़ार साल से यहूदी ज़ाइरीन आकर रोया करते हैं इसी लिये इसे दीवारे गिरिया कहते हैं। (अतलसुल क़ुरआन)

२०५) कअबा शरीफ़ की बुलन्दी चौदा (१४) मीटर, मुल्तज़िम की तरफ़ कअबे की लम्बाई बारह मीटर चौरासी सेंटी मीटर, हतीम की तरफ़ कअबे की लम्बाई ग्यारह मीटर २८ सेंटी मीटर, रुक्ने यमानी और हतीम का फ़ासला बारह मीटर ग्यारह सेंटी मीटर, रुक्ने यमानी और रुक्ने जुनूबी के बीच फ़ासला ग्यारह मीटर बावन सेंटी मीटर। (अतलसे सीरते नबवी)

२०६) हज़रत वहब बिन मुनब्बिह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को मश्रिक़ और मग़रिब सारे जहाँ की सल्तनत मिली तो आप ने अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ किया कि इलाही मेरी आरज़ू है कि मैं तेरी सारी मख़लूक़ की एक दिन दअवत करूं। आवाज़ आई ऐ सुलैमान सब को रोज़ी मैं देता हूँ। तुम मेरी तमाम मख़लूक़ को नहीं खिला सकोगे। जब हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने बार बार अर्ज़ किया तो अल्लाह तआला ने इजाज़त दे दी। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने देव और जिन्नात की मदद से एक बड़े मैदान में दअवत का इन्तिज़ाम किया। इस मैदान की साफ़ सफ़ाई में आठ माह लगे। फिर सात लाख देगें मंगवाई गईं, हर देग सत्तर गज़ लम्बी चौड़ी और एक एक थाल फैलाव में तालाब की तरह। इस दअवत में बाईस हज़ार गाएं ज़िब्ह की गईं। जब खाना तय्यार हो गया तो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने हवा को हुक्म दिया कि हमारा तख़्त फ़ज़ा के ऊपर ठहरा के रख ताकि हम अपने मेहमानों पर नज़र रख सकें। तभी एक मछली ने दरिया से सर निकाल कर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम से अर्ज़ की

कि ऐ हज़रत मुझे खुदा ने भेजा है। मैं बहुत भूखी हूँ, ज़्यादा देर इन्तिज़ार नहीं कर सकती, मुझे जल्दी से खाना खिलवा दीजिये। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अगर तू ठहर नहीं सकती तो इस में से जितनी चाहे खाले। मछली ने खाना शुरू किया और थोड़ी देर में जितना खाना उस मैदान में था वह सब खा गई। फिर अर्ज़ करने लगीः हज़रत रोज़ मुझे तीन निवाले खाना चाहिये। यह जो कुछ मैं ने खाया यह तो एक निवाला था। दो निवाले और खिलवाइये तब मेरा पेट भरेगा। अगर आप पेट भर खाना नहीं दे सकते तो बिला वजह सारी मख़लूक़ को खिलाने का दावा किया। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम मछली की बात सुन कर बेहोश हो गए। होश में आने के बाद सर सज्दे में रख कर कहने लगेः इलाही मैं तौबा करता हूँ, तू ही मुझे और सारे जहान को रोज़ी देने वाला है। कहते हैं कि यह वही मछली थी कि जिस की पीठ पर अल्लाह तआला ने ज़मीन के सात तबक़ रखे हैं। (क़ससुल अम्बिया, अल्लामा हबीब अहमद)

२०७) मदयन शहर बहरे अहमर का साहिले अरब था, कोहे तूर के जुनूब में। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की एक ज़ौजा बीबी क़न्तूरा या क़तूरा थीं उन्हीं के बत्न से एक बेटे मदयन नाम के थे। शहर आबाद हुआ और क़दीम दस्तूर के मुताबिक़ उन्हीं के नाम से मौसूम हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

२०८) कुरआने मजीद की सूरए नूह में वुद्द, यग़ूस, यऊक़, नस्र और सुवाअ का ज़िक्र किया गया है यानी क़ौमे नूह इन पांच बुतों को पूजती थी। क़ौमे नूह के डूब जाने के एक अर्से बाद क़बीलए ख़ुज़ाआ के सरदार अम्र बिन लुहैय्य ने शाम में बुत परस्ती देखी और चन्द बुत अपने साथ ले आया। कहा जाता है उस के क़ब्ज़े में एक जिन्न था जिस ने उसे इन पांचों बुतों का पता दिया और वह इन्हें खोद कर तिहामा ले आया और हज के दिनों में इन्हें अलग अलग क़बीलों के हवाले कर दिया। (अतलसे सीरते नबवी)

२०९) मक्का में सब से पहले बुत नस्ब करने वाला अम्र बिन लुहैय्य अज़्दी था। वह इन्हें शाम से लेकर आया था। अहम बुत इस तरह थेः

उसाफ़ और नाइलाः यह दोनों बुत मस्जिदे हराम में कअबे के दरवाज़े के पास रखे थे।

उक़ैसरः कुज़अह, लख़्म और आमिला क़बीलों का बुत था, शामी सरहदों के पास गड़ा था।

जल्सदः हज़रमौत के इलाक़े में था, बनू कन्दह इस की पूजा करते थे। इस की शक्ल एक भारी भरकम इन्सान की सी थी जिसे सफ़ेद पत्थर से तराश

कर बनाया गया था।

जुलख़लसहः यह बुत मक्का और यमन के बीच तबालह मक़ाम पर था। ख़सअम, बजीलह, अज़्दस-सरात और उन के क़रीब बनू हुवाज़िन के क़बीले इस बुत की बहुत ताज़ीम करते थे और इसे कअबए यमानिया कहते थे, इसे जरीर बिन अब्दुल्लाह बिजली ने तोड़ा।

जुश-शराः बनू हारिस बिन मुबश्शिर अज़्दी का बुत था और उसैर के इलाके में पूजा जाता था।

ज़ुल कफ़्फ़ैनः क़बीलए दौस का बुत था। फ़त्हे मक्का के बाद हज़रत तुफ़ैल बिन उमर दौसी रज़ियल्लाहु अन्हु नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इजाज़त से गए और इसे जला दिया।

सुवाअः मुदरिकह बिन इल्यास की नस्ल से हुज़ैल क़बीले का बुत था जो मदीनए मुनव्वरा के क़रीब यम्बोअ के इलाक़े में था। इसकी शक्ल औरत की थी।

ज़ैरनानः यह दो बुत थे जिन्हें जुज़ैमह अब्रश ने ख़ीरह के इलाक़े में गाड़ा था। यह भी कहा गया है कि मुन्ज़र अकबर ने हीरह (इराक़) के दरवाज़े पर इन्हें रखा था ताकि हीरह में दाख़िल होने वाला हर शख़्स इन्हें सज्दा करे।

आइमः अज़्दसरात का बुत था।

उज़्ज़ाः मक्के से इराक़ जाने वाले रास्ते के दायें जानिब पड़ता था। यह बुत क़ुरैश के नज़्दीक अहम तरीन था।

लातः ताइफ़ में नस्ब था जिस जगह आज कल ताइफ़ की मस्जिद का बायाँ मीनार है।

मनातः यह अरब का क़दीम तरीन बुत था। यह मक्काए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा के बीच क़दीद के मक़ाम पर समुन्द्र के क़रीब नस्ब था। औस और ख़ज़रज हज के बाद मनात के पास इहराम उतारते थे। फ़त्हे मक्का के लिये जाते हुए नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म पर हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम ने इसे तोड़ डाला।

नस्रः यह बुत यमन में था, इसे बनू हिमैर ने बनाया था और बल्ख़ के इलाक़े में इस की पूजा होती थी।

हुबुलः यह बुत ठीक कअबे के अन्दर नस्ब था। यह बुत क़ुरैश को इन्सानी मूरत की शक्ल में मिला था जो लाल अक़ीक़ से तराशा गया था। इस का दायाँ हाथ टूटा हुआ था। क़ुरैश ने वह सोने का बनवा कर लगा दिया। फ़ाल के पाँसे इसी के आगे डाले जाते थे। फ़त्हे मक्का के बाद मौला अली कर्रमल्लहु तआला वजहहुल करीम ने इसे तोड़ दिया।

वुद: यह बुत बनू कल्ब ने दोम्मतुल जन्दल के मक़ाम पर नस्ब किया था।

यऊक़: यह बुत कबीलए हमदान ने सनआ के क़रीब ख़ैवान बस्ती के क़रीब बना रखा था, इस की शक्ल घोड़े की थी।

यग़ूस: यह बनू मुज़हज और जुर्श वालों का बुत था इस की शक्ल शेर की थी। (अतलसुल क़ुरआन)

२१०) सिदरतुल मुन्तहा से चार नहरें निकलती हैं, दो ज़ाहिर में, दो बातिन में। बातिन में वह हैं जो जन्नत में जाती हैं और ज़ाहिर में वह हैं जो नील और फ़ुरात कहलाती हैं। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस से मालूम होता है कि यह चारों नहरें जन्नत की हैं। नील, फ़ुरात, सैहान और जैहान। (तफ़सीरे नईमी)

२११) बैतुल मअमूर वह मस्जिद है जो ख़ानए कअबा के बिल्कुल ऊपर है यहाँ तक कि अगर इस का ज़मीन पर गिरना माना जाए तो यह ठीक कअबए मुअज़्ज़मा पर आकर गिरे। यह वह घर है जिसे आदम अलैहिस्सलाम के लिये ज़मीन पर उतरने के बाद भेजा गया। फिर आदम अलैहिस्सलाम के बाद उठा लिया गया। आसमान पर इस की अज़मत ऐसी है जैसी ज़मीन पर ख़ानए कअबा की। रोज़ाना सत्तर हज़ार फ़रिश्ते बैतुल मअमूर की ज़ियारत को आते हैं और वापस होते हैं। जो फ़रिश्ता एक बार आकर गया वह दोबारा नहीं आता। फ़रिश्ते बैतुल मअमूर का तवाफ़ करते हैं और इस की तरफ़ नमाज़ पढ़ते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

२१२) मदीनए मुनव्वरा का एक नाम मोमिना, दूसरा मेहबूबा, तीसरा मुक़द्दसा, बार्रह, दारुल बरार, ताबह, तय्यबा, सय्यिदतुल बलदान, दारुस्सलाम, अल-महरूसा, अल-मरहूमा, अल जब्बारह, क़रियतुल अन्सार, ईमान और दार वग़ैरा भी इस के नाम हैं। मदीनए मुनव्वरा उहद और उसैर दो पहाड़ों के बीच और वबरह और वाक़िम दो मैदानों के बीच वाक़े है। यह शहर मक्कए मुअज़्ज़मा से तक़रीबन तीन सौ मील यानी साढ़े चार सौ किलोमीटर के फ़ासले पर है। (तफ़सीरे नईमी)

२१३) यसरिब एक बुत का नाम था। यसरिब के मानी फ़साद और हलाकत के होते हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीनए मुनव्वरा को यसरिब कहने से मना फ़रमाया है। एक बार यसरिब कहने वाले को चाहिये कि दस बार मदीना मदीना कहे। (तफ़सीरे नईमी)

२१४) सफ़ा को सफ़ा इस लिये कहते हैं कि वहाँ सफ़ीउल्लाह आदम अलैहिस्सलाम ने क़ियाम फ़रमाया था यानी सफ़ी के रहने की जगह, और

मरवा पर इमराअत यानी हज़रत हव्वा ने क़ियाम किया। इसे मरवा कहा गया यानी एक बीबी के रहने की जगह। (तफ़सीरे नईमी)

२१५) अरबी लिपि हर्ब बिन उमैय्यह ने ईजाद की। (तफ़सीरे नईमी)

२१६) कूफ़ा वह मुबारक शहर है जिसे हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के हुक्म से सन १७ हिजरी में फ़ातहे ईरान हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु ने बसाया था। (तफ़सीरे नईमी)

२१७) बग़दाद शहर की तअमीर अब्बासी ख़लीफ़ अबू जअफ़र मन्सूर ने कराई। तअमीरी काम में दस हज़ार मज़दूर काम करते थे। इस शहर की फ़सील में जो ईंटें इस्तेमाल की गईं उन में हर ईंट एक हाथ चौड़ी और एक हाथ लम्बी होती थी और वज़न ११७ रतल होता था (तफ़सीरे नईमी)

२१८) कअबे के अन्दर नज़राने और चढ़ावे वग़ैरा के लिये एक कुंवां था। उस में से एक ख़ौफ़नाक अज़दहा निकला करता और कअबे की दीवार पर चढ़ कर धूप तापा करता था। इस अज़दहे के डर से कुरैश बोसीदा कअबे को गिराने और उसे नए सिरे से बनाने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे। एक दिन आदत के मुताबिक़ अज़दहा दीवार पर लेटा हुआ था कि फ़ज़ा से एक परिन्दा झपटा और उसे पचक ले गया। यह मन्ज़र देख कर कुरैश को बड़ी तसल्ली हुई। कअबे की पुरानी इमारत को गिराने में एक झिझक इस लिये भी थी कि कुरैश अबरहा का भयानक अन्जाम देख चुके थे। आख़िर एक दिन वलीद बिन मुग़ीरा आगे बढ़ा और एक कुदाल ले कर कअबे की जुनूबी दीवार के कुछ पत्थर गिरा दिये। (सीरते इब्ने हिशाम, जि: १)

२१९) सफ़ा और मरवा उन दो पहाड़ों के नाम हैं जो ख़ानए कअबा के मुक़ाबिल पूर्वी तरफ़ हैं। सफ़ा तो दक्षिणी तरफ़ अबू क़ुबैस पहाड़ की जड़ में वाक़े है और मरवा उत्तरी तरफ़ कोहे क़ईक़ान के आगे नाक की तरह है। इन में लगभग ७७० गज़ का फ़ासला है और हजरे असवद से सफ़ा का फ़ासला २६२ गज़ और १८ उंगल है। (तफ़सीरे अज़ीज़ी, शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी)

२२०) जाहिलियत के ज़माने में अरबों की आदत थी कि अगर वह किसी काम का इरादा करते तो उन तीरों से फ़ाल निकालते जो एक बोरी में रखे हुए थे। अगर ऐसा तीर निकलता जिस पर नअम यानी हाँ लिखा होता तो वह उस काम को हाथ लगाते और अगर ऐसा तीर निकलता जिस पर ला यानी नहीं लिखा होता तो वह उस काम का इरादा छोड़ देते। (ज़ियाउन्नबी, जि: १)

२२१) कअबा इमारत का नाम नहीं बल्कि ज़मीन से आसमान तक की फ़ज़ा का नाम है, इसी लिये गहरे तहख़ाने और ऊंचे पहाड़ पर भी नमाज़

जाइज़ है। (तफ़सीरे नईमी)

२२२) ताइफ़ शहर के इर्द गिर्द एक फ़सील बनाई गई थी इस लिये इसे ताइफ़ कहते थे। फ़सील की तअमीर से पहले इस बस्ती का नाम वज्ज था। उस वक़्त जज़ीरए अरब में यह एक तन्हा शहर था जिस के चारों तरफ़ फ़सील थी। यह फ़सील अरब मेअमारों ने नहीं बल्कि ईरानी मेअमारों ने तामीर की थी। (नज़रते जदीदा, डॉ० कौन्स्टानस, वज़ीरे ख़ारिजा, रूमानिया)

२२३) वह मक़ाम जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये तजवीज़ हुआ था वहाँ हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की ननिहाल की आबादी थी। इसी आबादी में हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी का मकान था जहाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शुरू के सात महीने क़ियाम फ़रमा रहे। इन के अलावा आप के पड़ोस में सअद बिन मआज़ और अम्मारा बिन हिज़्म के मकानात थे। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वहीं ज़मीन ख़रीद कर मस्जिद तामीर कराई और अज़्वाज के लिये हुजरे बनवाए। आगे चल कर इसी आबादी ने शहर की सूरत इख़्तियार कर ली। यही मक़ाम मदीनतुर्रसूल या मदीनतुन्नबी के नाम से मशहूर हुआ। (रसूले रहमत)

२२४) अल्लामा नूरुद्दीन सम्हूदी ने वफ़ाउल वफ़ा में लिखा है कि यसरिब के बानी इमालिक़ा थे जो अमलाक़ बिन अरफ़ख़शज़ बिन साम बिन नूह अलैहिस्सलाम की नस्ल से थे। उन्हों ने बहुत उरूज हासिल किया यहाँ तक कि काफ़ी बड़े इलाक़े पर इन का क़ब्ज़ा हो गया। बहरीन, उमान और हिजाज़ का सारा इलाक़ा, शाम और मिस्र की हदों तक इन के राज्य में दाख़िल था। मिस्र के फ़िरऔन भी इन्हीं की नस्ल से थे। बहरीन और उमान में इनकी नस्ल से जो लोग आबाद हुए उन्हें जासिम कहा जाता है। (वफ़ाउल वफ़ा, जिः १)

२२५) अल्लामा इब्ने ख़ल्दून के मुताबिक़ इमालिक़ा में से जिस ने सब से पहले यसरिब शहर की नशानदही की उस का नाम यसरिब बिन महलाइल बिन औस बिन अमलीक़ था। उस के बानी के नाम पर इस शहर का नाम यसरिब मशहूर हुआ। (मुक़द्दमा इब्ने ख़ल्दून, जिः ३)

२२६) अल्लाह तआला ने बारह क़लम तख़लीक़ फ़रमाए हैं। पहला क़लम वह है जिस की क़सम क़ुरआने मजीद में याद फ़रमाई गई है जिस से अल्लाह तआला ने मख़्लूक़ की तक़दीरों को लिखा है। दूसरा क़लम वही है, तीसरा क़लम तौक़ीअ है जो अल्लाह और रसूल की तरफ़ से निशान है, चौथा क़लम तिब्बे अबदान है जिस से बदन की सेहत की हिफ़ाज़त की जाती है, पांचवां क़लम वह है जिस से बादशाहों पर निशान होता है। इस से सल्तनतों की

सियासत और इस्लाह की जाती है। छटा क़लम हिसाब है इस से उन मालों का हिसाब किताब होता है जो निकाले और ख़र्च किये जाते हैं, इसे क़लमे अरज़ाक़ कहते हैं। सातवाँ क़लम हुक्म है, इस से हुक्म लागू किये जाते हैं और अधिकार बाक़ी रखे जाते हैं। आठवाँ क़लम शहादत है जिस से अधिकारों की हिफ़ाज़त की जाती है। नवाँ क़लम तअबीर है। ख़्वाब में जो कुछ है यह उस की तअबीर और तफ़सीर लिखने वाला है। दसवाँ क़लम तवारीख़ है। ग्यारहवाँ क़लम लुग़त और इस की तफ़सील का लिखने वाला है और बारहवाँ क़लम जामेअ है जो झूटों का रद्द करता है और इन्कार करने वालों के शुब्हात दूर करता है। (मवाहिबुल लदुन्निया)

२२७) तफ़सीरे रूहुल बयान में है कि इन्सानों की १२५ क़िस्में हैं, कुछ वह हैं कि जिन के कान हाथी का कानों की तरह हैं, कुछ वह हैं जिन के पावँ में चलने की ताक़त नहीं है, कुछ वह हैं जिन की आँखें उन के सीनों पर हैं, कुछ वह हैं जिन के सर कुत्तों जैसे हैं।

२२८) अरफ़ा नवीं ज़िल हज्ज को भी कहते हैं और अरफ़ात को भी। अरफ़ात उस जगह का नाम है जहाँ नौ ज़िल हज्जा को ठहरना और दुआएं मांगना हज का फ़र्ज़ है। इस जगह को अरफ़ात और इस दिन को अरफ़ा कहने की वजह यह है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हज़रत हव्वा की मुलाक़ात यहीं नौ ज़िल हज्जा को हुई। एक ने दूसरे को पहचाना। जिब्रईल अमीन अलैहिस्सलाम ने इसी जगह इसी तारीख़ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मनासिके हज की तालीम दी थी। (नुज्हतुल क़ारी)

२२९) हज़रत वहब बिन मुनब्बिह रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि अल्लाह तआला ने ईदुल फ़ित्र के दिन जन्नत को पैदा फ़रमाया और दरख़्त तूबा ईदुल फ़ित्र के दिन बोया। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम का वही के लिये इन्तिख़ाब फ़रमाया और फ़िरऔन के जादूगरों की तौबा भी ईदुल फ़ित्र के दिन क़ुबूल फ़रमाई। (मुकाशफ़तुल क़ुलूब)
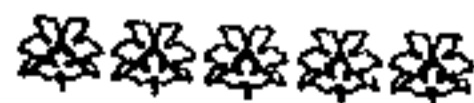
तीसरा अध्याय

अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम

१) कुरआने मजीद में अल्लाह तआला का इरशाद है: इहबितू यानी उतर जाओ। यह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हज़रत हव्वा से ख़िताब है यानी तुम दोनों जन्नत से उतर जाओ। तफ़सीरे दर्रे मन्सूर में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से बयान है कि यह ख़िताब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम, हज़रत हव्वा, इब्लीस और साँप से है। (अतलसुल कुरआन)

२) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का नाम कुरआने मजीद की पच्चीस आयतों में पच्चीस बार आया है। (अतलसुल कुरआन)

३) अल्लामा तबरी, इब्ने असीर और यअकूबी की रिवायात की बिना पर राजेह बात यह है कि तौबा की कुबूलियत के बाद हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को उठा कर अरफ़ात में लाए और हज के तरीके सिखाए। फिर आप फौत हुए तो आप को कोहे बू-कुबैस के दामन में दफ़्न किया गया। (अतलसुल कुरआन)

४) दमिश्क शहर के शिमाल में क़ासियून नामी पहाड़ में एक मशहूर ग़ार हैं जिसे ख़ूनी ग़ार कहा जाता है। वहाँ के लोगों का आम ख़्याल है कि क़ाबील ने इस ग़ार के पास अपने भाई हाबील को क़त्ल किया था। दमिश्क से ज़ुबदानी और बलोदान को जाने वाले रास्ते के दाएं जानिब इलाके तकय्यह में बरदी नदी की घाटी के किनारे ऊंचे पहाड़ पर एक कब्र है जिस की लम्बाई १५ मीटर है। बाज़ अहले इल्म का ख़्याल है कि यह कब्र हाबील की है। (अतलसुल कुरआन)

५) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का ज़िक्र कुरआने मजीद में तैंतालीस मकामात पर आया हैं आप का मज़ारे मुबारक नजफ़ अशरफ़ (इराक़) में बताया जाता है। (अतलसुल कुरआन, तफ़सीरे नईमी)

६) वह तन्नूर जिस से तूफ़ाने नूह शुरू हुआ था, कूफ़े में वाके है। (तफ़सीरे नईमी)

७) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दरमियान ११४३ बरस का ज़माना था। (तफ़सीरे नईमी)

८) हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम का नाम कुरआने मजीद में दो मकामात पर आया है। (अतलसुल कुरआन)

९) हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम की पैदाइश मिस्र के शहर मिनफ़ में हुई। बाज़ अहले इल्म का ख़्याल है कि आप बाबुल शहर में पैदा हुए थे फिर

हिजरत करके मिस्र पहुंचे थे। आप हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के जद्दे अमजद हैं। जब आप ने नील नदी को देखा तो फ़रमायाः बाबलियोन (बरकत वाला दरिया) इस पर इस सरज़मीन का नाम ही बाबलियोन पड़ गया। कहा जाता है कि हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम ने २०० के करीब शहर बसाए। इबादते इलाही, अय्यामे बैज़ (हर माह की तेरा, चौदा और पन्द्रा तारीख़) के रोज़े, जिहाद, ज़कात, तहारत। कुत्ते और सुअर से परहेज़ और हर नशा लाने वाली चीज़ से दूरी आप की तालीमात के अहम नुकते थे। बयासी साल की उम्र में अल्लाह ने अपनी जानिब उठा लिया। (अतलसुल कुरआन)

१०) हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की वालिदा लूत अलैहिस्सलाम की औलाद से थी। आप की उम्र ६३ साल हुई। (तफ़सीरे नईमी)

११) हज़रत हूद अलैहिस्सलाम का ज़िक्र कुरआने मजीद में सात बार आया है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमायाः हज़रत हूद अलैहिस्सलाम अरबी बोलने वाले पहले शख़्स हैं। कुरआने अज़ीम में हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की क़ौम को आदे ऊला कहा गया है। आद का ज़माना लगभग साढ़े छः हज़ार साल ई० पू० जाना जाता है। अल्लाह की बाग़ी क़ौमे आद तेज़-तुन्द मन्हूस आंधी के अज़ाब से तबाह हुई। यह अज़ाब सात रातें और आठ दिन लगातार आया। हज़रत हूद अलैहिस्सलाम और उन के मुख़लिस मानने वाले अज़ाबे इलाही से मेहफ़ूज़ रहे। कहा जाता है कि क़ौमे आद की हलाकत के बाद हज़रत हूद अलैहिस्सलाम हज़रमौत के शहरों में हिजरत कर आए थे वहीं उन की वफ़ात हुई और हज़रमौत के मश्रिक़ी हिस्से में वादिये बरहूत के करीब तरीम शहर से लगभग दो मरहले पर दफ़्न हुए। हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम से एक असर मन्कूल है कि हूद अलैहिस्सलाम की क़ब्र हज़रमौत के सुर्ख़ टीले पर है और उन के सिरहाने झाउ का एक दरख़्त है। (अतलसुल कुरआन)

१२) हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम का नाम कुरआने पाक में नौ बार आया है। हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की कौम समूद बुतों की पूजा करती थी। यह वह लोग थे जो आदे ऊला की हलाकत के वक़्त हज़रत हूद अलैहिस्सलाम के साथ बच गए थे और यही नस्ल आदे सानिया कहलाई। (अतलसुल कुरआन)

१३) हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के लिये समूद का नाक़ा उठाया जाएगा। वह अपने मज़ार से उसी पर सवार होकर मैदाने मेहशर में आएंगे। (तफ़सीरे नईमी)

१४) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का नाम कुरआने मजीद की पच्चीस सूरतों में उन्सठ बार आया है। (अतलसुल कुरआन)

१५) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जब नमाज़ में मशगूल होते तो दिल के शुग्ल की आवाज़ दो मील तक जाती थी। (तफ़सीरे नईमी)

१६) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की वालिदा का नाम बौना बिन्ते करनबा बिन कौसी था। कुछ रिवायतों के मुताबिक़ आप की वालिदा माजिदा का नाम सिसला या शिल्ली बताया गया है। एक रिवायत में है कि आप की वालिदा माजिदा का नाम मतली या औफ़ी बिन्ते नम्र था। (अतलसे सीरते नबवी, डाकटर शौकी अबू ख़लील, तफ़सीरे नईमी)

१७) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पैदा होने के बाद एक दिन में इतना बढ़ते थे जितना दूसरे बच्चे एक साल में। (तफ़सीरे नईमी)

१८) लगभग चार हज़ार साल पहले हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बैतुल मक़दिस से पैंतीस किलो मीटर जुनूब में एक बस्ती में सुकूनत इख़्तियार की जिस का नाम उन्हीं के नाम पर अलख़लील पड़ गया। जब हज़रत सारा का विसाल हुआ तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उन की तदफ़ीन के लिये अफ़रौन बिन सौहार अलहैसी से ज़मीन का एक टुकड़ा चार सौ नुक़रई दिरहमों में ख़रीदा और उस में अपनी चहीती बीबी को दफ़्न किया। इस जगह को मग़ारह मकफ़ीलह कहते हैं। हज़रत इब्राहीम, हज़रत याक़ूब और हज़रत यूसुफ़ अलैहिमुस्सलाम के मज़ारात इसी ग़ार में हैं। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने वहिये इलाही के मुताबिक़ इन अम्बियाए किराम की क़ब्रों पर कुब्बा नुमा छत बनवा दी। इस ग़ार में हज़रत सारा के अलावा हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की ज़ौजए मोहतरमा हज़रत रिबक़ह और हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की ज़ौजए मोहतरमा हज़रत एलिया भी दफ़्न हैं। पांच सौ तेरह हिजरी में सलीबी बादशाह बर्दवेल के अहद में इस जगह ज़मीन धंस गई थी और फ़िरंगियों की एक जमाअत बादशाह की इजाज़त से इस ग़ार में दाख़िल हुई तो उन्हों ने हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्हाक़ और हज़रत याक़ूब अलैहिमुस्सलाम को इस हालत में पाया कि उन के कफ़न बोसीदा हो चुके थे और वह ग़ार की दीवार के साथ लगे हुए थे। उन के सरों पर क़न्दीलें थीं और सर खुले हुए थे। बादशाह को ख़बर हुई तो उस ने उन्हें नए कफ़न पहनाए और फिर उस जगह को बन्द कर दिया। (मोजमुल बलदान, जि: २)

१९) हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम का नाम क़ुरआने मजीद में सत्तरह बार आया है। हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम और उन की वालिदा माजिदा हज़रत सारा के मज़ारात फ़िलिस्तीन में बैतुल मक़दिस से चन्द मील दूर अलख़लील (हैबरौन) में मस्जिदे इब्राहीम के इहाते में बताए जाते हैं। (अतलसुल क़ुरआन, तफ़सीरे नईमी)

२०) हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम ने १८० साल की उम्र पाई। आप की पैदाइश के वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम सौ साल के थे। (तफ़सीरे नईमी)

२१) एक रिवायत में है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी ख़त्ना ८० बरस की उम्र में की थी। (तफ़सीरे नईमी)

२२) हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का नाम क़ुरआने मजीद में बारह बार आया है। (अतलसुल क़ुरआन)

२३) हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और उन की वालिदा माजिदा हज़रत हाजिरा के मज़ारात मक्कए मुअज़्ज़मा की मस्जिदे हराम में हैं। (तफ़सीरे नईमी)

२४) हज़रत लूत अलैहिस्सलाम का नाम कलामे पाक में सत्ताईस जगह आया है। (अतलसुल क़ुरआन)

२५) हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का नाम क़ुरआने मजीद में सोलह मक़ामात पर आया है। (अतलसुल क़ुरआन)

२६) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का इस्मे गिरामी क़ुरआने अज़ीम में सत्ताईस जगह आया है। (अतलसुल क़ुरआन)

२७) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने ऐसा हुस्न अता फ़रमाया था कि मिस्र के महाकाल में आप के दीदार से आदमी अपनी भूख प्यास भूल जाते थे। (गुल्दस्तए तरीक़त)

२८) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को जिस अज़ीज़े मिस्र ने ख़रीदा था उस का नाम फ़ोतीफ़ार या फ़ोतीफ़रह था। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत के मुताबिक़ यह शाही ख़ज़ाने का अफ़सर था। उस की बीवी ज़ुलैख़ा की तरफ़ से हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के साथ जो मुआमला हुआ उस के नतीजे में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को नौ दस साल की क़ैद भुगतनी पड़ी। (अतलसुल क़ुरआन)

२९) हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की औलाद में से थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें पैग़म्बरों का ख़तीब कहा है। (क़ससुल अम्बिया)

३०) हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम का नाम कलामुल्लाह शरीफ़ में ग्यारह जगह मज़कूर है। हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम बुत परस्ती और मुश्रिकाना अक़ाइद पर चलने के अलावा नाप तौल में कमी, मुआमलात में खोट और लूट मार की इल्लतों में गिरफ़्तार थी। इन गुनाहों की सज़ा के तौर पर इस क़ौम को दो तरह के अज़ाबों ने आ घेरा। एक ज़लज़ले का अज़ाब दूसरा आग का अज़ाब। यानी जब वह घरों में सो रहे थे तो अचानक एक

हौलनाक ज़लज़ला आया और इस के साथ ही ऊपर से आग बरसने लगी जिस ने सरकशों को झुलसा कर रख दिया। (अतलसुल कुरआन)

३१) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का नामे नामी कुरआने अज़ीम में एक सौ छत्तीस बार आया है। (अतलसुल कुरआन)

३२) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ताल्लुक़ से दो फ़िरऔनों का ज़िक्र मिलता है। एक रअमसीस जिस के महल में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पले बढ़े और जिस की ज़ौजा हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने आप को इन्तिहाई शफ़्क़त से परवरिश किया। दूसरा फ़िरऔन रअमसीस का बेटा मिनफ़ताह जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का दुशमन बना और सज़ा के तौर पर दरिया में ग़र्क़ किया गया। मिनफ़ताह की लाश मिस्री अजाइब घर (क़ाहिरा) में आज भी मेहफ़ूज़ है। मुहम्मद अहमद अदवी दअवतुर रुसुल इलल्लाह में लिखते हैं कि इस लाश की नाक के सामने का हिस्सा नदारद है जैसे किसी हैवान ने खा लिया हो। ग़ालिबन समुन्द्री मछली ने उस पर मुंह मारा था। फिर उस की लाश अल्लाह तआला के फ़ैसले के मुताबिक़ किनारे पर फेंक दी गई ताकि दुनिया को इबरत हो। (अतलसुल कुरआन)

३३) जब बनी इस्राईल ने अर्ज़े मुक़द्दस फ़िलिस्तीन में दाख़िल होने से इन्कार कर दिया तो अल्लाह तआला ने उन के लिये यह सज़ा मुक़र्रर कर दी कि वह चालीस साल तक तीह के जंगल में भटकते फिरेंगे। तीह का जंगल (सीना) वह इलाक़ा है जिसे बायबल में बयाबाने सीन कहा गया है। यह कोहे तूर के उत्तर में सहराए सीना का जुनूबी हिस्सा है। (अतलसुल कुरआन)

३४) हज़रत हारून अलैहिस्सलाम का नाम कुरआने पाक में बीस जगह मज़कूर है। आप की वफ़ात एक सौ तेईस बरस की उम्र में कोहे तूर पर बनी इस्राईल के मिस्र से नकलने के चालीसवें बरस के पांचवें महीने की पहली तारीख़ को हुई। (अतलसुल कुरआन)

३५) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद हज़रत यूशअ बिन नून की क़यादत में बनी इस्राईल ने दरियाए उर्दुन पार करके पहले अरीहा फ़त्ह किया और फिर धीरे धीरे पूरे कनआन (फ़िलिस्तीन) पर क़ब्ज़ा कर लिया। हज़रत यूशअ बिन नून हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के फ़र्ज़न्द अफ़राईम की औलाद से थे। इन का अस्ल नाम हूसियअ था मगर मूसा अलैहिस्सलाम ने इन का नाम यूशअ या यशूअ रखा था। (अतलसुल कुरआन)

३६) हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम का नाम कुरआने मजीद में इल यासीन भी आया है। आप इस्राईली नबी हैं और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के

बाद मबऊस हुए थे। हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम की रिसालत व हिदायत का मर्कज़ बअलबक का मशहूर शहर था जहाँ दूसरे बुतों के अलावा बअल के बुत की ख़ास तौर से पूजा होती थी। इन की कौम बुत परस्ती और सितारा परस्ती की आदी थी। इतिहासकारों का ख़्याल है कि हिजाज़ का मशहूर बुत हुबुल भी यही बअल था। बअल सोने का था इस का कद साठ फुट था, इस के चार मुंह थे और इस की ख़िदमत पर चार सौ खुद्दाम मुकर्रर थे। बअलबक शहर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने मलिका बिल्कीस को जहेज़ में दिया था। हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम की कब्र भी यहीं है। (अतलसुल कुरआन और कससुल कुरआन, हिस्साः २)

३७) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का नाम कलामे मजीद में सोलह मकामात पर आया है। अम्बिया और रुसुल में से हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के अलावा हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ही वह पैग़म्बर हैं जिन्हें कुरआने मजीद ने ख़लीफ़ के लकब से पुकारा है। (अतलसुल कुरआन)

३८) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम बिन यसी बिन उवैबिद का ज़माना एक हज़ार चौबीस से नौ सौ तिरेसठ ई० पू० गुज़रा है। आप नस्ले बनी इस्राईल के दूसरे बादशाह हैं। (तफ़सीरे नईमी)

३९) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का इन्तिकाल अचानक सब्त (हफ़ता) के दिन हुआ। आप मुकर्ररा इबादत में मसरूफ़ थे और परिन्दों की टुकड़ियां परे बांधे आप पर साया किये हुए थीं कि अचानक इस हालत में आप का विसाल हो गया। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल पर चालीस बरस हुकूमत करने के बाद सौ साल की उम्र में नौ सौ तिरेसठ ई० पू० में वफ़ात पाई। बैतुल मक्दिस से रमलह जाएं तो अबू ग़ौश के बाद दाएं तरफ़ हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की कब्र है। बायबल के मुताबिक दाऊद अलैहिस्सलाम शहर दाऊद में दफ़्न हुए। (अतलसुल कुरआन और फ़ैज़ुल बारी, जिः २, किताबुल अम्बिया)

४०) हज़रत तालूत का नाम कुरआने मजीद में दो बार आया है और जालूत का नाम तीन बार आया है। (अतलसुल कुरआन)

४१) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का नाम कुरआने मजीद में सत्तरह मकामात पर आया है। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के हक में हवा मुसख़्ख़र कर दी गई थी चुनान्चे आप जब चाहते सुब्ह को एक महीने की मुसाफ़त और शाम को एक महीने की मुसाफ़त तय कर लेते थे। (अतलसुल कुरआन)

४२) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम अपने असा पर टेक लगाए बैतुल

मक़दिस की तअमीर का मुआइना फ़रमाते थे। इसी में आप की वफ़ात हो गई। एक लम्बे अर्से तक आप असा का सहारा लिये खड़े रहे और जिन्न आप को ज़िंदा समझ कर तअमीरात में लगे रहे। जब दीमक ने आप का असा खा लिया तो असा के टूटने से आप का जिस्मे मुबारक ज़मीन पर आ रहा। उस वक़्त जिन्नों को अन्दाज़ा हुआ कि आप वफ़ात पा चुके हैं। उसी वक़्त सारे जिन्न काम छोड़ कर चले गए। (तफ़सीरे नईमी)

४३) हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम का नाम कुरआने अज़ीम में चार बार आया है। (अतलसुल कुरआन)

४४) हज़रत ज़ुल्किफ़ल अलैहिस्सलाम का नाम कुरआने पाक में दो जगह आया है। (अतलसुल कुरआन)

४५) हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का नाम कलामे रब्बानी में चार जगह मज़कूर है। हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को एक लाख से ज़्यादा इन्सानों की तरफ़ पैग़म्बर बना कर भेजा गया था। (अतलसुल कुरआन)

४६) हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम का नाम कुरआने अज़ीम में सात जगह आया है। आप बढ़ई का काम करते थे। बाज़ कहते हैं कि आप की तबई मौत हुई, बाज़ कहते हैं कि वह उस हादिसे में शहीद हुए जिस में उन के बेटे हज़रत यहया अलैहिस्सलाम शहीद हुए। यह बैतुल मक़दिस का वाक़िआ है। हल्ब की जामेअ मस्जिद में आप का मदफ़न है। (अतलसुल कुरआन)

४७) ज़करिया नाम के दो नबी हुए हैं। इन में से एक ज़करिया बिन बरख़िया हैं जो अम्बियाए तौरात में से थे। इन का ज़हूर फ़ारस (ईरान) के बादशाह दारा बिन गुशतासब के अहद में हुआ। दूसरे ज़करिया अबू यहया हैं जो हज़रत मरयम के ख़ालू और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के समकालीन थे। पहले वाले ज़करिया का तज़किरा कुरआने मजीद में नहीं है। (क़ससुल कुरआन, जिः २)

४८) हज़रत बीबी मरयम की वालिदा का नाम हन्ना था, इन का मज़ार दमिश्क़ में है। (तफ़सीरे नईमी)

४९) हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम हज़रत बीबी मरयम की ख़ाला के शौहर थे। हज़रत मरयम के वालिदे माजिद हज़रत इमरान की वफ़ात आप के बचपन में ही हो गई थी। अल्लाह तआला ने हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम को आप की परवरिश और तरबियत का ज़रिया बनाया। (तफ़सीरे नईमी)

५०) हज़रत यहया अलैहिस्सलाम का नाम कुरआने मजीद में पांच मक़ामात पर आया है। तबरी के मुताबिक़ वह पहले शख़्स थे जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए थे। वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद तक

ज़िंदा रहे और उन्हें हैरोदियास की दरख़्वास्त पर क़त्ल किया गया जो यहूदी बादशाह हैरोद की भान्जी या भतीजी थी। वजह यह कि हज़रत यहया अलैहिस्सलाम ने बादशाह की हैरोदियास के साथ शादी की मुख़ालिफ़त की थी। दमिश्क़ की बड़ी मस्जिद जामेअ उमवी में एक मज़ार को आप की क़ब्र बताया जाता है। (अतलसुल क़ुरआन)

५१) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने नामे नामी के साथ क़ुरआने मजीद में पच्चीस बार, मसीह लक़ब के साथ ग्यारह बार और इब्ने मरयम की कुन्नियत के साथ तेईस बार मज़कूर हैं। (अतलसुल क़ुरआन)

५२) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को तीस साल की उम्र में हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की तरफ़ से नबव्वुत के फ़रीज़े की अदायगी का हुक्म सुनाया। (तफ़सीरे नईमी)

५३) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बारा साल की उम्र से तब्लीग़ करने लगे थे। (तफ़सीरे नईमी)

५४) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से जब मायदा की फ़रमाइश की गई तो आप ने नहा धोकर कमली पहनी और दोगाना अदा करके सर झुकाया, आँखें बन्द कर लीं और फिर दुआ की जो फ़ौरन क़ुबूल हुई। दो बादलों के बीच (कि एक ऊपर था और एक नीचे) लोगों को एक सुर्ख़ रंग का दस्तरख़्वान नज़र आया जो बादलों में से टपक कर उन के आगे बिछ गया। उसे देख कर ईसा अलैहिस्सलाम रो पड़े और कहा: इलाही तू मुझ को शुक्र-गुज़ारों में शामिल कर दे और इस ग़ैबी ख़्वान को जहान के लिये रहमत का ज़रिया बना दे। कहीं ऐसा न हो कि यह लोगों के चेहरे बिगड़ने और अज़ाब का सबब बन जाए। फिर आप ख़ड़े हो गए, वुज़ू किया, नमाज़ पढ़ी और रो दिये। इस के बाद इरशाद फ़रमाया: लोगो तुम में का नेक परहेज़गार आदमी उठकर इस ख़्वान को खोले। उस वक़्त हवारियों के सरदार शमऊन ने अर्ज़ किया कि आप ही हम में सब से अफ़्ज़ल हैं और इस काम के लायक़ हैं। चुनान्चे सय्यिदुना ईसा अलैहिस्सलाम उठे, वुज़ू किया, नमाज़ पढ़ी और रोए फिर दस्तरख़्वान खोल कर फ़रमाया: बिस्मिल्लाहि ख़ैरुर राज़िक़ीन। ख़्वान में बिना खपरे और बिना काँटे की मछली थी जिस के चारों तरफ़ चिकनाई पड़ी बह रही थी। उस के सर के क़रीब नमक, दुम के पास सिरका और चारों तरफ़ तरकारियाँ रखी हुई थीं और पांच रोटियां थीं, एक पर रौग़ने ज़ैतून था, दूसरी पर शहद, तीसरी पर घी, चौथी पर पनीर, पांचवीं पर सूखा गोश्त। शमऊन ने पूछा: ऐ रूहुल्लाह यह दुनिया का खाना है या आख़िरत का? फ़रमाया: न यह

है न वह, बल्कि अल्लाह तआला ने अपनी भरपूर कुदरत से एक नई चीज़ अता फ़रमाई है। जो तुम ने मांगा था मिल गया, आओ खाओ और शुक्र अदा करो, खुदा तुम्हारी मदद करेगा और अपने फ़ज़्ल से तरक़्क़ी देगा। हवारियों ने कहाः ऐ रूहुल्लाह, आप इस मोअजिज़े में से हमें एक और मोअजिज़ा दिखाएं तो अच्छा हो। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः ऐ मछली, खुदा के हुक्म से ज़िंदा हो जा। मछली फ़ौरन अस्ल सूरत में होकर तड़पने लगी। आप ने फ़रमायाः जैसी थी वैसी हो जा। वह फिर उसी तरह भुनी हुई मछली बन गई। (तफ़सीरे नईमी, रूहुल मआनी, तफ़सीरे सावी, तफ़सीरे कबीर वग़ैरा)

५५) कुछ का क़ौल है कि मायदा एक दिन बीच करके चालीस दिन तक उतरता रहा। फ़कीर और ग़नी, छोटे बड़े सब मिल कर खाते थे और जब खाकर सब हट जाते थे तो ख़्वान ऊपर उड़ जाता था। इस खाने का असर यह था कि फ़कीर एक बार खाकर उम्र भर के लिये ग़नी हो जाता था और बीमार हमेशा के लिये तन्दुरुस्त। फिर अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि मायदा सिर्फ़ फ़कीरों और बीमारों को मिला करे, ग़नी और तन्दुरुस्त इस से दूर रहें। लोगों ने इस हुक्म की ख़िलाफ़-वर्ज़ी की जिस की सज़ा में उन की सूरतें सुअरों की सी कर दी गईं। (तफ़सीरे नईमी)

५६) मुस्लिम उलमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि जब दुशमन हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के एक शागिर्द यहूदा स्क्रयूती की रहनुमाई में हज़रत मसीह को गिरफ़्तार करने पहुंचे तो अल्लाह तआला ने ऐन उस वक़्त हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को आसमान पर उठा लिया और खुद गिरफ़्तार करवाने वाले पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शक्ल व शबाहत तारी कर दी। चुनान्चे हुकूमत के अहलकार और यहूदियों यहाँ तक कि खुद हवारियों ने भी ग़द्दार यहूदा स्क्रयूती को ही हज़रत मसीह समझ लिया और उसी को ले जाकर फाँसी पर चढ़ा दिया। (अतलसुल कुरआन)

५७) फ़िलिस्तीन के इलाक़े गलील में एक क़स्बा है नासिरा। हज़रत मरयम का ताल्लुक़ इसी क़स्बे से था। नासिरा की निस्बत से ही हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मानने वाले नसारा कहलाते हैं। (अतलसुल कुरआन)

५८) हज़रत लुक़मान हकीम का नाम कुरआने हकीम की एक सूरत जो उन्हीं के नाम से मौसूम है यानी सूरए लुक़मान में दो बार आया है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मन्क़ूल है कि हज़रत नबी न थे न बादशाह बल्कि एक आज़ाद किये हुए हब्शी गुलाम थे। ख़ालिद रुबई कहते हैं कि इन के आक़ा ने एक बार इन्हें कहा कि बकरी ज़िब्ह करो और उस की

दो बेहतरीन बोटियाँ लाओ। वह ज़बान और दिल निकाल कर ले गए। कुछ दिन बाद फिर आक़ा ने यही हुक्म दिया कि दो बदतरीन बोटियाँ लेकर आओ तो फिर वह ज़बान और दिल ही निकाल कर ले गए। आक़ा ने वज़ाहत तलब की तो फ़रमायाः यह दोनों आज़ा (अंग) अगर पाकीज़ा हों तो सबसे बेहतरीन होते हैं और अगर पलीद हों तो बदतरीन। (अतलसुल क़ुरआन)

५९) नबुव्वत का दावा करने वाले मुसैलमा कज़्ज़ाब ने अपना नाम रहमान रख लिया था। (नुज़्हतुल क़ारी)

६०) मुहम्मद बिन इस्हाक़ कुछ उलमाए अहले किताब से रिवायत करते हैं कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम गेहूं खाने से पहले जन्नत में हज़रत अव्वा से हमबिस्तर हुए। क़ाबील और उस की बहन का हमल ठहरा। इस से हज़रत हव्वा को किसी क़िस्म की बदमज़गी, किसी तरह का दुख या दर्द नहीं हुआ और न निफ़ास का ख़ून आया। फिर जब हज़रत आदम ज़मीन पर उतारे गए और हमबिस्तरी का इत्तिफ़ाक़ हुआ तो हाबील और उस की बहन पेट में आए। उस वक़्त हज़रत हव्वा को बदमज़गी, दुख और दर्दे ज़ह की तकलीफ़ हुई और विलादत के बाद हस्बे मामूल निफ़ास का ख़ून भी आया। हज़रत आदम अपनी बेटी का निकाह ग़ैर पेट के भाई से कर दिया करते थे। क़ाबील और हाबील में दो बरस की छोटाई बड़ाई थी। जब वह जवान हो गए तो अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि क़ाबील का निकाह ल्यूज़ा से और हाबील का निकाह इक़लीमिया से कर दो। इक़लीमिया ल्यूज़ा से ज़्यादा हसीन थी इस लिये हज़रत आदम के इत्तिला देने पर हाबील राज़ी हो गए। क़ाबील ने नाराज़ होकर कहा कि इक़लीमिया मेरी बहन है, मैं ही उस का मुस्तहिक़ हूँ क्योंकि हम दोनों जन्नत की पैदाइश हैं और वह दोनों ज़मीन की। यहाँ तक कि हसद के सबब क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर दिया। (तफ़सीरे ख़ाज़िन)

६१) कुछ रिवायतों में आया है कि हज़रत हव्वा के एक लड़का एक लड़की जुड़वाँ होते थे। तमाम औलाद की तादाद चालीस। यह सब बच्चे बीस बार में पैदा हुए थे। सब से बड़ा क़ाबील और उस की बहन इक़लीमिया और सब से छोटा अब्दुल मुग़ीस और उस की बहन अमतुल मुग़ीस। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

६२) क़ाबील ने अपने भाई हाबील को जिस जगह क़त्ल किया इस में उलमा का इख़्तिलाफ़ है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जबले सौर था, कुछ कहते हैं जबले हिरा की घाटी में। कुछ का कहना है कि बसरा में जहाँ अब मस्जिदे आज़म है। (तफ़सीरे ख़ाज़िन)

६३) रिवायत है कि क़त्ल करने के बाद क़ाबील का तमाम बदन काला हो गया था। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने हाबील का हाल पूछा तो बोला मैं उस का चौकीदार नहीं हूँ। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम बोले: तू ज़रूर उसे क़त्ल कर चुका है इस लिये तेरा बदन काला है। चुनान्चे आप क़ाबील से बेज़ार हुए और इस सदमे के सबब सौ बरस तक आप को हंसी नहीं आई। (क़ाज़ी बैज़ावी)

६४) कुछ का ख़्याल है कि क़ाबील क़त्ल के बाद यमन इलाक़े में अदन की तरफ़ भाग गया। यहाँ शैतान ने बहकाया कि हाबील की कुरबानी को आग इस लिये खा गई कि वह आग का पुजारी था, तू भी आग की पूजा किया कर। क़ाबील ने ऐसा ही किया और सब से पहले उसी ने खेल कूद और गाने बजाने के आलात बनाए। शराब ख़ोरी, ज़िना वग़ैरा कबीरा गुनाहों में डूबा रहा यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उसे और उस के मानने वालों को तूफ़ाने नूह में डुबो दिया। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

६५) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को फ़रिश्तों ने सजदा जुम्अ के रोज़ ज़वाल के वक़्त से अस्र तक किया। एक क़ौल यह भी है कि मुक़र्रब फ़रिश्ते सौ बरस तक, दूसरे क़ौल के मुताबिक़ पांच सौ बरस तक सज्दे में रहे। (तफ़सीरे नईमी)

६६) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने ज़मीन पर आने के बाद तीन सौ बरस तक हया से आसमान की तरफ़ सर न उठाया। (ख़ाज़िन)

६७) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का जब जन्नत से इख़राज हुआ तो उस वक़्त और नेअमतों के साथ साथ अरबी ज़बान भी सल्ब कर ली गई थी। उस की जगह आप की ज़बान पर सुरियानी ज़बान जारी कर दी गई थी। तौबा क़ुबूल होने के बाद फिर से अरबी ज़बान अता हुई। (नुज़्हतुल क़ारी)

६८) नसफ़ी ने बयान किया है कि जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ज़मीन पर उतारे गए तो उन के साथ इन्जीर के चार पत्ते भी उतरे थे। तमाम जानवरों ने चाहा कि उन्हें तौबा की मुबारकबाद दें लेकिन चार जानवर सब से पहले उन के पास पहुंचे जिन में से एक हिरन था। उन्हों ने उसे एक पत्ता खिला दिया जिस की वजह से मुश्क का ज़ुहूर हुआ। दूसरे शहद की मक्खी थी। एक पत्ता उसे खिला दिया। इस से शहद पैदा हुआ। तीसरा रेशम का कीड़ा था, एक पत्ता उसे खिलाया तो उस से रेशम पैदा हुआ। चौथी दरियाई गाए थी। एक पत्ता उसे खिलाया तो इस से अम्बर पैदा हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

६९) ताबूते सकीना हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल किया गया था। यह शमशाद की लकड़ी का एक सोने के काम वाला सन्दूक़ था जिस की

लम्बाई तीन हाथ और चौड़ाई दो हाथ की थी। इस में सारे नबियों की शबीहें थीं। इन में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शबीहे मुबारक एक सुर्ख़ याकूत में थी। (तफ़सीरे कबीर)

७०) जन्नत से उतरने के बाद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम सौ बरस तक जबले हिन्द पर सर सज्दे में रखे रोते रहे। आप के आंसू सरनदीप के जंगलों में बह निकले और इन आँसुओं से अल्लाह तआला ने दार चीनी और लौंगें पैदा कीं। (तफ़सीरे नईमी)

७१) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने वह दाना जिस से मना किया गया था, खा लिया और उस की सज़ा के तौर पर तख़्तो ताज चला गया और जन्नती लिबास से मेहरूम हो गए। आप जन्नत से बाहर आए और पशेमानी की हालत में आप ने मुंह में उंगली डाल कर उल्टी कर दी। ज़मीन के कीड़े मकोड़ों और सांप बिच्छू वग़ैरा ने वह उगाल खा लिया तो उस का ज़हर उन के तालू, डंक और दांतों में असर कर गया और जो घास उस उल्टी की जगह उगी उस में ज़हर का असर ज़ाहिर हुआ और जो नुत्फ़ा इस क़िस्म की ग़िज़ा से पैदा हुआ उस से क़ाबील पैदा किया गया जो कुफ़्र और फ़साद लाने वाला था और जिस ने ज़ुल्म और क़त्ल की बुनियाद डाली। (तफ़सीरे नईमी)

७२) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जुम्ए के दिन की आख़िरी साअत में पैदा हुए थे और तूफ़ाने नूह से २७९२ साल पहले दस मुहर्रम को जन्नत से ज़मीन पर उतारे गए। आप का क़द साठ गज़ था और उम्र हज़ार साल। तूफ़ाने नूह से १८५४ साल पहले जुम्ए के दिन मक्का मुअज़्ज़मा में रहलत फ़रमाई और कोहे बू-क़ुबैस पर दफ़्न हुए। आप की ज़िंदगी तक चालीस हज़ार पोते पर-पोते पैदा हो चुके थे। (तफ़सीरे नईमी)

७३) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरमियान ५५७५ बरस का अर्सा बताया जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

७४) आदम के मानी हैं मिट्टी से पैदा होने वाला, इब्राहीम के मानी मेहरबान बाप, नूह के मानी हैं अल्लाह के ख़ौफ़ से रोने और नौहा करने वाले, ईसा के मानी हैं नफ़्स के बहुत ही शरीफ़। इन तमाम नामों में एक एक ख़ूबी की तरफ़ इशारा है मगर मुहम्मद के मानी हैं हर तरह हर ख़ूबी में बेहद तारीफ़ किये गए। इस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेशुमार ख़ूबियों और कमालात की तरफ़ इशारा है। (तफ़सीरे नईमी)

७५) हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा का मज़ारे शरीफ़ जद्दा में है। (तफ़सीरे नईमी)

७६) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मंगल का दिन ख़ून का दिन है। उसी दिन हज़रत हव्वा को हैज़ आया और उसी दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बेटे ने अपने भाई को क़त्ल किया। (तफ़सीरे नईमी)

७७) पहले दरिन्दे और चरिन्दे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से काफ़ी मानूस थे फिर जब क़ाबील ने हाबील को मारा तो परिन्दे और वहशी जानवर इन्सान से भागने लगे और दरख़्त कांटेदार हो गए, मेवे कड़वे हो गए, पानी खारी हो गया और हवा ग़ुबार से भर गई। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७८) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर दस सहीफ़े बीस पन्नों पर नाज़िल हुए थे। जब तक जन्नत में रहे वह अरबी ज़बान बोलते थे। गन्दुम खाते ही अरबी ज़बान भूल गए और सुरियानी बोलने लगे। (तफ़सीरे नईमी)

७९) कुछ रिवायतों में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का कद सत्तर गज़ आया है। (तफ़सीरे नईमी)

८०) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने जन्नत में सब से पहली चीज़ अंगूर और सब से आख़िरी चीज़ गेहूं खाया था। (तफ़सीरे नईमी)

८१) एक रिवायत में है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी तक पांच हज़ार आठ सौ और एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ ६९५० बरस का ज़माना गुज़रा था। (तफ़सीरे नईमी)

८२) अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने आदम अलैहिस्सलाम को तमाम चीज़ों के नाम सुरियानी ज़बान में सिखा दिये थे ताकि फ़रिश्ते न समझ सकें। (नुज़्हतुल क़ारी)

८३) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सय्यिदतुना हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा से मुहब्बत बढ़ने लगी तो दो सौ बरस तक उन से जुदा कर दिये गए। (गुल्दस्तए तरीक़त)

८४) अरबी ज़बान भी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ही के वक़्त से है। वह जन्नत में अरबी बोलते थे। ज़मीन पर तशरीफ़ लाने के बाद सुरियानी ज़बान बोलने लगे। तौबा कबूल होने के बाद अरबी फिर से ज़बान पर जारी हो गई। (नुज़्हतुल क़ारी)

८५) सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हर आसमानी वही अरबी ही में नाज़िल होती थी अम्बियाए किराम कौम की ज़बान में उस का तर्जमा फ़रमाया करते थे। (नुज़हतुल क़ारी)

८६) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने जब गेहूँ खाया तो आप के जिस्मे

मुबारक से जन्नती लिबास अलग हो गया मगर ताज और सर-बन्द अलग नहीं हुए। (तफ़सीरे नईमी)

८७) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की दुआ से हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की उम्र बजाय साठ साल के सौ बरस हो गई। (तफ़सीरे नईमी)

८८) हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ख़मीर के लिये हर क़िस्म की मिट्टी हासिल की और उसे हर क़िस्म के पानी से गुंधा। चूंकि हज़रत अज़्राईल अलैहिस्सलाम ने ही यह मिट्टी उठाई थी इस लिये जान निकालने का काम भी उन्हीं के सिपुर्द कर दिया गया ताकि ज़मीन की अमानत वही वापस करें। (तफ़सीरे नईमी)

८६) सय्यिदुना आदम अलैहिस्सलाम की उम्र एक हज़ार बरस थी। आप ने अर्ज़ किया: या इलाही मेरी उम्र नौ सौ साठ बरस कर दे और मेरी उम्र के यह चालीस बरस दाऊद को दे कर उन की पूरी उम्र सौ साल कर दे। रब तआला ने यह दुआ क़ुबूल फ़रमा ली। आदम अलैहिस्सलाम को भी एक हज़ार बरस की उम्र दी गई और दाऊद अलैहिस्सलाम को भी सौ बरस। (तफ़सीरे नईमी)

६०) हज़रत आदम, हज़रत शीस, हज़रत नूह, हज़रत हूद, हज़रत सालेह, हज़रत लूत, हज़रत शुऐब, हज़रत यूसुफ़, हज़रत मूसा, हज़रत सुलैमान, हज़रत ज़करिया, हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम और हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़त्ना किये हुए पैदा हुए थे। (तफ़सीरे नईमी)

६१) क़ाबील को क़त्ल करने की तरकीब नहीं आती थी। इब्लीस जानवर की शक्ल में आया। उस के पन्जे में एक और जानवर था। उस ने उस जानवर का सर पत्थर पर रख कर दूसरे पत्थर से कुचल दिया जिस से जानवर मर गया। तब क़ाबील को क़त्ल करने का तरीक़ा आया। चुनान्चे एक दिन हाबील अपने जानवर किसी पहाड़ी पर चरा रहे थे। दोपहर में किसी सायादार दरख़्त की छाँव में सो गए। क़ाबील ने बड़ा वज़नी पत्थर उन के सर पर मारा जिस से उन का सर कुचल गया और वह फ़ौत हो गए। (तफ़सीरे ख़ाज़िन, रूहुल बयान वग़ैरा)

६२) क़ाबील ने हाबील को क़त्ल तो कर दिया मगर यह न जाना कि इस लाश का क्या किया जाए। इस लिये यह लाश एक थैले में डाल कर चालीस दिन अपने कन्धे पर लिये फिरा। अल्लाह तआला ने उस की तालीम के दो कौवे भेजे। एक कौवे ने दूसरे को मार कर अपनी चोंच और पंजों से ज़मीन कुरेद कर गढ़ा बनाया और दूसरे कौवे को उस गढ़े में रख कर ऊपर से मिट्टी डाल दी। तब क़ाबील को दफ़्न करने का तरीक़ा आया। (तफ़सीरे नईमी)

६३) इस में इख़्तिलाफ़ है कि यह क़त्ल कहाँ वाक़े हुआ। कुछ का ख़्याल है कि बसरा में हुआ, कुछ की राय है कि ज़मीने हिन्द में। कुछ ने कहा कि ख़ुद मक्कए मुअज़्ज़मा में ग़ारे हिरा के पीछे हुआ। उस वक़्त हज़रत आदम अलैहिस्सलाम कअबे का तवाफ़ कर रहे थे। उस वक़्त हाबील की उम्र बीस या पच्चीस साल की थी। (रूहुल बयान, ख़ाज़िन)

६४) पहले ज़मीन ख़ून चूस लेती थी जैसे आज पानी चूस लेती है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की दुआ से ज़मीन ने ख़ून जज़्ब करना छोड़ दिया ताकि आइन्दा क़त्ल का सुराग़ ख़ून से लग सके। (तफ़सीरे नईमी)

६५) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को हाबील के क़त्ल का इतना सदमा हुआ कि आप बाक़ी उम्र हंसे नहीं। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

६६) क़ाबील जब बूढ़ा हो गया तो उस की औलाद उसे पत्थर मारा करती थी। आख़िर एक बेटे ने उसे क़त्ल कर दिया। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

६७) क़ाबील के क़त्ल के पचास बरस बाद हज़रत शीस अलैहिस्सलाम अकेले पैदा हुए और आप ही हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा और नबी बरहक़ हुए। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

६८) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सात लाख ज़बानों का इल्म था और एक हज़ार पेशों में माहिर बने मगर आप ने खेती बाड़ी का काम किया। (तफ़सीरे नईमी)

६९) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का पेशा खेती बाड़ी, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का लकड़ी बनाना यानी बढ़ई का, हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम का दर्ज़ी गीरी, हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम का तिजारत, दाऊद अलैहिस्सलाम का ज़िरह साज़ी यानी लोहे का काम, सुलेमान अलैहिस्सलाम का ज़ंबील साज़ी और मूसा अलैहिस्सलाम, शुऐब अलैहिस्सलाम और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का काम बकरी चराना था। (तफ़सीरे नईमी)

१००) सात पैग़म्बरों को इल्म की वजह से बड़े फ़ायदे हुए। आदम अलैहिस्सलाम को उन के इल्म ने फ़रिश्तों से सज्दा कराया, ख़िज़्र अलैहिस्सलाम को इल्म ने मूसा अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात अता की, यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को इल्म ने क़ैदख़ाने से निकाल कर तख़्त और ताज का मालिक बनाया, हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को इल्म ने बिल्क़ीस जैसी ख़ूबसूरत और तख़्त और ताज वाली बीवी अता फ़रमाई। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को इल्म ने बादशाहत दिलाई। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के इल्म ने उन की वालिदा से तोहमत दूर करवाई। मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को

अल्लाह तआला ने इल्मे मा काना वमा यकून (जो कुछ हुआ है और जो कुछ होने वाला है इस की जानकारी) अता फरमा कर आप के सरे मुबारक पर ख़िलाफ़ते इलाहिया और शफ़ाअते कुब्रा का सेहरा बांधा। (तफ़सीरे नईमी)

१०१) हक तआला शैतान को एक लाख बरस जहन्नम में रख कर वहाँ से निकालेगा और फ़रमाएगा कि तू अब भी आदम को सज्दा कर ले। वह इन्कार करेगा और दोबारा दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

१०२) हज़रत हव्वा का कद साठ हाथ का था और उम्र शरीफ ९६७ साल की हुई। (तफ़सीरे नईमी)

१०३) जन्नत का गेहूँ बैल के गुर्दे के बराबर था, शहद से ज़्यादा मीठा और मक्खन से ज़्यादा लज़ीज़ और नर्म था। (तफ़सीरे नईमी)

१०४) फ़रिश्तों ने अल्लाह के हुक्म से हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को हिन्दुस्तान के शहर सरन्दीप (मौजूदा श्री लंका) के उस पहाड़ पर उतारा जिस को नूर कहते थे और हज़रत हव्वा को अरब के साहिल पर जद्दा में और मोर को मरजुल हिन्द में और शैतान को मीसान के जंगल में जो बसरा से कुछ फ़ासले पर है या जहाँ आज याजूज माजूज की दीवार क़ाइम है, सांप को सिजिस्तान इस्फ़हान में, इसी लिये वहाँ अब भी सांप ज़्यादा होते हैं। (तफ़सीरे कबीर)

१०५) सब से पहले कपड़ा बुनने का काम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने किया, बाद में आप खेती बाड़ी की तरफ़ माइल हुए। (तफ़सीरे नईमी)

१०६) सब से पहली मस्जिद हज़रत शीस अलैहिस्सलाम ने बनाई थी। आप का मज़ारे पाक अयोध्या ज़िला फ़ैज़ाबाद भारत में है (तफ़सीरे नईमी)

१०७) मिस्वाक हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ईजाद की थी। (तफ़सीरे नईमी)

१०८) कलम से लिखने की शुरूआत हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम ने की। (तफ़सीरे नईमी)

१०९) हिसाब का इल्म हज़रत शीस अलैहिस्सलाम के बेटे अनूस ने ईजाद किया। (तफ़सीरे नईमी)

११०) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने हमेशा बारिश का पानी पिया, कुवें का पानी कभी न पिया। सब से पहले आदम अलैहिस्सलाम ने ही चांदी से रुपया और सोने से अशरफ़ी बनाई। (तफ़सीरे नईमी)

१११) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का मज़ारे पाक मिना में मस्जिदे ख़ीफ़ के पास बताया जाता है। हज़रत हव्वा जद्दा में मदफ़ून हैं। (तफ़सीरे नईमी)

११२) छः आदमी बहुत रोए हैं। आदम अलैहिस्सलाम अपनी ख़ता पर,

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम बेटे की जुदाई पर, हज़रत यहया अलैहिस्सलाम और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह के ख़ौफ से, हज़रत बीबी फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद और इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु करबला के वाकए के बाद। (गुल्दस्तए तरीकत)

११३) जब आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से तशरीफ लाए तब आप के चेहरए मुबारक का रंग सांवला हो गया था। तौबा कुबूल होने के बाद उन को हुक्म हुआ कि चाँद की तेरहवीं, चौदहवीं और पन्द्रहवीं का रोज़ा रखो। चुनान्चे आप ने यह रोज़े रखे। हर दिन जिस्म का तिहाई हिस्सा अस्ल रंगत पर आता गया। पन्द्रहवीं तारीख़ को तमाम जिस्म अस्ली रंगत पर आगया। यह तीन रोज़े नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने तक फ़र्ज़ रहे। इस्लाम में भी कुछ ज़माने तक हर माह के यह तीन रोज़े फ़र्ज़ रहे, अब यह सुन्नत हैं। (गुल्दस्तए तरीकत)

११४) हज़रत सईद इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हाबील का दुम्बा आग उठा ले गई थी। यह दुम्बा जन्नत में रहा फिर हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का फ़िदिया बना। (तफ़सीरे सावी, तफ़सीरे रूहुल बयान)

११५) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलम गोफन चलाने के बहुत माहिर थे कि उस से भेड़िये, चीते और शेर तक का शिकार कर लिया करते थे। इसी गोफन से आप ने जालूत को कत्ल किया था। (तफ़सीरे नईमी)

११६) जालूत बड़ा सख़्त जाबिर और ज़ालिम था। अमलीक़ इब्ने आद की औलाद था। तीन सौ रतल यानी डेढ़ सौ सेर का खुद पहनता था। (तफ़सीरे नईमी)

११७) ताबूते सकीना शमशाद की लकड़ी का सन्दूक था जिस पर सोने चाँदी की चादर चढ़ी हुई थी। इस की लम्बाई तीन हाथ और चौड़ाई दो हाथ थी। इसे अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल फ़रमाया था। इस में नबियों और उन के मकानात की तस्वीरें थीं और आख़िर में सय्यिदुल अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के दौलत कदे की तस्वीर सुर्ख़ याकूत में थी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ की हालत में खड़े हुए हैं और आप के चारों तरफ सहाबए किराम हैं। यह सन्दूक आदम अलैहिस्सलाम से विरासत में नबियों को मुन्तकिल होता हुआ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को पहुंचा। आप इस में तौरात की तख़्तियां रखते थे और अपना ख़ास सामान जैसे कि असा, कपड़े, नअलैने मुबारक, हज़रत हारून अलैहिस्सलाम का अमामा, उन का असा और थोड़ा सा मन्न जो बनी इस्राईल पर उतरता था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जंग के मौक़े पर इस सन्दूक को

आगे रखते थे और इस की बरकत से फ़त्ह हासिल होती थी। इस से बनी इस्राईल को भी तस्कीन रहती थी। आप के बाद यह ताबूत बनी इस्राईल में होता चला आया। जब उन्हें कोई मुश्किल पेश आती तो वह इस ताबूत को सामने रख कर दुआ करते और ज़रूर कामयाब होते। जब उन की बेअमली बढ़ गई तो उन पर क़ौमे अमालिक़ा मुसल्लत कर दी गई जो इस्राईलियों से यह ताबूत छीन ले गई और इस को बेहुरमती के साथ एक जगह पर रख दिया। इस बेअदबी की वजह से अमालिक़ा सख़्त बीमारियों और मुसीबतों में गिरफ़्तार हो गए। जो कोई इस ताबूत के पास पेशाब करता या थूकता वह बवासीर में मुब्तिला हो जाता। अमालिक़ा की पांच बस्तियां तबाह हो गईं तब उन्हें यक़ीन हुआ कि यह मुसीबतें ताबूत की बेहुरमती की वजह से हैं। लिहाज़ा उन्हों ने यह ताबूत एक बैल गाड़ी पर रख कर बैलों को हांक दिया। फ़रिश्ते बैलों को हाँकते हुए ताबूत को तालूत के पास ले आए। बनी इस्राईल ताबूत को देख कर खुश हो गए। यह वह वक़्त था कि उन्हें जालूत का मुक़ाबला दरपेश था जो बहुत ज़ालिम और जाबिर था। बनी इस्राईल को अपनी फ़त्हमन्दी का यक़ीन हो गया और सब ने तालूत से बैअत करके उन्हें अपना बादशाह मान लिया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, तफ़सीरे कबीर, तफ़सीरे रूहुल मआनी, ख़ाज़िन वग़ैरा)

११८) हज़रते इकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जन्नती मर्द और औरतों के बदन पर सत्तर लिबास होंगे, हर लिबास हर घड़ी सत्तर रंग बदलेगा। वह अपना चेहरा अपनी बीवियों के आईने जैसे जिस्म में देख लेंगे और बीवियां अपने मर्दों के जिस्म में अपना चेहरा देख लेंगी। न वह थूकेंगे और न बलग़म फेंकेंगे। (तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन)

११९) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का नाम अब्दुल ग़फ़्फ़ार इब्ने लमक इब्ने मुतवशलिख़ इब्ने इद्रीस अलैहिस्सलाम है। आप की विलादत आदम अलैहिस्सलम से ११०० साल बाद हुई। (तफ़सीरे नईमी)

१२०) हज़रत हव्वा के कुछ बच्चे पैदा होकर मर गए थे। इन फ़ौत शुदा बच्चों के नाम अब्दुल्लाह, उबैदुल्लाह और अब्दुर्रहमान थे। (तफ़सीरे सावी)

१२१) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि जब अल्लाह तआला ने अर्श को पैदा किया और उसे मालूम हो गया कि मैं तमाम मख़लूक़ में सब से बड़ी चीज़ हूँ तो यह कह उठा कि अल्लाह तआला ने मुझ से बड़ी कोई चीज़ नहीं पैदा की। इस से अर्श को हरकत हुई। अल्लाह तआला ने एक साँप पैदा किया जिस ने तौक़ की तरह पूरे अर्श को घेर लिया। इस साँप के सत्तर हज़ार बाज़ू, हर बाज़ू में सत्तर हज़ार पर, हर

पर में सत्तर हज़ार चेहरे, हर चेहरे में सत्तर हज़ार मुंह, हर मुंह में सत्तर हज़ार ज़बानें हैं। इस साँप की ज़बानों से हर रोज़ मेंह की बूंदों, दरख़्त के पत्तों, ज़मीन की कंकरियों, ज़माने के दिनों और तमाम फ़रिश्तों की गिनती के बराबर अल्लाह की तस्बीह निकलती है। यह साँप अर्श को लिपटा हुआ है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१२२) पिरामिड यानी इहराम के बानी अख़नूख़ यानी इद्रीस अलैहिस्सलाम हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१२३) घोड़े की सवारी सब से पहले हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम ने की। (तफ़सीरे नईमी)

१२४) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के असा की लम्बाई दस गज़ थी। (तफ़सीरे नईमी)

१२५) नमरूद ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सोलह साल की उम्र में आग में डाला था। चालीस रोज़ तक आग में रहे। अल्लाह तआला के हुक्म से वह आग आप पर गुलज़ार बन गई। (तफ़सीरे नईमी)

१२६) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़बान में लुकनत थी। (नुज़्हतुल क़ारी)

१२७) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम गेहुएं रंग के लम्बे क़द वाले थे। आप के बदन पर बाल बहुत थे और इतने सख़्त कि अगर दो क़मीज़ें भी पहने होते तो बाल उन से बाहर निकल आते और जब आप गुस्से में आते तो बाल आप की टोपी से निकल पड़ते। जलाल के सबब अक्सर आप की टोपी जल जाती थी। (तफ़सीरे नईमी)

१२८) क़ौमे समूद में अहिमर नामी शख़्स ने उस ऊंटनी की कोंचें (पाँव की रगें) काटी थीं जो हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के मोअजिज़े के तौर पर पत्थर से निकली थी। क़ौमे समूद पर आसमानी बिजली का अज़ाब अहिमर की इसी हरकत की वजह से नाज़िल हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

१२९) सब से पहले जो रसूल काफ़िरों पर भेजे गए वह हज़रत सय्यिदुना नूह अलैहिस्सलाम थे। आप ने साढ़े नौ सौ बरस हिदायत फ़रमाई। (तफ़सीरे नईमी)

१३०) अल्लाह तआला ने अपने रसूल हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का नाम अब्दुश शकूर रखा है। (तफ़सीरे नईमी)

१३१) हज़रत इस्माईल इब्ने हज़रत अब्राहीम अलैहिस्सलाम के बारा बेटे थे। (तफ़सीरे नईमी)

१३२) हज़रत सय्यिदुना इस्माईल अलैहिस्सलाम तीर अन्दाज़ी में कमाल थे। (तफ़सीरे नईमी)

१३३) हमारे आक़ा व मौला सय्यिदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद सब से बड़ा मर्तबा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का, फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का, फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का, फिर हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का है। (तफ़सीरे नईमी)

१३४) औज बिन औक़ या औज बिन अनक़ का क़द ३३३३ गज़ था। वह क़ौमे आद से था। उस की उम्र ३६०० बरस की हुई। अब्र उस के सर से लगता था और जब किसी शहर के लोगों से ख़फ़ा होता था तो उन पर पेशाब कर डालता था जिस से वह डूब जाते थे। (तफ़सीरे नईमी)

१३५) किश्तीये नूह की लम्बाई छः सौ गज़, चौड़ाई एक सौ बीस गज़ और गहराई तीस गज़ से ज़्यादा थी। (तफ़सीरे नईमी)

१३६) क़ौमे लूत के शहर को हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने आसमान तक ले जाकर औंधा उलट दिया था। यह अज़ाब उन पर लिवातत यानी लौंडेबाज़ी के सबब नाज़िल किया गया था। (तफ़सीरे नईमी)

१३७) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जब दोबारा नुज़ूल फ़रमाएंगे तो ज़मीन पर चालीस बरस रहेंगे। (तफ़सीरे नईमी)

१३८) हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पिदरी ज़बान बाबुली, मादरी ज़बान क़िब्ती, इल्मी ज़बान इब्रानी थी। फ़िलिस्तीन में रह कर वहाँ की ज़बान भी सीख ली थी। (तफ़सीरे नईमी)

१३९) दो सगी बहनों से एक शख़्स का निकाह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने से मन्सूख़ हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

१४०) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जब अपनी वालिदा माजिदा हज़रत राहील के हमल में आए उस वक़्त आप के वालिद हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की उम्रे शरीफ़ ९१ साल की थी। (तफ़सीरे नईमी)

१४१) तफ़सीरे अराइस में लिखा है कि जो तजल्लीये इलाही हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर हुई थी वही तजल्ली हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर भी हुई इस लिये जैसे उधर फ़रिश्ते सज्दे में गिरे थे वैसे ही इधर याक़ूब अलैहिस्सलाम और उन की औलाद सज्दे में गिरी। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१४२) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने में सात साल तक क़हत पड़ा, लोग परेशान हो कर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास आए। पहले साल रुपया और अशरफ़ियों से अनाज मोल लिया। दूसरे साल ज़ेवर और जवाहिरात देकर, तीसरे साल जानवर देकर, चौथे साल गुलाम बांदी के बदले, पांचवें साल जायदाद देकर, छटे साल औलाद के बदले और सातवें साल ख़ुद को हज़रत

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का गुलाम बना कर अनाज ख़रीदा। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१४३) असहाबे कहफ़ तीन सौ साल तक बिना खाए पिये रहे। (तफ़सीरे नईमी)

१४४) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सहीफ़े रमज़ानुल मुबारक की पहली या तीन तारीख़ को अता हुए। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१४५) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ज़बान सुरियानी थी। जब नमरूद के शर की वजह से अल्लाह के हुक्म के तहत फ़ुरात पार करके शाम में तशरीफ़ लाए तो अल्लाह की कुदरत से ज़बान बदल गई और यह ज़बान इब्रानी कहलाई। (नुज़्हतुल कारी)

१४६) आम तौर पर यह मशहूर है कि अरबी ज़बान हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से ज़ाहिर हुई। उन्हों ने बनी जुरहुम से सीखी थी इसी लिये उन की औलाद को मुस्तअरबा कहा जाता है। इस से मालूम हुआ कि बनी जुरहुम में यह ज़बान पहले से प्रचलित थी इसी लिये उन्हें आरबह कहा जाता है। (नुज़्हतुल कारी)

१४७) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को ज़बूर १८ रमज़ानुल मुबारक को मिली। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१४८) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने एक च्यूंटी से पूछा तू एक साल में कितना खा लेती है? अर्ज़ की, गेहूँ का एक दाना। आप ने एक दाना डाल कर च्यूंटी को एक शीशी में बन्द कर दिया और डाट लगा दी। एक बरस के बाद खोल कर देखा तो मालूम हुआ कि उस ने सिर्फ़ आधा दाना खाया है। फ़रमाया तू ने आधा दाना क्यों छोड़ दिया? च्यूंटी बोली पहले मेरा भरोसा अल्लाह पर था, मैं पूरा दाना खा लेती थी और यह जानती थी कि वह मुझे हरगिज़ फ़रामोश नहीं करेगा। शीशी में बन्द होने के बाद मेरा भरोसा सिर्फ़ आप पर रहा इस लिये मैं ने आधा दाना छोड़ दिया, इस ख़्याल से कि अगर इस साल आप मुझे भूल जाएंगे तो बाक़ी आधा दाना अगले साल काम आएगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१४९) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने सफ़र के दौरान एक ऊंचा पहाड़ देखा, ऊपर चढ़ गए। पहाड़ की चोटी पर एक बड़ा सा निहायत सफ़ेद रंग का पत्थर नज़र पड़ा। आप उस के चारों तरफ़ फिरे और उस की ख़ूबसूरती पर हैरत करते रहे। अल्लाह तआला ने वही भेजीः ऐ ईसा क्या तुम चाहते हो कि हम तुम्हें इस से भी अजीब चीज़ दिखाएं। फ़रमायाः हाँ। पत्थर बीच से फट गया। उस में एक बूढ़ा कमली ओढ़े नमाज़ पढ़ रहा था। सामने एक फलदार

लकड़ी रखी थी और उस के साथ अंगूर थे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने हैरत से पूछाः ऐ शैख़ यह क्या चीज़ें हैं? जवाब दियाः यह मेरी रोज़ी है जो मुझे रोज़ मिला करती है। आप ने पूछा कि तुम इस पत्थर में कब से इबादत कर रहे हो। कहा चार सौ बरस से। आप ने फ़रमायाः इलाही तू ने इस से भी अफ़ज़ल कोई मख़लूक़ पैदा की है या नहीं? वही आईः ऐ ईसा, उम्मते मुहम्मदिया का वह शख़्स जो १५ वीं शअबान को सलातुल बराअत अदा करे, मेरे नज़्दीक इस की चार सौ बरस की इबादत से अफ़ज़ल है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः काश मैं उम्मते मुहम्मदिया में होता। (ज़ोहरतुर रियाज़)

१५०) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को तौरात ६ः रमज़ानुल मुबारक को मिली। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१५१) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को इन्जीले मुक़द्दस १२ या१३ रमज़ानुल मुबारक को मिली। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१५२) इस्राईल अर्थात अब्दुल्लाह इब्रानी ज़बान का लफ़्ज़ है। यह हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का लक़ब है। (तफ़सीरे नईमी)

१५३) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का नाम मिस्र है। (तफ़सीरे नईमी)

१५४) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक एक के बाद एक नबी आते रहे। उन की गिन्ती चार हज़ार बयान की गई है। (तफ़सीरे नईमी)

१५५) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पास एक एक दिन में पचास हज़ार मरीज़ों का इज्तिमाअ हो जाता था। (तफ़सीरे नईमी)

१५६) मन्न व सल्वा में मन्न तुरन्जबीन की तरह एक मीठी चीज़ होती थी, रोज़ सुब्हे सादिक़ से सूरज निकलने तक हर शख़्स के लिये एक साअ के बराबर आसमान से नाज़िल होती थी। लोग इसे चादरों में लेकर दिन भर खाते रहते थे। सल्वा एक छोटा सा परीन्दा होता था। इसे हवा लाती थी। बनी इस्राईल इसे शिकार करके खाते थे। (तफ़सीरे नईमी)

१५७) हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ रहने पर मामूर थे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ३३ साल की उम्र में आसमान पर उठाए गए, उस वक़्त तक सफ़र व हज़र में हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम कभी आप से अलग नहीं हुए। (तफ़सीरे नईमी)

१५८) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वालिदा मुअज़्ज़मा बीबी मरयम अपनी पैदाइश के बाद एक दिन में इतना बढ़ती थीं जितना दूसरे बच्चे एक साल में। (तफ़सीरे नईमी)

१५९) असहाबे मायदा ने जब आसमान से उतरा हुआ ख़्वान खाने के बाद कुफ्र किया तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने उन के हक़ में दुआ की तो वह सुअर और बन्दर हो गए। उन की संख्या पांच हज़ार थी। (तफ़सीरे नईमी)

१६०) हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हज़रत सय्यिदुना इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बेटे के गले पर छुरी फेरते देख कर हैरत से पुकार उठे: अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर। सय्यिदुना इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने कहा: अल्लहु अकबर वलिल्लहिल हम्द। इस लिये क़ुरबानी के दिनों में यह तकबीर वाजिब है। (तफ़सीरे नईमी)

१६१) अल्लाह तआला ने नबियों में से सात नबियों को सात इल्म बुज़ुर्गी वाले अता फ़रमाए। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को इल्मे लुग़त (व अल्लमा आदमल अस्माआ कुल्लहा, सूरए बक़रा, आयत ३१), हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम को इल्मे फ़रासत (व अल्लमनाहु मिन लदुन्ना इल्मा, सूरए कहफ़, आयतः ६५), हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को इल्मे तअबीर (व अल्लमतनी मिन तावीलिल अहादीसे, सूरए यूसुफ़, आयतः १०१), हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को परिन्दों की बोलियां जानने का इल्म (उल्लिमना मन्तिक़त तैरे, सूरए नम्ल, आयतः १३), हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को तौरात और इन्जील और इन की हिकमत का इल्म (व युअल्लिमुहुल किताबा वल हिकमता वत्तौराता वल इन्जीला, सूरए आले इमरान, आयतः ४८) और सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ग़ैब के राज़, जिन्हें फ़रमाया अल्लमका मालम तकुन तअलम, (सूरए निसा, आयतः ११३)

१६२) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपनी उम्मत के लोगों में पांच मोअजिज़ात पेश किये थे। (१) मिट्टी की चिड़ियां बनाना और उन्हें अल्लाह के हुक्म से फूंक देकर सही जानदार चिड़ियों की तरह उड़ा देना। (२) माँ के पेट के अन्धे को देखने वाला कर देना। (३) कोढ़ी को अच्छा कर देना। (४) मुर्दे को ज़िंदा करना। (५) इल्मे ग़ैब के ज़रिये बताना कि बनी इस्राईल क्या खा कर हज़रत के पास आए हैं और उन के घरों में क्या पूंजी पड़ी है। (तफ़सीरे नईमी)

१६३) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नस्ल तीन बीवियों से चली। बीबी हाजिरा मिस्री थीं जिन के बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम थे। यह नस्ल बनी इस्माईल कहलाई। दूसरी बीवी हज़रत सारा इराक़ की थीं जिन के बत्न से हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम पैदा हुए जिन के बेटे हज़रत याकूब उर्फ़ इस्राईल थे। यह नस्ल बनी इस्राईल कहलाई। तीसरी नस्ल तीसरी बीवी हज़रत क़तूरा

या कन्तूरा से चली और बनी कतूरा या कन्तूरा कहलाई लेकिन इसे तारीख़ में उस दर्जे की अहमियत हासिल नहीं है। (तफ़सीरे नईमी)

१६४) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम १५ वीं सदी क़ब्ले मसीह के वक़्त में क़ौमे बनी इस्राईल को लेकर मिस्र से हिजरत करके अपने आबाई वतन शाम और फ़िलिस्तीन तशरीफ़ ले गए थे। यह वही सफ़र था जिस में फ़िरऔन के लशकर ने बनी इस्राईल का पीछा किया था और आख़िरकार अल्लाह तआला के हुक्म से फ़िरऔन और उस का लशकर बहरे क़ुलज़िम में डूब गया था। (तफ़सीरे नईमी)

१६५) क़ुरआने मजीद में मन्न व सल्वा का जो ज़िक्र है उस के तहत मन्न तुरन्जबीन जैसी यानी शहद की तरह जमी हुई और लज़ीज़ शबनम की क़िस्म की चीज़ होती थी। सल्वा एक तरह का बटेर है जो जज़ीरा नुमाए सीना में बड़ी तादाद में पाया जाता है। ज़्यादा ऊंचाई पर नहीं उड़ता, बहुत जल्द थक जाता है और बड़ी आसानी से शिकार कर लिया जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

१६६) नसारा बहुवचन है नसरानी का। मुल्के शाम (मौजूदा फ़िलिस्तीन) में एक क़स्बा नासिरा है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम यहीं पैदा हुए थे। इसी लिये उन्हें यसूअे नासिरी कहा जाता है। नसरानी भी इसी क़स्बे की मुनासिबत से कहा जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

१६७) तौरात की रिवायत के मुताबिक़ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बीच दस पुश्तों का फ़र्क़ हुआ है यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की ११ वीं पुश्त में थे। (तफ़सीरे नईमी)

१६८) हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के चार बीवियों से बारा बेटे थे। तौरात में बेटों के नाम रूबिन, शमऊन, लावी, यहूदाह, अश्कार, ज़िबलोन, यूसुफ़, बिन यामीन, दान, नफ़ताली, जद्द और आशर दिये गए हैं। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१६९) हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की उम्रे शरीफ़ १४७ साल की हुई। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१७०) याक़ूत हमवी ने लिखा है कि बुक़ैर बिन यक़्तिन बिन हाम बिन नूह की औलाद में सिन्ध और हिन्द दो भाई थे जिन के नाम से यह दोनों मुल्क मशहूर हुए। (तफ़सीरे नईमी)

१७१) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वालिद इमरान ने १२७ साल की उम्र पाई। जब उन की उम्र सत्तर साल की हुई तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की विलादत हुई। (तफ़सीरे नईमी)

१७२) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जिस फ़िरऔन को हलाक फ़रमाया

था उस का नाम वलीद मुसीब या वलीद बिन मुसअब बिन रय्यान बिन अराशह था। उसे चार सौ साल की उम्र मिली। (तफ़सीरे नईमी)

१७३) हज़रत यूशअ बिन नून हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की औलाद हैं। यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ख़ास ख़ादिम और उन के सहाबी व शागिर्द थे। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के विसाल के चालीस साल बाद उन्हें नबुव्वत अता हुई थी। उन के लिये सूरज वापस हुआ था। (नुज़्हतुल क़ारी)

१७४) हदीस में है कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम का यह नाम इस लिये पड़ा कि यह एक चिकनी सफ़ेद ज़मीन पर बैठे तो वहाँ सब्ज़ा उग आया। (बुख़ारी शरीफ़)

१७५) कुल ग्यारह बच्चों ने गहवारे में कलाम किया। (१) मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, (२) हज़रत यहया अलैहिस्सलाम, (३) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, (४) हज़रत मरयम, (५) जुरैज की गवाही देने वाला बच्चा, (६) यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का गवाह, (७) खाई वालों का बच्चा, (८) उस लौंडी का बच्चा जिसे बनी इस्राईल के ज़माने में ज़िना की तोहमत लगाई गई। (९) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, (१०) हज़रत आसिया (फ़िरऔन की बीवी) की ख़ादिमा का वह बच्चा जिसे खौलते हुए तेल में जलाया गया, (११) यहूद का वह बच्चा जो अपने माँ बाप को लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुआ और आप को सलातो सलाम अर्ज़ किया। (शैख़ जलालुद्दीन सियूती)

१७६) एक क़ौल यह है कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम क़ाबील के बेटे हैं। दूसरी रिवायत में आप को हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम का भाई बताया गया है। (नुज़्हतुल क़ारी)

१७७) जमहूर उलमा का ख़्याल है कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम अब भी ज़िंदा हैं और दज्जाल के बाद जब ईमान उठ जाएगा उस वक़्त विसाल फ़रमएंगे। (नुज़्हतुल क़ारी)

१७८) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम और हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम हर साल हज में शरीक होते हैं और इहराम से बाहर आने के लिये एक दूसरे के बाल उतारते हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

१७९) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की हमराही में हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने जिस बच्चे को मार डाला था उस का नाम एक रिवायत के मुताबिक़ जैसूर और दूसरी रिवायत के मुताबिक़ जैसून था। (तफ़सीरे नईमी)

१८०) मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के ग्यारह भाई हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के ख़्वाब में ग्यारह भेड़िये और हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के ख़्वाब में ग्यारह सितारे नज़र आए। इस की वजह यह है कि हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के ख़्वाब में यह गुनाह की हालत में दिखाई दिये इस लिये भेड़ियों की सी सूरत थी और हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के ख़्वाब में तौबा की हालत में नज़र आए इस लिये तारों की शक्ल में थे। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१८१) किसी बुजुर्ग ने फ़रमाया है कि तीन सवालों का कुछ जवाब नहीं। (१) ऐ हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम, आप यूसुफ को बहुत चाहते हैं फिर दुश्मनों के हाथ में क्यों दे रहे हैं। (२) ऐ मुसलमान, तू अल्लाह को बहुत चाहता है फिर यह नाफ़रमानी कैसी। (३) ऐ अल्लाह, तू मोमिन बन्दे को बहुत चाहता है फिर यह मुसीबतें कैसी। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१८२) जब हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ने हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम को रुख़सत किया तो उन के बाज़ू पर जन्नती पैरहन तावीज़ बना कर बांधा जो हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को उस वक़्त लाकर पहनाया था जिब उन्हें आतिशे नमरूद में डाला जा रहा था। (गुल्दस्तए तरीक़त) .

१८३) जिस कुंवें में हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम को उन के भाइयों ने फेंका था उस के मुख़्तलिफ़ सूराख़ों में मूज़ी कीड़े थे। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने तमाम मूज़ी जानवरों को पुकारा: ख़बरदार, कोई जानवर अपने सूराख़ से बाहर न निकले क्योंकि आज तुम्हारे घर अल्लाह का ख़ास बन्दा मेहमान बन कर उतरा है। यह हुक्म सुनते ही सारे मूज़ी जानवर अपने अपने बिलों में घुस गए। एक साँप शक़ावत से हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम को काटने के लिये लपका। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने उस पर एक चीख़ मारी जिस से वह साँप बहरा हो गया और साँपों की नस्ल कियामत तक बहरी कर दी गई। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१८४) हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम को कुंवें में से डोल के ज़रिये निकालने वाले मिस्री का नाम मालिक था। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१८५) एक शहर पर हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम का गुज़र हुआ। वहाँ के लोगों ने समझा कि यही ख़ुदा हैं, उन की सूरत बनाकर पूजने लगे। फिर एक और शहर पर हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम का गुज़र हुआ वहाँ के लोग बुत परस्त थे। जब उन्हों ने हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम को देखा तो अपने बुतों

को तोड़ डाला और कहा: जिस ख़ुदा ने यह प्यारी सूरत बनाई है वही पूजा के लाइक़ है और हमेशा के लिये वह लोग अल्लाह वाले हो गए। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१८६) जब हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की मिस्र में आमद मशहूर हुई तो हज़ारों आदमियों ने मालिक के घर को घेर लिया और कहने लगे हम यूसुफ की मुलाक़ात को आए हैं। मालिक ने कहा अच्छा एक अशरफ़ी इन की मुंह दिखाई है। हर शख़्स एक अशरफ़ी हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के क़दमों में डाल कर मुलाक़ात करता था। एक दिन में छः लाख अशरफ़ियां जमा हुईं। दूसरे दिन दो अशरफ़ियां मुंह दिखाई मुक़र्रर हुई। उस रोज़ बारा लाख अशरफ़ियां जमा हुईं। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१८७) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अज़ीज़े मिस्र के सामने अपनी बेगुनाही के सुबूत में एक चार माह के बच्चे को पेश किया था। यह बच्चा ज़ुलैख़ा का रिश्तेदार था। उस बच्चे ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मुवाफ़िक़त में गवाही दी थी। जब वह लड़का जवान हुआ तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उस की बड़ी इज़्ज़त करते थे और अपनी बादशाहत के ज़माने में उसे बहुत बड़ा ओहदा दिया था। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१८८) जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के लिये क़ैद का हुक्म हुआ और आप क़ैदख़ाने के दरवाज़े पर पहुंचे तो रोने लगे। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने वजह पूछी तो फ़रमाया इस लिये रोता हूँ कि क़ैदख़ाने में कोई पाक जगह नहीं है कि वहाँ नमाज़ पढ़ूँ। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम बोले आप जहाँ चाहें नमाज़ पढ़ें। अल्लाह तआला ने आप के लिये क़ैदख़ाने के अन्दर चालीस गज़ तक ज़मीन को पाक फ़रमा दिया है। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१८९) एक रोज़ हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम क़ैदख़ाने में आए और अपना नूरानी थूक हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दहने मुबारक में डाल दिया। उस वक़्त से आप को ख़्वाबों की तअबीर का इल्म हासिल हो गया। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१९०) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर उन के भाइयों ने चोरी का इल्ज़ाम लगाया। इस का वाक़िआ यह है कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को वालिदा की वफ़ात के बाद फूफी परवरिश करती थीं। जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ज़रा होशियार हुए तो याक़ूब अलैहिस्सलाम ने उन को घर ले जाना चाहा। फूफी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बहुत चाहती थीं। इस लिये उन की कमर में पटका बांध कर शोर कर दिया कि मेरा पटका गुम हो गया है। तलाशी लेने पर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की कमर से पटका बरामद हुआ। हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के शरई क़ानून के मुताबिक़ हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को फूफी के पास

रहना पड़ा। (गुलदस्ताए तरीक़त)

१६१) बनी इस्राईल के यहाँ पेशाब के अहकाम बहुत सख़्त थे अगर कपड़े में लग जाए तो जला डालो और अगर बदन पर लग जाए तो उतनी खाल छील डालो। (तफ़सीरे नईमी)

१६२) मस्जिदे हराम में जहाँ कअबे का तवाफ़ होता है और जिसे मताफ़ कहते हैं वहाँ सत्तर नबियों के मज़ारात बताए जाते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१६३) अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर सय्यिदुना मूसा अलैहिस्सलाम को नौ निशानियां अता फ़रमाई थीं: (१) असा, (२) यदे बैज़ा, (३) वह उक़्दा जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़बान में था फिर अल्लाह तआला ने उसे हल फ़रमाया, (४) दरिया का फटना और उस में रास्ता बनना, (५) तूफ़ान, (६) टिड्डी दल, (७) घुन, (८) मेंडक, (९) ख़ून की वबा। (तफ़सीरे नईमी)

१६४) बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था मैं आज रात अपनी नव्वे बीवियों के पास जाऊंगा, हर एक हामिला होगी और हर एक से राहे ख़ुदा में जिहाद करने वाला सवार पैदा होगा। मगर यह फ़रमाते वक़्त ज़बाने मुबारक से इन्शा अल्लाह नहीं फ़रमाया था तो कोई भी बीवी हामिला नहीं हुई सिवाए एक के और उस से भी अधूरा बच्चा पैदा हुआ। सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर सुलैमान अलैहिस्सलाम ने इन्शा अल्लाह फ़रमाया होता तो उन सब औरतों से लड़के ही पैदा होते और वह सब राहे ख़ुदा में जिहाद करते। (नुज़्हतुल क़ारी)

१६५) अस्हाबे कहफ़ के नाम लिख कर दरवाज़े पर लगा दिये जाएं तो मकान जलने से मेहफ़ूज़ रहता है। जानो माल की हिफ़ाज़त के लिये भी मुजर्रब है। अस्हाबे कहफ़ के नाम यह हैं: मक्सलमीना, यमलीख़ा, मरतूनिस, बैनूनिस, सारीनूनिस, ज़ूनिवास, कश्फ़ियत, तनूनिस। इन के कुत्ते का नाम क़ितमीर है। (नुज़्हतुल क़ारी)

१६६) अस्हाबे कहफ़ अपने ग़ार में साल में एक बार दसवीं मुहर्रम को करवट बदलते हैं। अल्लाह तआला ने ऐसी हैबत से उन की हिफ़ाज़त फ़रमाई है कि उन तक कोई जा नहीं सकता। जंगे रूम के वक़्त हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के हुक्म से एक जमाअत ने ग़ार में दाख़िल होना चाहा मगर अल्लाह तआला ने ऐसी हवा चलाई कि सब जल गए। (नुज़्हतुल क़ारी)

१६७) हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम का नाम अख़नूग़ या अख़नूख़ है। आप

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के वालिद के दादा हैं। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बाद आप ही पहले रसूल हैं। आप के वालिद हज़रत शीस अलैहिस्सलाम हैं। सब से पहले जिस शख़्स ने क़लम से लिखा वह आप ही हैं। कपड़ों के सीने और सिले हुए कपड़े पहनने की शुरूआत भी आप ही से हुई। आप से पहले लोग खालें पहनते थे। सब से पहले हथियार बनाने वाले, तराज़ू और पैमाने क़ाइम करने वाले और इल्मे नुजूम और इल्मे हिसाब में नज़र फ़रमाने वाले भी आप ही हैं। अल्लाह तआला ने आप पर तीस सहीफ़े नाज़िल फ़रमाए और आसमानी किताबों का कसरत से दर्स देने के सबब आप का नाम इद्रीस हुआ। (क़ाज़ी बैज़ावी)

१९८) एक बार बचपन में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फ़िरऔन की गोद में बैठे थे। आप ने उस की दाढ़ी पकड़ कर उस के मुंह पर एक ज़ोरदार थप्पड़ मारा। गुस्से में फ़िरऔन ने आप को क़त्ल करने का इरादा किया। उस की बीवी हज़रत आसिया ने कहा: ऐ बादशाह, यह नादान बच्चा है, अभी नासमझ है, तू चाहे तो आज़माइश कर ले। इस आज़माइश के लिये एक थाल में अंगारे और दूसरे में सुर्ख़ याक़ूत आप के सामने रखे गए। आप ने याक़ूत लेने चाहे मगर अल्लाह तआला के हुक्म से फ़रिश्ते ने आप का हाथ अंगारों पर रख दिया और एक अंगारा आप के मुंह में दे दिया। इस से ज़बाने मुबारक जल गई और लुकनत पैदा हो गई। इस के लिये हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ क़ुरआन में बयान की गई: वहलुल अक़्दतम मिल्लिसानी। और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे, पारा १६, सूरए ताहा, आयत २७। (तफ़सीरे नईमी)

१९९) जब हज़रत यहया अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ तीन साल की थी उस वक़्त अल्लाह तआला ने आप को कामिल अक़्ल अता फ़रमाई और आप की तरफ़ वही की। (तफ़सीरे नईमी)

२००) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की आँखों में ऐसी मलाहत थी जिसे देख कर हर शख़्स के दिल में मुहब्बत जोश मारने लगती थी। (तफ़सीरे नईमी)

२०१) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कई बरस तक हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के पास मिस्र से आठ मन्ज़िल दूर मदयन नामी शहर में मुक़ीम रहे और उन की साहिबज़ादी हज़रत सफ़ूरा के साथ आप का निकाह हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

२०२) फ़िरऔन ने जब जादूगरों को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुक़ाबले के लिये बुलाया तो जादूगरों ने फ़िरऔन से कहा कि हम मूसा को सोता हुआ देखना चाहते हैं। चुनान्चे उन्हें ऐसा मौक़ा दिया गया। उन्हों ने देखा कि हज़रत

सय्यिदुना मूसा अलैहिस्सलाम ख़्वाब में हैं और असाए शरीफ़ पहरा दे रहा है। यह देख कर जादूगरों ने फ़िरऔन से कहा कि मूसा जादूगर नहीं हैं क्योंकि जब जादूगर सोता है तो उस का इल्म भी सो जाता है। मगर फ़िरऔन ने उन्हें हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का सामना करने पर मजबूर कर दिया। (तफ़सीर नईमी)

२०३) अब दुनिया में जितने इन्सान हैं वह सब हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की नस्ल से हैं। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के किश्ती से उतरने के बाद उन के हमराहियों में से सारे मर्द औरत मर गए, सिर्फ़ आप की औलाद और उन की औरतें बचीं। उन्हीं से दुनिया की नस्लें चलीं। अरब और फ़ारस और रोम आप के बेटे साम की औलाद हैं और सूडान के लोग आप के बेटे हाम की नस्ल से हैं और तुर्क और याजूज व माजूज वग़ैरा आप के बेटे याफ़िस की औलाद से हैं। (तफ़सीरे नईमी)

२०४) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बीच २६४० बरस का ज़माना गुज़रा और दोनों हज़रात के बीच जो दौर गुज़रा उस में सिर्फ़ दो नबी हुए। एक हज़रत हूद अलैहिस्सलाम, दूसरे हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम। (तफ़सीरे नईमी)

२०५) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम इतने बड़े बादशाह हो कर दरख़्तों के पत्तों से पंखे और टोकरियां बनाया करते थे। (तफ़सीरे नईमी)

२०६) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने कोई पेशा नहीं अपनाया बल्कि हमेशा सैर फ़रमाया करते थे। (तफ़सीरे नईमी)

२०७) हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम का निकाह हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की बेटी से हुआ था। उन के बत्न से दो बेटे ऐज़ या ऐस और याकूब अलैहिस्सलाम पैदा हुए। (गुल्दस्तए तरीक़त)

२०८) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की वालिदा का नाम राहील था जो हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के मामूँ लायान या लाबान की चौथी बेटी थीं। (गुल्दस्तए तरीक़त)

२०९) सय्यिदुना मूसा अलैहिस्सलाम ने जिस वक़्त अल्लाह के हुक्म से फ़िरऔन के शहर से कूच फ़रमाया था उस वक़्त आप के साथ छः लाख सत्तर हज़ार बनी इस्राईली थे। (तफ़सीरे नईमी)

२१०) हज़रम मूसा अलैहिस्सलाम के लशकर के साथ संगे मरमर का ताबूत था जिस में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की नअशे मुबारक थी। यह ताबूत सब से आगे रखा गया था और इसी की बरकत से रास्ता ज़ाहिर हुआ। (गुल्दस्तए तरीक़त)

२११) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का असा जन्नत के दरख़्त आस की लकड़ी का था जो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम वहाँ से अपने साथ लाए थे और उन से मुन्तकिल होता हुआ हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम तक पहुंचा था। जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उन की बकरियाँ चराई तो उन्हें दिया गया। यह मूसा अलैहिस्सलाम के कद की तरह दस हाथ लम्बा था। इस में दो शाख़ें थीं जो तारीकी में दो मशअलों की तरह चमकती थीं। मूसा अलैहिस्सलाम इस असा से बकरियों के लिये पत्ते भी झाड़ते थे और इस पर तकिया भी लगाते थे। यह असा सिर्फ़ आप ही के हाथ में काम करता था। (तफ़सीरे नईमी)

२१२) हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम और हज़रत यहया अलैहिस्सलाम को बादशाह ने सिर्फ़ इस लिये शहीद किया कि वह अपनी सौतेली बेटी से निकाह करना चाहता था और इन दो हज़रात ने इस को हराम फ़रमाया और उस की मर्ज़ी के मुताबिक फ़तवा न दिया। (कससुल अम्बिया)

२१३) सब से पहले हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपना और अपनी औलाद का ख़त्ना किया। आप से पहले पैग़म्बर ख़त्ना किये हुए पैदा होते थे। (तफ़सीरे नईमी)

२१४) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को कई अव्वलियात का शर्फ़ हासिल है। सब से पहले आप ही के बाल सफ़ेद हुए, पहले आप ही ने नाख़ुन और दाढ़ी तरशवाई और पेडू के बाल दूर करने का रिवाज दिया कि आप के दीन में यह बातें फ़र्ज़ थीं और दीने इस्लाम में सुन्नत। पहले आप ही ने सिला हुआ पाजामा पहना। पहले आप ही ने बालों में ख़िज़ाब किया। पहले आप ही ने मिम्बर बनवाया और उस पर ख़ुत्बा पढ़ा। पहले आप ही ने अपने हाथों में असा लिया। पहले आप ही ने अल्लाह की राह में जिहाद किया, जब काफ़िर आप के भतीजे हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को कैद करके ले गए। आप ने उन से जिहाद किया और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को उन से छुड़ा लिया। पहले आप ही ने मेहमान नवाज़ी की कि बिना मेहमान कभी खाना नहीं खाया और मेहमान की तलाश में चार चार कोस निकल जाते थे। पहले आप ही ने शीरमाल और पराठे पकवा कर मेहमानों को खिलाए। पहले आप ही ने मुआनिका किया यानी गले मिले। पहले आप ही को बहुत माल और ख़ादिम दिये गए। पहले आप ही ने सुरीद (शोरबे में पकी हुई रोटी) तय्यार की। कियामत में सब से पहले आप ही को लिबासे फ़ाख़िरा अता होगा इस के फ़ौरन बाद हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को। आप ही अपने बाद वाले पैग़म्बरों के वालिद हैं। हर आसमानी दीन में आप ही की पैरवी और इताअत

है। मुसलमानों के मुर्दा बच्चों की आप और हज़रत सारा आलमे बर्ज़ख़ में परवरिश करते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

२१५) एक बार हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने में कहत पड़ा। ग़ल्ला कहीं मयस्सर न होता था। आप ने बोरियों में सुर्ख़ रेत भर कर कर मंगवा लिया। जब खोला गया तो शरबती गेहूँ निकले। जब उन्हें बोया गया तो उस के पौदों में जड़ से ऊपर तक बालियां लगीं। (तफ़सीरे नईमी)

२१६) एक बार काफ़िरों ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर दो शेर छोड़े। शेरों ने आप पर हमला नहीं किया बल्कि आप को सज्दा किया और आप के कदमे मुबारक चाटने लगे। (तफ़सीरे नईमी)

२१७) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम का ख़त्ना पैदाइश से सातवें दिन और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का ख़त्ना तेरहवें साल किया था। (तफ़सीरे नईमी)

२१८) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम आख़िर उम्र तक लावल्द थे। बेटे की दुआएं मांग कर कहते थे इस्मअ ईल इस्मअ लफ़्ज़ अरबी है और ईल इब्रानी में खुदा का नाम है। इस्मअ ईल के मानी हुए ऐ खुदा मेरी सुन ले। जब अल्लाह तआला ने आप को बेटा अता फ़रमाया तो इस दुआ की यादगार के तौर पर उन का नाम इस्माईल रखा गया। (तफ़सीरे नईमी)

२१९) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पहली ज़िलक़अदा को कअबे की तअमीर शुरू फ़रमाई थी और उसी महीने की पच्चीस तारीख़ को ख़त्म फ़रमा दी। (तफ़सीरे नईमी)

२२०) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तूफ़ाने नूह से १७०९ साल बाद और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से तक़रीबन २३०० साल पहले बाबुल शहर के क़रीब कूसा नामी क़स्बे में पैदा हुए। एक रिवायत में है कि आप की विलादत अहवाज़ के इलाक़े मक़ामे सूस में हुई थी। (तफ़सीरे नईमी)

२२१) हज़रत इब्राहीम ने सब से पहले अपने चचा की बेटी सारा से निकाह किया फिर हज़रत हाजिरा से। हज़रत सारा की वफ़ात के बाद क़तूरा या क़न्तूरा से। तीन बीवियों से आठ बेटे थे। हज़रत हाजिरा से हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम पैदा हुए जो सब से बड़े थे। हज़रत सारा से हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम जो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से १४ साल छोटे थे। क़न्तूरा बिन्ते यक़तिन कनआनिया से छः बेटे मदयन, मदायन, ज़मरान, यक़शान, यशीक़ और नूह। यह सब मुत्तक़ी मुसलमान हुए। (तफ़सीरे नईमी)

२२२) हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की उम्र १४७ बरस की हुई। आप ने

मिस्र में वफ़ात पाई और वसियत के मुताबिक़ बैतुल मक़दिस में हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की क़ब्रे अनवर के पास दफ़्न किये गए। (गुल्दस्तए तरीक़त)

२२३) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का नाम यशकुर है और लक़ब नूह, क्योंकि आप अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से बहुत नौहा और गिरिया व ज़ारी करते थे। आप पहले साहिबे शरीअत नबी हैं और मुश्रिकीन को डराने वाले पहले पैग़म्बर हैं। आप ही पहले नबी हैं जिन की बद दुआ से काफ़िरों पर अज़ाब आया। आप दूसरे अबुल बशर हैं कि तूफ़ान के बाद के तमाम लोग आप की औलाद हैं। आप के बाल सफ़ेद हुए न कोई दांत गिरा। क़ियामत में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद आप ही की क़ब्रे शरीफ़ पहले खुलेगी। (ख़ाज़िन, तफ़सीरे कबीर, तफ़सीरे सावी)

२२४) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अबुल अम्बिया हैं कि सात नबियों के सिवा तमाम नबी आप की औलाद हैं। वह सात नबी यह हैं: हज़रत आदम, हज़रत शीस, हज़रत इद्रीस, हज़रत नूह, हज़रत सालेह, हज़रत हूद, हज़रत लूत अलैहिमुस्सलाम। (रूहुल बयान)

२२५) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को मोअजिज़े के तौर पर अच्छी आवाज़ मिली थी। जब आप ज़बूर तिलावत फ़रमाते थे तो आप के पीछे आम लोग, उन के पीछे जिन्नात, उन के पीछे चरिन्द परिन्द और जानवर जमा हो जाते थे। जिड़ियां आप पर साया कर लेती थीं। (रूहुल बयान, ख़ाज़िन वग़ैरा)

२२६) ज़बूर का मतलब है लिखी हुई किताब। इस में डेढ़ सौ सूरतें थीं जिन में अहकामे शरीअत बहुत थोड़े थे। हिकमत, वअज़, हम्दे इलाही वग़ैरा ज़्यादा थीं। (तफ़सीरे नईमी)

२२७) अरब में कुल पांच नबी तशरीफ़ लाए। हज़रत हूद, हज़रत सालेह, हज़रत इस्माईल, हज़रत शुऐब और सय्यिदुल अम्बिया मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व अलैहिमुस्सलाम। (तफ़सीरे सावी)

२२८) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मशहूर लक़ब मसीह है। यह इब्रानी ज़बान में मशीह था यानी मुबारक। (रूहुल बयान)

२२९) हम सब को अल्लाह तआला ने पानी से बनाया। हम जमा हुआ पानी हैं और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को हवा से बनाया। आप हवा यानी हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम की फूंक पर खिंची हुई रब्बानी तस्वीर हैं। (तफ़सीरे नईमी)

२३०) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बीच १७०० साल का फ़ासला है। इस दौरान एक हज़ार से ज़्यादा नबी तशरीफ़

लाए। (तफ़सीरे नईमी)

२३१) मुल्के अरब में हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बीच तक़रीबन चार हज़ार साल का फ़ासला है। (तफ़सीरे नईमी)

२३२) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्रे शरीफ़ १२० साल की हुई। आप हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की वफ़ात से चार सौ बरस पैदा हुए और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से सात सौ बरस बाद। (ख़ाज़िन)

२३३) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद हज़रत यूशअ बिन नून अलैहिस्सलाम आप के ख़लीफ़ा बने। आप ने १२६ बरस की उम्र में वफ़ात पाई। अफ़रासीम पहाड़ में दफ़्न किये गए। आप मूसा अलैहिस्सलाम के बाद २७ साल ज़िंदा रहे। (ख़ाज़िन)

२३४) अम्मान से जाते हुए बैतुल मक़दिस के क़रीब एक मामूली बस्ती है जिस का नाम मूसा कलीमुल्लाह है, यहीं हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का मज़ारे अक़दस है। (तफ़सीरे नईमी)

२३५) जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो मलकुल मौत जनाब इज़्राईल अलैहिस्सलाम आप की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अजल का पैग़ाम सुनाया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जलाल में आकर उन को ऐसा तमांचा मारा जिस से उन की एक आँख जाती रही। (तफ़सीरे नईमी)

२३६) हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम के दीन का नाम साइबा था इस में तौहीद, तहारत, रोज़ा वग़ैरा इबादतें थीं। (तफ़सीरे नईमी)

२३७) हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम का नाम हरमिस था। (तफ़सीरे नईमी)

२३८) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब तूर पर जाते तो रोज़ा रख कर जाते और तौरात लेने के लिये आप को अल्लाह के हुक्म से चालीस रोज़े रखने पड़े। (तफ़सीरे नईमी)

२३९) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम बालिग़ ही पैदा हुए थे। (तफ़सीरे नईमी)

२४०) हज़रत हिज़क़ील, हज़रत इब्राहीम, हज़रत उज़ैर और हज़रत ईसा अलैहिमुस्सलाम के ज़रिये मुर्दे ज़िंदा हुए। पांचवें हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जिन्हों ने अपने वालिदैन और बहुत से मुर्दों को ज़िंदा किया। (तफ़सीरे नईमी)

२४१) हज़रत हिज़क़ील बिन सूरी अलैहिस्सलाम को ज़ुलकिफ़्ल भी कहते हैं क्योंकि उन्हों ने एक बार सत्तर पैग़म्बरों को ज़ामिन बन कर क़त्ल होने से बचाया था। ज़ुलकिफ़्ल का मतलब है ज़मानत वाला। आप हज़रत मूसा

अलैहिस्सलाम के तीसरे ख़लीफ़ा हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा यशूअ बिन नून उन के ख़लीफ़ा कालिब इब्ने यूहन्ना, उन के ख़लीफ़ा हज़रत हिज़कील अलैहिमुस्सलाम। इन की कुन्नियत इब्ने अजूज़ है क्योंकि इन की वालिदा ने इन्हें बुढ़ापे में पाया। (तफ़सीरे नईमी)

२४२) हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की कौम को आदे अव्वल कहते हैं और आदे सानिया (दूसरी) हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की कौम है। इसी को समूद कहते हैं। इन दोनों के बीच सौ बरस का फ़ासला है। (तफ़सीरे नईमी)

२४३) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम बड़ी फ़साहत और बलाग़त वाले थे। सब से पहले आप ही ने अम्मा-बअद फ़रमाया। रब तआला ने आप को जो चाहा सिखाया। परिन्दों की बोली, पहाड़ों की तस्बीह, च्यूंटी का कलाम समझना, अच्छी आवाज़ वग़ैरा। आप के दस्ते मुबारक में लोहा नर्म पड़ जाता था। आप बादशाह होने के बावजूद मेहनत मशक्कत करके रोटी खाते थे। ज़िरह बना कर बेचते थे और इसी आमदनी पर गुज़र करते थे। (तफ़सीरे नईमी)

२४४) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आग पर गिरगिट दूर से फूंक मार रहा था। उस की फूंकों से आग तेज़ न हुई मगर वह कियामत तक मार का मुस्तहिक़ हो गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस का मार देना सवाब है। (तफ़सीरे नईमी)

२४५) हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को तमाम अजज़ाए ज़मीन यानी खारी और मीठा, काला और सफ़ेद, सुर्ख़ और ज़र्द से तरतीब दिया और आप का पुतला चालीस बरस तक बिना रूह के मक्कए मुकर्रमा और ताइफ़ के बीच की वादिये नोअमान में रहा। उस के बाद रूह जिस्म में आई। कुछ रिवायतों में आया है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का सरे मुबारक कअबे की ख़ाक से और सीना बैतुल मक़दिस की ख़ाक से था। (तफ़सीरे नईमी)

२४६) हज़रत शअया अलैहिस्सलाम हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की औलाद से थे और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शरीअत के मानने वाले थे। आप बनी इस्राईल पर उतारे गए। (तफ़सीरे नईमी)

२४७) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने ज़मीन पर आकर जो सब से पहली इबादत की वह तौबा थी। (तफ़सारे नईमी)

२४८) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की एक हज़ार बीवियां बताई जाती हैं। (तफ़सीरे नईमी)

२४९) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की ९९ बीवियां थीं। (तफ़सीरे नईमी)

२५०) जन्नत में गेहूँ खाते वक़्त हज़रत हव्वा ने दो मुट्ठी गेहूँ अपने पास रख लिये थे और एक मुट्ठी गेहूँ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को खिलाया था। रब तबारक व तआला ने इस के बरअक्स लड़कियों को एक हिस्सा मीरास दी और लड़कों को दो हिस्से। (तफ़सीरे नईमी)

२५१) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की दुआ पर उन के हवारियों के लिये जो दस्तरख़्वान आसमान से उतरा था वह सुर्ख़ ग़िलाफ़ से ढका हुआ था। उस में सात मछलियाँ और सात रोटियाँ थीं। इन मछलियों पर सिन्ने न थे, न अन्दर का काँटा था। इस से रौग़न टपक रहा था। मछलियों के सरों के आगे सिरका और दुम की तरफ़ नमक और आस पास सब्ज़ियां थीं। रिवायतों में आया है कि पांच रोटियाँ थीं। एक रोटी पर ज़ैतून, दूसरी पर शहद, तीसरी पर घी, चौथी पर पनीर और पांचवीं पर भुना गोश्त रखा था। पहले दिन सात हज़ार तीन सौ आदमियों ने खाया फिर वह ख़्वान उठा और लोगों के देखते देखते उड़ता हुआ उन की नज़रों से ओझल हो गया। यह ख़्वान चालीस दिन तक रोज़ाना या एक दिन आड़ करके आता रहा। (तफ़सीरे नईमी)

२५२) अरब पहले दीने इब्राहीमी पर थे। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के बाद उन के बेटे नाबित कअबे के मुतवल्ली हुए। उन के बाद जुरहुम क़बीला मुतवल्ली हुआ। इस क़बीले के अम्र बिन लख़्मी ने जो ख़ुज़ाआ क़बीले का मूरिसे आला था, बनी जुरहुम को बैतुल्लाह से निकाल दिया और ख़ुद मुतवल्ली बन बैठा। उस का अस्ली नाम अम्र बिन रबीआ बिन हारिसा बिन अम्र बिन आमिर अज़्दी था। अरब में बुत परस्ती की बुनियाद इसी ने रखी। यह बल्क से बुत लाया और कअबे में और इस के आस पास नस्ब किये। (तफ़सीरे नईमी)

२५३) हदीस में है कि हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने दरियाफ़्त किया कि नबियों की गिन्ती कितनी है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया एक लाख चौबीस हज़ार। अर्ज़ किया इन में रसूल कितने हैं? फ़रमाया तीन सौ दस से कुछ ज़्यादा। और एक रिवायत में है ३१५, तीसरी रिवायत में है ३१३। (तफ़सीरे नईमी)

२५४) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने एक क़िब्ती को घूंसा मार कर हलाक कर दिया था मगर उन पर क़िसास यानी ख़ून का बदला वाजिब न हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

२५५) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम जब तख़्त पर उड़ते थे तो आप के साथ एक हज़ार नबी होते थे। (तफ़सीरे नईमी)

२५६) हज़रत जरजीस अलैहिस्सलाम मुल्के शाम में फ़िलिस्तीन में रहते

थे। उस मुल्क का एक बादशाह दादियाना था जो बुतों को पूजता था। हज़रत जरजीस चूंकि तौहीद की तब्लीग़ करते थे इस लिये बादशाह उन की जान का दुश्मन हो गया। उस ने मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से हज़रत जरजीस अलैहिस्सलाम को हज़ार बार मारा मगर हर बार अल्लाह तआला ने आप को ज़िंदा किया। एक दिन हज़रत जरजीस अलैहिस्सलाम ने अपना मुंह आसमान की तरफ़ उठा कर कहाः ऐ रब तू सब कुछ जानता और देखता है। आज सात बरस से मैं तकलीफ़ें उठाता हूँ। तू ने कहा था कि सात बरस तक काफ़िरों से रंज उठाओगे और सब्र करोगे। ऐ अल्लाह मेरी मुद्दत पूरी हुई। अब मैं सब्र नहीं कर सकता। काफ़िरों के हाथ से बहुत तंग आ गया हूँ। ऐ मेरे रब मुझे शहादत नसीब कर और इन काफ़िरों पर अज़ाब नाज़िल कर। उन की दुआ ख़त्म होते ही एक ग़ज़बनाक आग आसमान से उतरी और एक बिजली कड़क कर काफ़िरों पर गिरी। यह देख कर एक काफ़िर ने हज़रत जरजीस अलैहिस्सलाम पर तलवार मारी कि उन की दुआ से अज़ाब उतरा था। हज़रत जरजीस अलैहिस्सलाम ने शहादत पाई। आसमानी आग ने सारे काफ़िरों को जला दिया। उन में से तीस हज़ार लोग जो ईमान लाए थे वह बच गए। (क़ससुल अम्बिया)

२५७) अल्लाह तआला ने तीन अहदो पैमान लिये थे जिन्हें मीसाक़ कहा जाता है। एक तो अपने रब होने का जो आम इन्सानों से लिया गया था। दूसरा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का जो हज़राते अम्बियाए किराम से लिया गया था। तीसरा अहद अल्लाह की किताब को न छुपाने का और इसे लोगों तक पहुंचाने का। यह अहद बनी इस्राईल के उलमा से लिया गया था। (तफ़सीरे नईमी)

२५८) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मूसा अलैहिस्सलाम बहुत शर्मीले और सत्र पोश नबी थे। उन के बदन का कोई हिस्सा नंगा न दिखता था और यह बात उन की हयादारी की वजह से थी। कुछ बनी इस्राईल ने उन्हें तकलीफ़ दी और कहने लगे कि इस क़दर लिबास पोशी की कोई ख़ास वजह है। या तो जिल्द का कोई ऐब है या सफ़ेद दाग़ की बीमारी है या खुसिया बड़ा होने की बीमारी है। अल्लाह तआला की मर्ज़ी हुई कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का बे-ऐब होना ज़ाहिर हो जाए। एक रोज़ आप तन्हाई में नहाने के लिये खड़े हुए, कपड़े उतार कर एक पत्थर पर रख दिये। अल्लाह के हुक्म से वह पत्थर कपड़े ले भागा। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पत्थर के पीछे भागे यह कहते जा रहे थेः ओ पत्थर मेरे कपड़े, ओ पत्थर मेरे कपड़े। आख़िर में उसी हालत में बनी

इस्राईल की एक जमाअत तक पहुंच गए। लोगों ने आप को नंगा देखा और बेहतरीन जिस्मानी बनावट पाई। कहने लगे: मूसा में तो खुदा की क़सम कोई ऐब नहीं है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने कपड़े ले लिये और पत्थर को मारने लगे। खुदा की कसम, मूसा के मारने से पत्थर में तीन या चार या पांच निशान पड़ गए। (तफ़सीरे नईमी)

२५९) नबियों की वफ़ात हमारी तरह जबरन नहीं होती बल्कि मलकुल मौत ख़िदमत में हाज़िर होते हैं और उन की इजाज़त से रूह क़ब्ज़ करते हैं। नबियों की वफ़ात इख़्तियारी यानी उन की अपनी मर्ज़ी से होती है। (तफ़सीरे नईमी)

२६०) फ़ुक़्हा के नज़्दीक सोना वुज़ू तोड़ता है और मौत गुस्ल। मगर नबी की नींद से वुज़ू नहीं टूटता और शहीद की मौत गुस्ल नहीं तोड़ती। (तफ़सीरे नईमी)

२६१) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मूसा अलैहिस्सलाम और आदम अलैहिस्सलाम ने आपस में तकरार की। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा कि तुम वह आदम हो कि जिन को अल्लाह ने अपने दस्ते कुदरत से पैदा किया और अपनी रूह फूंकी, फ़रिश्तों से सज्दा कराया, रहने के लिये जन्नत अता की, लेकिन तुम ने नाफ़रमानी करके लोगों को जन्नत से निकलवा दिया और ज़मीन पर पहुंचा दिया। हज़रत आदम अलैहिससलाम कहने लगे कि तुम वह मूसा हो कि जिन को अल्लाह ने अपनी रिसालत के लिये चुना, अपना कलीम बनाया, लौहें अता कीं जिन में हर चीज़ का बयान था, अपना हमराज़ बनाया, तुम यह बताओ कि मख़लूक़ के पैदा करने से कितने पहले खुदा ने तौरात को पैदा किया था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कहने लगे कि चालीस साल पहले पैदा किया था। हज़रत आदम बोले: क्या उस में यह लिखा है कि आदम ने अपने रब की नाफ़रमानी की और गुमराही इख़्तियार की। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा: हाँ, लिखा हुआ है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने कहा: मूसा, जो बात मेरे रब ने मेरे लिये चालीस साल पहले मुकर्रर कर दी थी उस पर तुम मुझे मलामत करते हो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं आदम अलैहिस्सलाम इस मुक़द्दमे में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ग़ालिब आ गए। (बुख़ारी शरीफ़)

२६२) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब कोई ज़ुल्म से क़त्ल किया जाता है तो उस ख़ून में पहला हिस्सा आदम अलैहिस्सलाम के बेटे क़ाबील का होता है क्योंकि सब से पहले क़त्ल का तरीक़ा जारी करने वाला

वही है। (तफ़सीरे नईमी)

२६३) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को खुदा का बेटा बनाने वाला पहला शख़्स साऊल नामी एक यहूदी फ़रीसी था जो हवारियों को बहुत तकलीफ़ देता था। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान पर उठाए जाने के बाद इस शख़्स ने एलान किया कि उस ने मसीह का नूर देख लिया है। फिर वह हज़रत ईसा मसीह अलैहिस्सलाम का मुबल्लिग़ बन कर हवारियों में शामिल हो गया। अपना नाम बदल कर पौलुस रख लिया। यही शख़्स इसाई दुनिया में सेंन्ट पॉल के नाम से मशहूर है। (तफ़सीरे नईमी)

२६४) हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद में पांचवीं या छटी पुश्त में थे। उन की वालिदा हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की बेटी थीं। अपने ज़माने में सब से ज़्यादा इबादत करने वाले शख़्स थे। ६३ बरस की उम्र पाई। जहाँ रहते थे वह जगह अब दैरे अय्यूब के नाम से मशहूर है। वहीं मज़ारे पाक भी है। यहाँ एक पत्थर है जिस पर क़दम का निशान है। कहा जाता है कि यह हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के क़दमे पाक का निशान है। वहाँ एक चश्मा भी है जिस का पानी बरकत वाला समझा जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

२६५) तिर्मिज़ी शरीफ़ में हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम फ़रमाया तो वह ऊन का कम्बल, ऊन की छोटी टोपी, ऊन का जुब्बा और मरे हुए गधे की खाल की जूतियां पहने हुए थे। (तफ़सीरे नईमी)

२६६) सब से पहले पाजामा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पहना। चूंकि उन्हों ने इस लिबास को जो सब से ज़्यादा औरत को छुपाने वाला है सब से पहले पहना इस लिये उन्हें यह इनआम मिला कि क़ियामत के दिन सब से पहले उन्हें यह लिबास पहनाया जाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

२६७) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की वफ़ात नमाज़ के क़ियाम में हुई थी और एक लाठी के सहारे आप छः माह या एक साल यूंही खड़े रहे। (तफ़सीरे नईमी)

२६८) जब हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम के लिये बद-दुआ की तो अल्लाह तआला ने उन पर दोज़ख़ खोल दी और कुफ़्फ़ार गर्मी से तड़पने लगे। तहख़ानों में ठन्डक लेने घुसे तो वहाँ और ज़्यादा गर्मी थी। दरख़्तों के साए में रहना, पानी से नहाना कुछ काम न आया। पानी भी खौला हुआ पाते थे। भागे भागे फिरते थे। शहर से बाहर बादल का एक टुकड़ा नज़र

आया जिस का साया ज़मीन पर था और ठन्डी हवा चल रही थी। उस के नीचे पनाह लेने जमा हो गए। औरतें, मर्द, बच्चे, बूढ़े जवान सब लोग वहाँ पहुंच गए, तभी अल्लाह का अज़ाब नाज़िल हुआ। पहले एक चीख़ आई फिर ज़लज़ला, फिर वह जगह आग से भड़क उठी। वह सब वहीं ढेर हो गए। ज़लज़ले से इमारतें तबाह हो गईं। वह लोग इस गर्मी में ऐसे भुन गए जैसे आग में टिड्डी भुन जाती है। अबू अब्द बिजली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मदयन इलाके में बहुत से बादशाह एक के बाद एक हुए: अबूजाद, हव्वज़, हुत्ती, कलिमन, सअफ़स, क़रशत। जब क़ौम पर अज़ाब आया तो उस वक़्त वहाँ का बादशाह कलिमन था। वह भी हलाक हो गया उस की बेटी ईमान वाली थी वह अज़ाब से मेहफ़ूज़ रही। (तफ़सीरे नईमी)

२६९) फ़ुतूहाते मक्किया की आख़िरी जिल्द में है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को वही फ़रमाई कि ऐ मूसा, जो तुम्हारे पास आस लगा कर आए उस को नाउम्मीद न लौटाओ और जो तुम्हारी पनाह में आए उसे पनाह दो। कुछ दिन बाद मूसा अलैहिस्सलाम एक जंगल में थे कि एक कबूतर आप के कन्धे पर आ बैठा, बोला मुझे पनाह दो, मेरे पीछे बाज़ पड़ा हुआ है। पीछे से बाज़ आकर दूसरे कन्धे पर बैठ गया, बोला मुझे ना उम्मीद न लौटाओ, इस कबूतर का शिकार कर लेने दो, यह मेरी रोज़ी है जो मुझे रब ने दी है। मूसा अलैहिस्सलाम हैरान हो कर बोले कि यह मेरा इम्तिहान है। आप ने छुरी या चाकू लेकर चाहा कि अपनी रान की एक बोटी काट कर बाज़ को खिला दें ताकि अल्लाह तआला के दोनों हुक्मों पर अमल हो जाए। वह दोनों परिन्दे बोले आप जल्दी न करें ऐ अल्लाह के नबी, हम फ़रिश्ते हैं, हमें आप का इम्तिहान लेने के लिये भेजा गया था। आप अल्लाह के फ़ज़्ल से इस इम्तिहान में पूरे उतरे। आप ने दोनों वादे पूरे कर दिखाए। (तफ़सीरे नईमी)

२७०) हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम अपनी औलाद के साथ अपने बेटे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास मिस्र में आ बसे थे। वहाँ आप की औलाद बहुत फली फूली यहाँ तक कि लाखों हो गई। फ़िरऔने मिस्र रय्यान की मौत के बाद उस का बेटा मुसअब बिन रय्यान बनी इस्राईल की बड़ी इज़्ज़त करता था। उस की मौत के बाद जब वलीद मिस्र का बादशाह बना तो उस ने ख़ुदाई का दावा किया। बनी इस्राईल ने उसे ख़ुदा मानने से इन्कार कर दिया।। वह बोला: तुम्हारे जद्दे अमजद यूसुफ़ को हम ने मिस्रियों से ख़रीदा था। तुम लोग ख़रीदे हुए की औलाद हो लिहाज़ा हमारे ग़ुलाम बल्कि ग़ुलाम ज़ादे हो। उन्हें अपना ग़ुलाम बना कर निहायत दुशवारी और ज़िल्लत के कामों

पर लगा दिया। (तफ़सीरे नईमी)

२७१) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के असा का नाम माशा था। (तफ़सीरे नईमी)

२७२) मिस्र के इलाके मदायनी सऊद में बहुत जादूगर रहते थे। उन के उस्ताद दो थे जो आपस में भाई भाई थे। जब फ़िरऔनी पुलिस उन के पास पहुंची और उन्हें मूसा अलैहिस्सलाम के मुक़ाबले की दअवत दी तो उन्हों ने इस के मुतअल्लिक़ अपनी माँ से मशवरा किया और उस से असाए मूसवी का तज़किरा किया। माँ ने कहा तुम मिस्र जाओ मगर तहक़ीक़ कर लेना कि अगर मूसा के सोने की हालत में भी असा काम करता है तो तुम मुक़ाबला न करना क्योंकि वह जादू नहीं मोअजिज़ा है। जादू हमेशा जादूगर की बेदारी और होशियारी में काम करता है। (तफ़सीरे नईमी)

२७३) क़ौमे बनी इस्राईल फ़िरऔन के चंगुल से निकल कर कुल्ज़ुम सागर पार करके अभी कुछ आगे ही गई थी कि रास्ते में मक़ामे-रीफ़ या मक़ामे रिक़्क़ह में वहाँ के कनआनी या लख़मी लोगों को बछड़ा परस्ती, उस के आगे दो ज़ानू आसन मारे बैठे देखा तो उन के दिल में बुत परस्ती का शौक़ जाग गया। मूसा अलैहिस्सलाम से बोले: हमें भी इजाज़त दीजिये कि हम भी बछड़ा पूजें। आप हमारे लिये कोई बुत तजवीज़ फ़रमा दीजिये कि हम उसकी परस्तिश किया करें या आप अपने हाथ से हमारे लिये बछड़े के मुजस्समे बना दीजिये ताकि हम इन लोगों की तरह पूजा कर सकें। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम ऐसी क़ौम हो कि जिहालतें करते ही रहते हो। तुम ने समुन्द्र से पार होने पर बल्कि ख़ुश्क समुन्द्र में पहुंच कर जिहालत की बातें कीं कि तुम सब एक रास्ते से न गुज़रे, तुम्हारे हर क़बीले ने अलग अलग रास्ता मांगा। फिर तुम ने मुझे परेशान किया। मुझ से कहा हमें दूसरे क़बीलों की ख़बर नहीं हो पाती तो पानी की दीवारों में तुम्हारे लिये रोज़न पैदा किये गए। अब तुम ने यह ग़ज़ब किया कि अभी अभी फ़िरऔनियों पर अल्लाह का अज़ाब और अपने ऊपर अल्लाह की रहमत देख कर आ रहे हो फिर भी इस काम की इजाज़त चाहते हो जिस से वह लोग हलाक हुए हैं। यह लोग जिन बुतों की पूजा करते हैं बहुत जल्द यह बुत हमारे ही हाथों मिटाए जाएंगे। सय्यदुना मूसा अलैहिस्सलाम का यह कहना सच होकर रहा। आप के बाद क़ौमे इमालिक़ा को बनी इस्राईल के हाथों हलाक किया गया। (तफ़सीरे नईमी)

२७४) हज़रत सय्यदुना मूसा अलैहिस्सलाम की फ़रमाइश पर जब रब तबारक व तआला ने कोहे तूर पर अपनी तजल्ली फ़रमाई तो वह पाश पाश

हो गया। कुछ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि उस के सात हिस्से हो गए। एक हिस्सा तो वहीं क़ायम रहा। तीन हिस्से उड़कर मक्कए मुअज़्ज़मा पहुंचे जिन से वहाँ तीन पहाड़ क़ायम हो गएः सौर, बहीर और हिरा। तीन हिस्से मदीनए मुनव्वरा पहुंचे जिन से वहाँ तीन पहाड़ क़ायम हो गएः उहद, रिक़्क़ान और मेहरान। (रूहुल बयान, सावी, इब्ने कसीर वग़ैरा)

२७५) अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से बारा सौ कलिमात में कलाम फ़रमाया। आप ने पूरी तवज्जिह से अपने बदन के हर रौंगटे से यह कलाम सुना। यह कलाम बरबरीहा ज़बान में हुआ। कुछ रिवायतों में है कि तमाम ज़बानों में कलाम फ़रमाया। (रूहुल मआनी)

२७६) हज़रत कअबे अहबार रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सय्यिदुना मूसा अलैहिस्सलाम जब तौरात लाए और इसे पढ़ा तो रब से अर्ज़ की कि मौला मैं ने तौरात में एक उम्मत का ज़िक्र पढ़ा कि वह सब उम्मतों से अच्छी होगी, अच्छी बातों का हुक्म करेगी, बुरी बातों से मना करेगी, तमाम किताबों पर ईमान लाएगी, हमेशा जिहाद करेगी, यहाँ तक कि दज्जाल से भी जिहाद करेगी। ऐ रब वह उम्मत मुझे दे दे। अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि वह उम्मते मुहम्मदिया है। अर्ज़ कियाः मौला मैं ने ऐसी उम्मत का ज़िक्र पढ़ा जो तेरी बहुत हम्द करेगी, सूरज की रफ़्तार नापेगी, हर इरादे पर इन्शा अल्लाह कहेगी, मौला वह उम्मत मुझे दे दे। अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमायाः वह उम्मत मुहम्मदे मुस्तफ़ा की है। अर्ज़ कियाः मौला मैं ने ऐसी उम्मत का भी ज़िक्र पढ़ा जो अपनी क़ुरबानियां, कफ़्फ़ारे, सदक़ात खुद ही खाया करेगी, ग़ैबी आग से न जलवाएगी, इलाही वह उम्मत मुझे दे दे। फ़रमायाः वह उम्मते मुहम्मदिया है। अर्ज़ कियाः मौला ऐसी उम्मत का भी ज़िक्र मैं ने पढ़ा जो ज़मीन में बलन्दी पर चढ़ते वक़्त तकबीर कहेगी और ढलान उतरते वक़्त हम्द करेगी, सारी ज़मीन उस की मस्जिद होगी, मिट्टी उस की तहारत का ज़रिया, उन के हाथ पाँव वुज़ू के आसार से चमकेंगे, मौला वह उम्मत मुझे दे दे। फ़रमायाः वह उम्मते मुहम्मदिया है। अर्ज़ कियाः मौला ऐसी उम्मत का ज़िक्र मैं ने पढ़ा जो नेकी का इरादा करने पर एक नेकी का सवाब पाएगी और कर लेने पर दस गुना से सौ गुना सवाब पाएगी, मौला वह उम्मत मुझे दे दे। फ़रमायाः वह उम्मते मुहम्मदिया है। अर्ज़ कियाः मौला मैं ने ऐसी उम्मत का ज़िक्र भी देखा जिन की किताब उन के सीनों में होगी, उन की नमाज़ की सफ़ें फ़रिश्तों की सफ़ों की तरह होंगी, वह मस्जिदों में ऐसा ज़िक्रे इलाही करेंगे जैसे शहद की मक्खियां, तू उन्हें प्यारा, वह तुझे प्यारे, मौला वह

उम्मत मुझे दे दे। फरमायाः वह उम्मते मुहम्मदिया है। आख़िर में अर्ज़ किया कि मौला फिर तू मुझे मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्हाब में कर दे। इस सवाल पर अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को बशारतें दीं जिन का ज़िक्र कुरआने मजीद की सूरए अआराफ़ में है। (तफ़सीरे ख़ाज़िन)

२७७) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ बहरे कुल्ज़ुम से छः लाख बीस हज़ार इस्राईली पार लगे थे जिन में से कुल बारा हज़ार बछड़ा परस्ती से मेहफ़ूज़ रहे। बाक़ी छः लाख आठ हज़ार इस लअनत में गिरफ़्तार हो गए। (तफ़सीरे सावी)

२७८) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब तौरात लेकर कोहे तूर से वापस लौटे तो देखा कि उन की क़ौम बछड़ा पूजने में लगी है। आप को बहुत गुस्सा आया और उसी गुस्से में आप ने तौरात की तख़्तियां डाल दीं। यह तख़्तियां टूट फूट गईं और पढ़ने के क़ाबिल न रहीं। इस लिये हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फिर चालीस रोज़े रखे तब आप को दो तख़्तियों पर तौरात दी गई। चूंकि इन दो तख़्तियों पर पिछली तौरात नक़्ल कर दी गई थी इस लिये इसे नुस्ख़ा कहा गया। (ख़ाज़िन, तफ़सीरे कबीर, रूहुल मआनी वग़ैरा)

२७९) सय्यिदुना मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल के बारा क़बीलों में से छः छः आदमी कोहे तूर पर ले जाने के लिये चुने तो कुल ७२ हो गए। आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे ७० आदमी लाने का हुक्म दिया है तो तुम में से दो आदमी निकल जाओ। इस पर कोई तय्यार न हुआ तो आप ने फ़रमाया कि रह जाने वालों को वही सवाब मिलेगा जो मेरे साथ जाने वालों को मिलेगा। इस पर हज़रत यूशअ बिन नून और कालिब इब्ने यूहन्ना ठहर गए। बाक़ी ७० आदमी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ गए। (तफ़सीरे नईमी)

२८०) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद हज़रत यूशअ बिन नून आप के ख़लीफ़ा हुए। कुछ ज़माने तक बनी इस्राईल किसी क़दर ठीक रहे मगर यूशअ अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद उन का हाल बदतर हो गया। कुफ़्र और नबियों का क़त्ल उन का आम शुग़ल हो गया। बनी इस्राईल बारा गिरोह थे जिन्हें अस्बात कहा जाता था। उन में से ११ तो बदतरीन हालत में गिरफ़्तार हो गए। एक गिरोह ने जो हक़ पर क़ायम था अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ की, ऐ मौला हम इन लोगों से बेज़ार हैं, हमें इन से अलग करदे। हक़ तआला ने एक ग़ैबी तरीक़े से उन्हें चीन के आख़िरी हिस्से में पहुंचा दिया और फ़रमाया कि तुम यहाँ अलग थलग आबाद रहो। वह क़ौम अब भी चीन के एक हिस्से में आबाद है मगर मख़लूक़ की निगाहों से छुपी

हुई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेअराज की रात वहाँ तशरीफ़ ले गए थे। उन्हें कलिमा पढ़ा कर मुसलमान बनाया और उन्हें कुरआन की आयतें और इस्लामी अहकाम सिखाए। (रूहुल मआनी)

२८१) असा के मुताल्लिक़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को तीन बार वही तीन जगहों पर की गई। पहले तो वादिये सीना में नबुव्वत दिये जाने के वक़्त कि उसे फेंको, सांप बनाने के लिये। दूसरी बार जादूगरों से मुक़ाबले के वक़्त मैदाने मुक़ाबला में कि फेंको, या तमाम नक़्ली सांपों को निगल जाएगा। तीसरे मैदाने तीह में कि पत्थर को इस से मारो, पानी निकालने के लिये। (तफ़सीरे नईमी)

२८२) तीह के मैदान में जब बनी इस्राईल ने पानी मांगा तो अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को एक पत्थर पर असा मारने का हुक्म दिया। मुफ़स्सिरीने किराम कहते हैं कि यह वही पत्थर था जो एक बार हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के कपड़े ले भागा था। यह पत्थर इन्सानी सर के बराबर था, चौकोर मरमर था। (तफ़सीरे नईमी)

२८३) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के असाए मुबारक के नाम के बारे में तीन क़ौल हैं: एक, उस का नाम नबअह था (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान) दो, उस का नाम माशा था। (इब्ने कसीर) तीन, उस का नाम अलीक़ था। (हाशिया जलालैन व नुज्हतुल मजालिस)

२८४) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल को क़ौमे जब्बारीन से जिहाद करने का हुक्म दिया और बारह आदमियों को बैतुल मक़दिस भेजा कि जासूसी करके इस क़ौम के हालात देख आएं मगर उन्हें ताकीद कर दी कि जो कुछ देखें वह सिर्फ़ हम से कहें, आम एलान न करें। हज़रत यूशअ और कालिब के सिवा बाक़ी ने जब्बारीन की शहज़ोरी का एलान कर दिया जिस से बनी इस्राईली बुज़दिल हो गए और जिहाद से इन्कार कर दिया। इस पर यह लोग एक मैदान में क़ैद कर दिये गए। इस मैदान का नाम तीह था। चालीस साल के लिये क़ैद किये गए कि वहां से निकलने के लाख जतन किये मगर न निकल सके। दिन भर यहाँ से निकलते और चलते रहते मगर शाम को वहीं होते जहाँ से चले थे। बनी इस्राईल को खाना पानी और साए की सख़्त ज़रूरत पेश आई तो उन्हों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रियाद की। उन्हों ने रब के हुज़ूर अर्ज़ किया। अल्लाह तआला ने हज़रते कलीम अलैहिस्सलाम से फ़रमाया: पत्थर में अपना असा मारो। आप ने अपना असा मारा। उस पत्थर से फ़ौरन पानी के बारा चश्मे फूट पड़े। हर क़बीले के लिये अलग अलग नाला मुक़र्रर हो गया। फिर अल्लाह तआला ने उन पर हल्का

सफ़ेद बादल दिन के वक़्त मुक़र्रर फ़रमाया जो बरसता न था मगर उन्हें धूप से बचाए रहता था। रात को उन पर एक नूरानी सुतून नाज़िल होता था जिस की रौशनी में यह लोग रात का काम काज करते थे। इन की ग़िज़ा के लिये अल्लाह तआला ने निहायत लज़ीज़ मीठा हल्वा मन्न और नमकीन लज़ीज़ कबाब सल्वा नाज़िल फ़रमाया। मगर बनी इस्राईल ने रब के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की और तवक्कुल का रास्ता छोड़ दिया। आसमानी ग़िज़ा को चोरी चोरी बचा कर रखने लगे। इस हरकत से उन्हों ने अपना नुक़्सान किया कि वह इस नेअमत से मेहरूम भी हुए और अल्लाह के अज़ाब में गिरफ़्तार हुए सो अलग और लअनत मिली वह सब से सिवा। (तफ़सीरे नईमी)

२८५) बनी इस्राईल पर सनीचर के दिन शिकार करना सख़्त हराम था। मगर रब की तरफ़ से उन का सख़्त इम्तिहान यह हुआ कि सनीचर के दिन मछलियां बहुत ज़्यादा समुन्द्र में नमूदार होती थीं। समुन्द्र की सतह मछलियों के मुंह से काली हो जाती थी। फिर जहाँ सनीचर गुज़रा कि मछलियां ग़ायब हो जाती थीं। अर्से तक तो यह लोग सब्र करते रहे। फिर उन में से एक आदमी ने सनीचर के दिन मछली पकड़ कर उस के मुंह में मज़बूत धागा बांधा और उसे समुन्द्र में छोड़ दिया। मगर धागे का दूसरा सिरा किनारे पर एक कील से बांध दिया जिस से कि वह मछली भाग न जाए। फिर उसी धागे के ज़रिये इतवार के दिन मछली पकड़ ली और ग़ौर किया कि हमारे इस काम पर अज़ाब आता है या नहीं। कोई अज़ाब न आया तो अगले हफ़्ते दो मछलियां इसी तरह शिकार कीं। फिर भी अज़ाब न आया। जब उन्हें अज़ाब न आने का यक़ीन हो गया तो आम तौर पर यह लोग इसी तरह धागे से शिकार करने लगे और मछलियों की तिजारत ख़ूब चमक गई। फिर उन्हों ने बड़े हौज़ खोदे और उन के ज़रिये शिकार करने लगे। कहते हैं कि यह शिकारी सत्तर हज़ार के क़रीब थे। बस्ती वाले तीन गिरोह बन गए। दूसरे दो गिरोह यानी ख़ामोश रहने वाले (साकितीन) और नसीहत करने वाले (नासिहीन) उन शिकारियों के मुहल्ले से चले गए और अपने अलग मुहल्ले बना लिये। बीच में एक दीवार खींच ली। एक दिन उन लोगों ने देखा कि दीवार के पीछे से न तो कोई निकला, न उन के मुहल्लों में कुछ कारोबार है, न चहल पहल है, न किसी की आवाज़। तब यह दोनों जमाअतें दीवार पर चढ़ीं, देखा कि दूसरी तरफ़ निरे बन्दर भरे पड़े हैं जो चारों तरफ़ दौड़ते फिर रहे हैं। इन्हें देख कर वह इन के पास दुम हिलाते और आंसू बहाते आए। इन लोगों ने कहा: बोलो हम तुम को मना करते थे, तुम से बेज़ार थे मगर तुम ने हमारी एक न मानी। यह बन्दर

समझते जानते पहचानते थे मगर मुंह से कुछ न बोल सकते थे। आख़िरकार तीन दिन बाद हलाक कर दिये गए। यह वाक़िआ हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में हुआ। (रूहुल मआनी, रूहुल बयान)

२८६) अल्लाह तआला ने बद-अहद यहूदियों पर बुख़्ते नस्सर बादशाह मुसल्लत कर दिया था। बुख़्ते नस्सर का नाम दो नामों से मिल कर बना है। बुख़्त के मानी हैं बेटा, नस्सर एक बुत का नाम था। इस की माँ इसे जन कर नस्सर बुत के पास डाल आई थी। लोगों ने इसे वहाँ पाया, इस लिये इसे बुख़्ते नस्सर यानी नस्सर बुत का बेटा कहने लगे। यह सारी दुनिया का बादशाह था। (तफ़सीरे नईमी)

२८७) कुछ मुफ़स्सिरीन का कहना है कि जिस पहाड़ पर अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम किया था उस का नाम तूरे सीना था। दूसरा कथन है कि वह जुबैर नामी पहाड़ था जो मदयन के पहाड़ों में सब से बड़ा था। (मुआलिमुल तन्ज़ील व हाशिया तफ़सीरे जलालैन)

२८८) अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के इसरार पर कोहे तूर पर ६ ज़िलहज्ज अरफ़े के दिन हाथ की छुंगली के आधे पोरे के बराबर तजल्ली ज़ाहिर फ़रमाई थी। (तफ़सीरे नईमी)

२८९) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में बनी इस्राईल का एक बड़ा आलिम सूफ़ी पीर था जिस का नाम बलअम या बलआम इब्ने बाऊरा था। यह था तो इस्राईली मगर जब्बारीन की बस्ती में रहता था जो मुल्के शाम में वाक़े थी। उस की बीवी उसी क़ौमे जब्बारीन में से थी। बलअम अपने वक़्त का बड़ा वली, आबिद, आलिम और सूफ़ी था। इस्मे आज़म जानता था। इस की दुआएं क़बूल होती थीं। अपने घर बैठे अर्शे आज़म देखा करता था। लोगों को इल्म सिखाता था। उस के दर्स में बारा हज़ार तलबा होते थे जो उस का बताया हुआ सबक़ लिख लेते थे। उस की हर बात लिखी जाती थी ग़र्ज़ यह कि वह इन्तिहाई उरूज पर पहुंचा हुआ था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल को साथ लेकर इस इलाक़े पर हमला करने और इसे फ़त्ह फ़रमाने के लिये जब कनआनी इलाक़े में दाख़िल हुए जो शाम में था तो क़ौमे जब्बारीन जमा होकर बलअम के पास आई और कहा मूसा तेज़ मिज़ाज हैं और उन के साथ भारी लश्कर भी है। अगर वह हमारे इलाक़े पर क़ाबिज़ हो गए तो तेरी ख़ैर नहीं। तू उन के लिये बद-दुआ कर कि वह यहाँ न दाख़िल हो पाएं। बलअम बोला: वह अल्लाह के नबी हैं, उन पर किसी बद-दुआ का असर नहीं होगा बल्कि मेरा दीन तबाह हो जाएगा। यह लोग बलअम की बीवी के पास

गए और उसे बहुत से तोहफ़े दिये और उस के ज़रिये बलअम को पहुंचाए। फिर बलअम की बीवी ने उस पर ज़ोर दिया कि तू यह काम कर। उस ने पहले इस्तिख़ारा किया जिस में इस हरकत से रोका गया था मगर उस की बीवी और क़ौम ने उस से दोबारा इस्तिख़ारा करने को कहा। उस ने किया, इस बार ख़ामोशी रही, कोई जवाब नहीं आया। यह लोग बोलेः अब की बार तुझे मना नहीं किया गया है, मालूम होता है कि रब ने तुझे इजाज़त दे दी है। आख़िरकार बलअम गधे पर सवार हो कर एक पहाड़ी पर गया, क़ौम साथ में थी। बलअम ने मूसा अलैहिस्सलाम और बनी इस्राईल के लिये बद-दुआ और अपनी क़ौम के लिये दुआएं शुरू कीं मगर अल्लाह की कुदरत से यह हुआ कि मूसा अलैहिस्सलाम की बजाए उस के मुंह से जब्बारीन का नाम निकलता था और अपनी क़ौम के हक़ में दुआ करता तो जब्बारीन की बजाए मूसा अलैहिस्सलाम और बनी इस्राईल का नाम निकलता था। क़ौम के लोग बोलेः तू यह क्या कर रहा है? वह बोला मैं मजबूर हूँ, मेरी ज़बान मेरे क़ाबू में नहीं है। उस वक़्त उस की ज़बान निकल पड़ी और उस के सीने तक लटक आई और वह कुत्ते की तरह हांपने लगा। फिर लोगों से बोलाः मेरी दुनिया और दीन दोनों तबाह हो गए। अब तुम एक तदबीर करो जिस से बनी इस्राईल तबाह हो जाएं। वह यह कि अपनी ख़ूबसूरत लड़कियाँ सजा बना कर मूसा के लश्कर में छोड़ दो और उन्हें हिदायत दो कि जो इस्राईली तुम्हें हाथ लगाए उसे मना न करना। जब उन में ज़िना फैल जाएगा तो वह हलाक हो जाएंगे। इन लोगों ने ऐसा ही किया। चुनान्चे एक लड़की किस्ती बिन्ते सौर को एक इस्राईली ज़मरी इब्ने शलूम (जो शमऊन इब्ने याकूब अलैहिस्सलाम की औलाद का एक सरदार था) ने पकड़ा। मूसा अलैहिस्सलाम ने मनः फरमाया मगर उस ने छुप कर ज़िना किया। इस पर इस्राईलियों में ताऊन फैल गया। सत्तर हज़ार इस्राईली मर गए। उधर एक बहुत ताक़तवर इस्राईली फ़िनख़ास इब्ने ऐज़ार इब्ने हारून को जब पता चला तो उस ने ज़ानी और ज़ानिया को अपने नेज़े में छेद कर उठा लिया और बहुत ज़िल्लत से हलाक किया तब यह ताऊन ख़त्म हुआ। बलअम का यह हाल हुआ कि वह इस्मे आज़म भूल गया, ईमान और मअरिफ़त उस के सीने से निकल गए। उस ने देखा कि मेरे सीने से एक सफ़ेद कबूतर की तरह का कोई परिन्दा उड़कर निकल गया है जिसे और लोगों ने भी देखा। सब समझ गए कि उस का ईमान निकल गया। (रूहुल मआनी, ख़ाज़िन, तफ़सीरे कबीर, तफ़सीरे सावी)

२८०) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने वाले जादूगरों की संख्या

अस्सी हज़ार थी। कहीं कहीं इन की तादाद सत्तर हज़ार भी बताई जाती है। फ़िरऔन ने उन सब को क़त्ल करवा दिया। यह लोग सुब्ह के वक़्त काफ़िर और जादूगर थे और शाम को पाकबाज़ मोमिन और शहीद। रिवायत है कि जब यह लोग अल्लाह की बारगाह में सज्दे में गिरे और पुकारे कि हम लोग मूसा के रब पर ईमान लाए तो सज्दे की हालत में ही अल्लाह तआला ने उन्हें जन्नत दिखा दी और उन्हों ने जन्नत में अपनी अपनी जगहों को अपनी आँखों से देख लिया। (तफ़सीरे इब्ने कसीर)

२६१) कुछ मुफ़स्सिरीने किराम फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सब से पहले हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने सज्दा किया, फिर मीकाईल अलैहिस्सलाम ने, फिर इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम ने, फिर इज़्राईल अलैहिस्सलाम, फिर सारे फ़रिश्तों ने। इसी लिये हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को सब से बड़ा दर्जा अता किया गया यानी नबियों की ख़िदमत। कुछ हज़रात फ़रमाते हैं कि सब से पहले हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम ने सज्दा किया। इसी लिये उन की पेशानी पर सारा क़ुरआन लिख दिया गया। (तफ़सीरे नईमी)

२६२) पहले फ़रिश्तों ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा किया जिस का शैतान ने इन्कार किया। यह सज्दा थोड़ी देर तक रहा। फिर फ़रिश्तों ने सर उठा कर देखा कि शैतान हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तरफ़ से पीठ फेरे खड़ा है तब उन्हों ने दूसरा सज्दा उस पहले सज्दे की तौफ़ीक़ के शुक्राने में अदा किया। यह सज्दा रब के लिये था और सज्दए शुक्र था। फिर जब सर उठाया तो उन्हों ने देखा शैतान पहले ख़ूबसूरत था लेकिन अब उस की शक्ल बिगड़ कर जिस्म सुअर का सा और चेहरा बन्दर का सा हो गया है। तब उन्हों ने हैबते इलाही से एक और सज्दा किया। यह तीनों सज्दे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ही की तरफ़ थे मगर तीन क़िस्म के और इन की मुद्दतें अलग अलग थीं। (तफ़सीरे नईमी)

२६३) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से मुख़्तलिफ़ तरह के बीज, तीन तरह के फल, हजरे असवद सियाह पत्थर जो अब ख़ानए कअबा में लगा हुआ है और वह असा जो बाद में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हाथ आया जिस की लम्बाई दस गज़ थी, अपने साथ लेकर आए थे और कुछ सोना, चाँदी और खेती बाड़ी के औज़ार भी लाए थे। आदम अलैहिस्सलाम इस क़दर पशेमानी और अपनी माफ़ी के लिये अल्लाह के हुज़ूर रोने गिड़गिड़ाने में मशग़ूल हुए कि जन्नत के बीजों से बेख़बर हो गए। शैतान ने मौक़ा पाकर उन को हाथ लगाया। जिस जिस बीज पर उस का हाथ लगा वह ज़हरीला हो गया

और जो उस के हाथ से मेहफूज़ रहा उस का नफ़ा बरक़रार रहा। सय्यिदुना आदम अलैहिस्सलाम के साथ तीन तरह के जन्नती मेवे आए, एक वह जो पूरे खा लिये जाते हैं, दूसरे वह जिन का ऊपरी हिस्सा खा लिया जाता है और गुठली फेंक दी जाती है जैसे खुरमा वग़ैरा, तीसरे वह जिन का ऊपरी छिलका फेंक दिया जाता है और अन्दरूनी हिस्सा खा लिया जाता है। सही रिवायत में है कि उन के साथ लोहे के औज़ार भी थे। एक संड़ासी जिस से लोहा पकड़ते हैं, दूसरा हथौड़ा, तीसरे ऐरन। हजरे असवद जब जन्नत से आया तो उस की रौशनी कई कई मील तक जाता थी, जहाँ जहाँ इस की किरनें पहुंचती थीं उसी हद तक हरम की हदें क़ायम हुई। आदम अलैहिस्सलाम को दुनिया में आकर बहुत वहशत हुई। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम अल्लाह के हुक्म से ज़मीन पर आए और ऊंची आवाज़ में अज़ान कही। जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अज़ान में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे नामी सुना तो उन की वहशत दूर हुई। यह तमाम वाक़िआत सही हदीसों से साबित हैं जिन को शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने तफ़सीरे अज़ीज़ी में जमा फ़रमाया है।

२६४) जब आदम अलैहिस्सलाम का आख़िरी वक़्त क़रीब आया तो आप को जन्नती मेवे खाने की ख़्वाहिश हुई। अपने बेटों से कहा: कअबए मुअज़्ज़मा जाओ और वहाँ दुआ करो कि अल्लाह तआला मेरी यह तमन्ना भी पूरी करे। बेटे हुक्म पाकर वहाँ पहुंचे। उन्हें हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम और दूसरे फ़रिश्ते मिले जिन से उन्हों ने आदम अलैहिस्सलाम की फ़रमाइश का हाल बयान किया। फ़रिश्तों ने कहा: हमारे साथ आओ हम जन्नत के मेवे अपने साथ लाए हैं। चुनान्चे यह सब आदम अलैहिस्सलाम के पास पहुंचे। हज़रत हव्वा इन फ़रिश्तों को देख कर डर गई और चाहा कि आदम अलैहिस्सलाम के दामन में छुप जाएं। उन्हों ने कहा: हव्वा, अब मुझ से अलग रहो, मेरे और रब के क़ासिदों के बीच आड़ न बनो। फ़रिश्तों ने आदम अलैहिस्सलाम की रूह क़ब्ज़ की और उन के बेटों से कहा कि जिस तरह हम आप के वालिद का कफ़न दफ़न करें वैसे ही किया करना। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम जन्नत की मिली जुली खुश्बू और जन्नती हुल्ले का कफ़न और जन्नती बेरी के कुछ पत्ते अपने साथ लाए थे। उन को खुद ग़ुस्ल दिया और कफ़न पहनाया और खुश्बू मली और फ़रिश्ते उन की नअशे मुबारक कअबे में लाए और उन पर सारे फ़रिश्तों ने नमाज़े जनाज़ा अदा की जिस में इमाम हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम थे और बाक़ी सारे फ़रिश्ते मुक़्तदी। इस नमाज़ में चार तकबीरें

कही गई। फिर मक्के से तीन मील के फ़ासले पर मिना में ले गए जहां कि हाजी लोग कुरबानी करते हैं और उसी. जगह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की कुरबानी की थी, वहाँ मस्जिदे खीफ़ के करीब बग़ली क़ब्र खोदी गई और उन को दफ़्न करके उन की क़ब्र को ऊंट के कोहन की तरह ढलवाँ बना दिया। (तफ़सीरे नईमी)

२६५) जब आदम अलैहिस्सलाम की परेशानियां इन्तिहा को पहुंच गईं तो एक दिन उन्हें याद आया कि मैं ने अपनी पैदाइश के वक़्त अर्शे आज़म पर लिखा देखा था ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह, जिस से मालूम हुआ कि मुहम्मदुर रसूलुल्लाह का दर्जा वह है कि उन का नाम अर्शे आज़म पर अल्लाह के नाम के साथ लिखा हुआ है। अब मैं उन के वसीले से रब की बारगाह में अपनी मग़फ़िरत की दुआ करता हूँ। चुनान्चे अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह मैं मुहम्मद का वास्ता देकर तुझ से मांगता हूँ कि मुझे माफ़ करदे। एक और रिवायत में इस तरह दुआ की: ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरे बन्दे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इ़ज़्ज़त और मर्तबे के तुफ़ैल और उस बुज़ुर्गी के सदक़े में जो उन्हें तेरी बारगाह में हासिल है, मग़फ़िरत चाहता हूँ। तब फ़ौरन जवाब आया: ऐ आदम तुम ने उस शहनशाह को कैसे जाना? हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने सारा माजरा अर्ज़ किया। हुक्मे इलाही हुआ: ऐ आदम वह मेहबूब सब पैग़म्बरों से पिछले पैग़म्बर हैं, तुम्हारी औलाद से हैं। अगर वह न होते तो तुम को भी पैदा न किया जाता। (तफ़सीरे नईमी)

२६६) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अपनी ख़ता पर नादिम रहे और तीन सौ साल तक लगातार रोते रहे। जब तौबा का वक़्त आया और आदम अलैहिस्सलाम के दिल में दुआओं का इल्क़ा हुआ, वह आशूरा यानी दसवीं मुहर्रम और ग़ालिबन जुम्ए का दिन था। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने वुज़ू फ़रमाया और ख़ानए कअबा के सामने खड़े हुए। दो रकअत नमाज़ अदा की और फिर उन कलिमात से दुआ मांगी जो हम पिछले नुक्ते में बयान कर आए हैं। तौबा कुबूल होने के बाद अरफ़ात के मक़ाम पर हज़रत हव्वा से मुलाक़ात हुई। दोबारा अरबी ज़बान अता हुई फिर हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने तमाम आलम के जानवरों को आवाज़ दी: ऐ जानवरो, हक़ तआला ने तुम पर अपना ख़लीफ़ा भेजा है उस की इताअत और फ़रमाँबरदारी करो। दरियाई जानवरों ने अपना सर उठा कर इताअत ज़ाहिर की, ख़ुश्की के जानवर आस पास जमा हो गए। आदम अलैहिस्सलाम उन पर हाथ फेरने लगे। जिन पर उन का हाथ पहुंच गया वह पालतू और ख़ानगी बन गया जैसे घोड़ा, ऊंट,

बकरी, कुत्ता, बिल्ली, वग़ैरा और जिन पर आप का हाथ न पहुंचा वह जंगली वहशी रहा। इस वाक़ए के बाद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ कियाः मौला मेरी औलाद हिम्मत में बहुत कमज़ोर है और इब्लीस का फ़रेब बहुत सख़्त है अगर तू उन की इमदाद न करे तो वह इब्लीस से कैसे बच सकते हैं? हुक्मे इलाही हुआः ऐ आदम तुम्हारे लिये और अहकाम थे और उन के लिये दूसरे अहकाम होंगे। हम हर इन्सान के साथ एक फ़रिश्ता रखेंगे जो उसे शैतान के वसवसे से बचाएगा और हर एक के लिये उस के मरने के वक़्त तक तौबा का दरवाज़ा खुला रखेंगे। तब आप ने खुश होकर शुक्र किया। उसी तफ़सीरे अज़ीज़ी में है कि आप की औलाद बेटे, पोते वग़ैरा आप की हयात में चालीस हज़ार तक पहुंच चुके थे और आप ने आख़िरी उम्र में ख़ामोशी इख़्तियार कर ली थी कि अल्लाह तआला के ज़िक्र के अलावा दूसरी बात चीत बहुत कम फ़रमाते थे। (तफ़सीरे नईमी)

२९७) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का लक़बे मुबारक अबुल बशर है और हमारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लक़ब अबुल अरवाह। (तफ़सीरे नईमी)

२९८) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जब जन्नत में रहे तो उन्हें वहाँ की नेअमतें खाने पीने की इजाज़त थी, वहाँ की हूरें इस्तेमाल करने की इजाज़त न थी। इसी लिये हज़रत हव्वा को पैदा फ़रमाया गया। (तफ़सीरे नईमी)

२९९) हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम अपने वालिद हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के बड़े ख़िदमत गुज़ार बेटे थे। एक बार हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम इबादत के लिये गोशा नशीन हुए और बेटे को दरवाज़े पर बिठा दिया कि किसी को अन्दर न आने देना। अचानक एक मुक़र्रब फ़रिश्ता इन्सान के भेस में आया और हज़रत इस्हाक़ से मिलने का शौक़ ज़ाहिर किया। हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ने मना किया मगर वह इसरार करता रहा। उन्हों ने ज़बरदस्ती रोकने की कोशिश की। हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम दरवाज़े से बाहर आए तो देखा कि हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम फ़रिश्ते से झगड़ रहे हैं। उन्हों ने फ़रमायाः बरखुरदार यह अल्लाह का मुक़र्रब फ़रिश्ता है और फ़रिश्ते से मअज़िरत चाही कि याकूब ने पहचाना नहीं था। फ़रिश्ते ने हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम की बहुत तारीफ़ की और कहा इसी तरह ख़िदमत का हक़ अदा करना चाहिये और कहा कि हमारी तरफ़ से इन का नाम इस्राईल रखो। इस्राईल दो लफ़्ज़ों से बना है, इस्रा के मानी या तो बन्दा हैं या बुज़ुर्गी वाला। ईल इब्रानी में अल्लाह तआला का नाम है। इस तरह इस्राईल के मानी हुए

अल्लाह का बन्दा हुए या अल्लाह का मक्बूल बन्दा। (तफ़सीरे नईमी)

३००) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम बाबुल के शहर कसदियोन में रहते थे जिस का दूसरा नाम आर था। वहाँ से आप के वालिद तारेह आप को और पोते लूत और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बीबी हज़रत सारा को लेकर जुनूब की तरफ़ से मक़ामे हिराँ में आ बसे। वहीं तारेह ने वफ़ात पाई। फिर वहाँ से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपनी बीवी हज़रत सारा और हज़रत लूत को लेकर कनआन में आए और जीतून के इलाके में ख़बरोन में क़याम किया। आप की दो बीवियां थीं। बड़ी बीबी हज़रत सारा और छोटी बीबी हज़रत हाजिरा और आप के आठ बेटे थे। हज़रत सारा से एक बेटे हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम और हज़रत हाजिरा से सात- हज़रत इस्माईल जो सब से बड़े बेटे थे, दूसरे ज़मरान, तीसरे सक़ाक़, चौथे मदान, पांचवें मदियान, छटे अस्बाक़ और सातवें सूख़। (तफ़सीरे नईमी)

३०१) हज़रत सारा से हज़रत सय्यिदुना इब्राहीम अलैहिस्सलाम के एक ही बेटे थे हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम। आप ने हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की बेटी से निकाह किया जिन से दो बेटे जुड़वाँ पैदा हुए थे एक ऐस दूसरे याक़ूब। हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम ने आख़िर उम्र में इन दोनों को अपना जानशीन बनाया और हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम को दुआ दी कि अल्लाह तआला तुम्हारी औलाद में नबुव्वत जारी रखे और ऐस से फ़रमाया कि तुम्हारी नस्ल में बादशाहत जारी रहे। फिर हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम को अपना ख़लीफ़ा बना कर विसाल फ़रमा गए। ऐस बहुत मालदार हो गए और याक़ूब अलैहिस्सलाम बहुत मिस्कीन। उन की वालिदा ने मशवरा दिया कि ऐ याक़ूब तुम्हारा यहाँ रहना मुनासिब नहीं है, तुम अपने मामूँ लायान के पास चले जाओ। वह मालदार आदमी हैं, तुम्हारी परवरिश करेंगे और मुमकिन है अपनी बेटी की शादी तुम से कर दें। याक़ूब अलैहिस्सलाम अपने मामूँ के घर आ गए। वह उन के आने से बहुत खुश हुए और कुछ रोज़ बाद अपनी बेटी का निकाह उन से कर दिया। जिस से चार बेटे रूबील, शमऊन, लावा और यहूदा पैदा हुए। इस के बाद याक़ूब अलैहिस्सलाम की बीवी इन्तिक़ाल कर गईं। फिर लायान की तीसरी बेटी आप के निकाह में आई। उन के इन्तिक़ाल के बाद लायान की चौथी बेटी राहील से निकाह हुआ। उन्हीं से यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और बिन यामीन पैदा हुए। जब याक़ूब अलैहिस्सलाम की उम्र चालीस साल की हो चुकी तो आप को नबुव्वत मिली और हुक्म मिला कि कनआन जाकर तब्लीग़ करो। लायान अपने दामाद की नबुव्वत पर बहुत खुश हुए और याक़ूब

अलैहिस्सलाम, उन की बीवी राहील और सारी औलाद को रुख़सत किया। रुख़सती के वक़्त पांच सौ बकरियां, पांच सौ बैल, पांच सौ ऊंट, पांच सौ ख़च्चर जहेज़ में दिये। बहुत से गुलाम, बहुत से जोड़े और बहुत सा रुपया भी दिया। जब आप इस साज़ो सामान के साथ कनआन पहुंचे तो ऐस ने उन का इस्तक़बाल किया और उन की आमद पर बड़ी ख़ुशी मनाई और अर्ज़ किया कि मेरे लिये भी दुआ करें कि मेरी नस्ल में भी कोई पैग़म्बर हो। आप ने फ़रमाया कि तुम्हारी औलाद में अय्यूब और सिकन्दर ज़ुल क़रनैन होंगे। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम दो बरस के थे कि उन के भाई बिन यामीन पैदा हुए और उन की पैदाइश में उन की वालिदा राहील का इन्तिक़ाल हो गया। जब लायान ने यह वाक़िआ सुना तो उन्हों ने अपनी सब से छोटी बेटी का निकाह भी याक़ूब अलैहिस्सलाम के साथ कर दिया। इसी बेटी ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और बिन यामीन की परवरिश की। (तफ़सीरे नईमी)

३०२) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बाद हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम तक उन की औलाद कनआन ही में आबाद रही फिर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने भाइयों के हसद की वजह से बज़ाहिर ग़ुलाम बन कर मिस्र में तशरीफ़ लाए, यहाँ हक़ तआला ने उन को बड़ा उरूज अता फ़रमाया। जब कनआन में सख़्त क़हत पड़ा तब याक़ूब अलैहिस्सलाम और उन की सारी औलाद मिस्र में आ गए। इन सब को अल्लाह ने बढ़ावा दिया और चन्द सदियों में मिस्र में इन के लाखों आदमी आबाद हो गए और इसी अर्से में वहाँ बनी इस्राईल का बड़ा दबदबा रहा। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम वाला फ़िरऔन और उस के साथी मर खप गए और मुल्के मिस्र में बदनज़्मी पैदा हुई। वलीद इब्ने मुसअब जो यय्यिदुना मूसा अलैहिस्सलाम का फ़िरऔन है इस्फ़हान शहर का एक अत्तार था। जब उस पर बहुत क़र्ज़ हो गया तो इस्फ़हान से भाग कर शाम पहुंचा। लेकिन वहाँ मआश का कोई ज़रिया हाथ न आया तब वह रोज़ी की तलाश में मिस्र आगया। यहां उस ने देखा कि गांव में तरबूज़ बहुत सस्ते बिकते हैं और शहर में बहुत महंगे। दिल में सोचा कि यह नफ़ा देने वाली तिजारत है इस लिये उस ने गांव से बहुत सारे तरबूज़ ख़रीदे मगर जब शहर की तरफ़ चला तो रास्ते में चुंगी वालों ने कई जगह उस से मेहसूल वुसूल किया। बाज़ार आते आते उस के पास सिर्फ़ एक तरबूज़ बचा। बाक़ी के तरबूज़ मेहसूल में चले गए। वह समझ गया कि इस मुल्क में कोई शाही निज़ाम नहीं है। जो चाहे हाकिम बन कर माल हासिल करे। उस वक़्त मिस्र में कोई वबाई बीमारी फैली हुई थी, लोग मर रहे थे। वह क़ब्रस्तान में बैठ गया

और कहा मैं शाही अफ़सर हूँ, मुर्दों पर टैक्स लगा है, फी मुर्दा मुझे पांच दिरहम दो और दफ़्न करो। इस बहाने चन्द रोज़ में उस ने बहुत सा माल जमा कर लिया। इत्तिफ़ाक से एक रोज़ कोई बड़ा आदमी दफ़्न के वास्ते लाया गया। इस ने उन के वारिसों से भी रुपये मांगे। उन्हों ने इसे गिरफ़्तार करके बादशाह तक पहुंचा दिया और सारा वाकिआ बादशाह को बताया। बादशाह ने उस से पूछा कि तुझे किस ने इस जगह मुकर्रर किया है। वलीद ने कहा कि मैं ने आप तक पहुंचने का यह बहाना बनाया था। मैं आप को ख़बर करता हूँ कि आप के मुल्क में बड़ी बदनज़्मी फैली हुई है। मैं ने तीन माह के अर्से में जुल्म से इतना माल जमा कर लिया है तो दूसरे हाकिम क्या न करते होंगे। यह कह कर वह सारा माल बादशाह के कदमों में डाल दिया और कहा कि अगर आप इन्तिज़ाम मेरे सिपुर्द कर दें तो मैं आप का सारा मुल्क दुरुस्त कर दूं। बादशाह को बात पसन्द आई और उसे कोई मामूली ओहदा दे दिया। वलीद ने वह तरीका इख़्तियार किया कि बादशाह भी खुश रहा और रिआया भी। धीरे धीरे वह तमाम लशकर का अफ़सर बना दिया गया और मुल्क का इन्तिज़ाम अच्छा हो गया। जब मिस्र का बादशाह मरा तो रिआया ने वलीद को तख़्त पर बिठा दिया। उस ने तख़्त पर बैठते ही आम एलान किया कि लोग मुझे सज्दा करें। सब से पहले उस के वज़ीर हामान ने उसे सज्दा किया और फिर दूसरे अमीरों और सरदारों ने। वह रिआया से खुद को सज्दा कराता और दूर वालों के लिये अपने बुत बनवा कर भेजता ताकि वह उन्हें सज्दा करें। तमाम मिस्र वाले फ़िरऔन की पूजा में गिरफ़्तार हो गए, मगर बनी इस्राईल ने इस से इन्कार कर दिया। फ़िरऔन ने उन के सरदारों को बुला कर बहुत डराया धमकाया मगर उन्हों ने कहा हम तेरी इबादत नहीं कर सकते। सिर्फ़ रब की इबादत करेंगे, तू जो चाहे सो कर ले। फ़िरऔन गुस्से में आ गया और देगों में ज़ैतून का तेल और गंधक खौला कर बनी इस्राईल को डालना शुरू किया। बनी इस्राईल ने यह सब कुछ बरदाश्त कर लिया मगर रब की इताअत से मुंह न फेरा और न फ़िरऔन को सज्दा किया। जब बहुत से बनी इस्राईली जला दिये गए तब हामान ने फ़िरऔन से कहा कि इन को मोहलत दे और इन को दुनिया में ज़लील करके रख। तब उस ने जलाने से हाथ खींचा और इस्राईलियों पर सख़्तियां शुरू कर दीं। उसी ज़माने में फ़िरऔन ने ख़्वाब देखा कि बैतुल मकदिस की तरफ़ से एक आग आई जिस ने तमाम किब्तियों और फ़िरऔनियों को जला डाला मगर इस्राईलियों को कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा और फिर देखा कि बनी इस्राईल के मुहल्ले से एक बड़ा

अज़्दहा निकला जिस ने उस को तख़्त से नीचे डाल दिया। उस ने तअबीर बताने वालों को बुलाया और इस ख़्वाब की तअबीर पूछी। उन्हों ने कहा: ऐ फ़िरऔन, बनी इस्राईल में एक लड़का पैदा होगा जो तेरी हुकूमत के टुकड़े टुकड़े कर देगा। उस ने फ़ौरन शहर के कोतवाल को बुलाकर हुक्म दिया कि एक हज़ार सिपाही हथियार बन्द और एक हज़ार दाइयां बनी इस्राईल के मुहल्ले में मुक़र्रर कर दो कि जिस घर में लड़का पैदा हो उसे क़त्ल कर दिया जाए। चन्द साल में इस्राईल के बारा हज़ार बच्चे और एक रिवायत में है कि सत्तर हज़ार बच्चे क़त्ल करा दिये गए और नव्वे हज़ार हमल गिरा दिये गए। ख़ुदा की शान, बनी इस्राईल के बूढ़े भी जल्दी जल्दी मरने लगे। तब क़िब्तियों ने फ़िरऔन से दरख़्वास्त की कि बनी इस्राईल में मौत का बाज़ार गर्म है और उधर उन के बच्चे क़त्ल किये जा रहे हैं। अगर यही हाल रहा तो यह क़ौम फ़ना हो जाएगी, फिर हमें ख़िदमतगार कहाँ से मिलेंगे। तब फ़िरऔन ने हुक्म दिया अच्छा एक साल बच्चे क़त्ल किये जाएं और एक साल छोड़ दिये जाएं। रब की शान कि छोड़ने वाले साल में हज़रत हारून अलैहिस्सलाम पैदा हुए जो मूसा अलैहिस्सलाम के भाई थे और क़त्ल के साल में मूसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश हुई। (तफ़सीरे नईमी)

३०३) लावी बिन याकूब अलैहिस्सलाम की औलाद में हज़रत इमरान अपनी कौम के सरदार थे। उन की बीवी का नाम यूहानिज़ था। मूसा अलैहिस्सलाम उन्हीं के बेटे हैं। जब हज़रत यूहानिज़ हामिला हुई तो फ़िरऔन की दाइयां उन के घर में और सिपाही दरवाज़े पर आने लगे। जब विलादत का ज़माना करीब आया तो एक दाई उन के घर में ही रहने लगी। मूसा अलैहिस्सलाम रात के वक़्त पैदा हुए। फ़िरऔन की दाई उन को देख कर बे-इख़्तियार उन पर आशिक़ हो गई क्योंकि अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम को आम मेहबूबियत अता की थी। दाई ने उन की वालिदा से कहा कि किसी सूरत इन को क़त्ल होने से बचाओ। यह कह कर एक बकरी का बच्चा ज़िब्ह किया हुआ एक हांडी में डाल कर सिपाहियों से कहा कि इस घर में एक लड़का पैदा हुआ था, मैं ने इसे ज़िब्ह कर दिया है, देखो मैं इसे दफ़्न करने जंगल लिये जा रही हूँ। सिपाहियों ने उस पर एतिबार किया और आगे कोई जांच पड़ताल नहीं की। मूसा अलैहिस्सलाम अपने घर परवरिश पाते रहे। मगर नजूमियों ने फ़िरऔन को ख़बर दे दी थी कि बनी इस्राईल में वह बच्चा पैदा हो चुका है। फ़िरऔन इस ख़बर से सख़्त परेशान हो गया और कोतवाल को सख़्त तम्बीह की। कोतवाल ने सिपाहियों पर सख़्ती की। उन्हों ने

कहा हम ने बहुत कोशिश से उन के बच्चे क़त्ल किये मगर इमरान के लड़के को अपने हाथ से न मारा, सिर्फ़ दाई के कहने पर एतिबार कर लिया। कोतवाल ने कहा फ़ौरन उस घर की तलाशी लो और बिना हिचकिचाहट घर में घुस जाओ। सिपाही बेपर्दा हज़रत इमरान के घर में घुस आए। उस वक़्त मूसा अलैहिस्सलाम अपनी बड़ी बहन मरयम की गोद में थे। मरयम ने यह माजरा देख कर उन्हें एक भड़कते हुए तन्नूर में इस तरह डाल दिया कि सिपाहियों को ख़बर न हुई। मरयम ने ख़्याल किया कि अगर पुलिस ने बच्चा देख लिया तो उस के साथ साथ हम सब को क़त्ल कर डालेंगे। पुलिस ने घर भर की तलाशी ली, कुछ न पाकर वापस लौट गई। वालिदा ने मरयम से पूछा कि मूसा कहाँ हैं? उस ने सब माजरा कहा। माँ ग़म से तड़प गई। तन्नूर पर जाकर देखा कि आग के शोले निकल रहे हैं मगर मूसा अलैहिस्सलाम बदस्तूर अम्नो अमान में हैं। यह मूसा अलैहिस्सलाम का नबुव्वत के दावे से पहले का मोअजिज़ा ज़ाहिर हुआ। उस वक़्त उन की उम्र चालीस दिन की थी। वालिदा के दिल में यह ख़्याल आया कि इस बेटे की ज़िंदगी मुश्किल है। इस को किश्ती में रख कर दरियाए नील में बहा देना ही ज़्यादा बेहतर है। शायद कोई दूसरा शख़्स इन्हें उठा ले और परवरिश करे। घर के सब लोगों से मशवरा करके मुहल्ले के एक बढ़ई से जिस का नाम सानूम था, एक सन्दूक़चा लकड़ी का बनवाया और उस से अहद लिया कि यह बात किसी से न कहेगा। सानूम ने सन्दूक़चा बनाया। उधर फ़िरऔन की तरफ़ से एलान हुआ कि जो शख़्स हम को उस लड़के का पता दे जो बनी इस्राईल के घर पैदा हुआ है तो उस को बहुत इनआम दिया जाएगा। सानूम को लालच हुआ। ख़बर देने निकला, दरवाज़े पर पहुंचा कि ज़मीन में टख़्नों तक धंस गया और ग़ैबी आवाज़ कानों में आई कि अगर तू ने यह राज़ ज़ाहिर किया तो तुझे ज़मीन में धंसा दिया जाएगा। सानूम घबरा गया और सन्दूक़चा इमरान के मकान पर पहुंचाया और अर्ज़ किया कि मुझे इस पाकीज़ा फ़रज़न्द की सूरत दिखाओ। वालिदा ने उस को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़ियारत कराई। सानूम ने उन के क़दमे पाक पर आँखें मलीं और उन पर ईमान ले आया। चुनान्चे सब से पहला मोमिन यही है। फिर सानूम ने अपनी उजरत भी न ली। वालिदा माजिदा ने मूसा अलैहिस्सलाम को ग़ुस्ल दिया। उमदा कपड़े पहनाए, ख़ुश्बू लगाई और सन्दूक़चे में रख कर दरियाए नील पर रोती हुई ले गईं और ख़ुदा के हवाले कर दरिया में बहा दिया। दिल बहुत बेचैन हुआ मगर क़ुदरती तौर पर तस्कीन हुई कि यह बच्चा फिर मुझे ही मिलेगा। दरिया से एक नहर फ़िरऔन के बाग़

में जाती थी जिस का नाम ऐनुश शम्स था। यह सन्दूकचा उस नहर में दाख़िल होकर फ़िरऔन के बाग़ में पहुंचा। उस वक़्त फ़िरऔन बाग़ की सैर कर रहा था और उस की बीवी आसिया और दूसरे ख़ास लोग साथ थे। यह लोग उस सन्दूकचे को उठा कर फ़िरऔन के पास लाए। फ़िरऔन ने जब उसे खोला तो उस में एक निहायत हसीनो जमील लड़का पाया। बोला यह तो वही लड़का लगता है जिस की नजूमियों ने ख़बर दी थी। यह मेरा इक़बाल है कि यह ख़ुद बख़ुद मेरे पास आगया। इस को फ़ौरन क़त्ल कर दिया जाए। हज़रत आसिया आप का हुस्नो जमाल देख कर आप पर आशिक़ हो गईं और फ़िरऔन से बोलीं कि तू ने महज़ गुमान से हज़ारों बच्चे क़त्ल करा दिये, इस को क़त्ल न कर। यह बच्चा शायद किसी और जगह से आ रहा है, बनी इस्राईल का नहीं है। मेरे कोई बेटा नहीं है, मैं इस को बेटा बनाऊंगी। ख़ुदा ने मेरी गोद भर दी। फ़िरऔन ने यह बात मान ली। इधर मूसा अलैहिस्सलाम की बहन मरयम ने माँ को ख़बर दी कि भाई तो फ़िरऔन के पास पहुंच गए। माँ बेक़रार हो गई मगर रब की तरफ़ से इल्का हुआ कि घबराओ नहीं, तुम्हारा बच्चा तुम्हीं को मिलेगा। अब हज़रत आसिया ने शहर की दाइयां बुलवाईं जो कि उन को दूध पिलाएं। मूसा अलैहिस्सलाम ने किसी का दूध क़ुबूल न किया। मरयम भी वहाँ मौजूद थीं, कहने लगीं कि एक बहुत क़ाबिल दाई है जिस का दूध बहुत अच्छा है, इसी शहर में रहती है, कहो तो उसे बुला लाऊं। फ़िरऔन बोला फ़ौरन बुलाओ। वह अपनी वालिदा को ले गईं। मूसा अलैहिस्सलाम ने दूध पिया और उन की गोद में सो गए। फ़िरऔन ने एक अशरफ़ी रोज़ाना उजरत मुक़र्रर कर दी और कहा तुम इस बच्चे की परवरिश करो। क़ुदरत के क़ुरबान, फ़िरऔन ने जिस के डर से बारा हज़ार बच्चे क़त्ल कराए उस को ख़ुद ही परवरिश कर रहा है। हज़रत आसिया ने मूसा अलैहिस्सलाम के लिये सोने का गहवारा तय्यार कराया और नाज़ो नअम से उन की परवरिश की। इस मुद्दत के गुज़रने पर एक ख़च्चर भरा हुआ सोना और कई ऊंट लदे हुए दूसरे नफ़ीस तोहफ़े दे कर मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा मुअज़्ज़मा को रुख़सत किया। फिर हज़रत आसिया ने ख़ुद उन की परवरिश शुरू कर दी। फ़िरऔन उन से बहुत मुहब्बत करने लगा। (तफ़सीरे नईमी)

३०४) जिन दिनों हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फ़िरऔन के महल में परवरिश पा रहे थे उन दिनों फ़िरऔन ने आप के बहुत से मोजिज़े देखे। एक बार हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने मुर्ग़ से तस्बीह पढ़वाई। एक बार पके हुए मुर्ग़ को ज़िंदा फ़रमाया जिस से फ़िरऔन के दिल में आप की दहशत बैठ गई

मगर मुहब्बत के ग़ल्बे और अपनी बीवी की वजह से क़त्ल न करा सका। जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तक़रीबन जवान हुए तब आप का दिल बनी इस्राईल की तरफ़ झुकने लगा। आप उन्हीं से मेल जोल ज़्यादा रखते थे। फ़िरऔनियों को यह नागवार गुज़रता था मगर कुछ कह न सकते थे। जब आप २२ साल के हुए तब एक दिन बनी इस्राईल के सरदारों को अलग करके पूछा कि तुम फ़िरऔन की मुसीबत में कब से जकड़े हुए हो। उन्हों ने जवाब दिया कि एक लम्बे अर्से से। आप ने फ़रमाया कि यह तुम्हारे गुनाहों की शामत है। तुम नज़्र मानो और जब रब तआला तुम को उस से निजात दे तो तुम वह नज़्र पूरी करो। उन सब ने कहा क्या नज़्र मानें? आप ने कहा कि रब तआला की इताअत और फ़रमाँबरदारी। सब ने नज़्र मान ली। जब आप तीस बरस के हुए तो एक दिन एक क़िब्ती और इस्राईली में झगड़ा हो रहा था। क़िब्ती इस्राईली को लकड़ी का बोझ उठाने पर मजबूर कर रहा था, वह इन्कार करता था। इस्राईली ने आप को पुकाराः ऐ मूसा, मुझे इस ज़ालिम से निजात दिलाओ। आप ने क़िब्ती को ज़ुल्म से मना किया मगर वह बाज़ न आया। आप ने उस के एक मुक्का मारा जिस से वह मर गया। इस्राईली घबरा गया। फ़िरऔन को यह ख़बर पहुंची तो उस ने कहा मूसा ऐसा नहीं कर सकते। दूसरे दिन वह बनी इस्राईली दूसरे क़िब्ती से उलझा हुआ था। आप को देख कर फ़रियाद की। आप ने इस्राईली को झिड़का और चाहा कि उस से क़िब्ती को छुड़ा दें। इस्राईली समझा कि आज मुझे मार रहे हैं। वह चीख़ा कि ऐ मूसा कल तू ने क़िब्ती को मारा था क्या आज मुझे हलाक करना चाहता है? यह बात लोगों ने सुनी और फ़िरऔन के पास गवाही दी। क़िब्ती सरदारों ने फ़िरऔन से मांग की कि मूसा को हमारे हवाले कर दो ताकि हम उन से क़िब्ती का क़िसास लें। फ़िरऔन उन की बात मानने में चिकिचाया। उस मजलिस में एक शख़्स मौजूद था जिस का नाम हिज़क़ील था और वह चोरी छुपे ईमान ला चुका था। उस ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को ख़बर दी कि आप के क़त्ल के मशवरे हो रहे हैं, बेहतर है कि आप कहीं चले जाएं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बे-सरो सामानी की हालत में मदयन की तरफ़ रवाना हो गए और वहाँ हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के घर ठहर गए। उन की लड़की से, जिन का नामे पाक सफ़ूरा था, निकाह किया। दस साल वहाँ रहे फिर मिस्र की तरफ़ तशरीफ़ लाए। रास्ते में आप को नबुव्वत अता हुई और फिर चालीस साल तक मिस्र में फ़िरऔन के मुक़ाबले में मशग़ूल रहे और अल्लाह तआला का पैग़ाम लोगों तक पहुंचाते रहे। (तफ़सीरे नईमी)

३०५) जब मूसा अलैहिस्सलाम मदयन से मिस्र तशरीफ़ लाए और रास्ते में नबुव्वत और रिसालत से मुशर्रफ़ हुए तो चालीस साल तक यहाँ कियाम किया। इस बीच आप फ़िरऔन और फ़िरऔनियों से मुकाबला करते रहे और उन को बड़े बड़े मोअजिज़े दिखाते रहे कि वह ईमान ले आएं, मगर वह न लाए। तब आप ने अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ किया: ख़ुदाया, किसी सूरत बनी इस्राईल को क़िब्तियों के चंगुल से छुड़ा दे ताकि बेख़ौफ़ो ख़तर यह तेरी इबादत कर सकें। अल्लाह का हुक्म आया: तुम बनी इस्राईल को जमा करके रातों रात यहाँ से कूच कर जाओ। अगर फ़िरऔन तुम्हारे पीछे आएगा तो हलाक कर दिया जाएगा। तब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने छुपवां तमाम बनी इस्राईल को ख़बर कर दी। सारे इस्राईलियों ने एक जगह जमा होने का इरादा किया। फ़िरऔन को कुछ वहम हुआ, पूछा कि यह भीड़ कैसी है? इस्राईलियों ने कहा कि हमारे आशूरे के दिन करीब आ रहा है। आदम अलैहिस्सलाम इसी दिन पैदा हुए थे, यही हमारी ईद का दिन है। हम चाहते हैं कि सब शहर से बाहर जमा हो कर रब की इबादत करें और वहां ईद मनाएं। फ़िरऔन ख़ामोश हो गया। आम बनी इस्राईलियों ने क़िब्तियों से कीमती ज़ेवर और उमदा पोशाकें उधार मांग लीं और ईद के बहाने ख़ेमे और डेरे शहर से बाहर लगा दिये। यह वाक़िआ नवीं मुहर्रम जुमेरात के दिन हुआ। उस वक़्त हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्रे शरीफ़ अस्सी बरस थी और उन के भाई हारून की उम्र तिरासी बरस की थी। मुहर्रम की दसवीं शबे जुम्आ में उन सब ने साज़ो सामान के साथ कूच कर दिया। हारून अलैहिस्सलाम उन के आगे आगे थे, मूसा अलैहिस्सलाम पीछे। बनी इस्राईल की तादाद छः लाख सत्तर हज़ार थी। आगे चल कर यह लोग रास्ता भूल गए। मूसा अलैहिस्सलाम ने बुड्ढे लोगों से कहा कि यह रास्ता तुम्हारा देखा हुआ है, तुम्हें मिलता क्यों नहीं। उन्हों ने अर्ज़ किया कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने रहलत के वक़्त वसियत फ़रमाई थी कि जब मेरी कौम बनी इस्राईल मिस्र से जाए तो मेरा ताबूत क़ब्र से निकाल कर अपने साथ ले जाए और मेरे बुज़ुर्गों के जवार में मुझे दफ़्न करे। हम ने वह वसियत पूरी नहीं की इस लिये रास्ता भूल गए। आप ने पूछा कि उन की क़ब्रे मुबारक कहाँ है? सब ने कहा कि हमें पता नहीं। आप ने सारे लश्कर में मुनादी करा दी कि जिसे यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र मालूम हो वह बताए। एक बुढ़िया ने कहा मुझे मालूम है लेकिन आप मुझ से अहद करें कि जो मांगूं दिया जाएगा। आप कुछ हिचकिचाए। वही आई ऐ मूसा, इस से अहद कर लो और यह जो मांगे इसे दे दो। आप ने अहद फ़रमा लिया। बुढ़िया बोली कि मैं

चाहती हूँ कि जन्नत में मैं आप के साथ रहूँ। आप ने कुबूल फ़रमा लिया। बुढ़िया बोली कि उन की कब्र दरियाए नील में डूब चुकी है अगर फुलाँ जगह से पानी हटा कर ज़मीन खोदी जाए तो इस से आप का ताबूत निकल सकता है। आप ने हुक्म दिया। बनी इस्राईल ने फ़ौरन उस जगह से ताबूत निकाला। यह ताबूत संगे मरमर का एक सन्दूक़ था जिस में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का जसदे मुबारक था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने आप का ताबूत सब के आगे रखा। इस ताबूत की बरकत से रास्ता ज़ाहिर हुआ। अगर आप सीधे फ़िलिस्तीन का रास्ता इख़्तियार करते जो मिस्र से उत्तर पूर्व में था तो आप को यह दुशवारियां पेश न आतीं लेकिन अल्लाह की मर्ज़ी यही थी। लिहाज़ा आप मश्रिक़ी जानिब बहरे कुल्ज़ुम की तरफ़ रवाना हो गए। सुब्ह के वक़्त फ़िरऔन के जासूसों ने ख़बर दी कि कल जहाँ बनी इस्राईल जमा हुए थे वहाँ से रातों रात कूच कर गए हैं। फ़िरऔन के दिल में गुस्से की आग भड़क उठी। उस ने फ़ौरन हुक्म दिया कि तेज़ घोड़े और उमदा सवार जमा हों। रिवायत में है कि सत्तर हज़ार घुड़ सवार फ़ौज उस के लश्कर के आगे आगे थी और बाक़ी फ़ौज के मुताल्लिक़ कुछ पता नहीं लगता। तफ़सीरे रूहुल बयान में है कि सत्तर लाख घुड़ सवार फ़ौज थी। तफ़सीरे अज़ीज़ी में है कि उन में एक लाख तीर अन्दाज़, एक लाख नेज़े बाज़, एक लाख गुर्ज़ मारने वाले थे। फ़िरऔन ने इस लश्कर के साथ बहुत जल्द यह रास्ता तय कर लिया और दोपहर के क़रीब बनी इस्राईल को जा लिया। बनी इस्राईल फ़िरऔनी लश्कर को देख कर घबरा गए। मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ करने लगे कि बताओ हम कहाँ जाएं? आप ने फ़रमाया कि मायूस न हो, मेरे साथ मेरा रब है जो मुझे हिदायत देगा। वही आई कि ऐ मूसा, दरिया पर अपना असा मार कर कहो तू फट जा और हमें रास्ता दे। आप ने ऐसा ही किया। अल्लाह के हुक्म से तेज़ हवा चली जिस ने पानी को फाड़ कर उस में रास्ता बना दिया। दरिया में बारा रास्ते पैदा हो गए जिन के बीच पानी दीवारों की तरह खड़ा हो गया। आन की आन में सूरज ने ज़मीन को ख़ुश्क कर दिया और आप ने बनी इस्राईल को हुक्म दिया कि इन रास्तों में दाख़िल हो जाओ। यह लोग हिम्मत न करते थे कि कहीं हम डूब न जाएं। सब से पहले यूशअ अलैहिस्सलाम ने अपना घोड़ा डाला। उन के पीछे हज़रत हारून अलैहिस्सलाम ने। जब इस्राईलियों ने उन को गुज़रते देखा तो मजबूरन यह भी दरिया में चल दिये। उन के बारा कबीले थे। हर कबीला एक रास्ते में दाख़िल हुआ। सब के बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम दाख़िल हुए। उन के गिरोह ने कहा कि ऐ मूसा हमें ख़बर नहीं कि हमारे दूसरे गिरोह ज़िंदा

हैं या डूब गए। मूसा अलैहिस्सलाम ने पानी की दीवारों पर असा मारा जिस से उन में जाले की तरह रौशनदान बन गए और हर जमाअत इन झरोकों में से एक दूसरे को देखती बातें करते गुज़रने लगी। इतने में फ़िरऔनी लश्कर भी दरिया के दूसरे किनारे पर आ पहुंचा। फ़िरऔन ने देखा कि दरिया में रास्ते बने हुए हैं जिन में जा बजा पानी की दीवारें खड़ी हैं, दिल में हैरान हुआ मगर लश्कर वालों से कहा मेरे इक़बाल से दरिया ख़ुश्क हो गया ताकि मैं अपने भागे हुए गुलामों को ज़िंदा पकड़ सकूं। अगर यह इस्राईली डूब जाते तो मुझे गुलाम कहाँ से मिलते? हामान ने चुपके से कहा दरिया में क़दम न रखना वरना तेरी ख़ुदाई की क़लई खुल जाएगी। बहुत जल्द किश्तियां जमा कर और उन के ज़रिये दरिया पार कर। फ़िरऔन ने अपने घोड़े को रोक लिया। तभी हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम इन्सानी शक्ल में घोड़ी पर सवार फ़िरऔन के घोड़े के आगे नमूदार हुए और अपनी घोड़ी दरिया में डाल दी। फ़िरऔन का घोड़ा इस घोड़ी की बू पाकर उस के पीछे हो लिया। फ़िरऔन ने लाख रोका मगर घोड़ा न रुका और उस ख़ुश्क रास्ते में दाख़िल हो गया। जब लश्करियों ने फ़िरऔन को दरिया में दाख़िल होते देखा, वह भी हर तरफ़ से दाख़िल होने लगे। बनी इस्राईल में एक शख़्स था सामरी। उस ने देखा कि जिस जगह हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम की घोड़ी की टाप पड़ती है वहाँ सब्ज़ा उग आता है। वह समझ गया कि इस टाप के नीचे वाली मिट्टी में ज़िंदगी की तासीर है। उस ने थोड़ी मिट्टी अपने हाथ में उठा ली। उधर सारा फ़िरऔनी लश्कर बीच दरिया में आ गया। इधर बनी इस्राईल दरिया पार पहुंच कर यह तमाशा देखने लगे। जहाँ यह वाकिआ हुआ था वहाँ कुल्ज़म की चौड़ाई बहुत थोड़ी यानी सिर्फ़ चार फ़रसख़ थी इस लिये दूसरे किनारे से यहाँ के हालात अच्छी तरह नज़र आ रहे थे। जब सारा लश्कर दरिया में दाख़िल हो चुका तो अल्लह का हुक्म हुआ कि ऐ दरिया आपस में मिल जा। दरिया आपस में मिल गया और सारे फ़िरऔनी डूब गए। यह वाक़िआ दस मुहर्रम जुम्ए के दिन दोपहर के वक़्त हुआ। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने इस ख़ुशी में रोज़ा रखा। बनी इस्राईल के दिल में फ़िरऔन की ऐसी हैबत बैठी हुई थी कि उन्हें उस के डूबने का यक़ीन नहीं आया। तब दरिया ने उस की और चन्द लोगों की लाशें बाहर फेंक दीं ताकि बनी इस्राईल को फ़िरऔन के ख़त्म हो जाने का यक़ीन हो जाए। (तफ़सीरे नईमी)

३०६) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर फ़िरऔनियों में से केवल तीन ख़ुशनसीब ईमान लाए थे। हज़रत आसिया, फ़िरऔन की बीवी, हज़रत हिज़क़ील

जिन्हें मोमिन आले फ़िरऔन यानी फ़िरऔन की क़ौम का मोमिन कहते हैं और तीसरी मरयम बिन्ते नामूसा, जिन्होंने ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मज़ारे मुबारक का पता बताया था। (जलालैन व ख़ज़ाइनुल इर्फ़ान)

३०७) बनी इस्राईल मिस्र से चलते वक़्त क़िब्तियों से क़ीमती ज़ेवर मांग लाए थे मगर वह उन ज़ेवरात का इस्तेमाल नहीं कर सकेते थे क्योंकि उन की शरीअत में ग़नीमत के माल का इस्तेमाल जाइज़ न था बल्कि आग उसे जला जाती थे। बनी इस्राईल में एक सुनार था जिस का नाम यहया या मूसा बिन ज़फ़र था। क़बीलए बनी सामरी का फ़र्द था इस लिये उस को सामरी कहते थे। कुंवारी लड़की से पैदा यानी हरामी था। उस की माँ शर्म से उसे पहाड़ी ग़ार में छोड़ आई थी। रब तआला ने हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम के ज़रिये उस की परवरिश कराई मगर जवान होकर रहा काफ़िर और जादूगर। वह सोने के काम में बड़ी महारत रखता था। मुनाफ़िक़त में ईमान लाया था। उस के पास हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम की घोड़ी के सुम के नीचे की मिट्टी थी जो कि फ़िरऔनियों के डूब जाने के वक़्त दरियाए क़ुल्ज़ुम से उठा लाया था। जब बनी इस्राईल फ़िरऔनी फ़ौज से निजात पाकर दरियाए क़ुल्ज़ुम से निकले तो रास्ते में उन्हों ने एक क़ौम को गाय पूजते देखा था और मूसा अलैहिस्सलाम से कहा था कि हमारे लिये भी परवर्दिगार की सूरत बना दो ताकि उसे सामने रखकर हम इबादत कर लिया करें जिससे हमारा ध्यान न बटे। मूसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें डांट दिया था। सामरी ने पता लगा लिया था कि फ़िरऔनियों की सोहबत की वजह से बनी इस्राईल में बुत परस्ती का माद्दा मौजूद है अगर उन को बहकाया जाए तो वह आसानी से गुमराह हो जाएंगे। बनी इस्राईल ने नज़्र मानी थी कि अगर हम को रब तआला ने फ़िरऔन के चंगुल से निजात दी तो हम उस की इताअत करेंगे। जब उन्हें निजात मिल गई और फ़िरऔनियों की हलाकत के बाद वह मिस्र की तरफ़ लौटे तब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें वह नज़्र याद दिलाई। उन्हों ने कहा: हमें दिलो जान से यह बात मन्ज़ूर है लेकिन हमें रब के अहकाम की ख़बर नहीं, हम इताअत कैसे करें? मूसा अलैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया तब उन से फ़रमाया गया कि तुम कोहे तूर पर आना और वहाँ चालीस दिन एतिकाफ़ और इबादत करना, तब तुम से बिला वास्ता कलाम भी किया जाएगा और तुम्हें तौरात भी दी जाएगी। लिहाज़ा मूसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल से तीस दिन का वादा फ़रमा कर कोहे तूर की तरफ़ रवाना हुए और वहाँ पहुंच कर पहली ज़िल क़ुअदह से एतिकाफ़ शुरू किया। पहले तीस दिन तूरे सीना में

क़याम का हुक्म था। जब आप यह मीआद पूरी कर चुके और तीस रोज़े रख चुके और बारगाहे इलाही में तौरात लेने हाज़िर होने लगे तो इस ख़्याल से कि मैं ने बहुत रोज़ से मिस्वाक नहीं की है, शायद मुंह में बदबू हो, मिस्वाक कर ली। अल्लाह का हुक्म हुआ: ऐ मूसा तुम ने अपने मुंह से वह ख़ुश्बू दूर कर ली जो हमें मुश्क से भी ज़्यादा पसन्द है। लिहाज़ा दस रोज़े और रखो ताकि तुम्हारे मुंह में फिर वही ख़ुश्बू पैदा हो जाए। उधर तीस दिन गुज़रते ही इस्राईलियों में खलबली मच गई। उन्हों ने हज़रत हारून अलैहिस्सलाम से पूछा कि हम इन ज़ेवरात का क्या करें? आप ने फ़रमाया: एक गढ़े में डाल कर जला दो और उस की राख ज़मीन में दफ़्न कर दो। उधर सामरी ने इन लोगों से कहा: मूसा अलैहिस्सलाम तुम्हारी ही तरह के बशर हैं सिर्फ़ जादूई असा की वजह से यह करतब दिखाते हैं और तुम से बढ़ गए हैं। तुम वह सारा सोना मेरे हवाले कर दो, मैं तुम्हारे लिये उस से भी अजीबतर जादू बना दूँ जिस से तुम्हें मूसा की ज़रूरत बाक़ी न रहे। यह भी कहा कि मूसा वफ़ात पा गए हैं, अगर ज़िंदा होते तो अब तक आ गए होते। इस्राईलियों ने सारा सोना सामरी के हवाले कर दिया। उस ने जवाहिरात और याकूत अलग निकाल लिये और सोना गला कर एक निहायत ख़ूबसूरत बछड़ा बनाया और जवाहिरात व याकूत को उस के नाक, कान, आँख, ज़ानू और क़दमों पर निहायत क़रीने से जड़ दिया जिस से वह और भी दिलकश हो गया और जिब्रईल अलैहिस्सलाम की घोड़ी के सुमों के नीचे की ख़ाक उस बछड़े के मुंह में डाल दी जिस से उस में हरकत पैदा हो गई। कुछ लोगों ने कहा है कि उस की नाक में दो सूराख़ रखे थे जिन से होकर हवा गुज़रती थी और उस से आवाज़ पैदा होती थी लेकिन सही यह है कि यह आवाज़ ख़ाक की तासीर से पैदा होती थी। कुरआन फ़रमाता है कि ख़ुद सामरी बोला मैं ने जिब्रईल के आसार से मुट्ठी भर ख़ाक ले ली, वह बछड़े में डाल दी। उस ने इस्राईलियों से कहा देखो ख़ुदा इस बछड़े में समा गया है, मूसा इसे तूर पहाड़ पर ढूंड रहे हैं और यह हमारे पास आ गया है। इस्राईली इस बहकावे में आगए। सामरी ने एक बड़े से ख़ैमे में यह बछड़ा खड़ा किया और उस के आस पास बड़े शानदार फ़र्श बिछाए और ख़ैमे के सामने नौबत और चंग बजवाई, गीत गाने शुरू किए। इस्राईली मर्द और औरतें वहाँ जमा हो गए। कोई उस की इबादत करने लगा, कोई उस के सामने समाधी लगा कर बैठ गया। सिवाए हज़रत हारून अलैहिस्सलाम और उन के बारह हज़ार साथियों के बाक़ी सारे इस्राईली इस में मुब्तिला हो गए। उन के तीन गिरोह बन गए। एक वह जिन्हों ने बछड़े की पूजा की, दूसरे वह

जो हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के साथ दीन की तब्लीग़ में मशग़ूल हुए और लोगों को बछड़े की पूजा से रोकते रहे, तीसरे वह जो ख़ामोश रहे, न पूजा की और न इन्कार किया। पहला और तीसरा गिरोह इताब में आ गया और दूसरा गिरोह सलामत रहा। उधर मूसा अलैहिस्सलाम को दसवीं ज़िलहज्ज दोपहर के वक़्त तौरात अता हुई और रब तआला ने उन्हें ख़बर दी कि तुम्हारे पीछे तुम्हारी क़ौम ग़फ़लत में पड़ गई है। मूसा अलैहिस्सलाम यह सुन कर बहुत ग़मगीन हुए और वहाँ से बहुत जल्द वापस आए और अपनी क़ौम का हाल देखकर जलाल में आगए। गुस्से में तौरात शरीफ़ की तख़्तियाँ आप के हाथ से गिर गई या गिरा दीं और अपने बड़े भाई हारून को मारने लगे कि तुम ने बनी इस्राईल को शिर्क क्यों करने दिया। हज़रत हारून अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल की सरकशी और अपनी मअज़ूरी ज़ाहिर फ़रमाई कि मैं ने इन को बहुत रोका मगर यह न माने। तौरात शरीफ़ के कुल सात हिस्से थे, गिर जाने से छः ग़ायब हो गए और एक हिस्से में ज़रूरी मसाइल थे वह बाक़ी रह गया। वही बनी इस्राईल को मिला। फिर मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल से बाज़पुर्स की कि तुम ने यह क्या किया? उन्हों ने कहा हमें सामरी ने बहकाया। आप ने बनी इस्राईल को तौबा का हुक्म दिया और सामरी को बद दुआ दी और बछड़े को जलाकर उस की राख दरिया में डाल दी। कुछ इस्राईलियों को बछड़े से ऐसी मुहब्बत हो गई थी कि उन्हों ने तबर्रुक के लिये दरिया का पानी छुप कर पिया जिस में यह राख फेंकी गई थी जिस से उन के होंट काले पड़ गए और पेट फूल गए और उन की तौबा कबूल न हुई। (तफ़सीरे नईमी)

३०८) सामरी ने जो बछड़ा बनाया था उस का नाम यहमूत था। (तफ़सीरे इब्ने कसीर)

३०९) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दस साल हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की बकरियाँ चराईं, इन बकरियों की तादार बारा हज़ार बताई जाती है। (तफ़सीरे नईमी)

३१०) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बछड़ा पूजने वाले इस्राईलियों से फ़रमाया: तुम ज़ालिम हो चुके हो लिहाज़ा तौबा करो और अपनी जानों को क़त्ल के लिये पेश कर दो। उन्हों ने कहा कि हम रब के हुक्म पर राज़ी हैं। तब मुसा अलैहिस्सलाम ने उन से फ़रमाया: अपराधी बिना हथियार और बग़ैर ज़िरह और ख़ोद के बाहर आजाएं और अपने दरवाज़ों पर दो ज़ानू बैठ जाएं और अपने सर ज़ानुओं पर रख लें और तलवार अपनी गर्दनों पर लें, न कोई अपना ज़ानू बन्द खोले, न तड़पे, न हाथ पाँव मारे। अगर किसी ने आँख

खोल कर भी क़ातिल की तरफ़ देखा या उस की तलवार का वार अपने हाथ या पाँव पर रोका तो उस की तौबा कुबूल न होगी। जब यह सब लोग राज़ी हो गए तो मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत हारून अलैहिस्सलाम से फ़रमाया: उन बारह हज़ार आदमियों को हुक्म दें जो बछड़े की पूजा से मेहफ़ूज़ रहे थे कि नंगी तलवारें लेकर उन बंधे हुए आदमियों के पास जाएं और उन्हें क़त्ल करना शुरू करें। चुनान्चे इस पर फ़ौरन अमल किया गया। आप ने एक ऊंची जगह खड़े होकर आवाज़ दी: ऐ मुजरिम इस्राईलियो, तुम्हारे भाई तलवारें लेकर तुम्हें क़त्ल करने आ रहे हैं, अल्लाह से डरो और सब्र करो। जब क़ातिल मुजरिमों के पास पहुंचे तो मुहब्बत की वजह से उन के हाथ न उठे। मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया इन में हमारे भाई, भतीजे, बेटे, पोते, नवासे हैं, इन पर हमारे हाथ नहीं उठते। तब उन पर एक काला बादल छा गया जिस से सारे मैदान में अन्धेरा हो गया और कोई किसी को न देख सका। हुक्म हुआ जाओ अब क़त्ल करो। चुनान्चे एक दिन में और कुछ रिवायतों में है कि तीन दिन में सत्तर हज़ार आदमी क़त्ल हो गए। तब बनी इस्राईल के बच्चे और औरतें मूसा अलैहिस्सलाम के पास आकर शोर करने लगे कि ऐ मूसा हमारे रब से रहम की दरख़्वास्त करो। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत हारून अलैहिससलाम नंगे सर आजिज़ी करते हुए मैदान में आए और अर्ज़ किया: ऐ मौला, इस्राईली हलाक हुए जा रहे हैं, अब रहम फ़रमा। तब वह काला बादल हटा और हुक्म आया कि अब क़त्ल नन्द करो, सब की तौबा कुबूल हो गई, हम सब को जन्नत देंगे। (तफ़सीरे नईमी)

३११) बनी इस्राईल पर चौथाई माल की ज़कात वाजिब थी यानी रुपये में चार आने। उन के रात के छुपे हुए गुनाह सुब्ह दरवाज़े पर लिख दिये जाते थे जिस से वह सख़्त रुस्वा हो जाते थे। (तफ़सीरे नईमी)

३१२) जब सत्तर हज़ार बनी इस्राईली कफ़्फ़ारे में क़त्ल हो चुके तो मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का हुक्म हुआ कि तुम बचे हुए लोगों को लेकर इस गुनाह की मअज़िरत के लिये तूर पहाड़ पर हाज़िर हो और वहाँ यह लोग अपनी क़ौम की तरफ़ से माफ़ी चाहें क्योंकि यह वह जंगल है जहाँ मूसा रब से हमकलाम होते हैं। जंगल की बरकत से तौबा जल्द कुबूल होगी। चुनान्चे मूसा अलैहिस्सलाम ने उन में से सत्तर बेहतरीन आदमी चुने। जब यह लोग तूर पहाड़ की तरफ़ रवाना हुए तब उन्हों ने अर्ज़ की: ऐ मूसा हमें रब का कलाम सुनवा दो। आप ने दुआ फ़रमाई, रब ने कुबूल कर ली। जब कोहे तूर पर पहुंचे तो मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: तुम सब लोग नहा धोकर अपने

गुनाहों से तौबा करो, तीन तीन रोज़े रखो और तस्बीह व ज़िक्र में लगे रहो। जब आप पहाड़ पर पहुंचे तो इन लोगों को नीचे खड़ा किया और खुद ऊपर तशरीफ़ ले गए। उन्हों ने देखा कि एक नूरानी सुतून सफ़ेद बादल के रंग का नमूदार हुआ और आहिस्ता आहिस्ता फैलता गया यहाँ तक कि सारे पहाड़ को उस ने घेर लिया और मूसा अलैहिस्सलाम उस में घिर गए। फिर रब ने उन से कलाम फ़रमाया। यह लोग नीचे खड़े कलामे इलाही सुन रहे थे। उन्हों ने अर्ज़ किया कि यह सारी बातचीत सिर्फ़ मूसा से हो रही है, हम पर भी करम किया जाए और कोई बात हम से भी ख़िताब करके फ़रमाई जाए। यकायक नूर की तजल्ली कौंदी और फिर उन के कानों में एक आवाज़ आई: हम अल्लाह हैं, हमारे सिवा कोई मअबूद नहीं, हम मक्का वाले हैं, हम तुम्हें मिस्र से निकाल लेंगे, तुम हमारी ही इबादत करना और किसी की न करना। जब यह बादल साफ़ हो गया और मूसा अलैहिस्सलाम नीचे तशरीफ़ लाए तब आप ने पूछा: कहो रब का कलाम तुम ने सुना? वह बोले: सुना तो मगर क्या ख़बर कौन बोल रहा था, क्या ख़बर हम ने रब को देखा? यह सिर्फ़ आप फ़रमाते हैं कि बोलने वाला रब था, हम को यक़ीन नहीं आता। आप रब को साफ़ साफ़ शक्ल व सूरत में दिखा दें तो हम मान लेंगे। तब उन पर आसमानी आग सख़्त आवाज़ के साथ आई जिस से वह सब मुर्दा हो गए। एक दिन एक रात मुर्दा रहे। मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया: मौला, बनी इस्राईल को क्या जवाब दूंगा? वह कहेंगे तुम ने सत्तर हज़ार आदमी तो यहाँ क़त्ल करा दिये और इतने आदमी बाहर ले जाकर न मालूम किस तरह हलाक करा दिये, मौला मेरी बदनामी होगी। मैं तो इन को अपना गवाह बनाकर लाया था, यह क्या हो गया। खुदाया तू इन्हें ज़िंदा फ़रमा दे। उन की दुआ से यह तमाम लोग ज़िंदा हो गए और फिर मूसा अलैहिस्सलाम उन सब को लेकर वापस तशरीफ़ लाए। (तफ़सीरे नईमी)

३१३) जब मूसा अलैहिस्सलाम उन सत्तर आदमियों को ज़िंदा कराके मिस्र में ले गए तो सारे बनी इस्राईलियों को हुक्मे इलाही पहुंचाया कि मिस्र से रवाना होकर मुल्के शाम की तरफ़ चलो क्योंकि वह इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मदफ़न है और वहीं बैतुल मक़दिस भी है जिस पर एक ज़ालिम और सख़्त जाबिर कौम इमालिक़ा ने कब्ज़ा कर रखा है, उन से जिहाद करके इस मुल्क से उन को निकाल दो और वहीं आबाद हो जाओ जैसे कि तुम ने मिस्र को फ़िरऔनियों से पाक कर दिया। इस हुक्म में राज़ यह था कि बनी इस्राईल मिस्र में फ़िरऔन के ऐशो आराम देख चुके थे और अब सारे मिस्र के

मालिक हो चुके थे। अन्देशा था कि यह भी फ़िरऔनियों की तरह ऐशो आराम में पड़ कर अल्लाह की इबादत भूल जाएंगे। उधर फ़िरऔन कहा करता था कि मूसा और हारून सिर्फ़ यह चाहते हैं कि मुझे मिस्र से निकाल कर बनी इस्राईल को यहाँ का मालिक बनाएं। अब अगर इस्राईली वहाँ रहते तो दूसरे लोग कहते कि फ़िरऔन का ख़्याल सही था, सिर्फ़ मुल्क गीरी के ख़्याल से यह सब किया गया। इस लिये हुक्म दिया गया कि इस जगह को छोड़ दो और फ़ी सबीलिल्लाह जिहाद करके शाम की मुक़द्दस ज़मीन को दीन के देशमनों से ख़ाली करा लो। बनी इस्राईल मिस्र की ज़मीन से बहुत राज़ी थे क्योंकि यह इलाक़ा बिना मेहनत और मशक़्क़त के हाथ आ गया था इस लिये उन को वहाँ से निकलना बहुत ख़राब लगा। चारो नाचार रवाना तो हो गए मगर बात बात पर मूसा अलैहिस्सलाम से शिकायत करते थे और ज़बान दराज़ी करके उन को बहुत तंग करते थे। जब मिस्र और शाम के बीच बे आबो दाना और सख़्त गर्म मैदान में पहुंचे जिस का नाम तीह है और उन को ख़बर लगी कि जिस इमालिक़ा क़ौम से हम जंग करने जा रहे हैं वह सख़्त जंगजू और बहादुर है, उन के जिस्म तक़रीबन सात गज़ के हैं तो जंग से हिम्मत हार बैठे और मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि आप अपने रब के साथ उन से जंग करें, हम तो यहीं रहेंगे। अल्लाह ने उन को चालीस साल के लिये क़ैद कर दिया। यह तीह का मैदान सिर्फ़ बारह कोस में था लेकिन वह इस में ही हैरान और परेशान फिरे और यहाँ से न निकल सके। इसी लिये इस को तीह कहते हैं जिस के मानी हैं हैरानी। अब उन का इन्तिज़ाम यह किया गया कि दिन में हल्का बादल उन पर साया किये रहता और उन्हें गर्मी से मेहफ़ूज़ रखता और अन्धेरी रात में एक नूरी सुतून उतरता था जिस की रौशनी में अपना काम करते थे। सूरज निकलने से पहले निहायत लज़ीज़ हल्वा बरस जाता था यानी मन्न। जिस से हर शख़्स को रोज़ाना एक साअ यानी तक़रीबन चार सेर मिलता था जो कि उन को दिन भर के लिये काफ़ी होता था। जुम्ए के दिन दुगना बरसता था कि हफ़्ते के दिन भी काम आए। यह लोग मिठास से घबरा गए और नमकीन चीज़ की फ़रमाइश की। चुनान्चे रोज़ाना अस्र के बाद उन के लिये नफ़ीस कबाबों का इन्तिज़ाम किया गया यानी सल्वा लेकिन इस में एक पाबन्दी यह थी कि रोज़ का रोज़ खा लो, कल के लिये जमा न करो। बनी इस्राईल ने खाने की हविस में ज़ख़ीरा अन्दोज़ी शुरू कर दी जिस का अंजाम यह हुआ कि कबाब सड़ने लगे और उन की बू से लोगों को तकलीफ़ होने लगी और इस का आना बन्द हो गया। उस ज़माने में

इस्राईलियों के न बाल बढ़ते थे और न नाखुन ताकि हजामत की ज़रूरत न पड़े। और न कपड़े मैले होते थे न फटते थे कि धोबी या दर्ज़ी की ज़रूरत पड़े। जो बच्चे पैदा होते थे उन के जिस्म पर कुदरती लिबास होता था जो खाल की तरह जिस्म के साथ साथ बढ़ता था। (तफ़सीरे नईमी)

३१४) जिस पत्थर से बनी इस्राईल को पानी के चश्मे अता किया गए, यह वही पत्थर था जो मूसा अलैहिस्सलाम के कपड़े ले भागा था। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया था कि आप इसे किसी थैले में संभाल कर रखें, इस से मोअजिज़ात ज़ाहिर होंगे। कुछ ने फ़रमाया कि यह कोहे तूर का पत्थर था। कुछ फ़रमाते हैं कि यह पत्थर भी असा की तरह जन्नती था जिस को हज़रते आदम अलैहिस्सलाम अपने साथ जन्नत से लाए थे और नबियों में मुन्तकिल होता हुआ शुऐब अलैहिस्सलाम तक पहुंचा था और उन्हों ने असा के साथ मूसा अलैहिस्सलाम को यह पत्थर भी इनायत फ़रमाया था। यह पत्थर संगे मरमर था। वहब बिन मुनब्बिह का कौल है कि इस से आम पत्थर मुराद है यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जिस पत्थर पर अपना असा मारते उसी से पानी जारी हो जाता। तफ़सीरे अज़ीज़ी में है कि सय्यिदुना मूसा अलैहिस्सलाम ने पत्थर में बारह चोटें मारीं और हर चोट से एक चश्मा ज़ाहिर हुआ। हर जगह औरत का सा पिस्तान ज़ाहिर हो जाता जिस से पहले अर्क सा आता था, फिर बूंद बूंद टपकती, फिर धार बन्ध जाती। (तफ़सीरे नईमी)

३१५) यहूद लफ़्ज़ हूद से बना है जिस के मानी हैं तौबा करना, रुजूअ करना। क्योंकि उन्हों ने बछड़े की पूजा से बेमिस्ल और सख़्त तौबा की थी इस लिये उन्हें यहूदी कहा गया। या यह लफ़्ज़ यहूदा की निस्बत से है। यहूदा हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के बड़े बेटे थे। या हूद के मानी हैं हिलना और हरकत करना। चूंकि यह लोग तौरात शरीफ़ बहुत जोश से हिल हिल कर झूम झूम कर पढ़ते थे इस लिये इन का नाम यहूद हुआ। या हूद के मानी हैं रहबरी करना, मुख़्बिरी करना। यह बादशाहे वक़्त को नबियों की ख़बर देकर उन्हें क़त्ल कराते थे इस लिये यह ग़ज़बनाक लकब मिला। (तफ़सीरे नईमी)

३१६) तूर सुरियानी लफ़्ज़ है जिस के मानी हैं हरा भरा पहाड़। अब यह लफ़्ज़ उस पहाड़ के लिये ख़ास है जहाँ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपने रब से हम कलाम होते थे। (तफ़सीरे नईमी)

३१७) बनी इस्राईल में एक नेक आदमी था जिस का एक छोटा सा बेटा था उस ने एक बछिया बड़ी मुहब्बत से पाली थी। जब उस की मौत का वक़्त करीब आया तो उस बछिया को लेकर जंगल में पहुंचा औद दुआ की: ऐ

मौला, यह गाय तेरे सिपुर्द करता हूँ। जब मेरा बेटा जवान हो जाए तो इसे लेले। वह तो मर गया मगर उस की गाय जंगल में और उस का बेटा माँ के पास परवरिश पाता रहा। यह लड़का निहायत सआदतमन्द और फ़रमाँबरदार था। एक रोज़ उस की माँ ने कहा: तेरे बाप ने फुलाँ जंगल में एक बछिया खुदा के नाम पर रख छोड़ी है जो कि अब जवान हो गई होगी। उस में यह अलामतें हैं, जा और उसे पकड़ ला। लड़का गया और माँ की बताई हुई निशानियों से पहचान कर उसे पकड़ लाया। माँ ने कहा: इसे बाज़ार में ले जाकर तीन अशरफ़ियों में बेच दे मगर जब सौदा हो तो मुझ से इजाज़त ले लेना। यह लड़का गाय को बाज़ार में लाया। एक फ़रिश्ता ख़रीदार की सूरत में आया और क़ीमत पूछी। लड़के ने कहा: तीन अशरफ़ियाँ, मगर वालिदा की इजाज़त शर्त है। फ़रिश्ता बोला: छः अशरफ़ियाँ लेले मगर माँ से न पूछ। लड़का बोला: माँ से पूछे बिना नहीं बेचूंगा। लड़का अपनी माँ के पास आया और उसे सारा वाक़िआ कह सुनाया। माँ ने कहा कि जा छः में बेच दे मगर सौदा होने पर मुझ से पूछ लेना। लड़का बाज़ार आया। वही फ़रिश्ता फिर मिला कहने लगा बारह अशरफ़ियाँ लेले मगर माँ से न पूछ। लड़का न माना, घर आकर माँ से यह माजरा सुनाया। वह बड़ी अक़्लमन्द थी, कहने लगी कि शायद कोई फ़रिश्ता है जो तेरी आज़माइश के लिये उतरता है, अब अगर मिले तो उस से पूछ लेना कि हम गाय बेचें या न बेचें। लड़के ने यही किया। फ़रिश्ते ने जवाब दिया कि अपनी माँ से कहना इस को अभी रोके रहो, बहुत जल्द बनी इस्राईल को इस की ज़रूरत पड़ेगी। मूसा अलैहिस्सलाम इसे ख़रीदने आएं तो इस की क़ीमत यह मुक़र्रर करना कि इस की खाल को सोने से भर दिया जाए। लड़का गाय को घर ले आया। फिर यूँ हुआ कि बनी इस्राईल में एक शख़्स आबील नामी बड़ा मालदार था और लावलद था उस के चचाज़ाद भाई ने मीरास के लालाच में उस को क़त्ल करके दूसरी बस्ती के दरवाज़े पर डाल दिया और सुब्ह के वक़्त खुद उस के ख़ून का मुद्दई बन कर मूसा अलैहिस्सलाम की बारगाह में आया और उस बस्ती वालों पर ख़ून का दावा करके जान का बदला लेना चाहा। मूसा अलैहिस्सलाम ने उस मुहल्ले वालों से पूछा, उन्हों ने साफ़ इन्कार कर दिया और वहाँ के लोगों ने दरख़्वास्त की कि आप दुआ फ़रमाइये कि अल्लाह तआला हक़ीक़त ज़ाहिर फ़रमाए। आप ने दुआ की तब वहीये इलाही आई जिस का मज़मून आप ने उन लोगों को सुनाया कि रब का हुक्म है कि कोई गाय ज़िब्ह करके उस के गोश्त का एक टुकड़ा मरने वाले पर मारो जिस से वह ज़िंदा हो कर अपने क़ातिल का नाम

बता देगा। यह बात उन की समझ में न आई। वह कहने लगे कि आप हम से मज़ाक़ कर रहे हैं कि हम तो कहते हैं कि क़ातिल का पता लगाइये और आप कहते हैं कि गाय ज़िब्ह करो। इस जवाब का हमारे सवाल से क्या ताल्लुक़? इस्राईलियों को बहुत हैरत थी; इस लिये वह समझे कि हर गाय में मुर्दा ज़िंदा करने की तासीर नहीं है। यह तो कोई ख़ास गाय होगी। इस लिये वह गाय की निशानियों के बारे में पूछने लगे। मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: रब फ़रमा रहा है गाय से कोई ख़ास गाय मुराद नहीं है बल्कि दूध वाली यही आम गाय मुराद है। हुक्म में तो कोई मुक़र्रर न थी, जो चाहते ज़िब्ह कर लेते मगर अल्लाह के इल्म में निश्चित है कि वह गाय न तो बूढ़ी है न बिल्कुल जवान। बेकार नहीं है, काम काज के लाइक़ है। बनी इस्राईल की तसल्ली न हुई। उन्हों ने फिर मूसा अलैहिस्सलाम से सवाल किया कि अपने रब से पूछो कि हमें उस का रंग बता दे। तब वही आई कि वह पीले रंग की है। हज़रत वहब बिन मुनब्बिह फ़रमाते हैं ऐसी तेज़ पीली कि गोया उस में से सूरज की किरनें निकल रही हों। इसी लिये उस गाय का नाम मुज़्हबह था यानी ख़ूबसूरत सुनहरी। बनी इस्राईल को गाय की उम्र और रंगत बयान करने के बाद भी इत्मिनान न हुआ। अब उस की दूसरी विशेषताएं पूछने के लिये मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि रब से फिर दुआ करो कि वह हमें बता दे कि इस उम्र, रंगत और जमाल वाली बहुत सी गायों में से कौन सी ज़िब्ह करें। इस क़िस्म की गाय भी हम पर मुश्तबह है क्योंकि ऐसी सैंकड़ों गाएं मौजूद हैं और ज़िंदा करने की तासीर हर एक में नहीं हो सकती। ऐ मूसा, हम टालने के लिये यह सवाल नहीं कर रहे हैं। अगर अल्लाह ने चाहा तो उस गाय का पता लगा ही लेंगे और उसे ज़िब्ह करेंगे। तब मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: रब फ़रमाता है कि वह न तो ऐसी गिरी पड़ी गाय है जो हल जोतती या खेत को पानी देती हो और न उस में किसी तरह का ऐब है। सारे ऐबों से पाक है और उस का जिस्म बेदाग़ है। तब वह बोले: हाँ अब आप ने पूरी बात बताई है। फिर वह तलाश करते हुए उस लड़के के पास पहुंचे जिस के पास ऐसी गाय थी। हालांकि उस ज़माने में गाय की क़ीमत तीन दीनार थी मगर लड़के ने फ़रिश्ते के सिखाने पर यह क़ीमत तय की कि इस का चमड़ा सोने से भर दिया जाए और मूसा अलैहिस्सलाम की ज़मानत पर गाय बनी इस्राईल के हवाले की। ख़्याल रहे कि इस सवाल जवाब के सिलसिले में बनी इस्राईल को काफ़ी अर्सा लग गया फिर ऐसी गाय की तलाश में बहुत वक़्त गुज़रा। उस वक़्त तक मक़्तूल को दफ़्न नहीं किया गया। आख़िर बनी इस्राईल

ने बड़ी हीलो हुज्जत के बाद गाय को ज़िब्ह किया और रब के हुक्म के मुताबिक़ गाय के गोश्त का एक हिस्सा लाश पर मारा। मक़्तूल ने ज़िंदा हो कर अपना क़ातिल बता दिया और वह क़ातिल मीरास से भी महरूम हुआ और किसास में क़त्ल भी हुआ। (नुज़्हतुल क़ारी, मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ अमजदी)

३१८) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के ज़माने में जिन्नात से इमारतें बनवाने, कुंएं और नहरें खुदवाने, उमदा हौज़ और किले बनवाने का काम लिया जाता है। इसी तरह शयातीन और इन्सान मिले जुले रहते थे। चूंकि जिन्नात की ताक़त इन्सान से ज़्यादा है इस लिये वह इन्सानों को अजीब अजीब करतब दिखा कर उन्हें हैरान कर देते थे। इन्सान उन से पूछते कि तुम यह अजीब काम आख़िर कैसे कर लेते हो तो वह कहते कि फ़ुलाँ मंत्र और फ़ुलाँ टोटके के ज़ोर से। वह लोग उन मंत्रों और टोटकों को जिन में सैंकड़ों कुक्रिया और मुश्रिकाना बातें होती थीं, सीख लेते बल्कि लिख लेते थे। और जब इन्सान यह मंत्र पढ़ते तो दरपर्दा शैतान कोई अजीब काम कर देते थे जिस से इन्सान को यक़ीन हो जाए कि यह मंत्र बड़ी तासीर वाले हैं। यहाँ तक कि इन मंत्रों की किताबें तय्यार हो गईं। होते होते हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को ख़बर लगी। आप ने अपने वज़ीर आसिफ़ बिन करख़िया को हुक्म दिया कि शैतानों को जमा करके उन्हें इन्सानों से मुलाक़ात करने से रोक दो और वह तमाम किताबें सन्दुक़ में भर कर अपने तख़्त के नीचे दफ़्न करा दीं और हुक्म दिया कि जो कोई मंत्र या जादू करेगा उसे सख़्त सज़ा दी जाएगी। आप की वफ़ात के बाद शैतान यहूद के पास इन्सानी शक्ल में आया और बोलाः तुम्हें कुछ ख़बर भी है कि हज़रत सुलैमान को इतनी बड़ी बादशाहत किस तरह मिली? सिर्फ़ उस जादू से मिली जिस की किताबें उन के तख़्त के नीचे दफ़्न हैं। अगर तुम भी इन किताबों पर अमल करो तो उन्हीं की तरह बादशाह बन जाओगे। फिर क्या था, यहूद दौड़े और ज़मीन खोद कर किताबों का सन्दुक़ निकाला। उन में लिखे हुए मंत्रों पर अमल शुरू किया। चूंकि शैतान चाहते थे कि इन्सान हमारी पूजा करें। इन मंत्रों में बुत परस्ती शर्त थी। शैतानों से मदद मांगने के अल्फ़ाज़ जब यहूद पढ़ते तो शैतान चुपके से उन का काम कर देते। धीरे धीरे तक़रीबन सारी क़ौमे यहूद ने तौरात को छोड़ दिया और इन वाहियात बातों में फंस गए और उन में यह मशहूर हो गया कि सुलैमान अलैहिस्सलाम बादशाह न थे सिर्फ़ एक जादूगर थे। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़मानए पाक तक यही मशहूर रहा। क़ुरआने अज़ीम ने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम पर से यह इत्तिहाम दूर फ़रमाया। (तफ़सीरे नईमी)

३१९) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि जब मूसा अलैहिस्सलाम को तौरात की तख़्तियां मिलीं तो वह उठा न सके। हक़ तआला ने एक आयत को उठाने के लिये एक एक फ़रिश्ता मुक़र्रर किया, वह भी न उठा सके। फिर एक एक हर्फ़ के लिये एक एक फ़रिश्ता भेजा, उस से भी न उठ सका। जब इस किताब की अज़्मत ज़ाहिर हो गई तब इसे मूसा अलैहिस्सलाम के लिये हल्का कर दिया गया और वह उठा कर बनी इस्राईल के पास लाए। (तफ़सीरे नईमी)

३२०) ईसा अलैहिस्सलाम का इस्मे शरीफ़ यसूअ है जिस के मानी हैं मुबारक। इसी से लफ़्ज़ ईसा बना। यह लफ़्ज़ ईसा भी इब्रानी है और इन दोनों के मानी एक ही हैं। (तफ़सीरे नईमी)

३२१) मरयम के लफ़्ज़ी मानी हैं ख़ादिमा और आबिदा। चूंकि उन की वालिदा ने उन्हें बैतुल मक़दिस की ख़िदमत के लिये वक़्फ़ कर दिया था और आप बचपन ही से बड़ी इबादत गुज़ार थीं इस लिये इन का नाम मरयम हुआ। इन की ख़ुसूसियत यह है कि क़ुरआने करीम ने सात जगह अम्बियाए किराम के साथ इन का ज़िक्र फ़रमाया है। (तफ़सीरे नईमी)

३२२) मुफ़स्सिरीने किराम फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बीच चार हज़ार पैग़म्बर गुज़रे हैं जिन में बड़े बड़े पैग़म्बर हज़रत यूशअ, हज़रत इलियास, हज़रत अलयसअ, हज़रत शमुईल, हज़रत दाऊद, हज़रत सुलैमान, हज़रत मशइया, हज़रत अरमिया, हज़रत यूनुस, हज़रत उज़ैर, हज़रत हिज़्क़ील, हज़रत ज़करिया, हज़रत यहया, हज़रत शमऊन अलैहिमुस्सलाम हैं। यह सब हज़रात तौरात शरीफ़ के अहकामात की तब्लीग़ करते थे और इन की एक ही शरीअत थी। (तफ़सीरे नईमी)

३२३) हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को इर्क़ुन्निसा (साइटिका) की बीमारी थी। आप ने नज़्र मानी कि ऐ अल्लाह, अगर मुझे इस बीमारी से निजात मिले तो मैं अपनी मन पसन्द ग़िज़ा यानी ऊंट का गोश्त और दूध अपने ऊपर हराम कर लूंगा। रब तआला ने आप को शिफ़ अता फ़रमाई तो आप ने मन्नत पूरी करने के लिये यह दोनों ही चीज़ें हराम फ़रमा लीं। आप की वजह से आप की औलाद पर भी यह दोनों चीज़ें हराम हो गईं। (तफ़सीरे नईमी)

३२४) सय्यिदुना इब्राहीम अलैहिस्सलाम तारेह इब्ने नाहूर के बेटे हैं। आप का नाम इब्राहीम और लक़ब अबुस्सुफ़ियान है। आप का नसब यह है: इब्राहीम बिन तारेह बिन नाहूर बिन सारूअ बिन रऊ बिन ताबेअ बिन आबिर बिन शालेह बिन अरफ़ख़शज़ बिन साम बिन नूह बिन मालिक बिन मुतोशालेह बिन

इद्रीस बिन यारो बिन महलाईल बिन कनियान बिन अनूश बिन शीस बिन आदम अलैहिस्सलाम। (तफ़सीरे नईमी)

३२५) नबियों कि जमा होने के तीन मौके है, दो हो चुके, तीसरा होने वाला है। पहला इज्तिमाअ मीसाक़ के दिन हुआ जब अल्लाह तआला ने सारे रसूलों को जमा करके अपने मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने और उन की मदद करने का अहदो पैमान लिया था। दूसरा इज्तिमाअ मेअराज की रात बैतुल मक़दिस में हुआ जब सारे नबियों ने मिल कर हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ अदा की। तीसरा इज्तिमाअ वह है जो क़ियामत के दिन होगा। यह इज्तिमाअ काफ़िरों के ख़िलाफ़ गवाही लेने के लिये किया जाएगा। ख़्याल रहे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हज्जतुल वदाअ के मौके पर नबियों का इज्तिमाअ हुआ है मगर सारे नबियों का नहीं। (तफ़सीरे नईमी)

३२६) जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथियों ने ग़ैबी दस्तरख़्वान के लिये बहुत इसरार किया तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने टाट का लिबास पहना और रो रो कर दुआ मांगीः ऐ अल्लाह हमारे पालने वाले! हमारे ऊपर आसमान से दस्तरख़्वान उतार जो हमारे लिये ईद हो हमारे अगले पिछलों की और तेरी तरफ़ से निशानी और हमें रिज़्क़ दे और तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। चुनान्चे सुर्ख़ रंग का दस्तरख़्वान बादलों के साथ धीरे धीरे नीचे उतरा, यहाँ तक कि लोगों के बीच रख गया। पहले बीमार, फ़क़ीर, सफ़ेद दाग़ और कोढ़ वाले मरीज़ और अपाहिज बुलाए गए। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः बिस्मिल्लाह करके खाओ यह तुम्हारे लिये मुबारक है और इन्कार करने वालों के लिये बला है। पहले दिन ७३०० आदमियों ने खाया। तमाम बीमार तन्दुरुस्त हो गए और सारे फ़क़ीर मालदार हो गए। यह दस्तरख़्वान चालीस दिन तक लगातार या एक दिन आड़ करके आता रहा। फिर हज़रत रूहुल्लाह अलैहिस्सलाम पर वही आई कि अब इस से सिर्फ़ फ़क़ीर खाएं, कोई मालदार न खाए। जब यह एलान हुआ तो मालदार नाराज़ हो गए और बोले कि यह महज़ जादू है। यह इन्कार करने वाले ३३० आदमी थे। यह लोग रात को अपने बाल बच्चों में बिल्कुल ठीक सोए मगर सुबह उठे तो सुअर थे, रास्तों पर भागे भागे फिरते थे, गन्दगी और ग़िलाज़त खाते थे। जब लोगों ने उन का यह हाल देखा तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पास भागे भागे आए, बहुत रोए। यह सुअर भी आप के चारों तरफ़ जमा हो गए और रोते जाते थे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उन्हें नाम बनाम पुकारते थे, वह जवाब में सर हिलाते थे मगर कुछ कह नहीं सकते थे। तीन दिन निहायत ज़िल्लत और

ख़्वारी से जिये, चौथे दिन हलाक हो गए। उन में कोई औरत या बच्चा न था, सब मर्द थे। (तफ़सीरे नईमी)

३२७) अल्लाह तआला ने अपने चार बन्दों के लिये चार ईदें मुक़र्रर फ़रमाई। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ईद बुत शिकनी का दिन कि कुफ़्फ़ार अपनी ईद मनाने गए थे, आप ने यहाँ अपनी ईद मनाई। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ईद जादूगरों से मुक़ाबले का दिन था। फ़िरऔनियों ने अपनी मनानी चाही मगर ईद मनाई हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और मोमिन मुसाफ़िरों ने। तीसरी ईद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की जब उन की दुआ से आसमान से दस्तरख़्वान नाज़िल हुआ। चौथी ईद हुज़ूर मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत की ईद। यह तीन ईदें हैं। दो ईदें साल भर की यानी ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा। एक ईद हर हफ़्ते की यानी जुम्आ। मोमिन जन्नत में भी यह हफ़्ते वाली ईद मनाया करेंगे कि हर हफ़्ते में एक बार अल्लाह का दीदार हुआ करेगा। (तफ़सीरे नईमी)

३२८) नबियों के मोअजिज़े तीन तरह के होते हैं: एक वह जो नबी की ज़ात के साथ लाज़िम होते हैं, कभी उन से अलग नहीं होते जैसे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का हुस्न या दाऊद अलैहिस्सलाम की ख़ुश इल्हानी या हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिस्मे शरीफ़ का बेसाया और ख़ुश्बूदार होना। दूसरे वह जो नबियों के इख़्तियार में होते हैं, जब चाहें दिखा दें जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का असा जो आप के फेंकने पर साँप बन जाता था या यदे बैज़ा जो बग़ल में हाथ देने से चमकता था या जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मुर्दे ज़िंदा करना, बीमार अच्छे करना, तीसरे वह जिन में नबी के इख़्तियार को दख़ल नहीं, रब जब चाहे ज़ाहिर फ़रमा दे। हाँ उन की दुआ से यह मोअजिज़ात ज़ाहिर होते हैं जैसे हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की दुआ से आसमान से दस्तरख़्वान आया। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ से कुछ आयतें नाज़िल हुईं। (तफ़सीरे नईमी)

३२९) इब्ने मुन्ज़र ने सही सनद के साथ हज़रत सुलैमान इब्ने सरद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि जब नमरूद की आग हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर गुल्ज़ार हो गई तो आप का चचा आज़र बोला: यह मेरी बरकत से गुल्ज़ार हुई है। उस का यह कहना था कि एक शोअला उस पर पड़ा और वह वहीं राख का ढेर हो गया। (तफ़सीरे नईमी)

३३०) नमरूद बिन कनआन सारी दुनिया का बादशाह था। उस का पायए तख़्त बाबुल शहर था जो बग़दाद शरीफ़ और कूफ़ा के बीच वाक़े है। अब इसे

बेबीलोन कहते हैं और यह वीरान पड़ा हुआ है। नमरूद पहला बादशाह है जिस ने ताज पहना और लोगों को अपनी इबादत की दावत दी। उस के दरबार में बहुत से काहिन और ज्योतिषी रहते थे। एक रात नमरूद ने सपना देखा कि एक सितारा आसमान पर चमका और उस की चमक से सूरज की रौशनी भी मांद पड़ गई। वह इस सपने से घबरा गया, ज्योतिषियों से तअबीर पूछी। उन्हों ने कहाः तेरे शहर में इस साल एक लड़का पैदा होगा जो तेरी हलाकत और तेरे मुल्क की बरबादी का सबब होगा। नमरूद ने यह सुनते ही कहा कि उस बच्चे को ज़िंदा नहीं छोड़ूंगा। चुनान्चे उस ने यह हुक्म दिया कि मेरे इलाक़े में जितनी गर्भवती औरतें हैं उन पर सख़्त नज़र रखी जाए और अगर लड़का पैदा हो तो फ़ौरन क़त्ल कर दिया जाए। और आज से एक साल तक हमारे इलाक़े में कोई शख़्स अपनी बीवी के पास न जाए। इस हुक्म के वक़्त या तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की वालिदए माजिदा मतली या औफ़ी बिन्ते नम्र हामिला थीं और नमरूद की मुक़र्रर की हुई दाइयों ने जब आप की जांच की तो उन्हें गर्भ का पता ही न चला क्योंकि आप बहुत कमसिन थीं और आख़िर वक़्त तक आप का गर्भ ज़ाहिर न हो सका। या इत्तिफ़ाक़न किसी तदबीर से तारेह उन के पास पहुंचे और वह गर्भवती हो गईं। जब ज़चगी का वक़्त क़रीब आया तो आप पहाड़ों के बीच एक ग़ार में चली गईं। वहाँ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की पैदाइश हुई। आप उस ग़ार के मुंह पर पत्थर रख कर और बेटे को अल्लाह के हवाले करके चली आईं। दूसरे दिन जाकर देखा तो आप अपनी उंगलियां चूस रहे हैं जिन से दूध और शहद निकल रहा है। आप बहुत ख़ुश हुईं। फिर रोज़ाना इसी तरह जातीं और बेटे को देख आतीं। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम एक माह में इतना बढ़ते जितना दूसरे बच्चे एक साल में। आप पन्द्रह माह के हुए तो पन्द्रह साल के मालूम होते थे। आप ने इस उम्र शरीफ़ में अपनी वालिदा से पूछा कि मेरा रब (मुरब्बी) कौन है? वालिदा ने कहाः मैं। पूछा मेरी तरह तुम भी खाने पीने की हाजत रखती हो, इन्सानी ज़रूरतें तुम्हारे साथ लगी हुई हैं, तुम्हारा रब कौन है? फ़रमायाः तुम्हारे वालिद। आप ने पूछा कि अब्बा जान भी हाजत मन्द हैं उन्हें भी मुरब्बी चाहिये। उन का रब कौन है? कहाः नमरूद। (तारेह नमरूद के दरबार से तन्ख़्वाह पाते थे) पूछा नमरूद भी तो हम लोगों की तरह हज़ारों हाजतें रखने वाला इन्सान है, उस का रब कौन है? वालिदा ने कहाः चुप रहो। फिर तारेह से बोलीं: जिस फ़र्ज़न्द का नमरूद को डर है वह तुम्हारा यही बेटा है। इस ने आज मुझ से ऐसा हकीमाना सवाल किया है कि मैं तो क्या हमारी

सारी कौम जवाब नहीं दे सकती। तारेह बहुत खुश हुए। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम कई साल तक उस ग़ार में छुपे हुए परवरिश पाते रहे। सात बरस की उम्र में ग़ार से बाहर तशरीफ़ लाए और अपनी क़ौम को हिदायत की तब्लीग़ फ़रमाई। (तफ़सीरे सावी, रूहुल बयान, रूहुल मआनी वग़ैरा)

३३१) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का चचा आज़र बुतसाज़ भी था और बुत परस्त भी। वह तरह तरह के बुत बनाकर बेचता था। जनाब ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम ने एक बार उस के बुत को हाथ में उठाया और बाज़ार में एलान किया: कौन ख़रीदता है वह चीज़ जो सिर्फ़ नुक़्सान ही देती है, नफ़ा बिल्कुल नहीं देती। अगर किसी को अपनी दुनिया और दीन दोनों ही बरबाद करने हों तो यह ख़रीद लो। इस एलान पर किसी ने नहीं ख़रीदा। आप उन बुतों को लेकर नहर पर तशरीफ़ ले गए और उन के मुंह को पानी में डुबो कर बोले: ऐ बुतो, पानी पी लो। यह सब काम क़ौम के सामने किये। इस पर आज़र और क़ौम के लोग जल गए। कहने लगे: इब्राहीम अगर तुम अपनी हरकतों से बाज़ न आए तो यह तुम को बहुत नुक़्सान पहुंचाएंगे। तुम इन की ताक़त से बेख़बर हो। यह बुत हमारे दादा के मअबूद हैं और इनकी मदद से दुनिया क़ायम है। अल्लाह तआला इन की मदद के बिना कुछ भी नहीं कर सकता। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया: अल्लाह तआला मुझे पहले ही हिदायत दे चुका है। कान खोल कर सुन लो कि मैं तुम्हारे बुतों, तुम्हारे नमरूद, तुम्हारी कुव्वत और ताक़त से बिल्कुल नहीं डरता, तुम सब मिल कर मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मेरे रब का इल्म हर चीज़ को घेरे है। मेरा रब ही मुझे नुक़्सान पहुंचाना चाहे तो पहुंच सकता है वरना नहीं। (ख़ाज़िन, रूहुल मआनी)

३३२) हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की विलादत के वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्रे शरीफ़ १२० साल हो चुकी थी और आप की बीबी साहिबा बूढ़ी होने के अलावा बांझ भी थीं। (रूहुल मआनी)

३३३) इस्हाक़ इब्रानी ज़बान का लफ़्ज़ है जिस के मानी हैं अरबी में ज़ुहाक यानी हंसमुख, शादमाँ, ख़ुशो ख़ुर्रम। (रूहुल मआनी)

३३४) हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की उम्र १८० साल की हुई। (रूहुल मआनी)

३३५) हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की उम्र १४७ साल की हुई। (रूहुल मआनी)

३३६) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का नाम अब्दुल ग़फ़्फ़ार इब्ने लमक इब्ने

मुतोशलख़ इब्ने इद्रीस अलैहिस्सलाम है। आप की विलादत हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से ११०० बरस बाद हुई। आप ने अपनी क़ौम को ६५० बरस तब्लीग़ फ़रमाई। तूफ़ान के बाद आप साठ साल ज़िंदा रहे। आप के और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बीच लगभग हज़ार साल का फ़ासला है। (तफ़सीर सावी)

३३७) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से २१०० बरस बाद पैदा हुए। (तफ़सीर सावी)

३३८) हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम हज़रत यहया अलैहिस्सलाम के वालिदे माजिद हैं। आप का इस्मे शरीफ़ ज़करिया बिन अज़िन बिन बरकिया है, आप हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की औलाद से हैं। आप और आप के बेटे हज़रत यहया दोनों शहीद किये गए। हज़रत यहया एक दिन पहले और हज़रत ज़करिया एक दिन बाद। (ख़ाज़िन, रूहुल मआनी)

३३९) हज़रत यसअ अलैहिस्सलाम के हालाते ज़िंदगी और जन्मस्थान के बारे में मालूम नहीं हो सका है। सिर्फ़ इतनी जानकारी है कि आप यसअ बिन अफ़तूब बिन अजूज़ हैं। यसअ अजमी नाम है। कुछ लोगों ने कहा है कि यूशअ से बना है। (रूहुल बयान)

३४०) हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम भी उन नबियों में से हैं जिन का नसब और ज़माना और पूरे हालाते ज़िंदगी नहीं मालूम हो सके। सिर्फ़ इतना मालूम है कि आप यूनुस बिन मित्ती हैं। मित्ती आप के वालिद का नाम है या वालिदा का। कुछ ने फ़रमाया है कि आप शुऐब अलैहिस्सलाम के हम ज़माना यानी समकालीन हैं। मूसिल के इलाक़े नैनवा बस्ती के नबी थे। हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की औलाद से हैं। (रूहुल बयान, क़ससुल अम्बिया वग़ैरा)

३४१) हज़रत लूत अलैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे थे। आप हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत सारा के साथ शाम की तरफ़ हिजरत कर गए थे। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ से आप मक़ामे सदूम के नबी बनाए गए। आप की क़ौम से लिवातत यानी लौंडेबाज़ी जैसी बेहयाई की शुरूआत हुई। (रूहुल बयान, क़ससुल अम्बिया)

३४२) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुक़ाबला करने के लिये फ़िरऔन ने अपनी सल्तनत के बड़े बडे जादूगर बुलवाए थे। उन की गिनती में इख़्तिलाफ़ है। अबू बरज़ह कहते हैं कि सत्तर हज़ार थे। मुहम्मद इब्ने कअब का कहना है कि अस्सी हज़ार थे। कुछ ने बारह हज़ार कहा है। उन के चार सरदार थे: साबूर, आज़दरा, हुत हुत और मुसफ़ी। (तफ़सीरे नईमी)

३४३) फ़िरऔनी लोगों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चार मोअजिज़े देखे: असा, यदे बैज़ा, सख़्त कहत साली और फलों में कमी। मगर वह ईमान न लाए बल्कि सरकशी से मूसा अलैहिस्सलाम से कहने लगे आप हमें अपने जादू के क़ाबू में करने के लिये कितने ही करतब क्यों न दिखाएं, हम अपने दीन में ऐसे पक्के हैं कि आप पर ईमान नहीं लाएंगे। तब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ की कि ऐ रब! फ़िरऔन सख़्त सरकश बाग़ी दुशमन है, उस की क़ौमें ने बदअहदी की है तू इन पर ऐसे अज़ाब भेज जो इन के लिये सज़ा हों और मेरी क़ौम के लिये नसीहत और बाद वालों के लिये इबरत। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ क़ुबूल हुई। सब से पहले फ़िरऔनियों पर पानी का अज़ाब (तूफ़ान) आया जो फ़िरऔनियों के घरों में तक़रीबन आदमी के क़द के बराबर भर गया। खेतों बाग़ों में पानी ही पानी खड़ा हो गया। हर छोटे बड़े फ़िरऔनी के गले गले पहुंच गया। हफ़्ते से हफ़्ते तक रहा। कोई फ़िरऔनी बैठ न सका जो बैठा या नींद में झोंका खाकर गिरा वह डूब गया। इस्राईलियों के घर मेहफ़ूज़ रहे। आख़िर फ़िरऔन और उस की क़ौम ने मूसा अलैहिस्सलाम की बहुत ख़ुशामद की, ईमान लाने और बनी इस्राईल को आज़ादी देने का वादा किया। मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ फ़रमाई जिस से तूफ़ान दूर हुआ। अल्लाह की शान कि पानी ख़ुश्क होने के बाद उन के बाग़ों में फल और खेतों में दाने पहले से कहीं ज़्यादा पैदा हुए। इस पर वह बोले कि यह अज़ाब न था बल्कि रहमत थी जिस ने हमारे खेतों और बाग़ों में खाद का काम दिया। हम तो ईमान नहीं लाते। एक माह या एक साल या कुछ कम या ज़्यादा अर्सा वह लोग आराम से रहे फिर उन पर टिड्डियों का अज़ाब भेजा गया। पहले टिड्डियाँ उन पर बादलों की तरह छा गईं। धूप ख़त्म हो गई। फिर सारे मिस्र और आस पास के इलाक़े पर गिरीं तो एक गज़ ऊंचा फ़र्श लग गया। खेतियां, बाग़, मकानों के किवाड़ बल्कि मकानों की छतें, फ़िरऔनियों के कपड़े बल्कि उन के सारे सामान, यहाँ तक कि किवाड़ों की कीलें भी खा गईं। मगर बनी इस्राईल उन से बिल्कुल मेहफ़ूज़ रहे। आख़िरकार फ़िरऔनी लोग हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में फिर आजिज़ी करने आए। ईमान और तक़वा अपनाने और ज़ुल्म ख़त्म करने का वादा किया। मूसा अलैहिस्सलाम जंगल में तशरीफ़ ले गए। असा शरीफ़ से चारों तरफ़ इशारा किया। टिड्डियां फ़ौरन चौतरफ़ा फट गईं। जहाँ से आई थीं वहीं चली गईं। सारा इलाक़ा साफ़ हो गया। जब फ़िरऔनी अपने खेतों और बाग़ों में पहुंचे तो देखा कि कुछ दाने और फल बाक़ी थे, बोले यह फल और दाने हम को काफ़ी हैं,

हम ईमान नहीं लाते। पहले से भी ज़्यादा सरकश और बदअमल हो गए। यह अज़ाब भी सात दिन तक रहा। एक माह या एक साल या कुछ कम या ज़्यादा आराम से रहे फिर रब तआला ने उन पर जुओं का अज़ाब भेजा तो बुरा हाल हो गया। इस तरह कि मूसा अलैहिस्सलाम एक रेत के टीले पर गए और वहाँ अपना असा मारा तो रेत के ज़र्रे जुओं की शक्ल में बदल गए और फ़िरऔनियों में फैल गए। उन के खेत, बाग़, खाल बाल सब चाट गए। अगर फ़िरऔनी कुर्ता झाड़ता तो दो चार सेर जुएं झड़ पड़तीं और फिर उतनी की उतनी ही। फ़िरऔनियों के सर, मूंछें, भवें, हाथ पाँव के बाल तक चाट गईं। खाना पकाते तो देगची जुओं से भर जाती, आटा जुओं से पुर हो जाता। यह अज़ाब भी सात दिन रहा। मगर इस्राईली मेहफ़ूज़ रहे। आख़िरकार फ़िरऔनी चीख़े चिल्लाए, रोए गिड़गिड़ाए, ईमान और तक़्वा का वादा किया। आख़िर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को रहम आ गया, दुआ फ़रमाई। फ़िरऔनियों को इस अज़ाब से निजात मिली। निजात पाते ही बोलेः वाक़ई मूसा बड़े जादूगर हैं कि उन्हों ने लाठी से रेत के ज़र्रों को जूं बना दिया। ईमान न लाए, पहले से भी ज़्यादा ख़बीस बन गए। एक माह या एक साल आराम से गुज़रा फिर उन पर मेंडकों का अज़ाब उतरा। उन के घरों, कुंवों, खाने पानी में मेंडक ही मेंडक थे। जहाँ फ़िरऔनी बैठता उस के चारों तरफ़ एक एक गज़ ऊंचे मेंडक होते। बात करने के लिये मुंह खोलता तो मेंडक उस के मुंह में दाख़िल हो जाता। खाने के लिये मुंह खोलता तो लुक़्मा पीछे मेंडक पहले मुंह में पहुंच जाता। पकती हांडियों, पानी से भरे घड़ों में मेंडक ही मेंडक थे। आख़िरकार फ़िरऔनी रोते पीटते मूसा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। बोलेः ऐ मूसा इस बार तो हम मर गए। दुआ करो कि यह अज़ाब दूर हो। आप ने दुआ की तो रब ने एक ग़ैबी हवा भेजी जिस ने सारे मेंडकों को दरिया में फेंक दिया। अज़ाब दूर होते ही वह लोग फिर अपने वादे से फिर गए। पहले से भी ज़्यादा सरकशी पर उतर आए। एक माह या एक साल बाद आख़िरी अज़ाब ख़ून का आया। यह पिछले अज़ाबों से भी ज़्यादा सख़्त था। पहले दरियाए नील का पानी ताज़ा ख़ालिस ख़ून बना फिर कुंवों, घरों, लोटे, गिलास वग़ैरा का पानी ख़ून बना फिर हांडी का शोरबा ख़ून। अब फ़िरऔनी प्यासे मरने लगे। दरख़्तों के पत्ते चबाए मगर उन से भी ख़ून निकला। इस्राईली इस अज़ाब से भी मेहफ़ूज़ रहे। फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि एक रकाबी में क़िब्ती और इस्राईली एक साथ खाना खाएं, तो यह हालत हुई कि क़िब्ती की जानिब ख़ून और इस्राईली की तरफ़ शोरबा। फिर फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि

इस्राईली अपने मुंह में पानी और शोरबा लेकर क़िब्ती के मुंह में उस की कुल्ली कर दे। तब यह हुआ कि इस्राईली के मुंह में पानी और शोरबा रहता और क़िब्ती के मुंह में पहुंचते ही ख़ून हो जाता। अल्लाह तआला ने क़िब्तियों को इतना ज़लील किया कि उन के मुंह में इस्राईलियों से कुल्ली तक करा दी। इस से पहले वह इस्राईलियों के साथ खाना तो क्या उन को अपने साथ बिठाना भी गवारा नहीं करते थे मगर थे बदनसीब। पांच अज़ाबों के बाद भी उन की आँखें न खुलीं। बहुत अर्से बाद इस क़ौम को दरियाए कुल्ज़म में डुबो दिया गया। (तफ़सीरे नईमी)

३४४) यहूद को हुक्म दिया गया था कि जुमए को अपनी इबादतों के लिये ख़ास कर लें, उस दिन कोई दुनियावी काम न करें। उन्हों ने जुमए के बदले सनीचर को इस काम के लिये चुना तो उस का नाम यौमुस्सब्त रखा गया यानी यहूद के तमाम दीनी और दुनियावी भलाइयों से कट जाने का दिन। (तफ़सीरे नईमी)

३४५) अल्लाह तआला ने नस्ले आदम से अपने रब होने का जो इक़रार अज़ल में कराया था उस के बारे में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि यह अहदो पैमान अरफ़ात पहाड़ से मिले हुए नोअमान मैदान में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा क़ुबूल हो जाने के बाद लिया गया। कुछ ने फ़रमाया सरन्दीप मक़ाम में जहाँ आदम अलैहिस्सलाम उतारे गए थे। इमाम कल्बी कहते हैं कि मक्कए मुअज़्ज़मा और ताइफ़ के बीच। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत में लिया गया, आप के ज़मीन पर आने से पहले। (इमाम क़ुत्बुद्दीन शअरानी)

३४६) फ़िरऔन की बीवी हज़रत आसिया मोमिन ख़ातून थीं। यही वह नेकबख़्त ख़ातून हैं जिन्हों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को ताबूत में देखकर उन्हें समुन्द्र से निकलवाया और उन की परवरिश की। जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जादूगरों पर ग़ालिब आ गए तो उन पर ईमान ले आईं। जब फ़िरऔन को मालूम हुआ तो उस ज़ालिम ने इन के दोनों हाथ पावों में कीलें ठोंक कर धूप में डाल दिया और एक भारी चट्टान उन के ऊपर रखने का हुक्म दिया। जब लोग चट्टान लेकर इन के क़रीब आए तो इन्हों ने अल्लाह तआला से यह दुआ की: ऐ अल्लाह मेरे लिये जन्नत में एक महल बना। इन की दुआ क़ुबूल हुई और इन्हें अल्लाह तआला ने इन का जन्नती घर दिखा दिया जो सफ़ेद मोती का था। फिर इन की रूह को अल्लाह तआला ने निकाल लिया। जब इन पर चट्टान डाली गई तो यह ज़िंदा न थीं, इस लिये इन्हें कोई

तकलीफ़ न पहुंची। (नुज्हतुल क़ारी)

३४७) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ एक यहूदी सफ़र कर रहा था। आप के पास तीन रोटियाँ थीं। आप ने यहूदी के सिपुर्द कर दीं और ख़ुद किसी काम के लिये तशरीफ़ ले गए। वापस लौट कर रोटियाँ मांगीं, उस ने दो हाज़िर कीं क्योंकि एक छुपा कर खा चुका था। आप ने पूछा कि तीसरी रोटी कहाँ गई? उस ने कहा: आप ने मुझे दो ही रोटियाँ दी थीं। हर चन्द कोशिश की मगर उस ने इक़रार न किया और बेशुमार झूटी क़स्में खा गया। आप कुछ दूर चले थे कि सोने की तीन ईंटें पड़ी हुई मिलीं। आप ने फ़रमाया: इन में एक ईट तेरी और एक मेरी और एक रोटी खाने वाले की। तब वह बोला कि हज़रत रोटी मैं ने ही खाई थी। आप वह तीनों ईंटें उस के हवाले करके चल दिये। वह उन की हिफ़ाज़त के वास्ते वहीं बैठ गया। तीन चोरों ने उसे घेरा और हलाक कर दिया। उन में से दो उस की निगरानी के लिये बैठे और एक चोर को बाज़ार खाना ख़रीदने भेजा। उस के पीछे उन दोनों ने मशवारा किया कि जब तीसरा आदमी बाज़ार से लौटे तो उसे क़त्ल कर दो ताकि उस का हिस्सा भी आपस में बांट सकें। उस तीसरे ने ख़ुद तो खा लिया और उन दोनों के खाने में ज़हर मिला दिया ताकि सारा सोना उस के हाथ आए। जब लौटा तो उन दोनों ने उसे ख़त्म कर दिया। फिर ख़ुद भी ज़हरीला खाना खा कर मर गए। दूसरे दिन ईसा अलैहिस्सलाम का वहाँ से गुज़र हुआ तो देखा कि सोना तो वैसे ही पड़ा हुआ है और उस के पास चार आदमी हमेशा की नींद सो रहे हैं। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

३४८) हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम तक लोग आम तौर से मोमिन ही रहे अगर्चे क़ाबील गुमराह हुआ और कुछ लोग उस के साथी बन गए। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने में कुफ़्र बहुत फैल चुका था और आप उन की इस्लाह के लिये भेजे गए थे, इस लिये कहा जाता है कि आप ही पहले नबी हैं जो काफ़िरों की हिदायत के लिये आए थे। अगले पैग़म्बर मोमिनों ही को हिदायत पर रखने के लिये आए थे। फिर तूफ़ाने नूह में सारे काफ़िर डुबो दिये गए, सिर्फ़ किश्ती वाले मुसलमान बचे और अब फिर दुनिया में इस्लाम ही रह गया। हूद अलैहिस्सलाम तक यही हालत रही फिर यह हाल रहा कि कोई पैग़म्बर तशरीफ़ लाकर हिदायत फ़रमाता और उस के पर्दा फ़रमाने के बाद फिर कुफ़्र फैल जाता। फिर दूसरे पैग़म्बर आकर इस्लाह कर देते। मूसा अलैहिस्सलाम पहले साहबे शरीअत पैग़म्बर हुए जिन के बहुत अर्से तक लोग हिदायत पर क़ायम रहे और दूसरे बड़े बड़े पैग़म्बर भी आते रहे। फिर लोगों

ने उन की किताबों में मिलौनी कर दी और उन की तालीम बिगाड़ दी, यहाँ तक कि दुनिया में अन्धेरा ही अन्धेरा छा गया। तब हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम की दुआ और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की बशारत बन कर हमारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातिमुन्नबीय्यीन की हैसियत से तशरीफ़ लाए। उन की शरीअत ने सारी शरीअतों को मन्सूख़ कर दिया। (तफ़सीरे रूहुल मआनी)

३४९) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद हज़रत यूशअ अलैहिस्सलाम, उन के बाद हज़रत कालिब बिन यूक़न्ना अलैहिस्सलाम, उन के बाद हज़रत हिज़कील अलैहिस्सलाम ख़लीफ़ा हुए। यह हज़रात अपने अपने ज़माने में तौरात शरीफ़ के अहकाम जारी फ़रमाते और यहूद की इस्लाह करते थे। हिज़कील इब्ने यूज़ी अलैहिस्सलाम के बाद बनी इस्राईल का हाल बहुत ख़राब हो गया। उन्हों ने खुल्लम खुल्ला बुत परस्ती शुरू कर दी। तब हज़रत इलियास इब्ने बसी इब्ने फ़ख़ास इब्ने एज़ाज़ इब्ने हारून अलैहिस्सलाम नबी बन कर तशरीफ़ लाए। उन्हों ने बनी इस्राईल की इस्लाह की हद भर कोशिश की। उन के बाद हज़रत यसअ अलैहिस्सलाम मबऊस हुए। हज़रत यसअ के बाद बनी इस्राईल की नाफ़रमानी हद से बढ़ गई और नबियों का आना भी बन्द हो गया। बनी इस्राईल पर फ़िरऔन की तरह जालूत बादशाह मुसल्लत हो गया जो कि अमलीक़ इब्ने आद की औलाद से एक निहायत ज़ालिम बादशाह था और क़ौमे अमालिक़ा ने क़िब्तियों की तरह बनी इस्राईल पर ज़ुल्म ढाने शुरू कर दिये कि उन के शहर छीन लिये, उन के आदमी गिरफ़्तार कर लिये, उन पर बहुत सख़्तियां शुरू कर दीं। यह जालूती लोग मिस्र और फ़िलिस्तीन के बीच समुन्द्र के किनारे पर रहते थे। बनी इस्राईल में उस वक़्त नबियों के ख़ानदान में से सिर्फ़ एक बीबी बाक़ी थीं जो हमल से थीं। बनी इस्राईल दुआ करते थे कि ख़ुदावन्द उन की कोख से कोई नबी पैदा फ़रमा दे जिन से हमारा बिगड़ा हुआ हाल संभल जाए। चुनान्चे उन के पेट से हज़रत इशमूईल अलैहिस्सलाम पैदा हुए। इब्रानी ज़बान में इशमू का मतलब है सुन ली और ईल अल्लाह का नाम है। उन की वालिदा बेटे की बहुत दुआएं मांगती थीं। जब यह पैदा हुए तो कहा: इशमूईल यानी रब ने मेरी सुन ली। जब हज़रत इशमूईल बड़े हुए तो उन्हें बैतुल मक़दिस में एक आलिम के सिपुर्द किया गया। उन्हों ने उन्हें अपना मुंह बोला बेटा बना लिया और आप से बहुत मुहब्बत करने लगे। जब आप बालिग़ हुए तो एक रात आलिम के पास आराम कर रहे थे कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने उस आलिम की आवाज़ में पुकारा या

इशमूईल। आप झट उठ उठे और शैख़ से बोलेः ऐ बाबा जान क्या है, क्यों बुलाया है? शैख़ ने ख़्याल किया कि अगर मैं कह दूं कि मैं ने नहीं बुलाया तो डर जाएंगे। इस लिये कहा कि जाओ जाकर सो जाओ। यह फिर सो गए। फिर वही आवाज़ सुनी और शैख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुए कि क्या इरशाद है। फ़रमायाः जाओ जाकर सो जाओ, अगर अब हम बुलाएं तो नहीं बोलना। आप जाकर सो गए। तीसरी बार हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ज़ाहिर होकर आप के सामने आए और फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने आप को नबी बनाया है। अपनी क़ौम के पास जाइये और अल्लाह के अहकाम उन तक पहुंचाइये। चुनान्चे आप अपनी क़ौम के पास आए। बनी इस्राईल चूंकि पैग़म्बरों के क़त्ल करने और सख़्त नाफ़रमानी करने के आदी हो चुके थे, उन्हें झुटलाने लगे और बोले आप इतनी जल्दी नबी बन गए? अच्छा अगर आप नबी हैं तो हमारे वास्ते कोई बादशाह मुक़र्रर कर दीजिये जिस के साथ हम जिहाद कर सकें। ख़्याल रहे कि उस ज़माने में नबियों का फ़तवा होता था और बादशाह उसे जारी करते थे। गोया ख़ल्क़ के हाकिम सुल्तान और सुल्तान के हाकिम नबी होते थे। बनी इस्राईल के अर्ज़ करने पर हज़रत इशमूईल अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की बारगाह में दुआ की कि मौला इन पर कोई बादशाह मुक़र्रर कर दे। तो उन्हें एक लाठी अता हुई और फ़रमाया गया कि इस से इस्राईलियों को नापो, जिस का क़द इस के बराबर हो वही बादशाह है। इस के अलावा बैतुल मक़दिस में से एक शीशी तेल भर लो और काग लगा कर रखो, जिस शख़्स के दाख़िल होने पर तेल जोश मारे और काग निकल पड़े वही बादशाह है। इसी निशानी से सब को आज़माया गया, कोई पूरा न उतरा। तालूत के वालिद चमड़े की तिजारत करते थे। कुछ ने कहा है कि वह पानी पिलाते थे। इत्तिफ़ाक़ से उन का एक गधा खो गया था। उन्हों ने तालूत और अपने ग़ुलाम को तलाश करने के लिये भेजा। रास्ते में हज़रत इशमूईल का मकान पड़ा। ग़ुलाम ने तालूत से कहा आओ इन नबी से पूछें कि हमारा गधा कहाँ है क्योंकि पैग़म्बर पर कोई बात छुपी नहीं रहती। यह दोनों अन्दर पहुंचे और अपने गधे के बारे में अर्ज़ करने लगे कि अचानक तेल ने जोश मारा और शीशी का काग दूर जा पड़ा। आप ने उन दोनों को असा से नापा। तालूत का क़द असा के बराबर निकला तो आप ने वह तेल उन के सर में मला और फ़रमायाः ऐ तालूत मैं तुम्हें अल्लाह के हुक्म से बनी इस्राईल का बादशाह बनाता हूँ, जाओ लश्कर तय्यार करके क़ौमे इमालिक़ा का मुक़ाबला करो। उन्हों ने अर्ज़ किया कि मैं शाही ख़ानदान से नहीं हूँ। मेरी क़ौम और पेशे की

मुनासिबत से बनी इस्राईल मुझे अच्छी निगाह से नहीं देखेंगे। फ़रमायाः तुम रब के इन्तिख़ाब में आ चुके हो। अर्ज़ कियाः निशानी क्या है। फ़रमायाः निशानी यह है कि तुम जाकर देखो कि तुम्हारे गधे बिना ढूंडे घर पहुंच गए हैं। फिर आप ने उन की सल्तनत का बनी इस्राईल में एलान फ़रमाया जिस पर बनी इस्राईल ने काफ़ी वावेला मचाया और रब की नाफ़रमानी पर उतर आए। (रूहुल बयान, रूहुल मआनी)

३५०) दुर्रे मन्सूर में है कि तालूत का नाम शादिल इब्ने कैस इब्ने इशाल इब्ने ज़रार इब्ने यहरिब इब्ने इफ़ाहा इब्ने अनस इब्ने बिन यामीन इब्ने याकूब अलैहिस्सलाम इब्ने इस्हाक़ अलैहिस्सलाम इब्ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम है। लम्बा क़द होने की वजह से इन का लक़ब तालूत था।

३५१) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दूसरे फ़र्ज़न्द हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम हज़रत सारा के बत्न से थे। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से २०६० साल पहले पैदा हुए और हज़रत मसीह से १८८० साल पहले वफ़ात पाई। (तफ़सीरे नईमी)

३५२) हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पोते और हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के बेटे थे। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से दो हज़ार साल पहले पैदा हुए और १८५० साल पहले वफ़ात पाई। आप का दूसरा नाम इस्राईल था। (तफ़सीरे नईमी)

३५३) नूह इब्ने लमक अलैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के अजदाद में मशहूर नबी हैं। तौरात में जो नसबनामा दर्ज है उस के एतिबार से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की ११ वीं पुश्त में हैं। आप का वतन वही था जो तारीख़ के उस इब्तिदाई दौर में नस्ले इन्सानी का वतन था यानी इराक़ का दजला और फ़ुरात का दोआबा। आप का ज़माना लगभग हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से २६४८ साल पहले से लेकर १८६८ साल पहले तक समझा गया है। (तफ़सीरे नईमी)

३५४) तूफ़ाने नूह का तख़मीनी साल हज़रत मसीह से ३२०० साल पहले है। (तफ़सीरे नईमी)

३५५) किश्तिये नूह कोई छोटी मोटी डोंगिया या नाव नहीं थी। पुरातत्व के माहिरों का ख़याल है कि यह ख़ासा बड़ा जहाज़ था, ऊपर नीचे तीन दर्जों का। इस की पैमाइश तौरात में इस तरह बयान हुई हैः लम्बाई तीन सौ हाथ, चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ। गोया इतना बड़ा मुसाफ़िर जहाज़ था जो बरतानिया और अमरीका के बीच आम तौर से चलते हैं। तौरात की

रिवायत के मुताबिक़ यह जहाज़ १५० दिन या पांच माह तक चलता रहा। (तफ़सीरे नईमी)

३५६) हज़रत हूद अलैहिस्सलाम सामी नस्ल के क़दीम तरीन पैग़म्बरों में से हैं। अरब आप से बख़ूबी वाक़िफ़ थे। जुनूबी अरब में आज भी क़ब्रे बनी हूद के नाम से एक मक़ाम अक़ीदत मन्दों का मरकज़ और ज़ियारतगाह है जिस का ज़िक्र अंग्रेज़ सय्याह बराबर करते हैं। कुछ अहले इल्म का ख़्याल है कि आप ही का नाम तौरात में इब्र करके आया है। (तफ़सीरे नईमी)

३५७) आद एक क़दीम अरब क़ौम का नाम है जो जुनूबी अरब में आबाद थी और उस की सीमाएं मश्रिक़ में ख़लीजे फ़ारस के शिमाल से मग़रिब में कुल्ज़ुम सागर के जुनूब तक फैली हुई थीं। गोया आज के यमन, उमान वग़ैरा सब इस में शामिल थे और इन का पायए तख़्त यमनी शहर हज़रमौत था। क़ौम का नाम अपने मूरिसे आला के नाम पर है। अपने ज़माने की सब से ज़्यादा सभ्य क़ौम थी। अपने लम्बे लम्बे सफ़रों के लिये मशहूर थी। जिस्मानी हैसियत से बड़े लम्बे क़द वाले और चौड़े चकले जिस्म वाले लोग थे। (तिर्मिज़ी, निसाई, जलालैन)

३५८) क़ौमे समूद का नाम अपने मूरिसे आला के नाम पर है और मशहूर नसब नामा यह है: समूद बिन जैशर बिन इरम बिन साम बिन नूह अलैहिस्सलाम। आद जिस तरह जुनूबी और मश्रिक़ी अरब के मालिक थे, समूद उस के मुक़ाबिल मग़रिबी और शिमाली अरब पर क़ाबिज़ थे। उन की राजधानी का नाम हजर था। यह शहर हिजाज़ से शाम जाने वाले क़दीम रास्ते पर वाक़े था। अब इस शहर को मदाइने सालेह कहते हैं। यह शिमाली अरब की एक ज़बरदस्त क़ौम थी। इमारतें बनाने में आद की तरह इस को भी कमाल हासिल था। पहाड़ों को काटकर मकान बनाना, पत्थर की इमारतें और मक़बरे तय्यार करना इस क़ौम का ख़ास पेशा था। यह यादगाहें अब तक बाक़ी हैं। इन पर इरामी व समूदी ख़त में कितने ही कत्बे मन्क़ूश हैं। (जलालैन वग़ैरा)

३५९) हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ौमे समूद की बस्ती पर गुज़रे तो सहाबए किराम को हुक्म दिया कि यहाँ से जल्द निकल जाओ और इस कुंवें का पानी इस्तेमाल न करो। जिन हज़रात ने उस कुंवें के पानी से आटा गूंध लिया था वह आटा फिंकवा दिया। हाजियों को अब भी हुक्म है कि मिना जाते हुए जब असहाबे फ़ील की हलाकत की जगह से गुज़रें तो वहाँ तेज़ी से गुज़र जाएं कि वह अज़ाब की जगह है। (तफ़सीरे नईमी)

३६०) अल्लाह तआला ने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की मोअजिज़े की

दरख़्वास्त कुबूल करके एक ऊंटनी किसी अजीब तरीक़े से पैदा कर दी थी और पैग़म्बर को हुक्म दे दिया था कि कोई उसे छेड़े नहीं। यह आज़ादी से घूमती फिरेगी और जिस वक़्त कोई इसे नुक़्सान पहुंचाएगा बस वही घड़ी अज़ाब की होगी। अंग्रेज़ अनुवादक सेल ने फ़िरंगी सय्याहों के मुशाहिदात के हवाले से लिखा है कि जिस पहाड़ से वह ऊंटनी बरामद हुई थी उस में अब भी एक शिगाफ़ साठ फ़ीट का मौजूद है और जज़ीरा नुमाए सीना में जबले मूसा के क़रीब नाक़तुन्नबी का नक़्शे क़दम आज भी ज़ियारतगाहे ख़लाइक़ है। (तफ़सीरे नईमी)

३६१) कोहे जूदी कोहिस्ताने अरारात की उस चोटी का नाम है जो जबले दाम के जुनूब मग़रिब में वाक़े है। इस जवार में कुर्दों की ज़बान पर आज तक यह रिवायत चली आ रही है कि किश्तिये नूह यहीं आकर रुकी थी। (तफ़सीरे नईमी)

३६२) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का ज़माना एक मज़बूत क़ौल के मुताबिक़ हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से १६१० से १८०० साल पहले तक था। जन्मस्थान और मस्कन फ़िलिस्तीन के इलाक़े में हिब्रौन की वादी थी जिसे अब अलख़लील कहते हैं और जो यरोशलम से १८ मील जुनूब मग़रिब में वाक़े है। विलादत हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की सब से चहीती बीवी राहील के बत्न से हुई थी। (तफ़सीरे नईमी)

३६३) असहाबे कहफ़ के ग़ार पर एक बिरंजी तख़्ती लगा दी गई थी जिस पर उन के नाम, नसब और मुख़्तसर हालात दर्ज थे और इसी मुनासिबत से यह असहाबुर रक़ीम भी कहलाए। रक़ीम का मतलब कत्बा या लौहे मज़ार है। (तफ़सीरे नईमी)

३६४) असहाबे कहफ़ के मस्कन या वतन के बारे में कुछ का क़ौल है कि शहरे अफ़सोस था जिस के खन्डर पर मौजूदा शहरे अयासलूक़ क़ायम है। समरना से ३६ मील और समुन्द्र से कुल ६ मील के फ़ासले पर एशियाए कोचक में वाक़े है। (तफ़सीरे नईमी)

३६५) असहाबे कहफ़ के बारे में तफ़सीर की किताबों में ज़्यादा तफ़सील नहीं है। कहते हैं कि रूमी शहन्शाह डीसियस या दक़ियानूस अपने मज़हब में बहुत बढ़ चढ़ कर था। मसीही मज़हब नया नया उसी के ज़माने में रोम की सल्तनत में फैल रहा था। उस ने तौहीद में ईमान रखने वाले ईसाइयों पर सख़्तियां करनी शुरू कर दीं। इस से तंग आकर कुछ शरीफ़ नौजवान उस शहर से निकल खड़े हुए और क़रीब के एक पहाड़ी ग़ार में पनाह ली। वहाँ

उन पर नींद छा गई और वह कुछ ऊपर तीन सौ साल तक सोते रहे और जब एक चमत्कारी तरीक़े से जागे तो ख़ुद रूमी हुकूमत का मज़हब शिर्क से मसीहियत में बदल चुका था। हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने अपना ग़ालिब ख़्याल यह ज़ाहिर किया है कि यह क़िस्सा हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के ज़हूर से पहले का और यहूदियत का है। हमारे ज़माने के भी कुछ लेखकों ने बनी इस्राईल की हिकायतों से यह नतीजा निकाला है कि यह क़िस्सा हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से १६१ साल पहले का है जब मुल्के शाम के ज़ालिम बादशाह अन्तूकस चहारुम ने बैतुल मक़दिस को ढाकर उस की जगह ज़ल्मीयस देवता के मन्दिर की बुनियाद डाली थी और मुकअबी ख़ानदान के पाँच या सात बहादुर नौजवान पहाड़ के ग़ार में पनाह गज़ीं हो कर राहे हक़ में शहीद हो गए थे। (तफ़सीरे नईमी)

३६६) हज़रत लूत अलैहिस्सलाम बिन हारान बिन तारेह, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के हक़ीक़ी भतीजे थे। आप ने जिस मुल्क को अपना वतन बनाया था वह शर्क़े यर्दुन यानी शाम का जुनूबी इलाक़ा था जो दरियाए यर्दुन के आस पास है। (तफ़सीरे नईमी)

३६७) हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम का नाम तौरात में कहीं तीरू आया है और कहीं हुबाब। हमारी तफ़सीरों में नसबनामा यूँ दर्ज है: शुऐब बिन मीकील बिन यशजर बिन मदयन बिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम। (तफ़सीरे नईमी)

३६८) मदयन शहर बहरे अहमर के साहिले अरब पर वाक़े था, कोहे तूर के जुनूब मश्रिक़ में। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की एक ज़ौजए पाक बीबी क़न्तूरा थीं। उन्हीं के बत्न से एक साहबज़ादे मदयन नामी थे। शहर आबाद हुआ और क़दीम दस्तूर के मुताबिक़ उन्हीं फ़र्ज़न्द के नाम से मौसूम हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

३६९) हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम को तौरात में एज़रा कहा गया है। आप की वफ़ात ग़ालिबन ४५८ साल क़ब्ले मसीह हुई थी। यहूद के मज़हबी नविश्तों में ज़्यादातर कातिब की हैसियत से मशहूर हैं। बुख़्ते नस्सर बादशाह (वफ़ात, ५६१ ई० पू०) के हमले और कामिल तबाही और बरबादी के बाद जब तौरात के नुस्ख़े यहूद के पास से बिल्कुल ग़ायब हो गए तो हज़रत उज़ैर ने तौरात को नए सिरे से अपनी याददाश्त से लिख दिया। (तफ़सीरे नईमी)

३७०) हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का नाम तौरात में जोनाह या युनाह आया है। उन का ज़माना आठवीं सदी ई० पू० के बीच का है। उन का समकालीन इस्राईली बादशाह यरबआम था जिस का ज़माना हज़रत मसीह

अलैहिस्सलाम से ७८१ साल से ७४१ साल पहले तक का है। हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम नैनवा शहर के रहने वाले थे जो अपने ज़माने में असीरिया की ताक़तवर सल्तनत की राजधानी था और आज इराक़ में जहाँ मूसिल है उस के मुक़ाबिल दजला नदी के बाएं किनारे पर वाके है। उस वक़्त शहर का रक्बा १८०० एकड़ था। इस की क़दामत का अन्दाज़ा इस से ज़ाहिर है कि इस का ज़िक्र हमुराबी के लेखों में मिलता है यानी हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से २२८५ साल पहले तक। (तफ़सीरे नईमी)

३७१) याजूज माजूज बज़ाहिर मंगोली कबीले के थे जो पहाड़ों की दूसरी तरफ़ आबाद थे और कभी कभी मौक़ा पाकर यलग़ार कर देते थे। तुर्कों के बीच घुस आते थे। याजूज शब्द उज्ज से बना बताया जाता है जिस के मानी आग के शोअला मारने और पानी के मौजें मारने के हैं। उन के यह नाम उन की शोरिश की शिद्दत के कारण पड़े। कुछ ने उन्हें अजमी नाम भी कहा है। कुछ का कहना है कि माजूज क़ौम का नहीं, मक़ाम का नाम है। एक क़ौल यह भी है कि माजूज याफ़िस बिन नूह की नस्ल से हैं। आम तौर पर इन लोगों की सुकूनत एशियाए कोचक और आरमीनिया में समझी गई है और कुछ ने कहा है कि यह वही क़ौमें हैं जो सेथियन कहलाती हैं। क़ुरआनी इशारों से तो बस इतना पता चलता है कि यह कोई शोरा पुश्त और शोरिश पसन्द पहाड़ी क़बीले थे। जो आबादियां इन की शोरिश की ज़द में थीं उन्हों ने ज़ुलक़रनैन से अर्ज़ की कि हम सख़्त परेशान हैं। कहिये तो हम चन्दा फ़राहम कर दें और आप हमारे और उन के बीच ऐसी दीवार खड़ी कर दें जिसे तोड़ कर यह हमला न कर सकें। ज़ुलक़रनैन ने लोगों की इस दरख़्वास्त के जवाब में कहा: माल और ख़ज़ाना तो मेरे पास खुद ही काफ़ी है। मुझे तुम्हारे माल की ज़रूरत नहीं, अलबत्ता तुम हाथ पैरों से मेरी मदद करो। मुझे मज़दूरों और कारीगरों की ज़रूरत है। चुनान्चे सामान जमा हो गया और दीवार की तामीर शुरू हो गई। मालूम ऐसा होता है कि बुनियादें वग़ैरा तो पत्थर से भरी गई होंगी और ऊपर से इस दर्रे को लोहे की चादरों के दरवाज़े से बन्द किया गया होगा। सदियों बाद सय्याहों के मुशाहिदे में एक आहनी दीवार दरबन्द के मक़ाम पर नज़र आई और उस का नाम सद्दे सिकन्दरी ही मशहूर था। और वह फाटक बाबुल हदीद कहलाता है। यह दरबन्द वह नहीं जो क़ज़वैन सागर के मश्रिक़ी साहिल पर मध्य एशिया के मश्रिक़ी हिस्से में ज़िला हिसार में वाक़े है, बुख़ारा से कोई १५० मील जुनूब मश्रिक़ में। इस का ज़िक्र मशहूर योरोपियन सय्याह मारकोपोलो ने अपने सफ़रनामे में भी किया है। (तफ़सीरे नईमी)

३७२) हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम की रिसालत की गवाही सिर्फ़ कुरआने मजीद देता है। यहूद और ईसाई दोनों उन की रिसालत के इन्कारी हैं। ईसाइयों के यहाँ उन की हैसियत हैकले बैतुल मक्दिस के एक बुज़ुर्ग मुजाविर और ख़ादिम की है। (तफ़सीरे नईमी)

३७३) हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम वही नबी हैं जिन का नाम तौरात में हनूक आया है। यह क़ाबील के बड़े बेटे थे यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पोते। कुछ इतिहास कारों ने उन का ज़माना हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से ३२८४ साल से ३०१७ साल पहले तक का निर्धारित किया है। (तफ़सीरे नईमी)

३७४) हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम की बीवी का नाम ईशियअ था। (तफ़सीरे नईमी)

३७५) हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम इस्त्राईली तो न थे, इस्हाक़ी इब्राहीमी थे यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से पांचवीं पुश्त में हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के बड़े बेटे हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के बड़े भाई ऐस की औलाद में थे। औज़ की सरज़मीन के बाशिन्दे थे। यह अरब के उत्तर पश्चिम में फ़िलिस्तीन की मश्रिक़ी सरहद के क़रीब का मुल्क था। (तफ़सीरे नईमी)

३७६) हज़रत ज़ुलकिफ़्ल अलैहिस्सलाम बनी इस्त्राईल के नबियों में से थे, तौरात में आप का नाम हिज़कील नबी आया है। असीरिया का ताजदार बुख़्त नस्सर जब यरोशलम पर हमला करके हज़ारों इस्त्राईलियों को हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से ५६७ साल पहले अपने साथ ले गया तो उन में हज़रत ज़ुलकिफ़्ल भी शामिल थे। (तफ़सीरे नईमी)

३७७) मुल्के सबा अरब के जुनूब मग़रिबी इलाक़े को कहते हैं। तक़रीबन वही मुल्क जहाँ आज यमन, हज़रमौत, उसैर वाक़े हैं। अपने ज़माने में यह बड़ा उपजाऊ और मालदार मुल्क रहा है। यहाँ की रानी का नाम बिल्क़ीस था। इतिहासकारों का बयान है कि इस मुल्क में सौ से ऊपर देवी देवताओं की पूजा होती थी। इन का सब से बड़ा मअबूद सूरज देवता था। (तफ़सीरे नईमी)

३७८) हामान किसी शख़्स का नाम नहीं बल्कि सरकारी लक़ब था। मिस्त्र के एक देवता का नाम आमन था। इस के बड़े पुजारी के अधिकार बादशाह से बस कुछ ही कम होते थे। अजब क्या कि इस बड़े पुजारी का सरकारी लक़ब अरबी उच्चारण में हामान ही हो। (तफ़सीरे नईमी)

३७९) क़ारून इस्त्राईली था, क़िब्ती न था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दादा की औलाद में था और आप का क़रीबी अज़ीज़ था। तौरात में क़ुरह नाम आया है। और नसबनामा यूं दर्ज है: क़ुरह बिन इज़हार बिन क़िहात बिन

यूसहर बिन फाहिस बिन लावी बिन याक़ूब अलैहिस्सलाम। फ़ाहिस पर जाकर मूसा बिन इमरान का भी नसबनामा मिल जाता है। फ़ाहिस बिन लावी जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के जद्दे अमजद थे उसी तरह क़ारून के भी थे। इस रिश्ते से क़ारून आप के सगे चचा का बेटा ठहरता है। तौरात में है कि इस को अस्ल हसद और दुश्मनी हज़रत हारून अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से थी। इस्राईलियों की एक छोटी सी टुकड़ी, कोई १२५० लोगों की, उस के साथ थी। वह इतना बड़ा पूंजीपति और महाजन था कि एक मुस्तक़िल अमला उस के यहाँ कुंजी बरदारों का ही था। मुख़्तलिफ़ तहख़ानों, चोर दरवाज़ों, कमरों, अलमारियों, उन के मुख़्तलिफ़ ख़ानों, तिजोरियों, सन्दूकचियों की कुंजियों की तादाद सैंकड़ों में थी। यहूदी रिवायात के मुताबिक़ यह कुन्जियां तीन सौ ख़च्चरों पर लद कर चलती थीं। (नुज़्हतुल क़ारी)

३८०) हज़रत लुक़मान एक मक़बूल और बुज़ुर्गी वाले बन्दे थे। जाहिलियत के कलाम में एक नहीं इस नाम के तीन तीन लोगों का ज़िक्र मिलता है। इन में से लुक़माने सानी का लक़ब लुक़मान हकीम मशहूर है। यह हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के समकालीन थे, मुल्के हबशा के रहने वाले थे और एक आज़ाद शुदा ग़ुलाम थे। (अर्ज़ुल क़ुरआन, जि: १, पान: १८०) मुहम्मद बिन इस्हाक़ का क़ौल है कि इन का नस्ब यह है: लुक़मान बिन बाऊद बिन नाहूह बिन तारेह। वहब का क़ौल है कि आप हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के भान्जे थे। मक़ातिल ने कहा कि आप हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की ख़ाला के बेटे थे। इमाम वाक़िदी ने कहा कि आप बनी इस्राईल के क़ाज़ी थे। मशहूर है कि आप एक हज़ार साल ज़िंदा रहे और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का ज़माना पाया। कुछ बुज़ुर्ग इन की नबुव्वत के भी क़ाइल हैं लेकिन जमहूर का मसलक यह है कि नबी न थे सिर्फ़ हकीम थे। यूनान की तारीख़ में एक हकीम अल सीप का ज़िक्र आया है (६१९ से ५६४ ई० पू०) इन के कुछ हालात हज़रत लुक़मान से मिलते जुलते हैं। हमारी रिवायतों में आता है कि आप मुल्के लोबिया (अफ़्रीक़ा) या सूडान के एक सियाह फ़ाम ग़ुलाम थे। (नुज़्हतुल क़ारी)

३८१) सद्दे मारिब एक मशहूर तारीख़ी बन्द है जो पहाड़ों के पानी के ज़ख़ीरे के लिये बनाया गया था। मारिब मुल्के सबा की राजधानी था, मौजूदा शहर सनआ से कोई साठ मील मश्रिक़ में और समुन्द्र की सतह से कोई ३९०० फ़ीट ऊंचाई पर। क़ौमे सबा एक सभ्य क़ौम थी उस का यह कई मील लम्बा चौड़ा बन्द सबा के इन्जीनियरों की कला का बेहतरीन नमूना था। यह अज़ीमुश्शान बन्द ज़हूरे इस्लाम से कुछ पहले लगभग ५४२ ई० में टूटा है।

इस की तबाहकारियों के निशान सदियों तक क़ाइम रहे। लम्बाई में यह बन्द १५० फ़ीट और चौड़ाई में ५० फ़ीट था। (तफ़सीरे नईमी)

३८२) हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम एक मशहूर इस्राईली नबी गुज़रे हैं। तौरात में इनका नाम एलिया आया है। आप बादशाह अहीब के समकालीन हुए हैं जो उत्तरी ममलिकत का ताजदार था। इस का ज़माना हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से ८७६ से ८५४ साल पहले तक हुआ है। यहूदी अक़ीदा है कि हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम को हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम की तरह आसमान पर ज़िंदा उठा लिया गया। हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम की क़ौम फ़िलिस्तीन के मग़रिबी वस्ती इलाक़े सामर्रा में आबाद थी और वहाँ बअल की पूजा ज़ोर शोर से जारी थी। दर अस्ल बअल परस्ती की शुरूआत बादशाह अहीब की किसी बीवी से मन्सूब की जाती है। कुछ रिवायतों में है कि बअल किसी देवता का नाम नहीं था बल्कि सब से बड़ी देवी का नाम था। हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम के नाम का एक और उच्चारण इलयासीन भी है। (तफ़सीरे नईमी)

३८३) जिस तरह मिस्र के बादशाहों का लक़ब फ़िरऔन था उसी तरह जुनूबी अरब की सल्तनत यमन के बादशाहों का लक़ब तुब्बअ था। यह अपने वक़्त के बड़े अज़ीमुश्शान और इज़्ज़त वाले हुक्मराँ थे। इन की सल्तनत की सीमाएं लावह हमीर, हज़रमौत और सारे इलाक़ए सबा के उत्तर में उत्तरी अरब तक और मग़रिब में अफ़्रीक़ा तक फैली हुई थीं। यह ख़ानदान कोई २५० साल तक हुक्मराँ रहा और इन के ज़माने का अनुमान ज़हूरे इस्लाम से सात सदियों पहले का लगाया गया है। (तफ़सीरे नईमी)

३८४) हज़रत हिबक़ूक़ एक नबी थे जो हज़रत दानियाल अलैहिस्सलाम के समकालीन थे। (तफ़सीरे नईमी)

३८५) नमरूद के ज़माने में तांबे की एक बतख़ थी। जिस वक़्त कोई जासूस या चोर उस शहर में आता तो उस बतख़ से आवाज़ निकलती जिस से वह पकड़ा जाता। एक नक़्क़ारा था कि जब किसी की कोई चीज़ गुम हो जाती तो उस में चोब मारता, नक़्क़ारा उस चीज़ का पता बता देता। एक आईना था जिस से ग़ायब आदमी का हाल मालूम हो जाता था। जब कभी उस आईने में देखा, वह ग़ायब आदमी, उस का शहर और उस के रहने की जगह उस में नमूदार हो जाती। नमरूद के दरवाज़े पर एक दरख़्त था जिस के साए में दरबारी लोग बैठते थे। ज्यों ज्यों आदमी बढ़ते जाते उस का साया फैलता जाता था। एक लाख आदमी तक उस का साया फैलता रहता था। अगर एक

लाख से एक आदमी भी ज़्यादा हो जाता तो सारे लोग धूप में आ जाते थे। एक हौज़ था जिस से मुक़द्दमों का फ़ैसला होता था। मुद्दई और मुद्दआ अलैहि बारी बारी उस में घुसते जो सच्चा होता उस के नाफ़ के नीचे पानी रहता और जो झूटा होता उस में ग़ोता खा जाता था। अगर फ़ौरन तौबा कर लेता तो बच जाता था वरना हलाक हो जाता था। इस तरह के तिलस्मात पर नमरूद ने ख़ुदाई का दावा किया था। (तफ़सीरे नईमी)

३८६) वहब इब्ने मुनब्बिह कहते हैं कि कअबए मुअज़्ज़मा में सिर्फ़ दो नबियों के मज़ारात हैं। हतीम में हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का और मग़रिबी जानिब हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम का। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम का मज़ार संगे असवद के मुक़ाबिल है। (नुज़्हतुल क़ारी) फ़क़ीरे बरकाती जब मक़ामाते मुक़द्दसा की ज़ियारत को गया था तो जार्डन के उमान शहर में हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के मज़ार की ज़ियारत की। आप का मज़ार कोई आठ मीटर लम्बा है। उस वक़्त (१९९६ ईसवी) रौज़ए मुबारक की तामीरे नौ का काम चल रहा था। हाल ही में (मार्च २०११) जुनूबी अफ़्रीक़ा के दौरे पर मुजाहिदे अफ़्रीक़ा मौलाना अब्दुल हादी क़ादरी बरकाती ने बताया कि हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम का रौज़ा बहुत ही शानदार तामीर हो चुका है। (नज़्मी)

३८७) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का नामे नामी दो लफ़्ज़ों से मिल कर बना है: मू के मानी हैं पानी और सा के मानी हैं सागवान की लकड़ी का सन्दूक़। चूंकि आप को फ़िरऔन की बीबी हज़रत आसिया ने एक बहते हुए सन्दूक़ से पाया था इस लिये आप का नाम उन्हों ने मूसा रखा। (तफ़सीरे नईमी)

३८८) मिस्र के बादशाह को पहले अज़ीज़ कहते थे फिर उसे फ़िरऔन कहा जाने लगा जैसे फ़ारस के बादशाह को किसरा, रोम के बादशाह को क़ैसर, चीन के बादशाह को ख़ाक़ान, यमन के बादशाह को तुब्बअ, अरब के बादशाह को क़ील, हबशा के बादशाह को नजाशी। (रूहुल बयान)

३८९) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जब अल्लाह के हुक्म से अपना असा ज़मीन पर डाला तो वह अस्सी हाथ लम्बा साँप बन गया। वह पीले रंग का था। अपनी दुम पर खड़ा हो गया और फ़िरऔन की तरफ़ लपका। फ़िरऔन हवा ख़ारिज करता हुआ भागा। उस दिन उसे चार सौ रियाह आए। फिर डूबते वक़्त तक फ़िरऔन को दस्तों की बीमारी रही। इस से पहले उसे चालीस दिन में एक बार पाख़ाने की हाजत होती थी। लोगों में इतनी भगदड़ मची कि पच्चीस हज़ार फ़िरऔनी कुचले गए। फ़िरऔन चीख़ा: ऐ मूसा मुझे बचाओ, मैं

तुम पर ईमान लाऊंगा, बनी इस्त्राईल को आज़ाद कर दूंगा। तब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने असा को पकड़ कर उठाया तो वह वैसी ही लाठी थी। (तफ़सीरे सावी, ख़ाज़िन, रूहुल मआनी वग़ैरा)

३६०) जिस मैदान में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और फ़िरऔनी जादूगरों का मुक़ाबला हुआ वह मैदान एक मील लम्बा एक मील चौड़ा था। जादूगरों ने अपने रस्सों बाँसों को काले रंग से रंग दिया था। उन में किसी तरकीब से पारा भर दिया था जो गर्मी पाकर हरकत करने लगा। इस से यह सब दौड़ते हुए साँप और अज़दहे मेहसूस होने लगे। फ़िरऔनी जादूगर तीन सौ ऊंट भर कर बाँस, लाठियां, बल्ले, रस्सियाँ वग़ैरा लाए थे जो सब साँप मेहसूस हो रहे थे। यह मुक़ाबला स्कन्दरिया में हुआ था। (तफ़सीरे नईमी)

३६१) फ़िरऔन की सूली का तरीक़ा यह था कि मुजरिम को किसी दरख़्त से बांध देता था यहाँ तक कि वह सूख सूख कर मर जाता था। उस ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुक़ाबले में हार जाने पर उन्हें सज्दा करने वाले जादूगरों को खजूर के दरख़्तों पर सूली दी। (तफ़सीरे कबीर, बैज़ावी)

३६२) इब्ने जरीर ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुक़ाबले में हारने के बाद जब फ़िरऔन के जादूगरों ने सज्दे में गिर कर अपने ईमान का एलान किया तो छः लाख तमाशाई ईमान ले आए। (तफ़सीरे रूहुल मआनी, ख़ाज़िन, सावी)

३६३) फ़िरऔन खुद सितारों को पूजता था, यह समझ कर कि ज़मीन का मअबूद मैं हूँ, आसमान के मअबूद यह सितारे हैं। वह लागों को भी हुक्म देता था कि मुझे भी पूजो और इन सितारों को भी। फ़िरऔन गाय की पूजा भी करता था। उस ने मिस्त्र से दूर वालों के लिये अपने नाम के छोटे बड़े बुत बना दिये थे और मिस्त्र वालों को हुक्म देता था कि रोज़ाना खुद मुझे पूजो। इलाक़े के लोगों से कहता था कि तुम रोज़ान मेरे पास नहीं पहुंच सकते तो तुम मेरे नाम के बुतों को पूजो। (तफ़सीरे नईमी)

३६४) ताऊन और चेचक पहले फ़िरऔनियों पर ही आई, इस से पहले दुनिया वाले इसे जानते भी न थे। (तफ़सीरे नईमी)

३६५) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बार बार दीदारे इलाही की तमन्ना करने पर अल्लाह तआला ने कोहे तूर पर अपनी तजल्ली ज़ाहिर फ़रमाई। पहाड़ फट गया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बेहोश हो कर गिर पड़े। आप एक दिन बेहोश रहे, जुमेरात को ग़शी तारी हुई, जुम्ए को होश आया। कुछ ने फ़रमाया एक हफ़्ता ग़शी रही यानी दूसरे जुम्ए को हाश आया। (रूहुल बयान)

३६६) जब मूसा अलैहिस्सलाम से अल्लाह के कलाम का वक़्त आया तो आप ने गुस्ल किया, बेहतरीन लिबास पहना। रब्बुल आलमीन ने सात सात कोस इर्द गिर्द में अन्धेरा कर दिया। उस इलाके से शैतान, जानवर, कीड़े मकोड़ों को निकाल दिया गया यहाँ तक कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ रहने वाले फ़रिश्तों को भी आप से अलग कर दिया गया। आप पर आसमान के दरवाज़े खोल दिये गए। आप ने सब मुलाहिज़ा फ़रमाया, अर्श को देखा, लौह पर कलम के चलने की आवाज़ सुनी फिर रब से हमकलामी की। (रूहुल बयान, ख़ाज़ाइनुल इरफ़ान वग़ैरा)

३६७) तिर्मिज़ी और बेहक़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरफ़ूअ रिवायत की कि अल्लाह तआला ने तीन दिन में मूसा अलैहिस्सलाम से एक लाख चालीस हज़ार कलिमात फ़रमाए। फ़रमायाः ऐ मूसा ज़ुहद व तक़्वा से बेहतर इन्सान का कोई अमल नहीं। ऐ मूसा मुझ से क़रीब करने वाली चीज़ हराम से बचना है। ऐ मूसा बेहतरीन इबादत मेरे ख़ौफ़ से रोना है। मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ कियाः ऐ रब, ऐ मख़्लूक़ के मालिक, ऐ क़ियामत के मालिक, ऐ ज़ुल जलाल वल इकराम, इन लोगों को क्या जज़ा मिलेगी? फ़रमायाः ऐ मूसा ज़ाहिदों के लिये मेरी जन्नत हलाल है, हराम से परहेज़ करने वालों के लिये बे हिसाब बख़्शिश है, मेरे ख़ौफ़ से रोने वालों के लिये मैं ख़ुद हूँ, उन का रफ़ीक़े आला। (रूहुल मआनी)

३६८) जब मूसा अलैहिस्सलाम ने रब तआला से कलाम फ़रमाया तो उस वक़्त आप ऊनी जुब्बा पहने हुए थे जिस में बटन की जगह बबूल के काँटे थे, कमर पर पटका था, तूर की एक चट्टान से टेक लगाए हुए थे। इस कलाम के बाद जो कोई मूसा अलैहिस्सलाम के चेहरए अनवर को देखता था, वह बेहोश हो जाता था। चुनान्चे फिर आप ने वफ़ात तक अपने चेहरए अक़दस को निक़ाब से छुपाए रखा। एक दिन आप की बीबी ने अर्ज़ किया कि मैं आप के दीदार से मेहरूम हूँ। आप ने अपना निक़ाब उठाया तो आप के चेहरे से सूरज की सी किरनें निकलीं जिस की बीबी साहिबा ताब न ला सकीं, आँखों पर हाथ रख लिया और बोलीं दुआ करें कि मैं जन्नत में भी आप की बीवी रहूँ। फ़रमाया अगर इस की आरज़ू है तो मेरे बाद किसी से निकाह न करना कि औरत अपने आख़िरी ख़ाविन्द के साथ होगी। (रूहुल बयान)

३६९) ईसा अलैहिस्सलाम जब क़ियामत के क़रीब दुनिया में तशरीफ़ लाएंगे तो न किसी इमाम के मुक़ल्लिद होंगे, न किसी शैख़ के मुरीद, यानी न हनफ़ी शाफ़ई होंगे न क़ादरी चिश्ती वग़ैरा बल्कि ख़ुद मुतलक़ मुज्तहिद होंगे मगर

आप को कुरआन और हदीस का इल्म किसी उस्ताद से हासिल न होगा बल्कि खुद अल्लाह के सिखाए से आलिम होंगे। (तफ़सीरे नईमी)

४००) जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम सात साल की उम्र में उस ग़ार से बाहर आए जहाँ आप की विलादत हुई थी तो शाम का वक़्त था। अपनी क़ौम को देखा कि वह ज़मीनी बुतों और आसमानी चाँद, सूरज, सितारों की पूजा करती है। आप ने चाँद सितारों सूरज के रब होने को झूटलाते हुए निहायत हकीमाना कलाम क़ौम से फ़रमाया। जब रात अन्धेरी हो गई और ज़हरा या मुश्तरी तारा चमकने लगा तो आप ने उन लोगों से पूछाः क्या यह मेरा रब है? क़ौम ने या तो हाँ कहा या चुप रही। थोड़ी देर में जब यह तारा डूब गया तो पूछा कि वह रब कहाँ गया? जो हरकत करे, जिस पर इन्क़िलाब आएं, जो अदले बदले, जो अपने पुजारियों को छोड़ कर ग़ायब हो जाए, मैं उस की इबादत से सख़्त नफ़रत करता हूँ। वह रब कैसे हो सकता है। क़ौम बिल्कुल ख़ामोश रही। वह १५ वें या १६ वें चाँद की रात थी। थोड़ी देर में तक़रीबन पूरा चाँद निकल आया। आप ने क़ौम से पूछा कि क्या यह मेरा रब है? क़ौम बिल्कुल ख़ामोश रही। जब चाँद भी डूब गया तो आप ने फ़रमाया कि अगर मुझ पर अल्लाह का फ़ज़्ल न हुआ होता और उस ने मुझे ईमान की हिदायत न दी होती तो मैं भी गुमराह क़ौम में से हो जाता और तुम्हारी तरह इस की रौशनी से धोका खाकर इसे ख़ुदा मान लेता मगर मेरे रब ने मेरी दस्तगीरी फ़रमाई इस लिये मैं इस दलदल में न फंसा। फिर जब सुब्ह को पूरी चमक दमक के साथ सूरज निकला तो फिर उसी क़ौम से आप ने कहाः क्या यह मेरा रब है? यह नूरानी भी है और चाँद तारों से बड़ा भी। मगर जब शाम को सूरज भी क़लाबाज़ी खाता हुआ डूब गया तो आप ने एलान फ़रमायाः ऐ क़ौम वालो, गवाह रहना कि मैं तुम्हारे शिर्क व कुफ़्र से और तुम्हारे इन मअबूदों से बरी और बेज़ार हूँ और रहूंगा। मैं दुनिया में धोखा खाने नहीं आया बल्कि दुनिया को धोखे से निकालने आया हूँ। ऐ क़ौम! यह देखो कि यह चीज़ें किसी और के क़ब्ज़े और क़ुदरत में हैं। इन पर अलग अलग हालात वारिद हो रहे हैं और यह सब इस की दलील हैं कि यह अब्द हैं, मअबूद नहीं। रब वह है जिस के क़ब्ज़े में यह सब हैं। (तफ़सीरे सावी, रूहुल बयान, ख़ज़ाइन वग़ैरा)

४०१) इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरेलवी से किसी ने पूछा क्या इलियास व ख़िज़्र अलैहिमस्सलातु वस्सलाम नबी हैं? आप ने फ़रमाया सय्यिदुना इलियास अलैहिस्सलाम नबीये मुरसल हैं। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमायाः बेशक

इलियास मुरसलीन में से हैं। और सय्यिदुना ख़िज़्र अलैहिस्सलाम भी जम्हूर के नज़्दीक नबी हैं और उन को ख़ास तौर से इल्मे ग़ैब अता हुआ है। रब तआला का फ़रमान हैः हम ने उसे अपना इल्मे लदुन्नी अता फ़रमाया। यह दोनों हज़रात उन चार अम्बिया में हैं जिन की वफ़ात अभी वाके नहीं हुई है। दो आसमान पर ज़िन्दा उठा लिये गए, सय्यिदुना इद्रीस व सय्यिदुना ईसा अलैहिमस्सलाम और यह दोनों ज़मीन पर तशरीफ़ फ़रमा हैं। दरिया सय्यिदुना ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के मुतअल्लिक़ है और ख़ुश्की सय्यिदुना इलियास अलैहिस्सलाम के। दोनों साहिबान हर साल हज को तशरीफ़ लाते हैं। बाद हज आबे ज़मज़म शरीफ़ पीते हैं कि वही साल भर तक उन के खाने पीने की किफ़ालत करता है। दोनों साहब और तमाम अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम आपस में भाई हैं। (मुस्नदे इमाम हंबल, जिः २, फ़तावा रज़विया, जिः २६)

४०२) जब नमरूद की सरकशी बहुत बढ़ गई तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ कियाः इलाही यह मलऊन नाफ़रमान तेरे साथ मुक़ाबला करना चाहता है तू इसे हलाक करदे। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम नाज़िल हुए और अर्ज़ कियाः ऐ नबीये मोहतरम, आप की दुआ कुबूल हुई। उधर नमरूद ने साठ लाख ज़िर्रा पोशों का लशकर तय्यार किया और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को यह पैग़ाम भेजाः अगर तुम्हारा खुदा ताक़तवर है तो उस से कह दो कि मुझ से मेरी बादशाहत छीन ले लेकिन इस के लिये उसे अपनी फ़ौज भेजनी होगी। इस पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहाः ऐ अल्लाह, तेरी मख़लूक़ात में मच्छर अदना, ज़ईफ़ और हर जानवर की ख़ूराक है, मैं उसे मांगता हूँ। अल्लाह तआला ने अपने ख़लील की दुआ कुबूल फ़रमाई और फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि वह मच्छरों को छोड़ दें। फ़रिश्तों ने अर्ज़ कियाः इलाही कितने मच्छर छोड़ने हैं? हुक्म हुआः सिर्फ़ साठ लाख मच्छर छोड़ो ताकि हर मच्छर के हिस्से में नमरूद का एक एक सवार आजाए। फ़रिश्तों ने कोहे क़ाफ़ में जाकर मच्छरों के सूराख़ में से एक सूराख़ खोल दिया जिस से मच्छरों की फ़ौज बादल की तरह नमरूद की फ़ौज पर छा गई। हर सवार के सर पर एक मच्छर बैठ गया और चन्द लम्हों में उस का भेजा और गोश्त पोस्त सब चट कर गया। इन मच्छरों का एक सरदार भी था उस ने अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ कियाः इलाही नमरूद मलऊन को मेरे हवाले कर दे। मच्छरों का सरदार आया और नमरूद के ज़ानू पर बैठ गया। इसे देख कर नमरूद की बीवी कहने लगीः क्या इसी तरह के जानवर हमारे लशकर को खा गए? फिर नमरूद ने उस मच्छर को पकड़ने की

कोशिश की। वह नमरूद की नाक में घुस गया और उस का मग़ज़ खाने लगा। नमरूद के नौकर लकड़ी से उस के दिमाग़ पर चोटें मारने लगे। जब ज़रब पड़ती तो मच्छर रुक जाता और फिर अपना काम शुरू कर देता। फिर चालीस दिन बाद अल्लाह के हुक्म से वह मच्छर नमरूद के दिमाग़ से निकल आया और उसी वक़्त नमरूद की मौत हो गई। (माहनामा हुदा, अम्बियाए किराम नम्बर)

४०३) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम इराक़ में रहते थे। आप की क़ौम पानी के तूफ़ान से हलाक की गई। क़ौमे हूद हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की क़ौम है जो यमन के इलाक़े अहक़ाफ़ में आबाद थी। यह क़ौम सख़्त आंधी से हलाक की गई। क़ौमे समूद हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम को कहते हैं जो यमन के इलाक़े में हिज्र में आबाद थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबए किराम के साथ जब इस इलाक़े से गुज़रे तो आप ने वहाँ के कुंदें का पानी इस्तेमाल करने और वहाँ ठहरने से मना फ़रमा दिया कि वह जगह अल्लाह का अज़ाब उतरने की थी। यह क़ौम पहले चीख़ फिर ज़लज़ले से हलाक हुई। क़ौमे इब्राहीम से मुराद नमरूद और उस के मानने वाले हैं जो बग़दाद और कूफ़े के बीच बाबुल शहर में रहते थे। नमरूद खुद एक लंगड़े मच्छर से और उस की क़ौम मकानों की छतों में दबा कर हलाक की गई। असहाबे मदयन हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम हो कहते हैं जो मदयन के इलाक़े में रहती थी। इस क़ौम का नाम भी मदयन था क्योंकि यह मदयन इब्ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद थी। यह क़ौम ग़ैबी आग से हलाक की गई। मूतफ़िकात से वह चार या पांच बस्तियां मुराद हैं जिन में हज़रत लूत अलैहिस्सलाम नबी बना कर भेजे गए। इन बस्तियों का तख़्ता उलट दिया गया कि ऊपर का हिस्सा नीचे और नीचे का हिस्सा ऊपर कर दिया गया और इन पर पत्थर बरसाए गए इस लिये इन्हें मूतफ़िकात यानी उल्टी हुई बस्तियाँ कहते हैं। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

४०४) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की नअशे मुबारक कई सौ बरस के बाद मिस्र से बैतुल मक़दिस पहुंचाई गई। अब आप का मज़ारे मुक़द्दस हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की आग़ोश में ही है। (तफ़सीरे नईमी)

४०५) जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के थप्पड़ से मलकुल मौत की एक आँख जाती रही तो वह अल्लाह की बारगाह में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया: ऐ रब तू ने मुझे उस के पास भेजा जो मरना नहीं चाहता। रब तआला ने फ़रमाया: मूसा से कहो कि एक बैल की खाल पर हाथ फेरें जिस क़दर बालों पर उन का हाथ लगेगा, हर बाल के बदले एक साल अता होगा। चुनान्चे

मलकुल मौत फिर जनाब कलीमुल्लाह अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, पैग़ाम पहुंचाया। आप ने फरमाया फिर क्या होगा। अर्ज़ किया फिर मौत। फ़रमाया तो अभी सही। (तफसीरे नईमी)

४०६) जब नमरूद की नाफ़रमानी हद से बढ़ गई तो अल्लाह तआला ने उस पर और उस की क़ौम पर मच्छरों का अज़ाब भेजा। मच्छरों की ज़ियादती का यह हाल था कि उन से सूरज छुप गया। ज़मीन पर धूप नहीं आती थी। मच्छरों ने उन के ख़ून चूस लिये, गोश्त चाट लिया। नमरूद को छोड़ कर बाक़ी सब की हड्डियाँ ही बाक़ी रह गईं। नमरूद देखता था पर कुछ नहीं कर सकता था। फिर एक लंगड़ा मच्छर उस की नाक के ज़रिये उस के दिमाग़ में घुस गया और चार सौ साल तक उस का भेजा काटता रहा। नमरूद अपने सर पर हथौड़े बरसवाता। ऊपर से जब हथौड़ों की धमक पहुंचती तो मच्छर काटना छोड़ देता। दिन रात नमरूद के सर पर जूते और हथौड़े पड़ते रहते। अब उस के दरबार का अदब यह था कि जो भी आए उस के सर पर जूता रसीद करे। इस से पहले चार सौ साल बहुत आराम से हुकूमत की और चार सौ बरस पिटता रहा। फिर निहायत ज़िल्लत के साथ मरा। उस की उम्र आठ सौ साल से कुछ ज़्यादा ही हुई। (तफ़सीरे ख़ाज़िन)

४०७) बैतुल मक़दिस में बनी इस्राईली आबाद थे। जब उन की नाफ़रमानियाँ हद से बढ़ीं और उन्हों ने अपने नबी की हिदायत पर अमल नहीं किया तो ईसा अलैहिस्सलाम से कोई छः सौ बरस पहले बुख़्ते नस्सर बाबुली ने बैतुल मक़दिस पर सख़्त हमला किया। उस के साथ छः लाख झन्डे थे और हर झन्डे के साथ बेशुमार फ़ौज। उस ने बैतुल मक़दिस को वीरान कर डाला, तौरात शरीफ़ के नुस्ख़े जला दिये। बनी इस्राईल के तीन हिस्से किये, एक गिरोह को क़त्ल कर डाला, दूसरे को बहुत ज़िल्लत और ख़्वारी के साथ शाम में रखा, तीसरे को क़ैद किया। इस क़ैदी गिरोह की तादाद दस लाख थी। इन क़ैदियों को आपस में तक़सीम कर लिया। इन्हीं क़ैदियों में हज़रत उज़ैर और हज़रत दानियाल अलैहिमस्सलाम भी थे, जो उस वक़्त बच्चे थे। (तफ़सीरे रूहुल बयान) जब बहुत अर्से बाद इन में से कुछ लोग क़ैद से छूटे तो हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम बैतुल मक़दिस पर गुज़रे जो उस वक़्त उजड़ा पड़ा था। आप तमाम शहर में घूमे, कोई आदमी न मिला मगर वहाँ के बाग़ तरह तरह के मेवों से लदे हुए थे जिन का खाने वाला कोई न था। आप ने कुछ अंगूर और इन्जीर तोड़ कर खाए और कुछ अंगूरों का रस निकाल कर पिया और कुछ अंगूर और इन्जीरें तोशेदान में रख लीं। आबादी की सीमा से

बाहर निकल कर बड़ी हसरत भरी निगाहों से देख कर बोले: रब तआला इसे कैसे आबाद करेगा और अब यहाँ रौनक कैसे होगी? अल्लाह की मर्ज़ी यही थी कि आप को अपनी कुदरत दिखाए। आप ने अपने गधे को वहाँ बांध दिया। इन्जीर और अंगूर का तोशादान अपने सिरहाने और अंगूर का शीरा दुसरी तरफ़ रख कर खुद आराम के लिये लेट गए। लेटते ही नींद आ गई और सोते ही में जान निकाल ली गई। गधा भी मर गया। यह वाक़िआ सुब्ह के वक़्त हुआ। रब तआला ने बुख़्त नस्सर बादशाह को नमरूद की तरह मच्छर से हलाक फ़रमा दिया। बाक़ी इस्राईलियों को आज़ादी मिल गई। सत्तर बरस के बाद हक़ तआला ने फ़ारस के बादशाहों में से किसी को मुसल्लत किया जो अपनी फ़ौजें लेकर बैतुल मक़्दिस पहुंचा और उसे पहले से भी बेहतर तरीक़े पर आबाद किया। बिखरे हुए बनी इस्राईल फिर से वहाँ आबाद हो गए और तीन साल के अर्से में यह लोग बहुत बढ़ गए। हक़ तआला ने हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम के जिस्मे मुबारक को ऐसा ग़ायब फ़रमा दिया कि न किसी इन्सान ने देखा न किसी जानवर ने। जब आप की वफ़ात को सौ साल पूरे हो गए तब आप को ज़िंदा किया गया। जब आप की आँख खुली तो आप ने अपने सारे जिस्म को बेजान पाया। फिर आप के देखते देखते सारा जिस्म ज़िंदा हो गया। यह वाक़िआ शाम के वक़्त हुआ। तब रब ने पूछा कि तुम यहाँ कितनी देर रहे? आप ने ख़्याल फ़रमाया कि यह वही दिन है जब मैं लेटा था तो अन्दाज़े से फ़रमा दिया कि एक दिन बल्कि इस से भी कुछ कम। रब ने फ़रमाया: नहीं तुम पूरे सौ साल ठहरे रहे। अब हमारी कुदरत का नज़ारा करो कि इतनी मुद्दत में जल्द बिगड़ने वाली ग़िज़ा और शराब तो न बिगड़ी बल्कि ऐसी है जैसे अभी तय्यार हुई है। जब कि तुम्हारा गधा गल सड़ कर बराबर हो गया। सारे अंग बिखर गए, सफ़ेद हड्डियाँ चमक रही हैं। अब देखो हम कैसे मुर्दे ज़िंदा करते हैं। एक ग़ैबी आवाज़ आई: ऐ गली हुई हड्डियो, जमा होकर गोश्त पोस्त का लिबास पहन लो। फ़ौरन ही हड्डियाँ दुरुस्त हो कर तमाम जिस्म तय्यार हो गया। दूसरी आवाज़ आई: ज़िंदा हो जाओ। फ़ौरन गधा ज़िंदा हो कर रैंकने लगा। हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की कुदरत का नज़ारा किया। फिर आप गधे पर सवार होकर आबादी की तरफ़ चले। देखा कि वह वीरान शहर काफ़ी रौनक वाला हो गया है। आप की उम्र वही चालीस साल थी जो सोते वक़्त थी। शहरियों में से कोई आप को पहचानता न था। आप अन्दाज़े से अपने मकान पर पहुंचे। एक अन्धी बुढ़िया मिली जिस के पाँव रह गए थे, वह आप की लौंडी थी और उस ने आप को देखा था। उस

की उम्र उस वक़्त १२० साल थी कि आप की वफ़ात के वक़्त वह बीस साल की थी। आप ने उस से पूछाः क्या यह उज़ैर का मकान है? वह बोलीः हाँ, और तुम कौन हो जो बरसों बाद उज़ैर को पूछ रहे हो? उन्हें तो गुम हुए एक सदी हो चुकी है। आप ने फ़रमायाः मैं ही उज़ैर हूँ। उस ने कहाः यह कैसे हो सकता है? आप ने फ़रमायाः अल्लाह तआला ने मुझे सौ बरस मुर्दा रखकर फिर ज़िंदा किया। उस ने कहाः हज़रत उज़ैर की दुआएं रब की बारगाह में कुबूल होती थीं। अगर आप उज़ैर हैं तो दुआ करें कि अल्लाह मेरी बीनाई लौटा दे ताकि मैं आप को देख सकूं। आप ने दुआ की तो उस की आँखें लौट आईं। आप ने उस का हाथ पकड़ कर फ़रमायाः खुदा के हुक्म से उठ। यह कहना था कि उस के हाथ पाँव दुरुस्त हो गए। वह देख कर पहचान गई और कहने लगीः आप वाक़ई उज़ैर हैं और आप का हाथ पकड़ कर बनी इस्राईल की एक मजलिस में ले गई जहाँ हज़रत उज़ैर के बेटे जिन की उम्र ११८ साल थी और आप के ९० साल के बूढ़े पोते भी मौजूद थे। बुढ़िया चिल्ला कर बोली मुबारक हो उज़ैर आ गए। सब ने कहा तू झूटी है। वह बोली मैं वही अन्धी लूली लंगड़ी बुढ़िया हूँ, देख लो इन की दुआ से अच्छी हो गई। लोग उठ कर हज़रत उज़ैर की ज़ियारत करने लगे। हज़रत के बेटे ने कहाः मेरे वालिद के दोनों कन्धों के बीच एक निशान था। खोल कर देखा गया तो वह निशान मौजूद था। लोगों ने कहाः उज़ैर को तौरात शरीफ़ ज़बानी याद थी, आज कल उस का कोई नुस्ख़ मौजूद नहीं है, अगर आप उज़ैर हैं तो तौरात शरीफ़ सुनाइये। आप ने तौरात सुनाई ही नहीं बल्कि लिखवा भी दी। उन लोगों में से एक बोला कि मैं ने अपने वालिद से और उन्हों ने अपने वालिद से सुना था कि बुख़्त नस्सर के हाथों गिरफ़्तार होने के बाद मेरे दादा ने एक जगह तौरात दफ़्न कर दी थी। उस का पता मुझे मालूम है, चलो तलाश करें। खुदाई करने पर वह नुस्ख़ा मिल गया। उस नुस्ख़े से हज़रत उज़ैर की लिखवाई हुई तौरात को मिलाया गया तो एक एक लफ़्ज़ सही निकला। तब सब को यक़ीन हुआ कि वह उज़ैर अलैहिस्सलाम ही हैं। (तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, ख़ाज़िन, रूहुल बयान)

४०८) एक बार हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम समुन्द्र के किनारे गुज़रे, आप ने देखा कि वहाँ एक मुर्दार पड़ा है। जब समुन्द्र उस तक जोश मार कर पहुंचता है तो मछलियाँ उस का गोश्त नोचती हैं और जब समुन्द्र उतर जाता है तो कभी चौपाए उसे खाते हैं कभी चिड़ियाँ। आप ने ख़्याल फ़रमाया कि एक मुर्दार कितने पेटों में पहुंचा। इस का गोश्त पोस्त क़ियामत के दिन कैसे

जमा होगा? और यह किस तरह ज़िंदा किया जाएगा? तब बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया: मौला मुझे मुर्दे दोबारा ज़िंदा किये जाने की कैफ़ियत दिखा दे। रब ने फ़रमाया: क्या तुम इस पर ईमान न लाए? अर्ज़ किया: ईमान तो लाया मगर चाहता हूँ कि खुद अपनी आँखों से देख लूँ। तब इरशाद हुआ: अच्छा तुम चार चिड़ियाँ ले लो और उन्हें पाल पोस कर अपने से ख़ूब हिला लो ताकि तुम्हें उन की और उन्हें तुम्हारी ख़ूब पहचान हो जाए। फिर उन्हें ज़िब्ह करके उन के पर, हड्डी और बाल वग़ैरा का ख़ूब क़ीमा कर डालो। फिर उन के कई हिस्से करके किसी पहाड़ी मैदान में कुछ पहाड़ों पर उन का एक एक हिस्सा रख दो और मैदान में खड़े हो कर उन्हें आवाज़ दो कि ऐ परिन्दो अल्लाह के हुक्म से मेरे पास आओ। वह फ़ौरन ज़िंदा होकर दौड़ते हुए आजाएंगे। चुनान्चे आप ने मोर, मुर्ग़, कबूतर या गिध और कौए को ज़िब्ह करके उन के गोश्त का क़ीमा करके सब के टुकड़े मिला जुला कर चार या सात या दस पहाड़ों पर एक एक हिस्सा रखा और उन सब के सर अपने पास रख लिये। फिर पुकारा: ऐ चिड़ियो मेरे पास अल्लाह के हुक्म से आजाओ। यह फ़रमाते ही हर हर जानवर के हिस्से अलग अलग होकर अपनी तरतीब से जमा हुए यहाँ तक कि ख़ून का हर क़तरा दूसरे क़तरे से मिला और हर पर उड़ कर दूसरे पर से जुड़ गया और हर हड्डी उड़ कर दूसरी हड्डी तक और गोश्त का हर टुकड़ा दूसरे टुकड़े तक पहुंचा यहाँ तक कि फ़िज़ा में चारों चिड़ियों के जिस्म बन कर दौड़ते हुए आप की तरफ़ आए और अपने सरों से मिल कर पूरे परिन्दे बन गए। (तफ़सीरे नईमी, तोहफ़तुल वाइज़ीन)

४०६) एक दिन हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बनी इस्राईल के एक वली के हालात बयान फ़रमाए जिन का नाम हज़रत शमऊन रहमतुल्लाहि अलैहि था। उन की इबादत गुज़ारी अपनी मिसाल आप थी। हज़ार महीने तक रोज़े रखते, रात भर ख़ुदा की इबादत और नमाज़ में मशग़ूल रहते और दिन के वक़्त हथियार बांध कर ख़ुदा की राह में जिहाद करते, ग़रीब लोगों की हिमायत करते, मुश्रिकों और काफ़िरों की सरकोबी करते और उन के माल को ग़रीबों में तक़सीम कर देते। जिस्मानी ताक़त का यह हाल था कि लोहे की भारी भारी ज़न्जीरें औरतों की चूड़ियों की तरह उन के हाथ से टूट कर गिर जाती थीं। कुफ़्फ़ार ने जब यह देखा कि हज़रत शमऊन पर कोई हरबा कारगर नहीं होता तो उन्हों ने आप की बीवी को साथ मिलाने की कोशिश की और उन से कहा कि अगर तुम अपने शौहर को नींद की हालत में मज़बूत रस्सियों से जकड़ कर बांध दो और फिर सुब्ह को हमारे हवाले

करदो तो उस के बदले तुम्हें बहुत सा माल और इन्आम दिया जाएगा। बीवी दौलत के लालच में आ गई और अपने बहादुर और पक्के दीनदार शौहर को रात में मज़बूत रस्सियों से बाँध दिया। सुब्ह को हज़रत शमऊन ने पूछा कि मुझे किसी ने बाँधा है तो बीवी ने बात बनाते हुए कहा: दरअस्ल मैं आप की ताक़त का अन्दाज़ा करना चाहती थी। बात आई गई हो गई। चन्द दिनों के बाद फिर मौक़ा पाकर उस ने अपने शौहर को लोहे की ज़न्जीरों में जकड़ दिया। बेदार होते ही हज़रत शमऊन ने एक ही झटके में ज़न्जीरें तोड़ डालीं और अपनी बीवी से पूछा: यह किस ने किया? बीवी ने दोबारा बात बनाई और बोली: मैं सिर्फ़ आप की ताक़त आज़मा रही थी कि आप पर लोहे की ज़न्जीरों का असर होता है या नहीं। हज़रत शमऊन ने कहा: मुझ पर दुनिया की कोई चीज़ असर नहीं कर सकती। अल्लाह ने मेरी ताक़त मेरे बालों में रखी है। आख़िरकार बीवी को राज़ मालूम हो गया। एक रात उस ने हज़रत शमऊन को उन के बालों के साथ बाँध दिया। आप ने खोलने की बहुत कोशिश की मगर आज़ादी न मिली। लालची बीवी ने इस हालत में आप को एक सुतून से बाँध कर आप की नाक और कान काट डाले और आँखें भी निकाल लीं। अल्लाह तआला ने अपने वली की इस तौहीन का बदला लिया और उन लोगों को ज़मीन में धंसा दिया और धोखा देने वाली बीवी पर क़हर की बिज्ली गिरी और वह ख़ाक हो गई। सहाबए किराम हज़रत शमऊन की तकालीफ़ और आप की बन्दगी और हज़ार महीने तक जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह का हाल सुन कर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ करने लगे: या रसूलल्लाह! हम तो किसी भी तरह हज़रत शमऊन की इबादत व रियाज़त का सवाब और अज्र हासिल नहीं कर सकते क्योंकि हमारी उम्रें इतनी लम्बी नहीं हैं। सहाबए किराम की इस हसरत अंगेज़ आरज़ू पर अल्लाह तआला ने शबे क़द्र जैसी बाबरकत रात अता फ़रमाई और इस रात की इबादत हज़रत शमऊन की हज़ार महीने की इबादत से बेहतर क़रार दी गई। (अहकामुस्सियाम वलएतेकाफ़)

४१०) हज़रत बीबी मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा की नानी साहिबा का नाम फ़ाफ़ूज़ा था। उन की दो बेटियां थीं एक हज़रत हन्नह दूसरी ईशियाअ या ईशाअ। हन्नह हज़रत इमरान के निकाह में आई और ईशियाअ या ईशाअ हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम के निकाह में आई। (तफ़सीरे नईमी, नुज़्हतुल क़ारी)

४११) हज़रत यहया अलैहिस्सलाम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान पर उठाए जाने से छः माह पहले शहीद किये गए। मीदौस नामी यहूदी ने आप

को शहीद किया। (रूहुल मआनी, ख़ाज़िन, तफ़सीरे कबीर)

४१२) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने चार मुर्दे ज़िंदा किये। (१) आज़िर जो आप का दोस्त था। जब वह बीमार हुआ तो उस की बहन ने आप को ख़बर भेजी कि तुम्हारे दोस्त मौत के क़रीब हैं। आप तीन दिन बाद वहाँ पहुंचे तो मालूम हुआ कि दोस्त को मरे हुए आज तीसरा दिन है। आप ने उस की बहन से कहा कि हमें उस की क़ब्र पर ले चल। वह ले गई। आप ने रब तआला से दुआ की। वह अल्लाह के हुक्म और आप के फ़रमाने से ज़िंदा हो कर एक मुद्दत तक जीता रहा और उस के औलाद भी हुई। (२) एक बुढ़िया के बेटे को भी आप ने दोबारा ज़िंदा किया। बुढ़िया अपने बेटे के जनाज़े पर रो रही थी। आप को रहम आया और रब तआला से दुआ की। वह अपने जनाज़े पर ही उठ कर बैठ गया और उठाने वालों की गर्दन पर से उतरा। अर्से तक ज़िंदा रहा। साहिबे औलाद भी हुआ। (३) आप ने चुंगी के एक मुहर्रिर की बेटी को ज़िंदा फ़रमाया। यह मुहर्रिर हाकिम की तरफ़ से लोगों से टैक्स लिया करता था। उस की बेटी मर गई। एक दिन बाद आप ने अल्लाह तआला से दुआ की, वह ज़िंदा हुई, अर्से तक ज़िंदा रही और औलाद भी हुई। (४) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बेटे हज़रत साम को ज़िंदा किया जो ४६०० बरस पहले वफ़ात पा चुके थे। कुछ लोगों ने शुबह किया कि शायद यह मुर्दे जो ज़िंदा किये गए, मरे न होंगे बल्कि उन्हें सकता हो गया होगा। इस पर हज़रत ईसा रूहुल्लाह अलैहिस्सलाम एक पुरानी क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए। वह क़ब्र हज़रत साम इब्ने नूह अलैहिस्सलाम की थी। रब तआला ने आप की दुआ से हज़रत साम को ज़िंदा किया। दोबारा ज़िंदा होकर उन्हों ने बताया कि उन्हों ने क़ब्र में एक आवाज़ सुनी, कोई कह रहा था रूहुल्लाह ईसा का हुक्म मानो। वह ख़ौफ़ से उठ खड़े हुए और समझे कि क़ियामत आ गई। इस दहशत से उन का आधा सर सफ़ेद हो गया, हालांकि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने में लोग बूढ़े नहीं होते थे। हज़रत साम उठकर पूछने लगे: क्या क़ियामत आ गई। ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि नहीं बल्कि मैं ने तुम्हें इस्मे आज़म से ज़िंदा किया। उन्हों ने ईसा अलैहिस्सलाम से दरख़्वास्त की कि मुझे फिर वापस भेजा जाए और अब सकरात की तकलीफ़ न हो। चुनान्चे उसी वक़्त उन का इन्तिक़ाल हो गया। (रूहुल मआनी, ख़ाज़िन)

४१३) सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब ईसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल को तब्लीग़ फ़रमाई तो उन्हों ने आप के मुक़ाबले से आजिज़ होकर आप की शान में बकवास करनी, आप की

वालिदा माजिदा को तोहमत लगानी और आप को तकलीफें देनी शुरू कर दीं। एक दिन आप शहर में घूम रहे थे कि शहर के लोगों ने आप को बहुत परेशान किया। तब आप ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ कीः मौला अब सब्र का प्याला भर चुका। इन सब को सुअर बना दे। आप के मुंह से निकलना था कि वह सब सुअर ही हो गए। लोगों पर इस वाक़ए से हैबत तारी हो गई। किसी ने उस वक़्त के यहूदी बादशाह को ख़बर दी कि ईसा की दुआ इतनी ज़बरदस्त होती है कि उन्हों ने इतने लोगों को सुअर बना दिया। तू भी उन का मुख़ालिफ़ है, अपनी ख़ैर मना। कभी उन की बददुआ से तेरा भी यही हाल न हो जाए। उस ने कहा क्या किया जाए। एक ही हल है वह यह कि उन्हें किसी तरह हलाक कर दिया जाए ताकि उन की बददुआ का डर जाता रहे। चुनान्चे एक शख़्स तत्यानूस को इस काम के लिये चुना गया। तत्यानूस एक मुनाफ़िक़ आदमी था जो ज़ाहिर में ईसा अलैहिस्सलाम की मुहब्बत का दम भरता था और छुपवाँ यहूदियों से मिला हुआ था। जब यह वाक़िआ होने वाला था तब ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने हवारियों से फ़रमा दिया था कि आज सुब्ह से पहले एक शख़्स मुझे थोड़े से दिरम के बदले बेच डालेगा। चुनान्चे तत्यानूस को यहूदी की तरफ़ से ३० दिरम यानी साढ़े सात रुपये देने का वादा किया गया। इस शर्त पर कि वह ईसा अलैहिस्सलाम को अचानक शहीद करदे या करादे। चुनान्चे तत्यानूस यहूदियों की एक जमाअत लेकर अन्धेरी रात में ईसा अलैहिस्सलाम के मकान पर गया। उन सब को घर के आस पास खड़ा करके ख़ुद अन्दर दाख़िल हुआ। क्या देखता है कि ईसा अलैहिस्सलाम अचानक खिड़की के ज़रिये उस हुजरे से निकल कर आसमान पर तशरीफ़ ले गए। यह हैरान रह गया। बाहर के यहूदी समझे कि शायद तत्यानूस ईसा अलैहिस्सलाम से जंग कर रहा है इस लिये वापसी में देर हो रही है। रब तआला ने तत्यानूस को ईसा अलैहिस्सलाम का हमशक्ल बना दिया। अब यह बाहर आया। उस के निकलते ही उन यहूदियों ने ईसा अलैहिस्सलाम के शुब्हे में पकड़ लिया। यह लाख चीख़ा चिल्लाया कि मैं तुम्हारा साथी हूँ, मगर किसी ने एक न सुनी। बोलेः ऐ ईसा तू ने हमारे आदमी को क़त्ल कर दिया, अब हमें धोखा देना चाहता है यह कह कर उसे सूली पर चढ़ा दिया। (तफ़सीरे ख़ाज़िन, तफ़सीरे रूहुल मआनी)

४१४) जब हज़रत बीबी मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा को यह ख़बर पहुंची कि ईसा अलैहिस्सलाम को सूली दी गई, तो आप एक औरत के साथ सलीब पर पहुंचीं और उस लटकी हुई लाश के सामने बैठ कर ज़ार ज़ार रोने लगीं। कई

रोज़ तक बराबर यहाँ आतीं और रोतीं। सातवें दिन ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का हुक्म हुआ: जाओ और अपनी माँ को तसल्ली दो। लिहाज़ा आप पहाड़ पर रात के वक़्त उतरे। सारा पहाड़ नूर से जगमगा उठा। आप ने अपनी वालिदा और हवारियों को बुलाया। बीबी मरयम आप से लिपट गई और रोने लगीं और बोलीं: ऐ ईसा तुम कहाँ थे। फ़रमाया मैं ख़ैरियत से हूँ। जिस को सूली दी गई है वह दूसरा शख़्स है। तुम सब्र करो। फिर आप ने अपने हवारियों को अहकामात की तब्लीग़ की हिदायत फ़रमाई और सब के लिये इलाक़े मुक़र्रर किये। यह सारा काम तक़सीम करके आप चलने लगे तो हज़रत मरयम ने कहा कहाँ जाते हो। फ़रमाया: रब तआला के पास। बोलीं: कब मिलोगे? फ़रमाया: क़ियामत के दिन। फिर निगाहों से ग़ायब हो गए। (ख़ाज़िन, रूहुल मआनी)

४१५) हज़रत बीबी मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा तेरह साल की उम्र में हामिला हुईं और बैतुल मक़्दिस में बैतुल लहम के इलाक़े में एक जंगल में खजूर के दरख़्त के नीचे जो बिल्कुल सूखा था, ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए। हज़रत मरयम का हाथ लगने से वह दरख़्त फिर से हरा भरा हो गया। (ख़ाज़िन)

४१६) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सिकन्दर के हाथों बाबुल फ़त्ह किये जाने के ६५ साल बाद पैदा हुए। तीस साल की उम्र में आप पर वही आई और ३५ साल की उम्र में रमज़ान शरीफ़ की २७ वीं शब यानी लैलतुल क़द्र में आप आसमान पर तशरीफ़ ले गए। आप की वालिदा साहिबा आप के बाद छः साल ज़िंदा रहीं। (तफ़सीरे ख़ाज़िन)

४१७) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवारी एक ही तरह के लोग न थे। उन में कोई धोबी था, कोई रंगरेज़, कोई मछेरा, कोई बादशाह। इन की तादाद बारह थी। (ख़ाज़िन)

४१८) हज़रत बीबी मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को रंगरेज़ का हुनर सीखने एक रंगरेज़ के पास भेजा। एक दिन वह रंगरेज़ किसी काम से बाहर जा रहा था। उस ने आप को बुला कर कहा: दुकान में कुछ लोगों के कपड़े रंगने के लिये आए हैं। उन पर मैं ने निशान लगा दिये हैं। जिस कपड़े पर जिस रंग का निशान हो वैसा ही रंग देना। देखो इन बर्तनों में रंग घुले हुए हैं। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने वह कपड़े एक ही बर्तन में डाल दिये। जब वह रंगरेज़ लौट कर आया तो यह देख कर सर पीट लिया कि सारे कपड़े एक ही बर्तन में पड़े हैं। बोला: तुम ने सब कपड़े एक ही रंग में रंग दिये? फ़रमाया: जा अल्लाह का नाम ले कर निकाल। वह गया और

जब कपड़े निकाले तो हर कपड़े का रंग उस पर लगे निशान के मुताबिक पाया। आप ने फ़रमायाः यह तो कपड़े हैं, मुझे तो रब ने इन्सानों के रंगने की कुव्वत दी है। यह देख कर रंगरेज़ और उस के साथी ईमान ले आए। (तफ़सीरे रूहुल मआनी)

४१९) मुहम्मद इब्ने इस्हाक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान पर तशरीफ़ ले जाने के बाद यहूदियों ने हवारियों को बहुत सताया और उन्हें बहुत दुख दिये। यह ख़बर किसी तरह रोम के बादशाह दाऊद इब्ने नौज़ह को पहुंची कि शाम में एक बुज़ुर्ग पैदा हुए थे जिन्हों ने नबुव्वत का दावा फ़रमाया था। उन्हें तो यहूदियों ने सूली दे दी और अब उन के जानशीनों को तरह तरह की तकलीफ़ें पहुंचा रहे हैं। दाऊद ने यहूदियों के बादशाह से सिफ़ारिश करके उन हवारियों को अपने मुल्क रोम में बुला लिया और उन से ईसा अलैहिस्सलाम के हालात सुन कर उन के हाथ पर बैअत की फिर बनी इस्राईल पर हमला करके उन का क़त्ले आम किया। चालीस साल बाद तैतूस जानशीन हुआ। उस ने बैतुल मक़दिस पर हमला करके वहाँ के तमाम यहूदियों को ग़ारत किया, शहर को बिल्कुल वीरान कर दिया, कुछ यहूदी तैतूस के हाथों मारे गए और कुछ जान बचा कर भाग गए जिन में से दो क़बीले बनी क़ुरैज़ह और बनी नुज़ैर हिजाज़ में आबाद हो गए जो मुसलमानों के हाथों मदीनए मुनव्वरा से निकाले गए, कुछ मारे गए। (तफ़सीरे कबीर, रूहुल मआनी)

४२०) ज़ुल करनैन दो हैं, दोनों का नाम स्कन्दर या सिकन्दर है। एक सिकन्दरे यूनानी जिस का वज़ीर अरस्तातालीस था। यह मुश्रिक था। दूसरा स्कन्दर मोमिन जिस का ज़िक्र कुरआने करीम में है। इन का नाम अब्दुल्लाह बिन ज़ुहाक बिन मअद था। यह नेक बन्दे थे यहाँ तक कि कुछ लोगों ने इन को नबी भी कहा है। इन के वज़ीर ख़िज़्र थे। इन्हों ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़माना पाया है और उन से मुलाक़ात भी की है बल्कि अरज़क़ी ने ज़िक्र किया है कि इन्हों ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ कअबे का तवाफ़ भी किया है। यह स्कन्दरे रूमी से पहले गुज़रे हैं, इन्हों ने ही सद्दे सिकन्दरी बनवाई थी। (नुज़्हतुल क़ारी)

४२१) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि याजूज माजूज रोज़ाना उस बन्ध की दीवार खोदते हैं जिस के पीछे उन्हें क़ैद किया गया है। जब आर पार होने को थोड़ा रह जाता है तो कहते हैं कल इसे हम पूरा कर लेंगे। मगर जब दूसरे दिन जाते हैं तो दीवार पहले जैसी मिलती है। फिर शाम

तक खोदते रहते हैं जब थोड़ा सा रह जाता है तो यह कह कर छोड़ देते हैं कि कल आकर इसे आर पार कर लेंगे। मगर जब दूसरी सुब्ह पहुंचते हैं तो फिर दीवार बराबर मिलती है। इमाम मक़ातिल ने अपनी तफ़सीर में ज़िक्र किया कि यही चक्कर चलता रहेगा। यहाँ तक कि उन में एक मुसलमान पैदा होगा। उस के साथ जब दीवार खोदने जाएंगे तो वह कहेगा बिस्मिल्लाह कह कर खोदो। वह खोदते जाएंगे यहाँ तक कि अन्डे के छिलके के बराबर दीवार रह जाएगी और सूरज की चमक नज़र आएगी। अब मुसलमान कहेगा कहो बिस्मिल्लाह, कल इनशा अल्लाह लौटेंगे और इसे खोद लेंगे। अब जब कि दूसरे दिन आएंगे तो जितना खोद चुके थे उतना खुदा हुआ पाएंगे, फिर थोड़ी देर में नक़ब आर पार कर लेंगे और इस के बाद उस में से निकलेंगे। (नुज़्हतुल क़ारी)

४२२) समूद साम बिन नूह के परपोते का नाम है, उन्हीं की क़ौम को क़ौमे समूद कहा जाता है। यह लोग वादिये कुरा में समुन्द्र के किनारे और शाम के आस पास बसते थे। इन की उम्रें बहुत होती थीं, पहाड़ों को खोद कर अपने लिये मकान बनाते थे। इन की बस्ती का दूसरा नाम हिज्र भी है। जब इन में कुफ़्र और गुनाहों की कसरत हुई तो अल्लाह तआला ने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को इन की हिदायत के लिये भेजा। क़ौमे समूद का एक लोहे का बुत था जिस में शैतान साल में एक बार घुसता और इन से कलाम करता। हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के वालिद उस बुत के मुजाविर थे। एक बार उन्हें ग़ैरत आई और उस बुत को तोड़ने का इरादा फ़रमाया तो बुत के अन्दर से शैतान चीख़ा। क़ौम दौड़ी आई और उन्हें मार कर ग़ार में फेंक दिया। उन की बीवी बरसों तक उन की जुदाई पर रोती रहीं फिर एक फ़रिश्ता आया और उन्हें बताया कि तुम्हारे शौहर फ़ुलाँ ग़ार में हैं। यह वहाँ गई तो उन्हें मुर्दा पाया। फिर अल्लाह ने उन्हें ज़िंदा कर दिया। इस के बाद हज़रत सालेह पैदा हुए। उन की क़ौम ने उन से निशानी तलब की तो निशानी के तौर पर उन्हें एक ऊंटनी दी गई जो एक चट्टान फटने से बरामद हुई। यह ऊंटनी इतनी बड़ी थी कि इस का सिर्फ़ सीना ६० हाथ का था। यह उस क़ौम के पीने का जितना पानी था सब पी जाती। इस लिये बारी मुक़र्रर कर दी गई। एक दिन यह पानी पीती थी और दूसरे दिन बस्ती वाले। इस से क़ौम बहुत परेशान हो गई। उन्हों ने इस की कौंचें काट डालीं। इस पर अज़ाब आया। जिब्रईल अमीन ने एक चीख़ मारी और यह सब मर गए। (नुज़्हतुल क़ारी, मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ साहिब)

४२३) क़ौमे समूद के जिस शख़्स ने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी की कौंचें काटी थीं उस का नाम क़िदार इब्ने सालिफ़ था। इस का रंग

सुर्ख़ था। इसी को अहमरे समूद कहते हैं। यह सुर्ख़ रंग नीली आँखों वाला बिना दाढ़ी का बौना था। (नुज़्हतुल कारी)

४२४) हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम बहुत मालदार थे। आप के पास पांच सौ बैलों की जोड़ी थीं जिन की देख भाल के लिये पांच सौ गुलाम थे, हर गुलाम की एक बीवी और ज़रूरतों के लिये माल था। आप के १३ बेटे थे। आप हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तरह बड़े मेहमान नवाज़ थे। बेवाओं की किफ़ालत करते, ज़रूरत मन्द मुसाफ़िरों की मदद फ़रमाते और जब तक किसी को खिला नहीं लेते, खुद नहीं खाते थे। एक दिन अल्लाह तआला ने शैतान से फ़रमायाः तू ने मेरे बन्दे अय्यूब को कैसा पाया? वह बोलाः मौला तू ने उसे हर तरह की खुशहाली दे रखी है, अगर वह तेरा फ़रमाँबरदार है तो क्या तअज्जुब है। मौला तू मुझे उस पर तसल्लुत दे दे। अल्लाह तआला ने शैतान को छूट दे दी। शैतान ने सब से पहले हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम का मकान ढा दिया जिस में आप के सारे बेटे दब कर मर गए। शैतान भागा हुआ हज़रत अय्यूब के पास गया। देखा तो वह नमाज़ पढ़ रहे हैं। बोलाः ऐ अय्यूब तुम यहाँ रब की इबादत कर रहे हो और वहाँ उसी रब ने तुम्हारे बेटों को हलाक कर दिया है। आप ने नमाज़ पूरी की और कहाः रब का शुक्र है कि उस ने मुझे औलाद के फ़ितने से निजात दिलाई। शैतान वहाँ से पलटा और इस बार आप के सारे मवेशी जानवर मार डाले। फिर हज़रत के पास गया। आप वैसे ही नमाज़ पढ़ रहे थे। शैतान ने कहाः अय्यूब, ऐसे रब की इबादत कर रहे हो जिस ने तुम्हारे सारे मवेशी ख़त्म कर डाले। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम ने नमाज़ पूरी करके कहाः रब का शुक्र है कि उस ने मुझे दुनिया के माल से निजात दे दी। शैतान ने इस बार आप के सारे बाग़ात सारी जायदाद ख़त्म कर दी और आप के पास गया, देखा कि आप नमाज़ पढ़ रहे हैं। बोलाः ऐ अय्यूब, तुम यहाँ नमाज़ में लगे हुए हो उधर तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हारी सारी जायदाद का सफ़ाया कर दिया। आप ने नमाज़ पूरी करके कहाः अल्लाह का शुक्र है कि उस ने मुझे जायदाद से भी बेनियाज़ कर दिया। शैतान चिढ़ गया। नमाज़ की हालत में ही उस ने हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की नाक में फूंक मारी जिस से आप के पूरे बदन में आबले पड़ गए। फिर उन छालों में खुजली पैदा हुई। नाख़ुनों से उन्हें खुजाते यहाँ तक कि नाखुन भी गिर गए। फिर मोटे टाट से खुजाने लगे। इस से भी चैन न मिला तो ठीकरे और पत्थरों से खुजाने लगे, यहाँ तक कि सारा गोश्त गल गया और सिर्फ हड्डियां और पट्ठे बाक़ी रह गए। फिर उन ज़ख़्मों में कीड़े पड़ गए। एक

रिवायत में है कि बारा हज़ार जोड़े कीड़े पैदा हुए थे। एक कीड़ा दूसरे कीड़े को खाने लगा। ज़ख़्मों से बू आने लगी। बस्ती वालों ने बस्ती से बाहर एक घूरे पर ले जाकर डाल दिया। और सब लोगों ने आप से मिलना जुलना छोड़ दिया। आप की ख़िदमत को एक बीबी रहमत बिन्ते फराईम इब्ने यूसुफ ही आप के पास रह गईं। उन्हों ने एक दिन हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया अल्लाह से अपने लिये दुआ कीजिये। फरमाया आसाइश की मुद्दत कितनी थी। उन्हों ने कहाः अस्सी साल। फरमायाः मुझे अल्लाह से हया आती है कि मेरी आज़माइश की मुद्दत आसाइश से कम हो। एक दिन शैतान उन की बीबी साहिबा के पास आया और एक बकरी का बच्चा देकर कहा कि इसे अय्यूब को दे दो और कहो कि इसे मेरे नाम पर ज़िब्ह कर दें, तो अच्छे हो जाएंगे। बीबी साहिबा ने जाकर हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम से कहा तो उन्हें जलाल आ गया। फ़रमायाः तू मुझे हलाक करना चाहती है। अगर अल्लाह ने मुझे इस मुसीबत से छुटकारा दिया तो तुझे सौ कोड़े मारूंगा। तू मुझे हुक्म देती है कि ग़ैरुल्लाह के नाम पर ज़िब्ह करूं। आप ने उन्हें भी भगा दिया और अकेले रह गए। उधर कीड़े ख़त्म होते होते दो रह गए। उन में से एक ने आप के दिल पर मुंह मारा एक ने आप की ज़बान पर, तब आप ने दुआ फ़रमाईः ऐ रब मुझे तकलीफ़ पहुंची है और तू सब मेहरबानों से बढ़ कर मेहरबान है। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम ने यह दुआ इसलिये नहीं मांगी थी कि आप के हाथ से सब्र का दामन छूट गया था। बल्कि जब एक कीड़े ने आप की ज़बान पर मुंह मारा और दूसरे ने आप के दिल पर तो आप को फ़िक्र हुई कि ज़बान ज़िक्रे इलाही का ज़रिया है और दिल फ़िक्रे इलाही का। जब यही न रहेंगे तो बन्दगी का हक़ कैसे अदा होगा। इसी लिये अल्लाह तआला ने आप को साबिरों के ज़ुमरे से नहीं निकाला। अल्लाह तआला ने आप की दुआ क़बूल फ़रमाई और उन्हें हुक्म दिया कि ज़मीन पर अपना पाँव मारो तुम्हें ठन्डे पानी का चश्मा मिलेगा। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम ने पाँव मारा तो एक चश्मा ज़ाहिर हुआ। हुक्म दिया गया इस से ग़ुस्ल करो। आप ने इस से ग़ुस्ल किया तो ज़ाहिर बदन की सारी बीमारियां दूर हो गईं। फिर आप चालीस क़दम चले फिर हुक्म हुआ कि ज़मीन पर पाँव मारो। फिर एक मीठे और ठन्डे पानी का चश्मा ज़ाहिर हुआ। अब हुक्म हुआ कि इस का पानी पियो। आप ने पानी पिया तो अन्दर की सारी बीमारियां दूर हो गईं और आप को अल्लाह तआला ने आप का सारा माल दोगुना करके लौटा दिया और तमाम औलाद को ज़िंदा फ़रमाया। एक दूसरी रिवायत में है कि जब हज़रत

अय्यूब अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की बारगाह में दुआ की तो अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को आप की ख़िदमत में भेजा। उन्हों ने आते ही आप से कहा कि ज़मीन पर पाँव मारिये। आप ने पाँव ज़मीन पर मारा जिस से दोनों कीड़े बदन में से निकल कर नीचे जा पड़े। उन में से एक दरिया में चला गया जिस से दरियाई मख़्लूक़ पैदा हुई और दूसरा पेड़ पर चढ़ गया जिस से रेशम का कीड़ा बना। (नुज्हतुल क़ारी)

४२५) सल्वा एक दरियाई परिन्दे का नाम है जिस का क़द छोटे मुर्ग़े की बराबर होता है। इस का गोश्त बहुत ही मज़ेदार और जल्द हज़्म होने वाला है। यह बादल की गरज सुन कर मर जाता है। इस का पाख़ाना चिड़िया की बीट की तरह होता है। इस का पित्ता मिर्गी के लिये मुफ़ीद है और इस का ख़ून कान के दर्द को दूर करता है। इस के खाने से दिल नर्म होता है। यह परिन्दा मिस्र और हबशा के इलाक़े में खारी समुन्द्र के पास ज़्यादा पाया जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

४२६) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब रब तबारक व तआला से अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब मुझे दिखा दें कि तू मुर्दे को किस तरह ज़िंदा करेगा तो अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि चार चिड़ियाँ पकड़ कर उन्हें पहले अपने से मानूस कर लो फिर क़ीमा क़ीमा करके पहाड़ पर रख दो और फिर उन्हें आवाज़ दो, वह फ़ौरन दौड़े दौड़े चले आएंगे। मुजाहिद का क़ौल है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मोर, मुर्ग़, कौए और कबूतर को लिया था और कुछ उलमा कहते हैं कि सब्ज़ बतख़ थी और काला कौवा और सफ़ेद कबूतर और लाल मुर्ग़ था। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

४२७) रिवायत है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर रमज़ान की पहली रात को सहीफ़े उतरे और इन के सात सौ बरस बाद ६ रमज़ान को तौरात और तौरात के पांच सौ बरस बाद १२ रमज़ान को ज़बूर, और ज़बूर के १२०० बरस बाद १८ रमज़ान को इन्जील नाज़िल हुई और इन्जील के ६२० बरस बाद २७ रमज़ान को क़ुरआने मजीद नाज़िल हुआ। (किताबुल हयात)

४२८) जालूत इतना लम्बा था कि परछाईं एक मील तक जाती थी। (तफ़सीरे नईमी)

४२९) किसरा ईरान के बादशाह का लक़ब था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस बादशाह को ख़त भेजा था उस का नाम किसरा परवेज़ हुरमुज़ बिन नौशेरवान था, उस को ख़िसरौ परवेज़ भी कहते थे। उस ने नामए मुबारक फ़ाड़ डाला। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमाई

कि वह भी फाड़ डाला जाए। किसरा को उस के बेटे शेरूयह ने मार डाला और खुद तख़्त पर बैठ गया। उस के बाद दो तीन और बादशाह ईरान के तख़्त पर बैठे मगर बद नज़्मी बढ़ती गई। आख़िर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के दौर में सअद इब्ने अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु ने ईरान फ़त्ह किया और सारा माल दौलत छीन लिया। शाहे ईरान यज़्दजुर की शहज़ादियों को कैद करके मदीनए मुनव्वरा भेज दिया। उन्हीं में से एक हज़रत शहर बानो थीं जिन की शादी हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से हुई थी। (तफ़सीरे नईमी)

४३०) बाबुल इराक़ में एक बस्ती का नाम है जहाँ का जादू और शराब मशहूर है। कभी पूरे इराक़ को बाबुल कह देते हैं। इसे नमरूद ने बसाया था। उस ने यहाँ एक महल बनवाया था जो पांच हज़ार हाथ ऊंचा था। उस ने यह महल इसलिये बनवाया था कि आसमान पर जाकर आसमान वालों से लड़कर उन की हुकूमत भी ले लूँ। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने यह महल ढा दिया। कहते हैं कि यहाँ के रहने वालों की ज़बान सुरियानी थी मगर एक रात सोए तो अल्लाह की कुदरत से यह लोग अलग ज़बान बोलने लगे। हर शख़्स अपनी ज़बान में बल बल करता था इस लिये इस का नाम बाबुली पड़ गया यानी बिलबिलाने वाले लोग। (तफ़सीरे नईमी)

४३१) अल्लाह तआला ने अबुल अम्बिया आदम अलैहिस्सलाम की तरफ़ वही फ़रमाई: मैं मक्के का खुदावन्द हूँ। इस के रहने वाले मेरे पड़ोसी हैं और ख़ानए कअबा की ज़ियारत करने वाले और वहाँ तक पहुंचने वाले मेरे मेहमान हैं और वह मेरी इनायत और हिमायत के साए में हैं और मेरी हिफ़ाज़त और रिआयत में हैं और ज़मीन और आसमान वालों से इसे मअमूर कर दूंगा और जमाअतों के बाद जमाअतें बिखरे हुए और मिट्टी से अटे बाल लिये लब्बैक कहती हुई, ऊंची आवाज़ से तकबीर कहती, आँखों से आँसू बहाती आएंगी और जो भी ख़ानए कअबा की ज़ियारत को आएगा उस की मन्ज़िल बैतुल्लाह की ज़ियारत और मेरी खुशनूदी और रज़ा के सिवा कुछ न होगा क्यों कि मैं ही घर का मालिक हूँ। गोया ऐसा होगा कि उस ने मेरी ही ज़ियारत की। वह मेरा मेहमान होगा और मेरे करम के लाइक़ और मुस्तहिक़ होने का मतलब यह है कि मैं उस को इज़्ज़त दूंगा और मेहरूम न छोडूंगा। इस ख़ानए कअबा का इन्तिज़ाम तेरे बेटों में से उस नबी के हवाले करूंगा जिसे इब्राहीम कहेंगे। उस के ज़रिये ख़ानए कअबा की बुनियादों को ऊंचा कराऊंगा और उस के हाथ से इसे तअमीर कराऊंगा और उस के लिये ज़मज़म का चश्मा निकालूंगा

और इस की हुरमत उस की मीरास में दूंगा और इस के मशाइर यानी मुक़द्दस निशानों को उस के हाथ से आशकारा करूंगा। फिर इब्राहीम के बाद हर ज़माने में लोग इसे आबाद रखेंगे और इस की तरफ़ मक़सद और इरादा रखेंगे यहाँ तक कि नौबत ब नौबत तेरे बेटों में से उस नबी तक पहुंचेगी जिसे मुहम्मद कहेंगे। वह नबुव्वत के सिलसिले को ख़त्म करने वाले होंगे और उस नबी को मैं इस घर के रहने वालों, इन्तिज़ाम करने वालों, मुतवल्लियों और हाजियों में बुज़ुर्ग और बरतर बनाऊंगा। जो भी मुझे तलाश करने वाला और मुझे चाहने वाला हो उसे लाज़िम है कि वह उस जमाअत के साथ हो जिन के बाल धूल से अटे हुए हैं और जो खुदा के हुज़ूर अपनी मन्नतों और नज़्रों को पूरा करते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

४३२) हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने जो ख़त मलिकए सबा को लिखा था वह बिस्मिल्लाह से शुरू किया था। (तफ़सीरे नईमी)

४३३) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत में तौबा के लिये खुदकुशी जाइज़ थी मगर इस्लाम में हराम। (तफ़सीरे नईमी)

४३४) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और आप पर ईमान लाने वाले लोगों के लिये जब नमरूद के राज्य में ज़िंदगी बसर करना दूभर हो गया तो आप ने अपने वतन से हिजरत करने का फ़ैसला कर लिया। आप की पहली मन्ज़िल हिरान थी। वहाँ कुछ अर्से क़ियाम करने के बाद मिस्र की तरफ़ कूच किया। मिस्र में उस वक़्त फ़िरऔनों के पहले ख़ानदान का एक फ़िरऔन हुकूमत करता था। उस को जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बीबी हज़रत सारा के हुस्नो जमाल के बारे में मालूम हुआ तो उस की नियत ख़राब हो गई और उस ने हज़रत सारा को अपने महल में तलब किया और तन्हाई में बुरे इरादे से उन की तरफ़ हाथ बढ़ाया। फ़ौरन ही उस का हाथ सूख गया। उस ने हज़रत सारा से कहा कि वह अल्लाह से दुआ करें कि उस का हाथ ठीक हो जाए, फिर कभी वह ऐसी हरकत नहीं करेगा। हज़रत सारा ने दुआ की: ऐ अल्लाह अगर यह सच्चा है तो इस के हाथ को ठीक कर दे। उसी वक़्त फ़िरऔन का हाथ हरा भरा हो गया। उस ने हज़रत हाजिरा को हज़रत सारा की ख़िदमत में पेश कर दिया। हज़रत सारा ने हदिये के तौर पर हज़रत हाजिरा को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में पेश कर दिया। कुछ लोग कहते हैं कि हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की वालिदा हज़रत हाजिरा लौंडी थीं। हक़ीक़त यह है कि हज़रत हाजिरा कनीज़ न थीं बल्कि क़िब्ती क़ौम के बादशाह की बेटी थीं। क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान मन्सूरी की तहक़ीक़ यह है

कि हज़रत हाजिरा फ़िरऔन की बेटी थीं। जब उस ने हज़रत सारा की करामत को देखा तो कहा कि मेरी बेटी का इस घर में ख़ादिमा होकर रहना दूसरे घर में मालिका हो कर रहने से बेहतर है। (ज़ियाउन्नबी, जि: १)

४३५) सय्यिदुना इस्माईल अलैहिस्सलाम की पहली शादी बनी जुरहुम की एक ख़ातून से हुई जिसे आप ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के फ़रमान के मुताबिक़ तलाक़ दे दी। दूसरी ख़ातून जो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के निकाह में आई वह भी क़बीलए बनी जुरहुम की थीं उन का नाम अस्सय्यिदा बिन्ते मज़ाज़ बिन अम्र अल जुरहुमी था। इन से हज़रत इस्माईल के बारह बेटे हुए: नाबित, क़ैदर, अदबील, मीश, मस्मअ, दिमा, मास, ऊद, वतूर, नफ़ीस, तमा, क़ैदमान। आप की एक बेटी भी थीं। आप ने वफ़ात के वक़्त अपने भाई हज़रत इस्हाक़ को वसियत की कि उन की बेटी की शादी अपने बेटे ईसू से कर दें। (तारीख़े तबरी)

४३६) जिस शैतान ने हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को तकलीफ़ पहुंचाई थी उस का नाम सुयूत था। (इब्ने अबी हातिम)

४३७) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम जब जनाबत की हालत में होते या रफ़्ए हाजत को जाते तो अपनी अंगूठी, जिस पर इस्मे आज़म था, अपनी सब से ज़्यादा भरोसे वाली बीवी हज़रत जरादह के पास रखवाते। (तफ़सीरे इब्ने कसीर)

४३८) जिस च्यूंटी ने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के लश्कर को देख कर अपनी साथी च्यूंटियों को अपने अपने बिलों में चले जाने का मशवरा दिया था उस का नाम ताख़िया था। वह लंगड़ी थी। (शाने हबीबुर रहमान, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

४३९) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल को ख़ुत्बा दिया। पूछा गया कि कौन सब से ज़्यादा इल्म वाला है। फ़रमाया: मैं। इस मैं कहने की वजह से अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर इताब फ़रमाया कि उन्हों ने यह क्यों न कहा कि अल्लाह सब से ज़्यादा जानने वाला है। अल्लाह ने उन की तरफ़ वही की कि मेरे बन्दों में से एक बन्दा वहाँ रहता है जहाँ दो समुन्द्रों का संगम है। वह तुम से ज़्यादा इल्म वाला है। हज़रत मूसा ने अर्ज़ किया: ऐ रब उन से मुलाक़ात किस तरह हो? फ़रमाया गया: एक मछली टोकरी में ले लो, जहाँ यह मछली ग़ायब हो जाए, वहीं वह होंगे। हज़रत मूसा चले। उन के साथ उन के ख़ास ख़ादिम हज़रत यूशअ बिन नून भी चले। दोनों ने एक मछली टोकरी में रख ली। जब एक चट्टान के पास पहुंचे जिस के नीचे गीली ज़मीन थी तो

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उस चट्टान के साए में सो गए। दूसरी रिवायत में है कि उस चट्टान के नीचे आबे हयात का चश्मा था। उस का पानी जिस मुर्दे पर पड़ता था वह ज़िंदा हो जाता। किसी तरह उस मछली पर उस का पानी पड़ गया और वह ज़िंदा हो गई और तड़प कर समुन्द्र में चली गई। और समुन्द्र में जहाँ डूबी वहीं गोल सुरंग बन गई। हज़रत यूशअ यह मन्ज़र देख रहे थे मगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जगाया नहीं। सोचा जब बेदार होंगे तो बता दूंगा। मगर जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जागे तो उन्हें याद न रहा। आगे चल कर जब हज़रत मूसा ने भूख की शिद्दत से खाना तलब किया तो हज़रत यूशअ को मछली याद आई और उन्हों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को मछली के समुन्द्र में कूद जाने की बात बताई। मुस्लिम शरीफ़ में है कि दोनों लौट कर उस चट्टान के पास आए। हज़रत यूशअ ने वह जगह बताई जहाँ मछली ग़ायब हुई थी। तफ़सीरों में है कि दोनों ने मछली के ग़ायब होने की जगह को देखा कि एक ताक़ की तरह है। फिर देखा कि एक साहब बीचों बीच समुन्द्र के पानी के ऊपर एक सब्ज़ फ़र्श पर इस तरह कपड़े ओढ़े हैं कि चादर का एक किनारा सर के नीचे और दूसरा पाँव तले है। मुस्लिम में है कि चित सोए थे। इब्ने हातिम की रिवायत में है कि ऊन का जुब्बा पहने थे और ऊन ही का कम्बल था। इब्ने अबी हातिम की रिवायत यूं है कि यह दोनों उस सूराख़ में तशरीफ़ ले गए जो मछली बनाती गई थी। पानी जम कर सख़्त हो गया था। अन्दर जज़ीरतुल बहर में पहले तो देखा कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम बीचों बीच समुन्द्र में सब्ज़ फ़र्श पर खड़े नमाज़ पढ़ रहे हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम को सलाम किया। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने कहा: तुम्हारी इस ज़मीन में सलाम कहाँ से। जवाब दिया मैं मूसा हूँ। पूछा: बनी इस्राईल के मूसा? फ़रमाया: हाँ। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने पूछा: आप किस लिये तशरीफ़ लाए हैं? हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: इस लिये आया हूँ कि आप मुझे उन अच्छी बातों में से कुछ सिखाएं जो अल्लाह तआला ने आप को सिखाई हैं। इस पर हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया: क्या आप के लिये यह काफ़ी नहीं कि तौरात आप के पास है, आप के पास वही आती है। ऐ मूसा मेरे पास कुछ ऐसे उलूम हैं कि उन सब का जानना आप के लायक़ नहीं और आप के पास कुछ ऐसे उलूम हैं जिन का जानना मेरे लायक़ नहीं। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा: इन्शा अल्लाह आप मुझे साबिर पाएंगे। मैं आप के किसी हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं करूंगा। इस के बाद यह दोनों दरिया के किनारे पैदल चले।

उन के पास किश्ती न थी। फिर एक किश्ती उन के क़रीब आई। इब्ने अबी हातिम की रिवायत के मुताबिक़ हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने किश्ती वाले से कहा कि और सवारों ने जो किराया दिया है, हम लोग उस का दुगना देंगे। किश्ती के सवारों ने मालिक से कहा इस ख़ौफ़नाक जगह यह लोग हैं, कहीं चोर न हों। किश्ती के मालिक ने कहा मैं इन लोगों के चेहरों पर नूर देख रहा हूँ। फिर उस ने बिना किराया लिये इन्हें सवार कर लिया। इतने में एक चिड़िया आई और किश्ती के किनारे पर बैठी और एक या दो चोंच समुन्द्र में मारी। इस पर हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने कहाः मेरे और तुम्हारे इल्म की निस्बत अल्लाह के इल्म के साथ वही है जो इस चिड़िया की एक चोंचे की समुन्द्र से है। फिर हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने एक कुल्हाड़ी से काट कर किश्ती का तख़्ता उखाड़ दिया और उस में कील ठोंक दी। एक रिवायत में है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उस में एक कपड़ा भर दिया और एक कोने में तशरीफ़ ले गए और सोचने लगे कि इस शख़्स के साथ रह कर क्या बना लूंगा? बनी इस्राईलमें था, उन्हें सुब्ह शाम अल्लाह की किताब सुनाता था, हुक्म देता था, वह मान लेते थे। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने कहाः आप के जी में क्या है कहिये तो बता दूँ? फ़रमायाः बता दो। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने सब बता दिया। किश्ती से उतर कर यह लोग समुन्द्र के किनारे जा रहे थे कि देखा दस बच्चे खेल रहे हैं। उन में जो सब से ज़्यादा ख़ूबसूरत और ज़हीन था उसे हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने पकड़ा और मार डाला। उस का नाम बुख़ारी शरीफ़ में जैसूर आया है और एक क़ौल के मुताबिक़ उस का नाम जैसून था। एक रिवायत में है कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने एक बड़ा पत्थर ले कर उस बच्चे के सर पर दे मारा। यह लड़का बड़ा शरीर था, हर दम फ़साद मचाए रहता, माँ बाप को सताता रहता, रातों को चोरी करता, सुब्ह को जब शिकायत आती, माँ बाप झूटी क़समें खाते कि यह रात भर कहीं नहीं गया, हमारे साथ सोया था। इस के बाद वह एक बस्ती में पहुंचे जिस का नाम अन्ताकिया था। जैसा कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया है। यहाँ यह हज़रात सूरज डूबने के बाद पहुंचे। बस्ती वालों ने इन्हें मेहमान बनाने से इन्कार कर दिया। क़रीब में कोई ऐसी बस्ती न थी जहाँ यह जाते। जाड़े की रात थी। इन लोगों ने इस बस्ती में एक ऐसी दीवार पाई जो गिरा चाहती था। इन हज़रात ने इसी दीवार के पीछे जाकर क़ियाम किया। यह दीवार इतनी झुकी हुई थी कि बस्ती वाले इस से बचकर चलते थे। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने जब देखा कि दीवार

ख़तरनाक है तो उसे हाथ लगा कर सीधी कर दिया। एक रिवायत में है कि सुतून लगा कर सीधी कर दिया। इस पर मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा अगर आप चाहते तो इस पर कुछ मज़दूरी ले लेते। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने कहा यह मेरी और आप की जुदाई है। मुहद्दिसीन फ़रमाते हैं कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को बताया कि मैं ने किश्ती इस लिये तोड़ी कि किश्ती वाले ग़रीब थे। उन की रोज़ी इसी किश्ती पर निर्भर थी। वापसी में एक ऐसे ज़ालिम बादशाह पर गुज़र होता जो हर सही और सलामत किश्ती छीन लेता था और टूटी फूटी को छोड़ देता था। मैं ने किश्ती में तोड़ फोड़ कर दी ताकि यह किश्ती उन ग़रीबों के पास रहे। चुनान्चे वापसी में जब यह किश्ती उस ज़ालिम बादशाह की सीमा में दाख़िल हुई तो उस ने आकर किश्ती को देखा और उस की ख़स्ता हालत देख कर छोड़ दिया। इस के बाद उन लोगों ने तख़्ता फ़िट कर लिया। यह ज़ालिम उन्दलुस में रहता था। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने बताया कि बच्चे का मुआमला यह था कि उस की सरिश्त में कुफ़्र था। उस के माँ बाप मोमिन थे। इस बात का डर था कि कहीं इस काफ़िर बच्चे की मुहब्बत में वह भी काफ़िर न हो जाएं, इस लिये मैं ने उसे मार डाला। कुरआने मजीद में है कि हम ने यह चाहा कि उस बच्चे के बदले उन लोगों को कोई नेक और लायक़ औलाद अता फ़रमाई जाए। बुख़ारी शरीफ़ में है कि उस बच्चे के बदले माँ बाप को एक लड़की अता हुई। जुमल में है कि उस लड़की का निकाह एक नबी से हुआ जिन से और नबी पैदा हुए। कुछ रिवायतों से मालूम होता है हि हज़रत शमऊन उन्हीं की नस्ल से हैं। एक रिवायत में है कि सत्तर नबी उन ख़ातून की नस्ल से हुए। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने उस बच्चे का कन्धा चीर कर दिल निकाल कर दिखाया, उस पर लिखा था काफ़िर है, कभी ईमान कुबूल नहीं करेगा। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने दीवार के बारे में बताया कि वह दीवार दो यतीम बच्चों की थी। उस के नीचे ख़ज़ाना दफ़्न था। अगर दीवार अभी गिर पड़ती हो गाँव वाले सब ख़ज़ाना ले जाते और यह बच्चे मेहरूम रह जाते। उन की सातवीं पुश्त में उन के दादा काशेह नेक पाकबाज़ शख़्स थे। उन की बरकत से अल्लाह को यह मन्ज़ूर हुआ कि यह ख़ज़ाना उन्हीं बच्चों को मिले। इस लिये मैं ने वह दीवार दुरुस्त कर दी ताकि बड़े हो कर यह यतीम बच्चे इस ख़ज़ाने को हासिल कर लें। (नुज़्हतुल कारी)

४४०) हज़रत हिज़्क़ील अलैहिस्सलाम ने एक दिन बनी इस्राईल को अल्लाह के हुक्म से जिहाद में जाने का हुक्म दिया। उन लागों ने मरने के

ख़ौफ़ से जिहाद को क़ुबूल नहीं किया। अल्लाह के ग़ज़ब से उन पर ताऊन नाज़िल हुआ जिस से उन के बहुत से लोग मर गए और काफ़ी लोग डर कर निकल भागे। जब सौ कोस पर चले गए तो वहाँ पर एक भयानक आवाज़ आई कि सब के सब मर गए। इतने मुर्दे हो गए कि उन्हें शहर में लाकर दफ़्न करना संभव न था। तब एक चार दीवारी खींच कर सब मुर्दों को वहाँ रख दिया। सूरज की गर्मी से सब मुर्दे सड़ गए। वहब बिन मुनब्बिह की रिवायत के मुताबिक अस्सी हज़ार आदमी मरे थे। हज़रत हिज़्क़ील अलैहिस्सलाम सात दिन के एतिकाफ़ के बाद जब बाहर निकले तो देखा कि गोश्त पोस्त सब गल गया, सिर्फ़ हड्डिया रह गईं। दिल में रहम आया। अर्ज़ किया: इलाही तू ने मेरी क़ौम को हलाक किया, इन्हें फिर से ज़िंदा कर दे। आवाज़ आई: ऐ हिज़्क़ील यह लोग वबा के डर से भागे थे और मेरी क़ुदरत पर भरोसा छोड़ दिया था इस लिये मैं ने इन्हें मार डाला। हज़रत हिज़्क़ील अलैहिस्सलाम के कहने से अल्लाह तआला ने फिर उन्हें ज़िंदा किया। कहते हैं कि उन के बदन से और उन की नस्ल के बदन से जब पसीना निकलता तो मुर्दे की बू आती थी। हज़रत हिज़्क़ील अलैहिस्सलाम यहाँ से हिजरत करके बाबुल में जा बसे और वहीं विसाल हुआ और दजला और कूफ़ा के बीच दफ़्न हुए। (क़ससुल अम्बिया)

४४१) हज़रत अल यसअ अलैहिस्सलाम के बाद सात सौ बरस तक कोई नबी बनी इस्राईल पर नहीं भेजा गया। सिर्फ़ उलमा थे जो उन्हें अल्लाह की राह बताते थे मगर उन की कोई न सुनता था। फिर अल्लाह तआला ने हज़रत हुन्ज़ला अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि बनी इस्राईल को हुक्म दो कि अल्लाह को पूजें और बुतों को छोड़ दें। हज़रत हुन्ज़ला अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को तौहीद की तरफ़ बुलाया मगर वह लोग ईमान नहीं लाए बल्कि आप को मार डालने पर उतारू हुए। उस शहर का बादशाह तैफूर बिन तुग़ियानूस था। उस के पास बारह हज़ार गुलाम, बेशुमार ख़ज़ाना और बड़ा भारी लश्कर था। सात सौ बरस से उन में कोई आदमी नहीं मरा था। वह बादशाह भी हज़रत हुन्ज़ला अलैहिस्सलाम की दुश्मनी पर उतरा और अपने आदमियों को आप की हलाकत का हुक्म दिया। तब अल्लाह ने उन पर मौत भेजी और हज़ारों आदमी मर गए। बादशाह ने मौत के डर से अपनी हिफाज़त का कड़ा बन्दोबस्त किया मगर हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम ने एक दिन उस की जान निकाल ली। अल्लाह ने उस इलाके के सारे दरिया और चश्मे का सब पानी सुखा दिया। हज़रत हुन्ज़ला अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल से कहा

अगर तुम खुदाए वहदहू ला शरीक पर ईमान ले आओ तो इस अज़ाब से छुटकारा पा सकते हो। बनी इस्राईल ने सख़्त गुस्से के आलम में हज़रत हुन्ज़ला अलैहिस्सलाम की जान लेने का इरादा किया मगर आप उन के घेरे से निकल गए। फिर अल्लाह तआला ने उन काफ़िरों के वास्ते एक सांप भेजा। उस शहर की लम्बाई चौड़ाई छत्तीस कोस थी। उस सांप ने एक साथ चारों तरफ़ से उस शहर को लपेट लिया और उन लोगों को दबाना शुरू किया। सूखे चश्मों से धुंवां निकलना शुरू हुआ जिस से अकसर लोग हलाक हो गए। इस अज़ाब के कुछ रोज़ बाद हज़रत हुन्ज़ला अलैहिस्सलाम ने दुनिया से कूच फरमाया। (कससुल अम्बिया)

४४२) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने क़ारून से फ़रमाया कि तुझ पर तेरे माल का हज़ारवाँ हिस्सा ज़कात फ़र्ज़ है तो उस ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि मैं पूरी ज़कात दूंगा। लेकिन घर जाकर हिसाब लगाया तो यह बहुत बड़ी रक़म होती थी। लिहाज़ा उस ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया। इस के बाद उस ने बनी इस्राईल को जमा किया और उन से कहा कि तुम लोग मूसा अलैहिस्सलाम की हर बात मानते आए, बोलो क्या कहते हो। उन्हों ने कहा कि आप हमारे बड़े हैं, जो चाहें हुक्म दें। उस ने उन से कहा फुलानी आवारा औरत के पास जाओ और उसे इस बात पर तय्यार करो कि मूसा अलैहिस्सलाम पर तोहमत लगाए, इस के बदले वह जितना माल चाहे ले ले। क़ारून ने उस औरत को हज़ार अशरफ़ियों का और दूसरे बहुत से वादे करके इस पर तय्यार कर लिया। दूसरे दिन क़ारून ने बनी इस्राईल को जमा किया। फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास आया कि बनी इस्राईल आप का इन्तिज़ार कर रहे हैं। आप चल कर उन्हें नसीहत करें। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल की जमाअत में तशरीफ़ ले गए और यह तक़रीर फ़रमाई कि ऐ बनी इस्राईल जो चोरी करेगा उस के हाथ काटे जाएंगे और जो किसी पर ज़िना की तोहमत लगाएगा उस की सज़ा अस्सी कोड़े हैं और अगर कोई किसी के साथ ज़िना करेगा, अगर वह कुंवारा है तो उसे सौ कोड़े मारे जाएंगे और अगर शादी शुदा है तो उसे संगसार किया जाएगा यहाँ तक कि वह मर जाए। यह सुनते ही क़ारून खड़ा हो गया और कहा क्या यह हुक्म सब के लिये है चाहे हुज़ूर ही क्यों न हों? फरमाया यह हुक्म सब के लिये है अगर्चे मैं ही क्यों न हूं। अब क़ारून ने कहा कि बनी इस्राईल कहते हैं कि आप ने फुलाँ बदचलन औरत के साथ बुरा काम किया है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा उसे बुलाओ। जब वह हाज़िर हुई तो हज़रत मूसा

अलैहिस्सलाम ने उस से फ़रमायाः उस ज़ात की कसम जिस ने बनी इस्राईल के लिये दरिया फाड़ा और उस में रास्ते बनाए और तौरात नाज़िल फ़रमाई। सच सच बता। अल्लाह के नबी का रोअब ऐसा पड़ा कि वह औरत डर गई और उस ने साफ़ साफ़ कह दिया कि कारून के पैसे के लालच में आकर वह यहाँ आई है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम रोते हुए सज्दे में गिर गए और अर्ज़ करने लगेः या रब अगर मैं तेरा रसूल हूँ तू कारून पर ग़ज़ब नाज़िल फ़रमा। अल्लाह तआला ने वही भेजी मैं ने ज़मीन को आप का कहना मानने का हुक्म दिया है आप जो चाहे हुक्म दें। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल से फ़रमाया जो कारून का साथी हो वह उस के साथ रहे और जो मेरा साथी हो वह मेरे पास आ जाए। इस इरशाद पर सिवाए दो शख़्सों के सब कारून से अलग हो गए। इस के बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ज़मीन को हुक्म दिया कि कारून को पकड़। आप की बात ख़त्म होते ही वह तीनों घुटनों तक ज़मीन में धंस गए। फिर आप ने ज़मीन से फ़रमाया और पकड़। तो वह कमर तक धंस गए। आप यही फ़रमाते रहे यहाँ तक कि वह लोग गर्दनों तक धंस गए। कारून ने रिश्तेदारी का बहुत वास्ता दिया मगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का जलाल कम न हुआ। कारून और उस के साथी ज़मीन में धंसते चले गए यहाँ तक कि वह बिल्कुल धंस गए और ज़मीन बराबर हो गई। कतादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि कियामत तक वह इसी तरह धंसते चले जाएंगे। बनी इस्राईल के कुछ लोगों ने कहना शुरू किया कि मूसा ने कारून को इस लिये ज़मीन में धंसाया है ताकि उस के मकान और माल दौलत पर कब्ज़ा कर सकें। यह सुन कर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जलाल आया तो आप ने उस के मकान, उस के ख़ज़ानों, वग़ैरा को भी ज़मीन में धंसा दिया। (नुज़्हतुल क़ारी)

४४३) इब्ने इस्हाक़ ने रिवायत की है कि अल्लाह अज़्ज़व जल्ल ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को बनी इस्राईल को लेकर चलने का हुक्म दिया तो यह भी फ़रमा दिया कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का ताबूत अपने साथ लेकर जाना। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल से फ़रमाया कि फ़ज्र के वक़्त निकलेंगे मगर यह मालूम न था कि वह मुबारक ताबूत कहाँ है। उधर फ़ज्र तुलूअ होने के करीब हो गई मगर ताबूत का पता न चला तो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल से दुआ फ़रमाई कि फ़ज्र के तुलूअ होने में कुछ ताख़ीर फ़रमा दे। अल्लाह तआला ने दुआ कुबूल फ़रमा ली और फ़ज्र होने में देर फ़रमा दी यहाँ तक कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ताबूत हासिल कर लिया। (नुज़्हतुल क़ारी)

४४४) सअलबी ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की कि मैं ने मौलाए कायनात हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम से आयते करीमा: रुद्दूहा अलैय्या के बारे में पूछा तो फ़रमाया: हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने जिहाद का इरादा फ़रमाया। इस के लिये घोड़ों का मुआयना फ़रमा रहे थे कि सूरज डूब गया तो सूरज पर जो फ़रिश्ते मुअक्कल हैं उन्हें हुक्म दिया: रुद्दूहा अलैय्या यानी सूरज को लौटाओ। फ़िरिश्तों ने सूरज को लौटाया यहाँ तक कि उन्हों ने अस्र पढ़ ली। (फ़त्हुल बारी)

चौथा अध्याय

आबाओ अजदाद और अहले बैते रसूल

१) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक कुल इक्यावन हज़रात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नस्ब में आते हैं जिन में तीस में इख़्तिलाफ़ है बाक़ी इक्कीस मुत्तफ़िक़ अलैहि हैं। इन में छः हज़रात नबी हैं। तफ़सीरे रूहुल बयान में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नस्बनामा इस तरह है: हज़रत आदम अलैहिस्सलाम, हज़रत शीस, अनूश, क़ीनान, महलाइल, युरिद, हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम, मुतोशलख़, लमक, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम, साम, अरफ़ख़शन्द, शालिख़, आबिर, फ़ालिख़, अरग़ऊ, शारिख़, नाख़ूर, तारेह, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम, क़ीदार, हमल, नाबित, सलामान, लीशजब, पअरब, तमीसीअ, यसअ, अजू। इन हज़रात में इख़्तिलाफ़ है। मुत्तफ़िक़ अलैहि नाम यहाँ से शुरू होते हैं: अदनान, मअद, निज़ार, मुज़िर, इलियास, मुदरका, ख़ुज़ेमा, किनाना, नज़र, मालिक, फ़हर, ग़ालिब, लुई, कअब, मर्रा, किलाब, कुसइ, अब्द मुनाफ़, हाशिम, अब्दुल मुत्तलिब, अब्दुल्लाह और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। (नुज़्हतुल क़ारी)

२) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा सरदार अब्दुल मुत्तलिब मुस्तजाबुद दअवात शख़्स थे। अपने दस्तरख़्वान से जान बूझ कर परिन्दों और जानवरों के लिये खाना बचा लेते थे और पहाड़ों पर डाल आते थे। इसी बिना पर आप को मुतइमुत तैर यानी चिड़ियों को खिलाने वाला और हद से ज़्यादा सख़ी कहा जाता था। वह क़ुरैश के बाकमाल और सरगर्म सरदार थे। एक सौ बीस साल उम्र गुज़ारी। आख़िरी उम्र में बुत परस्ती से तौबा कर ली थी और एक अल्लाह की इबादत करने लगे थे। सरदार अब्दुल मुत्तलिब वाक़ए फ़ील के आठ साल बाद फ़ौत हुए। (अत्तबरी, जि: २)

३) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के जिस्मे पाक से कस्तूरी की सी ख़ुश्बू आती थी। जब क़ुरैश को कोई हादसा पेश आता था तो वह हज़रत अब्दुल मुत्तलिब को कोहे शैबह पर ले जाते और उन के वसीले से अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ मांगते और वह दुआ क़ुबूल होती। (ज़ियाउन्नबी, जि: १)

४) ख़ानए कअबा पर जब अबरहा ने चढ़ाई की तो उस के शर से निजात की दुआ हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने ग़ारे हिरा में मांगी थी। (तफ़सीरे नईमी)

५) हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब की आवाज़ आठ मील तक जाती थी। (तफ़सीरे नईमी)

६) हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुबरा के निकाह का खुत्बा अबू तालिब ने पढ़ा था। (बुख़ारी)

७) उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुबरा ने हिजरत से तीन साल पहले ६५ साल की उम्र में इन्तिकाल फ़रमाया। उन पर नमाज़े जनाज़ा न पढ़ी गई क्योंकि उस वक़्त तक यह नमाज़ फ़र्ज़ ही नहीं हुई थी। (तफ़सीरे नईमी)

८) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुक़द्दस बीबियों में सब से पहले हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तिकाल हुआ। (बुख़ारी)

९) हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा औरतों में सब से पहले ईमान लाईं। (बुख़ारी शरीफ़)

१०) हज़रत बीबी फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा का जहेज़ एक चक्की, एक रंगी हुई खाल, एक तकिया जिस में रुई की जगह खजूर के पत्ते भरे हुए थे, एक गुठलियों की तस्बीह, एक आबख़ोरा और एक प्याला था। आप खुद एक मामूली कमली पहने हुए थीं जिस में बारह पैवन्द थे। (तफ़सीरे नईमी)

११) हज़रत बीबी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को हैज़ नहीं हुआ। जब हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु अन्हु पैदा हुए, अस्त्र के बाद बीबी साहिबा ने अपने निफ़ास से तहारत फ़रमा कर मग़रिब की नमाज़ अदा की, इसी लिये आप का नाम ज़हरा हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

१२) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को निकाह से पहले हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की तस्वीर दिखाई गई थी कि यह आप की ज़ौजा हैं। (बुख़ारी शरीफ़)

१३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्यारी बेटी सय्यिदा ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को नेज़ा मार कर शहीद करने वाला शख़्स हबार बिन अल असवद था। (तफ़सीरे नईमी)

१४) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिद माजिद हज़रत अब्दुल्लाह और अबू तालिब दोनों सगे भाई थें। दोनों फ़ातिमा बिन्ते अम्र बिन आइज़ के बत्न से पैदा हुए थे। (ज़ियाउन्नबी, जिः २)

१५) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्रे मुबारक जब आठ साल हो गई तो आप के दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की वफ़ात हो गई। आप की उम्र उस वक़्त १४० साल और दूसरी रिवायत के मुताबिक़ १२० साल की थी। आप को हजून में अपने जद्दे आला कुसइ की क़ब्र के पहलू में दफ़्न किया

गया। आप की वफ़ात पर कई दिनों तक मक्का के बाज़ार बन्द रहे। (ज़ियाउन्नबी, जि: २)

१६) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा की कुन्नियत अबू तालिब थी। उन का नाम अब्द मुनाफ़ था। रवाफ़िज़ का यह कहना कि आप का नाम इमरान था और कुरआन की आयत (सूरए आले इमरान: ३३) में आले इमरान से मुराद आले अबी तालिब है, सरासर बातिल है। (ज़ियाउन्नबी, जि: २)

१७) अबू तालिब के तिजारती सफ़र में बसरा के जिस ईसाई राहब ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख कर आप से सवालात किये थे उस का नाम जरजीस था लेकिन बहीरा के नाम से मशहूर था। (ज़ियाउन्नबी, जि: २)

१८) ईमान लाने में सब से पहल करने और हर मरहले में नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हौसला बढ़ाने और हिम्मत अफ़ज़ाई करते रहने का सिला बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त से हज़रत उम्मुल मोमिनीन ख़दीजतुल कुब्रा को यह मिला कि अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्राईले अमीन अलैहिस्सलाम को सरवरे अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजा जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ारे हिरा में तशरीफ़ फ़रमा थे। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने आकर अर्ज़ की: या रसूलल्लाह! अपने रब की जानिब से और मेरी जानिब से हज़रत ख़दीजा को सलाम पहुंचाइये और उन्हें ख़ुशख़बरी दीजिये कि अल्लाह तआला ने उन के लिये जन्नत में मोतियों का बना हुआ एक महल मख़सूस कर रखा है जिस में कोई शोर न होगा और न कोई कोफ़्त। उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा ने जवाब दिया: अल्लाह तआला ही सलाम है, सारी सलामतियाँ उसी से हैं। जिब्राईल पर सलाम हो और या रसूलल्लाह आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमतें और उस की बरकतें हों। (अस्सीरतुन नबविया, ज़ैनी दिहलान, जि: १)

१९) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लख़्ते जिगर हज़रत इब्राहीम ने माहे रबीउल अव्वल सन दस हिजरी में वफ़ात पाई। उस वक़्त उन की उम्र सोलह माह थी। रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें जन्नतुल बक़ीअ में दफ़्न करने का हुक्म दिया। उन पर ख़ुद नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और चार तकबीरें पढ़ीं और जब उन्हें दफ़्न कर दिया गया तो फिर एक मशक पानी की उन की क़ब्र पर छिड़की। यह पहली क़ब्र है जिस पर पानी छिड़का गया। (ज़ियाउन्नबी, जि: ४)

२०) तबरानी ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है कि रहमते कायनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक रोज़

फ़रमाया कि मैं रात को जन्नत में गया वहाँ मैं ने जअफ़र बिन अबी तालिब को फ़रिश्तों के साथ उड़ते हुए देखा। अल्लाह तआला ने उन के कटे हुए दो बाज़ुओं के बदले उन्हें दो पर अता फ़रमाए हैं। दूसरी रिवायत में हैं जअफ़र जिब्रईल और मीकाईल के साथ उड़ रहे थे। (अस्सीरतुन नबविया, जि: २)

२१) हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के बाद हरमे नबवी में आने वाली पहली ख़ातून सौदा बिन्ते ज़मआ थीं। उन का पहला निकाह चचा के बेटे सकरान बिन अम्र से हुआ था। सकरान ने भी इस्लाम कुबूल कर लिया था। एक दिन हज़रत सौदा ने अपनी गोद में चाँद उतरते देखा। इस की तअबीर की सूरत में आप को उम्मुल मोमिनीन बनने की सआदत हासिल हुई। हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा को हबशा और मदीना की तरफ़ दो हिजरतों का एज़ाज़ हासिल हुआ। (सीरते रसूले अरबी)

२२) सरदार अब्दुल मुत्तलिब के वालिद और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परदादा को सब से पहले यह ख़्याल पैदा हुआ कि उस बैनुल अक़्वामी तिजारत में हिस्सा लिया जाए जो अरब के रास्ते मश्रिक़ के शहरों और शाम व मिस्र के बीच होती थी। दूसरे अरबी क़ाफ़लों की बनिस्बत क़ुरैश को यह सहूलत हासिल थी कि रास्ते के तमाम क़बीले बैतुल्लाह के ख़ुद्दाम होने की हैसियत से उन का एहतिराम करते थे। चुनान्चे हाशिम ने तिजारत की स्कीम बनाई और उस में अपने तीनों भाइयों को भी शामिल कर लिया। शाम के ग़िस्सानी बादशाह से हाशिम ने, हबश के बादशाह से अब्दे शम्स ने, यमनी उमरा से मुत्तलिब ने और इराक़ व फ़ारस की हुकूमतों से नौफ़ल ने तिजारती सहूलतें हासिल कीं। जो रिश्ते उन्हों ने आस पास के क़बीलों और रियासतों से क़ाइम किये थे उन की बिना पर उन्हें अस्हाबे ईलाफ़ भी कहा जाता था यानी उल्फ़त पैदा करने वाले। इन बैनुल अक़्वामी ताल्लुक़ात का एक बड़ा फ़ायदा यह भी हुआ कि इराक़ से यह लोग वह रस्मुल ख़त (लिपि) लाए जो बाद में कुरआने मजीद लिखने के लिये इस्तेमाल हुआ। (अतलसुल कुरआन)

२३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बीसवीं पुश्त के दादा हज़रत अदनान ई० पू० छटी सदी में बुख़्त नस्सर के हमअस्र (समकालीन) थे। यह पहले शख़्स थे जिन्हों ने कअबे को चमड़े का ग़िलाफ़ पहनाया। (अतलसे सीरतुन नबी)

२४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक और जद्द मअद थे जो बुख़्त नस्सर के दौर में बारह साल के थे। बुख़्त नस्सर ने जब अरब पर हमला किया तो उस ने मअद को क़त्ल करना चाहा मगर उस के लशकर में शामिल एक नबी के यह कहने पर छोड़ दिया कि इस की औलाद में नबुव्वत

होगी। (अतलसे सीरतुन नबी)

२५) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अजदाद में एक मुदरिकह थे, अस्ल नाम अम्र बताया जाता है। मुदरिकह के मानी हैं पा लेने वाला। एक सफ़र में उन्हों ने जंगली ख़रगोशों से डर कर भागे हुए अपने खोए हुए ऊंट पा लिये थे। (अतलसे सीरतुन नबी)

२६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक जद्द थे नज़्र। उन के चेहरे की तरो ताज़गी और ख़ूबसूरती के बाइस उन का यह नाम पड़ा। (अतलसे सीरतुन नबी)

२७) कुरैश एक समुन्द्री हैवान (व्हेल) का नाम है जो तमाम समुन्द्री जानवरों पर ग़ालिब रहता है। यूं कुव्वत और ताक़त की ख़ूबी की बिना पर इस कबीले का नाम कुरैश (ताकतवर) पड़ गया। कुरैश नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक जद्द फ़िहर का लक़ब था उन की कुन्नियत अबू ग़ालिब थी। (अतलसे सीरतुन नबी)

२८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा कअब की इज़्ज़त अरब में इतनी थी कि उन की वफ़ात से बरसों का तअय्युन (काल निर्णय) किया जाने लगा और यह सिलसिला आम्मुल फ़ील (मक्के पर हाथियों के लशकर की चढ़ाई वाले साल) तक जारी रहा। एक कौल के मुताबिक़ कअब ही ने यौमे अरूबह का नाम बदल कर जुम्आ रखा था। उन का ज़माना नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पांच सौ साठ बरस पहले था। उन्हों ने खुत्बे में सब से पहले अम्मा बअद का इस्तेमाल शुरू किया। उन के बेटे अदी सय्यिदुना फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के जद्दे अमजद थे। (अतलसे सीरतुन नबी)

२९) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक जद्द किलाब थे। यह शिकार के बहुत शौक़ीन थे। शिकारी कुत्तों के साथ किसी इलाके से गुज़रते तो लोग कहते: हाज़िही किलाबुन इब्ने मर्रह (यह इब्ने मुर्रह के कुत्ते हैं) इस तरह इब्ने मुर्रह का नाम ही किलाब पड़ गया। यह पहले शख़्स थे जिन्हों ने सोने से आरास्ता दो तलवारें कअबे के अन्दर रखीं। (अतलसे सीरतुन नबी)

३०) किलाब के बेटे कुसई का अस्ल नाम ज़ैद था। वह शीर ख़्वार थे जब वालिद गुज़र गए और इन की माँ फ़ातिमा बिन्ते सअद ने रबीअह बिन हराम कुज़ाई से ब्याह कर लिया जो उन्हें शाम ले गए। यूँ ज़ैद अपने अस्ल घर से दूर होने के सबब कुसई कहलाए यानी दूर होने वाला। बड़े हुए तो आले रबीअह से झगड़ा हुआ और उन से ग़रीबुद दयार यानी बेघर होने का तअना सुन कर कुसई ने अपनी माँ से अपनी वल्दियत के बारे में पूछा और फिर

उन की इजाज़त से मक्का चले आए। बत्हा पर क़ाबिज़ बनू ख़ुसाअह में हुबैय नामी ख़ातून से इन की शादी हुई, इन के ख़ुसर हुलैल बिन हुबशियह की वफ़ात पर उन के बेटे अबू ग़बशान मुहर्रश ने कअबे की तौलियत क़ुसई के हाथ बेच दी। क़ुसई ने कअबे की तौलियत मिलने पर मक्का में दारुन्नदवह क़ाइम किया जहाँ क़ुरैश जलसा या जंग की तय्यारी करते। क़ाफ़िले भी यहीं से रवाना होते। निकाह वग़ैरा की रस्में भी वहीं अदा होतीं। इस के अलावा हाजियों को पानी पिलाने और खाने पीने का एहतिमाम करने के मन्सब अता किये। उन के कहने पर क़ुरैश ने खाने पीने के इन्तिज़ाम के लिये एक सालाना रक़म मुक़र्रर की थी। क़ुसई ने चमड़े के हौज़ बनवाए जिन में हाजियों के लिये पानी भर दिया जाता था। हुज्जाज के लिये पानी बाहर से लाया जाता और उस में खजूर का शीरा और अंगूर निचोड़ कर उसे ख़ुश ज़ायक़ा बनाया जाता। मशअरे हराम भी इन्हीं की ईजाद है जिस पर हज के दिनों में चराग़ जलाए जाते थे। (अतलसे सीरतुन्नबी)

३१) क़ुसई के बाद क़ुरैश की रियासत अब्दे मनाफ़ ने हासिल की। उन का अस्ल नाम मुग़ीरा और लक़ब अब्दे मनात था। बाद में अब्दे मनात बिन किनानह से मुशाबिहत के बाइस इन का लक़ब बदल कर अब्दे मनाफ़ कर दिया। इन्हों ने क़ुसई की शुरू की हुई इमारतें मुकम्मल करवाईं। अब्दे मनाफ़ के भाई अब्दुल उज़्ज़ा के बेटे असद थे जिन की पोती ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद से नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शादी हुई थी। (अतलसे सीरतुन्नबी)

३२) अब्दे मनाफ़ के बेटों में सब से बा असर थे हाशिम। इन का नाम अम्रुल उला था और कुन्नियत अबू नज़्लह। वह शदीद क़हत के साल में फ़िलिस्तीन गए वहाँ से आटा ऊंटों पर लदवा कर मक्का लाए और उस की रोटियाँ पकवाईं फिर उन का चूरा बनवा कर सुरीद तय्यार किया और मक्का वालों को ख़ूब पेट भर कर खाना खिलाया। इस लिये इन का लक़ब हाशिम पड़ गया यानी रोटियों का चूरा करने वाला। एक बार हाशिम तिजारत के लिये शाम रवाना हुए। रास्ते में यसरिब के मेले में एक हसीन औरत से मुलाक़ात हुई जिस का नाम सलमा था जो बनू नज्जार से थी। दोनों की शादी हो गई। शादी के बाद शाम चले गए और ग़ज़ा (फ़िलिस्तीन) में उन का विसाल हो गया वहीं दफ़्न हुए। सलमा से उन का बेटा शैबह पैदा हुआ जिस ने आठ बरस यसरिब में परवरिश पाई फिर हाशिम के भाई मुत्तलिब भतीजे को मक्का ले आए। (सीरतुन्नबी)

३३) चूंकि शैबह की परवरिश उन के चचा मुत्तलिब ने की थी इस लिये

उन का नाम अब्दुल मुत्तलिब यानी मुत्तलिब का गुलाम मशहूर हो गया। इन का सब से नुमायाँ कारनामा यह है कि ज़मज़म का कुंवा जो एक मुद्दत पहले रेत से अट कर गुम हो गया था उस का पता लगाया और उसे खुदवा कर नए सिरे से जारी किया। उन्हों ने मन्नत मानी थी कि दस बेटों को अपने सामने जवान देख लेंगे तो एक बेटा अल्लाह की राह में क़ुर्बान कर देंगे। यह आरज़ू पूरी हुई तो दसों बेटों को लेकर कअबे में आए और पुजारी से कुरआ डालने को कहा। इत्तिफ़ाक़ से कुरआ अब्दुल्लाह के नाम पर निकला। अब्दुल्लाह की बहनें रोने लगीं और कहने लगीं कि उन के बदले दस ऊंट क़ुर्बान कर दिये जाएं। दोबारा कुरआ डाला गया मगर फिर अब्दुल्लाह का नाम निकला। मुत्तलिब ने अब दस की जगह बीस ऊंट कर दिये यहाँ तक कि तादाद बढ़ाते बढ़ाते सौ हो गई तब ऊंटों के नाम पर कुरआ आया। यूँ सौ ऊंट क़ुर्बान करने पर अब्दुल्लाह बच गए। यह वाक़िदी की रिवायत है। अब्दुल मुत्तलिब की कुन्नियत अबू हारिस और अबुल बत्हा थी। यह बड़े ख़ूबसूरत थे। लम्बे क़द वाले, अक़्ल में तेज़ और फ़साहत व बलागत में मशहूर थे। वह मिल्लते इब्राहीमी के मुताबिक़ एक अल्लाह की इबादत करते थे। रमज़ान का पूरा महीना जबले हिरा पर इबादत में गुज़ारते। ग़रीबों मिस्कीनों यहाँ तक कि वहशी जानवरों और चिड़ियों को खाना खिलाते। शराब नोशी, मेहरम औरतों से निकाह और बेटियों के जीते जी ज़मीन में गाड़ने से सख़्त नफ़रत करते थे। हतीम में उन के बैठने के लिये ग़लीचा बिछा रहता था जिस पर कोई दूसरा नहीं बैठता था। (अतलसे सीरतुन्नबी)

३४) अब्दुल मुत्तलिब के बारा बेटों में से पाँच ने इस्लाम या कुफ़्र की खुसूसियत के बाइस शोहरत पाई। अबू लहब, अबू तालिब, अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआल अन्हु और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु। अब्दुल मुत्तलिब के दूसरे बेटों के नाम ज़रार, क़स्सिम, ज़ुबैर, मुक़विम, हारिस, अब्दुल कअबह और अलग़ैदाक़ थे। (अतलसे सीरतुन्नबी)

३५) अब्दे शम्स हाशिम के जुड़वाँ भाई थे। यह जब पैदा हुए तो एक की उंगली दूसरे के पहलू से जुड़ी हुई थी जिसे काट कर अलग किया गया। (अतलसे सीरतुन्नबी)

३६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचाओं में से सिर्फ़ हज़रत हमज़ा और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को इस्लाम लाने का शर्फ़ हासिल हुआ और फुफियों में से बिलइत्तिफ़ाक़ हज़रत सफ़िया ईमान लाईं। यह हज़रत ज़ुबैर की वालिदा थीं, लम्बी उम्र पाई। (अतलसे सीरतुन्नबी)

३७) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सब से आख़िरी औलाद हज़रत इब्राहीम थे। ज़िलहज्ज सन ८ हिजरी आलिया मकाम पर जहाँ उम्मुल मोमिनीन हज़रत मारिया किब्तिया रज़ियल्लाहु अन्हा रहती थीं, पैदा हुए। अबू राफ़ेअ ने जब उन की विलादत की ख़बर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुनाई तो आप ने इस के सिले में एक गुलाम अता किया। सातवें दिन अक़ीक़ा हुआ। आप ने बालों के वज़न के बराबर चाँदी ख़ैरात की और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के नाम पर नाम रखा। हज़रत इब्राहीम ने अपनी दाई उम्मे सैफ़ के घर पर ही इन्तिकाल किया। छोटी सी चारपाई पर जनाज़ा उठाया गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। फ़ज़्ल बिन अब्बास और उसामा ने क़ब्र में उतारा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ब्र के किनारे खड़े हुए थे। क़ब्र पर पानी छिड़का गया और उस पर एक पहचान क़ाइम कर दी गई। सही हदीसों में हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि हज़रत इब्राहीम १७ या १८ माह ज़िंदा रहे। (नुज़्हतुल क़ारी)

३८) अहले बैत की तीन क़िस्में बताई गई हैं। पहली क़िस्म अस्ले अहले बैत, इन में तेरह नफ़र हैं, नौ अज़वाजे मुतह्हिरात और चार साहिब ज़ादियां। दूसरी क़िस्म दाख़िले अहले बैत। यह तीन नफ़र हैं। सय्यिदुना मौला अली मुर्तज़ा, सय्यिदुना इमाम हसन और सय्यिदुना इमाम हुसैन रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन। तीसरी क़िस्म लाहिके अहले बैत। यानी वह लोग जिन को अल्लाह तआला ने नापाकियों और गुनाहों से कुल्ली तौर पर पाक कर दिया है और उन को कमाले तक़वा और पाकीज़गी इनायत फ़रमाई है चाहे वह सादात हों या सादात के अलावा जैसे हज़रत सलमाने फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

३९) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आल दो क़िस्म की है एक नसबी जैसे हज़रत जअफ़र और अक़ील बिन अबी तालिब की औलाद और अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की औलाद और हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब और अलीये मुर्तज़ा और आप की औलाद, रज़ियल्लाहु अन्हुम। दूसरी सबबी कि हर मुत्तक़ी मुसलमान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आल में शामिल है। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

४०) रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुद अपनी प्यारी बीवी हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से उन को खुश करने की ख़ातिर और सहाबा को तालीम देने की ग़र्ज़ से दौड़ में मुक़ाबला करते थे। (तफ़सीरे नईमी)

४१) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हसन और हुसैन, यह

दोनों अर्श की तलवारें हैं। (तफ़सीरे नईमी)

४२) जब इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु अपने नाना जान सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होते तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन का बोसा लेते और फ़रमाते ऐसे को मरहबा जिस पर मैं ने अपना बेटा क़ुरबान किया। (तफ़सीरे नईमी)

४३) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद ४८ साल ज़िंदा रहीं। (तफ़सीरे नईमी)

४४) हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा अज़्वाजे मुतह्हिरात में से हैं। उन का नाम रमलह था। उन्हीं को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने करबला की ख़ाक दी थी जो हज़रत सय्यिदुना इमाम हुसैन की शहादत के वक़्त सुर्ख़ हो गई थी। विसाल के वक़्त ८४ साल की उम्र थी। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। जन्नतुल बक़ीअ में दफ़्न हुईं। इन से ३७८ हदीसें मरवी हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

४५) पर्दे के हुक्म की आयत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हज़रत उम्मे सलमा से निकाह के बाद नाज़िल हुई। (तफ़सीरे नईमी)

४६) वाक़ए इफ़्क में हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा पर बोहतान लगाने वाला मलऊन अब्दुल्लाह बिन उबई था। (तफ़सीरे नईमी)

४७) हज़रत बीबी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की फ़ातिहा का खाना मर्द खा सकते हैं, इस की शरीअत में कोई मुमानिअत नहीं है।

४८) हज़रत उम्मे फ़ज़्ल रज़ियल्लाहु अन्हा ने ख़्वाब में देखा कि उन की गोद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बदने पाक का एक टुकड़ा डाला गया है। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस की ताबीर यह फ़रमाई कि फ़ातिमा के लड़का पैदा होगा और तुम उसे दूध पिलाओगी। ऐसा ही हुआ कि सय्यिदुना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु पैदा हुए और हज़रत उम्मे फ़ज़्ल ने उन्हें दूध पिलाया। (तफ़सीरे नईमी)

४९) हज़रत मुहम्मद बिन हनफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत मौला अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम के बेटे थे। हज़रत अली अपने दौरे ख़िलाफ़त में मुहम्मद बिन हनफ़िया को फ़ौज का सिपह सालार बना कर अक्सर जंगों में भेजते थे। किसी ने मुहम्मद बिन हनफ़िया से कहा तुम्हारे बाप अली हसन या हुसैन को किसी लड़ाई पर नहीं भेजते, तुम को ही हमेशा मौत के मुंह में धकेल देते हैं। मुहम्मद बिन हनफ़िया ने फ़रमाया: हसन और हुसैन मेरे

वालिद की आँखें हैं और मैं उन का बाज़ू। आँख का काम अलग है और बाज़ू का अलग। हज़रत मुहम्मद बिन हनफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हु की वालिदा का नाम ख़ूला बिन्ते जअफ़र है और हनफ़िया कहलाती हैं। इस की वजह यह है कि वह यमामा के मशहूर क़बीले बनी हनीफ़ की चश्मो चराग़ थीं। हज़रत मुहम्मद बिन हनफ़िया की कुन्नियत अबुल क़ासिम है। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मौला अली को उन की बशारत दी थी और अपना नामे नामी और कुन्नियत भी अता की थी। राफ़ज़ियों का एक फ़िर्क़ा कसीसानिया है जो उन्हें इमामे बरहक़ मानता है। उन का अक़ीदा है कि वह ज़िंदा हैं और जबले रिज़वा में अपने चालीस मुख़लिस असहाब के साथ छुपे हुए हैं और यही वह मेहदी हैं जिन का दुनिया को इन्तिज़ार है। (तफ़सीरे नईमी व गुल्दस्तए तरीक़त)

५०) हज़रत बीबी फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा को क़ब्र में उतारते वक़्त हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जोशे ग़म में कहा: ऐ क़ब्र, तुझे कुछ ख़बर भी है, यह बेटी हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की, यह बीवी हैं अलीये मुर्तज़ा की, यह माँ हैं हसन और हुसैन की। यह फ़ातिमा ज़हरा हैं, जन्नत की बीबियों की सरदार। क़ब्र से आवाज़ आई: ऐ अबू ज़र, क़ब्र हसब नसब बयान करने की जगह नहीं है। यहाँ तो नेक आमाल का ज़िक्र करो। यहाँ तो वही आराम पाएगा जिस के आमाल नेक हों और जिस का दिल मुसलमान हो। (मिश्कातुल अनवार, गुल्दस्तए तरीक़त)

५१) हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाअहुअ तआला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सगे चचा हैं। इस्लाम पहले ला चुके थे। बद्र में मजबूरन कुफ़्फ़ार के साथ आए थे। अपनी हिजरत के दिन इस्लाम ज़ाहिर किया। आप आख़िरी मुहाजिर हैं। (तफ़सीरे नईमी)

५२) अबू तालिब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हक़्क़ानियत के क़ाइल थे। उन्हों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बड़ी ख़िदमत की है। उन के ईमान के बारे में मुख़्तलिफ़ क़ौल हैं। कुछ उलमा कहते हैं कि चूंकि उन्हों ने ज़बान से कलिमा नहीं पढ़ा था इस लिये शरअन उन्हें मुसलमान नहीं कहा जा सकता। (तफ़सीरे नईमी)

५३) हज़रत मौला अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की नौ बीवियां हुईं। सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा, उम्मुल बनीन, लैला बिन्ते उम्मे सऊद, अस्मा बिन्ते अमीस, उनानह बिन्ते अबिल आस, ख़ौला बिन्ते ज़अफ़र, सहबा बिन्ते रबीअह, उम्मे सईद बिन्ते अर्वह, महया बिन्ते इमराउल क़ैस। इन बीवियों से बारह बेटे और नौ बेटियां हुईं जिन में से हज़राते हसनैन, सय्यिदा ज़ैनब,

सय्यिदा उम्मे कुल्सूम हज़रत फ़ातिमा ज़हरा से हैं। (तफ़सीरे नईमी)

५४) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा गुम्बदे ख़ज़रा में हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के दफ़्न होने के बाद पर्दे के साथ जाती थीं और फ़रमाती थीं मैं उमर से हया करती हूँ। (तफ़सीरे नईमी)

५५) हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आज़ाद करके अपना बेटा बना लिया था। आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बड़े चहीते थे यहाँ तक कि आप का शुमार अहले बैत में होता है। (तफ़सीरे नईमी)

५६) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत बीबी फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा को हाथी दांत के कंगन पहनाए। (तफ़सीरे नईमी)

५७) हज़रत आमिना ख़ातून को बारहवीं ज़िलहज्ज को मिना में हमल ठहरा कि हज़रत अब्दुल्लाह शैतानों को कंकरियां मार के आए और बीबी आमिना के साथ सोए। मगर दर हक़ीक़त वह रजब का महीना था जिसे कुफ़्फ़ार ने उस साल ज़िलहज्ज क़रार देकर हज कर लिया था। इस हिसाब से रबीउल अव्वल तक नौ माह होते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

५८) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़वाज का मेहर पांच सौ दिरहम था जो आज के हिसाब से तक़रीबन साढ़े चार हज़ार रुपये होता है। (तफ़सीरे नईमी)

५९) हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा का मेहर चार सौ मिस्क़ाल यानी डेढ़ सौ तोला या १८०० ग्राम चांदी था जिस की क़ीमत आज के भाव से तक़रीबन बयासी हज़ार रुपये होती है। (तफ़सीरे नईमी)

६०) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बीबी ख़दीजतुल कुबरा की तरफ़ से उन के इन्तिक़ाल के बाद कुरबानी कराते थे और उस का गोश्त बीबी साहिबा की सहेलियों को भेजते थे। (तफ़सीरे नईमी)

६१) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सय्यिदुश शुहदा हज़रत अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु पर सत्तर बार नामज़े जनाज़ा पढ़ी कि हर शहीद के जनाज़े के साथ उन पर नमाज़ पढ़ी। (तफ़सीरे नईमी)

६२) शहीदे करबला इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की विलादत शअबान सन चार हिजरी की पांचवीं तारीख़ मंगल के दिन मदीनए मुनव्वरा में हुई। कुछ ने शअबान सन तीन हिजरी की तीसरी तारीख़ बुध का दिन भी लिखा है। (तफ़सीरे नईमी)

६३) जनाबे इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु छः महीने के पैदा हुए। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के सिवा अल्लाह के किसी और ख़ास बन्दे को यह शर्फ़

नहीं मिला। (तफ़सीरे नईमी)

६४) सरकार शहीदे करबला इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु हर रात एक हज़ार रकअत नमाज़ पढ़ा करते थे। इसे आप के साहिबज़ादे हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिवायत किया है। (तफ़सीरे नईमी)

६५) सरकार इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी तमाम उम्र में पच्चीस हज अदा किये और सब पैदल। (मक़्तले इमाम अबू इस्हाक़ अस्फ़रायनी)

६६) जनाबे इमामे हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के बीस बेटों में से सात बेटे करबला की जंग में शरीक थे इन में से पांच ने मैदाने करबला में शहादत पाई। (मक़्तले इमाम अबू इस्हाक़ अस्फ़रायनी)

६७) मअरिकए करबला में हज़रत इमामे आली मक़ाम सय्यिदुना इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु और यज़ीद पलीद की फ़ौजों का अनुपात क्रमशः बहत्तर और तीस हज़ार था। (मक़्तले इमाम अबू इस्हाक़ अस्फ़रायनी)

६८) सय्यिदुना इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के घोड़े का नाम मैमून था और वह जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घोड़ों में सब से अच्छा था। इमामे आली मक़ाम की शहादत के बाद फ़ुरात में डूब कर मर गया। (मक़्तले इमाम अबू इस्हाक़ अस्फ़रायनी)

६९) हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के शाइर यहया बिन हकम और दरवाज़े के निगहबान असअद हिजरी थे। (मक़्तले इमाम अबू इस्हाक़ अस्फ़रायनी)

७०) हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत जुम्आ दस मुहर्रम सन ६१ हिजरी निस्फ़ुन्नहार के बाद हुई। शहादत के वक़्त उम्रे शरीफ़ ५६ बरस पांच माह पांच दिन थी। (मक़्तले इमाम अबू इस्हाक़ अस्फ़रायनी)

७१) अबू लहब की लौंडी सुवैबा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलावा आप के चचा सय्यिदुना हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को भी दूध पिलाया था। (नुज़्हतुल क़ारी)

७२) हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु वाक़ए करबला के वक़्त २४ साल के थे। मशहूर है कि ईरान के आख़िरी ताजदार यज़्दुजर्द की बेटी हज़रत शहर बानो के बत्न से हैं। (मक़्तले इमाम अबू इस्हाक़ अस्फ़रायनी)

७३) अहले सुन्नत के उलमा मुहक़्क़िक़ीन जैसे कि इमाम जलालुद्दीन सियूती, अल्लामा इब्ने हजर हीतमी, इमाम कुर्तबी, हाफ़िज़ शम्सुद्दीन दमिश्क़ी, क़ाज़ी अबू बक्र इब्नुल अरबी मालिकी, शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी, मौलाना अब्दुल हक़ मुहाजिर मदनी रहमतुल्लाहि अलैहिम का यही अक़ीदा और

क़ौल है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माँ बाप दोनों यक़ीनन बिला शुबह मोमिन हैं। इमाम कुर्तबी ने अपनी किताब तज़किरा में लिखा है कि हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब हज्जतुल वदाअ में हम लोगों को साथ लेकर चले और हजून की घाटी पर गुज़रे तो रंज और ग़म में डूबे हुए रोने लगे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रोता देख कर मैं भी रोने लगी। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी ऊंटनी से उतर पड़े और कुछ देर बाद मेरे पास वापस तशरीफ़ लाए तो खुश खुश मुस्कुराते हुए तशरीफ़ लाए। मैं ने पूछा या रसूलल्लाह! आप पर मेरे माँ बाप कुरबान हों, क्या बात है कि आप रंज और ग़म में डूबे हुए ऊंटनी से उतरे और वापस लौटे तो खुश खुश मुस्कुराते हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं अपनी माँ हज़रत आमिना की क़ब्र की ज़ियारत के लिये गया था और मैं ने अल्लाह तआला से सवाल किया कि वह उन्हें ज़िंदा फ़रमा दे तो अल्लाह तआला ने उन्हें ज़िंदा फ़रमा दिया और वह ईमान ले आईं। (मदारिकुत तन्ज़ील, जि: २)

७४) अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना इमामे हसन रज़ियल्लाहु अन्हु इब्ने सय्यिदुना मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम को पांच बार ज़हर दिया गया मगर असर न किया। छटी बार के ज़हर ने आप के जिगर को टुकड़े टुकड़े कर दिया। (सबए सनाबिल शरीफ़)

७५) एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने माँ बाप की क़ब्रों के पास बहुत रोए और एक खुश्क दरख़्त ज़मीन में बो दिया और फ़रमाया अगर यह दरख़्त हरा हो गया तो यह इस बात की निशानी होगी कि इन दोनों का ईमान लाना मुमकिन है। चुनान्चे वह दरख़्त हरा हो गया। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ की बरकत से वह दोनों अपनी क़ब्रों से निकल कर इस्लाम लाए और फिर अपनी अपनी क़ब्रों में चले गए। (सीरतुल मुस्तफ़ा)

७६) एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा रो रही हैं। आप ने रोने का सबब पूछा। उन्हों ने कहा: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हज़रत आयशा और हज़रत हफ़सा ने यह कहा है कि हम दोनों तुम से बारगाहे रसालत में ज़्यादा इज़्ज़तदार हैं क्योंकि हमारा ख़ानदान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिलता है। यह सुन कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ सफ़िया तुम ने उन दोनों से यह क्यों न कह दिया कि तुम दोनों मुझ से बेहतर कैसे हो

सकती हो जब कि हारून अलैहिस्सलाम मेरे बाप हैं और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मेरे चचा हैं और मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे शौहर हैं। (ज़ुरक़ानी, जिः २)

७७) जनाबे इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की करबला की आख़िरी नमाज़ जो ख़न्जर तले अदा हुई वह ख़ास कअबे में लाखों नमाज़ों से अफ़ज़ल है। (मक़्तले इमाम अबू इस्हाक़ अस्फ़रायनी)

७८) हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हसन सीने से लेकर सर तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बहुत ज़्यादा हम शक्ल हैं और हुसैन नीचे के बदन में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुशाबह है। (मक़्तले इमाम अबू इस्हाक़ अस्फ़रायनी)

७९) रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है: अल्लाह से मुहब्बत करो क्योंकि वह तुम्हें नेअमतें देकर परवरिश करता है और इस मुहब्बत की वजह से मुझ से मुहब्बत करो और मेरी मुहब्बत की वजह से मेरे अहले बैत से भी। (तफ़सीरे नईमी)

८०) हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु कअबे का हल्क़ा पकड़े कह रहे थे: मैं ने हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है आप फ़रमा रहे थे कि मेरे अहले बैत की मिसाल ऐसी है जैसे हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती, जो शख़्स इस में सवार हो गया वह डूबने से बच गया और जो रह गया वह डूब गया। (नुज़्हतुल क़ारी)

८१) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं ने तुम को ख़्वाब में तीन बार देखा। तुम को एक रेशम के टुकड़े में रख कर एक फ़रिश्ता लाया करता और कहता यह आप की ज़ौजा हैं। मैं दिल में कहता कि अगर यह अल्लाह की तरफ़ से है तो पूरा हो कर रहेगा। (बुख़ारी शरीफ़)

८२) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अच्छी औरतों में से मरयम बिन्ते इमरान काफ़ी हैं और ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद और फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद और आसिया फ़िरऔन की बीवी। (तफ़सीरे नईमी)

८३) हज़रत मूसा बिन तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि मैं ने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से ज़्यादा किसी को फ़क़ीह नहीं देखा। (तफ़सीरे नईमी)

८४) हज़रत बीबी फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा चाल ढाल में अपने

वालिदे माजिद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुशाबह थीं। (तफ़सीरे नईमी)

८५) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत जअफ़रे तय्यार रज़ियल्लाहु अन्हु को मिस्कीनों से बहुत मुहब्बत थी। आप उन्हीं के पास बैठा करते थे और उन्हीं से बात चीत किया करते थे। रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस वजह से आप की कुन्नियत अबुल मसाकीन रखी थी। (उस्वए सहाबा)

८६) हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हर नबी के सात नजीब मुहाफ़िज़त करने वाले होते हैं और मुझ को चौदा दिये गए हैं। हम ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! वह कौन कौन लोग हैं? फ़रमाया: मैं और मेरे दोनों बेटे हसन और हुसैन और जअफ़र और हमज़ा और अबू बक्र और उमर और मुसअब इब्ने उमैर और बिलाल और सलमान और अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद और अबू ज़र और मक़दाद रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन। (सीरते रसूले अरबी)

८७) हज़रत अब्दे मनाफ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चौथे दादा थे उन का अस्ल नाम मुग़ीरा था। उन की पेशानी में नूर झलकता था इस लिये उन्हें क़मरुल बत्हा यानी वादिये मक्का का चाँद कहा जाता था। (ज़ियाउन्नबी)

८८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परदादा हाशिम का अस्ल नाम अम्र था और रुत्बे की बुलन्दी के सबब उन्हें अम्रुल उला भी कहते थे। (ज़ियाउन्नबी)

८९) हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की कई बीवियां थीं उन में बनू ख़ुज़ाआ के एक बड़े घराने की ख़ातून लुब्ना थीं। उन के बत्न से अबू लहब पैदा हुआ। उस का अस्ल नाम अब्दुल उज़्ज़ा था। वह बहुत ख़ूबसूरत था, इस लिये उस की कुन्नियत अबू लहब रखी गई थी।। एक और अमीर घराने की ख़ातून नतीला हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के निकाह में आई। यह इस क़दर दौलत मन्द थीं कि उन्हों ने बैतुल हराम पर रेशम का ग़िलाफ़ चढ़ाया था। इन के बत्न से हज़रत अब्बास पैदा हुए। तबक़ाते इब्ने सअद में है कि अब्बास शरीफ़ दानिशमन्द, हैबत और रोअब वाले आदमी थे। नतीला ही के बत्न से हज़रत अब्बास के भाई ज़रार और क़स्सिम पैदा हुए। बनू ज़हरा के क़बीले की लड़की हाला से भी हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने शादी की। इन से हज़रत हमज़ा, अल मुक़व्विम, मुग़ीरा और एक बेटी सफ़िया पैदा हुई। अब्दुल मुत्तलिब की एक बीवी मुमफ़िना थीं इन से ग़ैदाक़ पैदा हुए और एक बीवी फ़ातिमा के बत्न से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिद हज़रत अब्दुल्लाह, अबू तालिब,

ज़ुबैर और पांच बेटियां आतिका, उमैमा, बर्रा, बैज़ा और अर्वा पैदा हुईं। अब्दुल मुत्तलिब की एक बीवी सफ़िया से हारिस पैदा हुए, यह सब से बड़े बेटे थे और अब्दुल मुत्तलिब की ज़िंदगी ही में इन्तिक़ाल कर गए थे। (ज़ियाउन्नबी)

६०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दाद हाशिम की इक़बाल मन्दी से उन के भतीजे उमैय्या अब्दुश शम्स को हसद हो गया था। उस ने अरब के रिवाज के मुताबिक़ मजलिस क़ाइम करके मुफ़ाख़िरत आराई का चैलेन्ज दिया। मजलिस क़ाइम हुई और सालिस ने हाशिम की बरतरी का फ़ैसला दे दिया। उमैय्या को वादे के मुताबिक़ जिला वतनी क़ुबूल करनी पड़ी और जुर्माने में दो ऊंट देने पड़े। इस से बनू हाशिम और बनू उमैय्या में अदावत की बुनियाद पड़ी। (ज़ियाउन्नबी)

६१) हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के बाल वक़्त से पहले सफ़ेद हो गए थे इस लिये वस्मा यानी काला ख़िज़ाब इस्तेमाल करते थे। अरबों में वह पहले शख़्स थे जिन्हों ने वस्मा इस्तेमाल किया। (ज़ियाउन्नबी)

६२) उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा की वालिदा का नाम उमैमा था जो हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की बेटी थीं। आप का पहला निकाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज़ाद किये हुए गुलाम और मुंह बोले बेटे हज़रत ज़ैद बिन हारिस से हुआ था। ज़िलक़अदा सन पांच हिजरी में उन से तलाक़ के बाद आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आईं। उस वक़्त उन की उम्र ३८ साल थी। पर्दे के हुक्म वाली आयत आप के वलीमे की दावत के मौक़े पर नाज़िल हुई। आप ने ५३ बरस की उम्र में सन २० हिजरी में इन्तिक़ाल फ़रमाया। (ज़ियाउन्नबी)

६३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद में सब से पहले क़ासिम पैदा हुए (ग़ालिबन नबुव्वत से ग्यारह साल पहले) जिस तरह यह सब से पहले पैदा हुए थे उसी तरह कमसिनी में सब से पहले इन्तिक़ाल भी किया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कुन्नियत अबुल क़ासिम इन्हीं से मन्सूब है। (ज़ियाउन्नबी)

६४) हज़रत उम्मुल मोमिनीन ख़दीजतुल कुब्रा रज़ियल्लाहु अन्हा के विसाल के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह फ़रमाया। हिजरत के दूसरे साल तक यही काशानए अक़दस में रहीं। सन दो हिजरी में हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा रुख़्सत होकर ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुईं। फिर हिजरत के तीसरे या चौथे साल हज़रत उम्मे सलमा, हज़रत हफ़सा, हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा ख़िदमते मुबारका में आईं। पांचवें साले हिजरत में हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश, छटे साल में हज़रत

ज़ुवैरिया, सातवें साले हिजरत में हज़रत सफ़िया और हज़रत मैमूना और हज़रत उम्मे हबीबा से अक़्द फ़रमाया। हिजरत के सातवें साल नौ अज़वाजे मुतह्हरात इकट्ठा हुईं। (सीरते रसूले अरबी)

९५) हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में मशहूर है कि इन का नाम फ़ाख़्ता था, एक क़ौल है कि फ़ातिमा था, तीसरा क़ौल यह है कि हिन्द था। यह हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम की हक़ीक़ी बहन थीं। इस्लाम के ज़हूर से पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन से निकाह का पैग़ाम अबू तालिब को दिया और दूसरी तरफ़ हुबैरा बिन अम्र ने भी पैग़ाम भेजा। अबू तालिब ने हुबैरा से उन की शादी कर दी। इस पर हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नागवारी का इज़्हार फ़रमाया तो अबू तालिब ने यह मअज़िरत की कि हम ने उन से यह रिश्ता तय कर लिया था। फ़त्हे मक्का के दिन उम्मे हानी ईमान लाईं। हुबैरा अपनी ज़िद पर अड़ा रहा। वह नजरान भाग गया वहीं कुफ़्र पर उस का ख़ातिमा हुआ। इस के बाद हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर उम्मे हानी को निकाह का पैग़ाम दिया तो उन्हों ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मैं मुसीबत ज़दा हूँ। आप से जाहिलियत और इस्लाम दोनों ज़मानों में मुहब्बत करती रही हूँ। आप मुझे मेरी आँख और कान से ज़्यादा मेहबूब हैं मगर देख लीजिये यह एक बच्चा अभी कितना छोटा है और यह एक दूध पीता है। मुझे इस का अन्देशा है कि मैं बीवी का हक़ अदा न कर पाऊंगी। जब उन के दोनों बच्चे बड़े हो गए तो खुद उम्मे हानी ने अपने आप को पेश किया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अब नहीं, इस लिये कि अल्लाह तआला ने यह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई हैः ऐ नबी, हम ने तुम्हारे लिये हलाल फ़रमाई तुम्हारी वह बीवियां जिन को तुम मेहर दे चुके हो और तुम्हारी कनीज़ें जो अल्लाह ने तुम्हें ग़नीमत में दीं और तुम्हारे चचा की बेटियां और फुफियों की बेटियां और मामुओं की बेटियां और ख़ालाओं की बेटियां जिन्हों ने तुम्हारे साथ हिजरत की। (सूरए अहज़ाब, आयतः ५०) चूंकि उम्मे हानी ने हिजरत नहीं की थी इस लिये वह अज़वाजे मुतह्हरात में शामिल न हो सकीं। (तफ़सीरे नईमी)

९६) हज़रत अब्बास इब्ने अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा थे। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दो साल पहले पैदा हुए। इन की वालिदा का नाम नतीला या नसला था। यह बनी नम्र की थीं। हज़रत अब्बास कम सिनी में एक बार ग़ायब हो गए थे तो उन की माँ ने मन्नत मानी थी कि अगर मेरा बच्चा मिल जाए तो मैं कअबे

पर पर्दा चढ़ाऊंगी। जब यह मिल गए तो उन्हों ने रेशमी पर्दा चढ़ाया। हज़रत अब्बास जाहिलियत और इस्लाम दोनों में इज़्ज़त और सम्मान वाले थे। हाजियों को पानी पिलाना और मस्जिदे हराम की ख़िदमत इन्हीं के सिपुर्द थी। (तफ़सीरे नईमी)

९७) हज़रत इमामे ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु अकाबिर सादाते अहले बैत और अजिल्लए ताबिईन में हैं। इमाम ज़ोहरी ने फ़रमाया कि किसी क़रशी को उन से अफ़ज़ल नहीं देखा। हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम के दौरे ख़िलाफ़त में सन ३६ हिजरी में पैदा हुए और सन ९४ हिजरी में ५८ साल की उम्र पाकर मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात पाई। जन्नतुल बक़ीअ में अपने ताया सय्यिदुना इमाम हसने मुज्तबा और दादी साहिबा सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा के पहलू में दफ़्न हैं। सलातीने उस्मानिया ने अहले बैत के तमाम मज़ारात पर एक आलीशान कुब्बा बनवा दिया था जो कुब्बए अब्बास के नाम से मशहूर था। इब्ने सऊद नज्दी ने कुब्बे को ढा दिया और तमाम मज़ारात को ज़मीन के बराबर कर दिया। वाक़ए करबला के वक़्त इमामे ज़ैनुल आबिदीन की उम्रे शरीफ़ २४ साल की थी। बीमारी की वजह से बच गए। मशहूर यह है कि ईरान के आख़िरी ताजदार यज़्दुजर्द की बेटी शहर बानो के बत्न से हैं। कुछ तारीख़ दानों ने इस का सख़्ती से इन्कार किया है। (तफ़सीरे नईमी)

९८) अबू तालिब पर लअनत हरगिज़ जाइज़ नहीं इस लिये कि उन के कुफ़्र पर मरने की कोई दलील नहीं है। बल्कि शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने मदारिजुन नबुव्वह में उन के ईमान पर मौत की रिवायत नक़्ल की है। इस के अलावा रूहुल बयान में एक जगह उन का मरने के बाद ज़िंदा होना और ईमान लाना साबित किया गया है। फ़र्ज़ करें कि उन की मौत कुफ़्र पर हुई तब भी चूंकि हमारे आक़ा व मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उन्हों ने बहुत ख़िदमत की और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी उन से बहुत मुहब्बत थी इस लिये उन को बुरा कहना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ईज़ा का सबब होगा, उन का ज़िक्र ख़ैर से ही करना चाहिये या फिर ख़ामोश रहना चाहिये। (तफ़सीरे नईमी)

९९) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ज़वए बनी मुस्तलक़ से मदीनए मुनव्वरा वापस तशरीफ़ ला रहे थे। हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा हमराह थीं। आप की सवारी का ऊंट अलग था, उस पर हौदज था। आप हौदज में पर्दा डाल कर बैठ जातीं, हम्माल हौदज उठा कर ऊंट पर बांध देते।

आप हल्की फुल्की थीं, उम्रे शरीफ भी कम थी। एक रोज़ इत्तिफ़ाक़ से एक मन्ज़िल पर आप को हौदज से बाहर वीराने की तरफ़ जाने की ज़रूरत पेश आई। वापस आई तो क़ाफ़िला कूच कर चुका था। हौदज पर पर्दे पड़े हुए थे। हम्मालों का ख़्याल भी उधर न गया कि आप मौजूद नहीं हैं। अब जब आप आईं तो सख़्त अफ़सोस किया लेकिन आप ने ख़्याल किया कि आगे चल कर जब मेरी तलाश होगी और मैं न मिलूंगी तो कोई ढूंडने बहरहाल यहाँ आएगा। रात को चादर लपेट कर आप वहीं बैठ गईं और आप को नींद आ गई। एक सहाबी हज़रत सफ़वान थे जिन की ड्यूटी यह थी कि क़ाफ़िले से कुछ फ़ासले पर पीछे पीछे चला करें, गिरी पड़ी चीज़ की और भूले भटके की ख़बरगीरी के लिये। वह जब सुब्ह सवेरे वहाँ पहुंचे तो देखा कोई सो रहा है। आप क़रीब आए और पहचान लिया और बेइख़्तियार पुकार उठेः इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। आवाज़ से हज़रत सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की आँख खुल गई। मुंह ढाँप लिया। हज़रत सफ़वान ने अपना ऊंट क़रीब लाकर बिठा दिया, उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा पर्दे के साथ सवार हो गईं। उन्हों ने ऊंट की नकेल थामे क़ाफ़िले में जाकर मिला दिया। बात कुछ भी न थी मगर मदीना मुनाफ़िक़ों का घढ़ था। उन के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई को एक शगूफ़ा हाथ आ गया। उस ने अपनी ख़ुबासत से ख़ूब ख़ूब बातें फैलाईं। उस के साथी भी पैदा हो गए। एक माह बाद सूरए नूर में बराअत की आयतें नाज़िल हुईं। (तफ़सीरे नईमी)

१००) हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ ख़ुद हज़रत ज़ैनब के भाई अबू अहमद जहश ने पढ़ाया। चार सौ दिरहम का मेहर ख़ुद सरकार ने रखा। वलीमे की दावत बड़े पैमाने पर हुई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने और किसी बीबी साहिबा का वलीमा इस पैमाने पर और इतना अच्छा नहीं किया। (ज़ियाउन्नबी)

१०१) अबू लहब के मानी हैं शोअलों का बाप। यह कुन्नियत क़ुरैश के एक सरदार अब्दुल उज़्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब की थी। यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चचा था और चूंकि इस के चेहरे का रंग बहुत ही सुर्ख़ था, इस की आतिशे रुख़सारी की वजह से लोग इसे अबू लहब कहने लगे थे। कुछ मुहक़्क़ीन ने लिखा है कि क़ुरआन में जो अबू लहब आया है वह कुन्नियत के तौर पर नहीं बल्कि पेश ख़बरी के तौर पर आया है कि इस शख़्स का अंजाम जहन्नमी होना है। (नुज़्हतुल क़ारी)

१०२) हज़रत अब्दुल मुत्तलिब पहले शख़्स हैं जो तहन्नुस किया करते थे

यानी हर साल माहे रमज़ान में कोहे हिरा में जाकर अल्लाह के ज़िक्र व फ़िक्र में गोशा नशीन रहा करते। (ज़ियाउन्नबी)

१०३) हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लहि तआला अलैहि ने अहले बैते रसूलुल्लाह की तारीफ़ में यूं फ़रमाया हैः ऐ अहले बैते रसूल, तुम्हारी मुहब्बत कुरआन की वजह से फ़र्ज़ है। तुम्हारी शान के लिये यही काफ़ी है कि जिस ने तुम पर दुरूद न पढ़ा उस की नमाज़ कुबूल न हुई। (तफ़सीरे नईमी)

१०४) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बिअसते अक्दस से तीन सौ बरस पहले यह शेअर एक पत्थर पर लिखा हुआ मिलाः अतरजू उम्मतुन कतलत हुसैनन - शफ़ाअतां जद्दिही यौमल हिसाबी। यानी क्या हुसैन के क़ातिल यह उम्मीद रखते हैं कि कियामत के दिन उस के नाना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत पाएंगे। यही शेअर रोम के एक गिरजा घर में लिखा हुआ पाया गया मगर लिखने वाला मालूम न हुआ। (कससुल अम्बिया)

१०५) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़वाजे मुतह्हिरात में से छः ख़ानदाने कुरैश के ऊंचे घरानों से ताल्लुक रखती थीं। यह थीं: हज़रत ख़दीजा बिन्ते ख़्वैलिद, हज़रत आयशा सिद्दीका बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक, हफ़सा बिन्ते उमरे फ़ारूक, उम्मे हबीबा बिन्ते अबू सुफ़ियान, उम्मे सलमा बिन्ते अबू उमैय्या, सौदा बिन्ते ज़मआ। चार अज़वाज ख़ानदाने कुरैश से नहीं थीं बल्कि अरब के दूसरे कबीलों से ताल्लुक रखती थीं। यह थीं: हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश, मैमूना बिन्ते हारिस, ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा जो उम्मुल मसाकीन कहलाती हैं, हज़रत जवैरिया बिन्ते हारिस और एक बीबी सफ़िया बिन्ते हुय्यी अरब नस्ल की न थीं बल्कि ख़ानदाने बनी इस्राईल की एक शरीफ़ नस्ब वाली रईसज़ादी थीं। (तफ़सीरे नईमी)

१०६) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तशरीफ़ लाए और अर्ज़ कियाः ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह ख़दीजा हैं जो आप के पास एक बर्तन लेकर आ रही हैं जिस में खाना है। जब यह आप के पास आ जाएं तो आप उन से उन के रब का और मेरा सलाम कह दें और उन को यह खुशख़बरी सुना दें कि जन्नत में उन के लिये मोती का एक घर बना है जिस में न कोई शोर होगा न कोई तकलीफ़ होगी। (बुख़ारी, जिल्दः १, पानः ५३९)

१०७) एक बार जब हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक से हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की बहुत ज़्यादा तारीफ़ सुनी तो उन्हें ग़ैरत आ गई और उन्हों ने कह दिया कि

अब तो अल्लाह तआला ने आप को उन से बेहतर बीवी अता फ़रमा दी। यह सुन कर आप ने फ़रमाया: नहीं, ख़ुदा की क़सम ख़दीजा से बेहतर मुझे कोई बीवी नहीं मिली। जब सब लोगों ने मेरे साथ कुफ़्र किया उस वक़्त वह मुझ पर ईमान लाईं और जब सब लोग मुझे झुटला रहे थे उस वक़्त उन्हों ने मेरी तस्दीक़ की और जिस वक़्त कोई शख़्स मुझे कोई चीज़ देने को तय्यार न था उस वक़्त ख़दीजा ने मुझे अपना सारा माल दे दिया और उन्हीं के शिकम से अल्लाह तआला ने मुझे औलाद अता फ़रमाई। (ज़ुरक़ानी, जि: ३, पान: २२४)

१०८) इमाम तबरानी ने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से एक हदीस नक़्ल की है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को दुनिया में जन्नत का अंगूर खिलाया। (ज़ुरक़ानी, जि: ३, पान: २२६)

१०९) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का बयान है कि हज़रत सौदा ने एक सपना देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदल चलते हुए उन की तरफ़ तशरीफ़ लाए और उन की गर्दन पर अपना मुक़द्दस पाँव रख दिया। जब हज़रत सौदा ने अपना यह ख़्वाब अपने शौहर सकरान बिन अम्र से बयान किया तो उन्हों ने कहा कि अगर तेरा यह ख़्वाब सच्चा है तो मैं यक़ीनन जल्द ही मर जाऊंगा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुझ से निकाह फ़रमाएंगे। दूसरी रात हज़रत सौदा ने यह ख़्वाब देखा कि एक चाँद टूट कर उन के सीने पर आ गिरा है। इस ख़्वाब की तअबीर उन के शौहर हज़रत सकरान रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह दी कि अब मैं बहुत जल्द इस दुनिया से चला जाऊंगा और तुम मेरे बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निकाह करोगी। ऐसा ही हुआ कि उसी दिन हज़रत सकरान बीमार पड़े और कुछ दिन बाद इन्तिक़ाल फ़रमाया। (ज़ुरक़ानी, जि: ३, पान: २२७)

११०) उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा बहुत सख़ी और फ़य्याज़ बीबी थीं। एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दिरहमों से भरा हुआ एक थैला उन की ख़िदमत में भेजा। आप ने पूछा कि यह क्या है? लाने वाले ने बताया कि दिरहम हैं। आप ने फ़रमाया: भला दिरहम खजूरों के थैले में भेजे जाते हैं? यह कहा और उठा कर उसी वक़्त उन तमाम दिरहमों को मदीने के फ़क़ीरों और मिस्कीनों पर तक़सीम कर दिया। (नुज़्हतुल क़ारी)

१११) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की वालिदा का नाम उम्मे रूमान था। हज़रत सिद्दीक़ा छः बरस की थीं जब हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एलाने नबुव्वत के दसवें साल माहे शव्वाल में हिजरत से तीन साल पहले आप से निकाह फ़रमाया। (तफ़सीरे नईमी)

११२) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि किसी बीवी के लिहाफ़ में मेरे ऊपर वही नहीं उतरी मगर आयशा जब मेरे साथ बिस्तरे नबुव्वत पर सोती रहती हैं तो उस हालत में भी मुझ पर अल्लाह की वही अतरती रहती है। (बुख़ारी, जिः १, पानः ५३२)

११३) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दो हज़ार दो सौ हदीसें रिवायत की हैं। इन में से १७४ हदीसें ऐसी हैं जो बुख़ारी और मुस्लिम दोनों किताबों में हैं और ५४ हदीसें ऐसी हैं जो सिर्फ़ बुख़ारी में हैं और ६८ हदीसें वह हैं जिन को सिर्फ़ इमाम मुस्लिम ने अपनी किताब में तहरीर किया है। बाक़ी हदीसें दूसरी किताबों में मज़कूर हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

११४) हज़रत बीबी आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाया करती थीं कि मुझे तमाम अज़्वाजे मुतह्हिरात पर ऐसी दस फ़ज़ीलतें हासिल हैं जो दूसरी अज़्वाज को हासिल नहीं हुईं। (१) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे सिवा किसी दूसरी कुंवारी औरत से निकाह नहीं किया। (२) मेरे सिवा अज़्वाजे मुतह्हिरात में से कोई भी ऐसी नहीं जिस के माँ बाप दोनों मुहाजिर हों। (३) अल्लाह तआला ने मेरी बराअत और पाकदामनी का बयान आसमान से कुरआन में नाज़िल फ़रमाया। (४) निकाह से पहले हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने एक रेशमी कपड़े में मेरी सूरत लाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिखला दी थी और आप तीन रातें ख़्वाब में मुझे देखते रहे। (५) मैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ही बर्तन में से पानी ले लेकर गुस्ल किया करते थे। यह शर्फ़ और किसी बीबी को हासिल नहीं हुआ। (६) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते थे और मैं आप के आगे सोई रहती थी। (७) मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक लिहाफ़ में सोती थी और आप पर अल्लाह की वही नाज़िल हुआ करती थी। (८) वफ़ाते अक़दस के वक़्त मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी गोद में लिये बैठी थी और आप का सरे मुबारक मेरे सीने और हलक़ के बीच था। इसी हालत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल हुआ। (९) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरी बारी के दिन वफ़ात पाई। (१०) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्रे अनवर ख़ास मेरे घर में बनी। (तफ़सीरे नईमी)

११५) उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद हज़रत

उमरे फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और वालिदा हज़रत ज़ैनब बिन्ते मज़ऊन थीं जो एक मशहूर सहाबिया हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सन तीन हिजरी में हज़रत हफ़सा से निकाह फ़रमाया। इन के मिज़ाज में कुछ सख़्ती थी इसी लिये हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु हर वक़्त इसी फ़िक्र में रहते थे कि कहीं उन की सख़्त कलामी से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दिल आज़ारी न हो जाए। इसी लिये आप बार बार अपनी बेटी को समझाते रहते थे। हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साठ हदीसें रिवायत की हैं जिन में से पांच हदीसें बुख़ारी शरीफ़ में मज़कूर हैं। (तफ़सीरे नईमी)

११६) उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा सन चार हिजरी में अपने पहले शौहर हज़रत अबू सलमा अब्दुल्लाह बिन असद के इन्तिक़ाल के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आईं। आप ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ३७८ हदीसें रिवायत की हैं। चौरासी बरस की उम्र पाकर मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात पाई। (तफ़सीरे नईमी)

११७) उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का अस्ल नाम रमला है। इन के वालिद अबू सुफ़ियान जब कुफ़्र की हालत में थे और सुलहे हुदैबिया की तजदीद के लिये मदीने आए तो बेतकल्लुफ़ इन के मकान में जाकर बिस्तरे नबुव्वत पर बैठ गए। हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने बाप की ज़रा भी परवाह नहीं की और यह कह कर अपने बाप और मक्के के इस मशहूर रसदार को बिस्तर से उठा दिया कि यह बिस्तरे नबुव्वत है, मैं कभी यह गवारा नहीं कर सकती कि एक नापाक मुश्रिक इस पाक बिस्तर पर बैठे। (तफ़सीरे नईमी)

११८) हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने ६५ हदीसें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नक़्ल की हैं जिन में से दो हदीसें बुख़ारी और मुस्लिम दोनों किताबों में मौजूद हैं। एक हदीस वह है जिस को तन्हा मुस्लिम ने रिवायत किया है। आप की वफ़ात सन ४४ हिजरी में मदीनए मुनव्वरा में हुई और जन्नतुल बक़ीअ में उम्महातुल मोमिनीन के हज़ीरे में दफ़्न हुईं। (तफ़सीरे नईमी)

११९) उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी हज़रत उमैमा बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब की बेटी हैं। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें निकाह का पैग़ाम भेजा तो आप इस क़दर खुश हुईं कि अपना ज़ेवर अतार कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की उस ख़ादिमा को इन्आम में दे दिया जो यह खुशख़बरी लाई थी और खुद सज्दे में गिर गईं और इस नेअमत के शुक्रिये में दो माह लगातार रोज़ेदार रहीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन के निकाह पर जितनी बड़ी दावते वलीमा फ़रमाई उतनी बड़ी दावत अज़्वाजे मुतहि्हरात में से किसी के निकाह के मौके पर नहीं फ़रमाई। (नुज़्हतुल क़ारी)

१२०) उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती थीं कि मुझे अल्लाह तआला ने एक ऐसी फ़ज़ीलत अता फ़रमाई है जो अज़्वाजे मुतहि्हरात में से किसी को भी नहीं नसीब हुई क्योंकि तमाम अज़्वाजे मुतहि्हरात का निकाह तो उन के बाप दादा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ किया लेकिन मेरा निकाह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अल्लाह अताला ने कर दिया। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ग्यारह हदीसें रिवायत की हैं जिन में से दो हदीसें बुख़ारी और मुस्लिम दोनों किताबों में हैं। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ५३ साल की उम्र में सन २० हिजरी या २१ हिजरी में दुनिया से रुख़सत हुईं और मदीने में जन्नतुल बक़ीअ में दफ़्न की गईं। (तफ़सीरे नईमी)

१२१) उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा ज़मानए जाहिलियत में चूंकि ग़रीबों और मिस्कीनों को खाना खिलाया करती थीं इस लिये आप का लक़ब उम्मुल मसाकीन (मिस्कीनों की माँ) है। सन ३ हिजरी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन से निकाह फ़रमाया। निकाह के बाद सिर्फ़ दो तीन महीने ज़िंदा रहीं। और रबीउल आख़िर सन ४ हिजरी में वफ़ात पाई। (ज़ुरक़ानी, जि: ३, पान: २४६)

१२२) उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम पहले बर्रा था लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन का नाम बदल कर मैमूना (बरकत देने वाली) रख दिया। (नुज़्हतुल क़ारी)

१२३) उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा की वालिदा हिन्द बिन्ते औफ़ थीं। इन के बारे में आम तौर पर यह कहा जाता है कि दामादों के एतिबार से रूए ज़मीन पर कोई बुढ़िया इन से ज़्यादा खुशनसीब नहीं हुई क्योंकि इन के दामादों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत शद्दाद रज़ियल्लाहु अन्हु जैसी बुज़ुर्ग हस्तियां शामिल हैं। (ज़ुरक़ानी, जि: ३, पान: २५१)

१२४) उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा से कुल ७६ हदीसें मरवी हैं जिन में से सात हदीसें बुख़ारी और मुस्लिम दोनों किताबों

में हैं और एक हदीस सिर्फ़ बुख़ारी में है और एक हदीस सिर्फ़ मुस्लिम में है। (नुज्हतुल कारी)

१२५) उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवैरिया कबीलए बनी मुस्तलिक के सरदारे आज़म हारिस बिन ज़रार की बेटी हैं। ग़ज़वए मुरैसीअ में कैदी बन कर आई थीं और कनीज़ की हैसियत से हज़रत साबित बिन कैस रज़ियल्लाहु अन्हु के हिस्से में आईं। हज़रत साबित ने यह लिख कर दे दिया कि तुम इतनी रकम मुझे दो तो मैं तुम्हें आज़ाद कर दूंगा। आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुईं और माली इमदाद की दरख़्वास्त की। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन की सारी रकम अपने पास से अदा करके उन्हें आज़ाद कर दिया और फिर आप से निकाह फ़रमा लिया। जब इस्लामी लश्कर में यह ख़बर फैली कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जुवैरिया से निकाह फ़रमाया है तो तमाम मुजाहिदीन एक ज़बान होकर कहने लगे कि जिस ख़ानदान में हमारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निकाह फ़रमा लिया उस ख़ानदान का कोई फ़र्द लौंडी और ग़ुलाम नहीं रह सकता। चुनान्चे इस ख़ानदान के जितने लौंडी और ग़ुलाम मुजाहिदीने इस्लाम के कब्ज़े में थे सब के सब आज़ाद कर दिये गए। (तफ़सीरे नईमी)

१२६) उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सात हदीसें रिवायत की हैं जिन में से दो बुख़ारी शरीफ़ में और दो मुस्लिम शरीफ़ में हैं। आप ने ६५ साल की उम्र पाकर सन ५० हिजरी में मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात पाई और जन्नतुल बक़ीअ में दफ़्न हुईं। (ज़ुरक़ानी, जि: ३)

१२७) उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा का अस्ली नाम ज़ैनब था। यह यहूदियों के कबीलए बनू नुज़ैर के बड़े सरदार हुय्यी बिन अख़्ताब की बेटी थीं। यह ख़ानदाने बनी इस्राईल में से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के भाई हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की औलाद से हैं। आप ने दस हदीसें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत की हैं जिन में से एक हदीस बुख़ारी और मुस्लिम दोनों किताबों में है। साठ बरस की उम्र में सन ५० या ५२ हिजरी में वफ़ात पाई और जन्नतुल बक़ीअ में दफ़्न हुईं। (ज़ुरक़ानी, जि: ३, पान: २५६ व मदारिज, जि: २, पान: ४८३)

१२८) हरमे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में अगर्चे अज़्वाजे मुतह्हिरात बयक वक़्त सिर्फ़ नौ थीं मगर दो बाँदियां भी थीं एक मारिया क़िब्तिया दूसरी रैहाना। (नुज्हतुल कारी)

१२९) एक बार अज़वाजे मुतह्हिरात ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि सरकार आप की वफ़ात के बाद पहले कौन बीबी साहिबा हुज़ूर से मिलेंगी? फ़रमायाः लम्बे हाथों वाली। सब ने अपने अपने हाथ नापे तो बीबी सौदा के हाथ लम्बे थे। मगर बाद में मालूम हुआ कि लम्बे हाथ से मुराद सख़ावत थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद तमाम अज़्वाज में हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने पहले वफ़ात पाई। वह सख़ावत में सब से मुमताज़ थीं। (तफ़सीरे नईमी)

१३०) मक्कए मुअज़्ज़मा से क़रीब बारह मील के फ़ासले पर एक जगह का नाम है सरिफ़। इस जगह की ख़ुसूसियत यह है कि इसी जगह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इहराम की हालत में उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह फ़रमाया था और फिर मक्के से वापसी के बाद उसी जगह अपनी क़ुरबत बख़्शी और यहीं सन ५१ या ५३ हिजरी में इन का विसाल हुआ और यहीं वह मदफ़ून हैं। आप हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़ाला थीं। (नुज़्हतुल क़ारी)

१३१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इक्कीसवीं पुश्त के दादा हज़रत अदनान पहले शख़्स हैं जिन्हों ने कअबे को ग़िलाफ़ पहनाया था। आप का यह नाम इसलिये मशहूर हुआ कि यह अदन से बना है जिस के मानी क़ायम और बाक़ी रहना हैं। क्योंकि शैतानों, जिन्नों और इन्सानों से इन को मेहफ़ूज़ रखने के लिये अल्लाह तआला ने इन की हिफ़ाज़त के लिये फ़रिश्ते मुक़र्रर कर दिये थे। (अस्सीरतुन नबविया)

१३२) अल्लाह तआला ने जब बुख़्त नस्सर को अरब पर मुसल्लत कर दिया तो अल्लाह तआला ने अरमिया अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के २० वीं पुश्त के दादा हज़रत मअद बिन अदनान को बुराक़ पर सवार करा के निकाल ले जाएं ताकि उन्हें कोई तकलीफ़ न पहुंचे। अल्लाह तआला ने हज़रत अरमिया अलैहिस्सलाम को बताया कि मैं मअद की पुश्त से एक नबीये करीम पैदा करने वाला हूँ जिस के ज़रिये मैं रसूलों के सिलसिले को ख़त्म कर दूंगा। हज़रत अरमिया अलैहिस्सलाम अल्लाह के हुक्म से मअद को अपने साथ शाम ले गए जहाँ हज़रत मअद ने बनी इस्राईल के बीच परवरिश पाई और बुख़्ते नस्सर की मौत के बाद जब फ़ितना टल गया तो आप मक्का वापस आगए। (अस्सीरतुन नबविया)

१३३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के १८ वीं पुश्त के दादा हज़रत

मुज़र चार भाई थे। मुज़र, रबीअह, अयाद और अनमार। एक बार किसी बात पर उन में कुछ इख़्तिलाफ़ हो गया। बाप की वसियत के मुताबिक़ वह नजरान रवाना हुए ताकि अफ़आ जुरहुमी से फ़ैसला कराएं। सफ़र के दौरान मुज़र ने घास देखी जिस को किसी ऊंट ने चरा था। कहने लगे जिस ऊंट ने इस घास को चरा है वह काना है। रबीअह ने कहा वह लंगड़ा है, अयाद बोले वह दुम कटा भी है, अनमार ने कहा वह भागा हुआ है। थोड़ी दूर चले थे कि उन्हें एक शख़्स मिला जिस ने कजावा सर पर उठा रखा था। उस ने ऊंट के बारे में पूछा। मुज़र ने कहा क्या वह काना है? वह बोला हाँ। रबीअह ने कहा क्या वह लंगड़ा है? उस ने कहा हाँ। अयाद ने पूछा क्या वह दुम कटा है? वह बोला हाँ। अनमार ने कहा क्या वह भागा हुआ है? उस ने कहा हाँ। बताओ मेरा ऊंट कहां है? उन्हों ने कहा: क़सम से हम ने उसे देखा तक नहीं। बद्दू ने कहा: यह कैसे हो सकता है कि देखे बिना उस के तमाम निशान तुम ने बता दिये? वह बद्दू भी उन लोगों के साथ चल पड़ा कि अफ़आ से अपना फ़ैसला कराए। जब यह लोग अफ़आ के पास पहुंचे तो सब से पहले ऊंट के मालिक ने अपना दावा पेश किया कि इन लोगों ने मेरा ऊंट देखा है लेकिन मुझे बताते नहीं। कहते हैं हम ने देखा ही नहीं। अफ़आ ने उन से पूछा: अगर आप लोगों ने ऊंट को नहीं देखा तो उस की निशानियां कैसे बता दीं? मुज़र ने कहा: मैं ने जब घास को देखा जिसे ऊंट ने चरा है तो वह एक तरफ़ से चरी हुई थी और दूसरी तरफ़ से ज्यों की त्यों लहलहा रही थी। मैं ने समझ लिया वह काना है, जो देखा वह चर लिया और दूसरी तरफ़ जो घास उस ने नहीं देखी छोड़ दी। रबीअह ने कहा: उस के एक पाँव के निशान बहुत साफ़ थे दूसरे पाँव के निशान अधूरे थे, मैं ने समझ लिया कि वह लंगड़ा है। अयाद ने कहा: मैं ने देखा कि उस की मेंगनियाँ सही सालिम हैं तो मैं ने समझ लिया कि उस की दुम कटी हुई है वरना उस की मेंगनियाँ टूटी हुई होतीं। अनमार ने कहा: मैं ने देखा कि उस ने गुन्जान घास चरने के लिये मुंह डाला है लेकिन उसे अधूरा छोड़ कर आगे निकल गया है। मैं ने समझ लिया है कि वह भागा हुआ है, इस लिये वह इत्मिनान से घास नहीं चर रहा है। यह सुन कर जुरहुमी ने ऊंट के मालिक से कहा: जाओ और अपना ऊंट तलाश करो, इन के पास तुम्हारा ऊंट नहीं है। फिर उस ने पूछा आप कौन हैं और यहाँ क्यों आए हैं? इन्हों ने बताया कि हम नज़ार बिन मअद के बेटे हैं और अपने फ़ैसले के लिये आप के पास आए हैं। उस ने कहा: बड़े तअज्जुब की बात है कि आप इतने ज़हीन होते हुए मेरे पास आए हैं। फिर उस ने इन

की एक शानदार दावत की। आख़िर में शराब पेश की। खाने पीने से फ़ारिग़ हुए तो मुज़र ने कहा: ऐसी बेहतरीन शराब उम्र भर में कभी नहीं पी। काश इस के अंगूर की बेल क़ब्र पर न उगी होती। रबीअह ने कहा: ऐसा लज़ीज़ गोश्त आज तक नहीं खाया, काश इस बकरी की परवरिश कुतिया के दूध से न की गई होती। अयाद ने कहा: आज तक ऐसा आदमी नहीं देखा, काश इस की निस्बत ग़ैर बाप की तरफ़ न की गई होती। अनमार ने कहा: मैं ने आज तक ऐसी गुफ़्तगू नहीं सुनी जो हमारे मक़सद के लिये मुफ़ीद हो। जुरहुमी ने उन की बातें सुनीं और हैरत में पड़ कर रह गया। वह अपनी माँ के पास गया और कहा: सच बताओ मैं किस का बेटा हूँ? उस ने बताया: मैं एक सरदार के निकाह में थी वह लावलद था। मैं ने मुनासिब न समझा कि वह लावलद मर जाए। चुनान्चे मैं ने एक शख़्स से बुरा काम किया जिस से तू पैदा हुआ। उस ने अपने बावर्ची से शराब के बारे में पूछा उस ने बताया कि मैं ने तेरे बाप की क़ब्र पर अंगूर की एक बेल लगाई थी उस के अंगूरों से यह शराब तय्यार की गई। उस ने अपने चरवाहे से गोश्त के बारे में पूछा। उस ने बताया कि बकरी ने बच्चा जना और मर गई। मैं ने उस मेमने की परवरिश कुतिया के दूध से की। जुरहुमी उन की ज़िहानत देख कर हैरान रह गया। फिर उस ने दावा सुना और फ़ैसला दिया। इस वाक़िए से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादाओं को हुस्नो जमाल के साथ साथ ज़िहानत का कमाल भी अता किया था। (तारीख़े तबरी, जि: २)

१३४) हज़रत इलियास या अलयास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की १७ वीं पुश्त के दादा थे। अहले अरब इन्हें सय्यिदुल अशीरह कहते थे। सब से पहले क़ुरबानी का जानवर लेकर बैतुल्लाह शरीफ़ जाने वाले यही हैं। हदीस शरीफ़ में है: इलियास को बुरा भला मत कहो वह मोमिन थे। अरब वालों में उन की मिसाल ऐसी थी जैसे लुक़मान हकीम अपनी क़ौम में। (अस्सीरतुन नबविया)

१३५) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की १६ वीं पुश्त के दादा हज़रत मुदरिकह का अस्ली नाम अम्र था। (अस्सीरतुन नबविया)

१३६) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की १५ वीं पुश्त के दादा हज़रत ख़िज़ीमह या ख़ुज़ैमह थे। इन की वालिदा का नाम सलमा बिन्ते असलम था। (अस्सीरतुन नबविया)

१३७) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की १४ वीं पुश्त के दादा का नाम

हज़रत किनानह था। इन की वालिदा हिन्द बिन्ते अम्र बिन कैस थीं। कुछ ने लिखा है कि आप की वालिदा अवानह बिन्ते सअद बिन कैस थीं। (अस्सीरतुन नबविया)

१३८) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की १३ वीं पुश्त के दादा हज़रत नज़र थे। इन का नाम कैस था। अपने चेहरे की दमक और हुस्न व जमाल की वजह से नज़र के लक़ब से मशहूर हुए। इन की वालिदा का नाम बर्रह बिन्ते मुर बिन ऊद बिन ताबख़ह था। (अस्सीरतुन नबविया)

१३९) हुज़ूर नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की १२ वीं पुश्त के दादा का नाम हज़रत मालिक था। इन की वालिदा आतिकह थीं। कुछ ने इकरिशह भी लिखा है हालांकि ऐसा नहीं है। आतिकह नाम और इकरिशह लक़ब था। (अस्सीरतुन नबविया)

१४०) नज़र बिन किनानह की औलाद को कुरैश कहा जाता है। इस की वजह यह बताई जाती है कि नज़र लोगों की ज़रूरतों के बारे में उन से पूछा करते और उन ज़रूरतों को पूरा भी करते। इसलिये उन्हें कुरैश कहा गया जो क़र्श से बना है यानी पूछ गछ करना। (अस्सीरतुन नबविया)

१४१) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ११ वीं पुश्त के दादा का नाम फ़िहर बिन मालिक था। इन की वालिदा जन्दलह बिन्ते आमिर बिन हारिस बिन मज़ाज़ जुरहुमी थीं। कुछ रिवायतों में इन को कुरैश कहा गया है। कुरैश एक समुन्द्री जानवर (व्हेल) का नाम है जो बहुत ही ताक़तवर होता है और समुन्द्री जानवरों को खा डालता है। यह तमाम जानवरों पर हमेशा ग़ालिब ही रहता है, कभी मग़लूब नहीं होता। चूंकि फ़िहर बिन मालिक अपनी शुजाअत और बेपनाह ताक़त की बिना पर अरब के तमाम क़बीलों पर ग़ालिब थे इस लिये अरब वाले उन्हें कुरैश पुकारने लगे। (ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, तारीख़े तबरी)

१४२) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की १० वीं पुश्त के दादा का नाम ग़ालिब था, इन की कुन्नियत अबू तैय्यिम थी, इन के दो बेटे थे एक का नाम लुवई, दूसरे का नाम तैय्यिम। (ज़ियाउन्नबी, जि: १)

१४३) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ९ वीं पुश्त के दादा का नाम लुवई था। इन की वालिदा का नाम आतिकह बिन्ते यख़लिद बिन नज़र बिन किनानह था। लुवई को अल्लाह तआला ने हिल्म और हिकमत की ख़ूबियों से नवाज़ा था। (ज़ियाउन्नबी)

१४४) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ८ वीं पुश्त के दादा कअब की शख़्सियत बड़ी मुमताज़ थी। वह हर जुम्ए को अपने क़बीलए कुरैश को जमा

करते और उन्हें ख़िताब फ़रमाते। कअब की वफ़ात और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बिअसत के बीच ५६० साल का अर्सा है। अरबों ने अपनी तारीख़ की शुरूआत इन की वफ़ात के दिन से की। अबरहा की हार के साल तक यही सने तारीख़ इस्तेमाल करते रहे। हज़रत कअब पर जाकर सय्यिदुना फ़ारूके आज़म का नसब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मिल जाता है। (अल कामिल, इब्ने असीर)

१४५) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ७ वीं पुश्त के दादा हज़रत मुर्रह थे। इनकी कुन्नियत अबू वयक़ज़ह थी। यह हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के छटे दादा हैं। (ज़ियाउन्नबी, जि: १)

१४६) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की छटी पुश्त के दादा का नाम किलाब था। इन की कुन्नियत अबु ज़हरा और नाम हकीम है। कुछ रिवायतों में अरवह आया है। यह कुत्तों के साथ कसरत से शिकार करते थे इसलिये इन का लक़ब किलाब हो गया। यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वालिदा माजिदा सय्यिदा आमिना के तीसरे दादा थे। मशहूर यह है कि अरबी महीनों के नाम इन्हों ने तजवीज़ किये थे। (ज़ियाउन्नबी, जि: १)

१४७) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पांचवीं पुश्त के दादा हज़रत कुसई थे। इन का नाम ज़ैद था। यह ४०० ईसवी के आस पास पैदा हुए। इन की कुन्नियत अबू मुग़ीरह थी। चूंकि आप का बचपन अपने वतन से दूर गुज़रा था इस लिये आप का लक़ब कुसई यानी दूर रहने वाला मशहूर हो गया। (तबक़ाते इब्ने सअद, जि: १)

१४८) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चौथी पुश्त के दादा अब्दे मनाफ़ थे। इन का नाम मुग़ीरह था। यह बहुत हसीन व जमील थे जिस की वजह से इन्हें बत्हा का चाँद कहा जाता था। (ज़ियाउन्नबी, जि: १)

१४९) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तीसरी पुश्त के दादा हाशिम थे। इन का नाम अम्र या उमर था। जब पैदा हुए तो इन के पाँव का अंगूठा इन के भाई अब्दे शम्स के सर से चिपका हुआ था जिसे अलग करने के लिये तेज़ धार आला इस्तेमाल करना पड़ा। एक बार ज़बरदस्त सूखे की वजह से मक्के में फ़ाक़े तक नौबत पहुंच गई। लोगों को कई कई दिन तक खाना न मिलता। हाशिम मक्के से शाम गए, वहाँ से आटा वग़ैरा ख़रीदा और हज के दिनों में लदे हुए ऊंटों के साथ मक्के वापस आए। रोटियां पकाई गईं, ऊंट पर ऊंट ज़िब्ह किये गए। सालन में रोटियाँ कूट कूट कर डाली गईं और सुरीद बनाया गया। सब की दावत की गई। इस वजह से आप को हाशिम कहा जाने लगा

यानी रोटियां तोड़ तोड़ कर शोरबे में मिलाने वाला। आप २५ साल की उम्र में अपने तिजारती कारवाँ को लेकर शाम के इलाक़े में गए, वहीं बीमार हुए और वफ़ात पाई। आप का मज़ार ग़ज़ह शहर में है। (ज़ियाउन्नबी, जि: १)

१५०) हदीस शरीफ़ में है कि अबू लहब को सोमवार के दिन अज़ाब हल्का होता है और उसे उंगली चूसने से पानी मिलता है क्योंकि उस ने सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादते पाक की ख़ुशख़बरी सुनाने वाली अपनी लौंडी सुवैबह को इसी उंगली के इशारी से आज़ाद किया था। (नुज्हतुल क़ारी)

१५१) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं ने अबू तालिब को आग में पाया तो उन्हें वहाँ से निकाल कर आग के हज़ीरे में कर दिया जहाँ आग की गर्मी तो है मगर आग नहीं। सज़ा में यह कमी हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत के बदले में मिली। (नुज्हतुल क़ारी)

१५२) हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिदे माजिद हज़रत अब्दुल्लाह अपने वालिद हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के सब से लाडले बेटे थे। मुल्के शाम के यहूदी कुछ निशानियों से पहचान गए थे कि नबीये आख़िरुज़्ज़माँ के वालिदे माजिद यही हैं। चुनान्चे उन यहूदियों ने हज़रत अब्दुल्लाह को मार डालने की कई बार कोशिश की। एक दिन हज़रत अब्दुल्लाह शिकार के लिये जंगल में तशरीफ़ ले गए। यहूदियों की एक बहुत बड़ी जमाअत भी हथियार वग़ैरा लेकर इस नियत से जंगल में गई कि हज़रत अब्दुल्लाह को धोखे से क़त्ल कर दें। मगर अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त ने इस बार भी उन्हें बचा लिया। ग़ैब से कुछ ऐसे सवार अचानक ज़ाहिर हुए जो इस दुनिया से अलग ही लगते थे। उन सवारों ने आकर यहूदियों को मार भगाया और हज़रत अब्दुल्लाह को हिफ़ाज़त से उन के घर पहुंचा दिया। वहब बिन मनाफ़ भी उस दिन जंगल में थे और उन्हों ने अपनी आँखों से यह सब कुछ देखा था। इस लिये उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह से बेइन्तिहा अक़ीदत और मुहब्बत पैदा हो गई। उन्हों ने घर आकर यह पक्का इरादा कर लिया कि मैं अपनी बेटी आमिना का निकाह अब्दुल्लाह ही से करूंगा। अपनी इस ख़्वाहिश को कुछ दोस्तों के ज़रिये हज़रत अब्दुल मुत्तलिब तक पहुंचा दिया। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने इस रिश्ते को ख़ुशी ख़ुशी मन्ज़ूर कर लिया। (ज़ुरक़ानी व मदारिजुन नबुव्वह)

१५३) हाफ़िज़ आबरू की तारीख़ में लिखा है कि जनाब अमीरुल मोमिनीन हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के पन्द्रह बेटे थे: हसने मुसन्ना, ज़ैद, उमर, हुसैन, अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान, उबैदुल्लाह, इस्माईल, मुहम्मद, याक़ूब, जअफ़र, तल्हा,

हमज़ा, अबू बक्र और क़ासिम। पांच बेटियां थीं: उम्मे हसन, ज़ैनब, उम्मे अब्दुल्लाह, सलमा और फ़ातिमा। (क़ससुल अम्बिया)

१५४) हज़रात हसनैन यानी सय्यिदुना इमाम हसन और सय्यिदुना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की शान में आयाते मुबाहिला, आयाते मोदत और आयते नज़्र नाज़िल हुई। (तफ़सीरे नईमी)

१५५) अज़वाजे मुतह्हिरात उम्मुल मोमिनीन हैं, उम्महातुल मोमिनात नहीं। हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: मैं तुम मर्दों की माँ हूँ तुम्हारी औरतों की माँ नहीं हूँ। (फ़तावए रज़विया, जिः ५)

१५६) उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा अख़लाक़ की इतनी पाकीज़ा थीं कि एक बार हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: सिवाए सौदा के किसी औरत को देख कर मेरे दिल में ख़्वाहिश न पैदा हुई कि इस के जिस्म में मेरी रूह होती। (अज़वाजे मुतह्हिरात, शकीलुर्रहमान निज़ामी मिस्बाही)

१५७) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा का अक़्दे मुबारक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हिजरत के एक साल पहले मक्कए मुकर्रमा में हुआ। उस वक़्त आप की उम्र छः साल थी। आप की रुख़सत हिजरत के बाद सन दो हिजरी में हुई। उस वक़्त आप नौ साल की थीं। (अज़वाजे मुतह्हिरात, शकीलुर्रहमान निज़ामी मिस्बाही)
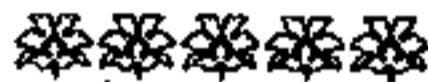
पांचवाँ अध्याय

ख़ुलफ़ाए राशिदीन

१) ख़लीफ़ा और बादशाह ज़िन्दा लोगों के सामने ज़ाहिर चाहिये, मुर्दा या छुपे हुए की बादशाहत या ख़िलाफ़त दुरुस्त नहीं क्योंकि मुल्की इन्तिज़ाम और ख़िलाफ़त का मक़सद इस से हासिल नहीं होता। जब मूसा अलैहिस्सलाम तौरात लेने कोहे तूर पर गए और आरिज़ी तौर पर अपने मुल्क से ग़ायब और लोगों की निगाहों से ओझल हो गए तो जनाब हारून अलैहिस्सलाम को अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर करके गए। अगर ग़ायब की ख़िलाफ़त और सल्तनत दुरुस्त होती तो आप ख़लीफ़ा क्यों मुक़र्रर करते। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हयातुन्नबी हैं मगर आप के ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुए। लिहाज़ा बारहवें इमाम हज़रत मेहदी को ग़ायब ख़लीफ़ा मानना उसूल के हिसाब से ग़लत है। (तफ़सीरे नईमी)

२) एक सहाबीये रसूल ने "सानी अस्नैन अज़हमा फ़िल ग़ारि" वाली आयत से यह इस्तदलाल किया है कि सारे सहाबा की सहाबियत से इन्कार पर कुफ़्र लाज़िम नहीं आता मगर एक सहाबी यानी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की सहाबियत का इन्कार करने वाला क़ुरआने करीम का इन्कार करने वाला ठहरता है और इस से कुफ़्र लाज़िम आता है। (तफ़सीरे नईमी)

३) आज़ाद नौजवानों में सब से पहले ईमान लाए हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और औरतों में हज़रत ख़दीजतुल कुब्रा रज़ियल्लाहु अन्हा और लड़कों में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और ग़ुलामों में हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु और आज़ाद हुए ग़ुलामों में हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु। (बुख़ारी शरीफ़)

४) सय्यिदुना अलीये मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को अब्दुर्रहमान इब्ने मुल्जिम मरावी ने एक औरत क़ुत्ताम के इश्क़ में गिरफ़्तार हो कर उसी के कहने पर शहीद किया। सय्यिदुना मौला अली के जनाज़े की नमाज़ इमाम हसने मुज्तबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई। (नुज़्हतुल क़ारी)

५) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक रात ख़्वाब देखा कि चाँद मक्का में उतरा है और तमाम घरों में उस की रौशनी फैल गई है और उस का एक एक टुकड़ा हर घर में गिरा है। फिर आप ने देखा कि चाँद के बिखरे हुए टुकड़े यकजा हो गए और वह मुकम्मल चाँद उन की गोद में आ गया। अहले किताब के किसी आलिम ने इस ख़्वाब की तअबीर यह बताई कि वह नबी जिस की आमद के हम मुन्तज़िर हैं और जिस के ज़हूर की घड़ी

बिल्कुल क़रीब आ गई है वह ज़ाहिर होगा और आप उस की इताअत व पैरवी करेंगे और उस की इताअत की बरकत से आप सारे जहाँ में सईद तरीन शख़्स होंगे। (ज़ियाउन्नबी, जि: २)

६) हज़रत सय्यिदुना अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की वह शान है कि उन्हें अफ़ज़लुल बशर बअदल अम्बिया कहा गया है यानी नबियों के बाद इन्सानों में सब से अफ़ज़ल। (तफ़सीरे नईमी)

७) मुहाजिरीन और अन्सार में से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के सिवा कोई सहाबी ऐसा नहीं है कि ख़ुद और उन के वालिदैन और बेटे बेटियां सब के सब मुसलमान हों। (मदारिक)

८) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम जाहिलियत के ज़माने में अब्दुल कअबा था। इस्लाम क़ुबूल करने के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आप का नाम अब्दुल्लाह रखा: (तफ़सीरे नईमी)

९) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अशरए मुबश्शिरा में से हैं इस लिये अतीक़ यानी जहन्नम के अज़ाब से आज़ाद मशहूर हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१०) सन ९ हिजरी में जनाब सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को अमीरे हज बना कर ३०० आदमियों का क़ाफ़िला हज के लिये रवाना फ़रमाया था। इस्लाम में हज़रत सिद्दीक़े अकबर पहले अमीरे हज हैं। (तफ़सीरे नईमी)

११) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: मैं किसी को नहीं जानता जो मेरे नज़्दीक रिफ़ाक़त में एहसानात के एतिबार से अबू बक्र से अफ़ज़ल हो। (तफ़सीरे नईमी)

१२) हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा बनने के बाद भी तिजारत करते रहे। आप रोज़ाना कपड़े की चादरें कन्धे पर उठा कर बाज़ार जाते और मामूली आदमियों की तरह बेच कर गुज़र बसर करते। बाद में ख़िलाफ़त का काम बढ़ जाने से से तिजारत तर्क करदी थी। (तफ़सीरे नईमी)

१३) मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम का इरशाद है कि जनाब रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद सब आदमियों में अफ़ज़ल अबू बक्र और उमर हैं। मेरी मुहब्बत और अबू बक्र व उमर से दुशमनी किसी मोमिन के दिल में जमा नहीं हो सकती। (तफ़सीरे नईमी)

१४) हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में अबू बक्र और उमर का दर्जा वही था जो इस वक़्त है यानी रौज़ए अनवर में सब से ज़्यादा क़ुर्बत हासिल है। (तफ़सीरे नईमी)

१५) हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु से १४२ हदीसें मरवी हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१६) हज़रत इमाम जअफ़रे सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का इरशाद है कि अबू बक्र व उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुमा हर दो आदिल इमाम थे, हम उन को दोस्त रखते हैं और उन के दुशमन से बेज़ार हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१७) हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात की ख़बर जब सय्यिदुना मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम को पहुंची तो आप ने फ़रमाया इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। फिर आप के मकान पर आए और फ़रमाया आज ख़िलाफ़ते नबुव्वत का ख़ातिमा हो गया। (तफ़सीरे नईमी)

१८) जिस वक़्त हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम कुबूल किया था उस वक़्त आप के पास चालीस हज़ार दिरहम की पूंजी थी जो आप ने इस्लाम के लिये वक़्फ़ कर दी। ज़हूरे इस्लाम से लेकर हिजरत तक पैंतीस हज़ार ख़र्च हो चुका था बाक़ी पांच हज़ार दिरहम की पूंजी हिजरत के वक़्त साथ ले गए थे। (नुज़्हतुल क़ारी)

१९) हदीस में है कि अल्लाह तआला इस बात को आसमान पर नापसन्द फ़रमाता है कि अबू बक्र कोई ख़ता करे। (तफ़सीरे नईमी)

२०) हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को जो अल्लाह की नुसरत और रसूल की रिफ़ाक़त हासिल थी उस के बदले में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तमाम उम्र की नेकियां देने को तय्यार थे। (तफ़सीरे नईमी)

२१) एक बार हुज़ूर नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमाईः ऐ अल्लाह अबू बक्र को क़ियामत के दिन मेरे ही दर्जे में जगह देना। (तफ़सीरे नईमी)

२२) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किस रोज़ विसाल फ़रमाया? उन्हों ने फ़रमायाः दो शम्बे के दिन। हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः मुझे भी उम्मीद है कि मैं भी उसी रोज़ वफ़ात पाऊंगा। चुनान्चे आप ने दो शम्बे के दिन ही इन्तिकाल फ़रमाया। (अबू बक्र अल बैहकी, दलाइलुन नबुव्वह, जिः ७)

२३) हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु दो बरस तीन माह ११ दिन तख़्ते ख़िलाफ़त पर जलवा अफ़रोज़ रह कर २२ जमादियुल आख़िर सन १३ हिजरी को ६३ साल की उम्र में दुनिया से रुख़सत हुए। (तफ़सीरे नईमी)

२४) हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जो

शख़्स हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ज़ीलत को नहीं जानता वह सुन्नत को नहीं जानता। (तफ़सीरे नईमी)

२५) हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चार वज़ीर बताए गए हैं, दो आसमान वालों में और दो ज़मीन वालों में। आसमान वालों में हज़रत जिब्रईल और मीकाईल अलैहिमस्सलाम और ज़मीन वालों में हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा। (तफ़सीरे नईमी)

२६) हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का सिलसिलए नसब छटी पुश्त में मुर्रह बिन कअब पर पहुंच कर हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जा मिलता है। (नुज्हतुल क़ारी)

२७) जनाब सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते मुबारका में १७ नमाज़ों की इमामत की। (तफ़सीरे नईमी)

२८) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में मदीने के क़ाज़ी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु थे। उस वक़्त मुआमलात की सफ़ाई का यह आलम था कि एक साल के बीच एक भी मुक़द्दमा पेश नहीं हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

२९) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला आम इन्सानों के लिये एक आम तजल्ली फ़रमाएगा और एक तजल्ली ख़ास तौर पर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के लिये फ़रमाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

३०) रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सिवाए नबी के किसी दूसरे ऐसे आदमी पर आफ़ताब तुलूअ व ग़ुरूब नहीं हुआ जो अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) से अफ़ज़ल हो। (तफ़सीरे नईमी)

३१) हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ही सब से पहले कलिमए तय्यिबा के ज़िक्र का तरीक़ा बातिन की सफ़ाई के लिये तालीम फ़रमाया। (तफ़सीरे नईमी)

३२) हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ही इस्लाम में सब से पहला इज्तिहाद किया। (तफ़सीरे नईमी)

३३) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु गोरे चिट्टे और दुबले पतले थे, किसी क़दर कमर झुकी हुई थी। आँखें ज़रा अन्दर हटी हुई, बाल घुंघरियाले, पेशानी ऊंची, क़द मौज़ूँ और उंगलियों के जोड़ गोश्त से ख़ाली थे। आप बहुत कम बात करते थे। (तफ़सीरे नईमी)

३४) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को जन्नतियों की जमाअत का सरदार बताया और जन्नत के सब दरवाज़ों से उन की पुकार और बुलावे की ख़ुशख़बरी दी और यह भी

फ़रमायाः मेरी उम्मत में सब से पहले अबू बक्र जन्नत में दाख़िल होंगे। (तफ़सीरे नईमी)

३५) हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद हैः मैं ने हर एक के एहसान का बदला चुका दिया है, एक अबू बक्र को छोड़ कर कि उन के एहसानात का बदला क़ियामत में अल्लाह तआला ही देगा। (तफ़सीरे नईमी)

३६) हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का जनाज़ए मुबारका बाबुल मस्जिद के सामने रख कर हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में सलाम पेश किया और अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अबू बक्र हाज़िर हैं। बन्द दरवाज़ा खुद बखुद खुल गया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आरामगाह से आवाज़ आईः मेहबूब को मेहबूब से मिला दो। इस इजाज़त के बाद सय्यिदा आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के हुजरे में तदफ़ीन इस तरह अमल में आई कि आप का सरे मुबारक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सीनए अतहर के समान्तर रखा गया। (तफ़सीरे नईमी)

३७) सहाबा के शैख़ैन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु, मुहद्दिसीन के शैख़ैन हज़रत इमाम बुख़ारी और हज़रत इमाम मुस्लिम, फ़ुक़्हा के शैख़ैन इमामे आज़म अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ और मन्तिक़ के शैख़ैन बू अली सीना और फ़ाराबी हैं। (तफ़सीरे नईमी)

३८) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अमली तौर पर अपनी हयाते मुबारका में ही अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमा दिया था कि मक्के की फ़त्ह के बाद आप को हज में अपनी तरफ़ से कुछ एलानात करने भेजा और अपनी वफ़ात के क़रीब आप को मुसल्ले पर खड़ा किया, इमाम बनाया और यह कह कर इमाम बनाया कि जिस जमाअत में अबू बक्र हों उस में किसी को इमाम बनने का हक़ नहीं हैं। (तफ़सीरे नईमी)

३९) हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु वह खुश नसीब सहाबी हैं कि आप की चार पुश्त तक सहाबियत है। माँ बाप सहाबी, खुद सहाबी, बेटी बेटे सहाबी, पोते नवासे सहाबी। (तफ़सीरे नईमी)

४०) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ मअरिफ़त, हज़रत सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म पर शरीअत, हज़रत सय्यिदुना उस्माने ग़नी पर तरीक़त और हज़रत मौला अली पर हक़ीक़त ग़ालिब थी। रज़ियल्लाहु अन्हुम। (रूहुल बयान)

४१) नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस चीज़ पर

अबू बक्र और उमर जमा हो जाएं यानी सहमत हो जाएं तो मैं उस की मुख़ालिफ़त कभी न करूंगा। (तफ़सीरे नईमी)

४२) हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु जब रात होती तो अपने पावँ पर दुर्रे मारते और कहते आज तू कहाँ कहाँ गया था? (तफ़सीरे नईमी)

४३) एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़े जमाअत फ़ौत हो गई, इस पर आपने छुहारे का एक कीमती बाग़ ख़ैरात कर दिया। (तफ़सीरे नईमी)

४४) हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु से एक बार इशा की नमाज़ अव्वल शब में अदा न हुई, सुब्ह को इस के कफ़्फ़ारे में दो गुलाम आज़ाद किये। (तफ़सीरे नईमी)

४५) सय्यिदुना फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी ख़िलाफ़त में तीन सौ किले काफ़िरों के फ़त्ह किये। आप की ख़िलाफ़त के ज़माने में छत्तीस हज़ार शहर और क़स्बे मफ़्तूह हुए। (तफ़सीरे नईमी)

४६) चार तकबीरों के साथ बाजमाअत जनाज़े की शुरूआत हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाई। (तफ़सीरे नईमी)

४७) ख़ुलफ़ाए राशिदीन में सब से पहले हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु अमीरुल मोमिनीन कहलाए। (तफ़सीरे नईमी)

४८) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने हफ़्ते भर के आमाल एक किताब में लिख कर रख लिया करते थे और हर जुम्ए को अपने नफ़्स से हिसाब लेते थे। आँसुओं की कसरत ने आप के गालों पर दो सियाह निशान डाल दिये थे। (तफ़सीरे नईमी)

४९) हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक शख़्स को देखा कि वह इबादत और रियाज़त में घुले जाने का प्रदर्शन कर रहा है तो आप ने उसे एक कोड़ा रसीद किया और फ़रमाया: अल्लाह तेरा बुरा करे, हमारे दीन को मुर्दा बना कर पेश मत कर। (तफ़सीरे नईमी)

५०) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बराबर अपनी कब्र की जगह मख़सूस कर रखी थी लेकिन जब फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन से दरख़्वास्त की तो उन्हों ने जन्नत का यह तख़्ता उन्हें दे दिया। (बुख़ारी)

५१) सय्यिदुना फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ानए कअबा पर हाथियों के लश्कर की चढ़ाई के १३ बरस बाद पैदा हुए। उन्तालीस मर्दों के बाद हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ से सन ६ नबवी में ईमान लाए। (तफ़सीरे नईमी)

५२) जो यह कहे कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वफ़ात के क़रीब मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम के नाम ख़िलाफ़त नामा लिखने के लिये क़लम काग़ज़ मंवाया था मगर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखने नहीं दिया और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वह इरादा लेकर ही वफ़ात पा गए, ऐसा शख़्स काफ़िर है कि वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तब्लीग़ी अहकाम छुपाने का इल्ज़ाम लगाता है। (तफ़सीरे नईमी)

५३) रोम के बादशाह ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से सिर दर्द की शिकायत की। आप ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मूए मुबारक एक टोपी में सीकर भिजवा दिया। जिस से उस का सर दर्द हमेशा के लिये जाता रहा। (तफ़सीरे नईमी)

५४) हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि २५ साल की उम्र में इन्सान की ख़ालिस अक़्ल की इन्तिहा होती है। (तफ़सीरे नईमी)

५५) जो शख़्स सोते वक़्त अपनी उंगली से अपने सीने पर उमर लिख लिया करे तो इन्शा अल्लाह उसे एहतिलाम न होगा क्योंकि एहतिलाम शैतान के असर से होता है और वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम से भागता है। मगर यह अमल ख़्वाब वाले एहतिलाम के लिये है न कि बीमार वाले एहतिलाम के लिये। (रूहुल बयान)

५६) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम में से पहली उम्मतों में कुछ लोग इल्हाम वाले होते थे। मेरी उम्मत में अगर कोई इल्हाम वाला है तो वह उमर है। (तफ़सीरे नईमी)

५७) हज़रत अक़्बह बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हुजूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो उमर बिन ख़त्ताब होता। (तफ़सीरे नईमी)

५८) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बेशक अल्लाह तआला ने उमर के दिल और ज़बान पर हक़ जारी किया है। हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि बिला शुबह अल्लाह तआला ने उमर की ज़बान पर हक़ जारी कर दिया है कि वह हक़ बात ही कहते हैं। हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं हुजूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अम्बिया व मुरसलीन के अलावा तमाम अधेड़ उम्र जन्नतियों के सरदार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु होंगे। (तफ़सीरे नईमी)

५९) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अख़्तब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को देख कर फ़रमाया यह मेरी आँखें और कान हैं। (तफ़सीरे नईमी)

६०) हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया कि मैं ने ख़्वाब में देखा गोया एक तराज़ू आसमान से उतरा। उस में हुज़ूर को और अबू बक्र को तोला गया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भारी निकले। फिर अबू बक्र और उमर को तोला गया तो अबू बक्र भारी निकले। फिर उमर और उस्मान को तोला गया तो उमर भारी निकले। इस के बाद तराज़ू उठा ली गई। यह सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम संजीदा हो गए और फ़रमाया इस से मुराद नबी की जानशीनी है फिर अल्लाह तआला जिस को चाहेगा अता फ़रमाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

६१) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं एक बार चांदनी रात थी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सरे मुबारक मेरी गोद में था। मैं ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, क्या किसी की नेकियाँ आसमान के तारों के बराबर हैं? फ़रमाया हाँ, उमर की नेकियाँ। मैं ने अर्ज़ किया अबू बक्र की नेकियों की क्या कैफ़ियत है? फ़रमाया: उमर की तमाम नेकियाँ अबू बक्र की एक नेकी के बराबर हैं। (तफ़सीरे नईमी)

६२) हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: हर नबी का जन्नत में एक रफ़ीक़ होगा और मेरे रफ़ीक़ जन्नत में उस्मान होंगे। (तफ़सीरे नईमी)

६३) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं हम लोग रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते मुबारका में इस तरतीब से कहा करते थे: अबू बक्र, उमर, उस्मान। (तफ़सीरे नईमी)

६४) हज़रत उस्माने ज़िन्नूरैन रज़ियल्लाहु अन्हु को सौदान दक़शीर ने शहीद किया। (तफ़सीरे नईमी)

६५) पिछली उम्मतों में यह इज़्ज़त हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के अलावा किसी को हासिल नहीं हुई कि पैग़म्बर की दो बेटियाँ एक उम्मती के निकाह में आई हों। (तफ़सीरे नईमी)

६६) ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु तमाम रात जागते और एक रकअत में पूरा क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म कर लेते। (तफ़सीरे नईमी)

६७) हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की वह शान है कि जिस हाथ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्ते मुबारक पर बैअत की थी उस से ज़िंदगी भर शर्मगाह को न छुआ। (तफ़सीरे नईमी)

६८) हज़रत उस्माने ज़िन्नूरैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम लाने से पहले भी शराब को हाथ नहीं लगाया। (तफ़सीरे नईमी)

६९) इस्लाम कुबूल करने के बाद आख़िरी दम तक हर जुम्ए को एक गुलाम आज़ाद करने का सय्यिदुना उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु का मअमूल रहा। (तफ़सीरे नईमी)

७०) हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फुफी अर्वा के फ़र्ज़न्द हैं जो हज़रत अब्दुल्लाह के साथ जुड़वाँ पैदा हुई थीं। (तफ़सीरे नईमी)

७१) हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में इस क़दर दौलत की फ़रावानी थी कि एक लौंडी अपने वज़न के बराबर कीमत पर, एक घोड़ा एक लाख दिरहम में और एक खजूर का दरख़्त एक हज़ार दिरहम में बिकता था। (नुज्हतुल कारी)

७२) हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के अहद में ईरान का आख़िरी बादशाह यज़्दजुर्द मारा गया। (नुज्हतुल क़ारी)

७३) हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक ख़ूबसूरत बच्चे को देखा तो फ़रमायाः इस की ठोड़ी के गढ़े में कालिक लगा दो, नज़र की तेज़ी कम हो कर असर ज़ाहिर नहीं होगा। (गुल्दस्तए तरीक़त)

७४) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर, सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म और सय्यिदुना उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हुम के साथ उहद पहाड़ पर चढ़े, पहाड़ लरज़ने लगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहाड़ पर लात मार कर फ़रमायाः ठहर जा ऐ उहद, तुझ पर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद ही तो हैं। (बुख़ारी शरीफ़)

७५) हज़रत सअद इब्ने अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम से फ़रमायाः तुम क़ुरबत रखने में मुझ से ऐसे हो जैसे मूसा के लिये हारून थे। मगर फ़र्क़ इतना है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं है। (और हारून पैग़म्बर थे) (अलहदीस)

७६) हज़रत उमर इब्ने हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं रसूले पाक

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि नसब में अली मुझ से हैं और मैं उन से हूँ और अली हर मोमिन का दोस्त है। (तफ़सीरे नईमी)

७७) हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जिस का मैं दोस्त हूँ उस का अली दोस्त है। (तफ़सीरे नईमी)

७८) हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: अली से मुनाफ़िक़ को मुहब्बत नहीं होगी और मोमिन अली से बुग्ज़ नहीं करेगा। (तफ़सीरे नईमी)

७९) हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस ने अलीये मुर्तज़ा को गाली दी, उस ने मुझे गाली दी और जिस ने मुझे गाली दी उस ने अल्लाह तआला को गाली दी। (अश्शर्फुल मुअब्बद लि आले मुहम्मद, अल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी)

८०) हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु का क़द सब से बड़ा था, उन के चार उंगल हमारे एक एक बालिश्त के बराबर थे। (तफ़सीरे नईमी)

८१) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरी उम्मत में सब से ज़्यादा नर्म दिल और रहम वाले अबू बक्र हैं और अल्लाह के हुक्म की तामील में सब से ज़्यादा सख़्त उमर हैं और कामिल हया वाले उस्मान हैं और सब से बढ़ कर फ़र्ज़ शनास ज़ैद बिन साबित हैं और सब से ज़्यादा हलाल और हराम को जानने वाले मआज़ बिन जबल हैं और हर उम्मत का एक अमीन होता है, मेरी उम्मत के अमीन अबू उबैदा इब्ने जर्राह हैं। रज़ियल्लाहु अन्हुम। (तफ़सीरे नईमी)

८२) हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरे बाद ख़िलाफ़त तीस साल तक रहेगी। सफ़ीना कहते हैं मैं ने हिसाब लगाया तो पूरे तीस साल ख़िलाफ़त रही, दो साल हज़रत सिद्दीक़े अकबर की, दस साल हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म की, बारह साल हज़रत उस्माने ग़नी की और छः साल मौला अली की, रज़ियल्लाहु तआला अलैहिम अजमईन। (तफ़सीरे नईमी)

८३) खुलफ़ाए राशिदीन और दूसरे तमाम सहाबा हमेशा सर मुंडाते रहे। (तफ़सीरे नईमी)

८४) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक रात ख़्वाब में देखा कि एक सुर्ख़ रंग के मुर्ग़ ने आप के बदन में दो तीन ठोंगें मारीं। आप ने यह ख़्वाब

जुमए में बयान कर दिया। इस ख़्वाब की तअबीर यह बयान की गई कि कोई काफ़िर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद करेगा। चुनान्चे जुमए के दिन यह ख़्वाब बयान किया गया और बुध के दिन सुब्ह की नमाज़ में आप ज़ख़्मी किये गए। फ़ीरोज़ नामी एक आतिश परस्त मुश्रिक गुलाम ने आप को दोधारी ख़न्जर से ज़ख़्मी किया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को जब यह मालूम हुआ कि उन्हें फ़ीरोज़ नामी एक आतिश परस्त ने ज़ख़्मी किया है तो आप ने फ़रमायाः इलाही तेरा शुक्र है कि मेरी मौत किसी कलिमा गो के हाथों नहीं हुई। (तफ़सीरे नईमी)

८५) निकाह के वक़्त मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम की उम्रे शरीफ़ २१ बरस पांच माह थी और सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्रे शरीफ़ १५ साल साढ़े पांच माह थी। (तफ़सीरे नईमी)

८६) हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक जगह उतरे। यह वादी खुम के नाम से मशहूर थी। थोड़ी देर बाद लोगों के जमा हो जाने का एलान किया गया। लोग जमा हो गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ का हुक्म दिया। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें ख़िताब फ़रमाया। मैं अपनी चादर के ज़रिये उस दरख़्त पर साया किये हुए था जिस के नीचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क्या तुम इस बात को नहीं जानते, क्या तुम इस बात की शहादत नहीं देते कि मैं हर मोमिन से उस की जान से भी ज़्यादा क़रीब हूँ? सब ने अर्ज़ कीः हुज़ूर ने बजा फ़रमाया। तब रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस का मैं मददगार और दोस्त हूँ, अलीये मुर्तज़ा भी उस के मददगार और दोस्त हैं। ऐ अल्लाह जो इन को दोस्त बनाता है उसे तू भी अपना दोस्त बना और जो इन से दुशमनी करता है उन से तू भी दुशमनी कर। (अस्सीरतुन नबविया, इब्ने कसीर)

८७) हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना क्लर्क एक काफ़िर रख लिया था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा कि यह क्या? अर्ज़ किया कि इस शहर में कोई पढ़ा लिखा मुसलमान नहीं इस लिये मजबूर होकर काफ़िर को रखना पड़ा। आप ने फ़रमाया अच्छा अगर यह मर जाए तो क्या करोगे? अर्ज़ किया फिर कोई और बन्दोबस्त कर लूंगा। फ़रमाया वह बन्दोबस्त अभी कर लो। (तफ़सीरे नईमी)

८८) एक रोज़ हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे और अमीरुल मोमिनीन उमरे फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु आ रहे थे। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! यह उमर हैं जो तशरीफ़ ला रहे हैं। इरशाद फ़रमाया हाँ। फिर फ़रमाया जिब्रईल, क्या आसमान वाले भी उमर को पहचानते हैं। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! उस ख़ुदाए बरतर की क़सम जिस ने आप को मख़लूक़ की हिदायत के लिये भेजा है उमर आसमान पर ज़मीन के मुक़ाबले ज़्यादा मशहूर हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जिब्रईल, उमर के कुछ फ़ज़ाइल बयान करो। अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! अगर मैं नूह अलैहिस्सलाम की उम्र लेकर आप के रूबरू उमर फ़ारूक़ के फ़ज़ाइल बयान करना चाहूँ तो पूरे बयान न कर सकूंगा। और जब उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु मजलिस में तशरीफ़ लाए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: ऐ उमर अगर मैं रसूल बना कर न भेजा गया होता तो अलबत्ता तुम पैग़म्बर होते। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

८९) हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ बिन मरवान ख़ुलफ़ाए राशिदीन में से एक हैं। सन ६१ हिजरी में हुल्वान मिस्र के एक शहर में उसी साल पैदा हुए जिस साल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हुए। आप का लक़ब अशज्ज भी है जिस के मानी हैं चेहरे या सर के ज़ख़्म वाला। बचपन में घोड़े ने पेशानी पर मार दिया था, उसी का निशान रह गया था। आप वलीद बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में सात साल मदीनए तय्यिबा के वाली रहे। उसी ज़माने में आप ने मस्जिदे नबवी की तौसीअ की, अज़वाजे मुतह्हिरात के हुजरों को मस्जिद में दाख़िल किया। जभी से रौज़ए अक़दस भी मस्जिद के अन्दर आ गया। चालीस साल की उम्र में रजब सन १०१ हिजरी में विसाल फ़रमाया। दैरे समआन में हलब के मक़ाम पर दफ़्न हुए। (नुज्हतुल क़ारी)

९०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु रोज़ पूछते थे कि या रसूलल्लाह! ईमान क्या चीज़ है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें उन के दर्जे से बढ़ कर ईमान बता देते थे। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु रोज़ाना ख़ुद को उसी दर्जे पर पहुंचा देते और फिर सवाल करते और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन के ईमान से बढ़ कर दूसरा मक़ाम बता देते। इसी तरह रोज़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का ईमान बढ़ता गया और इस मरतबे पर पहुंचा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमा दिया कि अगर अबू बक्र का

ईमान मेरी तमाम उम्मत के ईमानों के साथ तोला जाए तो उन का ईमान वज़नी ठहरे। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

९१) मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम की वालिदा माजिदा हज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद फ़रमाती हैं कि जब मेरा यह बच्चा पैदा हुआ तो नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस का नाम अली रखा और इस के मुंह में अपना लुआबे दहन डाला और अपनी ज़बाने मुबारक इस मौलूद को चूसने के लिये इस के मुंह में डाली जिसे यह बच्चा चूसता रहा यहाँ तक कि सो गया। (अस्सीरतुन नबविया ज़ैनी दिहलान, जि: १)

९२) हज़रत सय्यिदुना अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम फ़रमाया करते कि मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूं कि अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ का लक़ब अस्सिद्दीक़ आसमान से नाज़िल फ़रमाया है। (ज़ियाउन्नबी, जि: २)

९३) रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अपनी हयाते ज़ाहिरी के आख़िरी दिन गुज़ार रहे थे तो एक रोज़ हज़रत अली और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत से बाहर आए। हज़रते अब्बास ने हज़रत अली से कहा कि आप इस वक़्त बारगाहे रिसालात में ख़िलाफ़त के बारे में अर्ज़ करें ताकि हमें मालूम हो जाए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद मन्सबे ख़िलाफ़त पर कौन फ़ाइज़ होगा। हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने जवाब दिया: मैं हरगिज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस बारे में नहीं पूछूंगा क्योंकि मुझे अन्देशा है कि अगर मैं ख़िलाफ़त का मुतालबा करूं और सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे अपना ख़लीफ़ा मुकर्रर न फ़रमाएं तो फिर हमेशा के लिये हम मन्सबे ख़िलाफ़त से मेहरूम कर दिये जाएंगे। (ज़ियाउन्नबी, जि: ४)

९४) हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़र्ज़न्द हज़रत हसन मुसन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा गया: क्या नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद मन कुन्तु मौलाहु फ़अलीय्युन मौलाहु (मैं जिस का दोस्त और मददगार हूँ अलीये मुर्तज़ा भी उसके दोस्त और मददगार हैं) सय्यिदुना अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम की इमामत और ख़िलाफ़त की नस्स (दलील) है। आप ने फ़रमाया: अगर यह नस्स होती और इस से सय्यिदुना अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम की इमामत और ख़िलाफ़त को साबित करना मक़सूद होता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निहायत फ़साहत व वज़ाहत के साथ यूँ फ़रमाते: ऐ लोगो मेरे बाद यह अली तुम्हारे वाली होंगे और मेरे बाद

यह तुम्हारे उमूर के नाज़िम होंगे। इन का हुक्म सुनना और इन की इताअत बजा लाना। बख़ुदा अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्हें अपना ख़लीफ़ा बनाया होता और आप ख़िलाफ़त का मुतालबा करने से रुकते तो यह हज़रत अली की सब से बड़ी ग़लती होती। (अस्सीरतुल हल्बिया, जि:२)

६५) हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि सय्यिदुना अलीये मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने फ़रमायाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को आगे खड़ा किया और सब लोगों ने उन के पीछे नमाज़ अदा की। उस वक़्त मैं वहाँ हाज़िर था, ग़ायब न था, सेहतमन्द था, बीमार न था, अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे खड़ा करना चाहते तो खड़ा कर देते मगर ऐसा नहीं किया। इस लिये जिस हस्ती को अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे दीन के लिये पसन्द फ़रमाया, हम उस को अपनी दुनिया के लिये भी पसन्द करते हैं। (उसदुल ग़ाबह, अल्लामा इब्ने असीर)

६६) अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की दुर्वेशी का यह आलम था कि विसाल के वक़्त घर में कफ़न के लिये पैसे न थे। जो कपड़े पहने हुए थे उन्हीं को धोकर उन में कफ़न दिया गया। (तफ़सीरे नईमी)

६७) हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु गोरे चिट्टे, लम्बे और चौड़े चकले आदमी थे। बाएं हाथ से भी दाएं हाथ की तरह काम ले सकते थे। दौड़ते हुए घोड़े पर उचक कर बैठ जाते थे। इब्ने सअद के मुताबिक़ ज़मानए जाहिलियत में उकाज़ के मेले में कुश्ती भी लड़ा करते थे। सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें अपना जानशीन मुक़र्रर किया, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सन १३ हिजरी से सन २३ हिजरी तक ऐसे उमदा तरीक़े से हुकूमत की कि एक अफ़सानवी किरदार मेहसूस होने लगे। उन से पहले या बाद में इस की कोई मिसाल नहीं मिलती। आप पहले ख़लीफ़ा थे जो अमीरुल मोमिनीन कहलाए। आप ने बाक़ायदा फ़ौज का शोअबा क़ाइम किया, फ़ौजियों की तन्ख़्वाहें मुक़र्रर कीं और छावनियाँ बसाईं। अबू लू लू फ़ीरोज़ फ़ारसी ने २७ ज़िलहज्जह को उन्हें मस्जिद में ज़हर में बुझे ख़न्जर से ज़ख़्मी कर दिया और चन्द रोज़ बाद पहली मुहर्रम सन २४ हिजरी को ज़ख़्मों की ताब न लाकर आप शहीद हो गए। ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में बाईस लाख (२२,००००) मुरब्बा मील पर मुहीत इलाक़े और मुल्क सल्तनते इस्लामिया में शामिल हुए। एक मग़रिबी इतिहासकार ने लिखा हैः अगर एक और उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) होता तो रूए ज़मीन पर इस्लाम ही का परचम लहराता नज़र आता। (अतलसे सीरतुन्नबी)

९८) हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब हरम शरीफ़ में बलन्द आवाज़ से कुरआन शरीफ़ की तिलावत शुरू की तो काफ़िरों ने आप को इतना मारा कि आप बेहोश होकर गिर पड़े इसी ग़शी की हालत में आप को उठा कर घर लाया गया और कई पहर गुज़रने के बाद आप को होश आया। (ज़ियाउन्नबर, जिः २)

९९) हज़रत सय्यिदुना अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने विसाल के वक़्त फ़रमायाः ऐ आयशा, देखो यह तो वह ऊंटनी है जिस का हम ने दूध पिया है और यह है वह प्याला जिस में खाना तय्यार करते थे और यह वह चादर है जो हम ओढ़ा करते थे। इन तीनों चीज़ों से हम उस वक़्त फ़ाइदा उठा रहे थे जब हम मुसलमानों के अमीर थे। लिहाज़ा जब मैं मर जाऊं तो यह तीनों चीज़ें उमर को वापस कर देना। चुनान्चे जब आप वफ़ात पा चुके तो उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने यह तीनों चीज़ें अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के पास भेज दीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः ऐ अबू बक्र, आप पर ख़ुदा की रहमत हो, आपने अपने बाद आने वालों के लिये थका देने का सामान कर दिया। (कबीर)

१००) हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु कबीला बनू उमय्या के एक मुअज़्ज़ज़ रुक्न थे। जब हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की कोशिश से वह इस्लाम लाए तो उन का चचा उन को कच्चे चमड़े में लपेट कर और उसे रस्सी से बाँध कर धूप में डाल दिया करता था। कच्चे चमड़े की बदबू और उस पर अरब की धूप। आप हज़रत उस्मान की तकलीफ़ का अन्दाज़ा लगा सकते हैं। (ज़ियाउन्नबी, जिः २)

१०१) ग़ज़वए तबूक के मौक़े पर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत के मालदार और ज़ी हैसियत लोगों को जिहाद के लिये माली इमदाद करने का हुक्म दिया। उस वक़्त सब से पहले जो सहाबी अल्लाह की राह में अपनी उम्र भर की बचत लेकर बारगाहे नबवी में हाज़िर हुए वह सय्यिदुना सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु थे। आप के घर में जो कुछ था वह सब एक गठरी में बांधा। उस में चार हज़ार दिरहम के अलावा और भी चीज़ें थीं। यह सब कुछ लाकर अपने आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दमों में ढेर कर दिया। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछाः तुम ने अपने घर वालों के लिये भी कुछ छोड़ा? अर्ज़ कियाः उन के लिये मैं अपने घर में अल्लाह और रसूल को छोड़ आया हूँ। (सुबुल हुदा वर रशाद, जिः ५)

१०२) हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल और इमाम बेहक़ी रज़ियल्लाहु

अन्हुमा हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि ग़ज़वए तबूक के मौके पर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु रसूले मुकर्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुए। उन की आस्तीन में दस हज़ार दीनार थे जो आप ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की झोली में पलट दिये। इस के अलावा आप ने इस्लामी लश्कर के तीसरे हिस्से के लिये सवारी के जानवर, हथियार, ज़िरहें और जिहाद में काम आने वाली दूसरी चीज़ें मुहैया कीं। (तारीखुल ख़मीस, जिः २, अस्सीरतुन नबविया, अहमद ज़ैनी दिहलान, जिः २, सुबुलल हुदा, जिः ५)

१०३) हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम के लिये हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा की मौजूदगी में दूसरा निकाह हराम था। (तफ़सीरे नईमी)

१०४) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की निस्बत रुकू की हालत में चाँदी का छल्ला ज़कात में देने की जो बात मशहूर है वह महज़ झूट बात है। मौला अली पर कभी ज़कात फ़र्ज़ ही नहीं हुई। आप की ज़िन्दगी मुफ़्लिसी और फ़ाक़ों में गुज़री। (सीरते रसूले अरबी)

१०५) इमामों और ख़ुलफ़ाए राशिदीन के सिलसिले को ख़त्म करने वाले इमामे मेहदी रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत सय्यिदुना इमाम हसने मुज्तबा रज़ियल्लाहु अन्हु की औलाद में से होंगे। (तफ़सीरे नईमी)

१०६) जनाबे अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने सिर्फ़ बीबी फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हु को ही ग़ुस्ल दिया। इस पर सहाबा ने एतेराज़ किया। आप ने फ़रमायाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था कि ऐ अली, फ़ातिमा तुम्हारी दुनिया और आख़िरत में बीवी हैं सो मेरा निकाह उन की वफ़ात से टूटा ही नहीं। यह मौला अली की ख़ुसूसियत थी। आप ने अपनी और किसी बीवी को ग़ुस्ल नहीं दिया। (तफ़सीरे नईमी)

१०७) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब कर्रार है यानी पलट पलट कर हम्ला करने वाला शेर। (ख़ाज़िन, रूहुल मआनी, तफ़सीरे कबीर)

१०८) अहले हक़ ने इस ख़्याल से कि ख़ारिजी मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम के मज़ारे पाक की बेहुर्मती न करें उन की क़ब्रे अतहर पोशीदा कर दी। चुनान्चे एक मुद्दत तक किसी को पता ही न चला कि क़ब्र शरीफ़ कहाँ है? एक बार हारून रशीद शिकार को जंगल में गया। कुत्तों को हिरनों पर छोड़ा, न तो कुत्तों ने हिरनों पर हम्ला किया और न हिरन कुत्तों से डर के भागे। हारून रशीद को सख़्त तअज्जुब हुआ। एक बूढ़े से पूछा कि क्या

माजरा है? वह बोला: हम बुजुर्गों से सुनते आए हैं कि इस जंगल में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र है। जब बादशाह ने यह सुना तो तहक़ीक़ करके वहाँ रौज़ा बनवा दिया। चुनान्चे अब इस मक़ाम को नजफ़े अशरफ़ कहते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१०६) हज़रत बीबी फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने वालिदे माजिद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद छः माह तक ज़िन्दा रहीं और जब तक ज़िन्दा रहीं बिल्कुल नहीं हंसीं। (तफ़सीरे नईमी)

११०) हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम के बारे में मशहूर है कि जब लड़ाई में आप के तीर लग जाते तो इन्हें निकालने का काम नमाज़ की हालत में किया जाता। (तफ़सीरे नईमी)

१११) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: मैं हिकमत का मकान हूँ और अली उस मकान का दरवाज़ा। (तफ़सीरे नईमी)

११२) राफ़ज़ी फ़िर्क़ा हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम के ज़माने में अब्दुल्लाह बिन सबा की शरारत और बहकावे के सबब पैदा हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

११३) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ की बरकत से हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम गर्मियों में जाड़े के और जाड़े में गर्मियों के कपड़े पहनते थे और गर्मी सर्दी मेहसूस नहीं होती थी। (तफ़सीरे नईमी)

११४) हज़रत अलीये मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम दौड़ लगाने में बहुत तेज़ थे। (तफ़सीरे नईमी)

११५) हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को जनाबत यानी नापाकी की हालत में मस्जिद में आने की इजाज़त थी। (तफ़सीरे नईमी)

११६) सादाते ज़ैदिया के इमाम हज़रत ज़ैद शहीद रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु के साहबज़ादे और इमाम मुहम्मद बाक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के सौतेले भाई थे। कसरते तिलावत की वजह से हलीफ़ुल क़ुरआन और बहुत ज़्यादा वक़्त मस्जिद में गुज़ारने के सबब उस्तवानतुल मस्जिद (मस्जिद का सुतून) आप के लक़ब हो गए थे। आप के साथ भी तक़रीबन वही सब कुछ पेश आया जो आप के जद्दे बुज़ुर्गवार सय्यिदुना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ पेश आया था। अहले कूफ़ा ने हिशाम बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में हुकूमते वक़्त के ख़िलाफ़ बग़ावत की क़यादत के लिये आप को बुलाया और ऐन वक़्त पर आप का साथ छोड़

दिया। उन्हों ने आप के सामने यह शर्त रखी थी कि आप पहले शेख़ैने किराम यानी हज़रत सिद्दीके अकबर और सय्यिदुना फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हुमा से बेज़ारी और तबर्रा का इज़हार करें तब हम आप का साथ देंगे। आप ने इस नामाकूल शर्त को मानने से इन्कार कर दिया। आप के साथ तीन सौ आदमी रह गए। तीन दिन तक कूफ़ा में जंग जारी रही। एक तीर आप की दोनों आँखों के बीच लगा और दिमाग़ तक पहुंच गया। एक पोशीदा जगह तीर निकालने की कोशिश के दौरान आप की रूह कफ़से उन्सरी से परवाज़ कर गई। दुशमन के ख़ौफ़ से आप को एक पोशीदा जगह दफ़्न कर दिया गया। एक बदबख़्त ने इन्आम के लालच में मुख़्बिरी करदी। लाश निकाली गई और सर काट कर हिशाम के पास दमिश्क भेज दिया गया। लाश को नंगा करके एक अर्से तक सूली पर लटकाए रखा गया। फिर सूली से उतार कर जला दिया गया और ख़ाक हवा में उड़ा दी गई। हज़रत ज़ैद शहीद रज़ियल्लाहु अन्हु के चार साहबज़ादे सय्यिद यहया, सय्यिद मुहम्मद, सय्यिद हुसैन और सय्यिद ईसा मोतमुल अशबाल थे। सय्यिद ईसा (इब्तिदाई नामः असारा बिन ज़ैद) यही सादाते वास्ती और सादाते बारहा वग़ैरहुम के मूरिसे आला थे। (अहले सुन्नत की आवाज़, अकाबिरे मारहरा हिस्सा:२)

११७) हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु मैदाने करबला में बनू फ़ातिमा में से बच जाने वाले अकेले मर्द थे जो अपनी बीमारी की वजह से जंग में हिस्सा नहीं ले सके थे। कसरते इबादत की वजह से ज़ैनुल आबिदीन और सय्यिद सज्जाद के लक़ब से याद किये जाते थे। आप के ग्यारह बेटे और चार बेटियाँ थीं। इन में सबसे बड़े इमाम मुहम्मद बाक़र रज़ियल्लाहु अन्हु आप के जानशीन हुए। (अहले सुन्नत की आवाज़, अकाबिरे मारहरा, हिस्सा:२)
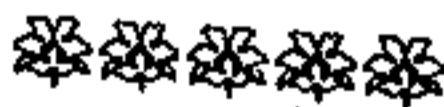
छटा अध्याय

सहाबए किराम और सहाबियात व ताबिईन

१) सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहा़बा को बनी इस्राईल के अम्बिया की मिस्ल फ़रमाया है। (तफ़सीरे नईमी)

२) हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरे सहा़बा सितारों की तरह हैं जिसने उनकी इक़्तिदा की, उसने हिदायत पाई। (तफ़सीरे नईमी)

३) अहले सुन्नत वल जमाअ़त के नज़्दीक यूँ तो सारे सहा़बए किराम बुज़ुर्गी वाले हैं फिर भी इस बात पर सब की सहमति है कि खुलफ़ाए राशिदीन तमाम सहा़बा से अफ़ज़ल हैं, उनके बाद अज़्वाजे मुतह्हिरात, उनके बाद वह सहाबा जिन्हों ने सबसे पहले हिजरत की, उनके बाद वह सहाबा जिन्हों ने बाद में हिजरत की, उन के बाद बद्र में शरीक होने वाले सहाबा, उन के बाद जो ग़ज़्वा पहले हुआ है उसमें शरीक होने वाले सहाबा उन सहाबा से अफ़ज़ल हैं जो उसके बाद वाली लड़ाइयों में शरीक हुए। (उस्वए सहाबा)

४) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा की बहन हज़रत अस्मा को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ातुन नताकैन (यानी दो कमरबन्द वाली) के लक़ब से नवाज़ा था। क्योंकि जब हिजरत की रात हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की ज़ौजा हज़रत उम्मे रूमान ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सफ़रे हिजरत के लिये तोशादान तय्यार किया तो उसमें ज़न्जीर न होने की वजह से फ़िक्र हुई। हज़रत अस्मा ने एक कोने में जाकर अपना कमरबन्द खींच कर बीच में से दो टुकड़े किये एक से अपनी कमर बांधी और दूसरे से तोशेदान बांध दिया। (बुख़ारी शरीफ़)

५) सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिन सहा़बी को सबसे पहला मुबल्लिगे़ इस्लाम बना कर मदीनए मुनव्वरा रवाना फ़रमाया वह थे हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु। (तफ़सीरे नईमी)

६) अन्सारे मदीना की जो जमाअ़त सबसे पहले इस्लाम के दायरे में दाख़िल हुई उसमें क़बीलए ख़ज़रज के छः अन्सार असअद बिन ज़ुरारह, औफ़ बिन अफ़रा, नाफ़ेअ़ बिन मालिक अजलानी, अतिया व अक़बा बिन आ़मिर और जाबिर बिन अब्दुल्लाह रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन थे। यही बैअ़ते अक़बा ऊला इस्लाम की तरक़्क़ी और इशाअ़त का मील पत्थर साबित हुई। (तफ़सीरे नईमी)

७) वरक़ा बिन नौफ़ल रज़ियल्लाहु अन्हु बिला शुबह सहाबिए रसूल थे।

उन्हों ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा भी और आप की तस्दीक़ भी की और आप पर ईमान भी लाए और ज़मानए दावत भी पाया और आख़िर दम तक ईमान पर क़ायम रहे। (तफ़सीरे नईमी)

८) मर्सद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मदीनए मुनव्वरा हिजरत की थी। यह बड़े ताक़तवर पहलवान थे। मदीनए तय्यिबा से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा छुप कर आते थे। जो लोग मुसलमान होने की वजह से काफ़िरों की क़ैद में रहते थे उन्हें हज़रत मर्सद रज़ियल्लाहु अन्हु क़ैदख़ाने से निकाल ले जाते थे। (गुल्दस्तए तरीक़त)

९) हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ाते अक्दस के बाद दमिश्क़ चले गए। हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के ज़मानए ख़िलाफ़त में वफ़ात पाई। (तफ़सीरे नईमी)

१०) हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने बैतुल्लाह शरीफ़ के अन्दर एक रकअ़त में क़ुरआन ख़त्म किया है। (तफ़सीरे नईमी)

११) हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु तमाम रमज़ान तो तीन रात में एक ख़त्मे क़ुरआन करते मगर आख़िरी दस दिन में हर रात में एक क़ुरआन पूरा करते थे। (तफ़सीरे नईमी)

१२) हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु एक बार नमाज़ में आयते करीमा कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौत बार बार पढ़ रहे थे। ग़ैब से आवाज़ आई ऐ जुनैद तुम्हारे बार बार यही आयत पढ़ने से चार मोमिन जिन्न मर चुके हैं जिन्हों ने हैबते इलाही में आसमान की तरफ़ निगाह उठाकर भी न देखा था, अब और कितनों को मारोगे, आगे पढ़ो। (तफ़सीरे नईमी)

१३) झूटे दावेदारे नबुव्वत असवद उन्सा ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सौब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से अपनी नबुव्वत का इक़रार करवाना चाहा। परवानए शम्ए रिसालत के इन्कार पर दहकती आग में डलवा दिया। आग उनका बाल भी बीका न कर सकी। जब वह मदीने में हाज़िर हुए तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फ़रमाया ख़ुदा का शुक्र है हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का शबीह मैंने इसी उम्मत में देख लिया। (तफ़सीरे नईमी)

१४) हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु सुलहे हुदैबिया के बाद फ़त्हे मक्का से पहले ईमान लाए। (तफ़सीरे नईमी)

१५) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु मालिक बिन नज़र के बेटे हैं। आप की कुन्नियत अबू हमज़ा है, आप की वालिदा का नाम

उम्मे सुलैम है। जब नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने तशरीफ़ लाए उस वक़्त आप की उम्र दस बरस थी। हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में बसरा मुन्तक़िल हो गए ताकि वहाँ के लोगों को दीन की बातें सिखाऐं। बसरा के सहाबा में सबके आख़िर में सन ९१ हिजरी में विसाल हुआ। आप की उम्र एक सौ तीन साल की हुई, आप के अठहत्तर बेटे और बेटियां हुईं। (ख़तीब तबरेज़ी)

१६) हज़रत बिलाल बिन रबाह रज़ियल्लाहु अन्हु बनी जम्ह के एक शख़्स उमय्या बिन ख़लफ़ के पाले हुए गुलामों में से थे। हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उमय्या बिन ख़लफ़ को अपना एक गुलाम देकर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को आज़ाद कराया था। (तफ़सीरे नईमी)

१७) हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशगोई के मुताबिक़ ग़ज़वए मुअत्ता में सन आठ हिजरी में हुई और इसी ग़ज़वे में हज़रत जअफ़र इब्ने अबी तालिब भी शहीद हुए। (तफ़सीरे नईमी)

१८) हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु एक जलीलुल क़द्र सहाबी थे। रमज़ान सन दो हिजरी में कुफ़्र व इस्लाम के बीच जब बद्र के मक़ाम पर पहली जंग हुई तो वह इसमें शरीक हुए और शुजाअत के जौहर दिखाए। इसी तरह जब शव्वाल सन तीन हिजरी में ग़ज़वए उहद पेश आया तो दूसरे जाँनिसाराने रसूल के साथ अपनी जान हथेली पर रखकर जिहाद में पूरी पामर्दी से हिस्सा लिया लेकिन एक ज़हरीले तीर से आप का बाज़ू ज़ख़्मी हो गया। इलाज से वक़्ती तौर पर सेहत बहाल हो गई लेकिन कुछ दिन बाद ज़ख़्म फिर हरा हो गया। इसी तकलीफ़ से जमादिउल आख़िर सन चार हिजरी में शहादत के मर्तबे पर फ़ाइज़ हुए। आप की वफ़ात के बाद हज़रत उम्मे सलमा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आईं और उम्मुल मोमिनीन का मन्सब हासिल किया। (मुस्लिम शरीफ़)

१९) हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु जब वफ़ात पा गए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़बर हुई तो आप उनके घर तशरीफ़ ले गए। अबू सलमा की आँखें खुली रह गई थीं। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने दस्ते मुबारक से बंद कीं और फ़रमाया: जब रूह क़ब्ज़ कर ली जाती है तो उसके साथ बसारत भी ख़त्म हो जाती है इस लिए खुली रह जाने वाली आँखों को बंद कर दिया करो। (तिर्मिज़ी)

२०) हज़रत उवैस क़रनी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हर रात एक इबादत के

लिये मख़सूस कर लि थी। किसी रात एक रुकूअ़ में सुब्ह कर देते, किसी रात एक सजदे में सुब्ह हो जाती। लोगों ने अ़र्ज़ किया ऐ उवैस आप तो इतनी ताकृत रखते हैं कि एक ही हालत में इतनी बड़ी बड़ी रातें गुज़ार देते हैं, फ़रमाया कि रातें बड़ी बड़ी कहाँ हैं काश कि अज़ल से अबद तक एक ही रात होती ताकि उसे मैं एक ही सज्दे में गुज़ार देता। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

२१) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत में से दो शख़्सों के पीछे नमाज़ पढ़ी, एक हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, दूसरे हज़रत अब्दुर रह़मान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा। (तफ़सीरे नईमी)

२२) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिवायत की कि असहाबे हुदैबिया १४०० थे। (तफ़सीरे नईमी)

२३) सहाबए किराम में से दिहया नामी एक सहाबी बहुत ह़सीनो जमील थे। ह़ज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम अकसर उन्हीं की सूरत मुजस्सम होकर आया करते थे। (तफ़सीरे नईमी)

२४) हज़रत अनस बिन मालिक ख़ज़रजी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मशहूर ख़ादिम हैं, दस बरस की उम्र से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में रहे। (तफ़सीरे नईमी)

२५) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नअ़लैन और मिस्वाक के मुहाफ़िज़ थे। (तफ़सीरे नईमी)

२६) ह़जरत अक़बा बिन आमिर अलजुहनी रज़ियल्लाहु अन्हु सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़च्चर हांका करते थे। बाद में मिस्र के वाली हुए। (तफ़सीरे नईमी)

२७) हज़रत असतह बिन शरीक रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ऊंट हाँकते थे। (तफ़सीरे नईमी)

२८) हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महमानदारी के अफ़सर थे। राशन की तक़सीम भी उन्हीं के ज़िम्मे थी। (तफ़सीरे नईमी)

२६) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह अंगूठी जिसमें मुहर थी हज़रत मुऐक़िब रज़ियल्लाहु अन्हु की तहवील में रहती थी। (तफ़सीरे नईमी)

३०) हज़रत ख़्वाजा ह़सन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रिज़ाई बेटे थे। आप ने उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा का दूध पिया था। (तफ़सीरे नईमी)

३१) हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़े जनाज़ा खुद रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ाई और नमाज़ में नौ तकबीरें कहीं। सहाबा ने पूछा: या रसूलल्लाह, आप ने इस नमाज़ में नौ तकबीरें क्यों कहीं? तो आप ने फ़रमाया: अबू सलमा हज़ार तकबीरों के मुस्तहिक़ थे। (मुस्लिम शरीफ़)

३२) तमाम उम्महातुल मोमिनीन में हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा सब से आख़िर में इस दुनिया से रुख़सत हुईं। आप की वफ़ात के बारे में इतिहासकारों के बीच मुख़्तलिफ़ राएं पाई जाती हैं। अल्लामा इब्ने सअद ने अपनी तबक़ात में साले वफ़ात उन्सठ हिजरी बयान किया है। शिबली नोअमानी इकसठ हिजरी तहरीर करते हैं। उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की नमाज़े जनाज़ा मशहूर सहाबी हज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई। जन्नतुल बक़ीअ में दफ़्न हुईं। इनके बेटों सलमा और उमर ने इन्हें लहद में उतारा। वफ़ात के वक़्त उम्र चौरासी साल की थी। (मुस्लिम शरीफ़)

३३) हज़रत अबुद दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु से उन की बीवी ने अर्ज़ किया: क्या बात है आप इस तरह माल तलब नहीं करते जिस तरह फ़ुलां शख़्स तलब करता है? आप ने फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि बेशक तुम्हारे सामने दुश्वार गुज़ार घाटी है (यानी हिसाब की घाटी) बोझ वाले इससे न गुज़र सकेंगे लिहाज़ा मैं इस घाटी के लिए हल्का फुल्का रहना चाहता हूँ। (मिश्कातुल मसाबीह)

३४) हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने १२० सहाबए किराम की मुसाहिबत की है, उन में से ७० सहाबा बद्र वाले थे। (तफ़सीरे नईमी)

३५) हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु जब सज्दा करते तो इस क़दर लम्बा और बेहरकत होता था कि चिड़ियाँ आकर कमर पर बैठ जाती थीं। कभी इतना लम्बा रुकूअ़ करते कि सुब्ह तक रुकूअ़ में ही रहते। (तफ़सीरे नईमी)

३६) हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु को यह एज़ाज़ हासिल है कि इस्लाम में सबसे पहली शहादत उन की हुई है। (तफ़सीरे नईमी)

३७) हज़रत ख़ुबाब बिन अलअरत रज़ियल्लाहु अन्हु का इन्तिक़ाल ३७ बरस की उम्र में हुआ और कूफ़े में सब से पहले सहाबी यही दफ़्न हुए। (तफ़सीरे नईमी)

३८) हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु की तलवार उहद में टूट गई। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी तलवार उन्हें अ़ता की जो उन के पास रही, बाद में २०० दीनार में फ़रोख़्त हुई। (तफ़सीरे नईमी)

३९) हिजरत के बाद इस्लाम में सब से पहली विलादत हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु की है। (बुख़ारी शरीफ़)

४०) सबसे पहले ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस दर्सगाह का इफ़तिताह किया, वह मदीनए मुनव्वरा का एक मकतब था जिसमें सबसे पहले हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु मुअल्लिम मुक़र्रर हुए। (बुख़ारी शरीफ़)

४१) ख़्वाजा ह़सन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु का वुज़ू ७० साल तक सिवाए ह़ाजते इन्सानी के बातिल नहीं हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

४२) हज़रते जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीस साल तक रात दिन के किसी हिस्से में अपने पाँव नहीं फैलाए। (सबए सनाबिल शरीफ़)

४३) मस्जिदे नबवी में चराग़ की शुरूआत हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़ुलाम फ़त्ह ने की। सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसका नाम बदल कर सिराज रख दिया। (तफ़सीरे नईमी)

४४) ह़ज़रते हन्ज़ुला रज़ियल्लाहु अन्हु की शादी ग़ज़वए उह़द से पहले की रात में हुई थी। सुब्ह को उठे तो ग़ुस्ले जनाबत की ह़ाजत थी, ग़ुस्ल के लिये आधा सर ही धोया था कि जिहाद की पुकार कानों में पड़ी। फ़ौरन उसी ह़ालत में वह जंग को चल दिये। उहद के मैदान में उन्हें शद्दाद बिन अल असवद ने शहीद कर दिया। ह़ज़रत हन्ज़ुला रज़ियल्लाहु अन्हु की नअ़शे मुबारक को फ़रिश्तों ने ग़ुस्ल दिया। इसी लिये उन्हें ग़सीलुल मलाइका कहते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

४५) अशरए मुबश्शिरा में वह दस सहाबा हैं जिनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन की ज़िन्दगी ही में जन्नत की बशारत दे दी। इनके मुबारक नाम यह हैं: हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर फ़ारूक़, हज़रत उस्माने ग़नी, हज़रत मौला अली, हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास, हज़रत अबदुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह और हज़रत सअद बिन ज़ैद रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन। (सबए सनाबिल शरीफ़)

४६) ह़ज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु, उनकी बीवी और ख़ादिम ने नमाज़ के लिये रात के तीन हिस्से कर लिये थे। उन में से जब एक नमाज़ से फ़रिग़ हो जाता तो दूसरे को नमाज़ के लिये जगा देता। (तफ़सीरे नईमी)

४७) ह़ज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु अ़रब के मशहूर और जाने माने सख़ी हातिम ताई के बेटे थे। यह और इनका पूरा कबीला ईसाई था। सन सात हिजरी में ईमान लाऐ। इन से ६६ ह़दीसें मरवी हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

४८) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी, हज़रत उबादा बिन सामित, हज़रत उबई बिन कअब, हज़रत मआज़ बिन जबल, हज़रते ज़ैद बिन साबित, हज़रत सालिम, हज़रत अबू दरदा रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन ने खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते तय्यिबा में पूरा कुरआन ज़बानी याद कर लिया था। (तफ़सीरे नईमी)

४६) हज़रत ख़िज़ीमा बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु का ताल्लुक़ क़बिलए औस से था। उनकी गवाही को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो शहादतों के बरबर क़रार दिया था। (नुज्हतुल क़ारी)

५०) हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु अगर्चे मदाइन के गवर्नर थे फिर भी चटाई बुनकर अपनी रोज़ी हासिल करते थे। (तफ़सीरे नईमी)

५१) अब तक सिर्फ़ १७ सहाबा और ६ ताबिईन के बारे में यक़ीन से मालूम हो सका है कि उनके मुबारक क़दम ख़िलाफ़ते राशिदा में हिन्दुस्तान आ चुके हैं। (तफ़सीरे नईमी)

५२) हिन्दुस्तान के एक राजा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में मिट्टी के घड़े में सोंठ का हदिया भेजा जिसे आप ने टुकड़े टुकड़े करके सहाबा को खिलाया। (तफ़सीरे नईमी)

५३) मशहूर क़ौल के मुताबिक़ सहाबा का ज़माना सन एक सौ बीस हिजरी या इस से कुछ कम या ज़्यादा में हज़रत अबू तुफ़ैल बिन आमिर वासिला रज़ियल्लाहु अन्हु के विसाल पर पूरा हो गया। इस के बाद सत्तर अस्सी साल तक ताबिईन का दौर रहा फिर पचास बरस तक तबअ ताबिईन का रहा। लग भग दो बीस हिजरी में तबअ ताबिईन का दौर ख़त्म हो गया। इस के बाद वह सब शुरू हो गया जो हदीस में फ़रमाया: तुम्हारे बाद कुछ लोग होंगे जो ख़यानत करेंगे, अमानतदार न होंगे, गवाही देंगे हालांकि वह गवाह न बनाए गए होंगे, मन्नत मानेंगे मगर पूरी नहीं करेंगे। इन में मोटापा ज़ाहिर होगा। (मुस्लिम, निसाई)

५४) मक्कए मुकर्रमा में सब से आख़िरी सहाबी हज़रत अबू तुफ़ैल आमिर बिन वासिला, मदीनए मुनव्वरा में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह, बसरा में हज़रत अनस बिन मालिक, कूफ़े में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा, शाम में हज़रत अरस बिन उमैरा, अफ़्रीक़ा में हज़रत रुवीफ़अ बिन साबित और बादिया में हज़रत सलमा बिन अकविअ रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन सब सहाबा के आख़िर में फ़ौत हुए हैं और इन तमाम हज़रात में सबसे आख़िर में हज़रत आमिर बिन वासिला का विसाल हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

५५) ताबिई वह मुसलमान है जिसने किसी सहाबीये रसूल की सोहबत उठाई हो। सबसे आख़िरी ताबिई हज़रत ख़लफ बिन ख़लीफ़ा रहमतुल्लाहि तआला अलैहि हैं जिनका विसाल १८१ हिजरी में हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

५६) नबुव्वत का दावा करने वाले मुसैलमा कज़्ज़ाब को वहशी ने क़त्ल किया। उन का क़ौल है कि मैं ने हालते कुफ़्र में इस्लाम के सब से बहादुर यानी हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया था और मुसलमान होकर इस्लाम के सब से बड़े दुशमन मुसैलमा कज़्ज़ाब को जहन्नम रसीद किया। (तफ़सीरे नईमी)

५७) सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नजाशी अस्हमा बादशाह की ग़ायबाना नमाज़े जनाज़ा मस्जिदे ग़मामा में पढ़ी थी। (तफ़सीरे नईमी)

५८) कातिबे वही हज़रत हुन्ज़ुला रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार रो रहे थे कि उनके क़रीब से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का गुज़र हुआ। पूछाः क्या बात है? उन्हों ने बतायाः हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर रहते हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नत और दोज़ख़ का तज़्किरा करते हैं तो ऐसा महसूस होता है गोया हमारे सामने हैं और जब वहाँ से लौट कर अपने बाल बच्चो में आते हैं तो बहुत कुछ भूल जाते हैं। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः मेरा भी यही हाल है। चलो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछें। दोनों हाज़िरे ख़िदमत हुए। हज़रत हुन्ज़ुला रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी बात अर्ज़ की। हुज़ूर सल्लल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी बारगाह से उठते वक़्त जो तुम्हारी हालत होती है अगर उसी पर हमेशा रहो तो मजलिसों, मजमओं, रास्तों में फ़रिश्ते तुम से मुसाफ़हा करते मगर ऐ हुन्ज़ुला यह वक़्त वक़्त की बात है। (तिर्मिज़ी)

५९) हतरत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में मरवी है कि आप बारह साल की उम्र में बालिग़ हो गए थे। आप के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह आप से सिर्फ़ बारह साल छोटे थे। (नुज़हतुल क़ारी)

६०) हज़रत जिब्राईले अमीन अलैहिस्सलाम ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का लक़ब हिब्रे अरब रखा था। यानी अरब का सबसे बड़ा आलिम (नुज़हतुल क़ारी)

६१) हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ौजा उम्मे हराम रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दूध शरीक ख़ाला थीं। क़ुबरस की जंग में आप अपने शौहर हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु

अन्हु के साथ गई थीं। क़बरस की फ़त्ह के बाद वापसी में उनकी सवारी के लिए ख़च्चर लाया गया। सवार होते वक़्त गिर गईं और विसाल हो गया। इनका मज़ारे मुबारक क़बरस में है। वहाँ लोग इनके मज़ार की ताज़ीम करते हैं और इनके वसीले से बारिश की दुआ मांगते हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

६२) नजाशी अस्हमा बादशाह सन छः हिजरी में इस्लाम के दायरे में आए थे। सुल्तानों में इस्लाम क़ुबूल करने वाले यह पहले बादशाह थे। (तफ़सीरे नईमी)

६३) हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु दुनियाए इस्लाम के सब से पहले दुर्वेश कहे जाते हैं। इनका अस्ल नाम जुन्दुब या जुन्दब है। कुछ ने इन का नाम हुरीर लिखा है। ख़ुद फ़रमाते थे कि मैं चौथा या पांचवाँ मुसलमान हूँ। ग़ज़वए तबूक के शुरू में शरीक न हुए, बाद में अकेले चले। रास्ते में ऊंट मर गया। अपना सामान लादे हुए बिल्कुल अकेले उस वक़्त सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पहुंचे कि आप तबूक में ही क़याम फ़रमा थे। इन्हें अकेले आता देख कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह अबू ज़र पर रहम फ़रमाए, तन्हा आया है, तन्हाई में मरेगा और तन्हा ही क़ब्र से उठेगा। हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुक्म दिया कि मदीनए तय्यिबा से तीन मन्ज़िल के फ़ासले पर इराक़ की तरफ़ एक छोटे से गांव में जा कर रहें। वहीं तन्हाई में विसाल फ़रमाया। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु पहुंच गए। उन्हों ने अपने साथियों के साथ जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई और वहीं दफ़्न किया। सन ३२ हिजरी में विसाल हुआ। आप ने २८१ ह़दीसें रिवायत की हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

६४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सब से पहले हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु को इज्तिहाद की इजाज़त अ़ता फ़रमाई थी, जब उन्हें यमन का गवर्नर बनाकर भेज रहे थे। उनसे पूछाः ऐ मआज़! फ़ैसला कैसे करोगे? अर्ज़ किया कि अल्ला की किताब से। फ़रमायाः अगर उस में न पाओ तो? अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल की सुन्नत से। फ़रमायाः उसमें भी न मिले तो? अर्ज़ किया: पूरे ग़ौर और फ़िक्र के बाद अपनी राय से। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उस अल्लाह का शुक्र है जिसने अपने रसूल के भेजे हुऐ शख़्स को अच्छाई की तौफ़िक़ दी। (नुज़्हतुल क़ारी)

६५) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सब से पहले ईमान लाने वालों में से हैं। कुछ का क़ौल है कि आप छटे मुसलमान हैं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नालैने मुबारक उतारते तो यह उन्हें अपनी आस्तीन में रख लेते। इस लिए उन को साहिबे नालैन कहा जाता है।

बहुत दुबले पतले आदमी थे, क़द भी बहुत छोटा था। लम्बे आदमी बैठे होते और यह खड़े होते तो बराबर ही रहते। (नुज़्हतुल क़ारी)

६६) हज़रते अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम अब्दुल्लाह है। आप यमन के रहने वाले थे। हिजरत से पहले मक्के में हाज़िर हो कर ईमान लाए और हब्शा की तरफ़ हिजरत की। आख़िर उम्र में मक्का में रहने लगे थे। वहीं ६३ साल की उम्र में विसाल हुआ। आप ने ३०० हदीसें रिवायत कीं। (नुज़्हतुल क़ारी)

६७) हज़रते सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़िताब फ़ारसे इस्लाम फ़ातेह ईरान भी है। आप का नाम मालिक और कुन्नियत अबु इस्हाक़ है। आप इस्लाम कुबूल करने वालो में पांचवें या सातवें आदमी हैं। सब से पहले अल्लाह की राह में उन्हों ने तीर चलाया था और सब से पहले उन्हों ने इस्लाम के दुश्मन को जहन्नम रसीद किया था। अशरए मुबश्शिरा में सब के बाद आप का विसाल हुआ। आप ने २७० हदीसें रिवायत कीं। (नुज़्हतुल क़ारी)

६८) हज़रते अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु की वालिदा सुमय्या रज़ियल्लाहु अन्हा को इस्लाम कुबूल करने के जुर्म में अबू जहल ने शहीद कर दिया था। यह इस्लाम की पहली शहीद होने वाली ख़ातून हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

६९) हज़रत महमूद बिन रबीअ़ रज़ियल्लाहु अन्हु कमसिन सहाबा में से हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के वक़्त पाँच बरस के थे। इन को यह शर्फ़ हासिल था कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन के मुंह में कुल्ली फ़रमाई थी। (तफ़सीरे नईमी)

७०) हज़रत सलमा बिन अकविअ़ रज़ियल्लाहु अन्हु वह सहाबिये रसूल हैं जिन से भेड़िये ने कलाम किया था और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निशानदही की थी। हुआ यह कि इन्हों ने एक भेड़िये को देखा कि एक हिरन पकड़े हुए है। इन्हों ने भेड़िये का पीछा किया और उस से हिरन छीन लिया। इस पर भेड़िये ने कहा: तुझे ख़राबी हो। अल्लाह ने मुझे रिज़्क़ दिया तू ने छीन लिया, हालांकि वह तेरा माल नहीं है। यह सुन कर इन्हों ने कहा: यह कितनी अजीब बात है कि भेड़िया बातें कर रहा है। इस पर भेड़िये ने कहा: इससे भी अजीब बात यह है कि खजूरों में अल्लाह के रसूल हैं जो तुम को इबादत की तरफ़ बुलाते हैं और तुम बुतों को पूजने पर अड़े हुए हो। यह सुन कर सलमा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और इस्लाम कुबूल कर लिया। (नुज़्हतुल क़ारी)

७१) हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु वह आ़ली मरतबत

सहाबी हैं जिन्हें हिजरत की शुरूआत से एक माह तक सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मेज़बानी की सआ़दत ह़ासिल हुई। इन का ताल्लुक़ क़बीलए बनी नज्जार से था जिस में हूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा हज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब की ननिहाल थी। (तफ़सीरे नईमी)

७२) हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है। फ़ारस (ईरान) के शहर इस्फ़हान के उप नगर में हाजन बस्ती के रहने वाले थे। दीन की तलाश में फिरते थे। चौदह जगह फ़रोख़्त हुए यहाँ तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में मदीने पहुंच गए। साढ़े तीन सौ साल की उम्र पाई। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ताबिई और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबी हैं। कुछ इतिहासकारों ने लिखा है कि ईसा अलैहिस्सलाम के हवारियों से आप ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ूबियाँ सुनीं तो आप की तलाश में निकल खड़े हुए। (तफ़सीरे नईमी)

७३) सय्यिदुना अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की बीबी हज़रत लुबाबा बिन्ते हारिस उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा के बाद सब से पहले औरतों में ईमान लाईं। अब्दुल्लाह बिन अब्बास और फ़ज़्ल बिन अब्बास जैसे शहज़ादों की माँ हैं। (तफ़सीरे नईमी)

७४) हज़रत मआज़ बिन अफ़रा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबू जहल को जहन्नम रसीद किया। उस वक़्त हज़रत मआज़ की उम्र ११ साल की थी। (तफ़सीरे नईमी)

७५) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरे सहाबा को बुरा न कहो क्यूंकि इनका सवा सेर जौ ख़ैरात करना तुम्हारे पहाड़ भर सोना ख़ैरात करने से अफ़ज़ल है। (मुस्लिम, बुख़ारी)

७६) हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक मौक़े पर किसी ज़रूरत से कुछ शहीदों की क़ब्रें खोलने और उनके जिस्म किसी और जगह मुन्तक़िल करने का हुक्म दिया। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम ने उन शहीदों को निकाला तो उनके जिस्म तारो ताज़ा थे. यहाँ तक कि एक शहीद की ऊँगली में फावड़ा लग गया तो उससे ख़ून जारी हो गया। (तफ़सीरे नईमी)

७७) हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कभी कोई चीज़ जमा नहीं फ़रमाई। किसी ने पूछाः आप अपनी औलाद के लिए क्या छोड़ेंगे? फ़रमायाः मेरी औलाद नेक हुई तो रब तआ़ला उनका वारिस है और

अगर वह मुजरिम हुए तो मैं मुजरिमों का मददगार क्यों बनूं? (तफ़सीरे कबीर)

७८) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अगर किसी को अपना ख़लीफ़ा बनाते तो किसे बनाते? फ़रमायाः अबू बक्र को। पूछा गयाः उनके बाद? फ़रमायाः अबू उबैदा बिन जर्राह को। (तफ़सीरे नईमी)

७९) हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं इस्लाम लाने में तीसरा आदमी हूँ। जिस रोज़ मैं मुसलमान हुआ उससे पहले कोई मुसलमान नहीं हुआ था और उसी दिन मुझ से पहले दो शख़्स मुसलमान हुए थे। (तफ़सीरे नईमी)

८०) हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु से हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमायाः तुम्हारे बाप को अल्लाह जन्नत की सलसबील से सैराब करे, उन्हों ने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीबियों को एक बाग़ दिया था जो चालीस हज़ार में फ़रोख़्त किया गया। (तफ़सीरे नईमी)

८१) हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ख़ालिद इब्ने वलीद क़बीले का अच्छा जवान है और अल्लाह तआला की तलवारों में से एक तलवार है। (तफ़सीरे नईमी)

८२) बद्र वाले सहाबियों में से सबसे आख़िर में वफ़ात पाने वाले सहाबी हज़रते अबू उसैद बिन मालिक बिन रबीअ अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

८३) हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु का अस्ल नाम ख़ालिद है। आप ज़ैद अन्सारी ख़ज़रजी के बेटे थे। कुस्तुनतुनिया की फ़सील के नीचे दफ़्न किये गए। अगर बारिश नहीं होती है तो लोग उनके मज़ार पर हाज़िर होकर दुआ करते हैं तो बारिश होती है। इन से १५० हदीसें मरवी हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

८४) हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु अन्हु ने ६३ साल की उम्र में दमिश्क़ में बाबुस सग़ीर के क़रीब वफ़ात पाई, वहीं दफ़्न हुए। (नुज़्हतुल क़ारी)

८५) हज़रत तमीम दारी नसरानी थे। सन ९ हिजरी में ईमान लाए। एक रकअ़त में कलामुल्लाह ख़त्म किया करते थे। कभी कभार एक आयत को सुब्ह तक बार बार पढ़ते रहते थे। एक रात सोते रह गए, तहज्जुद के लिए आँख न खुली। इसके एवज़ एक साल तक रात का सोना तर्क कर दिया। सारी रात इबादत करते रहते थे। यही वह शख़्स हैं जिन्हों ने मस्जिदे नबवी में सबसे

पहले चराग़ रौशन किया था। (नुज़्हतुल क़ारी)

८६) हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु बद्र वाले सहाबियों में से तमाम शायरों में बड़े शायर थे। आप की उम्र १२० साल की हुई। साठ साल जाहिलियत के ज़माने में गुज़रे और साठ साल इस्लाम के ज़माने में। (नुज़्हतुल क़ारी)

८७) हज़रत अबू बकरह रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम नफ़ीअ़ है या मसरूह। यह ताइफ़ के रहने वाले थे और हारिस बिन कल्दह के गुलाम। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ताइफ़ का घेराव किया और यह एलान किया कि जो गुलाम मेरे पास आ जाएगा वह आज़ाद है, तो यह चरख़ी के ज़रिये फ़सील से उतरे। चरख़ी को अरबी में बकरह कहते हैं। इसी लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन की कुन्नियत अबु बकरह रखी। इन्हें आज़ादी तो मिल गई मगर अल्लाह के मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुलामी में वह मज़ा आया कि उम्र भर ख़िदमत ही में रहे। सन ५२ हिजरी में वफ़ात पाई। इनसे १३२ हदीसें मरवी है। (नुज़्हतुल क़ारी)

८८) हज़रत रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हक़ तआला क़ियामत के दिन सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उवैस क़रनी की शक्ल व सूरत पर पैदा करेगा ताकि उन में उवैस रहे, हक़ तआला के सिवा कोई न पहचान सके कि उवैस कौन है। (तफ़सीरे नईमी)

८९) असहाबे सुफ़्फ़ा के पास कभी दो कपड़े जमा नहीं हुए, कुरता है तो तहबन्द नहीं। वह मस्जिदे नबवी में झुके झुके दाख़िल होते थे ताकि सत्र न खुलने पाए। (नुज़्हतुल क़ारी)

९०) हज़रत तल्हा इब्ने अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के भतीजे हैं। जंगे उहद में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ढाल बने और २४ ज़ख़्म खाए। आप के जिस्म पर कुल ७५ ज़ख़्म थे जो अलग अलग ग़ज़वों में खाए थे। (नुज़्हतुल क़ारी)

९१) अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ौजए मोहतरमा हज़रत नाइला बिन्ते फ़राफ़िसा रज़ियल्लाहु अन्हा बलन्द पाया ख़तीबा और मुस्तजाबुद दुआ जलीलुल क़द्र ख़ातून थीं। सय्यिदुना उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु इन्हें अपनी दूसरी बेगमात से ज़्यादा चाहते थे। हज़रत नाइला का ख़ानदान कूफ़ा के क़रीब समादा नामी बस्ती में रहता था। हज़रत उस्मान से निकाह के बाद जब मदीनए मुनव्वरा आईं तो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आना जाना शुरू हुआ और उनसे हदीस रिवायत

करने की सआदत हासिल की। जिस वक़्त बलवाइयों ने सय्यिदुना उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पर जान लेवा हमला किया तो हज़रत नाइला ने अपने शौहर के बचाव की हद भर कोशिश की जिस में आप की हाथ की उंगलियाँ कट गईं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत उस्माने ग़नी की शहादत की ख़बर पहले ही दे चुके थे। ग़ैबदां नबी की बात पूरी हो कर रही। (इब्ने असाकिर)

६२) हज़रत अबुल आस बिन रबीअ रज़ियल्लाहु अन्हु उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुब्रा रज़ियल्लाहु अन्हा के भांजे उनकी बहन हाला बिन्ते ख़्वैलिद के बेटे थे। यह अपनी कुन्नियत से मशहूर हैं। इनका नाम मुक़सिम बताया जाता है। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बिअसत से पहले अपनी सब से बड़ी साहिबज़ादी हज़रत सय्यिदा ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से इनका निकाह फ़रमाया था। बद्र में मुश्रिकीन के साथ थे, गिरफ़्तार हुए। हज़रत ज़ैनब ने फ़िदिया दे कर छुड़ाया। फ़िदिये में वह हार भेजा जिसे हज़रत खदीजतुल कुबरा ने उन्हें जहेज़ में दिया था। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबए किराम से फ़रमाया: यह ज़ैनब के पास माँ की निशानी है, इसे वापस कर दो तो बेहतर है। सहाबए किराम ने वापस कर दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन से वादा ले लिया कि मक्का पहुँच कर ज़ैनब को भेज देना। उन्हों ने इस वादे को निभाया। सय्यिदा ज़ैनब मदीने आ गईं और अबुल आस मक्का ही में रहे। दोबारा गिरफ़्तार हो कर आए तो सय्यिदा ज़ैनब ने इन्हें पनाह दी और इन्हों ने इस्लाम कुबूल कर लिया। इनके बत्न से एक साहिबज़ादी हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हा पैदा हुईं। उन्हीं को गोद में लेकर सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ाते थे। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के विसाल के बाद इनका निकाह हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम से हुआ था। एक और साहिबज़ादे भी पैदा हुए जिनका नाम अली था। मशहूर यह है कि हज़रत अबुल आस का विसाल सन बारह हिजरी में हुआ। (नुज़्हतुल क़ारी)

६३) जंगे जमल के दौरान मैदाने जंग में हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु का आमना सामना हो गया। हज़रत अली ने हज़रत ज़ुबैर से कहा: याद करो एक बार हम और तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तुम से पूछा था: क्या तुम अली से मुहब्बत करते हो? तुमने अर्ज़ किया था: हाँ या रसूलल्लाह। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था: एक दिन तुम अली से लड़ोगे और तुम ज़ालिम होगे।

यह सुनते ही हज़रत ज़ुबैर ने तलवार नियाम में रख ली और मैदाने जंग से जुदा होकर बसरा जाते हुए वादिये सबाअ के एक गाँव सफ़वान में पहुँच कर नमाज़ पढ़ने लगे। अम्र बिन जरमोज़ तमिमी ने पीछे से आकर पुश्ते मुबारक में नेज़ा मार कर शहीद कर दिया। अम्र उनकी तलवार लेकर हज़रत अली की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और बोला: मैंने ज़ुबैर को क़त्ल कर दिया। हज़रत अली ने फ़रमाया: यह तलवार मुद्दते दराज़ तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मसायब और आलाम दफ़अ करती रही। इब्ने सफ़िया के क़ातिल को जहन्नम की बशारत हो। यह सुन कर जरमोज़ ने कहा: ऐ अली आप की ज़ात भी अजीब है, आप का दोस्त भी जहन्नमी और दुशमन भी। उस वक़्त हज़रत ज़ुबैर वहीं दफ़्न कर दिये गए, बाद में नअशे मुबारक बसरा लाई गई। बसरा में आप का मज़ारे पाक ज़ियारत गाहे ख़लाइक़ है। (नुज्हतुल क़ारी)

९४) सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहिबज़ादी हज़रत रुक़य्या हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ौजियत में थीं और ग़ज़वए बद्र के मौक़े पर बहुत बीमार बल्कि जाँ बलब थीं। उनकी तीमीरदारी के लिए हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म हुआ कि घर पर ही रहो, तुम को ग़ज़वा में शिरकत का सवाब भी मिलेगा और माले ग़नीमत में हिस्सा भी। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब बद्र से मदीनए तय्यिबा वापस हुए तो वह दफ़्न भी हो चुकी थीं। फ़त्ह की बशारत लेकर जब ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु मदीनए मुनव्वरा पहुंचे तो दफ़नाई जा रही थीं। जिस सुब्ह को उनका विसाल हुआ उसी दिन सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बद्र से लौटे थे। (मदारिजुन नबूव्वह)

९५) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने कहा: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जअराना में ग़नीमत तक़सीम फ़रमा रहे थे इसी बीच एक शख़्स ने कहा: इन्साफ़ कर। फ़रमाया: मैं ख़ैर से महरूम हूँ अगर इन्साफ़ न करूँ। यह गुस्ताख़ रासुल ख़वारीज ज़ुलख़्वैसरा था। इसका नाम हरक़ूस बिन ज़ुहैर था। यह नज्द का बाशिन्दा आले सऊद का हमक़बीला बनी तमीम का फ़र्द नज्दी तमीमी था। नहरवान में मार गया जिसके मक़तूलीन के बारे में खुद सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि बदतरीन ख़ल्क़ होंगे। मगर अफ़सोस है कि देवबंदी इसे सहाबी मानते हैं। (नुज़हतुल कारी)

९६) हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु की वालिदा हज़रत सुमय्या अबू हुज़ैफ़ा बिन मुग़ीरा की कनीज़ थीं। उस ने इन्हें अबू जहल के हवाले कर दिया। अबू जहल ने पहले तो सुमय्या को वरग़लाने की बहुत कोशिश

की मगर जब वह सच्ची मोमिना अपने ईमान पर पहाड़ की तरह जमी रहीं तो मक्का के एक चौराहे पर तमाशाइयों के एक हुजूम में उस ने आप के अन्दामे निहानी पर नेज़ा मारा और वह ग़श खाकर गिरीं और वफ़ात पा गईं। तहरीके इस्लाम में सब से पहली शहीद होने वाली यही ख़ातून थीं। (ज़ियाउन्नबी, जि:२)

९७) हज़रत बिलाल हब्शी को उन का आक़ा उमय्या बहुत अज़ियतें देता था। एक दिन उस ने इन्हें सुलगती रेत पर लिटा रखा था और आप के सीने पर भारी चट्टान रखी हुई थी। वहाँ से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का गुज़र हुआ। उन्हों ने उमय्या से कहा इस मिस्कीन के बारे में तुम अल्लाह से नहीं डरते कब तक इस बेकस पर ज़ुल्म करते रहोगे? उमय्या बोला: ऐ अबू बक्र तू ने ही इसे ख़राब किया है। अगर तुम्हें इस से इतनी ही हमदर्दी है तो इसे छुड़ा क्यों नहीं लेते। हज़रत अबू बक्र ने फ़रमाया: मेरे पास एक हब्शी गुलाम क़िस्तास है जो इस से मज़बूत और तवाना है। तेरा हम मज़हब है वह तू लेले और बिलाल मुझे देदे। उमय्या इस सौदे पर राज़ी हो गया। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने बिलाल को लेकर अपने आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश कर दिया और अर्ज़ की: या रसूलल्लाह आप के रूए ज़ेबा के सदक़े में मैं ने बिलाल को आज़ाद कर दिया। (ज़ियाउन्नबी, जि: २)

९८) हज़रत बिलाल की वालिदा हमामा रज़ियल्लाहु अन्हा ने भी इस्लाम क़ुबूल कर लिया था। इन को भी इस जुर्म में इन का काफ़िर मालिक तरह तरह की सज़ाएं देता था और अज़ियतें पहुंचाता था। इन्हें भी हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़रीद कर इन के संगदिल आक़ा के चंगुल से रिहाई दिलाई। (ज़ियाउन्नबी, जि: २)

९९) हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आमिर बिन फ़ुहैरा को उन के मुश्रिक मालिक से रिहाई दिलाई। यह हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के वह क़ाबिले एतेमाद गुलाम हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत के सफ़र में ग़ारे सौर में क़ियाम फ़रमाया तो यह रेवड़ लेकर शाम को ग़ार के क़रीब पहुंच जाते और दूध दोह कर पेश किया करते थे। (ज़ियाउन्नबी, जि: २)

१००) ग़ज़वए तबूक की माली इमदाद के लिये हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने दो औक़िया चाँदी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में पेश कर दी। और बाक़ी सारा माल आधा आधा बाँट दिया और एक निस्फ़ जिहाद के ख़र्च पूरा करने के लिये हाज़िर कर दिया। सरकार

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्हें बरकत की दुआ दी जिस के बाइस अल्लाह तआला ने आप के माल में इतनी बरकत दी कि आप ने चार हज़ार दिरहम एक मर्तबा ख़र्च किये। फिर एक मौक़ा पर चालीस हज़ार दीनार ख़र्च किये। फिर एक मौक़ा पर पाँच सौ घोड़े राहे ख़ुदा में पेश किये। फिर एक मौक़ा पर पाँच सौ ऊँट अल्लाह की राह में दिये। आप ने सन चौदा हिजरी में सत्तावन साल की उम्र में मदीनए तय्यिबा में वफ़ात पाई। आप ने वसियत की थी कि उन के माल से पचास हज़ार दीनार अल्लाह की राह में ख़र्च किये जाएं और हर बद्री को जो उस वक़्त ज़िन्दा था चार सौ दीनार देने की वसियत की। उन बद्रियों की तादाद उस वक़्त एक सौ थी। एक हज़ार घोड़े मुजाहिदीन को मुहय्या करने की वसियत की। इन वसियतों की अदायगी के बाद इतना सोना छोड़ा कि कुल्हाड़ों से काटा गया। आप ने चार बेवाएं छोड़ीं। आप की एक बीवी ने मीरास में अपने हिस्से के बदले में अस्सी हज़ार दीनार वसूल किये। (असदुल ग़ाबा फ़ी मअरिफ़तुस सहाबा, इज़्ज़ुद्दीन अबुल हसन अली मुहम्मद बिन मुहम्मद अब्दुल करीम, इब्नुल असीर, जिः २)

१०१) हज़रत ज़नय्यरा रज़ियल्लाहु अन्हा एक मुश्रिक की कनीज़ थीं। जब मुसलमान हो गई तो इन के बेरहम मालिक ने इन पर ज़ुल्म व सितम की इन्तिहा कर दी यहाँ तक कि इन की बीनाई चली गई। एक रोज़ अबू जहल ने इस पाकबाज़ ख़ातून को तअना देते हुए कहा लात व उज़्ज़ा ने तेरी आँखों को अन्धा कर दिया है। इन्हों ने झट जवाब दियाः हरगिज़ नहीं, बख़ुदा लात व उज़्ज़ा न नफ़ा पहुंचा सकते हैं न नुक़सान। यह तो आसमानी हुक्म है और मेरा रब इस चीज़ पर क़ादिर है कि मेरी बीनाई लौटा दे। जब सुब्ह हुई तो इन की बीनाई लौट आई। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन्हें और इन की एक लड़की को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया। (ज़ियाउन्नबी, जिः २)

१०२) उम्मे उनैस बनू ज़हरा ख़ानदान की कनीज़ थीं। असवद बिन अब्द यग़ूस इन्हें तरह तरह का अज़ाब दिया करता था। इन को भी हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़रीदा और आज़ाद कर दिया।(ज़ियाउन्नबी, जिः २)

१०३) अन्नहदिया और इन की बेटी बलीद बिन मुग़ीरा की लौंडियाँ थीं। इन्हें भी अल्लाह तआला ने नेअमते ईमान से माला माल कर दिया था फिर यह एक औरत की मिल्कियत में चली गईं थीं। वह औरत इन्हें तरह तरह की अज़ियतें देती थी। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन्हें ख़रीद कर उसी वक़्त आज़ाद कर दिया। (ज़ियाउन्नबी, जिः २)

१०४) आमिर बिन फ़ुहैरा की बहन लुतैफ़ा हज़रत उमर की लौंडी थी जो

मुसलमान हो गई थी। इस्लाम लाने से पहले उमर बिन ख़त्ताब के दिल में इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ जो बुग़ज़ व इनाद था इस की वजह से इन बेचारी लौंडियों को वह ख़ूब पीटते थे। इतना पीटते कि थक जाते। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने लुतैफ़ा को भी ख़रीदा और अल्लाह की राह में आज़ाद कर दिया। (ज़ियाउन्नबी, जि: २)

१०५) हज़रत ख़ुबाब बिन अलअरत आज़ाद माँ बाप के आज़ाद फ़र्ज़न्द थे। किसी ने जाहिलियत के ज़माने में इन्हें पकड़ लिया और अपना असीर बना लिया और किसी मंडी में ले जाकर फ़रोख़्त कर दिया। उम्मे अनमार ने इन्हें ख़रीद लिया। आहन गरी इन का पेशा था। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इन से उल्फ़त थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अकसर इन के पास तशरीफ़ ले जाया करते थे। इस सोहबत की बरकत से आप ने इस्लाम कुबूल कर लिया। इन की मालिका लोहे का एक टुकड़ा भट्टी में गर्म करती और चिमटे से उठा कर ख़ुबाब के सर पर रख देती। एक रोज़ ख़ुबाब ने अपने आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अपनी इस तकलीफ़ के बारे में गुज़ारिश की। हुज़ूर ने दुआ की ऐ अल्लाह तू ख़ुबाब की मदद फ़रमा। दुआ की देर थी कि उस ज़ालिमा के सर में दर्द उठा और वह कुत्ते की तरह भूंकने लगी। अब उस के लिये ख़ुबाब लोहे का टुकड़ा गर्म करते फिर उसे उस के सर पर रखते तब उसे कुछ इफ़ाक़ा महसूस होता। (ज़ियाउन्नबी, जि: २)

१०६) यज़ीद बिन रुकाना कबीलए क़ुरैश में सब से ज़्यादा ताक़तवर और कुश्ती के फ़न के बड़े माहिर थे। उन्हों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तीन बार कुश्ती लड़ी। शर्त यह लगाई थी कि अगर आप मुझे गिरा लें तो मैं आप को सौ बकरियाँ दूँगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें तीनों बार पछाड़ दिया। जब वह तीसरी बार चारों शाने चित ज़मीन पर आ गिरे तो कहने लगे: या मुहम्मद आज तक किसी ने मेरी पुश्त ज़मीन से नहीं लगाई। आज मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन की छाती से उठ खड़े हुए और उन की बकरियाँ उन्हें लौटा दीं। (सीरते इब्ने कसीर, जि: २, स: ८)

१०७) अज़दशनुअत अरब के नामवर कबीलों में से एक कबीला था। उस कबीले का एक रईस ज़माद अज़दी मक्कए मुकर्रमा आया। यह उन मरीज़ों पर दम किया करता था जिन्हें आसेब या जिन्नात की तकलीफ़ होती थी। मक्का के कुछ अहमक़ों ने उसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में बताया कि उन्हें आसेब की तकलीफ़ है। उस ने दिल में तय कर लिया कि अगर मेरी मुहम्मद

से मुलाक़ात हुई तो मैं ज़रूर उसे दम करूँगा। एक रोज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हरम के सेहन में बैठे देखा। वह पास जाकर बैठ गया और कहने लगा मेरे पास आसेब का बड़ा मुजर्रब दम है क्या आप की मर्ज़ी है कि मैं आप को दम करूँ? उस की यह बात सुन कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ज़माद यह कलिमाते तय्यिबात सुन कर बेख़ुद हो गया और अर्ज़ की एक बार फिर यह इरशाद दोहराइये। नबीये बरहक़ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बार यह कलिमात दोहराए। इन्हें सुनने के बाद ज़माद ने कहा: मैं ने काहिनों और जादूगरों के अक़वाल सुने हैं, शायरों से अशआर सुने हैं लेकिन मैं ने आप के इन कलिमात की मिस्ल कोई कलाम नहीं सुना। हाथ आगे बढ़ाइये ताकि मैं आप के हाथ पर इस्लाम की बैअत करूँ। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दस्ते मुबारक बढ़ाया, उस ने बैअत कर ली। फिर सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: यह बैअत सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ से नहीं बल्कि तुम्हारी क़ौम की तरफ़ से भी है। उस ने कहा बेशक यह बैअत मेरी क़ौम की तरफ़ से भी क़ुबूल फ़रमाएं। (सीरतुल हलबिया, लेखक बुरहानुद्दीन अलहलबी, जि: १)

१०८) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सन दस हिजरी में हज्जतुल वदाअ के लिये मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ लाए तो मैसरा ने आप से मुलाक़ात की। यह हज़रत बीबी ख़दीजतुल कुबरा का वही ग़ुलाम है जो तिजारती सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी मैसरा को पहचान लिया। मैसरा ने अर्ज़ की: या रसूलल्लाह! मैं उस दिन से आप की पैरवी का शिद्दत से ख़्वाहिशमन्द था जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारी क़ियामगाह पर मिना के मैदान अपनी ऊँटनी बिठाई थी। आज मैं बड़ी ताख़ीर से इस्लाम लाने के लिये हाज़िर हुआ हूँ। फिर मैसरा मुशर्रफ़ बइस्लाम हो गए और उम्र भर इहकामे इलाही को हुस्न व ख़ूबी से अन्जाम देते रहे। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु मैसरा का बड़ा एहतेराम करते थे। (सीरते इब्ने कसीर, जि: २)

१०९) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो मुझ से मुहब्बत करता है वह अन्सार से मुहब्बत करता है और जो मुझ से बुग़्ज़ रखता है वह अन्सार से बुग़्ज़ रखता है। कोई मुनाफ़िक़ उन से मुहब्बत नहीं कर सकता और कोई मोमिन उन से बुग़्ज़ नहीं रख सकता। जो उन से मुहब्बत करता है अल्लाह तआला उस से मुहब्बत करता है और जो उन से बुग़्ज़ रखता है अल्लाह

तआला उस से बुग्ज़ रखता है। लोग उस चादर की तरह हैं जो ऊपर ओढ़ी जाती है और अन्सार उस कपड़े की तरह हैं जो जिस्म के साथ लगा रहता है। अगर सारे लोग एक राह पर चल निकलें और अन्सार दूसरी राह पर तो मैं अन्सार की राह पर चलूँगा। (इमाम अहमद की रिवायत)

११०) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अन्सार मेरे दोस्त हैं, मेरे दीनी भाई हैं और दुशमनों के मुक़ाबले में मेरे दस्त और बाज़ू हैं। (मुस्नदुल फ़िरदौस में दैलमी की रिवायत)

१११) हज़रत अबू राफ़ेअ रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: मुझे कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में भेजा। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखते ही मेरे दिल में इस्लाम उतर गया। मैं ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह, मैं तो अब कभी उनके पास न जाऊँगा। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं मुआहिदे में ग़द्दारी नहीं करता और न सफ़ीरों को क़ैद कर सकता हूँ। तुम इस वक़्त तो वापस जाओ फिर अगर तुम्हारे दिल में यही जज़्बा बाक़ी रहे तो वापस आ जाना। ग़र्ज़ उस वक़्त तो मैं वापस हो गया, उसके बाद दोबारा आकर इस्लाम लाया। (अबू दाऊद)

११२) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत सअद बिन मआज़ की वफ़ात पर सत्तर हज़ार ऐसे फ़रिश्ते ज़मीन पर उतरे जो आज तक कभी ज़मीन पर नहीं उतरे थे। (इब्ने कसीर, अस्सीरतुन नबविया, जि: ३)

११३) हज़रत उबादा बिन सामित बिन क़ैस अन्सारी ख़ज़रजी रज़ियल्लाहु अन्हु की कुन्नियत अबुल वलीद थी। वह अक़बए ऊला व सानिया में हाज़िर हुए। वह तमाम ग़ज़वात में शरीक हुए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्हें सदक़ात पर आमिल मुक़र्रर किया। हज़रत उबादा बिन सामित ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दौर में क़ुरआन जमा किया था। वह अहले सुफ़्फ़ा को क़ुरआन की तालीम दिया करते थे। आप सन चौंतीस हिजरी में रमल्ला में फ़ौत हुए। (असदुल ग़ाबा, जि: ३)

११४) हज़रत असअद बिन ज़रारा की कुन्नियत अबू उमामा थी वह अन्सार में सब से पहले मुसलमान हुए। आप सब से पहले फ़र्द हैं जिन्हों ने मदीने में जुम्आ पढ़ाया। आप शव्वाल पहली हिजरी में बद्र से पहले फ़ौत हुए। (असदुल ग़ाबा, जि: १)

११५) हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु का शजरए नसब

पांचवीं पुश्त में नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जा मिलता है। उन्हों ने दो बार हब्शा की तरफ़ हिजरत की। ग़ज़वए बद्र में मुसअब के पास मुहाजिरीन का झन्डा था। ग़ज़वए उहद के दुसरे मरहले में वह उन चौदह जाँबाज़ों में शामिल थे जो नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चारों तरफ़ घेरा बना कर आप की हिफ़ाज़त कर रहे थे। इनके हाथों में इस्लाम का परचम था। (अतलसे सीरते नबवी)

११६) हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु हाफ़िज़े कुरआन थे और तिखना पढ़ना जानते थे। इनसे डेढ़ सौ हदीसें मन्सूब हैं जिन में से पांच पर सबका इत्तिफ़ाक़ है। इन की क़ब्र इस्तम्बोल (कुस्तुन्तुनिया) में है और इनके नाम से मन्सूब मस्जिद जामए अय्यूब कहलाती है। (उर्दू दायरए मआरिफ़े इस्लामिया, जि: १)

११७) हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह थी। और आप सलमानुल ख़ैर के लक़ब से मशहूर थे। आबिदो ज़ाहिद और उलमा और अफ़ज़ल सहाबा में इनका शुमार होता था। इनसे इनका नसब पूछा जाता तो फ़रमातेः मैं सलमान बिन इस्लाम हूँ। (अतलसे सीरते नबवी)

११८) इस्लाम के पहले तीर अंदाज़ हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु थे। इनका ताल्लुक़ कुरैश के क़बीला बनू ज़हरा से था। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वालिदा माजिदा भी इसी क़बीले की थीं और हज़रत सअद के वालिद की चचाज़ाद बहन थीं। हज़रत सअद ने तक़रीबन सत्तरह साल की उम्र में पहली वही के नुज़ूल के सातवें दिन हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की तर्ग़ीब से इस्लाम कुबूल किया था। सही बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ वह अपने आप को सुलुसुल इस्लाम यानी इस्लाम का तीसरा मुसलमान कहते थे। आप ने बद्र और उहद से लेकर ग़ज़वए ख़न्दक़ व ख़ैबर, फ़त्हे मक्का, हुनैन व ताइफ़ वग़ैरा तमाम ग़ज़वात में हिस्सा लिया। फ़त्हे मक्का के दिन रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आप को मुहाजिरीन के तीन झण्डों में से एक झण्डा अता फ़रमाया था। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कभी कभी इन्हें प्यार और शफ़क़त से मामूँ कहकर पुकारते थे। आप अशरए मुबश्शिरा में से थे। सन पचपन हिजरी में वफ़ात पाई। (अशराए मुबश्शिरा, लेखक बशीर साजिद)

११९) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु को औलाद की दुआ दी तो उन का घर औलाद से भर गया।

उन की वफ़ात के वक़्त उन की औलाद की औलाद सौ से भी ज़्यादा थी। (तफ़सीरे नईमी)

१२०) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मकतूम रज़ियल्लाहु अन्हु उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुब्रा रज़ियल्लाहु अन्हा के सगे मामूँ थे। आप नाबीना थे और इस्लाम के शुरू शुरू में ईमान लाने वालों में से थे। एक बार इन्हों ने कुरैश के रईसों की मौजूदगी में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कुछ पूछा जिस पर सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नागवारी ज़ाहिर फ़रमाई। इस पर सूरए अबस की इब्तिदाई आयतें नाज़िल हुईं। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इब्ने उम्मे मकतूम के घर पहुंचे और इन्हें अपनी मजलिस में वापस लाकर इनका इकराम किया। हिजरते मदीना के बाद आप ने इन्हें अज़ान देने पर मुक़र्रर किया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कई मौक़ों पर मदीने से बाहर जाते हुए इन्हें शहर में अपना जानशीन और इमाम मुक़र्रर फ़रमाया। इब्ने उम्मे मकतूम ने जंगे क़ादसिया में शहादत पाई। (ख़ैरुल बशर के चालीस जाँनिसार, लेखक तालिब हाश्मी)

१२१) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ियल्लाहु अन्हु अन्सारी और बनू सलमा के हलीफ़ थे। यह उन अफ़राद में शामिल थे जिन्हों ने बनू सलमा का बुत तोड़ा था। इन्हों ने सुफ़ियान बिन ख़ालिद हुज़ली को जो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ फ़ौज जमा कर रहा था जहन्नम रसीद किया और उसका सर अपने साथ ले आए ताकि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश करें। सुफ़ियान के साथियों ने इन का पीछा किया। यह एक ग़ार में दाख़िल हो गए तो मक्ड़ी ने उस के बाहर जाल बुन दिया। दुश्मन लौट गए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस मदीने पहुंचे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ुशख़बरी सुनाई। नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्हें एक लाठी अता की और फ़रमायाः तुम जन्नत में इसके साथ टेक लगाओगे। जब अब्दुल्लाह बिन उनैस का आख़िरी वक़्त आया तो इन्हों ने वसियत की कि यह लाठी इनके साथ ही दफ़्न की जाए। (तब्क़ाते इब्ने सअद, जिः २)

१२२) उकाशा बिन मुहसिन असदी रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ज़वए बद्र में शरीक हुए और बहुत बड़ा कारनामा अंजाम दिया। इन की तलवार टूट गई तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खजूर की टहनी दी जो उकाशा के हाथ में चमकती हुई फ़ौलादी तलवार बन गई जिस के साथ इन्हों ने लड़ाई लड़ी। यह तलवार इन के साथ रही और इसी के साथ वह रसूले अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम के ज़माने की तमाम जंगों में शरीक हुए यहाँ तक कि हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त में तुलैहा असदी के ख़िलाफ़ लड़ते हुए शहीद हो गए। इस तलवार का नाम औन यानी मदद था। उकाशा बिन मुहसिन को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बग़ैर हिसाब जन्नत में दाख़ले की ख़ुशख़बरी सुनाई थी। (उसदुल ग़ाबा, जि: ४)

१२३) हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु शुरू के ईमान लाने वाले, असहाबे बद्र, अशरए मुबश्शिरा और बैअते रिज़्वान में शामिल ख़ुश नसीबों में से है। इनका अस्ल नाम आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन जर्राह था। इन्हों ने दरबारे रिसालत से अमीनुल उम्मत का ख़िताब पाया था। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के अहदे ख़िलाफ़त में इन्हों ने फ़ुतूहाते शाम में इस्लामी लश्करों की क़यादत की। सन अट्ठारा हिजरी में ताऊने अमवास में वफ़ात पाई। (रहमते दौरैन के सौ शेदाई, लेखक तालिब हाशमी)

१२४) हज़रत नाबिग़ा जेबानी रज़ियल्लाहु अन्हु ज़मानए जाहिलियत के बहुत मशहूर शायर थे। वह इस्लाम की दौलत से मालामाल हुए और सहाबी का दर्जा पाया। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन के हक़ में दुआ फ़रमाई: अल्लाह करे तेरा मुंह कभी न बिगड़े। रिवायत है कि इन का एक दांत भी न टूटा। अगर कभी कोई दांत निकल भी जाता तो फिर फ़ौरन ही नया दांत उससे ज़्यादा चमकदार पैदा जाता। इन के दांत मोतियों की लड़ी की तरह ख़ूबसूरत थे। आप एक सौ बीस साल ज़िन्दा रहे मगर इनका कोई दांत न टूटा और न ही दांतों की सफ़ेदी ख़त्म हुई, न इन का मुंह कभी बिगड़ा। (उस्वए सहाबा)

१२५) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु मुफ़लिसी की हालत में मदीनए मुनव्वरा में अपने दिन गुज़ार रहे थे। मक्का में अमीर बाप के बेटे थे। बड़े ठाट बाट की ज़िन्दगी थी। हिजरत करके मदीना आने के बाद इन के पास कुछ भी न था। बाप ने इस्लाम क़ुबूल करने की सज़ा के तौर पर घर से निकाल दिया इस लिए किसी तरह का साज़ो सामान और मालो दौलत नहीं थी। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन के हक़ में दुआ फ़रमाई: ऐ अल्लाह, अब्दुर्रहमान की रोज़ी में बरकत दे। इस मुक़द्दस दुआ की बरकत से अल्लाह तआला ने इन पर रहमतों और रिज़्क के दरवाज़े खोल दिए। वह ख़ुद फ़रमाते थे: अगर मैं पत्थर को भी हाथ में उठा लेता तो उसके नीचे से मुझे ख़ालिस सोना मिल जाता था। हाथ में मिट्टी लेता तो वह भी सोना बन जाती

थी। वह बेहद मालो ज़र सदक़ा और ख़ैरात में ख़र्च करते थे। हर रोज़ तीस गुलामों को ख़रीद कर आज़ाद करते थे। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक दिन उन से फ़रमायाः ऐ आयशा, मैंने रुया में अब्दुर्रहमान को जन्नत में देखा है कि वह बच्चे की तरह ख़िरामाँ ख़िरामाँ जन्नत में चल रहा है। इस बशारते उज़्मा को सुन कर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस नेअमत का शुक्र अदा करने के लिए उसी वक़्त अपनी तिजारत का जो क़ाफ़िला था वह मालो असबाब समेत राहे ख़ुदा में सदक़ा कर दिया। उस क़ाफ़िले में सात सौ ऊंट थे जिन पर हर तरह का सामाने तिजारत लदा हुआ था जिस की क़ीमत लाखों दिरहम थी। ऊंटों समेत उन पर जो कुछ लदा हुआ था राहे ख़ुदा में लुटा कर अल्लाह का शुक्र अदा किया। (उस्वए सहाबा)

१२६) हज़रत बशीर बिन सअद अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु का शुमार शुरू शुरू के इस्लाम लाने वालों में होता है। हिजरते नबवी के बाद होने वाले तमाम ग़ज़वात में शरीक हुए। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुलहे हुदैबिया के मुताबिक़ उमरे की अदायगी के लिए मक्कए मुअज़्ज़मा तशरीफ़ ले गए तो हज़रत बशीर उस हथियार बन्द दस्ते के सालार थे जो नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त के लिए साथ गया था लेकिन मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल नहीं हुआ था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद अन्सार में से हज़रत बशीर बिन सअद पहले फ़र्द थे जिन्हों ने सय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत का फ़ैसला किया। हज़रत बशीर ने सन बारह हिजरी में ऐनुत तमर के मक़ाम पर विसाल फ़रमाया। वह उन चन्द सहाबा में से थे, जो लिखना जानते थे। वह हज़रत नोअमान के वालिद थे। (इब्ने हिशाम, इब्ने सअद, तबरी)

१२७) हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं: जब ज़ुबैर ने मुझ से शादी की तो उन के पास न कोई माल था न ख़ादिम और बस एक पानी ढोने वाला ऊंट था या एक घोड़ा। मैं ही उन के घोड़े को चारा देती और उस की ख़ुराक का इन्तिज़ाम करती और उस की देख भाल करती और उन के चरस (बड़े डोल) में टाँके लगाती और मैं ही आटा भी गूंधती थी लेकिन रोटी अच्छी नहीं पका सकती थी इस लिए कुछ मुख़लिस अन्सारी औरतें जो मेरी पड़ोसन थीं मेरी रोटी पका दिया करती थीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ुबैर को ज़मीन का एक टुकड़ा अता फ़रमाया था जो दो तिहाई फ़रसख़ (दो मील) के फ़ासले पर था। मैं वहाँ से अपने सर पर

गुठलियों का गट्ठर उठा कर लाती थी। एक बार ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि मैं गट्ठर सर पर ला रही थी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चन्द सहाबए किराम के साथ रास्ते में मिले और अपना ऊँट बिठाने लगे ताकि मुझे पीछे सवार कर लें लेकिन मुझे ज़ुबैर की ग़ैरत का ख़्याल आ गया और मुझे शर्म दामनगीर हुई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरी इस कैफ़ियत को महसूस कर लिया और रवाना हो गए। मैं ज़ुबैर के पास आई और सारा वाक़िआ बयान किया। ज़ुबैर ने कहा: तुम्हारा अपने सर पर गठरी लाद कर लाना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बैठने से ज़्यादा शाक़ है। इसके बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेरे पास एक ख़ादिम भेज दिया और मुझे घोड़े की देख भाल से फ़ुर्सत मिल गई। (नुज़्हतुल क़ारी)

१२८) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के नअलैने पाक में दो तस्मे थे और एक तस्मा लगाने वाले पहले शख़्स हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

१२९) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम सफ़ीना पर शेर ने हमला करना चाहा तो आप ने फ़रमाया कि ऐ उम्मुस साइब (शेर) मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ग़ुलाम हूँ तो वह शेर पालतू कुत्ते की तरह दुम हिला कर आप के आगे आगे चलने लगा। (उस्वए सहाबा)

१३०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: इब्राहीम और लूत अलैहिस्सलाम के बाद उस्मान (रज़ियल्लाहु अन्हु) पहले हैं जिन्हों ने बीबी के साथ हिजरत की है। (बुख़ारी शरीफ़)

१३१) हज़रत अब्दुल्लाह ज़ुल बिजादैन का क़दीम नाम अब्दुल उज़्ज़ा था। मदीने से मन्ज़िल दो मन्ज़िल के फ़ासले पर किसी गावँ में रहते थे। लड़कपन में इस्लाम की आवाज़ कानों में पड़ी। जायदाद पर चचा का क़ब्ज़ा था। दीदारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शौक़ अब्दुल्लाह को बेचैन किये रहता था। चचा से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िरी की इजाज़त चाही मगर चचा ने ख़ूब मारा और नंगा करके घर से निकाल दिया। इसी हालत में माँ के पास आए। माँ ने एक कम्बल दिया जिस के दो टुकड़े करके एक से सत्र पोशी की और एक बदन पर डाल लिया। इसी हालत में मदीने पहुंचे। बैअते इस्लाम और शहादत का शौक़ ज़ाहिर किया। उस दिन से उनका नाम अब्दुल्लाह और लक़ब ज़ुल बिजादैन (कम्बल के दो टुकड़ों वाला) रखा गया। यह असहाबे सुफ़्फ़ा में शामिल हो गए। तबूक के सफ़र में

अब्दुल्लाह भी मुजाहिदीन में शामिल थे। आप ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शाहदत हासिल होने की दुआ की दरख़्वास्त की। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अगर तुम्हें रास्ते में ही मौत आ जाए तब भी तुम शहीदों में शामिल हो जाओगे। लश्कर रवाना हुआ, रास्ते में ही अब्दुल्लाह को तेज़ बुख़ार आया जिस से उन्हों ने वफ़ात पाई। वफ़ात के वक़्त हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सराहने मौजूद थे। कुछ रिवायतों में आया है कि अब्दुल्लाह के कफ़न के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी मुबारक चादर इनायत फ़रमाई। बुज़ुर्ग सहाबा ने क़ब्र खोदी। क़ब्र तय्यार होने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुद क़ब्र में उतरे और थोड़ी देर के लिए लेट गए। फिर उठ कर कहाः लाओ अपने भाई को। हज़रत अबु बक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने उस मुबारक और सरापा नाज़ के लाशे को सहारा देकर उतारा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अब्दुल्लाह आम मुर्दों जैसा नहीं है, इसे धीरे धीरे अदब से उतारो। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु हाथ में मशाल लिए खड़े थे इस लिए कि तदफ़ीन रात के वक़्त अमल में आई थी। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें अपनी गोद में लेकर उतारा। ज़मीन पर लिटा कर माथे पर बोसा दिया और फ़रमायाः आज शाम तक मरने वाले से मैं राज़ी रहा हूँ, इलाही तू भी राज़ी रहना। (अस्सीरतुन नबविया, इब्ने कसीर)

१३२) सहाबए किराम की तादाद हयाते नबवी के आख़िरी साल हज्जतुल वदाअ में तक़रीबन एक लाख थी। इनमें ग्यारह हज़ार आदमी ऐसे थे जिनके नामो निशान आज तहरीरी सूरत में तारीख़ के पन्नों में इस लिए मौजूद हैं कि यह लोग वह हैं जिन में हर एक ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़्वाल, अफ़आल और वाक़िआत में कुछ न कुछ हिस्सा दूसरों तक पहुँचाया है। (उस्दुल ग़ाबा)

१३३) शाम में वफ़ात पाने वाले आख़िरी सहाबी हज़रत अबू उमामा बाहुली रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। उन्हों ने सन ८६ हिजरी में वफ़ात पाई। (उस्दुल ग़ाबा)

१३४) मिस्र में वफ़ात पाने वाले आख़िरी सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह अबू हारिस बिन जज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु थे। सन ८६ हिजरी में वफ़ात पाई। (उस्दुल ग़ाबा)

१३५) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु कूफ़ा में वफ़ात पाने वाले आख़िरी सहाबी थे। आप की वफ़ात का साल सन ८७ हिजरी है। (उस्दुल ग़ाबा)

१३६) मदीने में सबसे आख़िर में वफ़ात पाने वाले सहाबी अस्साइब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु थे जिन्हों ने सन ६१ हिजरी में वफ़ात पाई। (उस्वए सहाबा)

१३७) बसरा में वफ़ात पाने वाले आख़िरी सहाबी हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु थे। उनका साले वफ़ात सन ६३ हिजरी है। (उस्वए सहाबा)

१३८) वर्क़ा बिन नौफ़ल उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुब्रा रज़ियल्लाहु अन्हा के चचाज़ाद भाई थे। कहते हैं कि वर्क़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत शुरू होने से पहले रहलात कर गए थे। वाक़िदी का ख़्याल है कि वह ज़िन्दा रहे और मुल्के शाम से लौटते वक़्त रास्ते में शहीद हुए। एक हदीस में है कि मैं ने वर्क़ा को जन्नत में देखा सफ़ेद रेशमी कपड़े पहने हुए क्योंकि वह मुझ पर ईमान ले आए थे। (नुज़्हतुल क़ारी)

१३९) मशहूर है कि अरब के चालाक चार हैं: हज़रत अमीर मुआविया, हज़रत अम्र बिन आस, हज़रत मुग़ीरा और ज़ियाद बिन अबीह। (नुज़्हतुल क़ारी)

१४०) हज़रत उम्र बिन उमय्या ज़मरी रज़ियल्लाहु अन्हु जिन्हें तिलिस्मे होश रुबा जैसी ख़ुराफ़ात से भरी किताबों में अम्र अय्यार कहा गया है, अरब के मशहूर बहादुरों में से थे। यह ग़ज़वए बद्र और उहद में मुश्रिकों के साथ थे मगर ग़ज़वए उहद के अन्त में जब मुश्रिकीन वापस हो रहे थे, तब उनके दिल में नूरे इस्लाम चमका और यह ईमान ले आए। सन छः हिजरी में हब्शा के बादशाह नजाशी के नाम यही इस्लाम की दावत लेकर गए थे। हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के दौर में सन ६० हिजरी में विसाल फ़रमाया। इनसे बीस हदीसों की रिवायत है। (नुज़्हतुल क़ारी)

१४१) हज़रत जरहद बिन ज़राह बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हु मदनी सहाबी हैं। यह असहाबे सुफ़्फ़ा में से थे। इनके पास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठे भी हैं। एक बार यह बाएं हाथ से खाना खा रहे थे। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा तो फ़रमाया: दाएं हाथ से खा। उन्हों ने अर्ज़ किया इसमें तकलीफ़ है। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके हाथ पर दम फ़रमाया फिर उस हाथ में ज़िन्दगी भर कोई तकलीफ़ न हुई। यज़ीद के तसल्लुत के ज़माने में मदीनए मुनव्वरा में विसाल फ़रमाया। (नुज़्हतुल क़ारी)

१४२) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम हालते कुफ़्र में अब्दुश शम्स और इस्लाम में अब्दुर्रहमान इब्ने सख़्र है। ख़ैबर के साल ईमान लाए। चार साल सफ़र व हज़र में नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ

साए की तरह रहे। आप को बिल्ली बहुत प्यारी थी। एक बार आस्तीन में बिल्ली लिए हुए थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम अबू हुरैरा यानी बिल्लियों वाले हो। उस दिन से यही लक़ब आप की पहचान बन गया। मदीनए मुनव्वरा में सन ५९ हिजरी में वफ़ात पाई। जन्नतुल बक़ीअ में दफ़्न हुए। एक क़ौल के मुताबिक़ आप का मज़ार दमिश्क़ में है। (नुज़हतुल क़ारी)

१४३) हज़रत उबई बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु कातिबे वही रहे हैं। आप उन छः सहाबा में से हैं जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़मानए पाक में कुरआने पाक के हाफ़िज़ थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आप की कुन्नियत अबुल मुन्ज़िर रखी थी और हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबुत्तुफ़ैल। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप को सय्यिदुल अन्सार और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु सय्यिदुल मुस्लिमीन कहते थे। ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में सन १९ हिजरी में मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात पाई। (नुज्हतुल क़ारी)

१४४) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु दुआ मांगते: इलाही मुझे सन साठ हिजरी के फ़ित्नों और लौंडों की हुकूमत से पनाह में रखना। चुनान्चे सन ६० हज़री में अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात हुई और यज़ीद पलीद के तसल्लुत से एक साल पहले इन्तिक़ाल फ़रमाया। (नुज्हतुल क़ारी)

१४५) हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम ख़ालिद इब्ने ज़ैद है। अन्सारी और ख़ज़रजी हैं। बैअते अक़बा में मौजूद थे। तमाम ग़ज़वों में हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहे। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत के दिन सब से पहले इन्हीं के घर क़याम फ़रमाया। सहाबा में इख़्तिलाफ़ के वक़्त हज़रत अलीये मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम के साथ तमाम जंगों में शरीक रहे। यज़ीद बिन मुआविया की कमान में रोम पर जो जिहाद हुए उनमें आप गाज़ियाना शान से शामिल थे। क़ुस्तुन्तुनिया पर हमले के वक़्त बीमार हो गए। वसियत की कि इस जिहाद में मेरी मय्यत अपने साथ रखना और जब क़ुस्तुन्तुनिया फ़त्ह हो जाए तो मुजाहिदीन के क़दमों के नीचे मुझे दफ़्न कर देना। चुनान्चे आप क़ुस्तुन्तुनिया की फ़सील के नीचे दफ़्न हैं। आप की क़ब्रे मुबारक ज़ियारते ख़ास व आम है। (तफ़सीरे नईमी)

१४६) हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम हारिस इब्ने रुबई या इब्ने नोअमान है। बैअते अक़बा और तमाम ग़ज़वात में शामिल रहे। बद्र या उहद में आप की आँख निकल पड़ी थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसी जगह टिका कर अपना लुआबे दहन लगा दिया तो वह आँख दूसरी आँख से ज़्यादा रौशन हो गई। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु के

माँ शरीक भाई हैं। सत्तर साल की उम्र में ५४ हिजरी में मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात पाई। (नुज़्हतुल क़ारी)

१४७) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक सहाबी थे हुल्ब, उनका नाम यज़ीद या सलामा इब्ने अदी था। उनके सर पर बाल न थे। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना दस्ते मुबारक उनके सर पर फेरा, फ़ौरन बाल उग आए। इस लिए आप का लक़ब हुल्ब हुआ यानी बालों वाला। (उस्दए सहाबा)

१४८) हज़रत ख़ारिजा बिन हुज़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु सहाबी क़र्शी अदवी हैं। बड़े बहादुर जंगजू मुजाहिद हैं। क़ुरैश के सवारों में आप को एक हज़ार सवारों के बराबर माना जाता था। एक बार हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से तीन हज़ार सवारों की कुमक मांगी तो आप ने तीन शख़्स भेजेः हज़रत ख़ारिजा, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम और हज़रत मिक़दाद बिन असवद रज़ियल्लाहु अन्हुम। आप सन ४० हिजरी में ख़वारिज के हाथों हज़रत अम्र इब्ने आस के धोखे में क़त्ल हुए कि ख़वारिज ने अमीरे मुआविया, मौला अली और अम्र बिन आस के क़त्ल की साज़िश रची थी तो मौला अली शहीद कर दिए गए। अम्र बिन आस के धोखे में हज़रत ख़ारिजा शहीद कर दिए गए और अमीरे मुआविया बच गए। (उस्दए सहाबा)

१४९) सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने आख़िरी मर्ज़ में हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम को बुलाया और वसियत फ़रमाई कि ऐ अली जब मेरी वफ़ात हो जाए तो मुझे अपने हाथों से ग़ुस्ल देना क्योंकि तुम ने इन हाथों से रसूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ग़ुस्ल दिया है। फिर मुझे मेरे पुराने कपड़ों में कफ़न देकर उस हुजरए शरीफ़ के सामने रख देना जिस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मज़ारे अक़दस है। फिर अगर बिना कुन्जियों के क़ुफ़्ल ख़ुद बख़ुद खुल जाए तो अन्दर दफ़्न करना वरना आम मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में ले जा कर दफ़्न कर देना। (सीरतुस सालिहीन)

१५०) एक सहाबी ने सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में एक पहाड़ के ग़ार में गोशा नशीनी इख़्तियार कर ली थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चन्द रोज़ बाद सहाबए किराम से पूछा कि वह क्यों ग़ैर हाज़िर हैं। लोगों ने वाक़िआ अर्ज़ किया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उन्हें बुला लाओ। जब वह हाज़िर हुए तो उनसे गोशा नशीनी का सबब पूछा। उन्हों ने अर्ज़ किया कि लोगों की सोहबत इबादत में ख़लल डालती है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमानों की सोहबत में

रहकर मशक़्क़तें बरदाश्त करना ६० साल की तन्हाई की इबादत से अफ़ज़ल है। (तफ़सीरे अज़ीज़ी)

१६१) एक बार हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबए किराम की जमाअत में वअज़ फ़रमाया जिस में क़यामत, दोज़ख़ और अज़ाबे इलाही का ज़िक्र तफ़सील से फ़रमाया। हज़राते सहाबए किराम के दिलों पर बहुत असर हुआ। नतीजा यह हुआ कि हज़रत उस्मान इब्ने मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में दस सहाबा जमा हुए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत अलीये मुर्तज़ा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी, हज़रत मौला इब्ने हुज़ैफ़ा, हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर, हज़रत मिक़दाद बिन असवद, हज़रत सलमान फ़ारसी, हज़रत मअक़ल इब्ने मुक़रिन और ख़ुद हज़रत उस्मान इब्ने मज़ऊन साहिबे ख़ाना। इन बुज़ुर्गों ने दुनिया तर्क कर देने का अहद किया और वादा किया कि हम हमेशा दिन में रोज़ा रखेंगे और रात को नवाफ़िल अदा करेंगे, बिस्तरों पर न सोएंगे, गोश्त चर्बी वग़ैरा अच्छे खाने न खाएंगे, औरतों से निकाह न करेंगे और जो शादी शुदा हैं वह अपनी बीवियों के पास न जाएंगे, टाट पहनेंगे, ख़ाना बदोश हो कर ज़मीन में मुसाफ़िरों की सी ज़िन्दगी बसर करेंगे। सहाबा ने यहाँ तक कहा कि हम ख़स्सी हो जाएंगे ताकि औरतों के लायक़ ही न रहें क्योंकि गुनाहों की जड़ दुनिया है, न दुनिया से ताल्लुक़ रखेंगे न गुनाह होंगे। यह ख़बर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहुंची। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन के घर तशरीफ़ ले गए मगर वहाँ किसी को न पाया। आप ने हज़रत उस्मान की बीबी उम्मे हकीम से पूछा कि क्या यह ख़बर सच है कि इन लोगों ने यह अहदो पैमान किये हैं। उम्मे हकीम ने निहायत हकीमाना अन्दाज़ में अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अगर उस्मान ने हुज़ूर को यह ख़बर दी है तो सच है। कुछ देर बाद हज़रत उस्मान ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन से पूछा। उन्हों ने इक़रार किया और अर्ज़ किया कि हम ने ख़ैर की नियत से यह इरादा किया है ताकि गुनाहों से बचे रहें और अल्लाह के ग़ज़ब के हक़दार न बनें। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे रब ने दुनिया छोड़ देने का हुक्म नहीं दिया है। रोज़े भी रखो और इफ़्तार भी करो, रात को सोओ भी, नवाफ़िल भी पढ़ो। मैं तुम्हें ईसाइयत की तालीम देने नहीं आया। देखो मैं ने निकाह भी किया, गोश्त भी खाया, दुनिया के मामलात भी अदा करता हूँ। यह मेरी सुन्नत है। जो मेरी सुन्नत से मुंह मोड़े वह मेरी जमाअत में से नहीं। तुम पर अपनी जान का

भी हक है और अपने बीवी बच्चों का भी। (तफ़सीरे कबीर, रूहुल मआनी, रूहुल बयान, ख़ाज़िन, सावी)

१५२) एक बार अक्रअ इब्ने हाबिस तमीमी और ऐनिया इब्ने हुसैन फ़ज़ारी वग़ैरहुम हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उन्हों ने हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत बिलाल, हज़रत सुहैब, हज़रत अम्मार और हज़रत ख़ुबाब वग़ैरहुम फ़ुक़राए सहाबा के पास बैठे देखा और उनसे बातें करते हुए पाया। उनकी मुफ़लिसी का यह आलम था कि उनमें से अकसर के पास बदन पर सिर्फ़ एक कम्बल था। इन लोगों ने उन्हें हिक़ारत से देखा और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हम लोगों को इन फ़क़ीरों के साथ बैठने में शर्म आती है। लोग हमें इनके साथ बैठा देखेंगे तो हमें क्या कहेंगे। आप इनको अपने पास से हटा दीजिये तो हम आप के पास बैठा करें। हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी दरख़्वास्त रद्द करदी। तब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताईद में आयते करीमा उतरी: और न निकालो उन लोगों को जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह व शाम और उसकी रज़ा चाहते हैं, तुम पर उनके हिसाब से कुछ नहीं और उन पर तुम्हारे हिसाब से कुछ नहीं। फिर तुम उन्हें दूर करो तो यह काम इन्साफ़ से दूर है। इस पर वह कुफ़्फ़ार बोले कि अच्छा आप इन्हें निकालें नहीं बल्कि एक वक़्त हमारे लिए ख़ास फ़रमा दें जिस में सिर्फ़ हम लोग आप के पास बैठ कर आप का वअज़ सुना करें, कोई फ़क़ीर ग़रीब उस वक़्त वहाँ न हुआ करे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसरार से अर्ज़ किया कि हुजूर इसमें हर्ज नहीं, अभी इन में घमंड और अहंकार है, हो सकता है कि हुजूर की सोहबत से यह ईमान क़ुबूल करलें और बाद में इनके दिल से यह घमंड निकल जाए। दीन की तब्लीग़ के लिए यह मन्ज़ूर करने में कोई हर्ज नहीं। हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुबूल फ़रमा लिया। यह कुफ़्फ़ार बोले कि हुजूर हमें इस वादे की तहरीर दे दी जाए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु काग़ज़ क़लम और दवात लेकर लिखने के लिए हाज़िर हुए मगर जब क़ुरआन की मज़कूरा आयत उतरी तो हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह काग़ज़ वग़ैरा फिंकवा दिए और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने इस इसरार से तौबा की। फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दस्तूर यह रहा कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब तक बाहर रहते हम हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बिल्कुल क़रीब बैठते और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम से फ़रमाया करते कि मेरी ज़िन्दगी और

मौत तुम्हारे साथ है। (रूहुल बयान, तफ़सीरे ख़ाज़िन)

१५३) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम क़ुबूल करने से पहले बहुत बड़े ताजिर थे। आप एक बार मुल्के शाम गए तो वहाँ एक सपना देखा कि चाँद और सूरज आसमान से नीचे उतर आए हैं और दोनों हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की गोद में दाख़िल हो गए हैं। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने दोनों को पकड़ कर अपने सीने से लगा लिया और अपनी चादरे मुबारक ऊपर डाल दी। सुब्ह आप जागे तो इस अजीबो ग़रीब सपने की तअबीर पूछने एक राहिब के पास गए। उस राहिब ने सारा ख़्वाब सुन कर पूछा कि आप का नाम क्या है और कौन से क़बीले के हैं? फ़रमायाः मेरा नाम अबू बक्र है, मक्के का रहने वाला हूँ और बनी हाशिम से हूँ। राहिब ने पूछाः आप काम क्या करते हैं? फ़रमायाः तिजारत करता हूँ। राहिब ने कहाः मुबारक हो, मक्के से और क़बीलए बनी हाशिम से नबीये आख़िरुज़्ज़माँ का ज़हूर होने वाला है। अगर यह पाक नबी न होते तो अल्लाह तआला आसमान और ज़मीन को पैदा न फ़रमाता और सारी कायनात भी ज़ाहिर न होती और तमाम नबी रसूल भी पैदा न होते। वह नबीये पाक रसूलों के सरदार होंगे और सब उन्हें मुहम्मद अल अमीन के नाम से याद करेंगे। ऐ अबू बक्र, इस ख़्वाब की ताबीर यह है कि तुम उन के दीन में दाख़िल होगे और उनके अव्वलीन वज़ीर बनोगे और उनके ख़लीफ़ा होगे। हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु यह ताबीर सुन कर बड़े मुतास्सिर हुए और दिल पर रिक़्क़त तारी हुई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात का शौक़ ग़ालिब हुआ। फ़ौरन आप मक्का वापस आए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख कर दिल बाग़ बाग़ हो गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी अबू बक्र को देख कर मुस्कुराए और फ़रमायाः अबू बक्र जल्दी कलिमा पढ़ो और मेरे दीन में आ जाओ। सिद्दीके अकबर ने अर्ज़ कियाः हुज़ूर क्या मैं कोई मोअजिज़ा देख सकता हूँ? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुस्कुरा कर फ़रमायाः मुल्के शाम में जो ख़्वाब देख कर आए हो और राहिब ने जो तअबीर बताई थी वह मेरा मोअजिज़ा ही तो है। सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ौरन कलिमा पढ़कर ईमान ले आए। (नुज़्हतुल क़ारी)

१५४) हज़रत सुलैमान बिन सरद रज़ियल्लाहु अन्हु बनी ख़ुज़ाआ के फ़र्द हैं। उनका नाम जाहिलियत के दौर में यिसार था। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बदल कर सुलैमान रख दिया। जब हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के हुक्म से कूफ़ा बसाया जाने लगा तो पहले पहल जो लोग

कूफ़ा में आबाद हुए उनमें यह भी थे। बनी ख़ुज़ाआ के मुहल्ले में अपना घर बनाया। हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम से ख़ास मुहब्बत करते थे। सिफ़्फ़ीन की ख़ूनी जंग में यह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ थे। जौशन को इन्हों ने ही मारा था। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त लिखकर कूफ़ा बुलाने वालों में यह भी थे मगर ऐन मौके पर घर बैठ रहे। शहादत के बाद एहसास हुआ, अब पछताए। मगर क्या होता है। फिर यह और मुसय्यब बिन तहबिया ने सय्यिदुना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत का बदला लेने की तहरीक चलाई और अपना नाम तव्वाबीन रखा और हज़रत सुलैमान को अमीर बना कर चार हज़ार का लश्कर जमा किया और इब्ने ज़ियाद के मुक़ाबले के लिए निकले। यह किस्सा पहली रबीउल आख़िर सन ६५ हिजरी का है। उधर से इब्ने ज़ियाद ने अपना लश्कर भेजा। ऐनुल तमर नामी मक़ाम पर मुक़ाबला हुआ। सुलैमान बिन सरद और मुसय्यब दोनों मारे गए। उनके सर मदवान भेजे गए। शहादत के वक़्त उनकी उम्र ६३ बरस थी। उन्हें यज़ीद बिन हुसैन बिन नमीर ने तीर से शहीद किया था। (तफ़सीरे ख़ाज़िन)

१५५) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने बिषर माज़नी से फ़रमाया था कि तुम एक क़र्न जियोगे तो वह पुरे सौ साल जिये। (तफ़सीरे ख़ाज़िन)

१५६) मस्जिदे नबवी के पास एक सुफ़्फ़ा (चबूतरा) था जहाँ चार पांच सौ मुहाजिर फ़ुक़रा रहते थे जिन के पास न घर था, न दुनियावी सामान, न कोई कारोबार। हमेशा मस्जिद में हाज़िर रहना, दिन में रोज़ा और क़ुरआने मजीद की तिलावत और रात में शब बेदारी। हर जिहाद में इस्लामी लश्कर के साथ जाना उनका काम था। उन्हें असहाबे सुफ़्फ़ा कहते हैं यानी चबूतरे पर रहने वाले। न इन हज़रात की शादी हुई थी, न इनका यहाँ कुम्बा और कबीला था। ग़रीबी का यह हाल था कि उनमें से अकसर के पास सत्र ढांपने के लिए पूरा कपड़ा भी न था। एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन के पास तशरीफ़ फ़रमा हुए। उनकी सख़्त फ़क़ीरी और भूक की शिद्दत देख कर इरशाद फ़रमाया कि ऐ चबूतरे वालो, मेरी उम्मत में जो तुम्हारी तरह साबिर और शाकिर और परहेज़गार होगा, क़ियामत में वह मेरा रफ़ीक़ होगा। फिर फ़रमायाः ऐ लोगो एक वक़्त वह आने वाला है जब तुम्हारे सामने दस्तरख़्वान पर ग़िज़ाओं के प्याले के प्याले रखे जाएंगे। उन्हों ने अर्ज़ किया: या हबीबल्लाह, उस दिन हम बड़े ही ख़ैर में होंगे। फ़रमायाः बल्कि ख़ैर में आज

ही हो। (तफ़सीरे कबीर, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

१५७) हज़रत ताऊस रहमतुल्लाहि अलैहि अइम्मए ताबिईन में से हैं। आप का नाम ज़कवान, वालिद का नाम कीसाम है। ताऊस लक़ब है, आप कुरआने मजीद बहुत उम्दा पढ़ते थे। सन १५ हिजरी में मक्के में इन्तिकाल फ़रमाया। (नुज़्हतुल क़ारी)

१५८) हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़र्ज़न्द इमाम मुहम्मद बिन बाक़िर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ३ सफ़र सन ५७ हिजरी को पैदा हुए। कर्बला के वाक़ए के वक़्त चार या पांच साल के थे। आप का विसाल हुमैमा में हुआ जहाँ से जनाज़ए मुबारक मदीनए मुनव्वरा लाया गया और जन्नतुल बक़ीअ में अपने वालिद हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन और दादा हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास दफ़्न हुए। (वफ़िफ़यातुल आयान)

१५९) हज़रत इब्ने अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु वह सहाबी हैं जिन का कूफ़े में सब से आख़िर में विसाल हुआ। आप का नाम अल्क़मा है, वालिद का नाम हारिस है। (नुज़्हतुल क़ारी)

१६०) हज़रत अम्र बिन हुरैस रज़ियल्लाहु अन्हु छोटी उम्र के सहाबियों में से हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ाते अक़दस के वक़्त बारह साल के थे। उनके सर पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दस्ते मुबारक फेरा था और बरकत की दुआ फ़रमाई थी। आप ने कूफ़े की सुकूनत इख़्तियार कर ली थी, वहां के वाली बनाए गए। सन ८५ हिजरी में वफ़ात पाई। (नुज़्हतुल क़ारी)

१६१) हज़रत ख़िज़ीमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की गवाही दो मर्दों के बराबर थी। वाक़िआ यूं हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक देहाती अरब सवाद इब्ने हारिस से एक घोड़ा ख़रीदा और उससे कहा कि मेरे पीछे आओ ताकि घोड़े की क़ीमत अदा करदूं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तेज़ी से आगे बढ़ गए और सवाद पीछे रह गया। इसी बीच कुछ लोगों ने सवाद से भाव ताव करके घोड़े की क़ीमत बढ़ा दी। अब सवाद ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आवाज़ दी कि अगर आप इस घोड़े को ख़रीदना चाहते हैं तो ख़रीद लें वरना मैं इसे बेच दूंगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हो गए और सवाद बिन हारिस से फ़रमाया: क्या तू यह घोड़ा मुझे बेच नहीं चुका है। उसने कहा: खुदा की क़सम मैंने आप के हाथ नहीं बेचा है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: यक़ीनन तू मेरे हाथ बेच चुका है। सवाद यही कहता रहा: गवाह लाओ, गवाह लाओ। जो मुसलमान आता उस से यही कहता: तेरे लिए ख़राबी हो, यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और बिला शुबह सच ही

बोलेंगे। मगर गवाही कोई न देता। यहाँ तक कि हज़रत ख़िज़ीमा रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उन्हों ने सवाद से कहा: मैं गवाही देता हूँ कि तू यह घोड़ा बेच चुका है। अब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़िज़ीमा से पूछा: तुम कैसे गवाही दे रहे हो। उन्हों ने अर्ज़ किया कि आप को सच्चा जानने की बुनियाद पर। इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़िज़ीमा की गवाही दो मर्दों के बराबर कर दी और फ़रमाया कि जिस के हक़ में ख़िज़ीमा गवाही दें या जिसके ख़िलाफ़ गवाही दें वह काफ़ी है। (मुस्नदे इमाम अहमद बिन हम्बल)

१६२) हज़रत उबइ बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ पढ़ते थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें पुकारा। उन्हों ने जल्दी जल्दी नमाज़ ख़त्म करके बारगाहे नबवी में हाज़िर होकर सलाम किया। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम्हें जवाब देने और हाज़िर होने में किस चीज़ ने रोका? अर्ज़ किया: हुज़ूर मैं नमाज़ में था। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क्या तुम ने कुरआन में नहीं पढ़ा कि अल्लाह और रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो? अर्ज़ किया: हाँ, अब आगे ऐसा नहीं होगा। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, ख़ाज़िन, तिर्मिज़ी शरीफ़)

१६३) हदीस शरीफ़ में यहाँ तक आता है कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक सहाबी के दरवाज़े पर आवाज़ दी। वह अपनी बीवी से मशग़ूल थे, बिना फ़रागत इसी तरह उठ कर हाज़िर हो गए। फ़रमाया: शायद हम ने तुम्हें जल्दी हटा दिया। अर्ज़ किया: हाँ या रसूलल्लाह। फ़रमाया: तुम पर ग़ुस्ल वाजिब हो गया। (सल्तनते मुस्तफ़ा)

१६४) सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन को बहुत सी इबादतें मयस्सर हुईं जो हमें नहीं हुईं जैसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदार, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पुकारने बुलाने पर हाज़िरी, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबार के आदाब। (तफ़सीरे नईमी)

१६५) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु पहले शख़्स हैं जिन्हों ने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद मक्के में ऊंची आवाज़ से कुरआन की तिलावत की। (नुज्हतुल क़ारी)

१६६) हज़रत ख़्वाजा हुबैर बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि हर दिन और रात में दो बार कुरआने करीम ख़त्म करते थे। १७ बरस की उम्र से आख़िर उम्र तक आप का वुज़ू कज़ाए इन्सानी के सिवा न टूटा। (नुज्हतुल क़ारी)

१६७) लैला के आशिक़ मजनूँ हज़रत सय्यिदुना इमाम हसन मुज्तबा

रज़ियल्लाहु अन्हु के दूध शरीक भाई थे। उन्हें कैस भी पुकारा जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

१६८) मशहूर ताबिई हज़रत सईद बिन मुसय्यब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं: अल्हम्दुलिल्लाह पचास बरस तक मेरी तक्बीरे ऊला कज़ा न हुई और पचास बरस में इमाम के अलावा किसी की पीठ न देखी। हज़रत ने चालीस हज किये। आप के बारे में मशहूर है कि आप ने पचास बरस तक इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी है। (नुज़्हतुल क़ारी)

१६९) हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तस्तरी रज़ियल्लाहु अन्हु पंद्रह रोज़ में एक बार खाना खाते थे और रमज़ान में एक लुक़मा। अलबत्ता सुन्नत अमल करने की नियत से रोज़ाना सिर्फ़ पानी से रोज़ा खोलते थे। (नुज़्हतुल क़ारी)

१७०) हज़रत इब्राहीम अदहम रहमतुल्लाहि अलैहि रमज़ान में न दिन में सोते थे न रात में। (नुज़्हतुल क़ारी)

१७१) हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि ने बीस साल रूखी रोटी पर गुज़ारे, कभी सालन नहीं खाया। (तफ़सीरे नईमी)

१७२) हज़रत इब्राहीम अदहम रहमतुल्लाहि अलैहि १४ साल सुलूक तय करके कअबे को पहुंचे थे। कहते थे कि और लोग कअबे की यह राह क़दमों से गए हैं, मैं आँखों से जाता हूँ। यह कह कर हर क़दम पर दो रकअत नमाज़ अदा करते और एक क़दम चलते, इस तरह १४ साल में मक्कए मुअज़्ज़मा पहुंचे थे। (तफ़सीरे नईमी)

१७३) हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अलैहि बारह साल के अर्से में मक्कए मुअज़्ज़मा पहुंचे। हर क़दम पर दो रकअत नमाज़ अदा करते और कहते: यह दहलीज़ दुनिया के बादशाहों की नहीं कि एक दम वहाँ घुस पड़ें। (तफ़सीरे नईमी)

१७४) हज़रत अबू बक्र कतानी रहमतुल्लाहि अलैहि को चरागे़ हरम कहा जाता था। अपने विसाल तक मक्कए मुकर्रमा में मुजाविर रहे। रात के शुरू से आख़िर तक नमाज़ अदा करते और एक कुरआन ख़त्म करते। तवाफ़े कअबा में आप ने बारह हज़ार ख़त्म किये हैं और तीस साल तक मक्कए मुअज़्ज़मा में नाबदान के नीचे बैठे थे और इस अर्से में हर रात दिन में एक बार तहारत ताज़ा करते और तीस साल में कभी सोए नहीं। (तफ़सीरे नईमी)

१७५) हज़रत अबुल हसन ख़िरक़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि बड़े आली हिम्मत बुज़ुर्ग थे। कभी ऐसा होता कि आप ज़मीन जोतने के लिए बैलों को बान्धते, जब नमाज़ का वक़्त होता तो आप नमाज़ में मशगूल हो जाते तो

वह बैल खुद बखुद आप के नमाज़ से फ़ारिग़ होने तक हल फेरते रहते। (तफ़सीरे नईमी)

१७६) सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की औलाद ४६ हैं, २७ बेटे और बाक़ी बेटियां। (बहजतुल असरार)

१७७) फ़त्हुल मुबीन में है अव्वल क़ुतुब हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु अन्हु, बीच के क़ुतुब हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु और ख़ातिमे के क़ुतुब हज़रत इमाम मेहदी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१७८) हज़रत सुल्तानुल आरिफ़ीन बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अलैहि की ज़बान पर जब दुनिया का ज़िक्र आजाता तो आप वुज़ू फ़रमाते और अगर जन्नत का ज़िक्र आजाता तो ग़ुस्ल फ़रमाते। लोगों ने सबब पूछा तो फ़रमाया कि यह दुनिया मोहदिस है लिहाज़ा इसका ज़िक्र हदस हुआ और हदस से वुज़ू करना चाहिए। जन्नत ख़्वाहिशात के पूरा होने की जगह है तो इसका ज़िक्र जनाबत हुआ और जनाबत से ग़ुस्ल करना लाज़मी है। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

१७९) एक बार बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने एक सेब हाथ में लिया और फ़रमाया: कितना लतीफ़ है। आवाज़ आई ऐ बायज़ीद, शर्म नहीं आती कि हमारा नाम सेब को देते हो। चालीस रोज़ आप को अल्लाह तआला का इस्मे आज़म याद न आया। क़सम खाई कि बाक़ी उम्र बुस्ताम का मेवा न खाऊंगा। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

१८०) हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु अन्हु अपने अहबाब से फ़रमाया करते थे: चार चीज़ें तुम मुझ से क़ुबूल कर लो फिर जो भी मुझ से चाहो मिल जाएगा। एक कम खाना, दो कम सोना, तीन कम बोलना, चार कम आना जाना। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

१८१) एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबए किराम का इम्तिहान लेने उनके घरों पर तशरीफ़ ले गए। फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़ूब ऊँची आवाज़ में क़ुरआने पाक पढ़ते हुए पाया। सुब्ह को जब वह बारगाहे नबवी में हाज़िर हुए तो इसकी वजह पूछी। उन्हों ने अर्ज़ किया कि मैं सोतों को जगा रहा था और शैतान को भगा रहा था और अपने रब को मना रहा था। (तफ़सीरे नईमी)

१८२) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्रे शरीफ़ के पास ऐसे खड़े होते थे जैसे नमाज़ी नमाज़ में। (उस्दुए सहाबा)

१८३) अबु इस्हाक़ बिन अदहम बिन मन्सूर बल्ख़ के रहने वाले थे। यह

एक शहज़ादे थे। एक रोज़ शिकार को निकले। लोमड़ी या ख़रगोश का पीछा किया। वह अभी इसी तलाश में थे कि पुकारने वाले ने पुकारा: ऐ इब्राहीम क्या तू इसी लिए पैदा किया गया है। यह सुन कर घोड़े से उतर पड़े। रास्ते में अपने बाप का एक चरवाहा मिला, उन्हों ने उसका चोग़ा लेकर पहन लिया और उसे अपना घोड़ा और साज़ो सामान दे दिया और जंगल में निकल गए। फिर मक्कए मुकर्रमा आए और वहाँ हज़रत सुफियान सूरी और हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ की सोहबत में रहे। फिर शाम आ गए और वहीं सन १६३ हिजरी में वफ़ात पाई। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१८४) हज़रत इब्राहीम: अदहम रहमतुल्लाहि अलैहि अपने हाथ की कमाई से रोज़ी हासिल करते थे जैसे कि फ़सल की कटाई और बाग़ों की रखवाली वग़ैरा। जंगल में उन्हें एक शख़्स मिला जिस ने उन्हें इस्मे आज़म सिखाया। उन्हों ने इस्में आज़म पढ़ कर दुआ की तो हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम का दीदार नसीब हुआ। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने उन्हें बताया कि वह दाऊद अलैहिस्सलाम थे जिन्हों ने इसमें आज़म सिखाया था। (सब्अ सनाबिल शरीफ़)

१८५) हज़रत अबु मेहफूज़ मअरूफ़ बिन फ़ीरोज़ कर्ख़ी (वफ़ात: सन २०० हिजरी) की हर दुआ क़ुबूल होती थी। लोग उन की क़ब्रे शरीफ़ के वसीले से शिफ़ा पाते हैं। आप हज़रत अली बिन मूसा रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अलैहि के आज़ाद किये हुए ग़ुलाम थे. (सब्अ सनाबिल शरीफ़)

१८६) हज़रत अबुल हसन सर्री बिन अल मुग़लस अल सक़ती हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ालू और उस्ताद थे और हज़रत मअरुफ़ कर्ख़ी के शागिर्द। उन्हों ने फ़रमाया: तीस साल से इस्तिग़फ़ार में सिर्फ़ इस बात से अल्लाह की माफ़ी चाह रहा हूँ कि एक बार मैं ने अल्हम्दुलिल्लाह कहा था। जब पूछा गया कि क्यों? तो फ़रमाया: बग़दाद में आग लग गई, मुझे एक आदमी मिला उस ने कहा तुम्हारी दुकान बच गई। इस पर मैं ने अल्हम्दुलिल्लाह कहा। लिहाज़ा अब मैं इसी लफ़्ज़ के कहने पर तीस साल से नादिम हूँ इस लिये कि मैं ने मुसीबत में जिस में मुसलमान फंसे थे, अपने नफ़्स के लिए भलाई चाही. (सब्अ सनाबिल शरीफ़)

१८७) हज़रत अबू अब्दुर्रहमान हातिम बिन अलवान को हातिमे असम यानी बहरा हातिम कहते हैं। यह दरअस्ल बहरे न थे। एक बार एक औरत उन से एक मस्अला पूछने आई। इत्तिफ़ाक़ से उसका गोज़ निकल गया। इससे वह शर्मिन्दा हो गई। हातिम ने कहा और ऊंची आवाज़ में कहो। ऐसा ज़ाहिर किया कि जैसे वह बहरे हों। इस से वह औरत बहुत ख़ुश हुई और समझी

कि आप ने गोज़ की आवाज़ नहीं सुनी। इसी वजह से उन्हें असम यानी बहरा कहा जाने लगा। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

१८८) कहा जाता है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु कई कई साल अपने मुंह में पत्थर डाले रहते थे ताकि कम कलाम कर सकें। (उस्वए सहाबा)

१८९) तमाम सहाबा में यह शर्फ़ हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु को हासिल है कि उनका नाम सराहत के साथ कुरआने मजीद में आया है और इसी बुनियाद पर कुछ सहाबा ने हज़रत ज़ैद को अफ़ज़लुस्साहबा क़रार दिया है। (नुज्हतुल क़ारी)

१९०) हज़रत अबुद दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे मैं मौत को पसन्द करता हूँ अपने रब से मुलाक़ात के लिए, बीमारी पसन्द करता हूँ ख़ताएं मिटाने के लिए और फ़क़ीरी पसन्द करता हूँ तवाज़ोअ् और इन्किसारी पैदा करने के लिए। (उस्वए सहाबा)

१९१) किसी ने हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अलैहि को उनकी वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा, पूछा क़ब्र में मुन्कर नकीर के साथ क्या गुज़री? फ़रमाया: मुझ से जब उन्हों ने पूछा तेरा रब कौन है? मैं ने कहा: रब से पूछो, अगर वह मुझे अपना बन्दा कहे तो मुझे काफ़ी है वरना हज़ार बार उसे रब कहे जाऊं बेकार है। (तफ़सीरे नईमी)

१९२) हज़रत शैख़ सअ़दी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने शैख़ का एक वाक़िआ यूँ नक़्ल फ़रमाया: मुझे याद है कि मेरे शैख़ एक रात दोज़ख़ के ख़ौफ़ से बिल्कुल न सोए। सुब्ह के वक़्त मैंने उन्हें यह कहते सुना: काश मेरा जिस्म इतना बड़ा हो जाता कि सारी दोज़ख़ मुझ से ही भर जाती ताकि दूसरों को वहां से रिहाई मिल जाती। (तफ़सीरे नईमी)

१९३) तफ़सीरे कबीर शरीफ़ में बिस्मिल्लाह के मातहत एक रिवायत बयान की गई है कि एक बार हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी एक अंगूठी अता फ़रमाई और फ़रमाया: इस पर किसी नक़्क़ाश से ला इलाहा इल्लल्लाह लिखवा लाओ। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु नक़्क़ाश के पास गए और फ़रमाया: इस पर लिख दे ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह। नक़्क़ाश ने यही लिख दिया। जब वह अंगूठी बारगाहे रिसालत में पेश की गई तो उस पर लिखा था ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह अबू बक्र सिद्दीक़। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: ऐ अबू बक्र, यह ज़ियादती कैसे?

अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप का नाम तो मैंने बढ़ाया था। मैंने नहीं चाहा कि रब के और आप के नाम में जुदाई हो जाए यानी रब का ज़िक्र हो और आप का ज़िक्र न हो। लेकिन अपना नाम मैंने नहीं बढ़ाया। इतने में हज़रत जिब्रईल अमीन अलैहिस्सलाम हाज़िर आए और अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! सिद्दीके अकबर का नाम मैंने लिखा है क्योंकि सिद्दीक इससे राज़ी न हुए कि आप का नाम अल्लाह के नाम से जुदा हो और अल्लाह तआला इससे राज़ी न हुआ कि सिद्दीक का नाम आप के नाम से अलग हो। (तफ़सीरे नईमी)

१६४) हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा के शौहर हज़रत हारिस बिन अब्दुल उज़्ज़ा यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रिज़ाई बाप जब मक्कए मुकर्रमा में तशरीफ़ लाए तो कुरैश ने कहाः कुछ सुना है तुम्हारा बेटा कहता है कि लोगों को मर कर फिर जीना होगा। हज़रत हारिस ने आप से कहाः बेटा यह क्या कहते हो? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अगर वह दिन आया तो मैं आप का हाथ पकड़ कर बता दूंगा कि जो कुछ मैं कहता था वह सच था। हज़रत हारिस फ़ौरन मुसलमान हो गए और उन पर इन जुमलों का असर ज़िन्दगी भर रहा। कहा करते थे कि मेरा बेटा हाथ पकड़ेगा तो जन्नत में पहुंचा कर ही छोड़ेगा। (उस्वए सहाबा)

१६५) मशहूर ताबिई हज़रत सईद बिन जुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि हर साल दो बार मक्कए मुअज़्ज़मा हाज़िर होते, एक बार हज के लिए, एक बार उमरे के लिए। दो रात में पूरा कुरआने मजीद ख़त्म फ़रमा लेते। आप के घर में एक मुर्ग़ा था जिस की आवाज़ पर रात में उठ बैठते। एक रात में मुर्ग़ा किसी वजह से बोल न सका। आप की आँख न खुली, फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई। नमाज़ क़ज़ा होने की तकलीफ़ पर मुर्ग़े के बारे में आप की ज़बान से यह निकल गयाः इसे क्या हो गया था कि आज नहीं बोला। अल्लाह इस की आवाज़ ख़त्म कर दे। वह मुर्ग़ा फिर ज़िन्दगी भर नहीं बोल सका। यह देख कर वालिदा मजिदा ने किसी के लिए बद दुआ करने से मना फ़रमाया। (नुज़्हतुल क़ारी)

१६६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से बहुत मुहब्बत फ़रमाते थे। कभी कभी अपने साथ सवारी पर भी बिठा लेते थे। हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु तमाम मुश्किल मामलात में इन से मशवरा लेते थे। चौंतीस साल की उम्र में सन १७ या १८ हिजरी में विसाल फ़रमाया।

आप ने १५७ हदीसें रिवायत की हैं जिन में से २० हदीसें बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ दोनों में हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

१९७) मशहूर ताबिई हज़रत इब्राहीम तमीमी रहमतुल्लाहि अलैहि बहुत उम्दा वअज़ फ़रमाते थे। बदनामे ज़माना ज़ालिम हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी ने हज़रत इब्राहीम नख़ई की गिरफ़्तारी का हुक्म दिया। सिपाही हमनाम होने की वजह से ग़लती से इन्हें पकड़ ले गए और जेल में डाल दिया। कुछ लोगों ने कहाः आप को ग़लती से पकड़ा गया है, आप अपनी अस्लियत ज़ाहिर कर दें। फ़रमायाः मुझे पसन्द नहीं कि अपने को बचा लूं और एक बेगुनाह सज़ा पाए। इसी क़ैद की हालत में सन ९२ हिजरी में विसाल फ़रमाया। आप एक माह तक खाना नहीं खाते थे। (नुज़्हतुल क़ारी)

१९८) एक बार उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की साहबज़ादी, जो कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रबीबा थीं यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आने के पहले उनके पहले शौहर से पैदा थीं, वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तशरीफ़ लाईं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गुस्ल फ़रमा कर तशरीफ़ ही लाए थे। आप ने उनके चहरे पर पानी की छींटें मारीं। इस की बरकत से उनके चहरे पर वह हुस्न और जमाल ज़ाहिर हुआ जो कभी न ढला। शबाब का आलम हमेशा बरक़रार रहा। (मदारिजुन नबुव्वह)

१९९) हज़रत इब्राहीम बिन अदहम पैदल हज को जा रहे थे। एक ऊंटनी सवार देहाती ने पूछाः आप कहाँ जाते हैं? फ़रमायाः बैतुल्लाह शरीफ़। उसने कहाः आप दीवाने मालूम होते हैं। इतना लम्बा सफ़र, न आप के पास सवारी है न तोशा, शायद आप को मौत ले जा रही है। हज़रत इब्राहीम अलैहिर्रहमा ने फ़रमायाः तेरे पास एक सवारी है, मैं बहुत सी सवारियां रखता हूँ लेकिन वह तुझे दिखाई नहीं देतीं। अर्ज़ कियाः वह कौन सी सवारियाँ हैं? फ़रमाया जब मुझ पर कोई बला आती है तो सब्र के घोड़े पर सवारी करता हूँ। जब नेअमत पाता हूँ तो शुक्र की सवारी पर सवार हो जाता हूँ। जब कोई रब की क़ज़ा आती है तो रज़ा पर सवार होता हूँ, जब नफ़्स किसी तरफ़ बुलाता है तो अपनी उम्र पर बे एतिमादी के घोड़े पर सवारी करता हूँ। देहाती बोलाः बेशक आप सवार हैं मैं पैदल हूँ। (तफ़सीरे नईमी)

२००) हज़रत ख़ुन्सा बिन्ते ख़ुदाम रहमतुल्लाहि तआला अलैहा अरब की एक हसीनो जमील ख़ातून थीं जिन की ख़ूबसूरती अपनी मिसाल आप थी। लेकिन जब उन पर इश्क़े इलाही का परतौ पड़ा तो फिर उनकी इबादतों और शब बेदारियों का यह हाल हो गया कि उन्हों ने मुसलसल चालीस साल तक

रोज़े रखे जिस की वजह से उनकी खाल हड्डियों से चिपक गई। ख़ौफ़े ख़ुदा से इतना रोईं कि आँखें जाती रहीं और अपने परवर्दिगार को मानाने के लिए उन्हों ने इतना लम्बा लम्बा क़ियाम किया कि उनके पावँ खड़े होने के क़ाबिल न रहे। हज़रत ताऊस यमानी और वहब बिन मुनब्बिह रहमतुल्लाहि अलैहिमा जैसे जलीलुल क़द्र अइम्मए इस्लाम की निगाहों में ख़ुन्सा बिन्ते ख़ुदाम की शब बेदारियों की बड़ी क़दर थी। (सिफ़तुल सफ़्वा, जिः १)

२०१) हज़रत अबुर रबीअ रहमतुल्लाहि अलैहि का बयान है कि मैं मुहम्मद बिन मुन्कदर और साबित बनानी एक रात रैहाना मज्नूना के पास गए तो हम ने देखा कि अव्वल शब में खड़ी हुई और ज़िक्रे इलाही में सुब्ह कर दी। उन्हें जुनून की हद तक इश्क़े इलाही था इसी लिये उन का लक़ब मज्नूना पड़ गया। (रौज़ुल रियाहीन)

२०२) हज़रत मुनीफ़ा बिन्ते अबू तारिक़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहा का शुमार मुशहूर आबिदात में होता था। हज़रत आमिर बिन मलीक बहरानी एक कनीज़ से नक़्ल करते हैं कि वह एक रात मुनीफ़ा बिन्ते अबू तारिक़ के यहाँ शब बाश हुई तो उस ने देखा कि क़ियामे लैल में उन्हों ने इस आयत की तकरार करते करते सुब्ह कर दीः और तुम (अब) किस तरह कुफ़्र करोगे हालांकि तुम वह ख़ुश नसीब हो कि तुम पर अल्लाह की आयतें तिलावत की जाती हैं और तुम में ख़ुद अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मौजूद हैं और जो शख़्स अल्लाह (की रस्सी) को मज़बूत पकड़ लेता है तो उसे ज़रूर सीधी राह की तरफ़ हिदायत दी जाती है। (सिफ़तुल सफ़्वा)

२०३) हज़रत हबीबा अद्विया रहमतुल्लाहि तआला अलैहा अपने वक़्त की अज़ीम आबिदा और मुजाहिदा थीं। जब वह ईशा की नमाज़ पढ़ लेतीं तो अपने मकान की छत पर चढ़ जातीं और अपने जिस्म के चारों तरफ़ कुरता और दुपट्टा कस के इबादत में मशग़ूल हो जातीं। जब फ़ज्र हो जाती तो कहतीं: ऐ अल्लाह, यह रात रुख़सत हो गई है और दिन निकल आया है। मुझे नहीं मालूम कि मेरी यह रात तू ने क़ुबूल की है या नहीं। तेरी इज़्ज़त की क़सम, जब तक तू मुझे ज़िन्दा रखेगा मेरा यही मामूल रहेगा। मैं कभी तेरा दर नहीं छोडूंगी। (इहयाए उलूमुद्दीन)

२०४) मशहूर ज़माना बुज़ुर्ग हज़रत हबीब अजमी रहमतुल्लाहि अलैहि की ज़ौजए मोहतरमा हज़रत उमरा अपने वक़्त की बड़ी आबिदा ज़ाहिदा हुई हैं। एक रात वह नमाज़ में मशग़ूल थीं और उनके शौहर अभी तक सो रहे थे। सहर का वक़्त क़रीब आ गया और वह यूं ही सोए रहे तो हज़रत उमरह ने

उन्हें बेदार किया और कहा: मेरे सरताज उठिए, देखिये करवाने शब कूच कर चुका है। सुब्ह का उजाला नमूदार होने को है। आप के सामने एक लम्बा सफ़र है और ज़ादे राह कुछ भी नहीं। सालेहीन के काफ़िले हमारे सामने रुख़सत हो गए और हम यहीं पड़े के पड़े रह गए। (फ़तावल इस्लाम सवालो जवाब, जि: १)

२०५) हज़रत अजरदा उमियह रहमतुल्लाहि तआला अलैहा रात भर इबादत करती थीं हालांकि आँखों से माजूर थीं मगर जब सहर का वक़्त आता तो रो रो कर अपने रब से कहतीं: ऐ मेरे रब, मैं तुझी से मांगती हूँ तेरे ग़ैर से नहीं मांगती। मुझे इल्लीयीन में मुक़र्रब लोगों का दर्जा अता कर और मुझे अपने नेक बन्दों में शामिल कर। यह दुआ मांग कर सज्दे में गिर जातीं यहां तक कि उनके सज्दे में गिरने की आवाज़ आस पास सुनी जाती। फिर वह सज्दे ही में सुब्ह की नमाज़ तक दुआएं मांगती रहतीं और रोती रहतीं। (एहया उलूमुदीन)

२०६) हज़रत ख़वास रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं: हम मशहूर आबिदा रहला के यहाँ गए। उन्हों ने इतने रोज़े रखे थे कि उनकी रंगत सियाह पड़ गई थी और इस क़दर आंसू बहाए थे कि आँखों से महरूम हो गई थीं और इस क़दर नमाज़ें पढ़ी थीं कि चलने फिरने से माजूर हो गई थीं। (नफ़्से मस्दर, जि: ४)
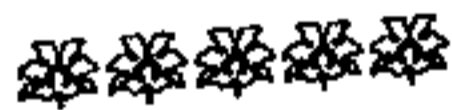
सातवाँ अ ध्याय

फ़रिश्ते और जिन्नात

१) फ़रिश्ते तमाम मख़लूक़ से नौ हिस्से ज़्यादा हैं अगर्चे ज़मीन पर भी रहते हैं मगर उनका अस्ल मरकज़ आसमान है। (तफ़सीरे नईमी)

२) सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि उसूले अस्मा चार हैं: हयात, इल्म, कुदरत और इरादा। हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम हयात के मज़हर हैं, हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम इल्म और क़ौल के मज़हर हैं इसी लिए उन्हें रूहुल कुदुस और रूहुल अमीन कहा जाता है और वह हामिले वही हैं, हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम इरादे ने मज़हर हैं जिस में वुजूद शामिल है इस लिए वह रिज़्क़ पर मुकर्रर हैं और इज़्राईल अलैहिस्सलाम कुदरत के मज़हर हैं इस लिए वह जाबिर और मुतकब्बिरीन को मौत दे कर ज़लील करते हैं। (रूहुल बयान)

३) अल्लाह तआला ने हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम को यह इज़्ज़त बख़्शी है कि उन की दोनों आँखों के सामने पूरा कुरआन लिख दिया गया है। (तफ़सीरे नईमी)

४) सय्यिदुना मुर्तज़ा अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम फ़रमाते हैं कि रूह एक फ़रिश्ता है जिस के सत्तर हज़ार सर हैं, हर सर में सत्तर हज़ार चहरे हैं, हर चहरे में सत्तर हज़ार मुंह है और हर मुंह में सत्तर हज़ार ज़बानें हैं, हर ज़बान में सत्तर हज़ार लुग़तें हैं, वह उन सब लुग़तों में कि एक लाख अड़सठ हज़ार सत्तर जगह मद्दा संख हुए, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की तस्बीह करता है हर तस्बीह से एक फ़रिश्ता पैदा होता है कि कियामत तक फ़रिश्तों के साथ परवाज़ करेगा। (नुज़्हतुल मजालिस)

५) सअलबी ने सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि वह फ़रमाते हैं कि रूह एक अज़ीम फ़रिश्ता है, आसमान, ज़मीन, पहाड़ों और फ़रिश्तों में सब से बड़ा। इस का मक़ाम चौथा आसमान है। हर रोज़ वह बारह हज़ार तस्बीहें कहता है, हर तस्बीह से एक फ़रिश्ता पैदा होता है। यह रूह नामी फ़रिश्ता कियामत के दिन अकेले एक सफ़ होगा और बाकी फ़रिश्तों की एक सफ़। (तफ़सीरे नईमी)

६) रअद एक फ़रिश्ता है जो मेंह बरसाने की ख़िदमत पर मुकर्रर है इस के हाथ में एक आग का कोड़ा है जिसे बर्क़ कहते हैं वह इस कोड़े से बादलों को हांकता है। बिजली का चमकना इसी से मुराद है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७) हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम की उड़ान का यह आलम है कि दो परों

के खोलने और उन्हें सुकेड़ने में तीन हज़ार बरस का रास्ता तय हो जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

८) अल्लाह तआला के कुछ फ़रिश्ते हैं कि ख़ौफ़े इलाही से उन का रुवाँ रुवाँ लरज़ता है। उन में से जिस फ़रिश्ते की आँख से जो आँसू टपकता है वह गिरते गिरते फ़रिश्ता हो जाता है कि खड़ा होकर रब्बुल इज़्ज़त की तस्बीह करता है। (नुज़्हतुल क़ारी)

९) जिब्रईल इब्रानी लफ़्ज़ है। जिब्र के मानी अब्द और ईल के मानी अल्लाह। जिब्रईल के मानी हुए अब्दुल्लाह। उन का अस्ली नाम अब्दुल जलील और कुन्नियत अबुल फ़त्ह है। अम्बियाए किराम के पास अल्लाह का पैग़ाम लाने की ख़िदमत इन्हीं के ज़िम्मे थी। इसके अलावा और भी ख़िदमात अन्जाम देते थे और अब भी देते हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

१०) फ़रिश्ते न मर्द हैं न औरत, न खाते पीते हैं, न निकाह करते हैं और न उन में बच्चे पैदा होते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

११) अगर कोई जन्नती हूर अपनी छुँगली अन्धेरी रात में दुनिया के अन्दर दिखा दे तो सारी दुनिया रौशन हो जाए। (तफ़सीरे नईमी)

१२) हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर चौबीस हज़ार बार नाज़िल हुए, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर बारह बार, हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम पर चार बार, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पर पचास बार, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर बयालीस बार, हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम पर तीन बार, हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम पर चार बार, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर चार सौ बार, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर दस बार। (ज़ुरक़ानी, जि: १)

१३) मलकुल मौत अलैहिस्सलाम का एक क़दम पुले सिरात पर दूसरा जन्नत के तख़्त पर है। उन का जिस्म इतना बड़ा है कि अगर तमाम दरियाओं का पानी उन के सर पर डाला जाए तो एक बूँद भी ज़मीन पर न गिरे। (तफ़सीरे नईमी)

१४) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अर्श उठाने वाले चार फ़रिश्ते हैं। हर फ़रिश्ते के चार मुंह हैं। उन के क़दम सातवीं ज़मीन के नीचे उस पत्थर पर टिके हुए हैं जो पांच सौ बरस का दल रखता है। (रिसालए कुशैरिया)

१५) अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम को निहायत ख़ूबसूरत पैदा किया है। उन के एक लाख चौदह हज़ार पर हैं जिन में ताऊस

के रंग के दो सब्ज़ पर हैं। जब आप कोई पर खोलते हैं तो आसमान व ज़मीन सब ढक जाता है। आप के दायें बाज़ू पर जन्नत, हूर, जन्नत के महल, मुख़्तलिफ़ तब्क़े और ख़ादिम वग़ैरा की सूरतें बानी हुई हैं और बाएं बाज़ू पर दोज़ख़, उस के सांप, बिच्छू, गढ़े, जहन्नम के मुहाफ़िज़ों की सूरतें बानी हुई हैं। (ज़ुहरतुर्रियाज़)

१६) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबुव्वत के शुरू के ज़माने में हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम को उन की अस्ली सूरत में देख कर बेहोश हो गए थे इसलिए हज़रत जिब्रईल को आदमी की सूरत में भेजा जाने लगा। (तफ़सीरे नईमी)

१७) हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम के घोड़े का नाम हैज़ूम बताया जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

१८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हूरों का चेहरा सफ़ेद, सुर्ख़, सब्ज़, ज़र्द चार रंग से और बदन ज़ाफ़रान, मुश्क और काफ़ूर से, बाल लौंगों से, पावँ की उंगलियों से लेकर घुटनों तक ख़ुशबूदार ज़ाफ़रान से, घुटने से सीने तक अम्बर से, सीने से सर तक काफ़ूर से बनाया है। एक एक के सीने पर अल्लाह का और हूर के ख़ाविन्द का नाम लिखा है। (दक़ाइक़ुल अख़बार)

१९) हदीस में है कि अल्लाह तआला ने तमाम फ़रिश्तों को हुक्म दे रखा है कि सुब्ह व शाम अर्श संभालने वाले फ़रिश्तों को सलाम कर लिया करें। यह इस लिए कि उनको दुसरे फ़रिश्तों पर बुज़ुर्गी हासिल है। (तफ़सीरे नईमी)

२०) दोज़ख़ के १९ फ़रिश्ते मुअक्किल हैं जिन्हें ज़बानिया कहा जाता है। यह पावँ से हाथ का काम ले सकते हैं। एक एक फ़रिश्ता दस हज़ार काफ़िरों को एक हाथ में, दस हज़ार को दूसरे हाथ में, दस हज़ार को एक पावँ में, दस हज़ार को दूसरे पावँ में ले कर दोज़ख़ में डाल सकता है। ज़बानिया के सरदार मालिक हैं जो दोज़ख़ के दारोग़ा मुक़र्रर हैं। (दक़ाइक़ुल अख़बार)

२१) अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों का क़िब्ला अर्शे आज़म और मलाइकए बररह का क़िब्ला कुर्सी और मलाइकए सफ़र का क़िब्ला बैतुल मामूर है। (तफ़सीरे कबीर)

२२) फ़रिश्ते अगर इन्सानी शक्ल में आएं तो मर्द की शक्ल में आते हैं औरत की शक्ल में नहीं आते। (तफ़सीरे नईमी)

२३) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्रइल अलैहिस्सलाम को निहायत ख़ूबसूरत पैदा किया है

और उनको छः सौ पर दिए हैं। एक एक पर में इतना फ़ासला है जितना मश्रिक और मग़रिब में। जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने जब अपनी हैअत पर नज़र डाली तो यह कहा कि इलाही तू ने मुझ से अच्छी सूरत भी किसी को दी है? जवाब मिला कि नहीं। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने शुक्राने के दो नफ़्ल पढ़े और हर रकअत में बीस हज़ार बरस खड़े रहे। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो अल्लाह तआला ने फ़रमायाः ऐ जिब्रईल तू ने इबादत का हक़ अदा कर दिया। ऐसी इबादत कोई नहीं कर सकता मगर आख़िरी ज़माने में मेरे हबीब और नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मबऊस होंगे और उन की उम्मत निहायत नातवाँ होगी। वह लोग थोड़ी सी देर में भूल चूक के साथ दो रकअतें पढ़ेंगे और अपनी फ़िक्रों में ग़र्क़ और गुनाहों में डूबे होंगे। मुझे अपनी इज़्ज़तो जलाल की क़सम, मैं उनकी नमाज़ को तेरी नमाज़ से ज़्यादा पसन्द करूँगा क्योंकि वह मेरे हुक्म से नमाज़ पढ़ेंगे और तू ने अपनी ख़ुशी से पढ़ी है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

२४) नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर शैतान बनी आदम के दिलों को न घेरता तो वह आसमान के फ़रिश्तों को देख लेते। (सब्ए सनबिल शरीफ़)

२५) अल्लाह तआला ने अर्श के नीचे एक फ़रिश्ता पैदा किया है उसका सर आदमी का सा है। उस के सत्तर हज़ार बाज़ू हैं और हर बाज़ू पर फ़रिश्तों की एक एक जमाअत है। उसके दाएं रुख़सार पर सूरए इख़्लास और बाएं पर कलिमए शहादत और पेशानी पर सूरए फ़ातिहा लिखी हुई है। उसके सामने फ़रिश्तो की सत्तर हज़ार सफ़ें हैं जो सूरए फ़ातिहा पढ़ा करते हैं और जब वह इय्याका नअबुदु व इय्यांका नस्तईन कहते हैं तो सज्दे में गिर जाते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता हैः अपने सर उठाओ मैं तुम से ख़ुश हूँ। फिर वह दरख़्वास्त करते हैं कि उम्मते मुहम्मदिया में से जो कोई फ़ातिहा पढ़े, ऐ रब उससे भी राज़ी रह। ख़ुदाए ज़ुल जलाल फ़रमाता है अच्छा गवाह रहो मैं उनसे राज़ी रहूँगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

२६) हज़रत अबु सईद ख़ुदरी रज़ियल्लहु तआला अन्हु कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूर के फ़रिश्ते हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम की हालत बयान करते हुए फ़रमायाः उस के दाएं तरफ़ जिब्रईल अलैहिस्सलाम और बाएं तरफ़ मीकाईल अलैहिस्सलाम हैं। (तफ़सीरे नईमी)

२७) हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुझे इजाज़त मिली है कि अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों

में से एक फ़रिश्ते की अज़मत की हालत बयान करूँ। उसके कानों की लौ से मोंढों तक की दूरी सात सौ बरस के रास्ते के बराबर है। (तफ़सीरे नईमी)

२८) फ़रिश्ते नूर से बने हैं, अल्लाह तआला ने उन्हें यह ताक़त दी है कि जो शक्ल चाहें इख़्तियार करें। (तफ़सीरे नईमी)

२९) सलसाईल एक फ़रिश्ता है जिस के तीन बाज़ू हैं एक मश्रिक़ में, एक मग़रिब में और एक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ए अनवर पर। वह इस लिए कि जब कोई बन्दा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है तो वह फ़रिश्ता उसका और उसके बाप का नाम लेकर अर्ज़ करता है: या रसूलल्लाह! फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ ने आप पर दुरूद भेजा है। आप फ़रमाते हैं कि इस दुरूद को नूर की रौशनाई से नूर के काग़ज़ पर लिखो और हमें पेश करो। क़ियामत में हम इस काग़ज़ को मीज़ान में रखेंगे ताकि वह जन्नती हो जाए। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

३०) शैतान की ज़ुर्रियत की मुख़्तलिफ़ जमाअतें हैं। उनके नाम और काम अलग अलग हैं। चुनान्चे वुज़ू में बहकाने वाली जमाअत का नाम वल्हान है और नमाज़ में वर्ग़लाने वाली जमाअत का नाम ख़िन्ज़ब है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

३१) रअद उस फ़रिश्ते का नाम है जो बादलों पर मुक़र्रर है और साइक़ा उसके कोड़े का नाम है जिससे वह बादलों को हांकता है। कभी उस कोड़े की आवाज़ सुनी जाती है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि रअद फ़रिश्ता उस वक़्त तक तस्बीह करता है यह आवाज़ उस तस्बीह की होती है। उस की आवाज़ पर सारे फ़रिश्ते तस्बीह में मशग़ूल हो जाते हैं। हम को भी उस वक़्त सारे काम बन्द करके अल्लाह का ज़िक्र करना चाहिए। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

३२) जिब्रईल और मीकाईल अलैहिमस्सलाम का नाम अब्दुल्लाह है और इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम का नाम अब्दुर्रहमान है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

३३) एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम से पूछा कि तुम्हारी उम्र कितनी है? अर्ज़ किया यह तो मुझे ख़बर नहीं। हाँ इतना जानता हूँ कि एक तारा सत्तर हज़ार बरस बाद निकलता है, मैंने उसे ७२ हज़ार बार निकलते देखा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह तार हमारा ही नूर था। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

३४) शैतान की एक रान में नर की अलामत है और दूसरी में मादा की। ख़ुद अपने से सम्भोग करता है और ख़ुद हामिला हो जाता है और ख़ुद बच्चे जनता है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

३५) शैतान शतन से बना है जिसके मानी हैं फ़साद और फ़रेब, लुग़त के

मुताबिक हर फ़सादी और फ़रेबी को शैतान कहा जाता है। शरीअत में इब्लीस को शैतान कहते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

३६) तफ़सीरे सावी में है कि सारी दुनिया हज़रत मलकुल मौत के दो घुटनों के बीच है। (तफ़सीरे नईमी)

३७) फ़रिश्ते दो तरह के हैं एक वह जिन का काम इबादते इलाही करना है जिन्हें मुकर्रबीन कहते हैं। दूसरे वह जिन के ज़िम्मे दुनिया के इन्तिज़ामात हैं जिन्हें मुदब्बिराते अम्र कहते हैं। यह मुदब्बिराते अम्र दो तरह के हैं: एक वह जो अल्लाह की रहमत लाते हैं जिन्हें रूहानिय्यीन कहा जाता है दूसरे वह जो अल्लाह का अज़ाब लाते हैं, उन्हें करूबिय्यीन कहा जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

३८) इन्सान के मरते वक़्त तीन तरह के फ़रिश्ते आते हैं। मलकुल मौत इज़्राईल अलैहिस्सलाम जान निकालने के लिए, सात फ़रिश्ते उन की मदद करने के लिए, बाक़ी जहाँ तक नज़र जाए वहाँ तक फ़रिश्ते बशारत देने के लिये या डराने के लिए। (तफ़सीरे नईमी)

३९) तफ़सीरे अज़ीज़ी ने इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम वग़ैरा के हवाले से बयान किया है कि हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम के ज़माने में इन्सान बहुत बदअमल हो गए। फ़रिश्तों ने अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ किया कि मौला इन्सान बहुत बदकिरदार है। ख़्याल रहे कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से पहले फ़रिश्तों ने ख़िलाफ़त के लिए अपना हक जताया था। अब उन का मकसद यह इज़्हार करना था कि इन्सान ख़िलाफ़त के क़ाबिल नहीं है, उसे मअज़ूल किया जाए या कम से कम वह ख़लीफ़ा रहे और वज़ीर हम ताकि उसके बिगड़े हुए काम सम्भाल लिया करें। रब तआला ने फ़रमाया: उसे गुस्सा और शहवत दी गई है जिससे वह गुनाह करता है। अगर यह चीज़ें तुम्हें मिलें तो तुम भी गुनाह करने लगोगे। फ़रिश्ते बोले: मौलाए करीम, हम तो गुनाह के पास भी न जाएंगे चाहे कितना ही गुस्सा और शहवत हो। अल्लाह तआला का हुक्म हुआ: अच्छा तुम अपनी जमाअत में से आला दर्जे के परहेज़गार फ़रिश्तों को छांट लो। हम उन्हें गुस्सा और शहवत दे देते हैं फिर इम्तिहान हो जाएगा। चुनान्चे हारूत और मारूत जो बड़े ही इबादत गुज़ार फ़रिश्ते थे, चुने गए। अल्लाह तआला ने उन्हें गुस्सा और शहवत देकर बाबुल शहर में उतार दिया और फ़रमाया कि तुम क़ाज़ी बनकर लोगों का फ़ैसला किया करो और इस्मे आज़म के ज़रिये रोज़ाना शाम को आसमान पर आ जाया करो। यह दोनों एक माह तक ऐसे ही आते जाते रहे। इतने अर्से में उनके अदलो इन्साफ़ का चर्चा हो गया और बहुत मुकदमे उनके

पास आने लगे। एक रोज़ एक बहुत ख़ूबसूरत औरत आई जिस का नाम ज़ोहरा था। यह मुल्के फ़ारस की रहने वाली थी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि उसका नाम बेदुख़्त था और ज़ोहरा लकब। इस औरत ने अपने शौहर के ख़िलाफ़ मुकदमा दायर किया। हारूत मारूत इसे देखते ही फ़रेफ़्ता हो गए और उससे बुरे काम की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। उसने कहा कि मेरा दीन और है तुम्हारा और, यह इख़्तिलाफ़ हमारे मिलन में आड़ है। दूसरे मेरा शौहर बहुत ग़ैरत वाला है, अगर उसे ख़बर हो गई तो मुझे क़त्ल कर देगा। लिहाज़ा पहले तो तुम मेरे बुत को सज्दा करके मेरे दीन में आओ फिर मेरे शौहर को क़त्ल करो फिर मैं तुम्हारी और तुम मेरे। इन्हों ने इन्कार किया। वह चली गई मगर इन के दिलों में इश्क़ की आग भड़क उठी थी। आख़िर उसे पैग़ाम भेजा कि हम तेरे घर आना चाहते हैं। वह बोली: मेरे सर आँखों पर, यह दोनों उस के घर पहुंचे। उसने अपने आप को ख़ूब सजाया सँवारा और उन से बोली: आप मुझे इस्मे आज़म सिखा दें या बुतों को सज्दा करें या मेरे शौहर को क़त्ल करें या शराब पी लें। उन्हों ने सोचा कि इस्मे आज़म अल्लाह तआला के राज़ों में से है उसको ज़ाहिर करना ज़ुल्म है, बुत परस्ती करना शिर्क है और क़त्ल बन्दों के हक़ की ख़िलाफ़ वर्ज़ी। लाओ शराब पी लें। चुनान्चे उन्हों ने शराब पी ली। जब शराब पीकर मस्त हो गए तो उसने उन से बुतों को सज्दा भी करा लिया। उनके हाथों शौहर को क़त्ल भी करा लिया और इस्मे आज़म भी सीख लिया। वह तो इस्मे आज़म पढ़ कर सूरत बदल कर आसमान पर पहुँच गई। हक़ तआला ने उसकी रूह को ज़ोहरा सितारे से जोड़ दिया और उसकी शक्ल ज़ोहरा सितारे की तरह हो गई। जब हारूत और मारूत का नशा उतरा तो यह इस्मे आज़म भूल चुके थे और अपने किये पर नादिम थे। हक़ तआला ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि इन्सान मेरी तजल्ली से दूर रहता है। यह दोनों शाम को हाज़िरे बारगाह होते थे फिर भी शहवत से मग़लूब हो कर सब कुछ कर बैठे। अगर इन्सानों से गुनाह सरज़द हों तो क्या तअज्जुब है। तमाम फ़रिश्तों ने अपनी ख़ता का एतराफ़ किया और ज़मीन वालों पर लअन तअन करने की जगह उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ करने लगे। फिर हारूत मारूत हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम की बारगाह में हाज़िर होकर शफ़ाअत के तालिब हुए। आप ने उनके हक़ में मग़फ़िरत की दुआ की। बहुत रोज़ के बाद अल्लाह तआला का हुक्म आया कि इन को इख़्तियार दीजिये कि यह या तो दुनियावी अज़ाब कुबूल करें या आख़िरत का। हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम ने इन्हें अल्लाह का हुक्म पहुँचाया। उन्हों ने अर्ज़ किया:

ऐ अल्लाह के नबी, दुनिया का अज़ाब फानी और आख़िरत का अज़ाब अबदुल आबाद तक बाक़ी है। हम को दुनियावी अज़ाब मन्ज़ूर है। चुनान्चे हक़ तआला ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि इन दोनों को लोहे की ज़न्जीरों में जकड़ कर बाबुल के कुंवें में औंधा लटका दिया जाए। इस कुंवें में आग भड़क रही है और यह लटके हुए हैं और फ़रिश्ते बारी बरी कोड़े मारते हैं। सख़्त प्यास की वजह से उन की ज़बानें बाहर लटकी हुई हैं। (तफ़सीरे नईमी)

४०) फ़रिश्तों की तख़लीक़ मंगल के दिन हुई। (तफ़सीरे नईमी)

४१) इब्लीस का पड़पोता हाम्मा बिन हीम बिन लाक़ीस बिन इब्लीस रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक अपनी मुलाक़ात का हाल बयान करके दरख़्वास्त की कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे कुछ क़ुरआन तालीम फ़रमाएं। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे सूरए वाक़िआ, सूरए मुर्सलात, सूरए नबा, सूरए कौसर, सूरए इख़्लास, सूरए फ़लक़ और सूरए नास सिखा दी। एक हदीस में है कि वह जन्नत में है।(तफ़सीरे नईमी)

४२) जब किसी की मौत आती है तो फ़रिश्तों की एक जमाअत रगों में दाख़िल होकर उस की रूह को पावों से लेकर घुटनों तक खींचती है। फिर यह जमाअत चली जाती है और दूसरी जमाअत जान को घुटनों से पेट तक खींच लाती है। इसके बाद तीसरी जमाअत पेट से सीने तक और चौथी जमाअत सीने से हलक़ तक जान निकाल लेती है। उस वक़्त मौत की हालत शुरू हो जाती है। अगर मरने वाला मोमिन है तो जिब्रईल अलैहिस्सलाम अपना दायाँ बाज़ू खोल देते हैं। यह शख़्स जन्नत में अपना ठिकाना देख कर उस पर आशिक़ हो जाता है, माँ बाप औलाद की तरफ़ नहीं देखता। अगर मय्यत मुनाफ़िक़ है तो हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम बायाँ बाज़ू खोलते हैं। यह शख़्स जहन्नम में अपना ठिकाना देख कर दहशत के मारे माँ बाप या औलाद की तरफ़ नहीं देखता, आँखें फटी की फटी रह जाती हैं। (ज़ुहरतुर्रियाज़)

४३) हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हर रोज़ हौज़े कौसर में एक ग़ोता खाकर पर झाड़ते हैं, हर बूँद से एक फ़रिश्ता बनता है। (तफ़सीरे नईमी)

४४) हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में दस बार हाज़िर हुए, तीन बार बचपन में और सात बार बड़े होने के बाद। (तफ़सीरे नईमी)

४५) जिन्न के मानी हैं छुपी हुई मख़लूक़। चूंकि जिन्नात इन्सान की नज़रों से छुपे रहते हैं इसलिए उन्हें जिन्न कहा जाता है। इन्स के मानी हैं ज़ाहिर

होना, चूँकि इन्सान ज़ाहिर मख़लूक़ है, ज़ाहिरी ज़मीन पर रहता है इस लिए उसे इन्स कहते हैं। (तब्ईदुल लहफ़ान मिन मकाइदिश शैतान, लेखक सूफ़ी शब्बीर अहमद साहब अहमदाबादी)

४६) अबी दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह तआला ने जिन्न को तीन किस्म का पैदा किया है। एक किस्म सांप, बिच्छू और हशरातुल अर्ज़ है और एक किस्म हवा की लहर की सूरत में और एक किस्म है कि उन पर हिसाब और अज़ाब है। (ज़ुरक़ानी)

४७) यूसुफ़ बिन अब्दुल्लाह मुहम्मद क़रतबी मालिकी फ़रमाते हैं कि अहले कलाम और अहले ज़बान के नज़्दीक जिन्नात के कई दरजात हैं। जब यह सिर्फ़ जिन्नात का लफ़्ज़ बोलें तो उससे सिर्फ़ जिन्न ही मुराद होगा। अगर वह उस जिन्न का ज़िक्र करेंगे जो इन्सानों के साथ रहते हैं तो आमिर का लफ़्ज़ ज़िक्र करेंगे और आमिर जमा उम्मार है। अगर सामने आ जाने वाले जिन्नात मुराद लेंगे तो अरवाह का लफ़्ज़ इस्तेमाल करेंगे। अगर शरीर और सरकश होंगे तो उन्हें शैतान बोलते हैं और अगर इससे भी आगे निकले हुए हों और मामला बहुत ही ख़तरनाक हो तो उसे इफ़रीत बोलते हैं। (तब्ईदुल लहफ़ान)

४८) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिन्न की तीन क़िस्में हैं एक क़िस्म है कि उनके बाज़ू हैं जिन से वह हवा में उड़ते हैं, एक क़िस्म साँप और कुत्ते हैं और एक क़िस्म कि उतरते हैं और कूच करते हैं। (तब्ईदुल लहफ़ान)

४६) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि कुत्ते जिन्नात की एक क़िस्म हैं और यह ज़ईफ़ क़िस्म के जिन्नात हैं। चुनान्चे जिस के पास खाने के वक़्त कुत्ता बैठ जाए तो उसे कुछ डाल दे या उसे हटा दे। (तब्ईदुल लहफ़ान)

५०) जिन्नों और शैतानों की दुनिया इन्सानों की दुनिया से बहुत बड़ी है। रिवायत में है कि इन्सान जिन्नों का दसवां हिस्सा हैं। (फ़ासी)

५१) हुज़ूर सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बिल में पेशाब करने को मना फ़रमाया है। लोगों ने हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बिल में पेशाब करने से क्यों मना फ़रमाया? फ़रमाया: कहा जाता है कि सूराख़ जिन्नात के रहने की जगहें हैं। (अबू दाऊद, निसाई, मुस्तदरक, बेहक़ी)

५२) हदीस शरीफ़ में है कि एक दिन हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा मैंने आसमानों में एक ऐसा फ़रिश्ता देखा जो तख़्त नशीन था और सत्तर हज़ार फ़रिश्ते सफ़ बांधे उसकी ख़िदमत में हाज़िर थे। उसकी हर साँस से अल्लाह तआला एक

फ़रिश्ता पैदा फ़रमाता है। अभी अभी मैं ने उस फ़रिश्ते को टूटे हुए परों के साथ कोहे क़ाफ़ में रोते हुए देखा है। जब उसने मुझे देखा तो कहाः तुम अल्लाह तआला के हुजूर मेरी सिफ़ारिश करो। मैंने पूछाः तेरा जुर्म क्या है? उसने कहाः मेअराज की रात जब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सवारी गुज़री तो मैं तख़्त पर बैठा रहा, तअज़ीम के लिए खड़ा नहीं हुआ। इस लिए अल्लाह तआला ने मुझे इस जगह इस अज़ाब में मुब्तिला कर दिया है। जिब्रईले अमीन ने कहाः मैंने अल्लाह तआला की बारगाह में रो रो कर उसकी सिफ़ारिश की। अल्लाह तआला ने मुझ से फ़रमायाः तुम उससे कहो कि वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजे, चुनान्चे उस फ़रिश्ते ने आप पर दुरूद भेजा तो अलाह तआला ने उसकी उस लग़्ज़िश को माफ़ कर दिया और उसे नए पर भी अता फ़रमा दिए। (मुकाशिफ़तुल कुलूब)

५३) एक रिवायत में है कि शैतान को जहन्नम में सख़्त अज़ाब देकर पूछा जाएगाः तूने अज़ाब को कैसा पाया? जवाब देगाः बहुत सख़्त। उससे कहा जाएगाः आदम रियाज़े जन्नत में है, जाकर उन्हें सज्दा करले और पिछले बुरे कामों पर मअज़िरत ताकि तेरी माफ़ी हो जाए। मगर शैतान सज्दा करने से इन्कार कर देगा। फिर उस पर आम जहन्नमियों के मुक़ाबले सत्तर हज़ार गुना ज़्यादा अज़ाब भेजा जाएगा। एक रिवायत में है कि अल्लाह तआला हर एक लाख साल बाद शैतान को आग से निकाल कर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करने का हुक्म देगा मगर वह बराबर इन्कार करता रहेगा और उसे बार बार जहन्नम में डाला जाता रहेगा। (मुकाशिफ़तुल कुलूब)

५४) शैतान का नाम पहले आसमान पर आ़बिद, दूसरे पर ज़ाहिद, तीसरे पर आ़रिफ़, चौथे पर वली, पांचवें पर मुत्तक़ी, छटे पर अज़ाज़ील और लौहे महफ़ूज़ पर इब्लीस था। (मुकाशिफ़तुल कुलूब)

५५) शैतान सूरत शक्ल के हिसाब से बहुत ही हसीन था मगर जब उसने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करने के रब्बानी हुक्म से मुंह मोड़ा, उसकी सूरत बिगाड़ दी गई। सुअर की तरह लटका हुआ मुंह, सर ऊँट के सर की तरह, सीना बड़े ऊँट के कोहान जैसा, उसके बीच बन्दर जैसा मुंह, आँखें खड़ी, नथुने हज्जाम के कूज़े जैसे खुले हुए, होंट बैल के होंटों की तरह लटके हुए, दांत सुअर की तरह बाहर निकले हुए और दाढ़ी में सिर्फ़ सात बाल, इसी सूरत में उसे जन्नत से नीचे फेंक दिया गया। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५६) शैतान ने इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि से पूछाः तेरा उस ज़ात के बारे में क्या ख़्याल है जिसने मुझे जैसा चाहा पैदा किया और जो चाहा मुझ

से कराया? उसके बाद वह मुझे चाहे तो जन्नत में भेज दे और चाहे तो जहन्नम में डाल दे। क्या ऐसा करने वाला आदिल है या ज़ालिम? इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि ने कुछ देर रुक कर जवाब दियाः ऐ शख़्स अगर उसने तुझे तेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ पैदा किया तो वाक़ई तू मज़लूम है और अगर उसने तुझे अपने इरादए क़ुदरत के तहत पैदा किया तो फिर उसकी मर्ज़ी है जो करे। शैतान शर्म से पानी पानी हो गया और कहने लगाः यही सवाल करके सत्तर हज़ार आबिदों को गुमराही के ग़ार में ढकेल चुका हूँ। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब)

५७) हज़रत यहया अलैहिस्सलाम ने एक बार शैतान को देखा कि बहुत से फन्दे उठाए हुए है। आप ने पूछा यह क्या है? शैतान ने जवाब दिया यह वह फन्दे हैं जिनसे मैं इन्सान को फांसता हूं। आप ने पूछाः कभी मुझ पर भी तूने फन्दा डाला है? शैतान ने कहाः आप जब पेट भर कर खा लेते हैं तो मैं आप को ज़िक्र और नमाज़ में सुस्त कर देता हूं। आप ने पूछाः और कुछ? कहाः बस। तब हज़रत यहया अलैहिस्सलाम ने क़सम खाई कि आइन्दा कभी पेट भर कर खाना नहीं खाएंगे। शैतान ने भी क़सम खाईः मैं भी आइन्दा किसी मुसलमान को नसीहत नहीं करूंगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५८) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि शैतान ज़िक्र की मजलिसों में घूमता रहता है और इस कोशिश में रहता है कि ज़िक्र करने वालों की जमाअ़त को तोड़ दे। मगर जब इसमें कामयाब नहीं होता तो उस मजलिस में जाता है जिस में लोग दुनिया का ज़िक्र कर रहे होते हैं। शैतान उन में फूट डाल देता है जिससे कि वह आपस में लड़ने झगड़ने लगते हैं। अल्लाह का ज़िक्र करने वाले जब इन लोगों को लड़ते हुए देखते हैं तो बीच में पड़कर उन्हें लड़ने झगड़ने से रोक देते हैं। शैतान का मक़सद हल हो जाता है यानी वह अल्लाह का ज़िक्र करने वालों की जमाअ़त को मुन्तशिर कर देता है। (नसीमुल फ़िक्र फ़ी बयानिज़ ज़िक्र, अल्लामा सूफ़ी शब्बीर अहमद चिश्ती)

५९) क़ुरआने मजीद में ११८ जगह जिन्नात और मलाइका का ज़िक्र है। (तर्ईदुल लहफ़ान)

६०) शैतान एक बार हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम के पास से गुज़रा, देखा कि आप जाग रहे हैं और एक पत्थर को तकिया बनाए बैठे हैं। शैतान ने आप से कहाः आप का तो दावा था कि दुनिया से कुछ नहीं चाहिए फिर यह पत्थर जो दुनिया से तालुक़ रखता है इसका तकिया क्यों बना रखा है? हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उठ बैठे और पत्थर उठा कर फेंक दिया और फ़रमायाः दुनिया समेत यह भी तेरा है। (इब्ने असाकिर)

६१) अल्लाह तआला ने सब जानदारों के मुंह में ज़बान दी है मगर मछली को नहीं दी। इसकी वजह यह है कि जब अल्लाह तआला के हुक्म से फ़रिश्तों ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा किया और नाफ़रमानी और सरकशी के जुर्म में शैतान को लानती क़रार देकर बिगड़ी हुई सूरत के साथ ज़मीन पर फेंक दिया गया, तो वह समुन्दर पर गया। उसे सब से पहले मछली नज़र आई जिसे उसने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तख़लीक़ का क़िस्सा सुनाया और यह भी बताया कि वह ख़ुश्की और तरी के जानवरों का शिकार करेगा। तो मछली ने तमाम दरियाई मख़लूक़ तक हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की कहानी पहुंचा दी। इस वजह से अल्लाह तआला ने उसे ज़बान जैसी नेअमत से महरूम रखा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

६२) अब्दुल वाहिद बिन मुफ़्ती ने अजायबुल क़सस में जिन्नात के बारे में लिखा है: जिन्नात की पैदाइश का वाक़िआ यह है कि अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से एक आग पैदा फ़रमाई थी, उस आग में नूर भी था और ज़ुल्मत भी। नूर से फ़रिश्ते पैदा किये और धुंवें से देव (शयातीन) और आग से जिन्नात को पैदा किया। चूंकि फ़रिश्ते नूर से पैदा हुए थे, वह अपनी फ़ितरत के हिसाब से अल्लाह की ताअत में मसरूफ़ हो गए। देव (शयातीन) चूंकि ज़ुल्मत से पैदा हुए थे इस लिए वह कुफ़्र, नाशुक्री, तमर्रुद और सरकशी में पड़ गए। जिन्नात के माद्दे में चूंकि ज़ुल्मत और नूर दोनों चीज़ें शामिल थीं इस लिए उनमें से कुछ ईमान के नूर से मुशर्रफ़ हुए और कुछ हुक्मे इलाही से कुफ़्र और गुमराही में मुब्तिला हो गए। (तर्ब्दुल लहफ़ान)

६३) क़ाज़ी मजीदुद्दीन हम्बली ने हज़रत वहब बिन मुनब्बिह रज़ियल्लाहु अन्हु की एक रिवायत नक़्ल की है कि अल्लाह तआला ने नारे सुमूम पैदा की। यह वह आग थी जिस में धुंवाँ न था। इस आग से अल्लाह तआला ने जिन्नात को पैदा फ़रमाया। इसका ज़िक्र क़ुरआने मजीद की आयत: वल जान्ना ख़लक़नाहु मिन क़ब्लु मिन नारिस्समूम (सूरए हजर: २७) में किया गया है। अल्लाह तआला ने इस जान्न से एक अज़ीम मख़लूक़ पैदा फ़रमाई जिसका नाम मारिज रखा और उसके लिए एक बीवी मरजा नाम की पैदा की। इस जोड़े से जिन्नात की नस्ल बढ़ी और उनके बहुत से क़बीले पैदा हो गए। (तर्ब्दुल लहफ़ान)

६४) क़ुरआने मजीद में है: और जिन्नात को आग के शोले से पैदा किया गया। (सूरए रहमान: १५) हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं: जिन्नात को पीले और हरे शोले से पैदा किया गया जो आग के भड़कने के वक़्त उसकी सतह पर नज़र आता है। (तर्ब्दुल लहफ़ान)

६५) हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं कि वह लू की आग जिससे जिन्नात पैदा किये गए, दोज़ख़ की आग का ७० वाँ हिस्सा है और यह दुनिया की आग लू की आग का ७० वाँ हिस्सा है। (तर्ईदुल लहफ़ान)

६६) हज़रत अबू सअलबा ख़ुशनी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिन्नात की तीन क़िस्में हैं। एक क़िस्म के पर हैं जिस से वह हवा में उड़ते हैं और एक क़िस्म के साँप और कुत्ते हैं और एक क़िस्म इधर से उधर मुन्तक़िल होते रहते हैं (इब्ने अबी हातिम, तबरानी)

६७) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से सवा लाख बरस पहले अल्लाह तआला ने जिन्नात को पैदा करके ज़मीन पर आबाद किया था। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

६८) हज़रत वहब बिन मुनब्बिह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि जिन्नात की नस्ल बढ़ने का यह आलम था कि एक हमल से एक लड़का एक लड़की पैदा होती थी। जब उनकी गिन्ती ७० हज़ार हो गई और ब्याह शादी का सिलसिला जारी रहा, फिर उनकी औलाद की कोई हद हिसाब न रहा। इब्लीस ने बनुल जान्न की एक लड़की से शादी कर ली। उस के भी बहुत सी औलाद हुईं। जब जिन्न और जान्न की नस्ल के लिए दुनिया में रहने के लिए जगह न रही तो अल्लाह तआला ने जान्न को तो हवा में रहने के लिए मक़ाम अता फ़रमाया और इब्लीस और उसकी औलाद को पहले आसमान में रहने की जगह दी। और इन दोनों को अपनी ताअत और इबादत का हुक्म दिया। अब चूंकि ज़मीन ख़ाली हो चुकी थी, ज़मीन पर अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वाला कोई न रहा था तो आसमान अपनी बलन्दी और रहने वालों की निस्बत ज़मीन पर फ़ख़्र करने लगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

६९) हज़रत कअब बिन अहबार रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह तआला ने जिन्नात में सबसे पहले जिस नबी को हिदायत के लिए भेजा उनका नाम आमिर बिन उमैर बिन माइक़ बिन मारिद बिन अलजान्न था। जिन्नात ने उन्हें क़त्ल कर दिया। उन के बाद साइक़ बिन माइक़ बिन मारिद बिन अलजान्न को भेजा, वह भी जिन्नात के हाथों शहीद हो गए। हज़रत अहबार कहते हैं जिन्नों की सरकशी और बदकिरदारी को देखते हुए हक़ तआला ने आठ सौ नबी, आठ सौ साल में भेजे। हर साल एक नबी आता रहा और जिन्नात उसे क़त्ल करते रहे। (तर्ईदुल लहफ़ान)

७०) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मन्क़ूल है कि काले कुत्ते का नमाज़ी के सामने से गुज़रना नमाज़ तोड़ देता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से

अर्ज़ किया गया कि लाल और सफ़ेद कुत्ते के मुक़ाबले में काले कुत्ते ने क्या जुर्म किया है? आप ने इरशाद फ़रमाया: इसलिए कि काला कुत्ता शैतान है। (सही मुस्लिम, सुनने अबू दाऊद, इब्ने माजा वग़ैरा)

७१) हज़रत शैख़ अब्दुल वह्हाब शेअरानी रह्मतुल्लाहि तआला अलैहि ने लिखा है कि जिन्नात दुनिया में इन्सानी नज़रों से छुपे रहते हैं मगर जन्नत में इन्सानों के साथ मिल जुल कर रहेंगे और एक दुसरे को नज़र आया करेंगे। (तर्द्दुल लहफ़ान)

७२) अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों के बारे में है कि एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक दो सौ साल की दूरी है और एक रिवायत में सात सौ साल है। (तफ़सीरे नईमी)

७३) आमाल लिखने वाले फ़रिश्ते सिर्फ़ इन्सानों पर ही मुक़र्रर हैं दूसरी मख़लूक़ पर नहीं। मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते भी सिर्फ़ इन्सानों पर ही मुक़र्रर हैं। (तफ़सीरे नईमी)

७४) आमाल लिखने वाले फ़रिश्ते दो हैं इन्हें किरामन कातिबीन कहा जाता है। एक नेकियां लिखने वाला जो हमारे दाएं तरफ़ रहता है, दूसरा गुनाह लिखने वाला जो हमारे बाएं तरफ़ रहता है। इन दो की ड्यूटियां बदलती रहती हैं। यह फ़रिश्ते हम पर बालिग़ होने के वक़्त से मौत तक रहते हैं। दीवानगी, बेहोशी और सोने की हालत में अलग रहते हैं क्योंकि इन वक़्तों में आमाल पर सज़ा या जज़ा नहीं। नेकी फ़ौरन लिखी जाती है। मगर बदी करने पर दाएं तरफ़ का फ़रिश्ता बाएं तरफ़ के फ़रिश्ते से कहता है अभी न लिख, शायद यह शख़्स तौबा कर ले। अगर बन्दा तौबा नहीं करता तब वह बदी लिखी जाती है। फिर यह फ़रिश्ता उसे मिटाने के लिए तय्यार रहता है कि अब तौबा कर ले तो मिटा दूं। (तफ़सीरे कबीर)

७५) किरामन कातिबीन सिर्फ़ ज़ाहिरी आमाल और ज़बानी बात चीत ही तहरीर करते हैं। नियत, दिल के इरादे, ख़्यालात, इश्क़े रसूल और ख़ौफ़े ख़ुदा इनकी तहरीर नहीं होती। इनका ताल्लुक़ बराहे रास्त अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है। (तफ़सीरे कबीर)

७६) अल्लाह तआला ने हर इन्सान के लिए कुछ महाफ़िज़ फ़रिश्ते मुक़र्रर किये हैं जिन की तादाद ६१ या ६३ है। एक फ़रिश्ता हमारे अन्दर की हिफ़ाज़त करता है और बाक़ी फ़रिश्ते हमारे बाहर की। इन की भी ड्यूटी बदलती रहती है। यह हिफ़ाज़त करने वाले फ़रिश्ते कभी इन्सान से अलग नहीं होते। जब नुत्फ़ा माँ के पेट में रहता है उस वक़्त से एक फ़रिश्ता उसकी

निगरानी करता है। बच्चे के सही सलामत पैदा होते ही दुसरे फ़रिश्ते उसे अपनी हिफ़ाज़त में ले लेते हैं और यह हिफ़ाज़त मरते दम तक रहती है। (तफ़सीरे नईमी)

७७) हिफ़ाज़त करने वाले फ़रिश्ते और हैं और मौत देने वाले फ़रिश्ते और जिन्हें कर्रुबीन कहते हैं यानी कर्ब और तकलीफ़ पहुँचाने वाले। हिफ़ाज़त करने वाले फ़रिश्तों को रुहानिय्यीन कहा जाता है क्योंकि रूह को राहत देते हैं। (तफ़सीरे कबीर, रूहुल मआनी)

७८) मौत देने वाले जान निकलने वाले फ़रिश्ते १४ हैं, सात रहमत के जो मोमिन की जान निकालते हैं और सात अज़ाब के जो काफ़िर की जान निकालते हैं। इनके सरदार हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम हैं। जब दम हलक़ में आ जाता है तो हज़रत मलकुल मौत इज़्राईल अलैहिस्सलाम निकाल लेते हैं। फिर यह निकाली हुई जान उन रहमत या अज़ाब के फ़रिश्तों के हवाले कर दी जाती है जो उस रूह को लेने आए हुए होते हैं और मय्यत की हद्दे नज़र तक मौजूद होते हैं। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

७९) तमाम रूए ज़मीन मलकुल मौत के सामने ऐसी है जैसे हमारे सामने थाल। वह जहाँ से चाहें रूह निकाल लें। उन्हें तमाम आलम की एक साथ रूह निकालने में कोई दुशवारी नहीं। (तफ़सीरे कबीर, रूहुल मआनी, ख़ाज़िन, रूहुल बयान वग़ैरा)

८०) हज़रत मलकुल मौत हर घर में रोज़ाना दो बार जाते हैं। (ख़ाज़िन)

८१) जानवरों की जान निकालने का ढंग और है और जिन्नात की जान निकालने का ढंग और। यहाँ तक कि जब फ़रिश्तों की मौत आएगी तो वह सिर्फ़ सूर की आवाज़ से वफ़ात पा जाएंगे। उनके लिए जान निकलने वाले फ़रिश्ते मुक़र्रर नहीं। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

❀❀❀❀❀
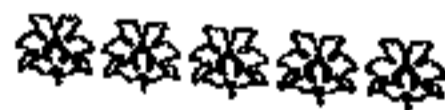
आठवाँ अध्याय

क़ियामत, हश्र व नश्र और बर्ज़ख़

१) मुफ़स्सिरीने किराम का क़ौल है कि क़ियामत का दिन सिर्फ़ हिसाब के लिये नहीं, उस दिन और काम भी होंगे। रब तआला फ़रमाता है तमाम बन्दों का हिसाब बहुत थोड़े वक़्त में हो जाएगा, चार घण्टे या इस से भी कम वक़्त में और दिन है पचास हज़ार साल का। बाक़ी वक़्त में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान का इज़्हार होगा। (तफ़सीरे नईमी)

२) क़ियामत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का न हिसाब होगा न आमाल तोले जाएंगे बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ ख़ादिम बिना हिसाब किताब जन्नत में जाएंगे। आदाबुल मुरीदीन की शरह में लिखा है कि एक रोज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में सत्तर हज़ार ऐसे हैं जिन का हिसाब किताब नहीं वह बेहिसाब जन्नती हैं। हज़रत उकाशा रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हो गए और अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह मुझे भी उन्ही में कर दीजिए। फ़रमाया कर दिया। (सबए सनाबिल शरीफ़)

३) इमाम दारमी अपनी सुनन में अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि मालिके जन्नत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: मैं सब से पहले क़ब्र से बाहर आऊंगा जब लोग उठाए जाएंगे और मैं उन का पेशवा हूँ जब वह हाज़िरे बारगाह होंगे और मैं उन का ख़तीब हूँ जब वह दम बखुद होंगे और मैं उन का शफ़ीअ हूँ जब वह महबूस होंगे और मैं ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ जब वह नाउम्मीद होंगे। इज़्ज़त की कुन्जियाँ उस दिन मेरे हाथ में हैं और लिवाउल हम्द भी उस दिन मेरे हाथ में होगा। (दारमी)

४) इब्ने अब्द रब्बा किताब बहजतुल मजालिस में रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: क़ियामत के दिन सिरात के पास एक मिम्बर बिछाया जाएगा फिर एक फ़रिश्ता आकर उस के पहले ज़ीने पर खड़ा होगा और निदा करेगा: ऐ मुसलमानों के गिरोह जिस ने मुझे पहचाना उस ने पहचाना और जिस ने न पहचाना तो मैं मालिक दारोग़ए दोज़ख़ हूँ। अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि जहन्नम की कुन्जियाँ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दे दूँ और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुक्म है कि अबू बक्र सिद्दीक़ के सिपुर्द कर दूँ, हाँ हाँ गवाह हो जाओ। फिर एक फ़रिश्ता दूसरे ज़ीने पर खड़े होकर पुकारेगा: ऐ मुसलमानों के गिरोह जिस ने मुझे पहचाना उस ने जाना और जिस ने न जाना तो मैं रिज़वान दारोग़ए जन्नत हूँ। मुझे

अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है कि जन्नत की कुन्जियाँ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दे दूँ और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुक्म है कि अबू बक्र के सिपुर्द कर दूँ। हाँ हाँ गवाह हो जाओ, हाँ हाँ गवाह हो जाओ।

५) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दमिश्क की जामेअ उमवी की मुश्रिकी जानिब सफ़ेद मीनार के पास नुजूल फ़रमाएंगे। दो कपड़े रंगे हुए पहने, दो फ़रिश्तों के परों पर हाथ रखे होंगे। जब अपना सर झुकाएंगे बालों से पानी टपकने लगेगा और जब सर उठाएंगे तो मोती झड़ने लगेंगे। (अबू दाऊद, बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम वग़ैरा)

६) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की दुआ पर अल्लाह तआला याजूज माजूज पर नग़फ़ नामी एक कीड़ा भेजेगा जो उन के नथुनों में घुस जाएगा। सुब्ह को सब मरे पड़े होंगे। (तफ़सीरे नईमी)

७) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ईसा अलैहिस्सलाम नाज़िल हो कर पैंतीस साल दुनिया में क़ियाम फ़रमाएंगे। इस अर्से में वह निकाह करेंगे और उन के औलाद होगी फिर वफ़ात पाकर मेरे मक़्बरे में दफ़्न किये जाएंगे। उन की क़ब्र अबू बक्र और उमर की क़ब्रों के बीच होगी। (तफ़सीरे नईमी)

८) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि क़ियामत के दिन दोज़ख़ को सातवीं ज़मीन के नीचे से इस हालत में लाया जाएगा कि उसके चारों तरफ़ फ़रिश्तों की सत्तर सफ़ें होंगी, हर सफ़ की तादाद जिन्न और इन्सान की तादाद से सत्तर हज़ार गुना ज़्यादा होगी। फ़रिश्ते उसकी लगामें खींचते होंगे। जहन्नम के चार पावँ होंगे, एक से दूसरे पावँ में एक लाख बरस का फ़ासला होगा और तीस हज़ार सर होंगे, हर सर में तीस हज़ार मुंह, हर मुँह में तीस हज़ार दांत, हर दांत तीस हज़ार बार कोहे उहद से बड़ा और हर मुंह में दो होंट, हर होंट की चौड़ाई दुनियां के बराबर होगी। हर होंट में लोहे की एक ज़न्जीर, हर ज़न्जीर में सत्तर हज़ार हलक़े होंगे, हर हलक़े को बहुत से फ़रिश्ते थामे होंगे। इस हालत में जहन्नम को अर्श के बाएं जानिब लाकर रखेंगे। (दक़ाइक़ुल अख़बार)

९) जनाबे रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत से पहले मुल्के हिजाज़ में एक आग निकलेगी कि उसकी रौशनी से शहर बसरा की पहाड़ियाँ रौशन होंगी। सो ६५४ हिजरी में मदीनए मुनव्वरा के मुतस्सिल एक आग बतौर शहर के ज़मीन से निकली, एक मुद्दत तक रही फिर ग़ायब हो गई। (सीरते रसूले अरबी)

१०) इब्ने अबी शैबा हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि दोज़ख़ी एक दिन में सत्तर हज़ार बार जलाया जाएगा और जब उसका चमड़ा गल सड़ कर गिर पड़ेगा तो वह फिर वैसा ही कर दिया जाएगा। (दुर्रे मन्सूर)

११) रिवायतों में है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वालिदा हज़रत बीबी मरयम और फ़िरऔन की बीवी हज़रत आसिया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आएंगी। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१२) हदीस में है कि मीसाक़े अज़ल का अहदनामा संगे अस्वद में महफ़ूज़ है। संगे अस्वद ख़ानए कअबा में नसब है। कल क़ियामत के दिन यह पत्थर इस तरह आएगा कि उसके आँखें, ज़बान, मुंह वग़ैरा सब कुछ होगा। (नुज़्हतुल क़ारी)

१३) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जन्नत वालों की पहली ग़िज़ा मछली का जिगर होगा कि इसके कबाब जन्नतियों को खिलाए जाएंगे। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१४) मरने के बाद मुसलमान की रूह मर्तबे के मुताबिक़ अलग अलग जगहों पर रहती है। कुछ की क़ब्र पर, कुछ की चाहे ज़मज़म में, कुछ की आसमान और ज़मीन के बीच, कुछ की पहले, दूसरे और सातवें आसमान तक, कुछ की आसमानों से भी बलन्द और कुछ की रूहें अर्श के नीचे क़न्दीलों में और कुछ की आला इल्लियीन में। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१५) काफ़िरों की रूहें कुछ की मरघट या क़ब्र पर, कुछ की चाहे बरहूत में जो यमन में एक नाला है, कुछ की पहली, दूसरी और सातवीं ज़मीन तक, कुछ की उसके भी नीचे सिज्जियीन में। (तोहफ़तुन वाइज़ीन)

१६) दज्जाल की पेशानी पर 'हाज़ा काफ़िर' लिखा होगा और उसकी एक आँख कानी होगी। (तफ़सीरे नईमी)

१७) क़ियामत के क़रीब एक धुंवाँ मश्रिक़ से मग़रिब तक चालीस दिन तक छाया रहेगा। इसके असर से मोमिनीन पर ज़ुकाम की सी कैफ़ियत तारी होगी और काफ़िरों को नशा चढ़ जाएगा, उनके नाक, कान और मुंह से धुंवाँ निकलेगा। (तफ़सीरे नईमी)

१८) दाब्बतुल अर्ज़ मक्के में सफ़ा पहाड़ी के पास से निकलेगा। उसके पास हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का असा और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की मुहर होगी जिससे मोमिन की पेशनी पर 'हाज़ा मोमिन' और काफ़िर के माथे पर 'हाज़ा काफ़िर' की मुहर लगाएगा। (सीरते रसूले अरबी)

१९) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मुल्के शाम की जामेअ उमवी के सफ़ेद मीनारे के क़रीब नाज़िल होकर दज्जाल को क़त्ल करेंगे। (बुख़ारी शरीफ़)

२०) महशर के दिन कुछ लोग बिना हाथ पावँ के क़ब्रों से निकलेंगे। यह पड़ोसी को सताने वाले होंगे। (बुख़ारी शरीफ़)

२१) कुछ लोग सुअर की सूरत में उठेंगे, यह नमाज़ों में सुस्ती करने वाले होंगे। (बुख़ारी शरीफ़)

२२) कुछ लोग क़ब्र से ख़ून थूकते हुए उठेंगे, यह लोग ख़रीदो फ़रोख़्त में झूट बोलने वाले होंगे। (बुख़ारी शरीफ़)

२३) कुछ लोग क़ब्रों से सूजे फूले हुए उठेंगे, यह ख़ुदा से न डरने वाले होंगे जो इन्सानों के डर से गुनाहों को छुपाया करते थे और इसी हालत में मर गए थे। (बुख़ारी शरीफ़)

२४) कुछ लोग गुद्दी और गला कटे हुए निकलेंगे, यह झूटी गवाही देने वाले होंगे। (बुख़ारी शरीफ़)

२५) कुछ लोग वह होंगे जिन के मुहं में ज़बान न होगी और मुंह से पीप और ख़ून जारी होगा। यह लोग सच्ची गवाही छुपाने वाले होंगे। (बुख़ारी शरीफ़)

२६) कुछ लोग सर झुकाए क़ब्रों से निकलेंगे और उनके पावँ सर पर होंगे, यह वह लोग होंगे जो ज़िना करते करते बिना तौबा किये मर गए थे। (बुख़ारी शरीफ़)

२७) कुछ लोग क़ब्र से कोढ़ी और जुज़ामी होकर उठेंगे, यह माँ बाप के ना फ़रमान लोग होंगे। (बुख़ारी शरीफ़)

२८) कुछ लोग इस तरह उठेंगे कि उनके मुंह काले, आँखें करन्जी और पेट में आग भरी होगी, यह वह लोग हैं जो ज़बरदस्ती नाहक़ यतीमों का माल खा जाया करते थे। (बुख़ारी शरीफ़)

२९) ऐसे लोग क़ब्रों से उठेंगे जिनके चेहरे चौदहवीं के चांद की तरह चमकते होंगे। यह लोग पुले सिरात से कौंदती बिजली की तरह गुज़र जाएंगे। यह लोग नेक अमल करने वाले, गुनाहों से बचने वाले, नमाज़ की हिफ़ाज़त करने वाले और तौबा के बाद मरने वाले लोग होंगे। (बुख़ारी शरीफ़)

३०) कुछ लोग इस हालत में क़ब्रों से उठेंगे कि उनका दिल भी अन्धा होगा और आँखें भी। दाँत बैल के सींग के बराबर होंगे, होंट सीने पर और ज़बान पेट या रान पर पड़ी होगी। यह शराब पीने वाले लोग होंगे। (बुख़ारी शरीफ़)

३१) रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दोज़ख़ में सूद खाने वाले से ज़्यादा किसी पर अज़ाब न होगा। (बुख़ारी)

३२) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ियामत की जो निशानियाँ बयान फ़रमाई उनमें बाज़ारों का मन्दा, बारिश की कमी, सूद ख़्वारी, हरामी

बच्चों की ज़्यादती, दौलत मन्दों की तअ़ज़ीम, मस्जिदों में फ़ासिकों का शोरो गुल और बुरों का अहले हक़ पर ग़लबा शामिल है। (बुख़ारी शरीफ़)

३३) जब तक चार चीज़ों का सवाल न हो चुकेगा, बन्दा खुदा के सामने खड़ा रहेगा। पहला उम्र का कि किस चीज़ में फ़ना की? दूसरा जिस्म का कि किस मशग़ले में बूढ़ा किया? तीसरा इल्म का कि पढ़ लिख कर क्या अ़मल किय? और चौथा माल का कि कहाँ से कमाया और कहाँ ख़र्च किया? (तरीक़ए मुहम्मदिया)

३४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं मेरी उम्मत पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि लोग उलमा और फ़ुक़हा से नफ़रत करने लगेंगे। उस वक़्त अल्लाह तआ़ला उनको तीन तरह की बलाओं में गिरफ़्तार करेगा। पहली कमाइयों में बरकत न रहेगी। दूसरी उन पर अल्लाह तआ़ला ज़ालिम हुक्मराँ मुसल्लत फ़रमा देगा और तीसरी दुनिया से बेईमान उठेंगे। (मुकाशिफ़तुल असरार)

३५) रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक दो जमाअ़तों में जंगे अ़ज़ीम रूनुमा न हो जाए हालांकि दोनों का दावा एक ही हो और क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं हो सकती जब तक तक़रीबन तीस झूटे दज्जाल दुनिया में न आ चुकें जिन में हर एक यह कहता होगा कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

३६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो औरत अपने शौहर को अपनी ज़बान से तकलीफ़ देगी, क़ियामत के दिन उसकी ज़बान सत्तर हाथ की होकर गुद्दी के पीछे लग जाएगी। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

३७) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि जो औरत अपने ख़ाविंद को अपनी ज़बान दराज़ी के कारण सताएगी वह खुदा की लअ़नत, उसके ग़ज़ब और तमाम फ़रिश्तों की लअ़नत और आदमियों की फिटकार में गिरफ़्तार रहेगी। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

३८) तीन शख़्स दोज़ख़ की तह में डाले जाएंगे: पहला मुश्रिक, दूसरा पड़ोसी की बीवी से ज़िना करने वाला और तीसरा माँ बाप का नाफ़रमान। (गुल्दस्तए तरीक़त)

३९) दज्जाल लईन शाम और इराक़ के दरमियान से निकलेगा। चालीस दिन रहेगा, पहला दिन एक साल का होगा, दूसरा दिन एक माह का, तीसरा दिन एक हफ़्ते का, बाक़ी दिन जैसे होते हैं उसी क़दर। (सीरते रसूले अरबी)

४०) ग़ैबदाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन

एक जानवर हरीश नामी जो बिच्छू की नस्ल से है, जहन्नम से निकलेगा। उस की लम्बाई आसमान और ज़मीन के फ़ासले के बराबर होगी और चौड़ाई मश्रिक से मग़रिब तक होगी। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम पूछेंगे: ऐ हरीश कहाँ का इरादा है? वह जवाब देगा: महशर के मैदान की तरफ़। जिब्रईल अलैहिस्सलाम पूछेंगे: तुझे किस की तलाश है? वह कहेगा: पाँच तरह के आदमियों की। एक बेनमाज़ी, दूसरा ज़कात न देने वाला, तीसरा माँ बाप का नाफ़रमान, चौथा शराबी और पांचवाँ मस्जिद में दुनिया की बातें करने वाला। (ज़ुब्दतुल वाइज़ीन)

४१) आख़िरत में हक़बह का हिसाब है। एक एक हक़बह वहाँ अस्सी अस्सी बरस का होगा, एक एक बरस तीन सौ साठ दिन का और एक दिन पचास हज़ार बरस के बराबर होगा। इस तरह एक हक़बह हिसाब में १४० करोड़ बरस का होता है। (गुल्दस्तए तरीक़त)

४२) हज़रत अलीये मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: एक ज़माना ऐसा आने वाला है कि इस्लाम का फ़क़त नाम रह जाएगा और दीन की फ़क़त रस्म और क़ुरआन का फ़क़त दर्स बाक़ी रह जाएगा। मस्जिदें बज़ाहिर आबाद होंगी मगर हक़ीक़त में अल्लाह के ज़िक्र से ख़ली होंगी। उस ज़माने के उलमा सबसे ज़्यादा शरीर होंगे। फ़ित्ने उन्हीं से निकल कर उन्हीं की तरह पलट जाएंगे और यह क़ियामत की निशानियाँ हैं। (ज़ुबदतुल वाइज़ीन)

४३) महशर के दिन तमाम मख़लूक़ात बैतुल मक़द्दिस के मुत्तसिल एक मक़ाम पर जमा होंगी जिसका नाम साहिरा है। (गुल्दस्तए तरीक़त)

४४) कुछ रिवायतों में है कि अर्सए क़ियामत में एक सौ बीस सफ़ें होंगी, हर सफ़ की लम्बाई चालीस हज़ार बरस और चौड़ाई बीस हज़ार बरस की होगी। उन में मोमिनों की तीन सफ़ें होंगी और बाक़ी काफ़िरों की। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

४५) रिवायत में है कि लोग क़ब्रों से उठ कर चालीस बरस तक अपनी अपनी जगह खड़े रहेंगे। वहां खाना, पीना, बोलना, बैठना कुछ न होगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

४६) हदीस शरीफ़ में है कि क़ियामत के दिन जब अल्लाह तआला मख़लूक़ को क़ब्रों से उठाएगा तो फ़रिश्ते मोमिनीन की क़ब्रों पर आकर उनके सरों की मिट्टी पोंछेंगे और सज्दे में जो अंग ज़मीन पर लगते हैं उनके अलावा जिस्म की सारी मिट्टी झाड़ देंगे। पेशानियों से मिट्टी का असर ज़ाइल न होगा। उस वक़्त निदा होगी: ऐ फ़रिश्तो यह क़ब्र की मिट्टी नहीं है बल्कि सज्दों की

है, इनको छोड़ दो ताकि पुले सिरात से गुज़र कर जन्नत में दाख़िल हो जाएं और देखने वाले समझ लें कि यह मेरे ख़ादिम और बन्दे हैं। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

४७) सिफ़ारिशी की तलाश के वक़्त अम्बियाए किराम एक जगह न होंगे, अलग अलग मक़ामात पर होंगे। एक हज़ार साल तक लोग उन्हें ढूंडते फिरेंगे। एक हज़ार साल के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पता चलेगा तब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में शफ़ाअत तलब करते हुए अपनी दरख़्वास्त पेश करेंगे। (तफ़सीरे नईमी)

४८) क़ियामत के दिन ख़ुलफ़ाए राशिदीन और दूसरे सहाबए किराम के मुख़्तलिफ़ झन्डे होंगे। मोमिन इन झन्डों के नीचे रहेंगे। चुनान्चे सिद्दीक़ीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के झन्डे तले, आदिलीन फ़ारूक़ी झन्डे तले, तमाम सख़ी दाता लोग उस्मानी झन्डे तले, तमाम शहीद हैदरी झन्डे तले, फ़ुक़हा हज़रत मआज़ बिन जबल के झन्डे तले, तमाम ज़ाहिदीन हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी के परचम तले, तमाम फ़ुक़रा व मसाकीन हज़रत अबुद दरदा के झन्डे तले, हर क़ारी उबइ बिन कअब के परचम के साए में, तमाम मुअज़्ज़िन हज़रत बिलाल के झन्डे तले और तमाम मज़लूमीन सय्यिदुना इमाम हुसैन के परचम तले जमा होंगे। रिज़्वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

४६) क़ियामत के दिन सारे मोमिन और काफ़िर एक ही जगह जमा होंगे। फिर छाँट कर दी जाएगी, मोमिन अर्श के दाएं तरफ़ और काफ़िर बाएं तरफ़ रखे जाएंगे। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५०) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उम्मते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में हमेशा तीन सौ वली रहेंगे जिन के दिल आदम अलैहिस्सलाम के क़ल्बे पाक की तरह होंगे और चालीस क़ल्ब मूसा अलैहिस्सलाम पर, सात क़ल्ब इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर, पांच क़ल्ब जिब्रईल अलैहिस्सलाम पर, तीन क़ल्ब मीकाईल अलैहिस्सलाम पर और एक क़ल्ब इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम पर। जब उस एक की वफ़ात होगी तो उन तीन में से एक यहाँ क़ायम हो जाएगा और पाँचों में से एक उन तीन में और सात में से एक उन पांच में और चालीस में से एक उन तीन सौ में दाख़िल होकर यह गिन्ती पूरी रखेंगे। इनके तुफ़ैल बलाएं दफ़ा होती रहेंगी। (मिरक़ात)

५१) रूहुल बयान में है कि उम्मते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में चालीस अब्दाल, सात अमीन, तीन ख़ुलफ़ा और एक क़ुत्बे आलम होगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५२) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लहु तआला अन्हु कहते हैं कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जन्नतियों की कुल एक सौ बीस सफ़ें होंगी जिन में से अस्सी सफ़ें मेरी उम्मत की और बाक़ी चालीस सफ़ें दूसरी उम्मतों की होंगी। (तिर्मिज़ी)

५३) इन्सान की ज़िन्दगियाँ तीन हैं: (१) दुनियवी ज़िन्दगी जो पैदाइश और क़ब्र के बीच है। (२) बरज़ख़ी ज़िन्दगी जो मरने से सूर फूंके जाने तक है। (३) उख़रवी ज़िन्दगी जो सूर फूंके जाने से अब्दुल आबाद तक है। (तफ़सीरे नईमी)

५४) दोज़ख़ की आग न तो मोमिन के दिल पर असर करेगी और न उसके उन अंगों पर जो सज्दे की हालत में ज़मीन पर लगते हैं। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५५) मोमिन के गुनाहों का हिसाब छुपवाँ लिया जाएगा। ज़िल्लत और रुस्वाई काफ़िरों के लिए मख़सूस है। (तोफ़तुल वाइज़ीन)

५६) काफ़िरों के नादान, दीवाने जो नासमझी में फ़ौत हो गए, वह दोज़ख़ में नहीं डाले जाएंगे। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५७) कुछ जानवर जन्नत में जाएंगे जैसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊंटनी, ईसा अलैहिस्सलाम का ख़च्चर, असहाबे कहफ़ का कुत्ता, वह भी जज़ा के लिए नहीं बल्कि इन बुज़ुर्गों के साथ रहने और ख़िदमत के सिले में। (तफ़सीरे नईमी)

५८) मोमिन जिन्नात की जज़ा यह है कि वह दोज़ख़ से बच जाएं। वह मिट्टी कर दिए जाएंगे। (तफ़सीरे नईमी)

५९) एक बुज़ुर्ग का क़ौल है कि हज़रत इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम के ज़हूर के पांच सौ बरस बाद क़ियामत क़ायम होगी। (तफ़सीरे नईमी)

६०) हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः (क़ियामत के क़रीब) फ़ित्ने तुम्हारे सामने इस तरह पेश किये जाएंगे जिस तरह चटाई का एक एक तिनका (करके तुम्हारे सामने डाल दिया जाए) यानी एक के बाद एक होते रहेंगे। उस ज़माने में लोग दो तरह के होंगे एक वह जिन के दिल सफ़ेद पत्थर की तरह सफ़ेद होंगे और दूसरे वह जिन के दिल मिट्टी के काले कूज़े की तरह होंगे जिस को औंधा कर दिया जाए। उन्हें अच्छाई की तमीज़ न रहेगी, बुरी बात को बुरा न समझेंगे बल्कि जो चीज़ उन की ख़्वाहिश के मुताबिक़ होगी उसी की पैरवी को अच्छा ख़्याल करेंगे। (तफ़सीरे नईमी)

६१) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबीये अकरम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत के क़रीब इल्म उठा लिया जाएगा और तरह तरह के फ़ित्ने ज़ाहिर होंगे। बुख़्ल और हरज की कसरत होगी। लोगों ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हरज क्या चीज़ है? फ़रमायाः क़त्ल करना यानी क़त्ल कसरत से शुरू हो जाएंगे। (तफ़सीरे नईमी)

६२) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं रसूले अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब क़ातिल के क़त्ल करने और मक़तूल के क़त्ल होने की वजह मालूम न होगी उस वक़्त दुनिया फ़ना होगी। लोगों ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! फिर इस की क्या सूरत होगी? सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ातिल और मक़तूल दोनों दोज़ख़ में होंगे। (तफ़सीरे नईमी)

६३) हज़रत सोबान रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुझे मेरी उम्मत पर गुमराह करने वाले इमामों का ख़ौफ़ है और यह भी ख़ौफ़ है कि जब मेरी उम्मत में तलवार उठ गई तो क़ियामत तक फिर नीचे नहीं हो सकती। (तफ़सीरे नईमी)

६४) हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लहु तआला अन्हु कहते हैंः खुदा की क़सम या तो मेरे हमराही भूल गए या भूले में जान डालते हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुनिया के अन्त तक तीन सौ फ़ितनों तक का ज़िक्र हमारे सामने बयान फ़रमाया था। अगर उन फ़ितनों में किसी फ़ितना परवर शख़्स का ज़िक्र आया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके तमाम हमराहियों और उसके माँ बाप का नाम बता दिया और कबीले का भी पता बता दिया था। (तफ़सीरे नईमी)

६५) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उस वक़्त तक क़ियामत क़ायम नहीं हो सकती जब तक इल्म न उठा लिया जाए और जब तक तुम में माल की इतनी कसरत न हो जाए कि सदक़ा देने वाले को सदक़ा क़ुबूल करने वाला न मिले और उस वक़्त तक क़ियामत न आएगी जब तक लोग ऊंची इमारतें न बनाने लगें और आदमी किसी क़ब्र के पास से गुज़रे तो यह कहे अफ़सोस इस शख़्स की जगह मैं होता और जब तक क़ियामत नहीं आएगी कि सूरज मग़रिब से न निकले और जब मग़रिब से सूरज निकलेगा और लोग उसकी यह हालत देखेंगे तो ईमान लाएंगे लेकिन यह वक़्त ऐसा होगा कि किसी ज़ात को ईमान लाना मुफ़ीद न होगा बशर्ते कि पहले से ईमान न लाए हों और ईमान की हालत में

किसी भलाई को हासिल न किया हो। लेकिन फिर क़ियामत इतनी जल्दी क़ायम हो जाएगी कि दो शख़्सों ने कपड़ा खोला होगा लेकिन वह उस कपड़े को फ़रोख़्त न कर सकेंगे, न तह कर सकेंगे कि क़ियामत हो जाएगी और किसी ने ऊंटनी का दूध दोहा होगा लेकिन वह उसको पी न सकेगा कि क़ियामत हो जाएगी और कोई शख़्स जानवरों के हौज़ को लीपता होगा लेकिन जानवर को पानी न पिला पाएगा कि क़ियामत आ जाएगी। किसी शख़्स ने मुंह में डालने को लुक़मा उठाया होगा लेकिन वह न खा सकेगा कि क़ियामत क़ायम हो जाएगी। (तफ़सीरे नईमी)

६६) हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ग़ज़वए तबूक के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उस वक़्त आप एक चमडे के ख़ैमे में आराम फ़रमा रहे थे। इरशाद फ़रमायाः क़ियामत से पहले छह चीज़ें शुमार कर लेना। एक मेरी वफ़ात, फिर बैतुल मक़्दिस की फ़त्ह, फिर लोगों में ऐसी वबा का फ़ैल जाना जैसे बकरियों में फ़ैल जाती है, फिर माल का इस कसरत से होना कि अगर किसी शख़्स को सौ दिनार भी दिए जाएं तो वह इससे नाख़ुश होगा, फिर ऐसे फ़ितने का वाक़े होना जिससे अरब का कोई मकान ख़ाली न रहेगा, फिर तुम लोगों में और रूमियों में सुलह होगी। जिस वक़्त वह तुम्हारे पास उज़्र के वास्ते आएंगे तो अस्सी निशानों (झन्डों) के नीचे होंगे, हर निशान के नीचे बारह हज़ार आदमी होंगे। (तफ़सीरे नईमी)

६७) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूले मक़बूलसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत की अलामतों में से एक अलामत यह है कि इल्म उठा लिया जाएगा, जहालत बहुत कसरत से होगी, ज़िना और शराब नोशी की बहुतात होगी, मर्द कम और औरतें ज़्यादा होंगी यहाँ तक कि पचास औरतों की हिफ़ाज़त करने वाला एक मर्द होगा। (तफ़सीरे नईमी)

६८) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत उस वक़्त तक न आएगी जब तक फ़ुरात नहर में से सोने का पहाड़ न ज़ाहिर हो जाए और उस ख़ज़ाने पर आपस में क़त्ल और ग़ारतगरी न शुरू हो जाए यहाँ तक कि सौ आदमियों में से एक ही बाक़ी रहे और उन में से हर एक शख़्स का ख़्याल हो कि मैं हक़ पर हूँ, मैं हक़ पर हूँ। (तफ़सीरे नईमी)

६९) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हुज़ूर सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत उस वक़्त क़ायम होगी जब

ज़माना छोटा हो जाएगा यानी एक साल एक माह के बराबर और महीना एक हफ़्ते की तरह और एक हफ़्ता एक दिन की तरह और एक दिन एक घड़ी की तरह और एक घड़ी आग भड़कने की तरह होगी। (तफ़सीरे नईमी)

७०) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब ग़नीमत के माल को दौलत ख़्याल किया जाने लगे और अमानत को ग़नीमत शुमार किया जाने लगे और ज़कात को जुर्माना समझा जाए और इल्म को दुनिया को वास्ते हासिल किया जाए और मर्द अपनी बीवी की इताअत करने लगे, और माँ की नाफ़रमानी और अपने दोस्त से ख़ुलूस और बाप से दूरी और मस्जिदों में ख़ूब ज़ोर से आवाज़ें निकलना शुरू हो जाएं और क़ौम के सरदार फ़ासिक़ हो जाएं और ज़लील शख़्स चौधरी बन जाए और नाच गाने और शराब की कसरत हो और इस उम्मत के आख़िरी लोग बुज़ुर्गों को बुरा भला कहें तो उस वक़्त एक सुर्ख़ रंग की आंधी और ज़लज़ले और ज़मीन के अंदर धंसने और सूरतों के बिगड़ने और पत्थर बरसने और इसके अलावा बहुत सी निशानियों के एक के बाद एक ज़ाहिर होने का इन्तिज़ार करना क्योंकि फिर यह निशानियाँ ऐसे वाक़े होंगी जैसे कोई लड़ी टूट जाए और उसके दाने लगातार गिरने लगें। (तफ़सीरे नईमी)

७१) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सब से पहली जो निशानी क़ियामत की होगी वह मग़रिब से सूरज का निकलना है, फिर चाश्त के वक़्त दाब्बतुल अर्ज़ का निकलना। और जो निशानी पहले होती जाएगी उसकी बहन भी उसके पीछे क़रीब होती जाएगी। (तफ़सीरे नईमी)

७२) हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम को मालूम है कि जब सूरज छुप जाता है तो कहाँ जाता है? मैंने अर्ज़ कियाः अल्लाह और उस का रसूल बेहतर जानें। फ़रमायाः अर्श के क़रीब जा कर सज्दा करता है और फिर तुलूअ होने की इजाज़त तलब करता है और उसको इजाज़त दे दी जाती है। बहुत जल्द ऐसा वक़्त आने वाला है कि सज्दा करे और सज्दा क़ुबूल न हो, इजाज़त का ख़्वाहाँ हो और इजाज़त न दी जाए बल्कि हुक्म हो कि जा, जहाँ से तू आया है उधर ही पलट जा। लिहाज़ा सूरज मग़रिब की सिम्त से निकलेगा। इसी के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता हैः वश-शम्सु तज्री लि मुस्तक़र्रिल लहा। फ़रमायाः आफ़ताब का इस्तिक़रार अर्श के नीचे है। (तफ़सीरे नईमी)

७३) हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दज्जाल एक आँख से काना है, उसके बाल घुँघरियाले हैं, उसके हमराह आग है और बाग़ है। जो आग है वह हक़ीक़त में जन्नत है और जो बाग़ है वह हक़ीक़त में आग है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार दज्जाल का ज़िक्र करते हुए सहाबए किराम को हिदायत फ़रमाई कि तुम में से जिस शख़्स को दज्जाल का ज़माना मिले तो सूरए कहफ़ की शुरू की आयतें पढ़ कर फूंके। (तफ़सीरे नईमी)

७५) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दज्जाल शाम और इराक़ के एक रास्ते में से निकलेगा। वह दाएं बाएं फ़साद करता फिरेगा। ऐ अल्लाह के बन्दों, तुम साबित क़दम रहना। सहाबए किराम ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! वह ज़मीन में कब तक रहेगा? इरशाद फ़रमायाः चालीस रोज़ तक। एक दिन एक साल का होगा और एक रोज़ एक माह का और एक दिन एक हफ़्ते का और बाक़ी दिन अपने मामूली तरीक़े पर होंगे। सहाबा ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जो दिन एक साल के बराबर होगा उसमें हमें एक वक़्त की नमाज़ काफ़ी होगी? फ़रमायाः नहीं, उस में अन्दाजा करके पढ़ना। अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! उसका ज़मीन में चलना फिरना किस सूरत में होगा? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उस बारिश की तरह जिसे हवा उड़ा कर लाती है। वह एक क़ौम के पास जाकर उन को अपनी इबादत की तरफ़ बुलाएगा। यह लोग उस के क़ौल पर ईमान ले आएंगें। तब वह आसमान से कहेगा कि पानी बरसा, वह पानी बरसाएगा और ज़मीन उसके हुक्म से सब्ज़ा उगाएगी। उस वक़्त उनके मवेशी ख़ूब मोटे ताज़े कोखें भरे हुए मोटे मोटे थन वाले होकर आएंगे। फिर वह एक क़ौम के पास आएगा लेकिन वह लोग उसकी बातों को उसके मुंह पर मार देंगे। वह वहाँ से वापस चला आएगा लेकिन यह लोग सुब्ह तक मुफ़लिसी की हालत में हो जाएंगे। दज्जाल एक वीराने में आकर कहेगा कि अपने ख़ज़ाने निकाल, वह अपने ख़ज़ाने निकाल देगा। यह ख़ज़ाने उसके पीछे पीछे शहद की मक्खियों की तरह चलेंगे। वह फिर एक ऐसे शख़्स को बुलाएगा जो जवानी में भरा होगा। उसको तलवार मार कर दो टुकड़े कर देगा। फिर उसे आवाज़ देगा, वह शख़्स हंसता हुआ उसके पास आएगा। उस वक़्त उसके चेहरे पर बहुत रौनक़ होगी। ग़र्ज़ यह कि ऐसे काम करता फिरेगा कि इतने में अल्लाह तआला हज़रत मसीह इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम को रवाना फ़रमाएगा। वह दमिश्क़ के मिश्रिक़ी जानिब के

सफ़ेद मीनारे पर ज़र्द रंग के कपड़े पहने हुए दो फ़रिश्तों के कान्धों पर हाथ
रखे हुए नाज़िल होंगे। उनके सर से पानी के क़तरे गिरते होंगे। जिस वक़्त
सर झुकाएंगे तो पसीने की तरह उनके सर से पानी टपकेगा और जब वह सर
उठाएंगे तो मोती और चाँदी के दानों की तरह वह क़तरे गिरेंगे। जिस काफ़िर
को उनकी साँस पहुंचेगी वह फ़ौरन मर जाएगा। उन की साँस वहाँ तक
पहुंचेगी जहाँ तक उन की नज़र जाएगी। वह आकर दज्जाल को तलाश करते
करते बाब के क़रीब घेर लेंगे और उसे क़त्ल कर देंगे। फिर ईसा
अलैहिस्सलाम के पास एक ऐसी क़ौम आएगी जिसको अल्लाह तआला ने
दज्जाल के फ़ितने से मेहफ़ूज़ रखा होगा। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उस क़ौम
के चेहरों पर शफ़क़त से हाथ फेरेंगे और उनके सामने जन्नत के दर्जों का
बयान फ़रमाएंगे। यह लोग उसी हालत में होंगे कि अल्लाह की तरफ़ से
हज़रत ईसा को वही होगी कि मैं अपने ऐसे बन्दों को निकालता हूँ जिन से
लड़ाई की किसी शख़्स को ताक़त नहीं। लिहाज़ा तुम मेरे इन बन्दों को लेकर
कोहे तूर पर मेहफ़ूज़ हो जाओ। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हमराहियों को
लेकर कोहे तूर पर महसूर हो जाएंगे। तब अल्लाह तआला याजूज माजूज को
बाहर निकलेगा और वह हर मक़ाम से दौड़ पड़ेंगे। उनके अव्वल गिरोह का
गुज़र दरियाए तबरी पर होगा, यह उसका तमाम पानी पीकर ख़ुश्क कर देंगे।
फिर उस मक़ाम पर दूसरे गिरोह आएँगे और कीचड़ देखकर कहेंगे कि शायद
इस जगह पर पहले कभी पानी था। यह कह कर आगे को रवाना हो जाएंगे
और जबले अहमर के क़रीब पहुंचेंगे। यह बैतुल मक़्दिस का पहाड़ है और
फिर आपस में कहेंगे कि जो लोग ज़मीन पर आबाद थे उन्हें तो हमने फ़ना
कर दिया, अब हमें चाहिए कि आसमान वालों को भी क़त्ल कर डालें। लिहाज़ा
वह अपने तीरों को आसमान की तरफ़ फेकेंगे। अल्लाह तआला उन्हें दिखाने
को वह तीर ख़ून में रंग देगा। इस पूरे अर्से में ईसा अलैहिस्सलाम और आप
के हमराही तूर में महसूर रहेंगे यहाँ तक कि एक बकरी की सिरी भी उनके
वास्ते सौ अशरफ़ियों से ज़्यादा बेहतर साबित होगी। फिर ईसा अलैहिस्सलाम
और उनके साथी अल्लाह तआला से दुआ करेंगे। अल्लाह तआला याजूज
माजूज की क़ौम पर बीमारी मुसल्लत फ़रमाएगा जो गर्दन में पैदा होगी और
सुब्ह के वक़्त सब ऐसे मरे हुए होंगे जैसे एक आदमी मर जाए। अब हज़रत
ईसा अलैहिस्सलाम अपनी फ़ौज के साथ कोहे तूर से नीचे तशरीफ़ लाएंगे।
उस वक़्त उन को बालिश्त भर ज़मीन भी बदबू और चर्बी से ख़ाली नहीं
मिलेगी। तब वह अपने साथियों समेत अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ करेंगे।

अल्लाह तआला उन की दुआ से ऐसी चिड़ियाँ रवाना फ़रमाएगा जिन की गर्दनें बख़्ती ऊंटों की तरह होंगी। यह चिड़ियाँ लाशों को उठा कर जहाँ अल्लाह तआला चाहेगा फेंक देंगी। मुसलमान उनके तीर कमान सात बरस तक इस्तेमाल करेंगे। फिर अल्लाह तआला ऐसी बारिश नाज़िल फ़रमाएगा कि मिट्टी का कोई मकान और उनका ख़ैमा टपके बिना न रह सकेगा। वह बारिश ज़मीन को आईने की तरह साफ़ कर देगी। उस वक़्त ज़मीन को हुक्म होगा कि वह अपनी बरकतें ज़ाहिर करदे और जो फल तुझ में मौजूद हों सब उगा दे। वह वक़्त ऐसी बरकत का होगा कि एक अनार को पूरी जमाअत खाएगी और उसके छिलके के साए में रह सकेंगे। इसी तरह दूध में भी बड़ी बरकत होगी। चुनान्चे एक ऊंटनी का दूध एक बड़ी ज़माअत को काफ़ी होगा और एक बकरी का दूध एक छोटी जमाअत को। यह लोग ऐसी हालत में बसर करते होंगे कि अल्लाह तआला एक ऐसी पाकीज़ा हवा मबऊस फ़रमाएगा कि वह हर मोमिन की बग़ल में पहुँच कर उन की रूहें क़ब्ज़ कर लेगी और शरीर लोग रह जाएंगे जो औरतों से ऐसी सोहबत करेंगे जैसी गधे करते हैं। इन्ही लोगों पर क़ियामत क़ायम हो जाएगी। (तफ़सीरे नईमी)

७६) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब दज्जाल निकलेगा तो एक मोमिन उस की तरफ़ मुतवज्जह होगा। पहले उस शख़्स से दज्जाल के कुछ हथियार बन्द मुहाफ़िज़ों की मुलाक़ात होगी। वह उस शख़्स से पूछेंगे कहाँ का इरादा है? यह कहेगाः उस शख़्स के पास जा रहा हूँ जिस के ख़ुरूज की धूम मची हुई है। वह कहेंगेः हमारे रब पर ईमान क्यों नहीं ले आते? यह कहेगाः मेरा रब पोशीदा है जो मैं उस ख़बीस पर ईमान लाऊँ। दज्जाल के मुहाफ़िज़ीन यह सुन कर आपस में कहेंगेः इसे क़त्ल कर डालो। दूसरे आपस में कहेंगेः क्या तुम्हारे ख़ुदा ने यह नहीं कहा है कि हमारी इजाज़त के बिना किसी को क़त्ल न करना। वह लोग उस मोमिन को दज्जाल के पास लाएंगे। जब वह मोमिन दज्जाल को देखेगा तो कहेगा यही वह दज्जाल है जिस की ख़बर रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दी थी। दज्जाल उसे ज़ख़्मी करने का हुक्म देगा। उसे ज़ख़्मी कर दिया जाएगा। फिर दज्जाल कहेगा इस को मारो। तब उसे लिटा कर मारेंगे। दज्जाल कहेगाः अब भी तू मुझ पर ईमान नहीं लाएगा? वह कहेगाः तू मसीहे कज़्ज़ाब है। दज्जाल हुक्म देगाः इसे आरे से चीर डालो। उस वक़्त उसे आरे से चीर डाला जाएगा और दो टुकड़े कर दिए जाएंगे। दज्जाल उन दोनों टुकड़ों के बीच से गुज़रेगा और कहेगाः उठ जा। वह सीधा

खड़ा हो जाएगा। दज्जाल कहेगाः अब भी तू मुझ पर ईमान नहीं लाएगा। वह कहेगाः अब तो मुझे तेरे दज्जाल होने का और भी पक्का यक़ीन हो गया है। रावी ने कहा है फिर वह मोमिन कहेगाः लोगो अब मेरे बाद यह किसी के साथ ऐसा काम नहीं कर सकेगा। उस वक़्त दज्जाल उस मोमिन को ज़िब्ह करने के इरादे से आएगा तो उस की गर्दन तांबे की तरह हो जाएगी और उस को किसी तरह उस मोमिन को ज़िब्ह करने की क़ुदरत न होगी तब दज्जाल उसके हाथ पाँव पकड़वा कर उसे आग में फिंकवा देगा। लोग तो ख़्याल करेंगे कि उसे आग में फेंका है लेकिन हक़ीक़त में वह जन्नत में डाला जाएगा। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः वह अल्लाह तआला के नज़्दीक सब से बड़ा शहीद शुमार किया जाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

७७) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दज्जाल के हमराह इस्फ़हान के सत्तर हज़ार यहूदी होंगे। उन का लिबास रेशमी चादरों का होगा। (तफ़सीरे नईमी)

७८) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मदीने में मसीह दज्जाल का ख़ौफ़ दाख़िल न होगा। उस वक़्त मदीने के सात दरवाज़े होंगे, हर दरवाज़े पर दो फ़रिश्ते पहरा देते होंगे। (तफ़सीरे नईमी)

७९) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दज्जाल एक सफ़ेद गधे पर निकलेगा जिस के कन्धों के बीच सत्तर हाथ का फ़सला होगा। (तफ़सीरे नईमी)

८०) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन लोगों को इतना पसीना आएगा कि ज़मीन पर सत्तर हाथ खड़ा हो जाएगा और लगाम की तरह लोगों के होंटों तक पहुंच जाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

८१) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं रसूले मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ में तो मौत को एक मेंढे की सूरत में लाकर ज़िब्ह कर दिया जाएगा। फिर एक शख़्स आवाज़ देगा ऐ जन्नत वालो, अब मौत नहीं है और ऐ दोज़ख़ वालो अब मौत नहीं है। (तफ़सीरे नईमी)

८२) हश्र के दिन नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहिबज़ादी बीबी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा आप की ऊंटनी असबा पर सवार होंगी और ख़ुद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बुराक़ पर तशरीफ़ रखेंगे कि उस रोज़

सब नबी रसूलों से अलग ख़ास मक़ाम आप को ही अता होगा। (तफ़सीरे नईमी)

८३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दुनिया एक ख़्वाब है इस की ताबीर मरने के बाद मालूम होगी। (गुल्दस्तए तरीक़त)

८४) सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरा रब मेरे गुलामों के लिये पुले सिरात की राह कि पन्द्रह हज़ार बरस की है, इतनी मुख़्तसर कर देगा कि पलक झपकते गुज़र जाएंगे या जैसे बिजली कौंद गई। (तफ़सीरे नईमी)

८५) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हर बच्चे की नाफ़ में उस मिट्टी का हिस्सा होता है जिससे वह बनाया गया है यहाँ तक कि उसी में दफ़्न किया जाए। मैं और अबू बक्र और उमर एक मिट्टी से बने हैं उसी में दफ़्न होंगे। (तफ़सीरे नईमी)

८६) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हश्र का दिन पचास हज़ार साल का है मेरे गुलामों के लिये इस से कम देर में गुज़र जाएगा जितनी देर में दो रकअत फ़र्ज़ पढ़ते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

८७) सय्यिदुल अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआला ने मेरे लिये मेरी उम्मत की उम्रें कम कीं ताकि दुनिया की मक्कारियों से जल्द ख़लासी पा जाएं, गुनाह कम हों और हमेशा रहने वाली नेअमतों तक जल्द पहुंचें। (तफ़सीरे नईमी)

८८) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अपनी जान, औलाद, माल और ख़ादिमों को बद दुआ न दिया करो कहीं ऐसा न हो कि यह बद दुआ अल्लाह के किसी ऐसे ख़ास वक़्त में वाक़े हो जाए जो क़ुबूलियत का है। (तफ़सीरे नईमी)

८९) इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं: क़ियामत में चार तरह की गवाहियाँ होंगीः एक फ़रिश्तों की, दूसरी नबियों रसूलों की, तीसरी उम्मते मुहम्मदिया की और चौथी आदमी के अपने शरीर के अंगों की। (तफ़सीरे कबीर)

९०) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो आदमियों में लगाई बुझाई करेगा, अल्लाह तआला उसकी क़ब्र में आग मुसल्लत कर देगा जो क़ियामत तक जलाती रहेगी। (तफ़सीरे नईमी)

९१) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस शख़्स ने उम्र भर में एक बार ग़ीबत की होगी, अल्लाह तआला उसे तरह तरह के

अज़ाब में मुब्तिला करेगा। एक खुदा की रहमत से दूर रहेगा, दुसरे फ़रिश्ते उससे दूर रहेंगे, तीसरे जान मुश्किल से निकलेगी, चौथे दोज़ख़ से करीब हो जाएगा, पांचवें जन्नत से दूर रहेगा, छटे क़ब्र का अज़ाब सख़्त होगा, सातवें अमल नाबूद हो जाएंगे, आठवें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूह को उससे ईज़ा होगी, नवें उस पर खुदा का गुस्सा होगा, दसवें क़ियामत के दिन जब आमाल तोले जाएंगे उस वक़्त वह मुफ़लिस रह जाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

६२) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ग़ीबत करने वाले, नुक्ता चीनी करने वाले, इधर की उधर लगाने वाले, नेकों में ऐब तलाश करने वाले क़ियामत के दिन कुत्तों की सूरत में उठेंगे। (तफ़सीरे नईमी)

६३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जन्नत में ऐसी खिड़कियां हैं जिन का बाहरी हिस्सा अन्दर से और अन्दरूनी हिस्सा बाहर से नज़र आता है। यह अल्लाह तआला के लिये मुहब्बत रखने वालों, अल्लाह तआला के लिये बाहम मिलने जुलने वालों और अल्लाह की राह में ख़र्च करने वालों के लिए तय्यार की गई हैं। (तबरानी)

६४) रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः लोगों का हाल जब यह हो जाए कि वह ज़ालिम को देखें और उस का हाथ न पकड़ सकें तो फिर अल्लाह तआला को उन पर आम अज़ाब भेजते देर नहीं लगती। (तफ़सीरे नईमी)

६५) हदीसे क़ुदसी में है कि अल्लाह तआला फ़रमाता हैः तीन तरह के लोग ऐसे हैं कि क़ियामत के दिन उनसे निपटने वाला मैं खुद होऊंगा। एक तो वह शख़्स जिस ने मेरी क़सम खाकर किसी को ज़बान दी और फिर वादे से मुकर गया। दूसरा वह जिस ने किसी आज़ाद शख़्स को बेच कर उसकी क़ीमत वसूल की और तीसरा वह जिस ने किसी मज़दूर को उजरत पर बुलाया और उससे पूरा काम लेने के बाद भी उसे उस की मज़दूरी नहीं दी। (बुख़ारी शरीफ़)

६६) रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें उन लोगों की ख़बर न दूँ जो क़ियामत के दिन मुझ से ज़्यादा क़रीब होंगे? सहाबा ने अर्ज़ कियाः हाँ या रसूअल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! इरशाद फ़रमाया कि यह वह लोग हैं जिनके अख़लाक़ अच्छे हैं, जो नर्म आदतों वाले हैं, जो उल्फ़त रखते हैं और उल्फ़त सिखाते हैं, और मेहरबानी करना, मुहब्बत करना, बहादुरी दिखाना, चश्म पोशी करना, ऐब छुपाना, दुसरे की ख़ता से दरगुज़र करना, सब्र करना, राज़ी रहना, बशाशत व बुर्दबारी, तवाज़ोअ, ख़ैरख़्वाही, शफ़क़त, करम, जवाँ मर्दी, मुरव्वत, दोस्ती, आहिस्तगी, अफ़्व, गुनाह से दरगुज़र, सख़ावत, जूदो वफ़ा, हया, तकल्लुफ़, कुशादा रूई, तमकीन,

वक़ार, रहम जो दूसरों को दे उसे हक़ीर जानना और दूसरों से मिले उसे बड़ा समझना, उन की आदतों में दाख़िल हो। (तफ़सीरे नईमी)

९७) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है मैं अपने बन्दे के लिए दो ख़ौफ़ और दो अम्न जमा नहीं करता। मैं ख़ौफ़ देता हूँ तो क़ियामत के दिन अम्न में रखूँगा और दुनिया में अम्न देता हूँ तो क़ियामत के दिन ख़ौफ़ में मुब्तिला करूँगा। (तफ़सीरे नईमी)

९८) कुछ उलमा का क़ौल है कि अज़ाब रूह पर होता है बदन पर नहीं। कुछ इसके बरअक्स कहते हैं। कुछ की राय यह है कि अज़ाब का ताल्लुक़ रूह और बदन दोनों से है। कुछ कहते हैं कि अल्लाह इस पर क़ादिर है कि मय्यत में इस क़द्र हयात का माद्दा पैदा कर दे कि वह अलम और ऐश का मज़ा चख सके और उसके बदन में वह रूह न डाले जिसे दोबारा निकालना पड़े। कुछ उलमा का कहना है कि सवाल रूह से होता है जिस्म से नहीं। कुछ का ख़्याल है कि मय्यत के बदन में वह रूह डाली जाती है जो दुनिया में थी और उसे उठा कर सवाल किया जाता है। कुछ का क़ौल है कि फ़क़त सीने तक रूह डाली जाती है। कुछ कहते हैं कि रूह कफ़न और जिस्म के बीच रहती है। अहले इल्म के नज़्दीक सही बात यह है कि आदमी क़ब्र के अज़ाब का इक़रार करे लेकिन उस की कैफ़ियत मालूम करने की कोशिश न करे। (नुज़्हतुल क़ारी)

९९) रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: क़ब्रों से उठते वक़्त तीन फ़िर्क़ों से फ़रिश्ते मुसाफ़हा करेंगे: एक शहीद, दूसरे रमज़ान में इबादत करने वाले, तीसरे अरफ़े के दिन रोज़ा रखने वाले। (तफ़सीरे नईमी)

१००) हदीस में है कि दस आदमियों को ज़मीन नहीं खाती: नबी को, ग़ाज़ी को, आलिम को, शहीद को, क़ुरआन के हाफ़िज़ को, मुअज़्ज़िन को, निफ़ास में मरने वाली औरत को, मज़लूम को, मक़तूल को और जुम्ए के दिन या रात में मरने वाले को। (तफ़सीरे नईमी)

१०१) हदीस शरीफ़ में है कि जब दोज़ख़ी दोज़ख़ में जा चुकेंगे तो शैतान के लिए आग का मिम्बर बिछाया जाएगा, आग के कपड़े पहनाए जाएंगे, आग का ताज सर पर रखा जाएगा, आग की बेड़ियाँ डाली जाएंगी, फिर हुक्म होगा कि इस मिम्बर पर चढ़ कर दोज़ख़ियों को ख़िताब करे। चुनान्चे शैतान मिम्बर पर चढ़ कर दोज़ख़ियों को पुकारेगा। तमाम दोज़ख़ी आवाज़ सुन कर उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो जाएंगे। शैतान ख़ुत्बा पढ़ेगा: ऐ काफ़िरो और मुनाफ़िक़ो, अल्लाह तआला ने तुम से सच्चा वादा किया था कि पहले तुम सब मरोगे फिर ज़िन्दा होकर महशर के मैदान में जाओगे। फिर हिसाब किताब होगा, फिर एक

फ़िर्का जन्नती होगा एक दोज़ख़ी। तुम्हें गुमान था कि हम हमेशा दुनिया ही में रहेंगे। मुझे तुम पर हुकूमत हासिल न थी फ़क़त वस्वसे डाला करता था, तुम मेरे कहने में आ गए। यह गुनाह मेरा नहीं तुम्हारा है। मुझे बुरा मत कहो, अपने आप को बुरा कहो। तुमने ख़ालिक़े कुल यानी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की इबादत न की। आज न मैं तुम को अज़ाबे इलाही से बचा सकता हूँ और न तुम मुझ को। मैं आज तुम से बेज़ार हूँ और अल्लाह तआला की बारगाह से ठुकराया हुआ हूँ। दोज़ख़ी यह ख़ुत्बा सुन कर शैतान पर लअनत भेजेंगे और फ़रिश्ते आग के नेज़े मार मार कर उसे मिम्बर पर से उतार देंगे और दोज़ख़ में गिरा देंगे। इसके बाद शैतान अपनी जमाअत के साथ हमेशा असफ़लुस साफ़िलीन में रहेगा और फ़रिश्ते निदा करेंगे कि अब न तुम को मौत है न राहत। अबदु आबाद तक दोज़ख़ में ही पड़े रहो। (तफ़सीरे नईमी)

१०२) हश्र के दिन रब तबारक व तआला निदा फ़रमाएगा कि शैतान मलऊन कहाँ है? चुनान्चे शैतान हाज़िर होकर अर्ज़ करेगा कि इलाही तू तो हाकिम और आदिल है। मेरे लश्करियों, मुअज़्ज़िनों, क़ारियों, मुसाहिबों, वज़ीरों, फ़क़ीहों, ख़ज़ांचियों, ताजिरों, नक़्क़ारचियों, हाशिया नशीनों को मेरे हवाले कर दे। हुक्म होगाः ऐ ज़लील, तेरा लश्कर कैसा? अर्ज़ करेगाः हरीस लोग मेरे लश्करी, ख़ुश आवाज़ मेरे मुअज़्ज़िन, गवय्ये मेरे क़ारी, बदन को गोदने और गुदवाने वाले मेरे मुसाहिब, मुसीबत ज़दों पर हंसने वाले और मज़े के खाने चखने वाले मेरे फ़क़ीह, नशे की चीज़ें खाने पीने वाले और ज़कात न देने वाले मेरे ख़ज़ांची, साज़ बेचने वाले मेरे ताजिर, दफ़ और तबला बजाने वाले मेरे नक़्क़ारची, शराब के लिए अंगूर की खेती करने वाले मेरे हाशिया बरदार हैं। इसके बाद एक अज़्दहा निकलेगा जिस की गर्दन सत्तर बरस की राह जितनी लम्बी होगी और वह उन सब को जमा करके दोज़ख़ की आग की तरफ़ हाँक देगा। (तफ़सीरे नईमी)

१०३) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआला के बहुत से बन्दे ऐसे हैं जिनके बैठने को क़ियामत के दिन मिम्बर बिछाया जाएगा। उनके चेहरे नूरानी होंगे जबकि वह पैगम्बरों और शहीदों में से न होंगे। मगर पैगम्बर और शहीद उन पर रश्क करेंगे। सहाबा ने अर्ज़ कीः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! वह कौन लोग हैं? फ़रमायाः ख़ुदा के वास्ते दोस्ती रखने वाले और ख़ुदा के वास्ते मुलाक़ात करने वाले, ख़ुदा के लिए बाहम उठने बैठने वाले। (तफ़सीरे नईमी)

१०४) बड़े दज्जाल की एक आँख और एक पलक बिल्कुल न होगी बल्कि वह जग बिल्कुल हमवार होगी। उस की पेशानी के बीचों बीच काफ़िर लिखा होगा जिसे सिर्फ़ ईमान वाले पढ़ सकेंगे। (तफ़सीरे नईमी)

१०५) हज़रत इमाम मेहदी रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त सात, आठ या नौ साल होगी, उसके बाद आप का विसाल होगा। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आप के जनाज़े की नमाज़ पढ़ाएंगे। (तफ़सीरे नईमी)

१०६) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद क़बीलए क़हतान में से एक शख़्स जहजाह नामी यमन के रहने वाले आप के ख़लीफ़ा होंगे। (तफ़सीरे नईमी)

१०७) दाब्बतुल अर्ज़ सफ़ा पहाड़ी से निकलेगा। यह अजीब शक्ल का जानवर होगा। चेहरे में आदमी से, गर्दन में ऊंट से, दुम में बैल से, सुरीन में हिरन से, सींग में बारह सिंघे से, हाथों में बन्दर से और कानों में हाथी से मिलता जुलता होगा। उसके एक हाथ में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का असा और दुसरे में हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की अंगूठी होगी। (तफ़सीरे नईमी)

१०८) क़ियामत के क़रीब हब्शा के काफ़िरों का ग़लबा होगा, वह ख़ानए कअबा को ढा देंगे, हज मौक़ूफ़ हो जाएगा, क़ुरआने मजीद दिलों, ज़बानों और काग़ज़ों से उठ जाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

१०९) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दोबारा नुज़ूल के बाद उम्मते मुहम्मदिया की ताज़ीम की जहत से इमाम मेहदी रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे नमाज़ पढ़ेंगे। (तफ़सीरे नईमी)

११०) दमे ईसा की यह ख़ासियत होगी कि जहाँ तक आप की नज़र पहुँचेगी वहाँ तक सांस भी पहुंचेगी और जिस काफ़िर तक पहुंचेगी वह हलाक हो जाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

१११) जन्नत में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की कुन्नियत उन की तमाम औलाद में से सिवाए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के किसी और के नाम पर न होगी। चुनान्चे उन्हें अबू मुहम्मद कहा जाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

११२) हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने फ़रमायाः आख़िर ज़माने में एक क़ौम ज़ाहिर होगी जो हमारे गिरोह की तरफ़ अपने आप को मंसूब करेगी हालांकि वह हमारे गिरोह में न होंगे। उन का एक बुरा लक़ब होगा। लोग उन को राफ़ज़ी कहेंगे। जब तुम उनसे मिलो तो उन्हें क़त्ल कर डालना इसलिए कि वह मुश्रिक हैं। (सबए सनाबिल शरीफ़)

११३) बुस्ताने फ़क़ीह अबुल्लैस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः आख़िर ज़माने में एक क़ौम होगी जिस को राफ़ज़ी कहा

जाएगा। वह लोग हक़ीक़ी इस्लाम छोड़ देंगे अलबत्ता ज़बान से नाम इस्लाम का लेंगे। पस तुम लोग उन्हें कत्ल कर डालना इस लिए कि वह मुश्रिक हैं। कहा जाता है कि हारून रशीद ने उन लोगों को इसी हदीस शरीफ के तहत कत्ल कराया। (सब्ए सनाबिल शरीफ)

११४) अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि अगर कल क़ियामत के रोज़ यह फ़रमान हो कि हम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम उम्मत को जन्नत में भेजेंगे और एक शख़्स को दोज़ख़ में, तो मैं डरता हूँ कि कहीं वह एक शख़्स मैं ही न हूँ। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

११५) मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने फ़रमाया कि क़ियामत क़रीब है और उससे भी क़रीब मौत। वाजिब तौबा है और गुनाह से दूर रहना उससे भी ज़्यादा वाजिब। अजीब दुनिया है और दुनिया का तालिब उससे भी अजीब। क़ब्र में दाख़िल होना मुश्किल है मगर उससे भी मुश्किल है क़ब्र में बिना तोशे के जाना। (तफ़सीरे नईमी)

११६) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: बहुत जल्द ऐसा वक़्त आने वाला है कि इन्सान जब अपने घर को लौटेगा तो उस के जूते और कूड़ा बताएगा कि तुम्हारे घर से जाने के बाद घर वालों ने क्या किया। (मिश्कात शरीफ़)

११७) हदीस शरीफ़ में है कि क़ियामत के दिन मोमिन के तराज़ू में सबसे वज़नी चीज़ उसकी खुश अख़लाक़ी होगी। (तफ़सीरे नईमी)

११८) क़ब्र का हिसाब हमारे आक़ा व मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने से शुरू हुआ। पिछली उम्मतों में न था, न उनसे अपने नबी की पहचान कराई जाती थी। (तफ़सीरे नईमी)

११९) उलमा दुनिया का तावीज़ हैं। उलमा के उठने से इस्लाम उठ जाएगा और क़ियामत बरपा हो जाएगी। (तफ़सीरे नईमी)

१२०) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक दुनिया में दो काम न हो लें। ग़नीमत पर खुशी न रहे और मीरास की सही तक़सीम न हो। (तफ़सीरे नईमी)

१२१) रिवायत है कि क़ियामत ज़मीने फ़लस्तीन में क़ायम होगी मगर उस दिन वह ज़मीन यह न होगी बल्कि सफ़ेद चाँदी की सी होगी और रौशनी तजल्लियाते इलाही की होगी न कि चाँद सूरज की। सारे बन्दों का हिसाब न होगा। कुछ बन्दे बिना हिसाब के ही बख़्शे जाएंगे। जिन का हिसाब होगा उन्हीं

के आमाल का वज़न होगा, जिन का हिसाब नहीं होगा उनके आमाल का वज़न भी नहीं। (रूहुल बयान)

१२२) हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं रसूले मक्बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तीन शख़्सों से अल्लाह तआला क़ियामत के दिन कलाम नहीं फ़रमाएगा, न उन की तरफ़ रहमत की नज़र फ़रमाएगा, न उन्हें माफ़ी दी जाएगी बल्कि उनके लिए बड़ा सख़्त अज़ाब है। यह लोग बड़े नुक़्सान और ख़सारे में गिरने वाले हैं। अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह कौन लोग हैं? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः फ़ख़्र से अपना लिबास लटका कर चलने वाला, एहसान जताने वाला और झूटी क़सम खाकर सामान बेचने वाला। (तफ़सीरे नईमी)

१२३) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन लोगों से पहले क़त्ल का हिसाब लिया जाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

१२४) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी उम्मत की उम्र साठ साल से सत्तर साल तक रहेगी और इससे ज़्यादा उम्र वाले आदमी बहुत कम होंगे। (तफ़सीरे नईमी)

१२५) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद हैः जो शख़्स अल्लाह तआला के क़लील रिज़्क़ पर राज़ी रहेगा, अल्लाह तआला उसके क़लील अमल पर राज़ी होगा। (तफ़सीरे नईमी)

१२६) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बहुत जल्द फ़ुरात नहर में सोने का ख़ज़ाना ज़ाहिर होगा। जो शख़्स उस वक़्त में मौजूद हो उसे ख़ज़ाने में से कुछ नहीं लेना चाहिए। (तफ़सीरे नईमी)

१२७) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत के गुनहगार हज़ार बरस तक दोज़ख़ की आग में जल कर पुकारेंगेः या अल्लाह। फिर हज़ार बरस के बाद निदा करेंगेः या क़य्यूम। फिर हज़ार बरस के बाद कहेंगेः या रहमान, फिर हज़ार बरस के बाद चिल्लाएंगेः या रहीम, फिर हज़ार बरस के बाद पुकारेंगेः या हन्नान, फिर हज़ार बरस बाद आवाज़ देंगेः या मन्नान। फिर अल्लाह तआला का हुक्म होगाः ऐ जिब्राईल! दोज़ख़ की आग ने उम्मते मुहम्मदिया के गुनहगारों के साथ क्या मामला किया है? वह अर्ज़ करेंगेः इलाही तू छुपी बातों को जानता है, तू उनके हाल से दाना व बीना है, मेरे कहने की

कोई ज़रूरत नहीं है। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएगाः जिब्राईल जाओ और देखो कि उनका क्या हाल है? अब हमारे रहम का वक़्त आ गया है। रब्बे जलील का हुक्म सुनते ही हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम दोज़ख़ के दारोग़ा मालिक के पास जाएंगे। मालिक उनकी ताज़ीम को उठेंगे और पूछेंगेः ऐ जिब्राईल इस क़हर की जगह पर आप क्यों आगए? आप की सूरत रहम की है और मेरी सूरत क़हर की। जिब्राईल अलैहिस्सलाम कहेंगेः भला तुम ने उम्मते मुहम्मदिया के गुनहगारों के साथ क्या मामला किया? वह जवाब देंगेः उन का तो बुरा हाल है और वह तंग मकान में हैं। आग उन की हड्डियों तक को खा गई। गोश्त पोस्त कुछ भी बाक़ी नहीं रखा, लेकिन मुंह और दिल सलामत रखा है कि उसी में ईमान था। फिर हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम कहेंगेः मालिक! मेरे सामने से पर्दे हटा दो कि मैं उनका हाल देख सकूँ, फिर हिजाब दूर होगा। जिब्राईल अलैहिस्सलाम दोज़ख़ियों को देखेंगे कि बुरा हाल है। जिस वक़्त दोज़ख़ी जिब्राईल अलैहिस्सलाम को देखेंगे तो सब कहेंगेः सुब्हानल्लाह क्या अच्छी सूरत का फ़रिश्ता आया है। यह फ़रिश्ता हमें अज़ाब नहीं करेगा। फिर दोज़ख़ी मालिक से पूछेंगेः यह ख़ूबसूरत फ़रिश्ता कौन है? मालिक कहेंगेः यह जिब्राईल अमीन हैं। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यही वही लाते थे। अब तुम्हारी ख़लासी के दिन आ गए हैं। दोज़ख़ी जिस वक़्त मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे नामी सुनेंगे तो पुकारेंगेः या मुहम्मदा। फिर सब रोते हुए कहेंगेः ऐ जिब्राईल, हमारा सलाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंचा दो और हमारे इस बुरे हाल से उन्हें आगाह करो कि या रसूलल्लाह! आप हमें भूल गए और हमें दोज़ख़ में छोड़ दिया। हम कई साल दोज़ख़ में जले। यह हाल सुनते ही जिब्राईल अलैहिस्सलाम बारगाहे इलाही में हाज़िर हो जाएंगे। अल्लाह तआला फ़रमाएगाः ऐ जिब्राईल! तू ने किस तरह मुहम्मद की उम्मत का हाल देखा? अर्ज़ करेंगेः यारब तू उन के हाल से बख़ूबी वाक़िफ़ है, वह तंग मकान में हैं। सारा बदन उन का आग का हो गया है। फिर पूछेगाः तुझ से उममते मुहम्मदिया ने कुछ सवाल भी किया? अर्ज़ करेंगेः हाँ ऐ रब! उम्मते मुहम्मदिया ने कहा है कि हमारा सलाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंचा दो और हमारे हाल की ख़बर देदो। फिर अल्लाह तआला हुक्म करेगाः जाओ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उम्मत के हाल की ख़बर दे दो। जिब्राईल अलैहिस्सलाम यह सुनते ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर होंगे। रिवायत है कि उस दिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नत के दरख़्त तूबा के तख़्त पर मोती के ख़ैमे में बैठे होंगे

और उस ख़ेमे के चार हज़ार दरवाज़े सुनहरे होंगे। फिर जिब्राईल अलैहिस्सलाम रोकर अर्ज़ करेंगे: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं आप की गुनहगार उम्मत को दोज़ख़ में जलता हुआ देख आया हूँ। कबीरा गुनाह करके मर गए थे इस लिए दोज़ख़ के अज़ाब में गिरफ़्तार हैं। आप को सब ने सलाम कहा है और आप का नाम लेकर फ़रियाद कर रहे हैं। हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बेइख़्तियार रोकर कहेंगे: लब्बैक या उम्मती, यानी ऐ मेरी उम्मत मैं हाज़िर हूँ। फिर हज़रत अर्शे मुअल्ला के नीचे तशरीफ़ लाएंगे और सारे पैग़म्बर और आप की उम्मत के मुत्तक़ी लोग पुश्ते मुबारक की तरफ़ खड़े होंगे। फिर अल्लाह तआला की इतनी हुम्दो सना बयान करेंगे कि ऐसी हुम्दो सना कभी न की होगी। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हुम्दो सना करते हुए सज्दे में गिर पड़ेंगे। कुछ कहते हैं कि सात दिन सज्दे में रहेंगे, कुछ कहते हैं कि चौदह दिन सज्दे में रहेंगे। फिर हक़ सुब्हानहु वतआला फ़रमाएगा: ऐ हबीब! सर उठाओ और हम से सवाल करो, जो मांगेगे क़ुबूल किया जाएगा। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोते हुए अर्ज़ करेंगे: इलाही मेरी उम्मत के लोग दोज़ख़ में जल गए हैं और अपनी सज़ा को पहुँच गए हैं। इलाही तू उन्हें दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत में दाख़िल फ़रमा। अल्लाह तआला फ़रमाएगा: मैंने तुम्हारी शफ़ाअत क़ुबूल फ़रमाई। अब जाओ और उनको मेरा सलाम पहुँचाओ और दोज़ख़ से उन सभों को निकाल लो जिन्हों ने सच्चे दिल से ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह कहा हो। फिर जनाबे रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैग़म्बरों और मुत्तक़ियों के साथ दोज़ख़ की तरफ़ जाएंगे। जिस वक़्त मालिक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरए अनवर को देखेंगे उस वक़्त तअज़ीम के लिए मिम्बर से नीचे उतर आएंगे। हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूछेंगे: ऐ मालिक! मेरी उम्मत का क्या हाल है? अर्ज़ करेंगे: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! बुरा हाल है, वह लोग तंग मकान में अज़ाब में मुब्तिला हैं। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मालिक से दरवाज़ा खुलवाएंगे। सारे दोज़ख़ी आप को देखकर चिल्लाएंगे: या रसूलल्लाह! आग ने हमारे बदन के गोश्त और हड्डियों को ख़ूब जलाया और कुछ लोग कहेंगे: हम ज़ानू तक जल गए। कोई पुकारेगा: या रसूलल्लाह! हमें दोज़ख़ ने इस क़दर जलाया कि हमारी तमाम हड्डियां आग की हो गईं। कोई पुकारेगा: या नबियल्लाह! हम सीने तक जल गए। कोई बोलेगा: हम सर से पावँ तक जल गए। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप हमें भूल गए। तब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब को

दोज़ख़ से निकालेंगे जिन का बदन कोयले की तरह काला होगा। फिर आप सब को लेजा कर एक दरख़्त के नीचे खड़ा कर देंगे। उस वक़्त दरख़्त की जड़ से नहरे हयात जारी होगी, उसमें सब को गुस्ल देंगे। जिस वक़्त वह लोग नहरे हयात से नहाकर बाहर निकलेंगे तो उनका बदन चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकता होगा लेकिन पेशानी पर लिखा होगा: हम जहन्नमी क़ौम हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने आज़ाद किया है। फिर सब जन्नत में दाख़िल होंगे। जन्नत के लोग उन्हें देखकर आपस में चर्चा करेंगे शायद अल्लाह तआला ने इन्हें दोज़ख़ से निकाला है क्योंकि इन की पेशानियों पर लिखा है कि हम जहन्नमी क़ौम हैं, जहन्नम से आज़ाद किये गए हैं। तो यह ख़िताब उन्हें बुरा मालूम होगा। अर्ज़ करेंगे: इलाही जिस तरह तूने हमें दोज़ख़ से आज़ाद किया है उसी तरह हमें इस ख़िताब से भी आज़ाद कर दे। अल्लाह तआला उस लिखे हुए को उन की पेशानी से दूर फ़रमाएगा, फिर कोई न कहेगा कि यह लोग दोज़ख़ से आए हैं। जिस वक़्त काफ़िर देखेंगे कि मुसलमानों की यह क़ौम दोज़ख़ से निकल कर जन्नत में गई तो सब बोल उठेंगे: ऐ काश कि हम भी ईमानदार मुस्लमान होते तो हम भी इसी तरह दोज़ख़ से निकल कर जन्नत में जाते और इस तरह हमेशा के लिए दोज़ख़ में न रहते। (नुज्हतुल मजालिस)

१२८) हज़रत इकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नती मर्द औरतें हमेशा ३५ साल के जवान रहेंगे। उन का क़द आदम अलैहिस्सलाम की तरह साठ हाथ का होगा। बिना दाढ़ी के होंगे। सब की आँखें सुरमगीं होंगी; हर एक के जिस्म पर सत्तर जोड़े होंगे, हर जोड़े का रंग अलग होगा और वह जोड़े ऐसे शफ़्फ़ाफ़ होंगे कि उन सब का रंग ऊपर से नज़र आएगा। रोज़ाना उन का हुस्नो जमाल बढ़ेगा, न कभी बूढ़े होंगे, न दुबले पतले कमज़ोर और न कभी उनके कपड़े मैले होंगे। (तफसीरे नईमी)

१२९) फुक़हाए किराम का कहना है कि नवमुस्लिम और पुराने मुसलमान ईमान में बराबर हैं, सब का हश्र एक साथ ही होगा। (तफ़सीरे नईमी)

१३०) हज़रत अबू सअलबा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: लोगो शरीअत के अहकाम लोगों तक पहुंचाते रहो। जब लोगों का यह हाल हो जाए कि बुख़्ल की पैरवी करने लगें, हर शख़्स अपनी राए को पसन्द करे, दुनिया की फ़िक्र में पड़ कर आख़िरत को भूल जाए तो तुम अपनी फ़िक्र करना, लोगों की फ़िक्र छोड़ देना। एक ज़माना ऐसा आ रहा है जबकि ईमान पर क़ायम रहना हाथ में आग लेने से भी ज़्यादा दुश्वार हो जाएगा। जो उस ज़माने में सब्र करे उसे पचास मोमिनों

का सवाब मिलेगा। किसी ने पूछा कि उस ज़माने के पचास का या आजकल के पचास का? फ़रमाया: आजकल के पचास का यानी पचास सहाबए किराम का। (तफ़सीरे नईमी)

१३१) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया था: ऐसा न हो कि क़ियामत के दिन दूसरे लोग ईमान साथ लाएं और तुम निरा नसब। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

१३२) मुफ़स्सिरीने किराम का क़ौल है कि क़ियामत में सूर तीन बार फूंका जाएगा। पहली बार में तमाम मख़लूक़ घबरा जाएगी, उन्हें अपनी मौत का यक़ीन हो जाएगा। दूसरी बार में तमाम ज़िन्दगी फ़ना हो जाएगी। तीसरी बार में तमाम चीज़ें पैदा की जाएगी। (तफ़सीरे इब्ने कसीर) मगर अक्सर मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि सूर दो बार फूंका जाएगा। पहली बार में पहले तो तमाम मख़लूक़ घबरा जाएगी फिर फ़ना हो जाएगी। दूसरी बार में ज़िन्दा होगी। सूर के दोनों बार फूंके जाने के बीच चालीस साल का फ़ासला होगा। (तफ़सीरे नईमी)

१३३) इन्सान के चार मक़ामात हैं: (१) आलमे अरवाह (२) दुनिया (३) बरज़ख़ और महशर और (४) जन्नत और दोज़ख़। इन चार ज़िन्दगियों में दूसरे नम्बर की ज़िन्दगी यानी दुनिया की ज़िन्दगी आमाल कमाने की है बाक़ी तीन ज़िन्दगियों में आमाल नहीं। (तफ़सीरे नईमी)

१३४) क़ियामत के दिन सारे इन्सान अपनी क़ब्रों से कफ़न में मलबूस उठेंगे, फिर नंगे पावँ नंगे बदन बे ख़तना मैदाने महशर यानी शाम की ज़मीन तक जाएंगे। मगर उस दिन हैबते इलाही का यह आलम होगा कि कोई किसी की तरफ़ न देख सकेगा। सब की नज़रें आसमान की तरफ़ होंगी गोया हैबते इलाही लोगों का पर्दा होगी मगर मोमिनों की यह उर्यानी यानी नंगा होना आर्ज़ी होगा। महशर में पहुँचने पर उनके जिस्मों पर क़ुदरती तौर पर लिबास आ जाएगा। काफ़िर लोग दोज़ख़ में कुछ तो नंगे होंगे और कुछ को आग का लिबास पहनाया जाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

१३५) इस्लामी शफ़ाअत में चार शर्तें हैं जिसके अलावा शफ़ाअत मानना कुफ़्र और बेदीनी है: (१) शफ़ीअ हाकिम का निरा मातहत न हो, न उसकी बराबर हो न उससे बड़ा। (२) शफ़ीअ हाकिम का अजनबी या दुश्मन न हो बल्कि हाकिम के दरबार में उसकी इज़्ज़त हो या मुहब्बत। (३) वह जुर्म जिस की माफ़ी की शफ़ाअत हो वह बख़्शिश के क़ाबिल हो। (४) शफ़ाअत क़ानून के मातहत न हो कि वह तो वकालत है बल्कि क़ानून के अलावा अफ़्वो करम की दरख़्वास्त के तौर पर हो। (तफ़सीरे नईमी)

१३६) काफ़िर के चार दुशमन हैं: माल, अहल, औलाद और दोस्त। यह सब चीज़ें उसे मरते ही छोड़ देती हैं। मोमिन के चार दोस्त हैं: कलिमए शहादत, नमाज़, रोज़ा और अल्लाह का ज़िक्र। यह सब चीज़ें मोमिन के साथ क़ब्र में और हश्र में रहती हैं और उसकी शफ़ाअत भी करेंगी। (तफ़सीरे नईमी)

१३७) सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि क़ियामत दो तरह की है: जिस्मानी और रूहानी। जिस्मानी क़ियामत तीन तरह की है: क़ियामते सुग़रा यानी छोटी क़ियामत, यह हर शख़्स की अपनी मौत है। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो मर गया उसकी क़ियामत तो आ गई। दूसरी क़यामते वुस्ता यानी सारे इन्सानों की मौत या आलम की फ़ना। यह सूर के पहली बार फूंके जाने पर होगी। क़ियामते कुबरा यानी बड़ी क़ियामत सारे मुर्दों का उठना और सज़ा व जज़ा के लिये अल्लाह तआला की बारगाह में पेश होना है। यह सूर के दूसरी बार फूंके जाने पर होगी। क़ियामते रूहानी किसी किसी को नसीब होती है। वह यह है कि इन्सानी नफ़्स फ़ना फ़िल्लाह हो कर बाक़ी बिल्लाह हो जाए। जिस्मानी क़ियामत में नेकी करने वालों को जन्नत मिलेगी मगर रूहानी क़ियामत में नेकी करने वालों को दुनिया ही में जन्नत वाला रब मिल जाता है, वह दुनिया में रहते हुए भी जन्नत में रहता है। (तफ़सीरे नईमी)

१३८) रब तबारक व तआला ने अपने फ़ज़्ल से उम्मते मुहम्मदिया को कुछ ख़ुसूसियात अता की हैं: (१) यह उम्मत सब से पिछली है ताकि अगली उम्मतों की तरह इसकी बदनामी और रुस्वाई न हो और इसके ऐब न खुलें। गुज़िश्ता उम्मतों के उयूब क़ुरआने करीम ने बयान किये जिससे वह क़ियामत तक के लिए बदनाम हो गईं। हमारे बाद कोई आसमानी किताब नहीं आएगी और यूँ हमारे ऐब छुपे रहेंगे। (२) ख़ुदा के फ़ज़्ल से यह उम्मत यहूद की तफ़रीत और ईसाइयों की इफ़रात से पाक है, इसके अक़ाइद और आमाल औसत हैं। (३) यह उम्मत सब से पिछली है ताकि सब की गवाही दे सके क्योंकि गवाही हमेशा वाक़ए के बाद होती है न कि पहले। (४) इन्शा अल्लाह इसमें हमेशा उलमा और औलिया रहेंगे। पिछली उम्मतों की तरह सब गुमराह न हो जाएंगे। (५) इनके जिस्म शरीअत से और इनके क़ल्ब तरीक़त और मआरिफ़त से मुनव्वर रहेंगे। (६) इनकी ज़बान हक़ का क़लम है, जिस चीज़ को यह अच्छा जानें वह अल्लाह के नज़्दीक भी अच्छी और जिसको बुरा कहें वह बुरी। (७) यह उम्मत सारे नबियों की गवाह और ज़ाहिर है कि गवाह मुद्दई को बड़ा प्यारा होता है। लिहाज़ा उम्मते मुहम्मदिया सारे पैग़म्बरों की मेहबूब उम्मत। (८) सब लोग मुसलमानों के हाजत मन्द हैं, मुसलमान किसी

क़ौम का मुहताज नहीं। इसी लिए दुनियावी हुकूमतें इस्लाम से क़वानीन लेती हैं और कुफ़्फ़ार क़ुरआन से फ़ायदे उठाते हैं। (९) इसी उम्मत के उलमा बनी इस्राईल के पैग़म्बरों की तरह दीन के मददगार हैं। उन्हीं में से मुफ़स्सिरीन, मुहद्दिसीन, फ़ुक़हा हुए और क़ियामत तक होते रहेंगे। (१०) इसी उम्मत में क़ियामत तक औलिया, ग़ौस, क़ुतुब और अब्दाल होते रहेंगे। (११) इसी उम्मत के नबी की सवानेह उमरियाँ बेशुमार लिखी गईं। क़ुरआने करीम की बेशुमार तफ़सीरें हर ज़बान में हुईं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते तय्यिबा का एक एक वाक़िआ हदीसी शक्ल में दुनिया के सामने मौजूद है। किसी नबी की उम्मत को यह ख़ूबियां मयस्सर नहीं हुईं। (१२) आख़िरत में भी यह उम्मत तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल व बेहतर होगी कि तमाम जन्नतियों की कुल एक सौ बीस सफ़ें होंगी जिनमें अस्सी सफ़ें इस उम्मत की और बक़िया सफ़ें दीगर उम्मतों की। (१३) उम्मते मुहम्मदिया के गुनाहों का हिसाब छुपवाँ होगा और नेकियों का हिसाब सबके सामने। (१४) उम्मते मुहम्मदिया के लिए हौज़े कौसर की नहर मैदाने महशर में आएगी। (१५) पहले उम्मते मुहम्मदिया ही जन्नत में दाख़िल होगी। (तफ़सीरे नईमी)

१३९) हज़रत ज़ैद शहीद इब्ने अली इब्ने हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम से नक़्ल है कि तीन तरह के खाने में तकल्लुफ़ का क़ियामत में हिसाब न होगा। (१ मेहमान के वास्ते, अगर्चे ख़ुद भी उसमें से खाए। (२) सेहरी और इफ़्तार के लिए, अगर्चे ख़ुद ही रोज़ादार हो। (३) बीमार के लिए, जब कि वह लज़ीज़ ग़िज़ा से रग़बत रखता हो। (तफ़सीरे नईमी)

१४०) हदीस शरीफ़ में है कि दज्जाल के ज़ुहूर का पहला दिन एक साल जितना लम्बा होगा, दूसरा एक माह जितना। सहाबए किराम ने पूछाः उस दिन नमाज़ों का क्या हुक्म है? फ़रमायाः हिसाब लगा कर पढ़ना। चूंकि वह दिन एक साल का है लिहाज़ा रोज़े भी रखे जाएंगे क्योंकि नमाज़ की तरह रोज़े भी फ़र्ज़ हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१४१) हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने फ़रमायाः दुनिया में लोगों के सरदार सख़ी होते हैं, आख़िरत में लोगों के सरदार मुत्तक़ी होंगे। (तफ़सीरे नईमी)

१४२) उम्मते मुहम्मदिया के मशहूर मर्तबे तीन हैंः अव्वल सहाबा, दूसरे ताबिईन, तीसरे तबअ ताबिईन। सही बुख़ारी की एक हदीस से चौथा मर्तबा भी मालूम होता है जिस को इत्तिबाए तबअ कहते हैं। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः फिर झूट फैल जाएगा। मतलब यह कि इन तीन

या चार मर्तबों के बाद जिस तरह शुरू ज़माने में दीन, सिद्क़ और यक़ीन में जो रब्त व ज़ब्त था इसके बाद किज़्ब, झूट और इफ़्तिरा आम हो जाएगा। (नुज़्हतुल क़ारी)

१४३) सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में है कि जन्नत में जो चश्मा जारी होता है और जिसका नाम सलसबील है उससे दो नहरें फूटती हैं एक का नाम कौसर है और दुसरी का नाम नहरे रहमत है। यह वह नहरे रहमत है कि जब गुनहगार जुर्म की सज़ा भुगतने के बाद या शफ़ाअत से दोज़ख़ में से जले भुने सियाह निकलेंगे, फिर वह इस नहर में नहाएंगे और वह उसी वक़्त तारो ताज़ा हो जाएंगे। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१४४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुर्तज़ा अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम से फ़रमायाः ऐ अली, तुम नहीं जानते कि मैं ही वह पहला शख़्स होऊंगा जो क़ियामत के दिन ख़ुत्बा देगा। मैं अर्श की दाएं तरफ़ उसके साए में खड़ा होऊंगा और मुझे जन्नती हुल्ला पहनाया जाएगा। जान लो कि मेरी उम्मत सबसे पहली उम्मत होगी जिसका क़ियामत के दिन हिसाब किया जाएगा। इसके बाद मैं तुम्हें बशारत देता हूँ कि तुम वह पहले शख़्स हो कि तुम्हें बुलाया जाएगा और तुम्हें लोगों का झन्डा सिपुर्द किया जाएगा जिसका नाम लीवाउल हम्द है क्योंकि आदम और तमाम मख़लूक़ किसी साए की तलाश में होगी वहाँ मेरे झन्डे का साया होगा और मेरे लिवाए मुबारक की दराज़ी १६ साल की मुसाफ़त के बराबर होगी। इसका सिनान याक़ूते अहमर का और इसका क़ब्ज़ा सफ़ेद चांदी का और इसका डन्डा सब्ज़ मरवारीद का होगा। इसकी ज़ुल्फ़ें तीन नूर की होंगी। एक ज़ुल्फ़ मश्रिक़ में, दूसरी मग़रिब में और तीसरी दुनिया के बीच होगी और इनमें तीन सतरें तहरीर होंगी, एक पर बिस्मिल्लाह, दूसरे पर अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन और तीसरे पर ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह होगा। और हर सतर की दराज़ी हज़ार साल के बराबर होगी और इस की पहनाई भी हज़ार साल के बराबर। तो ऐ अली, इसे मैं तुम्हारे सिपुर्द करूंगा और हसन तुम्हारे दाएं और हुसैन तुम्हारे बाएं तरफ़ खड़े होंगे यहाँ तक कि तुम मेरे और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बीच अर्श के साए में खड़े होगे और तुम्हें जन्नत का जोड़ा पहनाया जाएगा। (तबरानी)

१४५) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से किसी ने मक़ामे मेहमूद के बारे में पूछा तो फ़रमायाः वह मक़ामे शफ़ाअत है और अर्श की दाएं तरफ़ उस जगह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खड़ा होना है, जहां आप

के सिवा कोई न खड़ा होगा। (तफ़सीरे नईमी)

१४६) हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जहन्नम की पुश्त पर सिरात बिछाई जाएगी और इस पर से गुज़रने वालों में सब से पहले मैं और मेरी उम्मत होगी। फुज़ैल बिन अयाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में है कि सिरात की मुसाफ़त पंद्रह हज़ार साल के बराबर है, पांच हज़ार चढ़ाई में, पांच हज़ार उतार में और पांच हज़ार बराबर व हमवार। (तफ़सीरे नईमी)

१४७) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस है कि जो बहुत सदक़ा देगा वह सिरात पर से गुज़र जाएगा। एक और हदीस में है कि जिस का घर मस्जिद है हक़ तआला उसका ज़ामिन है वह उसे पुले सिरात पर से रहमत के साथ गुज़ार देगा। (तफ़सीरे नईमी)

१४८) हदीस शरीफ़ में है कि जन्नत अर्श के दाएं तरफ़ रखी जाएगी और जहन्नम बाएं तरफ़। इसके बाद मीज़ान लाई जाएगी और नेकियों के पलड़े को जन्नत के मुक़ाबिल और बदियों के पलड़े को जहन्नम के मुक़ाबिल रखा जाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

१४६) क़ुरतबी फ़रमाते हैं कि सिरात पर से कोई बन्दा उस वक़्त तक न गुज़र पाएगा जब तक उस से सात मरहलों में सवाल न पूछ लिए जाएं। पहले मरहले पर कलिमए शहादत ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह पर ईमान के बारे में सवाल किया जाएगा। अगर बन्दा इख़्लास के साथ ईमान लाया है तो गुज़र जाएगा। इसके बाद दूसरे मरहले पर नमाज़ के बारे में सवाल होगा। अगर बन्दे ने एहतिमाम के साथ अदा की है तो गुज़र जाएगा। तीसरे मरहले में माहे रमज़ान के रोज़े से, चौथे मरहले में ज़कात से, पाँचवें मरहले में हज व उमरे से, छटे मरहले में गुस्ल और वुज़ू यानी तहारत से और सातवें मरहले में लोगों पर ज़ुल्म और ज़्यादती पर यानी बन्दों के हुक़ूक़ के बारे में सवाल किया जाएगा। यह मरहला सबसे ज़्यादा दुशवार और सख़्त है। अहले इल्म फ़रमाते हैं कि बिल्फ़र्ज़ अगर उसके पास सत्तर नबियों के बराबर अज्र और सवाब है और आधे दाने के बराबर बन्दों का हक़ बाक़ी है तो वह उस वक़्त तक न गुज़रेगा जब तक कि उस को अदा करके उस बन्दे को राज़ी न कर ले। (तफ़सीरे नईमी)

१५०) हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि क़ियामत में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम साहिबे मीज़ान होंगे और वही उस दिन आमाल का वज़न करेंगे। (तफ़सीरे नईमी)

१५१) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ईमान मदीने

में सिमट कर इस तरह आ जाएगा जैसे कोई साँप अपने बिल में सिमट कर बैठता है। (तफ़सीरे नईमी)

१५२) क़ियामत का दिन पचास हज़ार बरस का है। इस अर्से में बहुत काम होंगे। पहले पहल हैरानी, फिर परेशानी, फिर शफ़ीअ की तलाश, फिर नामए आमाल की तक़सीम, फिर मुक़द्दमात की तहक़ीक़ और गवाहियाँ वग़ैरा। सबसे आख़िर में फ़ैसले। फिर हर एक को उसके ठिकाने पर पहुंचाना। (तफ़सीरे नईमी)

१५३) क़ियामत में सवाल जवाब अवाम से उनके आमाल के बारे में होंगे और हज़राते अम्बियाए किराम से उनकी उम्मत के बारे में। कुछ उलमा फ़रमाते हैं कि क़ब्र का हिसाब हज़राते अम्बियाए किराम से भी होगा मगर उनका अपना नहीं बल्कि उनकी उम्मत का कि उन्हों ने आप से क्या मामला किया। (तफ़सीरे नईमी)

१५४) मेहशर के दिन हिसाब दो तरह का होगाः एक हिसाबे यसीर यानी आमाल दिखा कर बख़्श देना, दूसरा हिसाबे मुनाक़िशा कि आमाल दिखा कर यह पूछना कि तू ने यह गुनाह क्यों किये थे। जिस से यह सवाल हो गया वह हलाक हो जाएगा, जिस से हिसाबे यसीर हुआ वह निजात पा जाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

१५५) सय्यिदुना उबइ बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़ियामत के क़रीब आसमानी और ज़मीनी अज़ाब भी नाज़िल होंगे, सूरतों की तबदीली, ज़मीन में धंसना होगा। (ख़ाज़िन)

१५६) उलमा फ़रमाते हैं हर तीस साल में तूफ़ाने नूह का ज़हूर कहीं न कहीं होता रहेगा मगर हल्का। (रूहुल बयान)

१५७) शफ़ाअत तीन तरह की होगी। दर्जे ऊंचे करने के लिए, गुनाहों की माफ़ी के लिए और मैदाने महशर से निजात दिलाने के लिए। पहली शफ़ाअत बेगुनाहों के लिए है, दूसरी शफ़ाअत सिर्फ़ गुनहगार मुसलमानों के लिए और तीसरी शफ़ाअत का फ़ायदा काफ़िर भी हासिल कर लेंगे। हदीस में है कि सुन्नत का छोड़ने वाला शफ़ाअत से महरूम है, इससे पहली शफ़ाअत मुराद है। दूसरी रिवायत में है कि मेरी शफ़ाअत कबीरा गुनाह वालों के लिए भी होगी, इससे दूसरी शफ़ाअत मुराद है। (शामी, किताबुस्सलात)

१५८) कुछ गुनहगारों को तो बिना अज़ाब शफ़ाअत पहुँच जाएगी, कुछ के अज़ाब की मुद्दत में कमी हो जाएगी और कुछ गुनहगार अपनी पूरी सज़ा भुगत कर शफ़ाअत पाएंगे, कुछ जन्नत में पहुंच कर शफ़ाअत की बदौलत ऊंचे दर्जे पाएंगे। (तफ़सीरे नईमी)

१५९) अबू दाऊद ने हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी उम्मत मरहूमा है उस पर आख़िरत का अज़ाब नहीं। उनका अज़ाब दुनिया ही में है, फ़ितने, ज़लज़ले, आपस के कत्ल, ख़ून वग़ैरा की सूरत में। (तफ़सीरे नईमी)

१६०) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरे कुछ उम्मती एक टोले की शफ़ाअत करेंगे, कुछ पूरी जमाअतों की। (तिर्मिज़ी)

१६१) हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुझ से मेरे रब ने वादा कर लिया है कि मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार शख़्स बिना हिसाब किताब जन्नत में जाएंगे जिनमें से हर एक के साथ सत्तर सत्तर हज़ार उसके तुफ़ैली होंगे। (तिर्मिज़ी)

१६२) जनाब रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बराबर मेरी उम्मत का हाल सीधा सच्चा दुरुस्त रहेगी यहाँ तक कि बनू उमैय्या में से पहला वह शख़्स होगा जो उम्मत के कामों में रुकावट डालेगा, उसका नाम यज़ीद होगा। अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात सच हो कर रही। (तफ़सीरे नईमी)

१६३) क़ियामत में ग़ुलामों और नौकरों को लाया जाएगा और कहा जाएगा कि हमारी इबादत से तुम्हें किस चीज़ ने रोका था। वह कहेंगेः इलाही तूने हमें किसी का ताबेदार बयाना था इस लिए हम से तेरी इबादत न हो सकी। तब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को लाया जाएगा और कहा जाएगाः यूसुफ भी ताबेदार थे, इनसे तो इबादत हुई, तुम से क्यों न हुई? उनसे कुछ जवाब न बन पड़ेगा। फिर मालदारों को लाया जाएगा और कहा जाएगाः तुमने हमारी इबादत क्यों न की? वह कहेंगेः इलाही तूने हमें कसरत से माल दिया था। माल के धंदों और इसके घमन्ड में हम से तेरी इबादत न हो सकी। हुक्म होगा सुलैमान अलैहिस्सलाम को लाया जाए। फिर कहा जाएगा कि यह भी तो मालदार थे इनसे इबादत हुई तुमसे क्यों न हुई। कुछ जवाब न बन पड़ेगा। फिर बीमारों को लाया जाएगा और कहा जाएगा तुमने हमारी इबादत क्यों न की? वो कहेंगेः इलाही तूने हमें बीमारी में मुब्तिला किया था इस लिए हमसे तेरी इबादत न हो सकी। तब अय्यूब अलैहिस्सलाम को बुलाया जाएगा और कहा जाएगा कि हमने इन्हें इतनी शदीद बीमारी में मुब्तिला किया था इसके बावजूद इन्हों ने हमारी इबादत की, तुमसे क्यों न हुई। उन से कोई जवाब न बन पड़ेगा। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१६४) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कियामत के रोज़ सबसे पहले शहीद का हिसाब होगा। अल्लाह तआला उसके सामने अपनी दुनियवी नेअमतें ज़ाहिर करके फ़रमाएगा कि तूने इन नेअमतों में किस तरह अमल किया। वह अर्ज़ करेगा कि मैं तेरी राह में जिहाद करके शहीद हो गया। इरशाद होगा: तू झूट बोलता है। बल्कि तू ने यह इस लिये किया कि लोग तुझे शुजाअ और बहादुर ख़्याल करें और तेरे ख़्याल के मुताबिक़ यह बात हो गई। फिर उस को सर के बल दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा। अब उस शख़्स का हिसाब होगा जिस ने दीन का इल्म हासिल करके लोगों को तअलीम किया होगा। उसे हिसाब के लिये बुलाया जाएगा। अल्लाह तआला उस पर अपनी नेअमतें ज़ाहिर फ़रमाएगा। वह उन नेअमतों को पहचान लेगा। उस वक़्त इरशाद होगा: तू ने इन नेअमतों में किस तरह तसर्रुफ़ किया? वह अर्ज़ करेगा कि मैं ने इल्म हासिल करके दूसरों को तअलीम किया। तेरी रज़ा मन्दी के लिये कुरआन की तअलीम दी। फ़रमान होगा: तू भी झूट बोलता है। तू ने यह इस लिये किया कि लोग तुझे आलिम कहें और क़ारी ख़्याल करें। फिर उसे सर के बल दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा। तीसरे उस शख़्स का हिसाब होगा जिसे अल्लाह तआला ने तवंगरी अता फ़रमाई और हर तरह के माल से नवाज़ा। उस के सामने उस का सारा माल लाया जाएगा जिसे वह पहचान जाएगा। इरशाद होगा: तू ने इस में किस तरह तसर्रुफ़ किया? वह अर्ज़ करेगा: जो बात मैं ने तेरी रज़ामन्दी की देखी उस में ख़र्च किया और किसी को बाक़ी न छोड़ा। फ़रमान होगा: तू भी झूटा है। तू ने यह इस लिये किया था कि लोग तुझे सख़ी और बख़्शिश करने वाला कहें और लोगों ने कहा भी। लिहाज़ा उसे भी सर के बल दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)
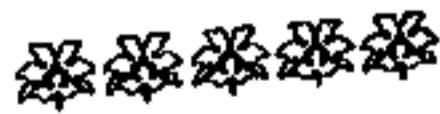
नवाँ बाब

आसमानी किताबें, ज़िक्रे इलाही और दुआ

१) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को ज़बूर १८ या १२ रमज़ान को अल्लाह तआला ने अता फ़रमाई। ज़बूर के मानी पारे और टुकड़े के हैं। यह किताब दर अस्ल तौरात की तकमील के लिये नाज़िल हुई थी लिहाज़ा उसी का एक टुकड़ा या एक हिस्सा शुमार होती थी। इस में हम्दो सना, इन्सानी अब्दियत व इज्ज़ और पन्दो नसाएह के मज़ामीन और बशारतें और पेशगोइयाँ भी थीं। (अतलसुल कुरआन और तफ़सीरे नईमी)

२) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जुब्बे हुज्न से अल्लाह की पनाह मांगो। लोगों ने पूछा: या रसूलल्लाह! यह जुब्बे हुज्न क्या चीज़ है? फ़रमाया: जहन्नम का एक तबक़ा है जिस से खुद दोज़ख़ हर रोज़ सौ बार पनाह मांगती है। पूछा गया: इस में कौन जाएगा? फ़रमाया: रियाकारी के साथ कुरआन पढ़ने वाले। (तिर्मिज़ी)

३) हज़रत ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम कहा करते थे: ज़िक्रे इलाही से ख़ाली हो कर ज़्यादा बातें न बनाओ वरना तुम्हारे दिल सख़्त हो जाएंगे। सख़्त दिल अल्लाह तआला से दूर होता है, लेकिन तुम इस हक़ीक़त को समझते नहीं और लोगों के गुनाहों को इस तरह न देखो गोया कि तुम रब हो बल्कि अपने गुनाहों पर इस तरह नज़र रखो जैसे तुम बन्दे हो। इन्सान आज़माइशों में भी पड़ता है और आफ़ियत भी हासिल करता है लिहाज़ा आज़माइश वालों पर रहम करो और आफ़ियत पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो। (रज़ीन)

४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स जन्नत के बाग़ों से सैर होना चाहता है वह अल्लाह को बहुत याद करे। (अल हदीस)

५) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: एक आदमी के लिये दस्तरख़्वान बिछाया जाता है फिर जब तक उस की मग़फ़िरत नहीं हो जाती वह उठाया नहीं जाता। सहाबा ने अर्ज़ किया:या रसूलल्लाह! यह नेअमत किस तरह हासिल हो सकती है? फ़रमाया: इस तरह कि जब दस्तरख़्वान बिछे तो बिस्मिल्लाह कहे और जब उठे तो अल्हम्दु लिल्लाह कहे। (तिर्मिज़ी)

६) एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ानए कअबा में तशरीफ़ फ़रमा थे। किसी ने कहा: फ़ुलाँ आदमी का नुक़सान हो गया है। समुन्द्र की तुग़ियानी ने उस के माल को ज़ाया कर दिया है। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जंगल हो या समुन्द्र किसी जगह भी माल ज़ाया

होता है तो वह ज़कात न अदा करने की सूरत में होता है। अपने माल की ज़कात अदा करके माल की हिफ़ाज़त किया करो। अपने बीमारों की बीमारी सदके से दूर करो और आफ़तों को दुआओं से दूर किया करो क्योंकि दुआ उस बला को भी ज़ाइल कर देती है जो नाज़िल हो गई और उस आफ़त को भी रोक देती है जो अभी नाज़िल नहीं हुई। (मिश्कात शरीफ़)

७) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो अम्र क़ाबिले एहतिमाम खुदा के ज़िक्र से शुरू न किया जाए वह बे बरकत होता है। (इब्ने माजा, अबू दाऊद)

८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने कुछ फ़रिश्तों को सोने के क़लम और चाँदी के काग़ज़ दे रखे हैं। यह सिर्फ़ उस दुरूद के लिखने पर मुक़र्रर हैं जो मुझ पर और मेरे एहले बैत पर भेजा जाए। (तफ़सीरे नईमी)

९) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जो कोई मेरे वली से अदावत करे तो उस को मेरी तरफ़ से एलाने जंग है। मेरा बन्दा मेरा तक़र्रुब किसी और अमल से जो मुझे पसन्द हो इतना हासिल नहीं करता जितना कि उस अमल से जो मैं ने उस पर फ़र्ज़ किया। मेरा बन्दा नवाफ़िल के ज़रिये से मेरे क़रीब होता रहता है यहाँ तक कि मैं उस से मुहब्बत करने लगता हूँ। जब मैं उस से मुहब्बत करता हूँ तो उस का कान हो जाता हूँ जिस से वह सुनता है और उस की आँख बन जाता हूँ जिस से वह देखता है और उस का हाथ बन जाता हूँ जिस से वह पकड़ता है और उस का पाँव बन जाता हूँ जिस से वह चलता है। अब अगर वह मुझ से सवाल करेगा तो मैं उसे दूंगा और अगर मेरी पनाह में आना चाहेगा तो मैं अपनी पनाह में ले लूंगा और मुझे किसी काम के करने में इतना तरद्दुद नहीं होता जितना कि मोमिन की रूह कब्ज़ करने में कि उसे मौत पसन्द नहीं होती हालांकि मैं उस की नापसन्दीदगी को नापसन्द करता हूँ। (बुख़ारी शरीफ़, जिः २, रियाजुस्सालिहीन)

१०) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत उस्मान इब्ने अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बिस्मिल्लाह के बारे में पूछा। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः यह अल्लाह तआला के नामों में एक नाम है और यह नाम अल्लाह तआला के इस्मे आज़म से इस क़द्र क़रीब है जैसे आँख की सफ़ेदी और सियाही में कुर्ब है। (इब्ने हातिम व इब्ने मरदूया)

११) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम को उन की वालिदा ने मुअल्लिम के सिपुर्द किया। मुअल्लिम ने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से कहाः लिखोः बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने पूछाः बिस्मिल्लाह क्या है? मुअल्लिम ने कहाः मुझे इल्म नहीं। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने कहाः बा से मुराद बहाए इलाही है, सीन से सनाऐ इलाही और मीम से ममलिकते इलाही यानी सब का मअबूद मालिक है। (इब्ने जरीर व इब्ने मरदूया)

१२) हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः मुझ पर ऐसी आयत नाज़िल हुई है जो सिवाए सुलैमान अलैहिस्सलाम के किसी पैग़म्बर पर नाज़िल नहीं हुई और वह बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम है। (इब्ने माजा)

१३) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि अल्लाह तआला ने अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों को पैदा फ़रमाया और उन्हें अर्श को उठाने का हुक्म दिया मगर वह उठा न सके। अल्लाह तआला ने हर फ़रिश्ते के साथ सात आसमानों के फ़रिश्तों के बराबर फ़रिश्ते पैदा किये फिर उन्हें अर्श उठाने का हुक्म दिया मगर वह न उठा सके। फिर अल्लाह तआला ने हर फ़रिश्ते के साथ सातों आसमानों और सातों ज़मीनों के फ़रिश्तों के बराबर फ़रिश्ते पैदा किये और उन्हें अर्श उठाने का हुक्म दिया मगर वह भी न उठा सके। तब अल्लाह तआला ने फ़रमायाः ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह कहो। जब उन्हों ने यह कहा तो अर्श उठा लिया मगर उन के क़दम सातवीं ज़मीन में हवा पर जम गए। जब उन्हों ने मेहसूस किया कि हमारे क़दम हवा पर हैं और नीचे कोई ठोस चीज़ मौजूद नहीं है तो उन्हों ने अर्शे इलाही को मज़बूती से थाम लिया और ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह पढ़ने में महव हो गए ताकि वह इन्तिहाई पस्तियों पर से गिरने से मेहफ़ूज़ रहें। अब वह अर्श को उठाए हुए हैं और अर्शे इलाही उन्हें थामे हुए है बल्कि इन तमाम को क़ुदरते इलाही संभाले हुए है। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब)

१४) हज़रत अबुल ख़ैर इस्हाक़ अरावी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि जब अहदे फ़ारूक़ी में मुसलमानों ने फ़ारस पर जिहाद किया तो कर्ख़ शहर के क़रीब फ़ारसी फ़ौज का जनरल अज़ूमेहर अस्सी हाथियों की फ़ौज लेकर मुक़ाबले पर आया। इन ख़ूँख़्वार हाथियों के मुनज़्ज़म परे देख कर क़रीब था कि मुसलमानों के घोड़े और लशकर की तमाम सफ़ें मुन्तशिर हो

जाएं। मुसलमानों के अमीरे लशकर मुहम्मद बिन क़ासिम परेशान हुए। अलग अलग तदबीरें कीं मगर कामयाबी न हुई। आख़िर में चन्द बार आवाज़ से पढ़ाः ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने इस कलिमे को मुसलमानों के लिये एक किला बना दिया कि हाथी जो मुसलमानों पर चढ़े चले आ रहे थे यकायक रुक गए और अल्लाह तआला ने उन पर सख़्त गर्मी और प्यास मुसल्लत कर दी जिस की वजह से परेशान हो कर वह पानी की तरफ़ दौड़ने लगे। फ़ीलबानों ने हर तरह से रोकना चाहा मगर वह उन के क़ाबू से बाहर थे। उस वक़्त इस्लामी लशकर ने आगे बढ़ कर हमला किया और फ़त्ह हासिल की। (मुकाशिफ़तुल कुलूब)

१५) हज़रत हबीब इब्ने मुस्लिम रज़ियल्लाहु अन्हु जब किसी दुशमन के मुक़ाबले पर जाते तो कलिमा ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह पढ़ना बहुत पसन्द करते थे। एक बार उन्हों ने एक किले का घेराव करना चाहा और यह कलिमा शरीफ़ पढ़ा तो रूमी क़िला छोड़ कर भाग गए फिर मुसलमानों ने इस का विर्द किया तो क़िले की दीवारें शक़ (टूट) हो गई और मुसलमान फ़ौज अन्दर दाख़िल हो गई। (अलफ़र्जे बअदल बिशारह लेखक हज़रत इमाम अबू बक्र इब्ने अबिद दुनिया)

१६) रिवायत है कि जो शख़्स सुब्ह व शाम सात बार हसबियल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवा अलैहि तवक्कल्तु व हुवा रब्बुल अर्शिल अज़ीम पढ़ता है तो अल्लाह तआला उस के सारे इरादों को पूरा कर देता है। एक रिवायत में है कि उस के दुनिया और आख़िरत के तमाम काम पूरे हो जाते हैं। (मुकाशिफ़तुल कुलूब)

१७) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तबारक व तआला के कुछ बलन्द मर्तबा फ़रिश्ते हैं जो ज़मीन पर चलते फिरते ज़िक्र की मजलिसें तलाश करते हैं। फिर जब कोई मजलिस या ज़िक्र की मेहफ़िल पा लेते हैं तो उन के साथ बैठ जाते हैं और एक दूसरे को अपने परों से ढाँप लेते हैं यहाँ तक कि आसमाने दुनिया तक पहुंच जाते हैं। जब मजलिस ख़त्म हो जाती है तो वह आसमान की तरफ़ चले जाते हैं। अल्लाह तआला उन से पूछता हैः तुम लोग कहाँ से आ रहे हो? तो वह जवाब देते हैंः बारी तआला, हम तेरे ऐसे बन्दों के पास से आ रहे हैं जो तेरी तस्बीहो तहमीद करते हैं, तकबीरें पढ़ते हैं और ला इलाहा इल्लल्लाह कहते हैं और तुझ से सवाल करते हैं। रब तआला पूछता हैः वह मुझ से क्या सवाल करते हैं? मलायका कहते हैंः तुझ से तेरी जन्नत का सवाल करते हैं। अल्लाह फ़रमाता हैः क्या उन्हों ने मेरी जन्नत को देखा

है? वह जवाब देते हैं: नहीं ऐ रब! अल्लाह तआला पूछता है: वह किस चीज़ से पनाह मांगते हैं? मलायका जवाब देते हैं: तेरी दोज़ख़ से। अल्लाह तआला पूछता है: क्या उन्हों ने मेरी दोज़ख़ को देखा है? वह जवाब देते हैं: नहीं ऐ मअबूद! अल्लाह तआला पूछता है: फिर उन का हाल क्या होगा अगर वह मेरी आग को देखें? वह जवाब देते हैं: वह तुझ से इस्तिग़फ़ार करते हैं। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह फ़रमाता है: मैं ने उन्हें बख़्श दिया और उन के सवालों को पूरा कर दिया और जिस चीज़े से पनाह मांगते हैं उस से उन्हें पनाह दे दी। मलायका कहते हैं: हमारे रब! इन में एक ख़ताकार आदमी भी था जो राह से गुज़र रहा था कि इन के साथ बैठ गया। अल्लाह फ़रमाता है: उसे भी बख़्श दिया। यह लोग वह हैं जिन का हमनशीन नाकाम नहीं होता। (मुस्लिम शरीफ़)

१८) इमाम शाफ़ई और इमाम अब्दुर रज़्ज़ाक़ वग़ैरा ने सय्यिदुना अलीये मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम से रिवायत की है कि मजूस पर एक आसमानी किताब नाज़िल हुई थी। उन के एक बादशाह ने शराब पीकर अपनी बहन के साथ ज़िना कर लिया। जब सुब्ह हुई तो लालची लोगों को बुला कर ख़ूब माल दिया और कहा: हज़रत आदम अपने बेटों का निकाह अपनी बेटियों से करते थे अगर मैं ने ऐसा कर लिया तो क्या गुनाह किया। उन ख़ुशामदियों ने इसे तसलीम कर लिया। उस की नहूसत की वजह से वह किताब उठा ली गई और उन के ज़हनों से महव हो गई। (नुज़्हतुल क़ारी)

१९) कौन सा ज़िक्र अफ़ज़ल है इस में अलग अलग रिवायतें हैं। बाज़ में है कि अफ़ज़ल ज़िक्र कलिमए तय्यिबा है कि इस से दिल की सफ़ाई है। बाज़ में है कि तिलावते क़ुरआन कि इस में एक हर्फ़ पर दस नेकियां हैं। बाज़ में है कि अफ़ज़ल ज़िक्र तौबा व इस्तिग़फ़ार है कि इस में बलाओं से निजात और रिज़्क़ में बरकत है। बाज़ में है कि अफ़ज़ल ज़िक्र दुरूद शरीफ़ है और बाज़ में है कि अफ़ज़ल ज़िक्र यह है: सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अज़ीम कि इस से क़ियामत में मीज़ान भर जाएगी। (बुख़ारी शरीफ़)

२०) मुसीबत के वक़्त इन्ना लिल्लाह ज़रूर पढ़नी चाहिये। हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चराग़ गुल होने, जूते का तस्मा टूट जाने और हाथ में फाँस लग जाने पर भी इन्ना लिल्लाह पढ़ते थे और फ़रमाते थे कि यह भी मुसीबत है। सहाबए किराम ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर यह तो मामूली मुसीबतें हैं। फ़रमाया कभी मामूली बात भी बड़ी हो जाती है। (तफ़सीरे अज़ीज़ी, दुर्रे मन्सूर)

२१) हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब पुरानी मुसीबत याद आए तब भी इन्ना लिल्लाह पढ़ने से सब्र का सवाब पाएगी। (अहमद व बेहक़ी)

२२) जिस में चार बातें हों उस का घर जन्नत में है: एक यह कि हर काम में रब से इल्तिजा करे, दूसरे यह कि मुसीबत में इन्ना लिल्लाह पढ़े, तीसरे यह कि नेअमत पर अल्हम्दु लिल्लाह पढ़े, चौथे यह कि गुनाह पर अस्तग़फ़िरुल्लाह पढ़े। (बेहक़ी)

२३) मशहूर व मअरूफ़ दुरूदे ताज हज़रत ख़्वाजा सय्यिद अबुल हसन शाज़ली रहमतुल्लाहि अलैहि ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जनाब में ज़ियारत के वक़्त पेश किया था।

२४) हदीस शरीफ़ में है कि मोमिन के साथ पांच फ़रिश्ते रहते हैं: एक दाएं जो नेकियाँ लिखता है, एक बाएं जो बुराइयाँ लिखता है, एक सामने जो भलाइयों की तलक़ीन करता है, एक पीठ पीछे जो मकरूहात को दफ़ा करता है, एक पेशानी के पास जो दुरूद व सलाम लिख कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश करता है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

२५) हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह पढ़ता है उस के नामए आमाल में से चार हज़ार गुनाह साक़ित हो जाते हैं। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

२६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जो जमाअत किसी मजलिस से मुझ पर दुरूद पढ़े बिना उठ खड़ी हुई वह गोया किसी मुर्दार जानवर की सड़ी हुई लाश के पास से उठी है। (नुज़्हतुल क़ारी)

२७) इब्राहीम नख़ई एक फ़क़ीह के शागिर्द थे। लोगों ने उन के मरने के बाद ख़्वाब में उन्हें देखा कि मजूसियों की टोपी पहन रखी है। लोगों ने पूछा तो फ़क़ीह ने जवाब दिया कि जब मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे मुबारक आता तो मैं दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ता था इस की नहूसत से मअरिफ़त और ईमान सलब (छीन) कर लिया गया। (सब्ए सनाबिल शरीफ़, मीर अब्दुल वाहिद बलग्रामी रहमतुल्लाहि अलैहि)

२८) सल्साईल एक फ़रिश्ता है जिस के तीन बाज़ू हैं एक मश्रिक़ में, एक मग़रिब में और एक रौज़ए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर। वह इस लिये कि कोई बन्दा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है तो वह फ़रिश्ता उस का और उस के बाप का नाम लेकर अर्ज़ करता है: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! फ़ुलाँ इब्ने फ़ुलाँ ने आप पर दुरूद भेजा है। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम फ़रमाते हैं कि इस दुरूद को नूर की रौशनाई से नूर के काग़ज़ पर लिखो और हमें पेश करो। कियामत में हम इस कागज़ को मीज़ान में रखेंगे ताकि वह जन्नती हो जाए। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

२९) जो कोई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ए पाक पर खड़े होकर एक बारः इन्नल्लाहा व मलाइकतहू युसल्लूना अलन नबीय्य, या अय्युहल्लज़ीना आमनू सल्लू अलैहि वसल्लिमू तस्लीमा पढ़े और सत्तर बारः सल्लल्लाहु अलैका या सय्यिदुना मुहम्मद कहे तो फ़रिश्ता जवाब देता हैः सल्लल्लाहु अलैका या फुलाँ और यह भी कहता है कि अब तेरी कोई हाजत नहीं रुकेगी। (तफ़सीरे नईमी)

३०) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सहीफ़े रमज़ानुल मुबारक की पहली या तीन तारीख़ को अता हुए। (तफ़सीरे नईमी)

३१) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को तौरात ६ रमज़ान को अता हुई थी। (तफ़सीरे नईमी)

३२) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को इन्जीले मुक़द्दस १२ या १३ रमज़ान को दी गई। (तफ़सीरे नईमी)

३३) तौरात शरीफ़ में एक हज़ार सूरतें थीं और हर सूरत में एक हज़ार आयतें। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि इस किताब को कौन पढ़ सकेगा और कौन हिफ़्ज़ कर सकेगा। अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि मैं इस से आला शान वाली किताब नबीये आख़िरुज़्ज़माँ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारूंगा लेकिन उन की उम्मत के बच्चों तक को याद होगी। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

३४) रब तआला ने सात चीज़ों को करीम फ़रमाया हैः अपनी ज़ात को, क़ुरआन को, मूसा अलैहिस्सलाम को, नेक आमाल के सवाब हो, अर्श को, जिब्रईल अलैहिस्सलाम को और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के उस ख़त को जो बिल्क़ीस के पास गया था। (तफ़सीरे नईमी)

३५) तौरात शरीफ़ में हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुबारक हुलिया दर्ज था कि नबीये आख़िरुज़्ज़माँ ख़ूबसूरत घुंघरियाले बालों वाले, सुरमगीं आँखों वाले, बीच के क़द वाले हैं। यहूदियों ने मिटा कर यूं लिख दियाः वह बहुत लम्बे क़द वाले हैं, आँखें कन्जी और नीली और बाल उलझे हुए हैं। (तफ़सीरे नईमी)

३६) ज़बूर का मतलब है लिखी हुई किताब। इस में डेढ़ सौ सूरतें थीं जिन में शरीअत के अहकाम बहुत थोड़े से थे, हिकमत और नसीहतें और

अल्लाह तआला की हम्द वग़ैरा ज़्यादा थीं। (तफ़सीरे नईमी)

३७) एक रिवायत में है कि इब्राहीमी सहीफ़े रमज़ान की पहली रात को, तौरात शरीफ़ रमज़ान की छटी रात को, इन्जीले मुक़द्दस तेरहवीं रात को और क़ुरआने मजीद चौबीस रमज़ान को उतरा। (तफ़सीरे नईमी)

३८) सब से पहले सुब्हानल्लाह हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अर्शे इलाही की अज़मत को देख कर कहा था। (रूहुल बयान)

३९) सब से पहले अल्हम्दु लिल्लाह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने कहा जब उन में रूह फूंकी गई। (रूहुल बयान)

४०) सब से पहले ला इलाहा इल्लल्लाह नूह अलैहिस्सलाम ने कहा तूफ़ान को देख कर। (रूहुल बयान)

४१) सब से पहले अल्लाहु अकबर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का फ़िदिया दुम्बे की सूरत देख कर। (रूहुल बयान)

४२) पिछली आसमानी किताबें मोअजिज़ा न थीं, सिर्फ़ क़ुरआन शरीफ़ आसमानी किताब भी है और मोअजिज़ा भी। (नुज़्हतुल क़ारी)

४३) हज़रत कअब अहबार फ़रमाते हैं कि तौरात में सब से पहली आयत वही है जो सूरए अनआम की पहली आयत है: सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिस ने आसमान और ज़मीन बनाए और अन्धेरियाँ और रौशनी पैदा की, उस पर काफ़िर लोग अपने रब के बराबर ठहराते हैं। (अनुवाद, कन्ज़ुल ईमान) (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

४४) हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जिन तख़्तियों पर तौरात लिखी गई थी वह लकड़ी की थीं। कलबी कहते हैं कि बेहतरीन ज़बरजद की थीं। हज़रत सईद इब्ने जुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि सुर्ख़ याक़ूत की थीं। इब्ने जरीह कहते हैं कि ज़मर्रुद की थीं। कुछ उलमा का कहना है कि बेरी की लकड़ी की थीं, वहब कहते हैं कि पत्थर की थीं। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि सात थीं। वहब फ़रमाते हैं कि कुल दस थीं, मुक़ातिल कहते हैं कि कुल नौ थीं। रुबअ बिन अनस कहते हैं कि जब तौरात उतरी है तो सत्तर ऊंटों का वज़न थीं। (ख़ाज़िन, रूहुल मआनी वग़ैरा)

४५) तौरात शरीफ़ सिर्फ़ चार साहबों ने हिफ़्ज़ कीः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत यूशअ बिन नून अलैहिस्सलाम, हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम। (ख़ाज़िन, रूहुल मआनी)

४६) आम मुफ़स्सिरीन का कौल है कि जिन तख़्तियों पर तौरात शरीफ़ उतरी उन की लम्बाई हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के कद के बराबर यानी दस हाथ थी। (रूहुल बयान, ख़ाज़िन)

४७) कुरआने अज़ीम में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से ज़्यादा लम्बा ज़िक्र किसी का नहीं है। (सय्यारह डाइजेस्ट, कुरआन नम्बर)

४८) आसमानी सहीफ़े कुल १०४ नाज़िल हुए। दस सहीफ़े हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर, पचास हज़रत शीस अलैहिस्सलाम पर, तीस हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम पर, दस हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर, ज़बूर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर, तौरात हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर, इन्जील हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर और कुरआन हमारे आक़ा व मौला मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ। (तफ़सीरे इब्ने कसीर)

४६) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा जब बाज़ार में किसी को कुरआन शरीफ़ बेचते देखते तो फ़रमाते काश मेरी ज़िंदगी में कोई हाकिम पैदा हो जो कुरआन बेचने वाले के हाथ कटवा ले। बाद में हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास, मुहम्मद इब्ने हनफ़िया, इमाम मुहम्मद बाक़र और इमाम जअफ़रे सादिक़ यहाँ तक कि ख़्वाजा हसने बसरी रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कुरआन शरीफ़ की फ़रोख़्त के जवाज़ का फ़त्वा दिया। (तफ़सीरे नईमी)

५०) हज़रत इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी ने सिर्फ़ अऊज़ो से दस हज़ार मस्अले निकाले हैं, एक बुज़ुर्ग ने बिस्मिल्लाह की लगभग चार लाख तरकीबें की हैं। (तफ़सीरे नईमी)

५१) कुरआने अज़ीम का नुज़ूल इन्जील के छः सौ साल बाद हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

५२) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हर चीज़ का एक सरदार होता है पस इन्सानों के सरदार आदम हैं और आदम की औलाद का सरदार मैं हूं और रूम के सरदार सुहैब हैं, फ़ारस के सरदार सलमान हैं, हबश के सरदार बिलाल हैं और दरख़्तों का सरदार बेरी का दरख़्त, चिड़ियों का सरदार गिध, महीनों का सरदार रमज़ान, दिन का सरदार जुम्आ, कलामों में अरबी, अरबी में कुरआन और कुरआन में सूरए बक़रह है। (दलाइलुल ख़ैरात, हाशिया)

५३) कुरआने करीम की १२०० से ज़्यादा तफ़सीरें लिखी जा चुकी हैं। (हिन्दुस्तानी मुफ़स्सिरीन और उन की अरबी तफ़सीरें)

५४) सिर्फ़ उर्दू में कुरआने करीम के अनुवादों की संख्या इस वक़्त तीन

सौ से ऊपर है। (हिन्दुस्तानी मुफ़स्सिरीन और उन की अरबी तफ़सीरें)

५५) लातीनी ज़बान में कलामे पाक का अनुवाद सब से पहले १५३४ ई० में स्विज़रलैन्ड से छपा। (हिन्दुस्तानी मुफ़स्सिरीन और उन की अरबी तफ़सीरें)

५६) जर्मन में कुरआने अज़ीम का अनुवाद सब से पहले मशहूर जर्मन समाज सुधारक और प्रोटैस्टैनट समुदाय से संस्थापक मार्टिन लूथर किंग ने किया। इस अनुवाद से प्रभावित हो कर ही उस ने मसीही धर्म में पैदा हुई ख़राबियों के सुधार का बीड़ा उठाया था। (हिन्दुस्तानी मुफ़स्सिरीन और उन की अरबी तफ़सीरें)

५७) डच (वलन्दीज़ी) भाषा में पहला अनुवाद अरीसुल कुरआन के नाम से १४६१ ई० में हैम्बर्ग से प्रकाशित हुआ। (हिन्दुस्तानी मुफ़स्सिरीन और उन की अरबी तफ़सीरें)

५८) कलामुल्लाह का सब से पहला रूसी अनुवाद १७६७ ई० में सैंन्ट पीटर्सबर्ग में छपा। (हिन्दुस्तानी मुफ़स्सिरीन और उन की अरबी तफ़सीरें)

५६) फ़ारसी में कुरआने मजीद का सब से पहला अनुवाद संभवतः वही है जो शैख़ सअदी शीराज़ी (देहान्त ६६१ ई०) ने किया। (हिन्दुस्तानी मुफ़स्सिरीन और उन की अरबी तफ़सीरें)

६०) कुरआन शरीफ़ का बंगला अनुवाद पोन्थी अदब की ज़बान में प्रकाशित हुआ था। यह सिर्फ़ आख़िरी पारे का अनुवाद था। (हिन्दुस्तानी मुफ़स्सिरीन और उन की अरबी तफ़सीरें)

६१) कलामे इलाही का सबसे पुराना हिन्दी अनुवाद आज से लगभग ११०० साल पहले हुआ था। यह अनुवाद ८८३ ई० में एक हिन्दू राजा मेहरूक ने करवाया था जो कशमीर और पंजाब के इलाक़े का शासक था। (हिन्दुस्तानी मुफ़स्सिरीन और उन की अरबी तफ़सीरें)

६२) कुरआने पाक में इअराब (उच्चारण चिन्ह) यानी ज़बर ज़ेर पेश वग़ैरा अलामतें हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी ने लगवाई थीं। (नुज़्हतुल क़ारी)

६३) कुरआने अज़ीम के उतरने की कुल मुद्दत लगभग २२ साल दो माह और चौदा दिन है। (सैय्यारह डाइजैस्ट, कुरआन नम्बर)

६४) हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को यह ख़ुसूसियत हासिल थी कि वह मुस्तक़िल वही लिखने पर मामूर रहे और विसाल से पहले दो बार हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पूरा कुरआन सुनाया। (नुज़्हतुल क़ारी)

६५) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने सरकारी तौर पर एक मुकम्मल नुस्ख़ा (मुस्हफ़) तय्यार करवाया जिस की किताबत की निगरानी वग़ैरा

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के सिपुर्द की गई। इसी मुस्हफ़ से हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने नक़लें तय्यार करा के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में भिजवाईं। (सैय्यारह डाइजैस्ट, कुरआन नम्बर)

६६) तमाम कुरआन में सात सौ जगह नमाज़ की ताकीद आई है। (सैय्यारह डाइजैस्ट, कुरआन नम्बर)

६७) कलामे पाक में १५० जगह पर ख़ैरात की ताकीद की गई है। (सैय्यारह डाइजैस्ट, कुरआन नम्बर)

६८) कुरआने अज़ीम में सत्तर से ज़्यादा जगहों पर दुआ मांगने की ताकीद है। (सैय्यारह डाइजैस्ट, कुरआन नम्बर)

६९) कुरआने मजीद में नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ग्यारह जगह या अय्युहन्नबी कह कर ख़िताब किया गया है। (सैय्यारह डाइजैस्ट, कुरआन नम्बर)

७०) हज़रत मुहियुद्दीन इब्ने अरबी रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौल है कि कुरआने अज़ीम में सत्तर हज़ार उलूम हैं। (सैय्यारह डाइजैस्ट, कुरआन नम्बर)

७१) आम तौर पर यह मशहूर है कि कुरआन शरीफ़ में ५४० रुकूअ हैं, हालांकि कुरआने मजीद में कुल रुकूअ की तादाद ५५८ है। (नज़्मी)

७२) शुरू में कुरआने करीम चमड़े के टुकड़ों पर कूफ़ी ख़त में लिखा जाता था। (सैय्यारह डाइजैस्ट, कुरआन नम्बर)

७३) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने ज़मानए रिसालत में कुरआने अज़ीम की हर आयत और हर सूरत तहरीर करा दी थी। (सैय्यारह डाइजैस्ट, कुरआन नम्बर)

७४) तमाम कुरआन में बारह जगह इमाम का लफ़्ज़ आया है। (सैय्यारह डइजैस्ट, कुरआन नम्बर)

७५) सुल्तान मेहमूद ग़ज़नवी के पोते इब्राहीम ग़ज़नवी हर साल अपने हाथ से दो कुरआने पाक लिखते थे, एक मदीनए मुनव्वरा भेजते थे और एक मक्कए मुअज़्ज़मा। (सैय्यारह डाइजैस्ट, कुरआन नम्बर)

७६) कुरआने करीम एक रकअत में चार हज़रात ने ख़त्म किया है, हज़रत सय्यिदुना उस्माने ग़नी, हज़रत तमीम दारी, हज़रत सईद बिन ज़ुबैर और हज़रत सय्यिदुना इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम। (तफ़सीरे नईमी)

७७) एक बार इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि ने किसी तवंगर की तवाज़ेअ उस की मालदारी के सबब की थी, इस के कफ़्फ़ारे में आप ने एक हज़ार कुरआन ख़त्म किये। (सीरेते नोअमानी)

७८) हज़रत इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि का जिस जगह विसाल हुआ उस जगह आप ने सत्तर हज़ार ख़त्मे कुरआन किये। (हयाते इमामे आज़म अबू हनीफ़ा)

७९) हज़रत इमामे शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि रमज़ानुल मुबारक में दिन रात की नमाज़ों में सात कुरआन शरीफ़ ख़त्म कर लेते थे। (सीरते शाफ़ई)

८०) हज़रत सईद बिन जुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं ने बैतुल्लाह के अन्दर एक रकअत में पूरा कुरआन ख़त्म किया है। (रिसालए कुशैरिया)

८१) हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु तमाम रमज़ान में हर तीन रात में एक ख़त्म फ़रमाते थे मगर आख़िरी दस दिन में हर रात में एक कुरआन शरीफ़ ख़त्म करते थे। (उस्वए सहाबा)

८२) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सूरए फ़ातिहा जैसी सूरत नाज़िल नहीं हुई, न तौरात में, न इन्जील में, न ज़बूर में, न बक़िया कुरआन में। (तिर्मिज़ी)

८३) एक रिवायत में है कि सूरए फ़ातिहा सवाब में दो तिहाई कुरआन के बराबर है। (तफ़सीरे नईमी)

८४) कुछ सूफ़ियों ने नक़्ल किया है कि जो कुछ पिछली किताबों में था वह सब का सब कुरआने मजीद में आ गया और जो कलामे पाक में है वह सब का सब सूरए फ़ातिहा में आ गया और जो कुछ सूरए फ़ातिहा में है वह सब का सब इस की बिस्मिल्लाह में आ गया और जो कुछ बिस्मिल्लाह में है वह इस की बा में आ गया और जो कुछ बा में है वह इस के नुक़्ते में आ गया। (तफ़सीरे नईमी)

८५) हज़रत हसने बसरी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नक़्ल करते हैं कि जिस ने सूरए फ़ातिहा पढ़ी उस ने गोया तौरात, ज़बूर, इन्जील और कुरआन पढ़ लिया। (तफ़सीरे नईमी)

८६) एक रिवायत में है कि इब्लीस को अपने ऊपर रोने और सर पर ख़ाक डालने की नौबत चार बार आई है, पहली बार जब कि उस पर लअनत हुई, दूसरी जब कि आसमान से ज़मीन पर डाला गया, तीसरी जब कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत ज़ाहिर हुई और चौथी जब कि सूरए फ़ातिहा नाज़िल हुई। (तफ़सीरे नईमी)

८७) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अर्श के ख़ज़ाने से मुझे चार चीज़ें मिली हैं कि और कोई चीज़ इस ख़ज़ाने से किसी को नहीं

मिली। सूरए फ़ातिहा, आयतल कुर्सी, सूरए बकरा की आख़िरी आयतें और सूरए कौसर। (तफ़सीरे नईमी)

८८) एक रिवायत में आया है कि जो शख़्स सोने के इरादे से लेटे और सूरए फ़ातिहा और सूरए इख़लास पढ़ कर अपने ऊपर दम कर ले तो मौत के सिवा हर बला से मेहफ़ूज़ रहेगा। (तफ़सीरे नईमी)

८९) सुब्ह की सुन्नत और फ़र्ज़ के बीच बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम की मीम के साथ अल्हम्दु लिल्लाह का लाम मिला कर चालीस दिन तक पढ़ना दुनिया की हाजतों के पूरा होने का बेहतरीन नुस्ख़ा है। (तफ़सीरे नईमी)

९०) अब्दुल मलिक बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु से मुर्सलन रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सूरए फ़ातिहा में हर बीमारी से शिफ़ा है। (तफ़सीरे नईमी)

९१) सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहि तआला अलैहिम अज्मईन सांप बिच्छू के काटे हुओं पर और मिर्गी के मरीज़ों और पागल दीवानों पर सूरए फ़ातिहा पढ़ कर दम करते थे और हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे जाइज़ रखा। (तफ़सीरे नईमी)

९२) हज़रत बरीदा रिज़यल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स सिर्फ़ इस लिये कुरआन पढ़े कि लोगों से खाए वह क़ियामत में ऐसी हालत में आएगा कि उस का चेहरा सिर्फ़ हड्डी होगा जिस पर गोश्त न होगा। (बेहक़ी)

९३) हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नक़्ल किया है कि कुरआन की ख़बरगीरी किया करो। क़सम है उस ज़ात की कि जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है कि कुरआन बहुत जल्द निकल जाने वाला है सीनों से ब निस्बत ऊंट के अपनी रस्सी से। (बुख़ारी)

९४) हज़रत अता इब्ने अबी रबाह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मुझे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इरशाद पहुंचा है कि जो शख़्स सूरए यासीन को शुरू दिन में पढ़े, उस की तमाम दिन की हाजतें पूरी हो जाएं। (दारमी)

९५) हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इरशाद नक़्ल किया है कि जो शख़्स रात को सूरए वाक़िआ पढ़े उस को कभी फ़ाक़ा न होगा। (बेहक़ी)

९६) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम का यह इरशाद नक़्ल किया है कि कुरआन शरीफ़ में एक सूरत तीस आयतों की ऐसी है कि वह अपने पढ़ने वाले की शफ़ाअत करती रहती है यहाँ तक कि उस की मग़फ़िरत करा दे। यह सूरत तबारकल्लज़ी है। (तफ़सीरे नईमी)

९७) हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस वक़्त तक न सोते थे जब तक सूरए अलिफ़ लाम मीम सज्दा और सूरए तबारकल्लज़ी न पढ़ लेते थे। (बुख़ारी)

९८) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो एक बार कुल हुवल्लाहु अहद पढ़ेगा उस पर जन्नत में दाख़िल होना जाइज़ है। (तफ़सीरे नईमी)

९९) हज़रत उबई इब्ने कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस ने कुल हुवल्लाह पढ़ी उस ने गोया दो तिहाई कुरआन पढ़ लिया और उस के लिये इतनी नेकियां लिखी जाएंगी जितने कि मोमिन और मुश्रिक गिन्ती में होंगे। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१००) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि जो कुल हुवल्लाह तीस बार पढ़ेगा अल्लाह तआला उस के लिये जन्नत में सौ महल बनाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

१०१) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ही से रिवायत है कि शैतान को कुल या अय्यहुहल काफ़िरून से ज़्यादा गुस्सा दिलाने वाली कोई सूरत कुरआने मजीद में नहीं उतरी। (तफ़सीरे नईमी)

१०२) एक रिवायत में आया है कि सूरए यासीन का नाम मुन्इमह है कि अपने पढ़ने वाले के लिये दुनिया और आख़िरत की भलाइयों की ज़ामिन है, दुनिया की मुसीबत दूर करती है और आख़िरत के हौल से निजात दिलाती है। (तफ़सीरे नईमी)

१०३) सूरए यासीन का नाम राफ़िअह और ख़ाफ़िज़ह भी है यानी मोमिनों के रुत्बे बलन्द करने वाली और काफ़िरों को पस्त करने वाली। (तफ़सीरे नईमी)

१०४) कुरआने अज़ीम से फ़ाल लेनी मकरूहे तहरीमी है। (तफ़सीरे नईमी)

१०५) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सूरए कौसर पढ़ने वाले को अल्लाह तआला जन्नत की हर नहर से पानी पिलाएगा और उस के नामए आमाल में यौमे नहर की कुरबानियों की गिन्ती के बराबर नेकियां लिखी जाएंगी। (बैज़ावी शरीफ़)

१०६) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कुल हुवल्लाहु अहद जिब्रईल अलैहिस्सलाम के बाज़ू पर, अल्लाहुस्समद मीकाईल

अलैहिस्सलाम के बाज़ू पर, लम यलिद वलम यूलद इज़्राईल अलैहिस्सलाम के बाज़ू पर और वलम यकुन लहू कुफ़ुवन अहद इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम के बाज़ू पर लिखा है। (हयातुल कुलूब)

१०७) सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कुल हुवल्लाहु अहद अबू बक्र की पेशानी पर, अल्लाहुस्समद उमर की पेशानी पर, लम यलिद वलम यूलद उस्मान की पेशानी पर और वलम यकुन लहू कुफ़ुवन अहद अली की पेशानी पर लिखा है। (हयातुल कुलूब)

१०८) कुरआने मजीद सुनना तिलावत करने और नफ़्ल पढ़ने से अफ़ज़ल है। (तफ़सीरे नईमी)

१०९) तीन दिन से कम में कुरआने अज़ीम का ख़त्म ख़िलाफ़े ऊला है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस ने तीन रात से कम में कुरआन पढ़ा उस ने समझा ही नहीं। (तफ़सीरे नईमी)

११०) कुरअने मजीद देख कर पढ़ना ज़बानी पढ़ने से ज़्यादा अफ़ज़ल है कि यह पढ़ना भी है और देखना और हाथ से इस का छूना भी, और यह सब इबादतें हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१११) कुरआने मजीद को पढ़ कर भुला देना गुनाह है। एक रिवायत में है जो कुरआन पढ़ कर भूल जाए, क़ियामत के दिन वह कोढ़ी होकर आएगा और कुरआने मजीद में है कि अन्धा होकर उठेगा। (तफ़सीरे नईमी)

११२) हमाम (गुस्ल ख़ाने) में ऊंची आवाज़ से कुरआन पढ़ना मकरूह है, आहिस्ता आहिस्ता जी में पढ़ा जा सकता है। अलबत्ता सुब्हानल्लाह कहना, ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ना मकरूह नहीं, चाहे ऊंची आवाज़ से हो। (तफ़सीरे नईमी)

११३) नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ला इलाहा इल्लल्लाह का विर्द दिल में ईमान इस तरह उगाता है जिस तरह पानी सब्ज़े को। (तफ़सीरे नईमी)

११४) एक रिवायत में है कि सूरए फ़ातिहा में बिस्मिल्लाह की मीम मिला कर पन्द्रह मीमें हैं, जब कोई बन्दा इस की तिलावत करता है तो सब मीमें परिन्दों की तरह निकल भागती हैं और अर्श से जाकर चिमट जाती हैं जिस से अर्श भारी हो जाता है। अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते कहते हैं कि इलाही यह बोझ कैसा है? इरशाद होता है: यह एक सूरत का सवाब है जिस को मेरे बन्दे ने पढ़ा है। वह सब मीमें बोलती हैं कि इलाही इस के पढ़ने वाले को क्या जज़ा मिलेगी? इरशाद होता है कि उस के नामए आमाल को जाकर देखो। हर मीम दस दस गुना गुनाह मिटाती है। वह मीमें अर्ज़ करती हैं इलाही और बढ़ा यहाँ

तक कि हर मीम के बदले एक सौ बीस गुनाह मिटते हैं। पस एक बार सूरए फ़ातिहा के पढ़ने से एक हज़ार आठ सौ गुनाह मिटते हैं। (नुज़्हतुल मजालिस)

११५) हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि फ़ातिहा की शुरूआत नेअमत है और औसत तअज़ीम है और आख़िर अल्लाह की ख़ुशनूदी है। (तफ़सीरे नईमी)

११६) अल्लाह तआला ने अर्श के नीचे एक फ़रिश्ता पैदा किया है उस का सर आदमी का सा है। उस के सत्तर हज़ार बाज़ू हैं और हर बाज़ू पर फ़रिश्तों की एक एक जमाअत है। उस के दाएं रुख़सार पर सूरए इख़लास और बाएं पर कलिमए शहादत और पेशानी पर सूरए फ़ातिहा लिखी हुई है। उस के सामने फ़रिश्तों की सत्तर हज़ार सफ़ें हैं जो सूरए फ़ातिहा पढ़ा करते हैं और जब वह इयाका नअबुदु व इय्याका नस्तईन कहते हैं तो सज्दे में गिर पड़ते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है: अपने सर उठाओ मैं तुम से ख़ुश हूँ। फिर वह दरख़्वास्त करते हैं कि उम्मते मुहम्मदिया में से जो कोई फ़ातिहा पढ़े, ऐ रब तू उस से भी राज़ी रह। अल्लाह तआला फ़रमाता है: अच्छा गवाह रहो मैं उन से भी राज़ी रहूंगा। (नुज़्हतुल मजालिस)

११७) इमाम हाफ़िज़ुद्दीन मेहमूद अबुल बरकात नसफ़ी ने अपनी तफ़सीर में ज़िक्र किया है कि जब सूरए फ़ातिहा नाज़िल हुई तो इस के साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते भी नाज़िल हुए।

११८) एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुसलमानों को कनीज़ें तक़सीम फ़रमा रहे थे। मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने हज़रत बीबी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा: जाओ तुम भी अपने लिये कोई कनीज़ ले आओ। हज़रत बीबी साहिबा हाज़िर हुईं और हाथ दिखा कर अर्ज़ करने लगीं: बाबाजान! चक्की पीसते पीसते हाथों में छाले पड़ गए हैं, एक कनीज़ मुझे भी इनायत हो। सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: फ़ातिमा मैं तुझे ऐसी चीज़ देता हूँ जो कनीज़ और गुलाम से भी ज़्यादा काम दे। तू रात को सोते वक़्त सुब्हानल्लाह ३३ बार, अल्हम्दु लिल्लाह ३३ बार और अल्लाहु अकबर ३४ बार पढ़ कर सो रहा कर। (नुज़्हतुल क़ारी)

११९) हदीस में है जो शख़्स ऊंची आवाज़ से क़ुरआने करीम की तिलावत करे वह खुले आम सदक़ा देने वालों की तरह है और जो आहिस्त पढ़े वह छुपा कर सदक़ा देने वालों की तरह है। (तफ़सीरे नईमी)

१२०) हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि क़ुरआने मजीद ऐसी खुश इल्हानी से पढ़ते थे कि जब आप इमाम होते तो लोगों के रोने की आवाज़ें

ऊंची हो जातीं जिस के नतीजे में आप को रुकू करना पड़ता। (सीरते शाफ़ई)

१२१) हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदत थी कि जब बिछौने पर सोने के लिये तशरीफ़ ले जाते तो दो हाथ मिलाते और कुल हुवल्लाह, कुल अऊज़ो बिरब्बिल फ़लक़ और कुल अऊज़ो बिरब्बिन्नास पढ़ कर हाथ पर दम करके जहां तक हाथ पहुंचते तमाम बदने मुबारक पर मलते, सर और मुंह की तरफ़ से शुरू करते, तीन या सात बार ऐसा करके सो जाते। उस की वजह से नज़रे बद, जादू और बहुत सी बीमारियों से अल्लाह तआला अम्न में रखता है। (बुख़ारी शरीफ़)

१२२) हदीस में है कि बेहतरीन दुआ अल्हम्दु लिल्लाह और बेहतरीन ज़िक्र ला इलाहा इल्लल्लाह है। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१२३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अल्लाह तआला के नज़्दीक चार कलिमे बहुत ही प्यारे हैं, एक ला इलाहा इल्लल्लाह, दो अल्लाहु अकबर, तीन सुब्हानल्लाह, चार अल्हम्दु लिल्लाह। (तफ़सीरे नईमी)

१२४) हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैं एक सफ़र में रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था। मैं ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! कोई ऐसी बात सुनाइये जिस से हमें नफ़ा हो। आप ने फ़रमाया: अगर तुम नेकों की सी ज़िंदगी, शहीदों की सी मौत, हश्र के दिन निजात, गर्मी के दिन साया और गुमराही से हिदायत चाहते हो तो हमेशा कुरआन पढ़ा करो। यह अल्लाह तआला का कलाम है और शैतान से मेहफ़ूज़ रहने का क़िला है और मीज़ान का झुका देने वाला है। (तफ़सीरे नईमी)

१२५) महीनों में सिर्फ़ रमज़ान का नाम कुरआने मजीद में लिया गया। औरतों में सिर्फ़ बीबी मरयम का नाम कुरआन में आया, सहाबा में सिर्फ़ हज़रत ज़ैद इब्ने हारिसा का नाम कुरआन में आया है। (तफ़सीरे नईमी)

१२६) बनी अब्दुल मुत्तलिब के बच्चे जब बोलना शुरू करते थे तो उन सब को पहले आयत व कुलिल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी (पारा १५, सूरए बनी इस्राईल, आयत १११) सिखाई जाती थी। (तफ़सीरे नईमी)

१२७) वबा के ज़माने में सूरए दुख़ान ऊंची आवाज़ से सुब्ह के वक़्त पढ़ने से जहाँ तक आवाज़ जाए वहाँ तक अम्न रहता है। (हिस्ने हिसीन शरीफ़)

१२८) वबा का एक इलाज यह भी है कि किसी नक़्क़ारे या ताशे पर सूरए जुम्आ दायरे की शक्ल में लिखी जाए और बीच में १५ का नक़्शा बनाया

जाए, फिर एक ख़स्सी बकरे को साथ लेकर ताशा बजाते हुए सारे शहर में गश्त किया जाए मगर शर्त यह है कि चोब नक़्शा पर पड़े न कि हुरूफ़ पर। फिर शहर के किनारे पर पहुंच कर जानवर ज़िब्ह करके उस का गोश्त ख़ैरात कर दिया जाए या दफ़्न किया जाए। इन्शा अल्लाह वबा से अम्न मिलेगा। (तफ़सीरे नईमी)

१२९) जिस शख़्स पर जादू हो गया हो वह दरिया के बीच धारे के पानी से घड़ा भर कर लाए और उस पर सूरए फ़लक़ और सूरए नास ११ - ११ बार पढ़ कर दम करे फिर उस पानी से नहाए, इन्शा अल्लाह तआला सेहत होगी। मगर यह पानी बहने न दे बल्कि किसी गढ़े में खड़े हो कर नहाए जिस से पानी वहाँ जमा हो जाए बाद में मिट्टी बराबर करदे। (तफ़सीरे नईमी)

१३०) जो शख़्स सुब्ह शाम आयतल कुर्सी पढ़ कर हाथों पर दम करे और सारे जिस्म पर फेरे वह भी इन्शा अल्लाह जादू से मेहफ़ूज़ रहेगा। (तफ़सीरे नईमी)

१३१) आयत शरीफ़ अल-यौमा अक्मल्तु लकुम नवीं बक्र ईद जुम्ए के दिन नमाज़े अस्र सन १० हिजरी को मक़ामे अरफ़ात में नाज़िल हुई। इस आयत के नुज़ूल के दिन दुनिया में पांच ईदें जमा थीं। दो ईदें मुसलमानों की हज्जे अकबर और जुम्आ, यहूद की ईद, ईसाइयों का बड़ा दिन, मजूस की ईद। इतनी ईदें न इस से पहले जमा हुई थीं न इस के बाद। (ख़ाज़िन)

१३२) हज़रत जिब्रईले अमीन अलैहिस्सलाम ने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया: फ़ातिहा के लिये आमीन ऐसी है जैसे किताब के लिये मुहर यानी जिस तरह बिना मुहर के किताब मुकम्मल नहीं होती उसी तरह बिना आमीन के सूरए फ़ातिहा मुकम्मल नहीं होती। हज़रत वहब फ़रमाते हैं कि आमीन में चार हुरूफ़ हैं और आमीन कहने वाले के लिये चार फ़रिश्ते मग़फ़िरत की दुआ करते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१३३) क़सम या तो रब के नाम की खाई जाए या उस की किसी मशहूर सिफ़त की। हिन्दुस्तान में क़ुरआन की क़सम सही है क्योंकि क़ुरआन अल्लाह का कलाम है जो कि अल्लाह की सिफ़त है। (तफ़सीरे नईमी)

१३४) इस्तिग़फ़ार से पहले अल्लाह तआला की हम्द करना बेहतर है। (तफ़सीरे नईमी)

१३५) क़ुरआने अज़ीम की जिन आयतों में आया कि तुम्हारा कोई मददगार नहीं उस का मतलब यह है कि अगर अल्लाह तआला तुम्हारी मदद छोड़ दे तो तुम्हारा कोई मददगार नहीं है। (तफ़सीरे नईमी)

१३६) दूसरे से कुरआने मजीद पढ़वा कर सुनना भी इबादत है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबई बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से कुरआने मजीद पढ़वा कर सुना। (तफ़सीरे नईमी)

१३७) सज्दे की आयत पर सज्दा वाजिब है, पढ़ने वाले पर भी और सुनने वाले पर भी। नमाज़ में हो या नमाज़ से बाहर, फ़ौरन करे या देर से, मगर बिला वजह देर नहीं करनी चाहिये। खड़े से सज्दे में आए और फिर खड़ा हो जाए। (तफ़सीरे नईमी)

१३८) सज्दए तिलावत में वुज़ू और क़िब्ले की तरफ़ मुंह होना बहुत ज़रूरी है मगर निश्चित करना ज़रूरी नहीं कि यह फ़ुलाँ आयत का सज्दा है। (तफ़सीरे नईमी)

१३९) बेहतर यह है कि सज्दे की आयत आहिस्ता आहिस्ता पढ़े ताकि दूसरों पर सज्दा वाजिब न हो जाए। (तफ़सीरे नईमी)

१४०) अगर एक आयत एक जगह बार बार तिलावत करे तो एक ही सज्दा वाजिब होता है। लेकिन अगर जगह बदलती रहे तो सज्दे कई वाजिब होंगे, यानी हर क़िरअत पर एक सज्दा। (तफ़सीरे नईमी)

१४१) सज्दे की आयत अगर इत्तिफ़ाक़न भी सुन ले तब भी सज्दा वाजिब हो जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

१४२) हज़रत सफ़वान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मग़रिब की तरफ़ तौबा के लिये एक दरवाज़ा बनाया है जिस की चौड़ाई चालीस या सत्तर साल की मुसाफ़त जितनी है। वह हमेशा खुला रहेगा, कभी बन्द न होगा यहाँ तक कि सूरज मग़रिब से निकले। (तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन)

१४३) सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि सूरए अनआम मक्कए मुअज़्ज़मा में एक ही रात में नाज़िल हुई। इस के साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते तस्बीह करते हुए आए जिन से आसमानों के किनारे भर गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुब्हाना रब्बियल अज़ीम कहते हुए सज्दे में गिर गए। (तफ़सीरे नईमी)

१४४) कुरअने अज़ीम की पांच सूरतों के शुरू में अल्हम्दु लिल्लाह है: सूरए फ़ातिहा, सूरए अनआम, सूरए कहफ़, सूरए सबा और सूरए फ़ातिर। (तफ़सीरे नईमी)

१४५) जो शख़्स अपनी दुआ में पांच बार रब्बना कह कर अल्लाह को पुकारे, इन्शा अल्लाह उस की दुआ कबूल होगी। (तफ़सीरे नईमी)

१४६) कुरआने मजीद में कियामत के कई नाम आए हैं: साअत, कियामत, कारिअह, हाक्कह, ख़ाफ़िज़ह, राफ़िअह, ताम्मह, साम्मह, ज़ल्ज़ला, यौमुल गरकह, यौमे मौऊद, यौमुल अर्ज़, यौमुल मफ़र, यौमे असीर। (तफ़सीरे सावी)

१४७) सूरए वल्लैल अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की शान में नाज़िल फ़रमाई और सूरए हुजुरात में भी उन की बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत का ज़िक्र फ़रमाया है। (तफ़सीरे नईमी)

१४८) कुरआने करीम की आयते ततहीर, आयते मुबाहिलह, आयते मवद्दत और आयते नज़्र हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शान में नाज़िल हुई। (तफ़सीरे नईमी)

१४६) कुरआने करीम का वह हिस्सा जो मक्की सूरतों पर मुश्तमिल है पूरे तेरह साल तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होता रहा। (सैय्यारा डइजैस्ट, कुरआन नम्बर)

१५०) कलिमए तय्यिबा में सिर्फ़ सात लफ़्ज़ हैं, तीन एक तरफ़, तीन दूसरी तरफ़ और बीच में इस्मे ज़ाते इलाही अल्लाह है। (तफ़सीरे नईमी)

१५१) हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं ने जिब्रईले अमीन को यह कहते सुना है कि रूए ज़मीन पर ला इलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मदुर रसूलुल्लाह से बेहतर कोई कलिमा लेकर नहीं उतरा। आसमान, ज़मीन, पहाड़ और दरिया, दरख़्त और जंगल इसी की बरकत से क़ायम हैं। इस का नाम कलिमतुल इख़लास, कलिमतुल इस्लाम, कलिमतुल कुर्ब, कलिमतुत तक़्वा, कलिमतुन्नजात और कलिमतुल उलिया है। अगर एक पलड़े में कलिमा रखा जाए और दूसरे में तमाम आसमान और ज़मीन, तो उसी का पलड़ा झुका रहेगा। (ज़ुबदतुल वाइज़ीन)

१५२) फ़कीह अबुल्लैस का क़ौल है कि नीचे के सात कलिमों को याद रखने वाला अल्लाह तआला के नज़्दीक शरीफ़ और मग़फ़िरत के क़ाबिल है, उस के गुनाह अगर समुन्द्र के झाग के बराबर होंगे, माफ़ कर दिये जाएंगे और उस की मौत ज़िन्दगी से बेहतर होगी। वह सात कलिमे यह हैं: (१) हर चीज़ के शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना (२) हर काम से फ़ारिग़ हो कर अल्हम्दु लिल्लाह कहना (३) लग्व और बेहूदा बातों के बाद अस्तग़फ़िरुल्लाह कहना। (४) आइन्दा फ़ेअल पर इन्शा अल्लाह कहना (५) कोई मकरूह काम या बात सामने आए तो लाहौल वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह कहना (६) मुसीबत के वक़्त इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन कहना (७) दिन रात कलिमए

शहादत ज़बान पर जारी रखना। (तफ़सीरे नईमी)

१५३) अल्लाह तआला के बहुत से नामों के शुरू में मीम आती है जैसे मन्नान, मालिक, मलिक, मुक़्तदिर, मोमिन, मुहैमिन वग़ैरा। जो उसे अल्लाहुम्मा कह कर पुकारे तो उस ने गोया इन तमाम नामों से पुकारा। इसी लिये अक्सर दुआओं के शुरू में अल्लहुम्मा कहा जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

१५४) ज़िक्र के वक़्त इन्सान के दिल में तीन ख़ौफ़ होने चाहियें: एक गुज़रे हुए का कि न मालूम मेरा नाम जन्नतियों की फ़ेहरिस्त में रखा गया है या दोज़ख़ियों की, दूसरे मौजूदा का कि न मालूम यह ज़िक्र मक़बूल है या नहीं, तीसरे आइन्दा का कि न मालूम मेरा ख़ातिमा ईमान पर होगा या नहीं। (तफ़सीरे नईमी)

१५५) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने आसमान और ज़मीन की पैदाइश से दो हज़ार साल पहले तॉहा और यासीन को तिलावत फ़रमाया। फ़रिश्तों ने सुना और कहने लगे मुबारक हैं वह लोग जिन पर यह नाज़िल होंगी और मुबारक हैं वह लोग जिन के सीने इन्हें मेहफ़ूज़ करेंगे और मुबारक हैं वह ज़बानें जो इन्हें पढ़ेंगी। (तफ़सीरे नईमी)

१५६) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तीन दुआएं यक़ीनन मक़बूल होती हैं, माँ की दुआ, मुसाफ़िर की दुआ और मज़लूम की दुआ। (तफ़सीरे नईमी)

१५७) हज़रत नोअमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि दुआ इबादत है। (तफ़सीरे नईमी)

१५८) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: दुआ इबादत का मग़ज़ है। (तफ़सीरे नईमी)

१५९) अगर किसी नेक बन्दे या किसी बुज़ुर्ग के लिये बख़्शिश की दुआ की जाए तो उस के दर्जे बलन्द होते हैं और गुनहगार पर से सख़्ती और अज़ाब दूर हो जाता है। (हदीस शरीफ़)

१६०) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मुर्दे की हालत क़ब्र में डूबते हुए फ़रियाद करने वाले की तरह होती है। वह इन्तिज़ार करता है कि उस के माँ बाप या भाई या दोस्त की तरफ़ से उस को दुआ पहुंचती है तो वह दुआ का पहुंचना उस को दुनिया और दुनिया में जो कुछ है उस से मेहबूब तर होता है और बेशक अल्लाह तआला अहले ज़मीन की दुआ से क़ब्र वालों को पहाड़ों

की तरह अज्र व रहमत अता करता है और बेशक ज़िन्दा का तोहफ़ा मुर्दों की तरफ़ यही है कि उन के लिये बख़्शिश की दुआ मांगी जाए। (तफ़सीरे नईमी)

१६१) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस मुसलमान की नमाज़े जनाज़ा पर ऐसे ४० मुसलमान खड़े हो जाएं जिन्हों ने शिर्क न किया हो तो अल्लाह तआला उन की शफ़ाअत मय्यत के हक़ में क़ुबूल फ़रमाता है। (तफ़सीरे नईमी)

१६२) हज़रत मालिक बिन बुहैरह रदियल्लाह तआला अन्हु कहते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस मुसलमान की नमाज़े जनाज़ा पर मुसलमानों की तीन सफ़ें हो जाएं उस पर जन्नत वाजिब हो जाती है। (तफ़सीरे नईमी)

१६३) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी उम्मत उम्मते मर्हूमा है, वह क़ब्र में गुनाहों के साथ दाख़िल होगी और जब क़ब्र से निकलेगी तो उस पर कोई गुनाह नहीं होगा। अल्लाह तआला मोमिनों के इस्तिग़फ़ार की वजह से उसे गुनाहों से पाक साफ़ फ़रमा देगा। (तफ़सीरे नईमी)

१६४) रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत यसीरह रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमायाः तुम पर तस्बीह और तहलील और तक़दीम लाज़िम है और उन को उंगलियों के पोरों पर पढ़ा करो क्योंकि उन से पूछा जाएगा तो वह जवाब देंगे। लिहाज़ा इस को भूल न जाना कि तुम को अल्लाह की रहमत न भुला दे। (तफ़सीरे नईमी)

१६५) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह ९९ बीमारियों की दवा है, इन बीमारियों में से अदना बीमारी ग़म है। (तफ़सीरे नईमी)

१६६) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं सुब्हानल्लाह ख़लाइक़ की नमाज़ है, अल्हम्दुलिल्लाह शुक्र का कलिमा है और लाइलाहा इल्लल्लाह इख़लास का कलिमा है, अल्लाहु अकबर आसमान और ज़मीन को फेर देने वाली चीज़ है और जब बन्दा लाहौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह कहता है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह मेरा बन्दा इस्लाम लाया है और तमाम काम मेरे सिपुर्द कर दिये हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१६७) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुरआने मजीद की हर सूरत वही लिखने वालों से अलग अलग लिखवा कर उसे मेहफ़ूज़ फ़रमा लेते थे और यह सारे अजज़ा एक थैले या सन्दूक़ में डाल दिये जाते थे जो मस्जिदे

नबवी के एक सुतून के साथ रखा रहता था। इस सुतून का ज़िक्र बुख़ारी शरीफ़ किताबुस्सलात में मौजूद है जिस के क़रीब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमेशा नमाज़ के लिये क़ियाम फ़रमाते थे और इस का नाम उस्तुवानतुल मुस्हफ़ यानी मुस्हफ़ वाला सुतून और बाद में उस्तुवानतुल मुहाजिरीन मशहूर हुआ। (नुज़्हतुल क़ारी)

१६८) छोटे साइज़ के कुरआन शरीफ़ और हिमाइलें छापना मना है, पर अगर छप चुके हों तो उन्हें जलाना हराम है। (तफ़सीरे नईमी)

१६६) कलिमए तय्यिबा में लफ़्ज़ अल्लाह ही दाख़िल है जिस को पढ़ कर काफ़िर मोमिन बनता है। अगर कोई ला इलाहा इल्लर रहमान कह दे या उस के दूसरे नामों से कलिमा पढ़ ले तो मोमिन न होगा। (तफ़सीरे नईमी)

१७०) बिस्मिल्लाह शरीफ़ की तफ़सीर में मुफ़स्सिरीने किराम कहते हैं कि दिन रात में २४ घन्टे हैं जिन में पांच घन्टे नमाज़ों ने घेर लिये और बाक़ी १६ घन्टों के लिये बिस्मिल्लाह के १६ हुरूफ़ अता फ़रमाए गए। जो बिस्मिल्लाह का विर्द करता रहे इन्शा अल्लाह उस का हर घन्टा इबादत में गिना जाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

१७१) हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक शख़्स ज़हर लाया और कहा: आप इस ज़हर को पी लें अगर आप सही सलामत रहें तो हम समझेंगे कि इस्लाम सच्चा दीन है। हज़रत ख़ालिद ने बिस्मिल्लाह कह कर वह ज़हर पी लिया और अल्लाह के फ़ज़्ल से कुछ असर न हुआ। वह शख़्स यह देख कर ईमान ले आया। (तफ़सीरे नईमी)

१७२) हदीस शरीफ़ में है कि अगर इन्सान जिमाअ (संभोग) के वक़्त बिस्मिल्लाह न पढ़े तो उस सोहबत में शैतान शरीक हो जाता है और बच्चे में शैतानी सिफ़तें पैदा हो जाती हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१७३) कुरआने मजीद की जिन पांच सूरतों के शुरू में अल्हम्दुलिल्लाह है, उन में सूरए फ़ातिहा की हम्द बहुत ही जामेअ है। (तफ़सीरे नईमी)

१७४) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने ज़मानए रिसालत में कुरआने अज़ीम की हर आयत और हर सूरत तहरीर करा दी थी। कुरआने मजीद की तमाम सूरतों की तरतीब ख़ुद नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई थी सिवाए सूरए अन्फ़ाल के। इस सूरत को सूरए अअराफ़ के बाद सूरए तौबा से पहले हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने इज्तिहाद से रखा। इस के अलावा सूरए तौबा से पहले बिस्मिल्लाह नहीं लिखी, यह भी आप का इज्तिहाद था। कुछ सहाबा ख़ुसूसन हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने

अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने हज़रत उस्माने ग़नी से दो सवाल किये, एक यह कि सूरए अअराफ़ और सूरए तौबा की आयतें एक सौ से ज़्यादा हैं और सूरए अन्फ़ाल की आयतें एक सौ से कम, फिर आप ने यह छोटी सूरत बड़ी सूरतों के बीच में क्यों रख दी? दूसरा सवाल यह कि हर सूरत के शुरू में आप ने बिस्मिल्लाह लिखी है, सूरए तौबा के शुरू में क्यों न लिखी? हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस की बहुत सी वजहें बयान कीं। उन में से एक वजह का खुलासा यह है कि मुझे इस में शुबह पैदा हो गया था कि सूरए अन्फ़ाल और सूरए तौबा एक ही सूरत है या दो। इस के अलावा सूरए अन्फ़ाल के मज़ामीन सूरए तौबा के मज़ामीन से मिलते जुलते हैं इस लिये हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस की तरतीब नहीं फ़रमाई। इस वजह से मैं ने अन्फ़ाल और तौबा को मिला दिया और एक होने और दो होने का लिहाज़ करते हुए नाम अलग अलग रखे मगर बीच में बिस्मिल्लाह न लिखी। (बुख़ारी शरीफ़, तफ़सीरे रूहुल मआनी और जलालुद्दीन सियूती)

१७५) मुस्लिम शरीफ़ में है कि जो क़ौम अल्लाह का ज़िक्र करे उसे फ़रिश्ते परों से ढांप लेते हैं और रहमत उन्हें घेर लेती है और उन्हें सुकूने क़ल्ब नसीब होता है और अल्लाह फ़रिश्तों में उन का ज़िक्र फ़रमाता है।

१७६) अल्लाह के ज़िक्र की तीन क़िस्में बयान की गई हैं: एक, ज़िक्र बिल्लिसान यानी ज़बान से तस्बीह व तहमीद व तिलावत करना। दो, ज़िक्र बिल अरकान यानी ज़ाहिरी और बातिनी अंगों को अच्छे काम में मशग़ूल रखना और बुरे काम से रोकना। तीन, ज़िक्र बिल जिनान यानी दिल ही दिल में ज़िक्र। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

१७७) कुछ उलमाए किराम ने अल्लाह के ज़िक्र की दो क़िस्में बयान की हैं: एक, बिला वास्ता अल्लाह का ज़िक्र, दूसरा बिल वास्ता अल्लाह का ज़िक्र। ज़िक्रे बिला वास्ता अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात को याद करना और ज़िक्रे बिल वास्ता उस के प्यारों का ज़िक्र है। लिहाज़ा दुरूद शरीफ़, औलियाए किराम के क़िस्से सब अल्लाह का ज़िक्र ही तो हैं बल्कि रब से डराने के लिये उस के दुश्मनों का ज़िक्र भी अल्लाह ही का ज़िक्र है। (तफ़सीरे नईमी)

१७८) क़ुरआने मजीद तीन दिन से कम में ख़त्म नहीं करना चाहिये। तीन दिन में क़ुरआन शरीफ़ के ख़त्म करने का तरीक़ा यह है कि पहले दिन सूरए फ़ातिहा से सूरए यूनुस तक, दूसरे दिन सूरए यूनुस से सूरए लुक़मान तक और तीसरे दिन सूरए लुक़मान से आख़िर तक तिलावत करे। (सिराजुल अवारिफ़ फ़िल वसाया वल मआरिफ़)

१७९) पुकार चार तरह की है: गुनहगार की पुकार, अबरार (नेकों) की पुकार, दिल फ़िगार (टूटे दिल) की पुकार और बेक़रार की पुकार। दिल फ़िगार और बेक़रार की पुकार बहुत ही तासीर वाली है, यह पुकार अर्शे आज़म को हिला देती है। (तफ़सीरे नईमी)

१८०) उलमाए किराम के नज़्दीक दुआ के क़ुबूल होने के लिये शर्त है अक्ले हलाल (हलाल रोटी) और सिद्क़े मक़ाल (सच्चे बोल) सूफ़ियों के नज़्दीक है चश्मे गिरयाँ (रोती हुई आँख) और क़ल्बे बिरयाँ (जलता हुआ दिल) (तफ़सीरे नईमी)

१८१) सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि दुआ आसमान के दरवाज़े की कुन्जी है और हलाल ग़िज़ा इस कुन्जी के दाँते। (रूहुल बयान)

१८२) कुछ वक़्तों में दुआ ज़्यादा मक़बूल होती है। एक, जुम्ए के दिन दोनों ख़ुत्बों के दरमियान। दो, ख़ुत्बा और नमाज़ के दरमियान। तीन, जुम्ए के दिन सूरज डूबने के वक़्त। चार, बारिश के वक़्त। पांच, मुर्ग़ के अज़ान देते वक़्त। छ: हर रात के आख़िरी हिस्से में। सात, रमज़ान में इफ़्तार और सहरी के वक़्त। आठ, क़ुरआने पाक के ख़त्म होते वक़्त। नौ, अज़ान के बाद। दस, फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद। ग्यारह शबे क़द्र में। (तफ़सीरे नईमी)

१८३) कुछ जगहों पर दुआ ज़्यादा मक़बूल होती है। बैतुल्लाह शरीफ़ पर पहली नज़र पड़ने के वक़्त, तवाफ़ में मुल्तज़िम के पास, बैतुल्लाह में ज़मज़म के कुंवें के पास ज़मज़म पीते वक़्त, सफ़ा और मरवा पर सई में, मक़ामे इब्राहीम के पीछे, अरफ़ात, मुज़्दलिफ़ा और मिना में, तीनों जमरात के पास, नबियों के मज़ारात के पास, अल्लाह के वलियों की क़ब्रों के पास। (रूहुल बयान)

१८४) कुछ लोगों की दुआ ज़्यादा क़ुबूल होती है: रोज़ादार की इफ़्तार के वक़्त, आदिल बादशाह की, मज़लूम इन्सान की, माँ बाप की, मुसाफ़िर की, बीमार की, घर पहुंचने से पहले हाजी की, मुसलमान के लिये उस के पीछे दुआ। (मिश्कात शरीफ़)

१८५) कअब अहबार का क़ौल है मेरे नज़्दीक अल्लाह के ख़ौफ़ से रोना अपने वज़न के बराबर सोना ख़ैरात करने से अफ़ज़ल है। (तफ़सीरे नईमी)

१८६) हज़रत मूसा कलीमुल्लाह अलैहिस्सलाम पर अल्लाह तआला ने वही नाज़िल की कि सब से बड़ा ज़ोहद दुनिया से अलग रहना और सब से अफ़ज़ल तक़र्रुब हमारी हराम की हुई चीज़ों से परहेज़ करना और सब से बेहतर इबादत हमारे ख़ौफ़ से रोना है। (तफ़सीरे नईमी)

१८७) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब ख़ौफ़े

इलाही से आदमी के रौंगटे खड़े हो जाते हैं तो उस के गुनाह इस तरह झड़ते हैं जिस तरह दरख़्त के ख़ुश्क पत्ते। (हयातुल कुलूब)

१८८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हर किसी की दुआ क़ुबूल होती है शर्त यह है कि वह जल्दी न करे और यूँ न कहे कि मैं ने दुआ मांगी थी वह क़ुबूल नहीं हुई। (तफ़सीरे नईमी)

१८९) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दुनिया और इस में जो कुछ है, लअनत की गई चीज़ है मगर वह जिस का ताल्लुक़ अल्लाह के ज़िक्र से है, रहमत के क़ाबिल है। (तफ़सीरे नईमी)

१९०) मुफ़स्सिरीने किराम का कहना है कि क़ुरआने करीम जब लौहे मेहफ़ूज़ ही में था तो उस में अल्फ़ाज़ व मआनी, मज़ामीन, इरफ़ान, ईमान सब कुछ था मगर सोज़ो गुदाज़ नहीं था। यह सिफ़त क़ुरआन में जब पैदा हुई जब कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे पढ़ लिया। आप की ज़बाने मुबारक से छन कर सोज़ो गुदाज़, दर्दे इश्क़ सब कुछ इस में आगया। (तफ़सीरे नईमी) नज़्मी कहता है:

यूँ तो क़ुरआन है अल्लाह तआला का कलाम
इस से आती है किसी मुश्के दहन की ख़ुश्बू

१९१) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़ुरआने करीम की आयतें छः तरह की हैं। एक, कुछ वह आयतें जिन का ज़हूर क़ुरआन नाज़िल होने से पहले हो चुका। दो, कुछ वह आयतें हैं जिन का ज़हूर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में हो चुका। तीन, कुछ वह आयतें हैं जिन का ज़हूर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद यानी सहाबए किराम के ज़माने में हुआ। चार, कुछ वह आयतें हैं जिन का ज़हूर क़ियामत के क़रीब होगी। पाँच, कुछ वह आयतें हैं जिन का ज़हूर क़ियामत में होगा। छः, कुछ वह आयतें हैं जिन का ज़हूर क़ियामत के बाद होगा। (तफ़सीरे नईमी)

१९२) क़ुरआने पाक में ७२२ आयतें ऐसी हैं जो ग्यारह क़ानूनी मुआमलात जैसे कि मीरास, शादी ब्याह, जहेज़, तलाक़, तोहफ़े तहाइफ़, वसियत, ख़रीद फ़रोख़्त, सरपरस्ती, किफ़ालत और अपराध किये जाने से ताल्लुक़ रखती हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१९३) मक्कए मुअज़्ज़मा में १५ जगह दुआ बहुत मक़बूल होती है। मुल्तज़िम यानी संगे अस्वद और कअबे के दरवाज़े के दरमियान, मीज़ाबे रहमत यानी कअबे के परनाले के नीचे, रुक्ने यमानी के पास, सफ़ा और

मरवा के बीच, संगे अस्वद और मक़ामे इब्राहीम के पास, ख़ानए कअबा के अन्दर, मिना और मुज़्दलिफ़ा में, अरफ़ात में, तीनों जमरों के पास, ज़मज़म के कुंवें पर और ज़मज़म पीते वक़्त। (तफ़सीरे नईमी)

१६४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कुरआन पढ़ा करो इसलिये कि यह कुरआन क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों की शफ़ाअत करने आएगा। (तफ़सीरे नईमी)

१६५) हदीसे कुदसी में आया है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: जिस शख़्स को कुरआने करीम (की तिलावत करने, याद करने या ग़ौरो फ़िक्र करने और तफ़सीर व तर्जमा वग़ैरा करने) की मुश्ग़ूलियत ने मेरा ज़िक्र करने और मुझ से दुआएं मांगने से रोक दिया (यानी ज़िक्र करने और दुआ मांगने की फ़ुर्सत न मिली) तो मैं उस शख़्स को उस से बढ़ कर देता हूँ जो मैं दुआएं (और हाजतें) मांगने वालों को देता हूँ (यानी उस की सारी हाजतें और मुरादें पूरी कर देता हूँ)। (बुख़ारी शरीफ़)

१६६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह के कलाम को और तमाम कलामों पर ऐसी ही फ़ज़ीलत (और बरतरी) हासिल है जैसी खुद अल्लाह तआला को अपनी तमाम मख़लूक़ पर। (तफ़सीरे नईमी)

१६७) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम कुरआन सीखो (और इस का इल्म हासिल करो) और इसे पढ़ो पढ़ाओ इस लिये कि कुरआन की मिसाल उस शख़्स के हक़ में, जिस ने कुरआन सीखा (और इस का इल्म हासिल किया) फिर इस को पढ़ा पढ़ाया भी और इस पर अमल भी किया (ख़ास कर तहज्जुद की नमाज़ में पढ़ा), ऐसी है जैसे मुश्क से भरी हुई एक (मुंह खुली) थैली जिस की महक हर जगह पहुंचती हो, और उस शख़्स के हक़ में जो कुरआन को सीखता तो है और इस का इल्म भी हासिल करता है मगर (रात को ग़ाफ़िल पड़ा) सोता रहता है (न तहज्जुद में कुरआन पढ़ता है और न उस पर अमल करता है) हालांकि उस के (दिल के) अन्दर कुरआन मौजूद (व मेहफ़ूज़) है, ऐसी है जैसे एक मुश्क से भरी हुई थैली जिस का मुंह कस कर बांध दिया गया हो। (नुज़्हतुल मजालिस)

१६८) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बेशक अल्लाह तआला के ६६ नाम हैं, जो कोई इन्हें याद करे और पढ़े और इस पर अमल करे, वह जन्नत में दाख़िल हो। (बुख़ारी, मुस्लिम)

१६६) रिवायत है कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लममस्जिद

में तशरीफ़ फ़रमा थे कि तभी हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हाज़िर आए और दुआए गंजुल अर्श सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तालीम फ़रमाई और इस दुआ के बहुत से फ़ज़ाइल बयान किये। उन्हों ने फ़रमाया कि इस दुआए मुबारका के पढ़ने वाले को अल्लाह तआला तीन चीज़ें इनायत फ़रमाएगा: एक, उसकी रोज़ी में बरकत देगा। दो, उस को ग़ैब से रोज़ी अता फ़रमाएगा। तीन, उस के दुशमन आजिज़ और ज़लील रहेंगे। (नुज़्हतुल मजालिस, अल्लामा अब्दुर रहमान सफ़्वी शाफ़ई)

२००) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: वह लम्बे सफ़र में है, उस का हाल बुरा है, सर से पाँव तक ख़ाक से अटा हुआ है, दोनों हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर कहता है ऐ रब, ऐ रब! मगर उस की ख़ुराक हराम है, उस का पीना हराम है, उस का लिबास हराम का है, हराम की ग़िज़ा पर पल बढ़ रहा है, भला ऐसे शख़्स की दुआ कैसे सुनी जाएगी। (मुस्लिम शरीफ़)

२०१) रिवायत है कि क़ियामत में किसी मोमिन की नेकियां अगर कम हो जाएंगी तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उंगली के एक पोरे के बराबर एक पर्चा निकाल कर मीज़ान (तराज़ू) के पलड़े पर रख देंगे जिस से नेकियों का पल्ला भारी हो जाएगा। वह मोमिन कहेगा: मेरे माँ बाप आप पर क़ुरबान, आप कौन हैं? आप फ़रमाएंगे: मैं तेरा नबी हूँ और यह वह दुरूद है जो तू ने मुझ पर (दुनिया में) पढ़ा था। मैं ने तेरी हाजत के वक़्त इस का अज्र अदा कर दिया। (तफ़सीरे नईमी)

२०२) रिवायत है कि एक शख़्स हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की कि दुनिया मेरी तरफ़ से पीठ फेर कर चली गई है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: फ़रिश्तों की तस्बीह पढ़ा करो यानी सुब्ह सादिक़ के बाद सूरज निकलने से पहले सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अज़ीम सौ बार पढ़ा करो। यह सुन कर वह शख़्स चला गया और कुछ रोज़ बाद आया और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला ने मुझे इतना अता किया है कि मेरे घर में रखने की जगह नहीं रही। (मवाहिबुल लदुन्निया)

२०३) बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि जब कोई काम शुरू करो तो कहो बिस्मिल्लाह। छींक आए तो कहो अल्हम्दु लिल्लाह। अल्लाह के नाम पर दो तो कहो फ़ी सबीलिल्लाह। कुछ करने का इरादा हो तो कहो इन्शा अल्लाह। कोई अच्छी ख़बर सुनो तो कहो सुब्हानल्लाह। किसी को तकलीफ़ में देखो तो कहो

या अल्लाह। किसी की तारीफ़ करना हो तो कहो माशा अल्लाह। सोकर उठो तो कहो ला इलाहा इल्लल्लाह। शुक्रिया अदा करना हो तो कहो जज़ाकल्लाह। किसी को रुख़सत करो तो कहो फ़ी अमानिल्लाह। जब ख़ुशगवारी हो तो कहो फ़तबारकल्लाह। जब नगवारी हो तो कहो नऊज़ो बिल्लाह। ग़लत काम देखो तो कहो अस्तग़फ़िरुल्लाह। जब मदद दरकार हो तो कहो या रसूलल्लाह। मौत की ख़बर सुनो तो कहो इन्ना लिल्लहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

२०४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: दुआ के सिवा कोई चीज़ क़ज़ा (तक़दीर के फ़ैसले) को रद नहीं कर सकती और नेकी (अच्छे काम) के सिवा कोई चीज़ उम्र को बढ़ा नहीं सकती। (तफ़सीरे नईमी)

२०५) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: क़ज़ा व क़द्र से बचने की कोई तदबीर फ़ाइदा नहीं देती, हाँ अल्लाह से दुआ मांगना उस आफ़त और मुसीबत में भी नफ़ा पहुंचाता है जो नाज़िल हो चुकी और उस मुसीबत में भी जो अभी तक नाज़िल नहीं हुई और बेशक बला नाज़िल होने को होती हो कि इतने में दुआ उस से जा मिलती है। क़ियामत तक इन दोनों में कशमकश रहेगी। और इन्सान दुआ की बदौलत उस बला से बचा रहता है (नुज़्हतुल मजालिस)

२०६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जो शख़्स अल्लाह तआला से कोई सवाल नहीं करता अल्लाह तआला उस शख़्स से नाराज़ हो जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

२०७) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स यह चाहे कि अल्लाह तआला उस की दुआ सख़्तियों और मुसीबत के वक़्त क़ुबूल फ़रमाए उस को चाहिये कि वह फ़राख़ी और ख़ुशहाली में भी कसरत से दुआ मांगा करे। (तफ़सीरे नईमी)

२०८) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि दुआ मोमिन का हथियार है, दीन का सुतून है और आसमान व ज़मीन का नूर है। (तफ़सीरे नईमी)

२०९) हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि आख़िरी बात जिस पर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जुदा हुआ वह यह है कि मैं ने आप से पूछा कौन सा अमल अल्लाह तआला को सब से ज़्यादा पसन्द है? आप ने फ़रमाया: वह अमल यह है कि तुम्हें इस हाल में मौत आए कि तुम्हारी ज़बान अल्लाह के ज़िक्र से भीगी हो। (तफ़सीरे नईमी)

२१०) एक हदीस में आया है कि एक आदमी की गोद में दिरहम भरे हों

और वह उन को बराबर तक़सीम कर रहा हो और दूसरा आदमी बराबर में अल्लाह का ज़िक्र कर रहा हो तो अल्लाह का ज़िक्र करने वाला उस दिरहम तक़सीम करने वाले से अफ़ज़ल और आला होगा। (तफ़सीरे नईमी)

२११) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब तुम जन्नत के बाग़ों में गुज़रा करो तो सैर होकर चर लिया करो यानी अल्लाह के ज़िक्र की नेअमत ख़ूब अच्छी तरह हासिल कर लिया करो। सहाबा ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! जन्नत के बाग़ क्या हैं? आप ने फ़रमाया: ज़िक्र के हल्के। (तफ़सीरे नईमी)

२१२) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: आदमी के दिल की दो कोठरियां होती हैं एक में फ़रिश्ता रहता है और दूसरी में शैतान। जब वह शख़्स अल्लाह के ज़िक्र में मसरूफ़ हो जाता है तो शैतान पीछे हट जाता है और जब अल्लाह का ज़िक्र नहीं होता तो शैतान अपनी चोंच उस के दिल में रख देता है यानी उस के दिल पर छा जाता है और तरह तरह के वसवसे डालता रहता है। (तफ़सीरे नईमी)

२१३) हदीस शरीफ़ में आया है जिस शख़्स ने फ़ज्र की नमाज़ जमाअत के साथ अदा की और फिर सूरज निकलने तक वहीं बैठा हुआ अल्लाह का ज़िक्र करता रहा, फिर दो रकअतें इश्राक़ की पढ़ीं फिर मस्जिद से आया तो उस को एक हज और एक उमरे की मानिन्द अज्र मिलेगा, पूरे हज और उमरे का। इसे सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बार फ़रमाया। (तफ़सीरे नईमी)

२१४) एक हदीस में आया है कि एक पहाड़ दूसरे पहाड़ को उस का नाम लेकर आवाज़ देता है कि ऐ फुलाँ पहाड़ क्या तेरे पास से कोई ऐसा आदमी गुज़रा जिस ने गुज़रते वक़्त अल्लाह का ज़िक्र किया हो? तो जब वह जवाब में कहता है: हाँ। तो वह खुश हो जाता है और उसे मुबारकबाद देता है। (नुज्हतुल मजालिस)

२१५) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कियामत के दिन जन्नत वाले किसी चीज़ पर अफसोस न करेंगे सिवाए उस घड़ी के जो उन पर गुज़र गई और उस में उन्हों ने अल्लाह का ज़िक्र न किया। (काश उस घड़ी में भी हम अल्लाह का ज़िक्र करते और इस का भी सवाब पाते।) (बुख़ारी शरीफ़)

२१६) एक हदीस में आया है कि तुम इतना कसरत से अल्लाह का ज़िक्र किया करो कि लोग तुम्हें दीवाना कहने लगें। (नुज्हतुल मजालिस)

२१७) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मैं ने

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सीधे हाथ की उंगलियों पर तस्बीह पढ़ते हुए देखा है। (शमाइले तिर्मिज़ी)

२१८) हक़ तआला के तीन हज़ार नाम हैं, हज़ार तो फ़रिश्ते जानते हैं और हज़ार अल्लाह के नबी और तीन सौ तौरात में हैं और तीन सौ इन्जील में और तीन सौ ज़बूर में और ९९ कुरआने मजीद में और एक अल्लाह के इल्म में छुपा हुआ है। जिस ने अल्लाह तआला को उन तीन नामों के साथ याद किया जो बिस्मिल्लाह में हैं तो उस ने हक़ तआला को उन तीन हज़ार नामों के साथ याद किया। (तफ़सीर बहरे मव्वाज)

२१९) हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मैं ने सुना कि क़ियामत के दिन एक गिरोह को जन्नत में जाने का हुक्म होगा। वह लोग जन्नतत की राह भूल जाएंगे और हैरत के आलम में खड़े रह जाएंगे। सहाबा ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! वह कौन गिरोह होगा? फ़रमाया: यह वह लोग होंगे कि मेरा नाम उन की मजलिस में लिया जाता और यह लोग मेरे ऊपर दुरूद न भेजते। (सलाते नासिरी)

२२०) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो कोई जुमेरात के दिन ज़ुहर और अस्त्र के बीच दो रकअत नमाज़ पढ़े, पहली रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सौ बार आयतल कुर्सी पढ़े और दूसरी रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़लास सौ बार पढ़े और मुझ पर सौ बार दुरूद भेजे तो अल्लाह तआला उसे रजब, शअबान और रमज़ान के रोज़ों का सवाब देगा और हज्जे बैतुल्लाह का सवाब अता फ़रमाएगा और उस के नामए आंमाल में हर मोमिन की एक एक नेकी लिखेगा। (सलाते नासिरी)

२२१) आयतल कुर्सी अव्वल से आख़िर तक काफ़िरों और बद मज़हबों का रद है। ख़ालिक़ का इन्कार करने वाले दहरियों का रद अल्लाहु से हुआ, ला इलाहा इल्ला हू में मुश्रिकों का रद, अल हय्युल क़य्यूम में अल्लाह तआला की सिफ़ात का इन्कार करने वालों का रद हुआ, लहू मा फ़िस्समावाति में मजूस का रद है जो दो ख़ुदा मानते हैं एक यज़दान, अच्छाई का ख़ालिक़, दूसरा अहरमन, बुराई का ख़ालिक़, इस में मुअतज़िली की भी पूरी तर्दीद हो गई जो हर बन्दे को अपने बुरे आमाल का ख़ालिक़ मानते हैं। मन ज़ल्लज़ी में बुतों की शफ़ाअत मानने वालों का रद है, इल्ला बि इज़् निही में मुअतज़िला और आम देवबन्दियों और वहाबियों का रद है जो शफ़ाअत का इन्कार करते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

२२२) बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि हमें आयतल कुर्सी अर्श के नीचे इनायत फ़रमाई गई। (दुर्रे मन्सूर)

२२३) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की एक और रिवायत है कि आयतल कुर्सी चहारुम क़ुरआन है। (मुस्नदे अहमद)

२२४) जिस घर में आयतल कुर्सी पढ़ी जाए उस घर से शैतान एक माह तक और जादूगर चालीस दिन तक दूर रहते हैं। (तफ़सीरे कबीर)

२२५) जो कोई सोते वक़्त बिस्तर पर लेट कर आयतल कुर्सी पढ़ ले तो उस का और उस के पड़ोसी का घर चोरी, डकैती और आग लगने ग़र्ज़ सारी नागहानी मुसीबतों से सुब्ह तक मेहफ़ूज़ रहेगा। (तफ़सीरे कबीर)

२२६) हज़रत नोअमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने आसमान और ज़मीन पैदा करने से दो हज़ार साल पहले एक किताब लिखी थी उस से दो आयतें नाज़िल फ़रमाई जिन पर सूरए बक़रा को ख़त्म फ़रमाया। जिस घर में तीन रातें इन आयतों को पढ़ा जाए तो शैतान उस के क़रीब भी नहीं फटक सकता। (तिर्मिज़ी, बुख़ारी, दारमी वग़ैरा)

२२७) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जो शख़्स सुब्ह के वक़्त सूरए हामीम सज्दा इलैहिल मसीर तक और आयतल कुर्सी पढ़ेगा उस की शाम तक इस के ज़रिये हिफ़ाज़त की जाएगी और जो इन दोनों को शाम के वक़्त तिलावत करेगा उसकी इन के ज़रिये सुब्ह तक हिफ़ाज़त की जाएगी। (तिर्मिज़ी, मिश्कात)

२२८) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ नबी आप अपनी उम्मत को फ़रमा दें कि वह लाहौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह दस बार सुब्ह के वक़्त पढ़ा करें और दस बार शाम को और दस बार सोने के वक़्त पढ़ा करें तो नींद के वक़्त उन से दुनिया की मुसीबतें हटाई जाएंगी। शाम के वक़्त शैतान के क़रीब से दूर किये जाएंगे और सुब्ह के वक़्त मेरा सख़्त ग़ुस्सा ख़त्म होगा। (दैलमी)

२२९) बुस्तानुत तफ़ासीर में है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स रोज़ाना दस बार अऊज़ु बिल्लाह पढ़ लिया करे तो हक़ तआला उस पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देता है जो उसे शैतान से बचाता

है। (बुस्तानुत तफ़ासीर)

२३०) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स रोज़ाना १०० बार ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू लहुल मुल्को वलहुल हम्दो वहुवा अला कुल्ले शैइन क़दीर पढ़ता है उस को दस ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है, उस के नामए आमाल में सौ नेकियाँ लिखी जाती हैं और उस के दस गुनाह मिटते हैं और यह कलिमा उस के लिये उस दिन शाम तक शैतान से पनाह देता है। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी वग़ैरा)

२३१) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: शैतान का सुर्मा भी है, चटनी भी और निसवार भी। चटनी तो झूट बोलना है और निसवार गुस्सा करना और सुर्मा नींद करना है। (तर्ईदुल लहफ़ान)

२३२) कुरआने करीम से इन्सानों को दो फ़ाइदे हासिल हुए, हलाक करने वाली बातों से निजात और दर्जों में तरक़्क़ी। हलाक करने वाली कुल सात चीज़ें हैं: कुफ़्र, शिर्क, जिहालत, गुनाह, बुरे अख़लाक़, हिजाबे सिफ़ात और हिजाबे नफ़्स। दर्जों की तरक़्क़ी के आठ अस्बाब हैं: अल्लाह की मअरिफ़त, तौहीद, इल्म, इताअत, अच्छे अख़लाक़, जज़्बे हक़्क़ानी, अनानियत से फ़ना और हुवियत से बक़ा। (तफ़सीरे नईमी)

२३३) सूरए बक़रा की आख़िरी दो आयतें यानी आमनर रसूल से आख़िर तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मेअराज में बिला वास्ता अता हुई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लामकाँ में पहुंच कर यही दुआएं मांगीं। (दुर्रे मन्सूर, मिश्कात)

२३४) हाकिम और बेहक़ी ने हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: रब ने जिन आयतों पर सूरए बक़रा ख़त्म फ़रमाई वह अर्श का ख़ज़ाना हैं उन्हें ख़ुद भी सीखो और अपने बीवी बच्चों को भी सिखाओ। यह सलात हैं, यह क़ुरआन हैं, यह दुआएं हैं। (तफ़सीरे नईमी)

२३५) हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम फ़रमाते हैं: बड़ा बेवक़ूफ़ है वह शख़्स जो सोते वक़्त सूरए बक़रा की आख़िरी आयतें न पढ़े। (दारमी)

२३६) हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: मैं ने एक बार शैतान को क़ैद कर लिया। वह बोला: अगर आप मुझे छोड़ दें तो मैं आप

को बड़ा उमदा अमल बताऊं। मैं ने कहा: बता। वह बोला: अगर कोई इन्सान रात को सोते वक़्त सूरए बक़रा की आख़िरी आयतें पढ़ लिया करे तो हम में से कोई उस घर में रात भर नहीं जा सकता। (तफ़सीरे नईमी)

२३७) बुज़ुर्गों का कहना है कि अगर मियाँ बीवी में ना-इत्तिफ़ाक़ी हो तो मियाँ बीवी को या बीवी मियाँ को सूरए आले इमरान की १४ वीं आयत ज़ुय्यिना लिन्नास से हुस्नल मआब तक सात बार सात इलाइचियों पर दम करके अव्वल व आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर खिलाए। इन्शा अल्लाह उन में मुहब्बत पैदा हो जाएगी। (तफ़सीरे नईमी)

२३८) हर मोमिन को चाहिये कि तन्हा जंगल में जाकर एक आध बार ऊंची आवाज़ से कलिमा पढ़ दे ताकि वहाँ के पेड़, पौदे और पत्थर उस के ईमान के गवाह हो जाएं। (तफ़सीरे नईमी)

२३९) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नक़्ल करते हैं कि ला इलाहा इल्लल्लाह और इस्तिग़फ़ार को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करो। शैतान कहता है कि मैं ने लोगों को गुनाह से हलाक किया और उन्हों ने मुझे ला इलाहा इल्लल्लाह और इस्तिग़फ़ार से हलाक किया। जब मैं ने देखा कि यह तो कुछ न हुआ तो मैं ने उन को नफ़सानी ख़्वाहिशात से हलाक किया और वह अपने आप को हिदायत पर समझते रहे। (तफ़सीरे नईमी)

२४०) इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत हसने बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि से नक़्ल किया वह फ़रमाते हैं कि हमें रिवायत पहुंची कि शैतान कहता है कि मैं ने उम्मते मुहम्मदिया के सामने गुनाहों को ज़ेबो ज़ीनत के साथ पेश किया मगर उन के इस्तिग़फ़ार ने मेरी कमर तोड़ दी तो मैं ने उन के पास ऐसे गुनाह पेश किये जिन्हें वह गुनाह ही नहीं समझते कि उन से इस्तिग़फ़ार करें और वह उन की नफ़्सानी ख़्वाहिशात हैं कि वह उन्हें दीन समझ कर करते हैं। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब)

२४१) दुआए जमीला अल्लाह तआला के नामों पर आधारित एक मशहूर व मअरूफ़ दुआ है। बुज़ुर्गों का कहना है कि जिस शख़्स ने सुब्ह की नमाज़ के बाद इन नामों को पढ़ा उस ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बराबर सौ हज अदा किये और जिस शख़्स ने इसे ज़ुहर की नमाज़ के बाद पढ़ा उस ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बराबर तीन सौ हज अदा किये और जिस शख़्स ने इसे अस्र की नमाज़ के बाद पढ़ा उस ने हज़रत ईसा रूहुल्लाह अलैहिस्सलाम के बराबर पांच सौ हज अदा किये और जिस शख़्स ने इस

दुआ को मग़रिब की नमाज़ के बाद पढ़ा उस ने हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम के बराबर सात सौ हज अदा किये और जिस शख़्स ने इसे इशा की नमाज़ के बाद पढ़ा उस ने हज़रत मूसा कलीमुल्लाह अलैहिस्सलाम के बराबर हज़ार हज अदा किये और जिस ने तहज्जुद की नमाज़ के बाद इसे पढ़ा उस ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बराबर लाख हज अदा किये और हज़ार कुरआन ख़त्म किये और हज़ार गुलाम आज़ाद किये और हज़ार भूखे प्यासों का पेट भरा। (गन्जीनए अकबरी)

२४२) हज़रत शैख़ सरी सक़्ती रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं: मैं ने शैख़ जुरजानी के पास पिसे हुए सत्तू देखे तो पूछा आप सत्तू के अलावा और कुछ क्यों नहीं खाते? उन्हों ने जवाब दिया: मैं ने खाना चबाने और सत्तू पीने में सत्तर तस्बीहों का अन्दाज़ा लगाया है, चालीस साल हुए मैं ने रोटी खाई ही नहीं ताकि इन तस्बीहों का वक़्त ज़ाया न हो। (मुकाशिफ़तुल कुलूब)

२४३) हज़रत अबू मुहम्मद अल असवद रहमतुल्लाहि अलैहि तीस बरस कअबे के मुजाविर रहे मगर किसी ने उन्हें खाते पीते नहीं देखा और न ही वह एक पल अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हुए। (मुकाशिफ़तुल कुलूब)

२४४) हज़रत इब्राहीम बिन हाकिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं: मेरे वालिदे मोहतरम को जब नींद आने लगती तो वह दरिया के अन्दर तशरीफ़ ले जाते और अल्लाह की तस्बीह करने लगते जिसे सुन कर मछलियां जमा हो जातीं और वह भी तस्बीह करने लगतीं। (मुकाशिफ़तुल कुलूब)

२४५) अल्लाह तआला ने मेअराज की रात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़रमाया: ऐ अहमद! अगर आप को तमाम लोगों से ज़्यादा परहेज़गार बंनना पंसन्द है तो दुनिया से बेरग़बती और आख़िरत से रग़बत कीजिये। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अर्ज़ की: इलाहल आलमीन! दुनिया से बेरग़बती कैसे हो? फ़रमाने इलाही हुआ: दुनिया के माल से ज़रूरत भर की खाने पीने की चीज़ें लीजिये और बस, कल के लिये ज़ख़ीरा मत कीजिये और हमेशा मेरा ज़िक्र करते रहिये। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दरयाफ़्त फ़रमाया: हमेशा ज़िक्र करने की आदत किस तरह हासिल हो? जवाब मिला: लोगों से अलग रहिये, नमाज़ को और भूख को अपनी ग़िज़ा बनाइये। (मुकाशिफ़तुल कुलूब)

२४६) हदीस शरीफ़ में आया है कि लाहौल कुन्जी हर भलाई की है और दवा हर मर्ज़ और ग़म और अलम की। (बुख़ारी)

२४७) अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते आठ हैं। चार कहते हैं सुब्हानका व

बिहम्दिका अला इल्मिका और चार कहते हैं· सुब्हानका व बिहम्दिका अला अफ़्विका बअदा कुदरतिका। (फ़ासी)

२४८) रसूले मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स तुम में से मुझ पर बहुत दुरूद भेजेगा तो वह जन्नत में बहुत बीवियों वाला होगा। इस हदीस में बीवियों से मुराद हूरें हैं। औरतें जन्नत में सोलह बरस की होंगी और मर्द ३३ बरस के। हूर के मानी गोरी ख़ूबसूरत हसीन व जमील औरत के हैं। अगर कोई जन्नती हूर अपनी छुंगलिया अन्धेरी रात में दुनिया के अन्दर दिखा दे तो दुनिया रौशन और उजली हो जाए और तारीकी बिल्कुल दूर हो जाए। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

२४९) कुछ सहाबए किराम से रिवायत है कि जिस जगह सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र किया जाता है या उन पर दुरूद पढ़ा जाता है तो उस जगह से एक ऐसी ख़ुश्बू उड़ती है कि सातों आसमानों को फ़ाड़ कर अर्शे इलाही तक पहुंच जाती है और उस दुरूद की ख़ुश्बू अल्लाह तआला की जो मख़लूक़ ज़मीन पर है उन तक पहुंचती है मगर जिन्न और इन्सान इस ख़ुश्बू को नहीं पाते क्योंकि अगर वह इस की ख़ुश्बू पालें तो इसी की लज़्ज़त में रह जाएं और सारा कारोबार छोड़ दें और जिस फ़रिश्ते और मख़लूक़ को यह ख़ुश्बू पहुंचती है तो वह उस मजलिस के लोगों के लिये बेशुमार इस्तिग़फ़ार करते हैं और उन के लिये अनगिनत नेकियां लिखी जाती हैं और सब के दर्जे बलन्द किये जाते हैं। (नुज़्हतुल मजालिस)

२५०) एक बुज़ुर्ग अपने मुरीदों को चिल्ला कराते। फ़राग़त के बाद उस के सामने अल्लाह के ९९ नाम पढ़ते फिर पूछते कि किस नाम पर तेरे दिल की कैफ़ियत बदली। वह जो नाम बताता, फ़रमाते इसी नाम को दिल में पुकार, इसी का फ़ैज़ तुझे मिलेगा। (तफ़सीरे कबीर)

२५१) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अरबी हैं तो कुरआन भी अरबी। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्की थे तो कुरआनी आयतें मक्की बनीं। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदनी हो गए तो कुरआनी आयतें भी मदनी हो गईं। जितना पढ़ कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ में रुकूअ कर लिया तो उस हिस्से का नाम रुकूअ हो गया, जिस जगह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रुक कर सांस ले ली वह जगह आयत बन गई, जिस जगह बिना सांस तोड़े ठहरे, वह जगह सक्ता कहलाई। कुरआने मजीद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आईनादार है। (तफ़सीरे नईमी)

२५२) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जो कोई हर

फ़र्ज़ नमाज़ के पीछे आयतल कुर्सी पढ़ लिया करे तो उस में और जन्नत में सिर्फ़ मौत की आड़ होगी कि मरते ही जन्नत में दाख़िल हो जाए और इसे हमेशा पढ़ते रहने वाला सिद्दीक़ों और आबिदों के दर्जे में गिना जाएगा। (तफ़सीरे कबीर)

२५३) जो कोई पंजगाना नमाज़ के बाद आयतल कुर्सी पढ़े और जब वला यऊदुहू हिफ़्ज़ु हुमा तक पहुंचे तो अपनी पांचों उंगलियों के पोरे दोनों आँखों पर रख कर ११ बार यह लफ़्ज़ पढ़े फिर एक बार वहुवल अलिय्युल अज़ीम पढ़ कर अपने पोरों पर दम करके आँखों पर फेरे तो इन्शा अल्लाह अन्धा न होगा। (तफ़सीरे नईमी)

२५४) जो कोई फ़ज्र और मग़रिब के बाद अव्वल आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ और बीच में ४१ बार या हय्यु या क़य्यूम पढ़ लिया करे तो इन्शा अल्लाह ख़ातिमा बिल ख़ैर नसीब होगा। (तफ़सीरे नईमी)

२५५) सूरए आले इमरान का नाम तौरात शरीफ़ में तय्यिबा है। (रूहुल मआनी)

२५६) सूरए आले इमरान का नाम सूरए इमाम, सूरए कन्ज़, सूरए मुजादिला और सूरए इस्तिग़फ़ार भी है। (तफ़सीरे नईमी)

२५७) हाकिम ने हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से नक़्ल किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ुरआने पाक सात चीज़ों को लेकर उतराः मुमानिअत, हुक्म, हलाल, हराम, मोहकम, मुतशाबह और मिसालें। लिहाज़ा तुम हलाल को हलाल जानो, हराम को हराम समझो, अहकाम पर अमल करो, मुमानिअत से बचो, मिसालों से इबरत पकड़ो, मोहकम पर अमल करो और मुतशाबिहात पर ईमान लाओ और कह दो कि रब ने जो कुछ भेजा है उस पर हमारा ईमान है। (तफ़सीरे नईमी)

२५८) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैंने मेअराज की रात नूर का एक शहर देखा जो दुनिया से हज़ार हिस्से बड़ा और अर्शे इलाही के नीचे नूर की ज़न्जीरों में लटका हुआ है। उस के लाख दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े में एक बाग़ है जिस में रहमत का फ़र्श बिछा हुआ है। हर बाग़ में नूर का एक क़िला, हर क़िले में नूर का एक घर, हर घर में नूर के सत्तर कमरे, हर कमरे में नूर की एक कोठरी, हर कोठरी पर नूर का एक बालाख़ाना है, हर बालाख़ाने के चार सौ दरवाज़े, हर दरवाज़े का एक किवाड़ सोने का एक चाँदी का। हर दरवाज़े के सामने नूर का एक तख़्त, हर तख़्त पर नूर का फ़र्श, हर फ़र्श पर

एक हूर बैठी है, अगर दुनिया में वह अपनी एक छुंगली दिखा दे तो उस की रौशनी से चाँद और सूरज मांद हो जाएं। मैंने कहा: इलाही यह किस नबी के लिये है या सिद्दीक़ के लिये? जवाब आया: यह उन के लिये है जो रात की घड़ियों और दिन के घन्टों में ज़िक्रे इलाही किया करते हैं और मैंने उन के लिये कुछ और ज़्यादा रख छोड़ा है क्योंकि मेरा हाथ निहायत कुशादा है। (तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन)

२५९) उलमा का क़ौल है कि सात चीज़ें क़ब्र में रौशनी का कारण बनती हैं: (१) इबादत में इख़्लास। (२) माँ बाप के साथ अच्छा बरताव। (३) रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक (४) ज़िन्दगी को गुनाहों से बचाना (५) नफ़्सानी ख़्वाहिशात से बचना (६) अल्लाह तआला के हुक्म की पाबन्दी करते रहना (७) ज़िक्रे इलाही की कसरत। (तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन)

२६०) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने अर्श के नीचे नूर का एक दरिया पैदा किया, फिर दो परों का एक फ़रिश्ता बनाया उस का एक पर मश्रिक़ में, दूसरा मग़रिब में, सर अर्श के ऊपर और पाँव सातवीं ज़मीन के नीचे हैं। माहे शअबान में जो शख़्स दुरूद भेजता है तो अल्लाह तआला उस फ़रिश्ते को दरिया में ग़ोता खाने का हुक्म देता है। फ़रिश्ता ग़ोता खाने के बाद अपने पर झाड़ता है। उस से जितने क़तरे निकलते हैं अल्लाह तआला हर क़तरे से एक फ़रिश्ता पैदा करता है जो दुरूद भेजने वाले के लिये क़ियामत तक इस्तिग़फ़ार करता रहता है। (ज़ुब्दतुल वाइज़ीन)

२६१) दुरूद शरीफ़ में सलातो सलाम दोनों अर्ज़ करने चाहियें कि क़ुरआने करीम में दोनों का हुक्म दिया गया है, सिर्फ़ सलात या सलाम भेजने की आदत डाल लेना मना है। इसी लिये दुरूदे इब्राहीमी सिर्फ़ नमाज़ के लिये है क्योंकि इस में सलाम नहीं। सलाम तशह्हुद यानी अत्तहियात में हो चुका। नमाज़ के अलावा दुरूदे इब्राहीमी मुकम्मल नहीं क्योंकि यह सलाम से ख़ाली है। (तफ़सीरे नईमी)

२६२) तबरानी और बेहक़ी में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: इन्ना लिल्लाह हमारी ही उम्मत को मिला। इस से पहले पैग़म्बरों को भी अता न हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

२६३) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक हदीस रिवायत की कि ईमान की सत्तर से कुछ ऊपर शाख़ें हैं इन में सब से आला ला इलाहा इल्लल्लाह का पढ़ना और अदना तकलीफ़ पहुंचाने वाली चीज़ का रास्ते से

हटा देना है। (नुज़्हतुल कारी)

२६४) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा पर यह कलिमात पढ़ कर फूंका करते थे और फ़रमाते थे कि तुम्हारे बाप इब्राहीम अलैहिस्सलाम इन्हीं कलिमात से हज़रत इस्माईल और हज़रत इस्हाक़ अलैहिमस्सलाम के लिये पनाह मांगा करते थे: अऊज़ु बि कलिमातिल्लाहित ताम्मह, मिन कुल्ले शैतानिंव व हाम्मह व मिन कुल्ले ऐनिल लाम्मह यानी ऐ अल्लाह मैं हर शैतान और ज़हरीले जानदार और हर नुकसान पहुंचाने वाली नज़र के शर से पनाह मांगता हूँ। (बुख़ारी शरीफ़)

२६५) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: रब तबारक व तआला आधी रात के बाद आसमाने दुनिया पर नुज़ूल फ़रमाता है, फिर इरशाद फ़रमाता है: है कोई मांगने वाला कि मैं उसे दूं और है कोई दुआ करने वाला कि मैं कुबूल करूं और है कोई मग़फ़िरत चाहने वाला कि मैं उसे बख़्श दूं। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

२६६) तफ़सीरे रूहुल बयान में अऊज़ो बिल्लाह की तफ़सीर में है कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है जो दिल लगा कर अऊज़ो बिल्लाह पढ़े तो रब तआला उस के और शैतान के बीच तीन सौ पर्दों की आड़ कर देता है।

२६७) हदीस में है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेअराज में तशरीफ़ ले गए और जन्नतों की सैर फ़रमाई तो वहाँ चार नहरें देखीं। एक पानी की, दूसरी दूध की, तीसरी शराब की और चौथी शहद की। जिब्रईले अमीन से पूछा कि यह नहरें कहाँ से आ रही हैं? हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि मुझे इस की ख़बर नहीं। दूसरे फ़रिश्ते ने अर्ज़ कियाः इन चारों का चशमा मैं दिखाता हूँ। फिर वह एक जगह ले गया, वहाँ एक दरख़्त था जिस के नीचे एक इमारत बनी हुई थी और दरवाज़े पर ताला पड़ा हुआ था और उस के नीचे से चारों नहरें निकल रही थीं। इरशाद फ़रमायाः दरवाज़ा खोलो। अर्ज़ कियाः इस की चाबी मेरे पास नहीं है बल्कि आप के पास है यानी बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बिस्मिल्लाह पढ़ कर ताले को हाथ लगाया, दरवाज़ा खुल गया। अन्दर जाकर देखा कि उस इमारत में चार सुतून हैं और हर सुतून पर बिस्मिल्लाह लिखी हुई है और बिस्मिल्लाह की मीम से पानी जारी है। अल्लाह की हा से दूध जारी है, रहमान की मीम से शराब और रहीम की मीम से

शहद। अन्दर से आवाज़ आई: ऐ मेरे महबूब, आप की उम्मत में से जो शख़्स बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम पढ़ेगा, वह इन चारों का मुस्तहिक़ होगा। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

२६८) फ़िरऔन ने ख़ुदाई का दावा करने से पहले एक मकान बनवाया था और उस के बाहरी दरवाज़े पर बिस्मिल्लाह लिखी थी। जब उस ने ख़ुदाई का दावा किया और मूसा अलैहिस्सलाम ने उसे इस्लाम की तरफ़ बुलाया और उस ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बात न मानी तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उस के हक़ में बद दुआ फ़रमाई। वही आई: ऐ मूसा यह है तो इसी क़ाबिल कि इसे हलाक कर दिया जाए लेकिन इस के दरवाज़े पर बिस्मिल्लाह लिखी है जिस की वजह से वह अज़ाब से बचा हुआ है। इसी वजह से फ़िरऔन पर घर में अज़ाब न आया बल्कि वहाँ से नकाल कर दरिया में डुबोया गया। (तफ़सीरे कबीर)

२६९) तफ़सीरे अज़ीज़ी में है कि जिस शख़्स को कोई सख़्त मुसीबत पेश आए तो वह बिस्मिल्लाह बारह हज़ार बार इस तरह पढ़े कि एक हज़ार बिस्मिल्लाह पढ़ कर दो रकअत नफ़्ल पढ़े फिर हर हज़ार पर दो नफ़्ल पढ़ता जाए, उस के बाद दुआ मांगे इन्शा अल्लाह उस की दुआ कबूल होगी।
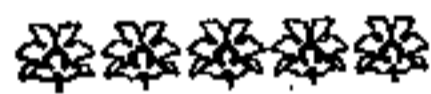
दसवाँ अध्याय

हिजरत, ग़ज़वात और जिहादे इस्लामी

१) हिजरी सन का इस्तेमाल हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में शुरू हुआ और पहली बार यौमुल ख़मीस (जुमेरात) बीस जमादिउल ऊला सतरह (१७) हिजरी बारह जुलाई ६३८ ईसवी को ममलिकते इस्लाम में इस का निफ़ाज़ हुआ। (ज़ियाउल कुरआन, जिः १)

२) बिअसत के पांचवें साल माहे रजब में मुहाजिरीन का पहला क़ाफ़िला अपने प्यारे वतन को छोड़ कर हबशा जैसे दूर दराज़ मुल्क की तरफ़ रवाना हुआ। इस क़ाफ़िले में बारह मर्द और चार ख़्वातीन थीं। इस क़ाफ़िले के सालार हज़रत उस्मान इब्ने अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु थे। आप की ज़ौजए मोहतरमा रुक़य्या बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमराह थीं। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसी जोड़े के बारे में इरशाद फ़रमायाः इब्राहीम और लूत अलैहिमस्सलाम के बाद यह पहला घराना है जिस ने अल्लाह की राह में हिजरत की है। हज़रत रुक़य्या की ख़िदमत गुज़ारी के लिये हज़रत उम्मे ऐमन भी साथ गईं। (ज़ियाउन्नबी, जिः २)

३) हबशा हिजरत करने वाले क़ाफ़िले के दूसरे मुहाजिरीन के नाम यह हैं: हज़रत अबू सलमा और उन की ज़ौजा उम्मे सलमा, हज़रत अबू हुज़ैफ़ा और उन की ज़ौजा मोहतरमा, हज़रत आमिर बिन अबी रबीआ और उन की ज़ौजा लैला अदविया। इन के अलावा हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़, ज़ुबैर बिन अवाम, मुसअब बिन उमैर, उस्मान बिन मज़ऊन, सुहैल बिन बैज़ाअ, अबू सुबरह बिन अबी रहम, हातिब बिन अम्र, अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन। (अस्सीरतुन नबविया, ज़ैनी दिहलान, जिः १)

४) हबशा के लिये यह मुहाजिरीन जिस बन्दरगाह से किश्ती में सवार हुए उस का नाम शुऐबा था जो जिद्दा से थोड़े फ़ासले पर जुनूब की तरफ़ वाक़ेअ थी। अहले मक्का हबशा वग़ैरा के लिये समुन्द्री सफ़र पर यहीं से रवाना होते थे। जिद्दा को हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़मानए ख़िलाफ़त में बन्दरगाह बनाया गया और शुऐबा के बजाए जहाज़ और किश्तियाँ जिद्दा से रवाना होने लगीं। (मोअजमुल बल्दान, जिः ३)

५) हबशा की दूसरी हिजरत में मुहाजिरीन की तादाद तिरासी थी जिन में अट्ठारा ख़्वातीन भी शामिल थीं। इस क़ाफ़िले में हज़रत जअफ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु भी शरीक थे। (ज़ियाउन्नबी, जिः २)

६) हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम फ़रमाते हैं कि हिजरत की रात से ज़्यादा गहरी नींद मैं कभी नहीं सोया यक़ीन था कि अगर आज मौत आई तो मेरी मौत को भी मौत आ जाएगी इस लिये कि अल्लाह तआला के सच्चे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे मदीने बुलाया है। (तफ़सीरे नईमी)

७) हिजरत की रात जब काफ़िरों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दौलतख़ाने को घेर लिया तो नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने बिस्तरे पाक पर मौला अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम को लिटा कर खुद रवाना हो गए। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम उन के सरहाने और हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम पायंती खड़े होकर कह रहे थे: ऐ अबू तालिब के बेटे, मुबारक हो, आज रब तुम पर फ़ख़्र करता है कि तुम ने अपनी जान को उस के मेहबूब की ख़ातिर दाव पर लगा दिया। (तफ़सीरे कबीर)

८) जिस जंग या जंगी मुहिम में नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शिर्कत फ़रमाई उसे इस्तेलाह में ग़ज़वा कहते हैं। फ़त्हे मक्का समेत ग़ज़वात की कुल तादाद अट्ठाईस बनती है इन में पहला ग़ज़वा अल अबवा सफ़र सन दो हिजरी में पेश आया जब कि आख़िरी ग़ज़वा तबूक रजब सन नौ हिजरी का था। (अतलसे सीरते नबवी)

९) वह जंगी मुहिम जिस में नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शिर्कत न की और वह किसी सहाबी की क़यादत में सर हुई उसे सिर्रिया कहा जाता है। सराया की कुल तादाद कअब बिन अशरफ़ और सलाम बिन अबी हुकैक़ के क़त्ल समेत पचपन है। इन में से पहला सिर्रिया हमज़ा (सैफ़ुल बहर) था जो रमज़ान सन एक हिजरी में पेश आया जब कि आख़िरी सिर्रिया अली बिन अबी तालिब (यमन) था जो रमज़ान सन दस हिजरी में सर हुआ। (अतलसे सीरते नबवी)

१०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ज़वात की तफ़सील:

नम्बर शुमार ग़जवा तारीख़ अहम वजूहात

(१) वद्दान (अबवाइ) सफ़र दो हिजरी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पहला ग़ज़वा जिस में आप बनफ़्से नफ़ीस शरीक हुए। मक़सद क़ुरैश का तिजारती क़ाफ़िला रोकना था।

(२) बुवात (रज़वा) दो हिजरी क़ुरैश के क़ाफ़िले को रोकना।

(३) उशैरा जमादिउल आख़िर दो हिजरी क़ुरैश के क़ाफ़िले को रोकना।

(४) बद्रुल ऊला (सफ़वान) जमादिउल आख़िर दो हिजरी कर्ज़ बिन जाबिर फ़हरी का पीछा करना क्योंकि उस ने मदीना मुनव्वरा के जानवर लूट लिये थे।

(५) बद्रुल कुबरा रमज़ान दो हिजरी कुरैश के क़ाफ़िले को रोकना।
(६) बनू कैंक़ाअ शव्वाल दो हिजरी यहूद की बद-अहदी और हसद।
(७) बनू सुलैम शव्वाल दो हिजरी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बनू सुलैम और ग़तफ़ान का ज़ोर तोड़ने के लिये करकरतुल कद्र तक तशरीफ़ ले गए।
(८) सवीक़ ज़ुलहज्जा दो हिजरी अबू सुफ़ियान ने बद्र का इन्तिक़ाम लेने के लिये मदीने पर चढ़ाई की थी। उसे भगाने के लिये यह कारवाई हुई।
(९) ज़वामर रबीउल अव्वल तीन हिजरी बनू सअलबा और मुहारिब का ज़ोर तोड़ना ताकि वह मदीने पर हमला करने के क़ाबिल न रहें।
(१०) बुहरान जादिउल अव्वल तीन हिजरी बनू सुलैम का ज़ोर तोड़ना।
(११) उहद शव्वाल तीन हिजरी कुरैश के मदीनए मुनव्वरा पर हमले का जवाब और दिफ़ाअ।
(१२) हमराउल असद शव्वाल तीन हिजरी अबू सुफ़ियान के मदीनए मुनव्वरा पर अचानक हमले का तोड़।
(१३) बनू नुज़ैर रबीउल अव्वल चार हिजरी बनू नुज़ैर ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शहीद करने का मन्सूबा बनाया था इस लिये उन्हें जिला वतन कर दिया गया।
(१४) ज़ातुर रिक़ाअ मुहर्रम चार हिजरी अन्मार और सअलबा की जत्था बन्दी का सद्दे बाब।
(१५) बद्रुल आख़िरह शअबान चार हिजरी अबू सुफ़ियान की दावत का जवाब।
(१६) दूमतुल जिन्दल रबीउल अव्वल पांच हिजरी कुछ लोग इकट्ठे होकर लूट मार और मदीनए मुनव्वरा पर हमला करना चाहते थे।
(१७) मरीसअ शअबान पांच हिजरी बनू मुस्तलक़ (ख़ुज़ाआ की शाख़) को तितर बितर करना।
(१८) ख़न्दक़ (अहज़ाब) शव्वाल पांच हिजरी कुरैश की सरकर्दगी में आने वाले लशकरों का सद्दे बाब।
(१९) बनू कुरैज़ा ज़ुलक़अदा पांच हिजरी बनू कुरैज़ा की बदअहदी और ग़ज़वए ख़न्दक़ में ऐन मुहासिरे के वक़्त दुश्मनों की मदद।
(२०) बनू लहयान रबीउल अव्वल छः हिजरी रजीअ में सहाबा को क़त्ल करने वाले बनू लहयान की सरकोबी।
(२१) ज़ी क़रद (ग़ाबह) रबीउल अव्वल छः हिजरी ऐनिया बिन हिसन

फ़ज़ारी की सरकोबी जिस ने मदीनए मुनव्वरा के जानवर लूट लिये थे।

(२२) हुदैबिया ज़ुलक़अदा छः हिजरी बैतुल्लाह का उमरा मगर क़ुरैश ने रोक दिया।

(२३) ख़ैबर मुहर्रम सात हिजरी मदीनए मुनव्वरा पर हमला के लिये यहूद की गिरोह बन्दी और मन्सूबा साज़ी।

(२४) मुअता जमादिउल अव्वल आठ हिजरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस में शरीक नहीं हुए मगर आप ने मुकम्मल तफ़सील बयान फ़रमाई गोया आप शरीक हों।

(२५) फ़त्हे मक्का रमज़ान आठ हिजरी क़ुरैश की तरफ़ से सुलहे हुदैबिया की ख़िलाफ़ वर्ज़ी।

(२६) हुनैन व ताइफ़ शव्वाल आठ हिजरी बनू सक़ीफ़ की गिरोह बन्दी का जवाब।

(२७) तबूक (असरा) रजब नौ हिजरी मदीनए मुनव्वरा पर हमले की तय्यारी करने वाले रूमियों की रोक थाम।

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई जंग खुद शुरू नहीं की। आप की हमेशा यह ख़्वाहिश होती थी कि ज़र्रा भर इन्सानी ख़ून न बहाया जाए लेकिन जब सर पर आन पड़ती थी तो आप उस के लिये तय्यार रहते थे क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबियुर रहमत के साथ साथ नबीयुल मुल्हिमह (जंग के लिये तय्यार रहने वाले नबी) भी थे। (अतलसे सीरते नबवी)

११) बाज़ इतिहासकारों का ख़्याल है कि सब से पहला झन्डा जो सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी मुसलमान कमान्डर को दिया वह हज़रत उबैदा बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया था। (अतलसे सीरते नबवी)

१२) ग़ज़वए अहज़ाब का दूसरा नाम ग़ज़वए ख़न्दक़ है। इस ग़ज़वा की सब से ख़ास बात यह है कि इस्लाम के दुशमनों के जारिहाना हमलों की यह आख़िरी कड़ी थी। इस के बाद वह कभी मरकज़े इस्लाम पर हमला करने की जुरअत न कर सके बल्कि हमेशा दिफ़ाई जंगें लड़ने पर उन्हें इक्तिफ़ा करना पड़ा। (ज़ियाउन्नबी, जि: ४)

१३) सही रिवायत के मुताबिक़ ग़ज़वए ख़न्दक़ पांच हिजरी के माहे शव्वाल में वाके हुआ। (ज़ियाउन्नबी, जि: ४)

१४) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि इस्लाम में कोई फ़त्ह हुदैबिया से बड़ी नहीं लेकिन लोगों की अक़्लें उस राज़ को समझने

से क़ासिर थीं जो मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के रब के दरमियान था। (ज़ियाउन्नबी, जि: ४)

१५) हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने हज्जतुल वदाअ के मौक़े पर सुहैल बिन अम्र को देखा कि जब सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ुर्बानी के जानवर ज़िब्ह कर रहे थे तो वह उन जानवरों को पकड़ पकड़ कर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़रीब ले आता था और जब हज्जाम ने सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हल्क़ किया (यानी सर के बाल उतारे) तो मैंने देखा वही सुहैल उन मूए मुबारक (बालों) को चुन रहा है। मैं ने देखा कि वह उन्हें अपनी आँखों से लगा रहा है। उस वक़्त मुझे सुहैल का वह इन्कार याद आ गया जो उस ने हुदैबिया के दिन किया था। बिस्मिल्लाह शरीफ़ लिखने से भी इन्कार किया और मुहम्मदुर रसूलुल्लाह लिखने से भी इन्कार किया। मैंने अल्लाह तआला की इस बात पर हम्दो सना की जिस ने सुहैल को इस्लाम क़ुबूल करने की तौफ़ीक़ बख़्शी। (इम्ताउल अस्माअ, लेखक अल्लामा मक़रेज़ी, जि: १)

१६) ग़ज़वए तबूक नबीये मुकर्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते तय्यिबा का आख़िरी ग़ज़वा है जो माहे रजब सन नौ हिजरी में वाक़े हुआ। इस में मुजाहिदीने इस्लाम का मुक़ाबला सल्तनते रूम से था। (ज़ियाउन्नबी, जि:४)

१७) सफ़रे तबूक में ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने उम्मतियों को एक नसीहत करते हुए फ़रमाया: अगर किसी इलाक़े में ताऊन की वबा फूट पड़े और तुम उस इलाक़े में रहते हो तो वहाँ से नकल कर बाहर न जाओ और अगर तुम उस इलाक़े से बाहर हो तो उस ताऊन वाले इलाक़े में मत दाख़िल हो। (सुबुलल हुदा, जि: ५)

१८) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु को एक सिर्रिया (मुजाहिदीन का क़ाफ़िला) में रवाना होने का हुक्म दिया। वह दिन जुम्ए का था। उनके साथी रवाना हो गए लेकिन अब्दुल्लाह ने सोचा कि मैं ठहर कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ अदा करलूं फिर क़ाफ़िले के साथ जा मिलूंगा। जब वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ अदा कर चुके तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें देख कर पूछा: तुम अपने साथियों के साथ क्यों रवाना नहीं हुए? अर्ज़ किया: मैं ने सोचा कि सरकार के साथ नमाज़ अदा करके फिर उन से जा मिलूंगा। फ़रमाया: सारी कायनाते ज़मीन भी तुम ख़र्च डालो तो उन की उस रवानगी की फ़ज़ीलत को न पा सकोगे। (तिर्मिज़ी)

१९) हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: उहद के दिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश ने मुझ से कहा: आओ दुआ कर लें। दोनों एक तरफ़ हो गए। पहले हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु ने दुआ की: ऐ अल्लाह, कल जब मेरी मुलाक़ात किसी दुशमन से हो तो वह बहादुर और सख़्त गुस्से वाला हो। मैं उसे तेरी ख़ातिर क़त्ल करके उस का सामान ले लूं। हज़रत अब्दुल्लाह ने आमीन कही। फिर हज़रत अब्दुल्लाह ने दुआ की: ऐ अल्लाह, कल मेरी मुलाक़ात बहादुर और सख़्त गुस्से वाले जवान से हो और तेरी ख़ातिर मैं उस से लड़ूं। वह मुझ से लड़े फिर वह मुझे क़त्ल करके मेरी नाक काट दे। मैं जब तेरे हुज़ूर पेश हूँ तो तू मुझ से पूछे: ऐ अब्दुल्लाह तेरे नाक कान क्यों काटे गए? मैं कहूं: ऐ अल्लाह तेरे और तेरे रसूल की ख़ातिर। अल्लाह तआला फ़रमाएगा: तू ने सच कहा। (अतलसुल क़ुरआन)

२०) ग़ज़वए उहद के शहीदों की जब तदफ़ीन हुई तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु और उन के मामूँ सय्यिदुश शुहदा हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु को एक ही क़ब्र में दफ़नाया गया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश की वालिदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फुफी उमैमा थीं। (अतलसुल क़ुरआन)

२१) हिजरत की ख़बर पाते ही हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने आठ सौ दिरहम में दो ऊँटनियाँ ख़रीदीं और उनकी परवरिश करते रहे। एक का नाम क़ुस्वा था जिस पर हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत में सवारी की और जो आख़िर तक नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सवारी में रही और हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में उस की वफ़ात हुई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दूसरी ऊँटनी उज़बा थी, यह हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में फ़ौत हुई। क़ियामत के दिन हज़रत बीबी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा इसी पर सवार होकर महशर में पहुंचेंगी। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

२२) हिजरत के पहले साल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीनए मनव्वरा में मस्जिदे क़ुबा की तअमीर फ़रमाई। इस मक़सद के लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत कुलसूम बिन हिद्म रज़ियल्लाहु अन्हु की एक ज़मीन को पसन्द फ़रमाया जहाँ अम्र बिन औफ़ ख़ानदान की खजूरें सुखाई जाती थीं। इसी साल मस्जिदे नबवी की तअमीर भी हुई। इसी साल हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा मक्के से रुख़सत होकर मदीने आईं। इसी साल अज़ान क़ायम हुई, इसी साल जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

मदीने तशरीफ लाए तो जुहर, अस्र और इशा में चार रकअतें फर्ज़ हुईं, जो अब तक दो दो रकअतें थीं। (ज़ुरक़ानी, मदारिजुन नबुव्वह)

२३) हिजरत के दूसरे साल रोज़ा और ज़कात के फर्ज़ होने के अहकाम नाज़िल हुए। इसी साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ईदुल फित्र की नमाज़ जमाअत के साथ ईदगाह में अदा फ़रमाई। इसी साल सदक़ए फित्र अदा करने का हुक्म भी जारी हुआ। इसी साल १० ज़िलहज्ज को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बक़ईद की नमाज़ अदा फ़रमाई और नमाज़ के बाद दो मेंढों की कुरबानी फ़रमाई। यही ग़ज़वए बद्र का भी साल है। (मवाहिबुल लदुन्निया)

२४) हिजरत के तीसरे साल जंगे उहद हुई जिस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्यारे चचा हज़रत सय्यिदुना हमज़ा शहीद हुए। इसी साल १५ रमज़ान को हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की विलादत हुई। इसी साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी बीबी हफ़सा से निकाह फ़रमाया। इसी साल हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु का निकाह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम से हुआ। इसी साल मीरास के अहकाम नाज़िल हुए। अब तक मुश्रिक औरतों से मुसलमानों का निकाह जाइज़ था मगर सन ३ हिजरी में मुश्रिक औरतों का मुसलमानों के साथ निकाह हमेशा के लिये हराम कर दिया गया। (सीरतुल मुस्तफ़ा, अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी रहमतुल्लाहि अलैहि)

२५) हिजरत के चौथे साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ौजए अनवर हज़रत बीबी ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात हुई। इसी साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उम्मुल मोमिनीन बीबी उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह फ़रमाया। इसी साल ४ शअबान को हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की पैदाइश हुई। (मदारिजुन नबुव्वह)

२६) हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सिर्फ़ पांच ही ऐसी मय्यतें खुशनसीब हुई हैं जिन की क़ब्र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुद उतरे: (१) हज़रत उम्मुल मोमिनीन बीबी ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा। (२) हज़रत बीबी ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के एक बेटे। (३) हज़रत अब्दुल्लाह मुज़्नी जिन का लक़ब ज़ुल बिजादैन है। (४) हज़रत बीबी आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की वालिदा उम्मे रूमान (५) हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम की वालिदा हज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद। (मदारिजुन नबुव्वह)

२७) हिजरत के पांचवें साल ग़ज़वए ज़ातर रिकाअ, ग़ज़वए दूम्मतुल

जन्दल, वाक़ए इफ़्क (हज़रत बीबी आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा पर तोहमत लगाए जाने का वाक़िआ), जंगे ख़न्दक़ और ग़ज़वए बनी क़ुरैज़ा पेश आए। इस साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत बीबी ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह फ़रमाया। इसी साल मुसलमान औरतों पर पर्दा फ़र्ज़ किया गया। इसी साल किसी पर ज़िना की तोहमत लगाने की सज़ा के अहकाम नाज़िल हुए। इसी साल तयम्मुम की आयत नाज़िल हुई। इसी साल नमाज़े ख़ौफ़ का हुक्म नाज़िल हुआ। (ज़ुरक़ानी)

२८) हिजरत का छटा साल बैअते रिज़वान और सुलहे हुदैबिया की वजह से मशहूर है। इसी साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोम के बादशाह क़ैसर, फ़ारस के बादशाह किसरा, हबशा के बादशाह नजाशी, मिस्र के बादशाह अज़ीज़े मिस्र और अरब व अजम के दूसरे हुक्मरानों के नाम इस्लाम की दावत के ख़त रवाना फ़रमाए। (ज़ुरक़ानी)

२९) हिजरत का सातवाँ साल ग़ज़वए ख़ैबर की वजह से मशहूर है। इसी साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत बीबी सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह फ़रमाया। इसी साल यहूदियों की साज़िश से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खाने में ज़हर दिया गया। इसी साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमरए क़ज़ा अदा फ़रमाया। इसी उमरे के सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह फ़रमाया। (बुख़ारी शरीफ़)

३०) हिजरत का आठवाँ साल जंगे मुअत्तह, फ़त्हे मक्का, जंगे हुनैन की वजह से मशहूर है। इसी साल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़र्ज़न्द हज़रत इब्राहीम हज़रत मारिया क़िब्तिया रज़ियल्लाहु अन्हा के बत्न से पैदा हुए। इसी साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहिबज़ादी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने वफ़ात पाई। इसी साल मस्जिदे नबवी में मिम्बरे शरीफ़ रखा गया। (मदारिजुन नबुव्वह)

३१) हिजरत नवाँ साल ग़ज़वए तबूक की वजह से मशहूर है। इसी साल इस्लामी हुकूमत के साए में रहने वाले ग़ैर मुस्लिमों के लिये जिज़िये का हुक्म नाज़िल हुआ। इसी साल इस्लामी सूद की हुरमत नाज़िल हुई। इसी साल ६० से ज़्यादा वफ़्द हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। (तफ़सीरे जलालैन)

३२) हिजरत के दसवें साल का सबसे शानदार और अहम तरीन वाक़िआ हज्जतुल वदाअ है, यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आख़िरी हज था और हिजरत के बाद यही आप का पहला हज था। वापसी के सफ़र में

ग़दीरे ख़ुम नामी मक़ाम पर वह तारीख़ी ख़ुत्बा दिया जिस में मुसलमानों को कुरआने मजीद और अहले बैत को मज़बूती से थामे रखने का हुक्म दिया। (बुख़ारी शरीफ़)

३३) हिजरत के ग्यारहवें साल हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया की ज़ाहिरी आँखों से रूपोश होकर अपने रब से जा मिले। (बुख़ारी शरीफ़)

३४) असमा बिन्ते मरवान एक शायरा थी जो बनू उमय्या बिन ज़ैद ख़ानदान से थी। वह अपनी शायरी से इस्लाम में ऐब लगाती और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ईज़ा पहुंचाती थी। इसी लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस के क़त्ल की इजाज़त दे रखी थी। उमैर बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हु नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे जाँनिसार थे। उन्हों ने दरीदा दहन असमा को ठिकाने लगाने की ठान ली। रमज़ान सन दो हिजरी में हज़रत उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु असमा बिन्ते मरवान के पास रात के वक़्त पहुंचे जब वह एक बच्चे को दूध पिला रही थी। हज़रत उमैर ने बच्चे को हटाया और तलवार उस के सीने में घोंप कर कमर से निकाल दी। (तब्क़ात इब्ने सअद)

३५) तब्क़ात इब्ने सअद के मुताबिक़ सराया की तफ़सील:

नः	लशकर का क़ायद	तारीख़	जगह	मुसलमान	मुश्रिकीन
(१)	हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब	रमज़ान एक हिजरी	साहिल बहरे अहमर	तीस मुहाजिर	तीस आदमी
(२)	उबैदा बिन हारिस बिन मुत्तलिब	शव्वाल एक हिजरी	बतने राबिग़	साठ मुहाजिर	सौ आदमी
(३)	सअद बिन अबी वक़्क़ास	ज़ुलक़अदा एक हिजरी	ग़दीरे ख़ुम के क़रीब ख़रार	बीस मुहाजिर	क़ाफ़िलए क़ुरैश
(४)	अब्दुल्लाह बिन जहश असदी	रजब दो हिजरी	वादिये नख़्ला	बारह मुहाजिर	क़ाफ़िलए क़ुरैश
(५)	उमैर बिन अदी	रमज़ान दो हिजरी	मदीनए मुनव्वरा	अकेले उमैर	असमा बिन्ते मरवान
(६)	सालिम बिन उमैर उमरी	शव्वाल दो हिजरी		अकेले सालिम	अबू इफ़्क यहूदी

(७)	मुहम्मद बिन मुस्लिमा और अबू नाइला	रबीउल अव्वल ३ हिजरी	मदीना के मज़ाफ़ात	पांच मुसलमान	अदब बिन अशरफ़
(८)	ज़ैद बिन हारिसा	जमादिल आख़िर ३ हिजरी	फ़रदा नज्द	सौ सवार	क़ाफ़िलए सफ़वान
(६)	अबू सलमा मख़ज़ूमी	मुहर्रम ३ हिजरी	क़तन	डेढ़ सौ आदमी	बनू असद
१०	अब्दुल्लाह बिन	१६ मुहर्रम तीन हिजरी	उरना	सिर्फ़ अब्दुल्लाह	सुफ़ियान बिन ख़ालिद हुज़ली
११	मुन्ज़र बिन अम्र साअदी	सफ़र तीन हिजरी	बीरे मऊना	सत्तर अन्सार	बनू सुलैम
१२	मरसद बिन अबी मरसद ग़नवी	सफ़र तीन हिजरी	रजीअ	दस आदमी	क़ारा और उज़ल
१३	मुहम्मद बिन मुस्लिमा	१० मुहर्रम तीन हिजरी	क़ुरता	तीस सवार	बनू बक्र
१४	अकाशा बिन मुहसिन असदी	रबीउल अव्वल ६ हिजरी	ग़मर	बनू असद	चालीस आदमी
१५	मुहम्मद बिन मुस्लिमा	रबीउल आख़िर ६ हिजरी	बनू सअलबा	दस आदमी	बनू सअलबा
१६	अबू उबैदा बिन जर्राह	रबीउल आख़िर ६ हिजरी	ज़ुल क़सा	चालीस आदमी	बिन अमहारिब
१७	ज़ैद बिन हारिसा	रबीउल आख़िर ६ हिजरी	जमूम	कई सहाबा	बनू सुलैम
१८	ज़ैद बिन हारिसा	जमादिउल ऊला ६ हिजरी	ऐस	एक सौ सत्तर सवार	साहिले बहर

१६	ज़ैद बिन हारिसा	जमादिल आख़िर ६ हिजरी	तरफ़	पन्द्रह आदमी	बनू सअलबा
२०	ज़ैद बिन हारिसा	जमादिल आख़िर ६ हिजरी	हिसमी	पांच सौ आदमी	बनू जज़ाम
२१	ज़ैद बिन हारिसा	रजब ६ हिजरी	वादिये कुरा	कई सहाबा	वादिये कुरा के यहूद
२२	अब्दुर्रहमान बिन औफ़	शअबान ६ हिजरी	दौमतुल जन्दल	कई सहाबा	बनू कलब
२३	अली बिन अबी तालिब	शअबान ६ हिजरी	फ़दक	सौ आदमी	बनू सअद
२४	ज़ैद बिन हारिसा	रमज़ान ६ हिजरी	वादिये कुरा	कई सहाबा	फ़ज़ारा
२५	अब्दुल्लाह बिन अतीक	रमज़ान ६ हिजरी	ख़ैबर	पांच आदमी	अबू राफ़ेअ नज़री
२६	अब्दुल्लाह बिन रवाहा	शव्वाल ६ हिजरी	ख़ैबर	तीस आदमी	उसैर बिन ज़ारम
२७	करज़ बिन जाबिर फ़हरी	शव्वाल ६ हिजरी	उरैना	बीस सवार	उरैना
२८	अम्र बिन उमय्या ज़मरी	६ हिजरी	मक्का	दो आदमी	अबू सुफ़ियान
२६	उमर बिन ख़त्ताब	शअबान सात हिजरी	तुरबा	तीस आदमी	हुवाज़न
३०	अबू बक्र सिद्दीक़	शअबान सात हिजरी	नज्द	ज़रिय्या	बनू किलाब
३१	बशीर बिन सअद अन्सारी	शअबान सात हिजरी	फ़दक	तीस आदम	बनू मुर्रा

३२	ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह लीसी	रमज़ान सात हिजरी	बतने नख़ल	एक सौ तीस आदमी	बनू अवाल व बनू अब्द बिन सअलबा
३३	बशीर बिन सअद अन्सारी	शव्वाल सात हिजरी	यमन व जबार	तीन सौ आदमी	बनू ग़ित्फ़ान
३४	इब्ने अबी अलऊजा सुलमी	ज़िलहज्ज सात हिजरी	बनू सुलैम	पचास आदमी	बनू सुलैम
३५	ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह लीसी	सफ़र ८ हिजरी	कुदीद	दो सौ आदमी	बनू मलूह
३६	बिन अब्दुल्लाह लीसी	सफ़र ८ हिजरी	फ़दक	दो सौ आदम	बनू मुर्रा
३७	शुजाअ बिन वहब असदी	रबीउल अव्वल ८ हिजरी	सय्यी	चौबीस आमद	हुवाज़िन
३८	कअब बिन उमैर ग़िफ़ारी	रबीउल अव्वल ८ हिजरी	ज़ात इतलाअ	पन्द्रह आदमी	शामी इलाक़ा के मुश्रिक
३९	ज़ैद बिन हारिसा, जअ़फ़र बिन अबी तालिब और अब्दुल्लाह बिन रवाहा	जमादिउल ऊला ८ हिजरी	बलक़ा	तीन हज़ार आदमी	एक लाख रूमी
४०	अम्र बिन आस	जमदिल आख़िर ८ हिजरी	ज़ातुस सलासल	तीन सौ आदमी और तीस सवार	कुज़ाआ
४१	अबू उबैदा बिन जर्राह	रजब ८ हिजरी	कबलिया	तीन सौ आदमी	जुहैना
४२	अबू क़तादा बिन रुबई अन्सारी	शअबान ८ हिजरी	ख़ज़िरा	पन्द्रह आदमी	ग़ित्फ़ान

४३	अबू क़तादा बिन रुबई अन्सारी	रमज़ान ८ हिजरी	बतने अज़्म		फ़त्हे मक्का से क़ब्ल दुशमन को धोखा देने के लिये
४४	ख़ालिद बिन वलीद	रमज़ान ८ हिजरी	नख़ला	तीस सवार	उज़्ज़ा बुत गिराने के लिये
४५	अम्र बिन आस	रमज़ान ८ हिजरी	सुवाअ बुत की तरफ़	कई सहाबा	बनू हुज़ैल
४६	सअद बिन ज़ैद अशहली	रमज़ान ८ हिजरी	मुशल्लल	बीस सवार	मनात बुत गिराने के लिये
४७	ख़ालिद बिन वलीद	शव्वाल ८ हिजरी	मक्का के जुनूब में	साढ़े तीन सौ आदमी	बनू जज़ीमा
४८	तुफ़ैल बिन अम्र दूसी	शव्वाल ८ हिजरी	जुल किफ़ीन		बुत गिराने के लिये
४९	उऐनिया बिन हिसन फ़ज़ारी	मुहर्रम ९ हिजरी	बनू तमीम	पचास आदमी	बनू तमीम
५०	क़तबा बिन आमिर बिन हदीदा	सफ़र ९ हिजरी	तबाला	बीस आदमी	बनू ख़सअम
५१	ज़हाक किलाबी	रबीउल अव्वल ९ हिजरी	ज़जलावा	कई सहाबा	बनू किलाब
५२	अलक़मा बिन मुज्ज़ ज़मदलजी	रबीउल आख़िर ९ हिजरी	जिद्दा	तीन सौ आदमी	हब्शी जमाअत
५३	अली बिन अबी तालिब	रबीउल आख़िर ९ हिजरी	फ़ुलुस की तरफ़ जो क़बीला तय का बुत था	सौ आदमी पचास सवार	बनू तय

५४	उकाशा बिन मुहसिन असदी	रबीउल आख़िर ६ हिजरी	अज़रा और बल्ली का इलाक़ा	कई सहाबा	जुनाब
५५	ख़ालिद बिन वलीद	रबीउल अव्वल १० हिजरी	नजरान	कई सहाबा	बनू अब्दुल मदान
५६	अली बिन अबी तालिब	रमज़ान दस हिजरी	यमन	तीन सौ सवार	मज़हज

३६) बनू कुरैज़ा में अम्र बिन औफ़ का एक सौ बीस साला बूढ़ा बद तीनत यहूदी अबू इफ़क रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ लोगों को उभारता और आप की हिजो में शेअर कहता था। बद्री सहाबी सालिम बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु उन लोगों में शामिल थे जो ग़ज़्वए तबूक के मौक़े पर सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवारी तलब करते थे और सवारी न मिलने पर रोते हुए वापस जा रहे थे। सालिम ने नज़्र मानी कि या तो अबू इफ़क को जहन्नम रसीद करूंगा या खुद शहीद हो जाऊंगा। गर्मियों की एक रात को उन्हें ख़बर हुई कि अबू इफ़क अपने घर में सो रहा है तो उन्हों ने तलवार ली और उस के सीने पर रख कर दबाव डाला जिस से वह उसके बिस्तर के पार हो गई और वह जहन्नम रसीद हो गया। उन्हों ने हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में वफ़ात पाई। (अतलसे सीरते नबवी)

३७) एक शख़्स ने आकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जिहाद में जाने की इजाज़त चाही। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछाः क्या तुम्हारे वालिदैन ज़िन्दा हैं? अर्ज़ कियाः हाँ। फ़रमायाः पहले उन के साथ वफ़ादारी का हक़ अदा करो फिर जिहाद करना। दूसरी रिवायत में हैः एक शख़्स आकर कहने लगा मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैअते हिजरत करने आया हूँ और अपने वालिदैन को रोता छोड़ आया हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः वापस जाकर अपने वालिदैन को उसी तरह हंसाओ जिस तरह रुलाया है। (मालिक)

३८) जंगे यमामा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के अहदे ख़िलाफ़त में सन ग्यारह हिजरी के आख़िर और सन बारह हिजरी के शुरू में मुसैलमा कज़्ज़ाब और मुसलमानों के बीच हुई थी। इस जंग में मुसैलमा के साथी चालीस हज़ार थे। मुसलमानों के सिपह सालार हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु थे। अन्सार का झन्डा हज़रत ज़ैद बिन साबित बिन

कैस के हाथ में था। यह जंग बहुत सख़्त और ख़ूँरेज़ हुई। कुछ देर के लिये मुसलमानों के पावँ उखड़ गए थे फिर ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की तदबीर और शुजाअत की बदौलत मुसलमानों ने जम कर मुक़ाबला किया। मुसैलमा मारा गया, उस के साथियों को शिकस्त हुई। इक्कीस हज़ार बनू हनीफ़ा मारे गए जो मुसैलमा के साथी थे। मुसलमानों का भी काफ़ी नुक़सान हुआ। साढ़े चार सौ हुफ़्फ़ाज़ सहाबा जंग में शहीद हुए। (नुज़्हतुल क़ारी)

३९) वाक़ए हर्रह सन तिरेसठ हिजरी में हुआ था। इस का सबब यह था कि ग़सीलुल मलाइका हज़रत हुन्ज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुन्ज़ला और मदीनए तय्यिबा के कुछ हैसियत वाले लोग यज़ीद के पास गए। वहाँ उन्हों ने यज़ीद की ग़लत हरकतें देखीं तो मदीनए मुनव्वरा लौट कर यज़ीद की बैअत फ़िस्ख़ कर दी और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत कर ली। इस पर यज़ीद पलीद ने मुस्लिम बिन अक़बा को, जिसे मुसलमान मुसरिफ़ बिन अक़बा कहते थे, एक भारी फ़ौज के साथ मदीनए मुनव्वरा पर हमले के लिये भेजा। उस ने तीन दिन तक मदीनए तय्यिबा को लूटा और ऐसी बेहुरमती की जो एक खुले काफ़िर से भी सोची नहीं जा सकती। सत्तरह सौ रईसों को शहीद किया और दस हज़ार अवाम को, औरतें और बच्चे जो मारे गए वह अलग। एक हज़ार कुंवारी लड़कियों की इज़्ज़त लूटी गई। मस्जिदे नबवी में घोड़े बांधे गए। तीन दिन तक घोड़ों की लीद से मस्जिदे अक़्दस में नापाकी होती रही। तीन दिन तक मस्जिदे नबवी में न अज़ान हुई न नमाज़। (नुज़्हतुल क़ारी)

४०) जंगे जमल अहदे इस्लामी की एक नाख़ुशगवार जंग थी जो सन छत्तीस हिजरी के जमादिउल अव्वल या जमादिल आख़िर में हुई थी। यह वह पहली जंग है जो मुसलमानों के बीच हुई। यह जंग मौलाए कायनात हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के बीच हुई। उम्मुल मोमिनीन एक बहुत बड़े ऊंट पर सवार बीच में थीं इस लिये इसे जंगे जमल कहा जाता है। इस का सबब यह हुआ कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के वक़्त उम्मुल मोमिनीन हज़रत सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा हज के लिये गई हुई थीं। जो लोग हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के घिराव में शरीक थे वही लोग हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ थे। हज़रत उस्मान की शहादत के बाद बनी उमैय्या भाग कर मक्का पहुंचे। उन्हों ने हज़रत उस्मान के क़िसास का मुतालबा किया। हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम और हज़रत तल्हा बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हुमा

भी मक्का पहुंच गए और हज़रत उस्मान के क़िसास के नुकते पर उन के साथ हो गए। उम्मुल मोमिनीन ने बसरा का क़स्द किया। सफ़र करते हुए बसरा के क़रीब हवाब पर पहुंचीं तो पूछा इस जगह का नाम क्या है? जब बताया गया कि हवाब है तो ऊंट को बिठाया और फ़रमायाः मैं हवाब वाली हूँ। मुझे लौटाओ, मुझे लौटाओ। लोगों ने बहुत कोशिश की कि आगे बढ़ने पर राज़ी हो जाएं मगर राज़ी न हुईं। चौबीस घन्टे तक वहीं तशरीफ़ फ़रमा रहीं। फिर किसी ने इत्मिनान दिलाया कि यह हवाब नहीं है तो आगे बढ़ीं। हवाब का क़िस्सा यह है कि सरकार नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मुल मोमिनीन से फ़रमाया थाः तुम में से एक का क्या हाल होगा जब उस पर हवाब के कुत्ते भोंकेंगे। (मुस्नदे इमाम अहमद) आगे बढ़ कर उम्मुल मोमिनीन ने बसरा के बाहर पड़ाव डाल दिया। हज़रत अली को जब इस की ख़बर हुई तो तीस हज़ार की जमाअत लेकर मुक़ाबले पर आए। रात में दोनों तरफ़ के सुलझे हुए लोगों ने कोशिश करके ग़लत फ़हमियां दूर कर दीं। तय हो गया कि दोनों जमाअतें वापस हो जाएंगी। मगर दोनों जानिब फ़साद पसन्द लोग काफ़ी थे। उन्हों ने जब देखा कि बना बनाया खेल बिगड़ा जाता है तो आपसी सलाह करके सुब्ह अन्धेरे ही आपस में गुथ गए। और उम्मुल मोमिनीन की तरफ़ यह अफ़वाह फैला दी कि हज़रत अली ने हमला कर दिया। फिर हज़रत अली को यह बावर कराया कि उम्मुल मोमिनीन ने हमला कर दिया। फिर तो घमासान का रन पड़ा। हज़रत अली ने मेहसूस किया कि क़ुव्वत का मरकज़ उम्मुल मोमिनीन की ज़ात है। अगर उन का ऊंट बेकार कर दिया जाए तो जंग का ख़ातिमा हो सकता है। उन्हों ने सारा ज़ोर इसी पर लगा दिया। पूरी जंग उम्मुल मोमिनीन के हौदज के इर्द गिर्द सिमट आई थी। जो भी ऊंट की नकेल पकड़ता मार डाला जाता। कुश्तों के पुश्ते लग गए। आशिक़ाने रसूल हरमे नबवी पर पर्वानों की तरह निसार हो रहे थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर लड़ते लड़ते ज़ख़्मों से निढाल हो कर मक़तूलीन में गिर पड़े। उन्हें उस दिन सैंतीस ज़ख़्म लगे थे। बिलआख़िर हज़रत अली के मददगार उम्मुल मोमिनीन के ऊंट की कौंचें काटने में कामयाब हो गए और हैदजे मुबारक ज़मीं बोस हो गया। हज़रत अली ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ कियाः अस्सलामु अलैकुम या अम्माह। उम्मुल मोमिनीन ने जवाब दियाः वअलैकुमुस्सलाम या बुनैय्या। हज़रत अली ने कहाः अल्लाह आप की मग़फ़िरत फ़रमाए। उम्मुल मोमिनीन ने फ़रमायाः और तुम्हारी भी। फिर हज़रत अम्मार और मुहम्मद बिन अय्यूब को गोल ख़ैमा खड़ा करने का हुक्म दिया और हौदजे मुबारक को मक़तूलीन के

ढेर से उठवा कर उस ख़ैमे में पहुंचवा दिया। फिर अख़ीर रात में उम्मुल मोमिनीन बसरा तशरीफ़ ले गईं। आप को इस का बेहद सदमा था। रोती जाती थीं और कहती जाती थीं: काश कि आज से बीस साल पहले मर गई होती। फिर हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम ने उम्मुल मोमिनीन के शायाने शान सफ़र का सामान मुहैय्या करके बसरा से रुख़सत किया। रजब की पहली तारीख़ हफ़्ते के दिन उम्मुल मोमिनीन वहाँ से चलीं और मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ ले गईं। हज़रत अली मीलों तक हमराह चले और आप के बेटे चौबीस घन्टे साथ रहे। उम्मुल मोमिनीन पर इस का बहुत ख़ुशगवार असर पड़ा। हज़रत अली की बड़ी तारीफ़ फ़रमाई। इस जंग में हज़रत अली के पांच हज़ार हामी और उम्मुल मोमिनीन के दस हज़ार हामी शहीद हुए। हज़रत तल्हा को एक नामालूम तीर आकर लगा और आप शहीद हो गए। बाज़ रिवायतों से साबित होता है कि यह तीर मरवान ने मारा था। (नुज़्हतुल क़ारी)

४१) दो ग़ज़वात में फ़रिश्ते नाज़िल हुए हैं एक ग़ज़वए बद्र में, दूसरे ग़ज़वए हुनैन में। ख़न्दक़ के मौक़े पर भी फ़रिश्ते आए थे मगर उस वक़्त बाक़ायदा जिहाद नहीं हुआ। (ज़ियाउन्नबी)

४२) हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम ने फ़रमाया: बद्र के मैदान में हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम एक हज़ार फ़रिश्तों की जमाअत लेकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दाएं तरफ़ उतरे। उस तरफ़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु थे और हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम एक हज़ार फ़रिश्तों की जमाअत लेकर हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाएं तरफ़ उतरे, उस तरफ़ मैं था। (नुज़्हतुल क़ारी)

४३) अल्लाह तआला ने बद्र के मुजाहिदीन पर सात ख़ास इनायतें कीं: एक ग़ैबी और बाक़ी छः ज़ाहिरी। ग़ैबी इनायत फ़रिश्तों का नुज़ूल था और ज़ाहिरी नेअमत ठीक जिहाद के वक़्त उन के दुश्मन पर ऊंघ तारी कर देना, बारिश बरसा देना, बद्र के मुजाहिदों को तहारत और पाकीज़गी अता फ़रमाना, शैतानी वसवसे दूर कर देना, ढारस बन्धाना और मुजाहिदों को साबित क़दमी अता फ़रमाना। (तफ़सीरे नईमी)

४४) इस्लाम में सब से पहली हिजरत सरज़मीने हबशा की तरफ़ हुई। (बुख़ारी)

४५) वह मुसलमान जो हिजरत करके हब्शा पहुंचे उन बच्चों के सिवा जो वहीं पैदा हुए, सब तिरासी (८३) लोग थे। (ज़ियाउन्नबी)

४६) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदीनए मुनव्वरा की

तरफ़ हिजरत करने से पहले इस्लाम के लिये छः लौंडियाँ और गुलाम आज़ाद कराए। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु सातवें थे। (नुज़्हतुल क़ारी)

४७) मदीनए मुनव्वरा में तशरीफ़ आवरी के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पहला जुम्आ बनी सालिम बिन औफ़ में वादिये रानूना के बीच स्थित मस्जिद में हुआ। (सीरते रसूले अरबी)

४८) हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को ग़ारे सौर में एक साँप ने डसा। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लुआबे दहन की बरकत से फ़ौरन आराम आ गया। हर साल वह ज़हर अपना असर ज़ाहिर करता। बारह बरस बाद उसी से शहादत हुई। (सीरते रसूले अरबी)

४६) मुसलमानों के पहले शहीद हज़रत मेहजअ रज़ियल्लाहु अन्हु थे जिन्हें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आज़ाद कर दिया था। ग़ज़्वए बद्र में उन के एक तीर आकर लगा और वह शहीद हो गए। (नुज़्हतुल क़ारी)

५०) जिहाद का हुक्म हिजरत के बाद नाज़िल हुआ और तब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काफ़िरों से जंग शुरू की। (नुज़्हतुल क़ारी)

५१) मौला अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम ने फ़रमाया: बद्र के रोज़ फ़रिश्तों का निशान सफ़ेद अमामे थे जिन के शिमलों को उन्हों ने पीठ पर छोड़ रखा था। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम के सर पर ज़र्द अमामा था। (तफ़सीरे नईमी)

५२) फ़रिश्तो ने जंगे बद्र के अलावा किसी और ग़ज़्वे में जंग नहीं की। दूसरी जंगों में गिन्ती बढ़ाने वालों के तौर पर शामिल होते थे किसी को मारा नहीं करते थे। (तफ़सीरे नईमी)

५३) जंगे बद्र में मुसलमानों के हाथ से सत्तर कुफ़्फ़ार क़त्ल और इतने ही क़ैद हुए थे। (तफ़सीरे नईमी)

५४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान के आख़िर या शव्वालुल मुकर्रम सन दो हिजरी में जंगे बद्र से फ़ारिग़ हुए। (तफ़सीरे नईमी)

५५) ग़ज़्वए बद्र में अल्लाह तआला ने इस्लामी लश्कर की मदद के लिये फ़रिश्तों को भेजा। पहले एक हज़ार, फिर तीन हज़ार, फिर पांच हज़ार। (बुख़ारी)

५६) अबू जहल ग़ज़्वए बद्र में वासिले जहन्नम हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

५७) जंगे उहद में शहीद होने वाले मुसलमानों की तादाद सत्तर थी। (तफ़सीरे नईमी)

५८) उबई बिन ख़लफ़ कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का एक सरदार था। वह पहला और

आख़िरी शख़्स था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथों वासिले जहन्नम हुआ। यह वाक़िआ ग़ज़वए उहद का है। (तफ़सीरे नईमी)

५६) ग़ज़वए ख़ैबर में हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम के हाथ से यहूद के सात रईस और दिलावर आदमी क़त्ल हुए। (तफ़सीरे नईमी)

६०) हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को पहली सरदारी ग़ज़वए मुअत्तह में मिली थी और तभी से सैफ़ुल्लाह का ख़िताब भी मिला। (तफ़सीरे नईमी)

६१) अवाम में जो यह मशहूर है कि १४ शअबान को, जिस की शाम को शबे बरात होती है, ग़ज़वए उहद वाक़े हुआ और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दांत टूट जाने के सबब उस दिन हलवा खाया था। यह महज़ ग़लत है। (तफ़सीरे नईमी)

६२) जंगे ख़न्दक़ के मौक़े पर सिर्फ़ छः मुसलमान शहीद हुए और मुश्रिकों के तीन आदमी मारे गए। (तफ़सीरे नईमी)

६३) फ़ुक़्हा ने लिखा है कि हिजरत फ़त्हे मक्का से पहले इस लिये वाजिब क़रार दी गई थी कि इस्लाम का इन्कार करने वालों की तकलीफ़ और रुकावट से मेहफ़ूज़ रह कर मुसलमान हुकूमते इलाही के अन्दर रहें और अपने क़ानून अपने यहां लागू कर सकें। जब लश्करे इस्लामी को काफ़ी क़ुव्वत हासिल हो गई और दुश्मनों की मुज़ाहिमत का ज़ोर भी टूट गया तो हिजरत भी वाजिब न रही। लेकिन फिर भी जब कहीं और जब कभी वही हिजरत के वुजूह पाए जाएंगे, हिजरत वाजिब हो जाएगी। (तफ़सीरे नईमी)

६४) सहाबए किराम को जिहाद का इस क़दर शौक़ था कि हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने से हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने तक बराबर जिहाद में मशग़ूल रहे। (उस्वए सहाबा)

६५) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरी उम्मत के दो गिरोहों को अल्लाह तआला ने जहन्नम की आग से मेहफ़ूज़ कर रखा है। एक गिरोह वह है जो हिन्द में जिहाद करेगा और दूसरा गिरोह वह है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ रहेगा। (तफ़सीरे नईमी)

६६) उलमाए किराम का ख़्याल है कि जंगे उहद में सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दन्दाने मुबारक शहीद होना सब शहीदों की शहादत से अफ़ज़ल है। (तफ़सीरे नईमी)

६७) रजब सन ६ हिजरी में ग़ज़वए तबूक पेश आया। इसी साल हज

फ़र्ज़ होने पर मुसलमानों का पहला तीन सौ हाजियों का क़ाफ़िला हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की सरबराही में रवाना हुआ। इसी साल काफ़िरों को आइन्दा हरम में दाख़िल होने की मनाही अल्लाह की तरफ़ से सादिर हुई। यही आख़िरी हज था जिस में मुसलमानों के साथ काफ़िर भी शरीक रहे। (ज़ियाउन्नबी)

६८) जन्नतुल बक़ीअ में सब से पहले सन दो हिजरी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मज़ऊन मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दफ़्न फ़रमाया। (तफ़सीरे नईमी)

६९) बद्र उस मशहूर जगह का नाम है जहाँ १७ रमज़ान सन दो हिजरी को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मक्के के काफ़िरों के बीच मशहूर जंग हुई थी। यह ग़ज़वा इस्लामी फ़ुतूहात का मील पत्थर था। सहाबए किराम के शौक़ का यह आलम था कि जिस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें बद्र में चलने के लिये पुकारा उस वक़्त जो जैसा था वैसा ही निकल पड़ा। इस ग़ज़वे में मुसलमानों के पास हथियार न थे, सवारियां न थीं मगर अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दमों में निसार होने का जज़्बा लिये जब मुजाहिदीन मैदान में उतरे तो हाथों में दबी खजूर की सूखी शाख़ें शमशीरे आबदार बन गईं जिन की काट का काफ़िरों के पास कोई जवाब न था। (नुज़्हतुल क़ारी)

७०) एक बार हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़र्ज़न्द हज़रत अब्दुर रहमान ने इस्लाम लाने के बाद जंगे बद्र का ज़िक्र करके कहा: आप मेरी ज़द पर थे मगर मैं बाप समझ कर तुरह (जुदा होना) दे गया। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: बेटे अगर तुम मेरी ज़द पर होते तो मैं यक़ीनन तुम्हें क़त्ल कर डालता इसलिये कि तुम उस वक़्त मेरे नज़्दीक सिर्फ़ अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुश्मन होते। (उस्वए सहाबा)

७१) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत के मुताबिक़ हुदैबिया के सहाबा की गिन्ती १४०० थी। (तफ़सीरे नईमी)

७२) काफ़िरों पर सब से पहले तीर फेंकने वाले हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु थे। (तफ़सीरे नईमी)

७३) हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु की तलवार उहद में टूट गई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें अपनी तलवार अता की जो उन के पास रही, बाद में दो सौ दीनार में फ़रोख़्त हुई। (तफ़सीरे नईमी)

७४) बीरे मऊनह मशहूर लड़ाई में सत्तर सहाबा की एक बड़ी जमाअत पूरी की पूरी शहीद हुई जिन को कुर्रा कहते हैं इस लिये कि सब के सब कुरआने मजीद के हाफ़िज़ थे। (ज़ियाउन्नबी)

७५) जंगे उहद में हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बाप जर्राह को कत्ल किया और जंगे बद्र में हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बेटे अब्दुर रहमान को जो उस वक़्त तक ईमान नहीं लाए थे, मुक़ाबले के लिये ललकारा और हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम और हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने अहले क़राबत उतबा, शैबा और वलीद को क़त्ल किया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जंगे बद्र में अपने मामूँ आस इब्ने हिशाम को मारा। (तफ़सीरे नईमी)

७६) हज़रत मआज़ बिन अफ़रह रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबू जहल को मैदाने बद्र से जहन्नम को भेजा। उस वक़्त हज़रत मआज़ की उम्र ग्यारह साल की थी। (ज़ियाउन्नबी)

७७) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत के बाद और मक्के की फ़तह से पहले मुसलमानों को उज़्र के बिना मक्के में रहना हराम हो गया था और हिजरत फ़र्ज़। हालांकि वहाँ कअबए मुअज़्ज़मा, अरफ़ात, मिना, मक़ामे इब्राहीम सभी कुछ मौजूद था सिर्फ़ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहाँ से चले गए थे। यह है निस्बत का ज़हूर। (तफ़सीरे नईमी)

७८) बद्र के दिन हज़रत अक्काशा रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में लकड़ी तलवार बन गई थी जिस का नाम अरजून था। यह शमशीर अरजून मुअतसिम बिल्लाह ने दो सौ दीनार में ख़रीदी थी। (तफ़सीरे नईमी)

७९) उहद में जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुश्रिकीन ने नापाक इरादे से घेर लिया तो तीस सहाबा एक के बाद एक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने आते रहे और शहीद होते रहे कि हर शख़्स हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगे जम जाता और कहता: मेरी ज़ात आप पर क़ुरबान, मेरी जान आप की जान पर फ़िदा। अस्सलामो अलैकुम, मुझे क़ियामत में न छोड़ियेगा, यह कहता और जान निसार करता। (तफ़सीरे नईमी)

८०) अस्हाबे बद्र में सब से आख़िर में वफ़ात पाने वाले सहाबी हज़रत अबू सईद बिन मालिक बिन रबीआ अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (उस्वए सहाबा)

८१) जब सन दस हिजरी में नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पर्दा

फ़रमाया, उस वक़्त दस लाख मुरब्बा मील का इलाक़ा मुसलमानों के हाथों में आ चुका था। (हदीसे दिफ़ाअ)

८२) पहला मक़्तूल जिस के ख़ून की क़ीमत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़तहे मक्का के दिन अदा की वह जुनैद बिन अकविअ है जिसे बनू कअब ने क़त्ल कर दिया था। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके ख़ूँबहा में सौ ऊंटनियाँ दी थीं। (सीरते रसूले अरबी)

८३) हिजरी तारीख़ लिखने का रिवाज हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने से हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

८४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: सब से अफ़ज़ल अमल है वक़्त पर नमाज़, फिर माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक, फिर ख़ुदा की राह में जिहाद। (तफ़सीरे नईमी)

८५) सब से पहला ग़ज़वए इस्लाम ग़ज़वए अबवा है। (तफ़सीरे नईमी)

८६) फ़त्हे मक्का के वक़्त हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगे आगे जो अलम बलन्द था वह सफ़ेद रंग का था। (ज़ियाउन्नबी)

८७) ग़ज़वए तबूक नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आख़री ग़ज़्वा है। (सीरते रसूले अरबी)

८८) फ़त्हे मक्का के वक़्त सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ११ मर्द और ६ औरतों का ख़ून जाइज़ फ़रमाया था यानी जहाँ पाओ वहीं मार डालो। मर्द तो यह थेः इकरमा बिन अबू जहल, सफ़वान बिन उमैय्या, हज़रत सय्यिदुना हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ातिल वहशी, अब्दुल्लाह बिन सअद बिन अबी सरज, कअब बिन ज़ुहैर, हिबार बिन असवद, अब्दुल्लाह बिन ज़बअरी, अब्दुल उज़्ज़ा बिन ख़तल, मुख़ैस बिन सबाबह, हारिस बिन तलालह और हौरिस बिन नक़ीदिया। आख़िर के चार आदमी क़त्ल हुए बाक़ी सब इस्लाम ले आए और मेहफ़ूज़ रहे। औरतों में एक अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्दा, क़र्तना, क़रीबह, अरनब, सारह और उम्मे सअदिया, पिछली चारों क़त्ल हुईं। (सीरते रसूले अरबी)

८९) फ़त्हे मक्का के वक़्त अब्दुल अज़्ज़ा बिन ख़तल आकर कअबे के पर्दे से लिपट गया। लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़िक्र किया। आप ने फ़रमायाः वहीं मार डालो, चुनान्चे क़त्ल कर दिया गया। अल्लाह जल्ल जलालहू ने उस दिन अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हरम में क़िताल करने की इजाज़त दी थी। (ज़ियाउन्नबी)

९०) हज़रत तल्हा इब्ने उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत सिद्दीक़े

अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के भतीजे हैं। ग़ज़वए उहद में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ढाल बने और २४ ज़ख़्म खाए। आप के जिस्म पर कुल ७५ ज़ख़्म थे जो मुख़्तलिफ़ ग़ज़वों में खाए थे। (तफ़सीरे नईमी)

६१) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सत्तर गुनाहे कबीरा गिनाए हैं इन में जिहाद से भागना भी शामिल है। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

६२) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने आस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अगर एक मुसलमान तीन काफ़िरों से जिहाद में भागा तो वह भगोड़ा नहीं है। अगर दो काफ़िरों से भागा तो भगोड़ा है। (ख़ाज़िन, बैज़ावी)

६३) हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: फ़त्हे मक्का के दिन जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बग़ैर एहराम के मक्के में दाख़िल हुए तो उस रोज़ आप के पर सियाह अमामा था। (बुख़ारी)

६४) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिहाद में उम्मे सुलैम और कुछ अन्सारी औरतों को साथ ले जाया करते थे। वह दम तोड़ते मुजाहिदों को पानी पिलातीं और ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी किया करती थीं। (नुज़हतुल क़ारी)

६५) हज़रत उम्मे अतिया रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं: मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सात ग़ज़वे किये हैं। मैं सवारियों के पीछे रहा करती थी। उन के वास्ते खाना तय्यार करती थी और ज़ख़्मियों की दवा और मरीज़ों की ख़िदमत करती थी। (उस्वए सहाबा)

६६) कहा गया है कि मुसलमानों के हाथों कुस्तुनतुनिया की फ़त्ह क़ियामत के क़रीब होगी। (तफ़सीरे नईमी)

६७) ग़ज़वए बद्र में हज़रत मिक़्दाद बिन असवद और हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हु सिर्फ़ दो ही सवार थे। (बुख़ारी)

६८) जंगे सिफ़्फ़ीन के ख़ूनी मअरिके में पैंतालीस हज़ार मुसलमान हलाक हुए। (तफ़सीरे नईमी)

६९) ख़ैबर मदीनए मुनव्वरा से चार मन्ज़िल उत्तर की तरफ़ यहूदियों की एक बस्ती थी। इमालिक़ा में से ख़ैबर नामी एक शख़्स यहाँ आकर उतरा, उसी के नाम पर इस जगह का नाम ख़ैबर पड़ गया। सन सात हिजरी में फ़त्ह हुआ। हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे तरक़्क़ी देकर शहर बना दिया। (नुज़्हतुल क़ारी)

१००) जब मक्के के काफ़िर अपने वतन से बद्र की तरफ़ चले तो अबू जहल ने कअबा शरीफ़ का पर्दा पकड़ कर दुआ की: या रब हमारा दीन

पुराना है, मुहम्मद का दीन नया। इन दोनों दीनों में जो दीन तुझे प्यारा हो उसे फ़त्ह दे। ऐ मेरे रब इन दोनों जमाअतों में जो हिदायत पर हो तू उस की मदद कर। ऐ अल्लाह हम में और मुहम्मद में जो तेरा मुजरिम हो, जो क़राबत का हक़ तोड़ने वाला हो उसे ज़लील कर दे। अबू जहल मर्दूद ने ख़ुद अपने ऊपर ही दुआ कर ली जो रब ने क़ुबूल फ़रमाई और वह निहायत ज़लील होकर मारा गया। (रूहुल मआनी, ख़ाज़िन, रूहुल बयान, मदारिक, तफ़सीरे कबीर)

१०१) जंगे बद्र में काफ़िरों के लश्कर का खाना बारह आदमियों के ज़िम्मे था जो वह बारी बारी से देते थे। अबू जहल इब्ने हिशाम, उतबा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, इब्ने अब्दुश शम्स, मुनब्बिह इब्ने हज्जाज, अबुल बख़्तरी इब्ने हिशाम, नज़र इब्ने हारिस, हकीम इब्ने हिज़ाम, उबई बिन ख़लफ़, ज़मआ बिन असवद, हारिस इब्ने आमिर इब्ने नौफ़ल, इबाद इब्ने अब्दुल मुत्तलिब, यह सब क़ुरैश थे। इन में हर शख़्स अपनी बारी पर दस ऊंट ज़िब्ह करता था और काफ़िरों के लश्कर को खाना खिलाता था। इन बारह में से दो अफ़राद इबाद इब्ने अब्दुल मुत्तलिब और हकीम इब्ने हिज़ाम ईमान लाए बाक़ी सब काफ़िर रहे। (रूहुल मआनी)

१०२) इब्ने अबी शैबा ने हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि बरकतें शाम की तरफ़ हिजरत कर जाएंगी। (तफ़सीरे नईमी)

१०३) अहमद ने अब्दुल्लाह इब्ने ख़वालह से रिवायत की कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ किया कि हुज़ूर मेरे लिये कोई शहर तजवीज़ करें जहाँ मैं रहूँ। फ़रमायाः तुम शाम में रहना कि वह अल्लाह की बेहतरीन ज़मीन है जहाँ आख़िर में नेक बन्दे पहुंच जाएंगे। (तफ़सीरे नईमी)

१०४) जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ज़वए हुनैन में सहाबए किराम के साथ तशरीफ़ ले गए तो रास्ते में एक दरख़्त पर गुज़र हुआ जिस पर मुश्रिकीन अपने हथियार लटकाते थे। इस दरख़्त की पूजा की नियत से इस का नाम ज़ाते अनवात रख छोड़ा था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथी बोलेः या रसूलल्लाह! हमारे लिये भी कोई ज़ाते अनवात दरख़्त मुक़र्रर फ़रमा दें इन लोगों की तरह। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः सुब्हानल्लाह, तुम ने मुझ से वह कहा है जो इस्राइलियों ने मूसा अलैहिस्सलाम से कहा था कि काफ़िरों की तरह हमारे लिये भी कोई मअबूद मुक़र्रर फ़रमा दीजिये। फिर फ़रमायाः तुम लोग यानी मुसलमान पिछली उम्मतों के नक़्शे क़दम पर चलने लगे। (तिर्मिज़ी व ख़ाज़िन)

१०५) जंगे बद्र की शुरूआत की वजह यह बताई जाती है कि क़ुरैश का

क़ाफ़िला अबू सुफ़ियान की क़ियादत में मक्कए मुअज़्ज़मा से शाम तिजारत के लिये गया जहाँ इस क़ाफ़िले को बहुत नफ़ा हुआ। यह नफ़ा इन लोगों ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंगी तय्यारियों के लिये मेहफ़ूज़ कर लिया। यह क़ाफ़िला मदीने के रास्ते मक्के वापस लैटा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को इस की ख़बर दी और फ़रमाया कि इस में सिर्फ़ चालीस आदमी हैं जिन में अबू सुफ़ियान, अम्र इब्ने आस, मेहज़म बिन नौफ़ल जैसे सरदार भी हैं। उन के पास तिजारत का माल बहुत ज़्यादा है। सहाबा ने फ़ौरन इस क़ाफ़िले का रास्ता रोक लेने और सारा माल छीन लेने का इरादा किया। इस मक़सद के लिये ३१३ हज़रात बहुत बेसरो सामानी में मदीने से निकले जिन में सत्तर ऊंट सवार थे और सिर्फ़ दो हज़रात घुड़ सवार, आठ तलवारें और छः ज़िरहें थीं। यह हज़रात इधर से रवाना हुए, उधर अबू सुफ़ियान ने या तो भाँप लिया या किसी जासूस ने उन्हें ख़बर कर दी कि उन्हों ने ज़मज़म इब्ने अम्र ग़िफ़ारी को कुछ उजरत देकर मक्कए मुअज़्ज़मा दौड़ाया कि अबू जहल से कह दे कि जल्द से जल्द अपने इस क़ाफ़िले की मदद को पहुंचे। अबू जहल यह सुन कर आग बगूला हो गया। उस ने कअबे की छत पर मक्के वालों को पुकारा कि तुम्हारा क़ाफ़िला ख़तरे में है। जल्द उस की मदद को रवाना हो। चुनान्चे नौ सौ पचास जंगी बहादुर सामाने जंग से लैस होकर यहाँ से रवाना होने लगे। इधर हज़रत आकिला बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब ने ख़्वाब देखा कि एक ऊँट सवार मक़ामे अबतह में आया और उस ने तीन बार ऊँची आवाज़ में कहा कि एक ग़द्दारो अपनी क़त्लगाह की तरफ़ चलो। सब लोग उस के पास जमा हो गए फिर उस ने कोहे बू-क़ुबैस से एक चट्टान उखेड़ कर फ़िज़ा में फेंकी। वह चट्टान फ़िज़ा में ही पाश पाश हो गई और उस के टकड़े हर घर में गिरे। हज़रत आकिला ने यह ख़्वाब अपने भाई हज़रत अब्बास को सुनाया। उन्हों ने अपने दोस्त वलीद इब्ने उतबा से कहा। उतबा ने अपने दोस्त अबू जहल से कहा। अबू जहल ने हंस कर कहा कि अब्दुल मुत्तलिब की औलाद में अब तक तो सिर्फ़ एक मर्द ही नबी बने अब औरतें भी नबी बनने चली हैं। उस ने इस ख़्वाब को हंसी में उड़ा दिया। नौ सौ पचास शहसवार बहुत जंगी तय्यारियों से निकले। उन्हें नुज़ैर कहते हैं। अबू सुफ़ियान का क़ाफ़िला ईर कहलाता है। अबू सुफ़ियान और उन के साथियों को अपनी फ़त्ह का इतना यक़ीन था कि अपने साथ शराब के घड़े और नाचने वाली औरतें भी ले गए थे कि मुसलमानों का नाम व निशान मिटा कर मदीना में जश्न मनाएंगे। उधर अबू सुफ़ियान ने मदीना वाला रास्ता छोड़ कर बहरैन

वाला रास्ता अपनाया और अपने काफ़िले को मक्कए मुकर्रमा पहुंचा दिया। अबू जहल को कहला भेजा कि चूंकि हमारा काफ़िला ख़ैरियत से मक्का पहुंच गया है इस लिये तुम भी वापस आ जाओ। मगर अबू जहल ने अकड़ कर कहा: बहादुर लोग जब जंग के लिये निकल पड़ते हैं तो बिना कुछ किये वापस नहीं आते, अबू सुफ़ियान तुम भी हम से आ मिलो। हमारे जश्न में शिरकत करो। चुनान्चे यह चालीस आदमी भी अबू जहल से जा मिले और अब इन की तादाद नौ सौ नव्वे हो गई। उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वादिये वक़रान में तशरीफ़ फ़रमा थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा से फ़रमाया: ईर चाहते हो या नुज़ैर यानी अबू सुफ़ियान से जंग चाहते हो या अबू जहल की जमाअत से। अकसर ने अर्ज़ की कि हम ईर चाहते हैं क्योंकि हम जंग की तय्यारी से मदीनए मुनव्वरा से नहीं चले हैं। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ईर तो क्या अब नुज़ैर से दो दो हाथ करने हैं। इस पर उन लोगों ने अर्ज़ की कि हुज़ूर ईर के पीछे चलिये, नुज़ैर को छोड़ दीजिये। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नाराज़ हुए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और सय्यिदुना उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन लोगों के सामने निहायत दिलकश तक़रीर फ़रमाई जिस से उन लोगों को जोश आ गया। हज़रत मिक्दाद बिन उमर खड़े हुए और बोले: या रसूलल्लाह! आप को जहाँ रब भेजे वहाँ चलें हम आप के साथ हैं। फिर हज़रत सअद इब्ने मआज़ उठे और बोले: या रसूलल्लाह! अगर हुज़ूर हम को समुन्द्र में कूद जाने का हुक्म दें तो हमें कोई उज़्र न होगा। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत खुश हुए और फ़रमाया: चलो अल्लाह पर तवक्कल करके। यह कुफ़्फ़ार इन्शा अल्लाह सख़्त शिकस्त खाएंगे। मैं कुफ़्फ़ार की क़त्लगाह देख रहा हूँ। इस के बाद ही जंगे बद्र का वाक़िआ पेश आया। (तफ़सीरे रूहुल बयान, रूहुल मआनी, तफ़सीरे कबीर, ख़ाज़िन, मदारिक वग़ैरा)

१०६) हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहदे मुबारक में चार क़िस्म की हिजरत हुई: पहली हबशा की तरफ़ हिजरते ऊला, दूसरी हबशा की तरफ़ हिजरते सानिया, तीसरी मक्का से मदीना की तरफ़ हिजरत और चौथी अरब के क़बीलों की मदीना की तरफ़ हिजरत। (तफ़सीरे नईमी)

१०७) जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बद्र की तरफ़ रवाना हुए तो रास्ते में बद्र के करीब दो लोग मिले। उन से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा: क्या यहाँ से अबू सुफ़ियान का काफ़िला गुज़रा था? वह बोले: हाँ रात के वक़्त गुज़रा था। उन दोनों को मुसलमानों ने मक्का के काफ़िरों के हालात

जानने के लिये पकड़ लिया। इन में एक तो अबू राफ़ेअ था यानी हज़रत अब्बास का गुलाम, दूसरा असलम था जो उकबा इब्ने अबी मअबत का गुलाम था। सहाबा ने अबू राफ़ेअ से पूछा: इस जंग के लिये मक्का से कितने लोग निकले हैं? उस ने जवाब दिया कि मक्का ने अपने जिगर के टुकड़े हमारी तरफ़ फेंक दिये हैं। फिर अबू राफ़ेअ से पूछा: क्या कुछ लोग वापस भी लौट गए? वह बोला: हाँ। जब अबू सुफ़ियान के क़ाफ़िले के ख़ैरियत से निकल जाने की ख़बर मिली तो उबय इब्ने सुरजी अपने तीन सौ साथियों के साथ वापस लौट गया। यह शख़्स बनी ज़हरा का सरदार था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उबय को अख़नस का लक़ब दिया क्योंकि वह अपनी क़ौम से कट गया था। इतनी तहक़ीक़ के बाद यह हज़रात बद्र की तरफ़ रवाना हुए। वहाँ पहुंचने पर देखा कि मक्का के काफ़िर वहाँ पहले ही पहुंच चुके हैं और उन्हों ने वादिये बद्र के अच्छे साफ़ मैदानी इलाक़ों पर क़ब्ज़ा कर लिया है जहाँ पानी है। मुसलमान बद्र के रेत वाले हिस्से में उतरे जहाँ पानी न था। इन हज़रात को उस वक़्त दो दुशवारियाँ पेश आईं: एक पानी का न होना और सख़्त प्यास दूसरे रेत में पावँ धंसने की वजह से अच्छी तरह चल न सकना। इस मौक़ा पर शैतान इन्सानी शक्ल में उन ग़ाज़ियों के पास आया और अलग अलग एक एक से मिला और बोला: तुम कहते हो कि तुम हक़ पर हो, अल्लाह के प्यारे हो, तुम्हारे नबी सच्चे हैं। यह कैसी अजीब सच्चाई है कि रब ने तुम्हें ख़ुश्क और रेतीले इलाक़े में उतारा। इस का नतीजा यह होगा कि जब तुम प्यास से बेहाल हो जाओगे तो काफ़िर तुम को निहायत आसानी से हरा देंगे। तुम में से कोई भी घर वापस न जा पाएगा कि तुम प्यासे होगे और काफ़िर ताज़ा दम। इस पर उन में से कुछ लोगों को सख़्त फ़िक्र हुई। इधर दरियाए रहमत जोश में आया और ख़ूब तेज़ बारिश हुई जिस से रेत जम कर निहायत अच्छी ज़मीन बन गई। और सहाबा ने उसी हिस्से में लम्बी चौड़ी हौज़ जैसी जगह बनाई जिस में पानी भर गया। उन लोगों ने तालाबों की तरह इस का इस्तेमाल किया। उधर काफ़िरों वाले हिस्से में फिसलन हो गई जिस में चलना फिरना दुश्वार हो गया। मोमिनों को इस बारिश से इतनी ख़ुशी हासिल हुई जो बयान से बाहर है। सब के दिल मुतमइन हो गए और यह बारिश फ़त्ह का पेश ख़ैमा साबित हुई। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

१०८) ग़ज़वए बद्र में हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब को हज़रत अबुल यसर इब्ने अम्र सलमी ने गिरफ़्तार किया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबुल यसर से पूछा कि तुम दुबले पतले आदमी हो और

अब्बास भारी भरकम, तुम ने इन्हें कैसे गिरफ़्तार कर लिया? वह बोले कि इस काम में मेरी मदद ऐसे शख़्स ने की जिसे मैं ने इस से पहले कभी नहीं देखा था और अब भी नज़र नहीं आ रहा है। उस की शक्ल ऐसी है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारी मदद फ़रिश्ते ने की थी। (ख़ाज़िन)

१०९) हज़रत अबू राफ़ेअ जो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़ुलाम हैं, फ़रमाते हैं: हमारे घर में इस्लाम हिजरते नबवी से पहले ही दाख़िल हो चुका था। हज़रत अब्बास अपना इस्लाम मक्का के काफ़िरों के डर से ज़ाहिर न कर सके थे यहाँ तक कि वह बद्र में काफ़िरों के साथ भी उन्हीं के ख़ौफ़ से चले गए थे। अबू लहब ने अपनी जगह आस इब्ने हिशाम को भेज दिया था। मगर खुद मक्का में बेचैन और बेक़रार था। जब बद्र में काफ़िरों की हार की ख़बरें पहुंचीं तो उस की बेक़रारी और बढ़ गई। वह कमज़ोर सा आदमी था। ज़मज़म के पास बैठा हुआ था और अपने तीर सीधे कर रहा था। मेरी मालिकिन उम्मे फ़ज़्ल यानी हज़रत अब्बास की बीवी मेरे पास बैठी थीं कि अबू लहब आ गया। शोर मचा कि बद्र से अबू सुफ़ियान इब्ने हारिस इब्ने अब्दुल मुत्तलिब वापस आए हैं। वह भी अबू लहब के पास आ गए और सब जमा हो गए। अबू लहब ने उन से पूछा कि तुम बद्र की लड़ाई का आँखों देखा हाल सुनाओ। इब्ने हारिस ने सारा वाक़िआ सुनाया। उस ने कहा: हम ने मुसलमानों के साथ सफ़ेद अमामे वाले चितकबरे घोड़ों पर सवार ऐसे लोग देखे जिन्हें पहले कभी नहीं देखा था। यह आसमान और ज़मीन के बीच फ़िज़ा में उतरते थे। अबू राफ़ेअ कहते हैं: यह सुन कर मेरे मुंह से निकला कि यह तो आसमानी मदद थी। इस पर अबू लहब मुझ पर पिल पड़ा और मुझे ज़मीन पर पटक दिया और मेरे सीने पर बैठ गया। इस पर उम्मे फ़ज़्ल को ग़ैरत आई कि मेरे ग़ुलाम को क्यों मार रहा है। उन्हों ने एक लकड़ी उठा कर अबू लहब के सर पर मारी जिस से वह ज़ख़्मी हो गया और बोलीं: क्या अबू राफ़ेअ को इस लिये मार रहा है कि इस का मौला अब्बास क़ैद हो गया है। अभी तो मैं मौजूद हूँ। अबू लहब ने उस से कुछ न कहा, मेरे सीने से उतर कर ज़ख़्मी हालत में चला गया। फिर कुदरती तौर पर उस के पावँ में एक ज़हरीला दाना निकला जिस से वह सातवें दिन मर गया। (तफ़सीरे ख़ाज़िन)

११०) बुख़ारी, अहमद, अबू दाऊद, इब्ने माजा और तिर्मिज़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हम को एक लशकर में भेजा। वहाँ हमारे क़दम उखड़ गए। हम मदीनए मुनव्वरा गए मगर शर्म से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

की ख़िदमत में न आ सके कि हम किस मुंह से सामने जाएं। आख़िरकार झिझकते काँपते हाज़िर हुए। फ़ज्र से पहले का वक़्त था। फ़रमाया: कौन? हम ने अर्ज़ किया: हुज़ूर हम हैं भगोड़े। फ़रमाया: तुम फ़रार यानी भगोड़े नहीं बल्कि उकार यानी अपनी पनाह के पास आने वाले हो। फिर फ़रमाया: मैं मुसलमानों की पनाह में हूँ। (ज़ियाउन्नबी)

१११) सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि ग़ाज़ी को चाहिये कि काफ़िरों के मुक़ाबले में दो अक़ीदे और कुछ सिफ़ात लेकर जाए। अक़ीदा यह कि बुज़्दिली से आई मौत टल नहीं जाती। अक़ीदा नम्बर दो यह कि बहादुरी से मौत वक़्त से पहले नहीं आ जाती। इस के अलावा ग़ाज़ी शेर का सा बहादुर दिल लेकर जाए जो मुक़ाबले से भागना जानता ही नहीं। शेर हमेशा करार रहे फ़रार नहीं। फ़िक्र में चीते की तरह हो जो हर एक को अपने मुक़ाबिल कमज़ोर जानता है। बहादुरी में गोह की तरह हो जो अपने सारे आज़ा से लड़ती है। भारी हथियार उठाने में च्यूंटी की तरह हो जो अपने से कई गुना ज़्यादा बोझ उठा लेती है। साबित क़दमी में पत्थर की तरह हो जो अपनी जगह से हटना ही नहीं जानता। मौक़ा की तलाश में मुर्ग़ की तरह हो, सफ़ में साबित क़दमी में पूरे ध्यान से नमाज़ पढ़ने वाले की तरह हो, अमीर की इताअत में मुक़्तदी नमाज़ी की तरह हो जिस की हर हरकत इमाम के ताबेअ होती है। अगर यह सिफ़ात लेकर ग़ाज़ी मैदान में जाए तो इन्शा अल्लाह फ़त्ह व ज़फ़र ही पाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

११२) जो कुफ़्फ़ार मुसलमानों की रिआया हैं उन पर सियासी मुल्की अहकाम की इताअत करनी लाज़िम है। मज़हबी अहकाम में वह आज़ाद हैं यानी बुत परस्ती, शराब नोशी, सूद ख़ोरी कर सकते हैं कि यह उन के मज़हबी अहकाम हैं। मगर चोरी, डकैती, रिशवत ख़ोरी नहीं कर सकते कि यह मुल्की इन्तिज़ामात हैं। (तफ़सीरे नईमी)

११३) एक अन्सारी हारून बिन मुन्ज़िर बनी औफ़ इब्ने मालिक क़बीले से थे। उन की कुन्नियत अबू लुबाबा थी। उन का घर बार बाल बच्चे मदीने के यहूदी बनी क़ुरैज़ा के मुहल्ले में रहते थे। ग़ज़वए ख़न्दक़ के बाद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बनी क़ुरैज़ा का इक्कीस दिन मुहासिरा रखा। वह तंग आ गए तो उन्हों ने बनी नुज़ैर की तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुलह करनी चाही। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्कार किया और फ़रमाया कि अगर चाहो तो सअद इब्ने मआज़ को हमारे और अपने बीच हकम बनालो। यहूद ने कहा कि अबू लुबाबा को हमारे पास भेज दिया जाए

ताकि हम उन से मशवरा करलें। चुनान्चे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्हें बनी कुरैज़ा के पास भेज दिया। यहूद ने उन से पूछा कि अगर हम इब्ने मआज़ को हकम बनालें तो हमारे बारे में वह क्या फ़ैसला देंगे? तुम्हारा क्या ख़्याल है? अबू लुबाबा ने अपने हलक़ पर उंगली फेरी यानी तुम सब क़त्ल कर दिये जाओगे। इन्हें अपने बाल बच्चों और घर बार की फ़िक्र थी कि बनी कुरैज़ा उन्हें परेशान न करें। मगर इशारा करते ही ख़्याल आया कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ख़्यानत की कि उन का राज़ ज़ाहिर कर दिया। मस्जिदे नबवी में आए और एक सुतून से अपने को बांध लिया और बोले: अब मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही खोलेंगे तो खुलूंगा वरना कुछ खाऊंगा न पियूंगा, मैं ने बड़ा भारी जुर्म किया है। हुज़ूरे अनवर की ख़िदमत में यह वाक़िआ अर्ज़ किया गया। फ़रमाया: अगर अबू लुबाबा मेरे पास आ जाते तो मैं उन की माफ़ी की दुआ करता। अब वह बराहे रास्त अपने रब के पास हाज़िर हो गए। अब वहाँ के फ़ैसले का इन्तिज़ार करना चाहिये। अबू लुबाबा सात दिन भूखे प्यासे रहे यहाँ तक कि ग़शी आ गई तब उन की तौबा क़ुबूल हुई। लोगों ने कहा तुम्हारी तौबा क़ुबूल हो गई। अब तुम अपने को खोल लो। वह बोले: हरगिज़ नहीं बल्कि मुझे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हाथ से खोलें तो खुलूंगा। तब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें अपने दस्ते मुबारक से खोला। जिस सुतून से अबू लुबाबा ने खुद को बांधा था उसे सुतूने तौबा और इस्तिवाना लुबाबा भी कहते हैं। लोग वहाँ खड़े होकर तौबा इस्तिग़फ़ार करते हैं और नवाफ़िल पढ़ते हैं। इस तौबा क़ुबूल होने पर अबू लुबाबा हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर बोले कि मुझ से यह गुनाह घर बार माल व मताअ की मुहब्बत ने करवाया। मैं आज से वहाँ का रहना सहना छोड़ता हूँ और अपना सारा माल ग़रीबों मिस्कीनों में तक़सीम करता हूँ। (ख़ाज़िन, तफ़सीरे कबीर)

११४) जब मुसलमान मक्कए मुकर्रमा से हिजरत करके दूसरे इलाक़ों में जा बसे और वहाँ सुकून से रब की इबादत करने लगे तो मक्का के कुफ़्फ़ार के दिलों में हसद की आग भड़क उठी कि यह लोग हमारे पंजए सितम से किस तरह निकल गए। फिर एक हज के मौक़ा पर बारह अन्सार ने मक्के आकर हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्ते मुबारक पर इस्लाम की बैअत की। दूसरे साल हज के मौक़ा पर सत्तर अन्सार ने बैअत की जिसे बैअते अक़बा कहते हैं। यह ख़बर मक्का के काफ़िरों को मिली तो वह आग बगूला हो गए। आख़िरकार यह लोग एक दिन कुरैश के सरदार कुसइ बिन किलाब के

घर में जमा हुए जो अब दारुन्नदवा बन चुका था यानी कम्पनी घर। इन लोगों में उतबा बिन रबीआ, शीबा बिन रबीआ, अबू सुफ़ियान, तैअमा बिन अदी, नज़र बिन हारिस, अबुल बख़्तर या बिन हिशाम, ज़मआ बिन असवद, हकीम बिन हिज़ाम, मुनब्बिह बिन हज्जाज और उमय्या बिन ख़लफ़ ख़ुसूसी मेहमान थे। यह लोग बोले कि अब क्या करना चाहिये? मुहम्मद का मुआमला हमारे क़ाबू से बाहर होता जा रहा है इस के असरात अब दूसरे इलाक़ों में पहुंच रहे हैं। अभी यह बात यहीं तक हो पाई थी कि सफ़ेद दाढ़ी वाला एक बूढ़ा दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ। पूछा गया कि तू कौन है और हमारी इस ख़ुसूसी मीटिंग में क्यों आया है? वह बोला: मैं शैख़ नज्दी हूँ मुझे तुम्हारी इस सभा का यहाँ आकर पता लगा तो मैं भी तुम्हें अच्छी सलाह देने आ गया। तुम को मेरे मशवरे से बहुत फ़ायदा पहुंचेगा। यह लोग बोले: आ जाइये आप भी हमारी सभा में शामिल हो जाइये। यह शैख़ नज्दी इब्लीस था जो उन में शामिल हो गया। अब बात आगे चली। इब्लीस से अब तक की बात चीत कही गई। वह बोला कि अपने मशवरे पेश करो। पहले अबुल बख़्तरी बिन हिशाम बोला: मुसलमानों पर सख़्तियाँ करके हम देख चुके हैं, कुछ काम न बना। अब हमें मुहम्मद का इन्तिज़ाम करना चाहिये। मेरा ख़्याल यह है कि इन्हें एक घर में क़ैद करके दरवाज़ा पत्थरों से चुन दिया जाए ताकि वह वहीं हलाक हो जाएं। इस पर शैख़ नज्दी बोला: यह राए ठीक नहीं है क्योंकि उन की क़ौम बनी हाशम इन्हें ज़बरदस्ती आज़ाद करा लेगी और मक्का में ख़ाना जंगी छिड़ जाने का ख़तरा है। इस सूरत में मुहम्मद को ही फ़ायदा होगा। अबुल बख़्तरी की राए रद हो गई। इस के बाद इब्ने हिशाम उठा और बोला कि उन्हें एक ऊँट पर सवार करा के मक्का से इतनी दूर निकाल दो कि वह फिर मक्का का रुख़ न कर सकें और हमें इन से छुटकारा मिल जाए। शैख़ नज्दी बोला: यह राए भी ठीक नहीं है क्योंकि तुम देखते हो वह कैसी मीठी ज़बान वाले हैं कि अपनी बातों से ख़ल्क़ का दिल मोह लेते हैं। जो इन की बात सुन लेता है वह इन्हीं का हो जाता है। अगर तुम ने उन्हें मक्का से निकाल दिया तो वह कहीं और जाकर वहाँ के लोगों को मुसलमान कर लेंगे फिर उन की मदद से तुम पर हमला कर देंगे। तुम तो अपनी हलाकत की तदबीर कर रहे हो। चुनान्चे यह राए भी रद हो गई। फिर अबू जहल उठा और बोला: मेरी यह राए है कि क़ुरैश के हर ख़ानदान से कुछ नौजवान तेज़ तलवार लेकर एक दम मुहम्मद पर टूट पड़ें और उन्हें क़त्ल करदें। यह पता न लगे कि कौन क़ातिल है। बनी हाशम का क़बीला इतने सारे क़बीलों से न लड़ सकेगा, ख़ूँबहा अदा कर देंगे।

शैख़ नज्दी बोलाः हाँ यह राए अच्छी है। चुनान्चे यह क़रारदाद मनजूर हुई और मक्का के काफ़िर इसे अमली जामा पहनाने के लिये अपने घर चले गए। इधर हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस सारे वाक़ए की ख़बर दी और हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिजरत का संदेसा पहुंचाया। एक रात कुरैश के काफ़िरों ने नंगी तलवारें लेकर हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का घर घेर लिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के हुक्म से हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम से फ़रमाया कि तुम आज रात मेरे बिस्तर पर सो रहो मैं तुम से वादा करता हूँ कि कुफ़्फ़ार तुम्हारा कुछ न बिगाड़ पाएंगे। इन्हीं क़ातिलों जल्लादों की अमानतें मेरे पास हैं उन की अमानतें अदा करके मेरे पास मदीना चले आना। मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम बखुशी राज़ी हो गए। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के हुक्म से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को साथ लिया और काफ़िरों के घेरे से निकल कर ग़ारे सौर में तशरीफ़ ले गए। इधर यह कुफ़्फ़ार हज़रत अली को हुज़ूरे अक़दस समझे हुए घेराव किये रहे। सुब्हे सादिक़ के वक़्त जब हज़रत अली बिस्तरे रसूल से उठे तो कुफ़्फ़ार हैरान रह गए। पूछने लगे ऐ अली मुहम्मद कहाँ हैं? आप ने फ़रमायाः रब जाने। यह लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तलाश में दीवानों की तरह चारों तरफ़ फैल गए। उधर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने रफ़ीक़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ सौर पहाड़ के एक ग़ार में जलवागर हो गए। अल्लाह के हुक्म से ग़ार के दहाने पर मकड़ी ने जाला तान लिया और एक कबूतरी ने अन्डे दे दिये। कुछ काफ़िर तलाश करते करते यहाँ भी पहुंच गए मगर जाला और अन्डे देख कर अन्दर दाख़िल न हुए। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ग़ारे सौर में तीन दिन क़ियाम फ़रमाया फिर मदीनए मुनव्वरा रवाना हो गए। (तफ़सीरे ख़ाज़िन, बैज़ावी, तफ़सीरे कबीर, तफ़सीरे रूहुल मआनी वग़ैरा)

११५) क़बीलए बिन अब्दुद्दार का एक शख़्स था नज़र इब्ने हारिस इब्ने अलक़मा जो तिजारत के सिलसिले में फ़ारस, रोम, कूफ़ा वग़ैरा जाया करता था और वहाँ फ़ारस वालों को रुस्तम और स्फ़न्दयार वग़ैरहुम के क़िस्से कहते सुनते देखता रहता था। उस ने वह क़िस्से याद कर लिये और वहाँ से उन दास्तानों की किताब ख़रीद कर साथ लाया। इस के अलावा उस ने यहूदियों और ईसाइयों को सज्दे सजूद करते और इबादत करते देखा तो वह मक्का आकर काफ़िरों से बोला कि मुहम्मद तुम को आद और समूद क़ौमों के क़िस्से

सुनाते हैं। आओ मैं तुम को रुस्तम और इस्फंदयार की कहानियाँ सुनाऊँ। वह तुम को कुरआन सुनाते हैं मैं तुम्हें कलीला दमना की किताब दिखाऊँ। वह अपनी उम्मत को रुकूअ और सुजूद का हुक्म देते हैं मैं यहूद और नसारा को यह काम करते देख आया हूँ अगर यह बरहक़ हैं तो मैं और यहूद और नसारा भी सच्चाई पर हैं। जब नज़र इब्ने हारिस ने यह बकवास की तो हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन ने उस से कहा: ऐ बदनसीब अल्लाह से डर, हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बिल्कुल हक़ फ़रमाते हैं। वह सच्चे हैं उन का कलाम भी सच्चा। नज़र बोला: मैं भी तो सच्चा हूँ और मेरा कलाम भी सच्चा है। वह कहते हैं ला इलाहा इल्लल्लाह मैं भी कहता हूँ ला इलाहा इल्लल्लाह। मैं इतना और कहता हूँ कि मलाइका बनातुल्लाह यानी फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं। फिर बोला कि इलाही अगर कुरआन और मुहम्मद के फ़रमान सच्चे हैं तो मुझ पर और मेरी क़ौम पर क़ौमे लूत की तरह आसमान से पत्थर बरसा दे या क़ौमे सालेह और क़ौमे हूद की तरह का अज़ाब भेज दे। नज़र इब्ने हारिस वह बदबख़्त अज़ली काफ़िर है जिस के बारे में कुरआने करीम में दस से ज़्यादा आयतें नाज़िल हुईं। ग़ज़वए बद्र में तीन शख़्सों को हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़त्ल किया। तअमा बिन अदी, उक़बा बिन अबी मुईत और नज़र इब्ने हारिस यानी उस का मुंह मांगा अज़ाब उस पर नाज़िल हुआ। (तफ़सीरे ख़ाज़िन)

११६) जंगे उहद के मौक़ा पर अबू सुफ़ियान इब्ने हरब ने बहुत से काफ़िरों को किराए पर जंग के लिये तय्यार किया। उन पर चालीस औक़िया सोना ख़र्च किया। एक औक़िया चालीस मिस्क़ाल का होता है और एक मिस्क़ाल साढ़े चार माशे का। (ख़ाज़िन, रूहुल मआनी)

११७) मुस्लिम शरीफ़ के आख़िर में हदीसे हिजरत है जिस में रिवायत है कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदीनए पाक पहुंचने पर अन्सार बाज़ारों में या मुहम्मदुर रसूलुल्लाह के नअरे लगाते फिरते थे।

११८) अल्लाह की राह में क़त्ल की तीन सूरतें हैं: मुर्तद का क़त्ल, ज़ानी का रज्म और ज़ुल्मन क़ातिल का क़त्ल। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुस्ताख़ का क़त्ल अगर्चे हमारा भाई ब्रादर हो मगर क़त्ल का मुस्तहिक़ है। (तफ़सीरे नईमी)

११९) जन्नत के सौ दर्जे मुजाहिदीन के लिये ख़ास हैं जिन के बीच के हिस्से का नाम फ़िरदौस है इसी पर अर्शे इलाही है और इस से जन्नत की नहरें निकलती हैं। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१२०) जब हिजरत के बाद भी मक्का वालों की दुश्मनी कम नहीं हुई बल्कि बढ़ती ही गई तो आजिज़ होकर हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके हक़ में बद दुआ की जिस के असर का ज़हूर यूँ हुआ कि इधर बारिश रुकी और उधर यमामा (यमन का इलाक़ा) के रईस समामा ने जो मुसलमान हो चुके थे ग़ल्ला भेजना बन्द कर दिया। मक्का की मन्डी यमामा ही से थी। अब क़हत पूरा हो गया। यह क़हत इतना सख़्त था कि लोगों ने मुर्दार का गोश्त, खाल, हड्डियाँ सब खानी शुरू कर दी थीं। अबू सुफ़ियान वग़ैरा ने सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लिखा भी और आप के हुज़ूर आए भी कि दुआ करवायें। सरकार जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमाई लेकिन कुरआन की पेशगोई के मुताबिक़ इस फ़ारिग़ुल बाली के बाद भी मुश्रिकों ने दुशमनी न छोड़ी बल्कि और शिद्दत से मुख़ालिफ़त करने लगे। (तफ़सीरे नईमी)

१२१) सन छः हिजरी का रजब मुताबिक़ मार्च ६२८ ईसवी था और मक्का की हुकूमत पर अभी बदस्तूर कुरैश के मुश्रिकों का ही क़ब्ज़ा था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक ख़्वाब की बिना पर कअबे की ज़ियारत करने और उमरे का ख़्याल पैदा हुआ। आप तक़रीबन चौदह सौ एहराम पोश सहाबा की जमाअत के साथ कअबा के तवाफ़ के लिये रवाना हुए। मक्का शहर से तीन मील उत्तर में एक जगह हुदेबिया है। अभी क़ाफ़िला यहीं तक पहुंचा था कि उधर से मक्का की हुकूमत की तरफ़ से मुज़ाहिमत की ख़बर मिली। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आगे बढ़ने की बजाए वहीं क़ियाम फ़रमा दिया। और एक क़ासिद के हाथ मक्का वालों को यह प्याम कहला भेजा कि हम लड़ने नहीं बल्कि सिर्फ़ सुलह और आशती के साथ उमरा अदा करने आए हैं। जवाब न आया तो हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु को अपना सफ़ीर बना कर भेजा। उन की वापसी में देर हुई और यह ख़बर मशहूर हो गई कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यह सफ़ीर शहीद कर दिये गए। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हक़ीक़त का इल्म था मगर सहाबा ज़ाहिरी ख़बर से घबरा गए और उन में गुस्से की लहर दौड़ गई। उन्हों ने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्ते मुबारक पर जिहाद की बैअत की। मुश्रिकों ने यह सुन कर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु को वापस भेज दिया। अब मक्का के कुछ सरदार भी हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आए और बात चीत के बाद एक सुलहनामा तय्यार हुआ जिस की अकसर दफ़आत

से बज़ाहिर मुसलमानों की सुबकी होती थी। इस लिये कुछ सहाबा को दरमियान में बहुत जोश भी आ गया मगर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सब को रोका और आख़िर में मुश्रिकों की ही शराइत पर सुलहनामा तय्यार हो गया। हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने जाँनिसारों के साथ मक्कए मुअज़्ज़मा तक पहुंचने से पहले ही वापस आ गए। इतिहासका इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि फ़त्हे मक्का, फ़त्हे ख़ैबर बल्कि आइन्दा की तमाम इस्लामी फ़ुतूहात का संगे बुनियाद यही सुलहे हुदैबिया है। (तफ़सीरे नईमी)

१२२) फ़त्हे ख़ैबर इस्लामी फ़ुतूहात में एक अहम संगे मेल का दर्जा रखती है। ख़ैबर मदीनए मुनव्वरा से सौ मील के फ़ासिले पर शाम के रास्ते में यहूद की एक मज़बूत गढ़ी थी और यहीं दौलत मन्द और ताक़तवर यहूदियों की एक बस्ती भी आबाद थी। इस जंग में कुल उन्नीस मुसलमान शहीद हुए। यहूद के तिरानवे आदमी काम आए और ज़मीने हिजाज़ पर उन का सब से मज़बूत क़िला मुसख़्ख़र हो गया। (तफ़सीरे नईमी)

१२३) हातिब इब्ने अबी बलतआ यमनी सुम्मा मक्की बद्री मर्तबे के बड़े सहाबी थे। ख़ुद तो हिजरत करके मदीने आ गए थे मगर सारा ख़ानदान मक्का में ही था। फ़त्हे मक्का से ज़रा पहले अपने ख़ानदान वालों को ख़त लिखा कि बहुत जल्द मक्का पर चढ़ाई होने वाली है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला की वही के ज़रिये ख़बर हो गई। आप के हुक्म से वह औरत पकड़ कर लाई गई जो ख़त छुपा कर लेजा रही थे। हज़रत हातिब ने अपने बयान में कहा कि मेरी नियत बुरी न थी मैं ने तो सिर्फ़ यह समझ कर लिखा कि इस में इस्लाम का कोई नुक़सान नहीं। आप को फ़त्ह तो अल्लाह के फ़ज़्ल से ज़रूर हो कर रहेगी हाँ मेरी इस इत्तिला से मक्का वाले ज़रूर मेरा एहसान मानने लगेंगे और मेरे ख़ानदान वालों की रिआयत करेंगे कि मुझ परदेसी और मेरे ख़ानदान का मक्का वालों पर कोई क़राबत का हक़ वग़ैरा भी नहीं है। हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन की नियत की सच्चाई की तस्दीक़ करके फ़रमाया कि तुम सच्चे हो बल्कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने दीनी जोश में इस दफ़ा को लागू कराना चाहा जो दुशमन से मिल जाने वालों और मुख़्बिरी करने वालों के लिये है तो हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: यह तो बद्री हैं और तुम्हें मालूम है कि बद्र वालों के ख़ुलूस और ईमान की जाँच ख़ुद अल्लाह तआला कर चुका है। हज़रत हातिब पर सहाबी और फिर बद्री सहाबी होने के बावजूद इतनी सख़्त पकड़ हुई इस से ज़ाहिर है कि इस्लामी शरीअत में हर्बी दुशमन

से ख़त व किताबत रखना या ताल्लुक़ क़ायम रखना किस दर्जे का शदीद जुर्म है। (तफ़सीरे नईमी)

१२४) हदीस में आया है कि जब तक तौबा मुन्क़ता न होगी हिजरत भी मुन्क़ता न होगी और तौबा सूरज के मग़रिब से निकलने के बाद मुन्क़ता होगी। (तफ़सीरे नईमी)

१२५) हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु के सरिया को ग़ज़वए ज़ातुल ख़ब्त भी कहते हैं। ख़ब्त का मतलब है पत्ते झाड़ना। इस लश्कर के सरदार हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु थे। तोशे की कमी से यह नौबत आ गई कि दरख़्तों के पत्ते झाड़ झाड़ कर खाए। समुन्द्र के किनारे से यह लशकर जा रहा था कि समुन्द्र ने एक बहुत बड़ी मछली किनारे पर फेंक दी। इस मछली का नाम अंबर है। यह इतनी बड़ी थी कि आधे महीने तक सारा लशकर इस से पेट भरता रहा। लशकर में तीन सौ आदमी थे। इस मछली की एक पसली की हड्डी हज़रत अबू उबैदा ने खड़ी कर दी तो बहुत ऊँचा आदमी उस के नीचे से निकल आया। उस की आँख के ढेले में मनों आटा ख़मीर किया जाता था। मदीना लौट कर सहाबए किराम ने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस मछली का ज़िक्र किया तो आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने तुम्हें रिज़्क़ दिया, खाओ और अगर उस में से कुछ बचा हो तो मुझे भी दो। चुनान्चे उस मछली का कुछ गोश्त हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक्दस में पेश किया गया जिसे सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तनावुल फ़रमाया। (सीरते रसूले अरबी)

१२६) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुलहे हुदैबिया से वफ़ाते अक्दस तक के अर्से में क़बीलों के सरदारों, इलाक़ाई अफ़सरों, पड़ोसी बादशाहों और मज़हबी पेशवाओं के नाम तक़रीबन ढाई सौ ख़ुतूत रवाना फ़रमाए। (ज़ियाउन्नबी)

१२७) फ़िक़्ह के माहिरों ने लिखा है कि जब एक मुल्क में रह कर दीन के फ़राइज़ पूरी तरह अदा न हो सकते हों और यह मालूम हो कि कोई दूसरा मुल्क है जहाँ दीनी फ़राइज़ अदा हो सकते हैं तो पहले मुल्क से दूसरे मुल्क की तरफ़ हिजरत वाजिब हो जाती है। (तफ़सीरे नईमी)

१२८) हिजरत की रात हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा के मकान के दरवाज़े पर बरआमद हुए। अबू जहल, अबू लहब, अबू सुफ़ियान और कुरैश के दूसरे सरदारों को देखा कि वह मकान का घिराव किये हुए हैं। आप ने सूरए यासीन

की शुरू की आयतें पढ़ीं और फिर ज़मीन से तीन मुट्ठी मिट्टी उठा कर شاهت الوجوه। (फिर जाएं उनके मुंह) पढ़ते हुए आप ने सामने दायें बायें काफ़िरों पर फेंक दीं और उन्ही के बीच से चलते हुए बैतुल्लाह शरीफ तशरीफ़ ले गए। (ज़ियाउन्नबी)

१२९) जिस वक़्त हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिजरत फ़रमा रहे थे तो सुराक़ा ने सुर्ख़ ऊँटों के इन्आम के लालच में आप का पीछा किया मगर जब उस की सवारी अल्लाह के हुक्म से रेत में धंस गई तो उस ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से माफी मांगी। सुराक़ा ने अर्ज़ कियाः मुझे यक़ीन है कि एक दिन आप मक्का में फ़ातेह की हैसियत से दाख़िल होंगे लिहाज़ा मुझे एक अमान नामा लिख दीजिये ताकि आप की फ़त्ह के वक़्त मेरा घराना आप की फ़ौज से मेहफ़ूज़ रह सके। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को अमान नामा लिखने का हुक्म दिया। दुनिया का यह पहला अमान नामा सुराक़ा को मिला। उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सुराक़ा मैं तेरे हाथ में किसरा के कंगन देख रहा हूँ। हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के अहदे मुबारक में जब रोम फ़त्ह हुआ और मस्जिदे नबवी में किसरा के ज़ेवर लाकर डाले गए तो ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने सुराक़ा को कंगन अता फ़रमाए। इस तरह सच्चे नबी का क़ौल बरसों बाद सच हो कर रहा। (बुख़ारी)

१३०) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिजरत करके जिस वक़्त मदीने में दाख़िल हुए उस वक़्त का मन्ज़र यह था कि एक ऊँट पर अब्दुल्लाह बिन अरीक़त ईसाई रहबर, दूसरे पर आमिर बिन फ़हमीरा (हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का गुलाम) तीसरे पर आगे हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और पीछे हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ फ़रमा थे। (सीरते रसूले अरबी)

१३१) बैअते रिज़वान एक बड़े कांटेदार दरख़्त के नीचे हुई थी। जिस को अरब में समरा कहते हैं। अल्लाह तआला ने इस दरख़्त को अनदेखा कर दिया। अगले साल सहाबए किराम ने बहुत तलाश किया मगर यह दरख़्त किसी को नज़र नहीं आया। मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि बैअते रिज़वान में हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बैअत की। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

१३२) फ़त्हे मक्का सन आठ हिजरी में हुई। (बुख़ारी शरीफ़)

१३३) ग़नीमत वह माल है जो जिहाद में जबरन काफ़िरों से छीना जाए और मन्क़ूली माल हो। ज़मीन और ग़ुलाम इस में नहीं आते। सारी ग़नीमत के पांच हिस्से किये जाते थे। एक हिस्सा अल्लाह व रसूल के नाम का, बाक़ी चार हिस्से मुजाहिदों के। फिर अल्लाह नाम के हिस्सा के पांच हिस्से किये जाते थे जिन में एक हिस्सा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जिसे वह अपनी ज़ात और अपने घर वालों पर ख़र्च करते और दूसरा हिस्सा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उन रिश्तादारों का जो नसब और नुसरत में उन के क़रीब हैं, अमीर हों या ग़रीब। तीसरा हिससा आम यतीमों का। चौथा हिस्सा आम मिस्कीनों का और पांचवाँ हिस्सा राहगीर मुसाफ़िरों का। (तफ़सीरे नईमी) इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात शरीफ़ के बाद हुज़ूर और आप के रिश्तादारों का हिस्सा दोनों ख़त्म हो गए। अब अल्लाह नाम के हिस्से की तक़सीम तीन हिस्सों पर होगी: यतीमों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर। हाँ इन तीनों में हुज़ूर के रिश्ते दारों को तरजीह दी जाएगी। (तफ़सीरे अहमदी, रूहुल बयान)

१३४) मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत उक़बा इब्ने आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो तीर अन्दाज़ी सीखे फिर इसे छोड़ दे वह हम में से नहीं।

१३५) अबू दाऊद शरीफ़ में हज़रत उक़बा इब्ने आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: एक तीर की बरकत से अल्लाह तीन शख़्सों को जन्नत देगा: ख़ैर की नियत से तीर बनाने वाला, तीर चलाने वाला और उसे मदद देने वाला। इस लिये तीर अन्दाज़ी और घुड़ सवारी करो। मुझे घुड़ सवारी से ज़्यादा तीर अन्दाज़ी पसन्द है।

१३६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: घोड़े की पेशानी के बालों से क़ियामत तक ख़ैर बन्धी हुई है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

१३७) बुख़ारी में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो ख़ैर की नियत से घोड़ा पाले तो क़ियामत के दिन घोड़े की लीद और पेशाब उस की नेकियों के पल्ले में होंगे।

१३८) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तेरह या सतरह रमज़ान सन आठ हिजरी में मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह किया। मक्कए मुअज़्ज़मा से तीन दिन की राह पर ताइफ़ के क़रीब एक जगह है हुनैन जहाँ की हज़रत हलीमा थीं। वहाँ के दो क़बीले हुवाज़न और सक़ीफ़ सख़्त सरकश थे। उन्हों ने आपस

में सलाह की कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शान व शौकत बहुत बढ़ती जा रही है। अगर यही हाल रहा तो वह हम पर भी ग़ालिब आ जाएंगे। इस लिये हम दोनों क़बीले मिल कर उन पर हमला कर दें। उन्हें पता चल जाएगा कि हम कितने बहादुर हैं। दोनों क़बीले हमला की तय्यारी करने लगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह हालात मालूम करके उन पर हमले की तय्यारी की। बारा हज़ार की जमाअत लेकर सन आठ हिजरी के शव्वाल के शुरू में मक्कए मुकर्रमा से रवाना हुए और दस शव्वाल को हुनैन पहुंच गए। मुक़ाबले में हुवाज़न और सक़ीफ़ दोनों क़बीले आए। हुवाज़न का सरदार मालिक इब्ने औफ़ था और सक़ीफ़ का सरदार किनाना इब्ने अब्द था। इन दोनों क़बीलों की तादाद चार हज़ार थी। कुछ मसलमानों ने कहा कि आज हम काफ़िरों से तीन गुना ज़्यादा हैं हम हरगिज़ मग़लूब नहीं होंगे। यह क़ौल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नागवार हुआ कि मुसलमानों की नज़र अपनी कसरत पर गई, अल्लाह की नुसरत पर न गई। (मदारिजन्नबुव्वत, तफ़सीरे कबीर, ख़ाज़िन, रूहुल मआनी) आख़िरकार घमासान की जंग हुई। हुवाज़न और सक़ीफ़ भाग निकले। मुसलमानों ने उन का पीछा किया। उन के साथ माल बहुत ज़्यादा था। मुसलमान माले ग़नीमत जमा करने और उन्हें क़ैद करने में मसरूफ़ हुए। इन दोनों क़बीलों ने पलट कर ज़ोरदार हमल किया। यह लोग तीर चलाने में कमाल रखते थे। उन के तीरों की बारिश से मुसलामानों के क़दम उखड़ गए और भगदड़ मच गई। मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी जगह डटे रहे बल्कि आगे बढ़ते रहे। आप के साथ हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब, अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब, जअफ़र बिन अबू सुफ़ियान बिन हारिस, अली इब्ने अबी तालिब, रबीआ इब्ने हारिस, फ़ज़्ल इब्ने अब्बास, उमामा बिन ज़ैद, ऐमन इब्ने उबैद जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त करते हुए शहीद हुए, अबू बक्र सिद्दीक़, उमर बिन ख़त्ताब यह दस हज़रात रहे। इन के अलावा सौ सहाबा और भी थे जो जमे रहे मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ न थे बल्कि अपने अपने मरकज़ों में थे। (तफ़सीरे सावी) काफ़िरों ने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर एक साथ हमला किया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह फ़रमाते हुए ख़च्चर पर से तलवार सौंत कर उतरे कि मैं झूटा नबी नहीं हूँ। मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह बेमिसाल शुजाअत देख कर कुफ़्फ़ार काई की तरह फट गए। उस वक़्त हज़रत अब्बास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़च्चर की लगाम थामे हुए थे। और अबू सुफ़ियान बिन हारिस

रिकाब संभाले हुए थे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुक्म दियाः अब्बास उन मुसलमानों को पुकारो कि मैं यहाँ हूँ तुम कहाँ जा रहे हो? हज़रत अब्बास की आवाज़ आठ मील तक सुनी जाती थी। (तफ़सीरे सावी) हज़रत अब्बास ने पुकार लगाईः ऐ सूरए बकर वालो, ऐ मदीना वालो, रसूलुल्लाह यहाँ हैं इधर आओ। सब लब्बैक लब्बैक कहते हुए दौड़ पड़े और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गिर्द जमा हो गए। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मुट्ठी कंकरियाँ काफ़िरों की तरफ़ फेंकीं जो उन की आँखों में एक एक पड़ीं। फिर जो मुसलमानों ने हमला किया तो रब तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदक़ा में मुसलमानों को शानदार फ़त्ह अता फ़रमाई। इस ग़ज़वा में काफ़ी माले ग़नीमत मुसलमानों के हाथ लगा। छः हज़ार कैदी जिन में औरतें बच्चे बहुत थे, चौबीस हज़ार ऊँट, बकरियों का तो शुमार ही नहीं। इन कैदियों में रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दूध शरीक बहन यानी हज़रत हलीमा की बेटी भी थीं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन का बहुत एहतिराम किया और इन्हें बहुत सा माल देकर आज़ाद फ़रमा दिया। दूसरे कैदी भी वापस कर दिये गए। (तफ़सीरे सावी) फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यहीं से ताइफ़ तशरीफ़ ले गए। मक़ामे जेअराना में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने माले ग़नीमत तक़सीम किया। यहीं से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमरे का एहराम बांधा और उमरा किया। इस मौक़ा पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू सुफ़ियान बिन हरब, सफ़वान बिन उमय्या, उऐनिया बिन हसीन, अक़रअ इब्ने हाबिस को सौ सौ ऊँट अता फ़रमाए। (ख़ाज़िन)

१३९) ग़ज़वए हुनैन में फ़रिश्तों का शरीक होना साबित है मगर उन का मुसलमानों के साथ मिल कर काफ़िरों से जंग करना साबित नहीं। एक कौल के मुताबिक़ उन फ़रिश्तों की तादाद सोलह हज़ार थी। (तफ़सीरे नईमी)

१४०) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़त्हे मक्का, ग़ज़वए हुनैन, फ़त्हे ताइफ़ और उमरा जेअराना से फ़राग़त पाकर मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए। कुछ कियाम फ़रमाया। ख़बर लगी कि रोमी लश्कर बड़ी भारी तादाद में शाम के शहर तबूक और उस के आस पास के मुसलमानों पर हमला करने के लिये जमा हुआ है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चाहा कि इन्हें पेश क़दमी न करने दें बल्कि तबूक पहुंच कर वहीं उन पर जिहाद करें। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने इस इरादे से मुसलमानों को मुत्तला फ़रमा दिया। तबूक मदीनए मुनव्वरा से बहुत दूर लग भग पांच सौ मील पर था। मौसम सख़्त गर्म था। मदीना वालों के खजूरों के बाग़ तय्यार थे इस लिये यह

जिहाद मुनाफ़िक़ों को आम तौर से और कुछ सहाबा को ख़ास तौर से बहुत भारी मालूम हुआ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रजब सन ९ हिजरी में तीस या चालीस हज़ार के भारी लशकर के साथ कूच फ़रमा दिया। इस लशकर में दस हज़ार घोड़े थे। इस ग़ज़्वा में हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने दस हज़ार मुजाहिदों को जिहाद का सामान दिया। दस हज़ार अशरफ़ियाँ, नौ सौ ऊँट, सौ घोड़े सामान के साथ दिये। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना सारा माल जिहाद में दे डाला। इस सामान की मालियत चार हज़ार दिरहम थी। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने आधा माल, हज़रत अब्दुर्रहमान इब्ने औफ़ ने सौ औक़िया सोना दिया। हज़रत अब्बास और हज़रत तल्हा ने भी भारी अतिया दिया। औरतों ने अपने ज़ेवर उतार कर नज़्र कर दिये। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने के इन्तिज़ाम के लिये हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम और मुहम्मद बिन सलमा अन्सारी को छोड़ा। इस लशकर में अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ अपने साथियों के साथ रवाना हुआ मगर सनियतुल वदाअ से ही लौट गया। इस जिहाद में बड़ा झन्डा हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया गया दूसरा बड़ा परचम हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु को। क़बीलए औस का झन्डा उसैद बिन हसीर को, ख़ज़रज का झन्डा हुबाब इब्ने मुन्ज़िर को। इस ग़ज़्वे में मुनाफ़िक़ तो गए ही नहीं, कुछ मुसलमान इरादा ही करते रह गए, शरीक न हो सके। (तफ़सीरे सावी, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, रूहुल बयान)

१४१) ग़ज़्वए तबूक का नाम ग़ज़्वए उसरत और ग़ज़्वए फ़ाज़िहा भी है क्योंकि इस मौक़े पर मुसलमान बड़ी तंगी में थे और इस से मुनाफ़िक़ों की बड़ी फ़ज़ीहत और रुस्वाई हुई। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

१४२) जब हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तबूक पहुंचे तो वहाँ पानी का एक चश्मा था जिस में पानी बहुत थोड़ा था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस में कुल्ली फ़रमा दी जिस से पानी बहुत ज़्यादा हो गया। इस्लामी लशकर और इस के तमाम जानवर सैर हो गए। रोम के बादशाह हिरक़्ल ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुक़ाबला नहीं किया। रोमी फ़ौजें वापस चली गईं। जंग की नौबत ही न आई। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

१४३) मुसलमानों ने हुदैबिया में पड़ाव डालने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़बर दी कि यहाँ कहीं पानी नहीं है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने तरकश से तीर निकाल कर एक सहाबी को दिया कि इसे वादी के किसी कुंवें में डाल दो। जैसे ही ऐसा किया गया कुंवें से पानी

जोश मार कर उबल पड़ा और सब इन्सान और जानवर सैराब हो गए। (रूहुल मआनी)

१४४) जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हिजरत के सफ़र पर निकले तो हज़रत सिद्दीके अकबर कभी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगे चलते कभी पीछे, कभी दाएं कभी बाएं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछाः ऐ अबू बक्र यह क्या? अर्ज़ कियाः मैं हूँ अकेला और सिम्तें हैं चार। हर सिम्त से हुज़ूर पर हमले का ख़तरा है। इस लिये मैं ऐसा कर रहा हूँ ताकि जिधर से भी हमला हो तो पहले मुझ पर हो। आख़िरकार उन्हों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने कांधे पर ले लिया और खुद पंजों के बल इस तरह चले कि हर पंजा ज़मीन पर रख कर घुमा देते ताकि पंजे का निशान न रह जाए और कोई खोज न निकाल सके। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

१४५) हिजरत के सफ़र में जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ारे सौर में रुके तो हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को बहुत सख़्त प्यास लगी, पानी मौजूद न था। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जाओ ग़ार के कोने में पानी पी लो। यह गए तो वहाँ पानी का चश्मा देखा जिस का रंग दूध से ज़्यादा सफ़ेद, शहद से ज़्यादा शीरीं, बर्फ़ से ज़्यादा ठन्डा, मुश्क से ज़्यादा खुश्बूदार था। आप ने खूब जी भर कर पिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः यह कौसर का चश्मा था जो ऐ अबू बक्र अल्लाह ने तुम्हारे लिये यहाँ भेजा। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

१४६) हिजरत के वक़्त मक्का के काफ़िरों की एक टोली हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ढूँडते ढूँडते ग़ारे सौर तक पहुंच गई। यह सब लाठियों और तलवारों से लैस थे। उन में से एक बोलाः इस ग़ार के अन्दर भी देख लेते हैं। उस का नाम अलक़मा इब्ने कुरज़ था जो फ़त्हे मक्का के दिन ईमान लाया। उमय्या बिन ख़लफ़ बोलाः यह मकड़ी का जाला मुहम्मद की पैदाइश से पहले का है अगर वह इस में दाख़िल हुए होते तो यह जाला टूट कर बिखर जाता। फिर यह टोली वहाँ से चली गई। उन काफ़िरों के चले जाने के बाद हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! अगर यह लोग हमें देख लेते तो हम कहाँ जाते? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः वहाँ जाते। यह कह कर ग़ार के एक कोने की तरफ़ इशारा किया। हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की

आँखों ने देखा कि वहाँ एक समुन्द्र का किनारा है जिस में एक कश्ती लगी हुई है। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

१४७) ग़ज़वए तबूक की रवानगी के मौक़ा पर हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु सफ़र में थे। जब वापस आए तो धूप तेज़ थी, दोपहर का वक़्त था, अपने बाग़ में उन का मकान था। पहुंचे तो देखा कि सायादार घने बाग़ में घर के अन्दर गोश्त की हाँडी चूल्हे पर है, बीवी ख़िदमत के लिये हाज़िर है। सवारी पर बैठे बैठे ही पूछा: जनाबे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहाँ हैं? बीबी साहिबा ने अर्ज़ किया: ग़ज़वए तबूक पर तशरीफ़ ले गए हैं। बोले: यह कैसे हो सकता है कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम धूप के मैदान में हों और मैं घने बाग़ के साए में। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छागल का गर्म पानी पी रहे हों और मैं यहाँ ख़मीरी रोटी भुने गोश्त से खाऊँ। यह कहा और सवारी की लगाम तबूक की तरफ़ फेर दी, उतरे भी नहीं। कुछ आगे गए तो हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबए किराम के साथ आते दिखाई दिये। आप भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ खुश खुश वापस आए। (तफ़सीरे नईमी)

१४८) बीबी हिन्दा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में अपने शौहर अबू सुफ़ियान की शिकायत की कि वह कन्जूस हैं मुझे काफ़ी ख़र्चा नहीं देते। क्या मैं उन की जेब से ज़रूरत भर के पैसे निकाल सकती हूँ? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें ज़रूरत भर के पैसे निकाल लेने की इजाज़त दे दी। (तफ़सीरे नईमी)

१४९) ग़ज़वए बनी ग़ित्फ़ान के मौक़े पर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक मन्ज़िल में एक दरख़्त के नीचे आराम फ़रमा रहे थे। सहाबए किराम भी उस जंगल में अलग अलग ठहरे हुए थे। एक ग़ित्फ़ानी काफ़िर आया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तलवार अपने क़ब्ज़े में करली और वही तलवार सूंत कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बोला: अब आप को मुझ से कौन बचाएगा? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह। यह सुनते ही उस का बदन काँपा, तलवार हाथ से गिर गई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तलवार उठा ली और फ़रमाया: अब बता तुझे मेरे हाथ से कौन बचाएगा? वह बोला: कोई नहीं। तब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे छोड़ दिया और उस से बदला न लिया। यह करम देख कर वह शख़्स मुसलमान हो गया। (रूहुल मआनी, रूहुल बयान वग़ैरा)

१५०) ग़ाज़ी को जिहाद में तीन चीज़ों से परहेज़ करना चाहिये और तीन

चीज़ों पर अमलः जिहाद में सिर्फ माल हासिल करने या मुल्कगीरी की नियत हरगिज़ न करे। अल्लाह के दीन की ख़िदमत, मज़लूम मुसलमानों की मदद और हिमायत की नियत हो। अपनी तादाद या अपनी कुव्वत या अपने हथियार पर हरगिज़ भरोसा न करे। जिहाद के दौरान ग़नीमत लूटने की कोशिश न करे। पहले फ़त्ह हासिल करे फिर सब माले ग़नीमत अल्लाह के दिये से अपना है। करने वाले काम यह हैं: जिहाद में तक्वा और तवक्कुल अपनाए, हाथ में तलवार हो और मुंह में अल्लाह का नाम। फ़त्ह और नुसरत को रब तआला की देन जाने, उसका शुक्र अदा करे, नमाज़ हरगिज़ न छोड़े, अफ़रा तफ़री की हालत में पैदल या सवारी पर चलते हुए इशारे से नमाज़ पढ़े। (तफ़सीरे नईमी)

१५१) ग़ज़वए उहद के लिये मक्के के काफ़िरों का लश्कर रवाना हुआ और वह लोग जब अबवा नामी मक़ाम पर पहुंचे जहाँ नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वालिदा माजिदा की क़ब्रे अनवर है तो उन्हों ने चाहा कि क़ब्रे अतहर को खोल कर हज़रत आमिना की क़ब्रे अतहर को खोल कर नअशे मुबारक या हड्डियाँ अपने साथ ले लें ताकि अगर इस जंग में हमारे कुछ लोग मुसलमानों के कैदी हो जाएं तो हम उन से कह सकें कि हमारे कैदी इन हड्डियों के बदले में रिहा कर दो। अबू सुफ़ियान ने इस राए को न माना और कहाः अगर तुम ने यह हरकत की तो बनू बक्र और बनू खुज़ाआ जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के हलीफ़ यानी साथी हैं तुम्हारे मुर्दों की सारी क़ब्रें उखाड़ कर हड्डियाँ बाहर फेंक देंगे। (मदारिजुन्नबुव्वत)

१५२) हज़रत अबू तल्हा अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ज़वए उहद के दिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने ढाल बन कर खड़े हो गए थे और अर्ज़ करते थेः या रसूलल्लाह! रब तआला मेरे जिस्म और जान को आप के लिये ढाल बना दे। आप तीर अन्दाज़ी में माहिर थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप को लकड़ियाँ उठा कर देते जब आप कमान में लगाते तो वह लकड़ी तीर बन जाती। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आप को खजूर की एक शाख़ दी जो आप के हाथ में पहुंचते ही तलवार बन गई। जैसे कि बद्र के दिन हज़रत अक्काशा रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में लकड़ी तलवार बन गई थी। इस तलवार का नाम अरजून था। यह तलवार मुअतसिम बिल्लाह ने दो सौ दीनार में ख़रीदी। (मदारिजुन्नबुव्वत)

१५३) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत सुहैब इब्ने सनान और अम्मार बिन यासिर और उन की वालिदा सुमय्या और यासिर और हज़रत बिलाल और हज़रत खुबाब रज़ियल्लाहु अन्हुम

मक्कए मुकर्रमा से हिजरत के इरादे से मदीनए मुनव्वरा रवाना हुए। रास्ते में दोनों पर कुरैश के मुश्रिकों ने आ घेरा। हज़रत खुबाब और अबू ज़र तो भाग कर निकल गए। इन लोगों ने हज़रत यासिर को क़त्ल कर दिया और हज़रत सुमय्या के दोनों पांवों दो ऊँटों के पैरों से बांध कर उन्हें अलग अलग रिस्तों में हांक दिया जिस से वह भी शहीद हो गईं। हज़रत सुहैब सी बरस के बूढ़े थे और तीर अन्दाज़ी में माहिर थे। उन्हों ने अपना तीर कमान संभाला और फ़रमाने लगे: ऐ कुरैश जब तक मेरे तीर ख़त्म न हो जायें तुम मेरे पास नहीं फटक सकते। एक एक तीर से कई आदमियों को हलाक करूँगा। तीरों के बाद तलवार की बारी है तुम्हारी जमाअत को खेत की तरह काट कर रख दूँगा। मैं बूढ़ा आदमी हूँ मेरे चले जाने से तुम्हारा कोई नुकसान नहीं और रहने से तुम्हारा कुछ फ़ायदा भी नहीं। अगर तुम मुझे मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास चला जाने दो तो मक्कए मुकर्रमा में मेरा बहुत सा माल दफ़्न है मैं तुम्हें उस का पता बताता हूँ तुम जाकर सब ले लो। कुफ़्फ़ार राज़ी हो गए। आप ने अपने माल का पता दे दिया और मदीनए पाक आ गए। मदीने में सब से पहले हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हुई। आप ने फ़रमाया: ऐ सुहैब! तुम बड़े नफ़ा का सौदा करके आए। सुहैब ने पूछा: कौन सा सौदा? तब सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बताया: तुम जिस वक़्त अपना माल देकर काफ़िरों से जान छुड़ा रहे थे उस वक़्त यहाँ कुरआन की आयत उतर रही थी जिस में तुम्हारी तिजारत की तारीफ़ है। यह आयत सूरए बक़रा की आयत नम्बर दो सौ सात (२०७) है। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

५६४) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ग़ज़वए अहज़ाब के मौके पर, जिसे ग़ज़वए ख़न्दक़ भी कहते हैं, सहाबए किराम को ख़न्दक़ खोदने का हुक्म दिया और हर दस सहाबा पर चालीस गज़ ज़मीन तक़सीम फ़रमाई जिसे वह खोदें। अम्र बिन औफ़ फ़रमाते हैं कि मैं और सलमान फ़ारसी और हुज़ैफ़ा इब्ने यमान और नोअमान और छः अन्सारी एक जगह खुदाई कर रहे थे कि अचानक ज़मीन में एक सख़्त पत्थर नमूदार हुआ जिस ने हमारी कुदाल बेकार कर दी और न टूटा। हज़रत सलमान फ़ारसी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होकर यह वाक़िआ अर्ज़ किया कि एक पत्थर ऐसा निकला है जिस ने हमारी कुदालें बेकार कर दी हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुदाल खुद संभाली और सलमान फ़ारसी के साथ ख़न्दक़ में उतरे। आप ने उस पत्थर पर चोट मारी तो उस से सफ़ेद रौशनी निकली जैसे अन्धेरे घर में चराग़। सब ने तकबीर कही। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

मुझे इस वक़्त हीरा के महल दिखाए गए। फिर दूसरी चोट पर और चमक पैदा हुई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुझे शाम की ज़मीन दिखाई गई। तीसरी चोट पर फिर रौशनी ज़ाहिर हुई और पत्थर टूट गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुझे सनआ के महल नज़र आए और जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने ख़बर दी कि मेरी उम्मत की सल्तनत इन सब पर होगी। मुसलमानों ने खुश हो कर अलहम्दु लिल्लाह का नअरा लगाया जिस पर मुनाफ़िक़ीन हंसने लगे और बोलेः मुसलमान मदीने में बैठे हुए हीरा और किसरा के मुल्कों के ख़्वाब देख रहे हैं। इन में बाहर निकल कर कुफ़्फ़ार से लड़ने की ताक़त नहीं, छुपने के लिये ख़न्दक़ खोद रहे हैं और हीरा व सनआ जैसी मज़बूत मुम्लिकतों की उम्मीद बांध रहे हैं। (ख़ाज़िन व ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

१५५) औस व ख़ज़रज अन्सार के दो बड़े क़बीले थे जिन में पहले दुशमनी थी और सौ बरस तक जंग रही थी। इस्लाम के बाद इन में दोस्ती और मुहब्बत हो गई थी। एक दिन सअलबा इब्ने ग़िनम औसी और असअद इब्ने ज़ुरारा ख़ज़रजी बैठे हुए प्यार मुहब्बत की बातें कर रहे थे कि इत्तिफ़ाक़ से ख़ानदानी बड़प्पन की बातें छिड़ गईं। सअलबा बोलेः हमारा औस क़बीला तुम्हारे ख़ज़रज क़बीले से अफ़ज़ल है क्योंकि औस में ख़ुज़ैमा इब्ने साबित हैं जिन की अकेले की गवाही दो के बराबर है और हम ही में जनाब हुन्ज़ला शहीद भी हैं जिन्हें शहादत के बाद फ़रिश्तो ने ग़ुस्ल दिया और उन का लक़ब ग़सीलुल मलाइका हुआ। इसी औस में सअद इब्ने मआज़ भी हैं जिन की लाश की सूली के बाद शहद की मक्खियों ने हिफ़ाज़त की और ज़मीन ने उन की लाश ग़ायब कर दी। हम ही में सअद भी हैं जिन की वफ़ात पर अर्शे इलाही हिल गया। असअद ख़ज़रजी बोलेः हमारे ख़ानदान का क्या पूछना। हम ख़ज़रज ही में वह चार सहाबा हैं जिन से क़ुरआन क़ायम है यानी उबय इब्ने कअब, मआज़ बिन जबल, ज़ैद बिन साबित और अबू ज़ैद। हम ख़ज़रज ही में सअद बिन उबादा भी हैं जो सारे अन्सार के ख़तीब और रईस हैं। इस बात चीत का सिलसिला इतना बढ़ा कि आपस में हाथा पाई की नौबत आ गई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन लोगों में सुलह कराई। तभी वही नाज़िल हुई जिस में इरशाद हुआ कि इन शेख़ियों से बचो, तक़वा इख़्तियार करो, अपने अन्दर उमदा आदतें पैदा करो, सिर्फ़ ख़ानदान पर फ़ख़्र बेकार है। (तफ़सीरे ख़ाज़िन)

१५६) जंगे उहद ख़त्म होने के बाद अबू सुफ़ियान ने तीन आवाज़ें दीः क्या क़ौम में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं? क्या क़ौम में अबू बक्र हैं?

क्या कौम में उमर इब्ने ख़त्ताब हैं? इधर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से फरमा दियाः ख़ामोश रहो। जब इधर से कोई जवाब नहीं दिया गया तो अबू सुफियान बोलेः यह तीनों कत्ल कर दिये गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से न रहा गया। चीख़ पड़ेः ऐ अल्लाह के दुशमन! अल्लाह की कसम यह तीनों ज़िन्दा हैं और तेरे सीने में खटकते रहेंगे। तब अबू सुफियान फख्र से गाने लगेः ऐ हबल! ऊँचा हो जा, ऐ हबल ऊँचा हो जा। हजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जवाब दो हबल बेचारा क्या ऊँचा होगा। ऊँचा तो अल्लाह तआला ही है। अबू सुफियान बोलेः हमारे पास उज़्ज़ा बुत है तुम्हारे पास कुछ भी नहीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जवाब दो हमारा वाली और वारिस अल्लाह तआला है तुम्हारा वारिस कोई नहीं। तब अबू सुफियान बोलेः बद्र का बदला हो गया। हम तुम बराबर हो गए। हज़रत उमर बोलेः हरगिज़ नहीं। हमारे मरने वाले जन्नती हैं तुम्हारे मरने वाले जहन्नमी फिर बराबरी कैसी? तब रहमते इलाही का दरिया जोश में आया और सूरए आले इमरान की एक सौ तेइसवीं आयत नाज़िल हुई जिस में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ताईद की गई और मुसलमानों से इस तकलीफ़ के बदले आइन्दा फ़त्ह और नुसरत का वादा किया गया। (तफ़सीरे सावी, तफ़सीरे कबीर)
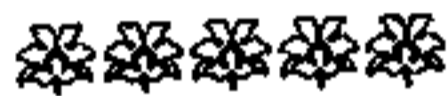
ग्यारहवाँ अध्याय

हदीस की किताबें, मुहद्दिसीन, फ़ुक़्हा, औलिया व सूफ़िया

१) उसूले हदीस के मुताबिक़ सही मक़बूल हदीस को कहा जाता है। इस के मुक़ाबिल ज़ईफ़ हदीस होती है, जिसे मरदूद कहा जाता है। इन दोनों के दरमियान हसन हदीस होती है। (अतलसे सीरते नबवी)

२) सही हदीस के सात मर्तबे हैं:

(१) सब से आला मर्तबा यह है कि इस हदीस को इमाम बुख़ारी व मुस्लिम दोनों बयान करें।

(२) जिस हदीस को सिर्फ़ इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि बयान फ़रमाएं।

(३) जिस रिवायत को सिर्फ़ इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाहि अलैहि बयान फ़रमाएं।

(४) जो हदीस इमाम बुख़ारी व मुस्लिम दोनों की शराइत पर पूरी उतरती हो मगर उन्हों ने इसे बयान न किया हो।

(५) जो हदीस सिर्फ़ इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि की शर्त के मुताबिक़ हो मगर उन्हों ने इसे बयान न किया हो।

(६) जो हदीस सिर्फ़ इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाहि अलैहि की शर्त के मुताबिक़ हो मगर उन्हों ने इसे बयान न किया हो।

(७) वह सही हदीस जिसे इमाम बुख़ारी व मुस्लिम के बजाए दूसरे अइम्मा में से किसी ने अपनी किताब में बयान किया हो नेज़ वह बुख़ारी व मुस्लिम में से किसी की शर्त के मुताबिक़ न हो। (अतलसे सीरते नबवी)

३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसे सहाबा को जो अच्छी तरह किताबत जानते थे हदीस लिखने की इजाज़त मरहमत फ़रमाई थी। इसी तरह उन सहाबा को भी लिखने की इजाज़त अता फ़रमाई जो ज़बानी हिफ़्ज़ करने पर अच्छी तरह कुदरत नहीं रखते थे। फिर किताबते हदीस आम हो गई क्योंकि किताबत का दौर आ गया इसी लिये बेशुमार ताबिईन हज़राते सहाबए किराम के सामने अहादीस लिखा करते थे। (अतलसे सीरते नबवी)

हज़रत सअद बिन उबादा अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु के पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अहादीस के कई मजमूए थे।

हज़रत अबू राफ़ेअ रज़ियल्लाहु अन्हु जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज़ाद किये हुए गुलाम थे, उन के पास भी बकसरत अहादीस

लिखी हुई मौजूद थीं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने सहीफ़ए सादिक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में तय्यार फ़रमाया था।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु का सहीफ़ा दौरे सहाबा में मुदव्विन हुआ। इस का कुछ हिस्सा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दौर ही में मुदव्विन हो गया था।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने दौरे हुकूमत में मदीनए मुनव्वरा के उलमा को लिखाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अहादीस तलाश करो और लिखो। मुझे ख़तरा है कहीं अहले इल्म की रेहलत से इल्म मिट ही न जाए।

हज़रत इब्ने शहाब ज़ुहरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैंः हमें हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने अहादीस जमा करने और लिखने का हुक्म दिया तो हम ने कई नुस्ख़े तय्यार किये और उन्हों ने अपनी हुदूदे मुम्लिकत में वह नुस्ख़े एक एक करके भेज दिये। (अतलसे सीरते नबवी)

४) शैख़ुल इस्लाम इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बिन इब्राहीम बिन मुग़ीरा अलबुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अलजामेइल सहीह अलमुस्नद मिन हदीसे रसूलुल्लाह व सुन्नतिही व अय्यामिही तय्यार की जिसे सही बुख़ारी कहते हैं। आप ने सन दो सौ दस हिजरी में तलबे हदीस के सिलसिले में लम्बा सफ़र शुरू किया और ख़ुरासान, इराक़, मिस्र, शाम और दूसरे इलाक़ों का सफ़र किया। तक़रीबन एक हज़ार असातिज़ा से हदीस सुनी और लग भग छः लाख अहादीस जमा कीं जिन में निहायत क़ाबिले एतेमाद हाफ़िज़ इब्ने हजर के क़ौल के मुताबिक़ सात हज़ार तीन सौ सत्तानवे अहादीस अपनी सही में दर्ज कीं। एक ही तरह की हदीसों को अगर छोड़ दिया जाए तो दो हज़ार छः सौ दो अहादीस रह जाती हैं। इस तरह की पहली किताब लिखने वाले आप ही हैं। (अतलसे सीरते नबवी)

५) अइम्मए हदीस में मशहूर हाफ़िज़े हदीस इमाम अबुल हुसैन मुस्लिम बिन हज्जाज बिन मुस्लिम क़ुशैरी नेशापुरी रहमतुल्लाहि अलैहि ने हिजाज़, मिस्र, शाम और इराक़ के सफ़र किये। आप की सब से मशहूर किताब सही मुस्लिम है। इस में एक सी हदीसें निकाल दें तो तीन हज़ार तैंतीस अहादीस हैं। पन्द्रह साल में यह तय्यार हुई। इन की दो मशहूर किताबें अत्तारीख़ और अज़्ज़ुअफ़ा हैं। (अतलसे सीरते नबवी)

६) इमाम अबू दाऊद सुलैमान बिन अशअस बिन इस्हाक़ बिन बशीर

अज़दी सिजिस्तानी रहमतुल्लाहि अलैहि अपने दौर में इमामे हदीस थे। बग़दाद, बसरा और दीगर इस्लामी शहरों के लम्बे सफ़र किये। इन की मशहूर किताब सुनने अबू दाऊद है जिस में चार हज़ार आठ सौ अहादीस हैं। इसके अलावा आप की तालीफ़ात में अलमुरासील और किताबुज्जुहद ज़्यादा मशहूर हैं। (अतलसे सीरते नबवी)

७) इमाम मुहम्मद ईसा बिन सूरा बिन मूसा सलमी बोग़ी रहमतुल्लाहि अलैहि इमाम बुख़ारी के शागिर्द होने के साथ साथ बाज़ असातिज़ा से शागिर्दी में उन के साथी भी हैं। ख़ुरासान, इराक़ और हिजाज़ के लम्बे सफ़र किये। हाफ़िज़े के बड़े मज़बूत थे। मशहूर तालीफ़ात अलजामिइल कबीर सही तिर्मिज़ी, अश्शमाइलन नबविया, अत्तारीख़ और अलइलल हैं। (अतलसे सीरते नबवी)

८) इमाम अबू अब्दुर्रहमान अहमद बिन अली बिन शुऐब बिन अली बिन सनान बिन बहर बिन दीनार निसाई रहमतुल्लाहि अलैहि क़ाज़ी और हाफ़िज़े हदीस थे। कई शहरों में घूमे फिरे। आख़िरकार मिस्र को वतन बना लिया। रमला में फ़ौत हुए। बैतुल मक़दिस में दफ़्न हुए। बाज़ कहते हैं कि हज करने गए तो मक्कए मुकर्रमा में विसाल हुआ। मशहूर तालीफ़ातः अस्सुननुल कुबरा, अलमुज्तबा (जिसे अस्सुननुल सुग़रा भी कहा जाता है) अज़्ज़ुअफ़ा वल मतरूकून, मुस्नदे अली, मुस्नदे मालिक। (अतलसे सीरते नबवी)

९) इमाम इब्ने माजा अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन यज़ीद रुबई क़ज़्वेनी रहमतुल्लाहि अलैहि क़ज़्वैन के रहने वाले थे। तलबे हदीस के लिये बस्रा, बग़दाद, शाम, मिस्र, हिजाज़ और रै के लम्बे सफ़र किये। इन की मशहूर किताब सुनने इब्ने माजा है। इस में कुल चार हज़ार तीन सौ इक्तालीस अहादीस हैं इन में तीन हज़ार दो दूसरी पांच किताबों में मौजूद हैं। एक हज़ार तीन सौ उन्तालीस ज़ायद हैं जिन में छः सौ तेरा की सनद में कमज़ोरी है। निनानवे नाक़ाबिले एतिबार हैं। (अतलसे सीरते नबवी)

१०) इमाम अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन मुहम्मद बिन हम्बल शीबानी वाइली रहमतुल्लहि अलैहि के आबा व अजदाद मरौ के रहने वाले थे। इमाम साहब बग़दाद में पैदा हुए। शुरू ही से इल्म हासिल करने का शौक़ था। इल्म के हुसूल के लिये कूफ़ा, बसरा, मक्का, मदीना यमन, शाम, सगूर (सरहदी इलाक़ा, तुर्की) मराकश, अलजज़ाइर, इराक़, अहवाज़, फ़ारस, ख़ुरासान और जबाल (ईरान) के तवील सफ़र किये। मुस्नद तालीफ़ फ़रमाई जिस में तकरार समेत तीस हज़ार अहादीस हैं। दूसरी किताबें भी हैं। हम्बली मज़हब के इमाम हैं। (अतलसे सीरते नबवी)

११) इमाम अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान बिन फ़ज़ल बिन बहराम तमीमी दारमी समरकन्दी रहमतुल्लाहि अलैहि ने हिजाज़, शाम, मिस्र, इराक़ और ख़ुरासान में बेशुमार मुहद्दिसीन से अहादीस सुनीं। इन्तिहाई समझदार, साहबे इल्म व फ़ज़ल, मुफ़स्सिरे क़ुरआन और फ़कीह थे। इल्मे हदीस में उन की मशहूर किताबें अलमुस्नद और अलजामे सही हैं। जामेअ को सुनने दारमी भी कहा जाता है। एक और किताब अस्सलासियात भी क़ाबिले ज़िक्र है। (अतलसे सीरते नबवी)

१२) इमाम अबू अब्दुल्लाह मालिक बिन अनस बिन मालिक अस्बही हिमैरी रहमतुल्लाहि अलैहि इमाम दारुल हिजरत के लक़ब से मशहूर हैं। मज़हब के चार इमामों में से हैं। मालिकी मसलक आप की तरफ़ मन्सूब है। दीन में बड़े मज़बूत थे। मशहूर किताब मुअत्ता तालीफ़ फ़रमाई। किताब तफ़सीरे ग़रीबुल क़ुरआन भी उन की मुफ़ीद किताबों में से है। (अतलसे सीरते नबवी)

१३) अइम्मए अहादीस की विलादत व वफ़ात एक नज़र में:

इस्मे गिरामी विलादत वफ़ात

इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि बुख़ारा, एक सौ चौरनवे हिजरी ख़रतंग (समरकन्द) दो सौ छप्पन हिजरी।

इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाहि अलैहि नेशापूर, दो सौ चार हिजरी नेशापूर, दो सौ इकसठ हिजरी।

इमाम अबू दाऊद रहमतुल्लाहि अलैहि सजिस्तान, दो सौ दो हिजरी बसरा, दो सौ पछत्तर हिजरी।

इमाम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि तिर्मिज़, दो सौ नौ हिजरी तिर्मिज़, दो सौ उनासी हिजरी

इमाम निसाई रहमतुल्लाहि अलैहि निसा, दो सौ पन्द्रह हिजरी अलक़ुदुस, तीन सौ तीन हिजरी

इमाम इब्ने माजा रहमतुल्लाहि अलैहि क़ुज़्वैन, दो सौ नौ हिजरी क़ुज़्वैन, दो सौ तिहत्तर हिजरी।

इमाम अहमद रहमतुल्लाहि अलैहि बग़दाद, एक सौ चौंसठ हिजरी बग़दाद, दो सौ इकतालीस हिजरी।

इमाम दारमी रहमतुल्लाहि अलैहि समरकन्द, एक सौ इक्यासी हिजरी समरकन्द, दो सौ छप्पन हिजरी।

इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि मदीनए मुनव्वरा, तिरानवे हिजरी मदीनए मुनव्वरा, एक सौ उनासी हिजरी।

१४) हज़रत अबान बिन उस्मान बिन अफ़्फ़ान रहमतुल्लाहि अलैहि (वफ़ात एक सौ पांच हिजरी) ने सब से पहले मग़ाज़ी (जंगें और दूसरी मुहिम्मात) की तहरीर व किताबत शुरू की। वह इस के अलावा हदीस और फ़िक़्ह के भी बड़े आलिम थे और वह बहुत भरोसे वाले रावी थे। (अतलसे सीरते नबवी)

१५) हज़रत अरवा बिन ज़ुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि (वफ़ात बानवे हिजरी) मदीनए मुनव्वरा के सात फ़ुक़हा में से थे। बड़े सहाबा से हदीस हासिल की और ख़ूब बयान की। इब्ने हिशाम और इब्ने शहाब ज़ुहरी इन के मशहूर शागिर्द थे। (अतलसे सीरते नबवी)

१६) हज़रत वहब बिन मुनब्बिह रहमतुल्लाहि अलैहि (वफ़ात एक सौ दस हिजरी) आला दर्जे के ताबिई, इन्तिहाई सच्चे और भरोसे वाले रावी थे। (अतलसे सीरते नबवी)

१७) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू बक्र बिन हज़्म रहमतुल्लाहि अलैहि (वफ़ात एक सौ पैंतीस हिजरी) को सीरत और तारीख़ के तमाम इतिहासकारों ने भरोसे वाला कहा है। मशहूर इतिहासकार इब्ने इस्हाक़, इब्ने सअद और तबरी ने इन से रिवायतें नक़्ल की हैं। (अतलसे सीरते नबवी)

१८) हज़रत आसिम बिन उमर बिन क़तादा अन्सारी रहमतुल्लाहि अलैहि (वफ़ात एक सौ बीस हिजरी) को मुहद्दिसीन ने भरोसे वाला रावी क़रार दिया है। (अतलसे सीरते नबवी)

१९) मुहम्मद बिन शहाब ज़ुहरी रहमतुल्लाहि अलैहि मुहद्दिस भी थे और इतिहासकार भी। इन के बारे में हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने उलमा को लिखा था: हज़रत इब्ने शहाब से फ़ायदा उठाओ। सुन्नत और पिछली तारीख़ में तुम इन से बड़ा कोई आलिम न पाओगे। (अतलसे सीरते नबवी)

२०) हज़रत मूसा बिन अक़बा रहमतुल्लाहि अलैहि (वफ़ात एक सौ इकतालीस हिजरी) और मुअम्मर बिन राशिद रहमतुल्लाहि अलैहि (वफ़ात एक सौ पचास हिजरी) का ताल्लुक़ तीसरे तब्क़े के इतिहासकारों से है। (अतलसे सीरते नबवी)

२१) मुहम्मद बिन इस्हाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि (वफ़ात एक सौ बावन हिजरी) को सीरत व मग़ाज़ी के तमाम इतिहासकारों ने शैख़ की हैसियत दी है। ज़ियाद बकाई और इब्ने हिशाम ने इन से ख़ूब इल्म हासिल किया, इन की कुन्नियत अब्दुल्लाह थी। यह अब्दुल्लाह बिन क़ैस के मौला थे। मुहम्मद बिन इस्हाक़ पहले शख़्स हैं जिन्हों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मग़ाज़ी पर किताब लिखी। आख़िरी उम्र इन का क़ियाम बग़दाद में रहा यहाँ तक कि

बग़दाद में ही एक सौ पचास हिजरी या एक सौ इक्यावन हिजरी में इन्तिक़ाल हुआ और ख़ैज़रान के क़ब्रस्तान में हज़रत अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि की क़ब्र के पास दफ़्न हुए। (अतलसे सीरते नबवी)

२२) मुहम्मद बिन उमर वाक़िदी रहमतुल्लाहि अलैहि (दो सौ सात हिजरी) को इल्मे हदीस में ज़ईफ़ क़रार दिया गया है। इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अलैहि ने भी इन्हें ज़ईफ़ ठहराया है। (अतलसे सीरते नबवी)

२३) अब्दुल मलिक बिन हिशाम बिन अय्यूब हिमैरी बसरी (वफ़ात दो सौ अट्ठारा हिजरी) ने इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ की किताब सीरते इब्ने इस्हाक़ उन के दूसरे शागिर्द ज़ियाद बकाई से नक़्ल की। (अतलसे सीरते नबवी)

२४) मुहम्मद बिन सअद बिन मनीअ बसरी ज़हरी (वफ़ात दो सौ तीस हिजरी) वाक़िदी के कातिब थे लेकिन उस्ताद से भी बढ़ गए। इन्हें भरोसे वाले रावियों में गिना जाता है। इन की सब से बड़ी किताब तब्क़ाते कुबरा है। (अतलसे सीरते नबवी)

२५) हज़राते मुहद्दिसीन, फ़ुक़्हा और दूसरे उलमाए किराम फ़रमाते हैं कि फ़ज़ाइले आमाल और तर्ग़ीब व तर्हीब में ज़ईफ़ हदीस पर भी अमल करना मुस्तहब है जब कि वह मौज़ूअ न हो लेकिन हलाल और हराम के अहकाम जैसे बैअ, निकाह और तलाक़ वग़ैरा में हदीसे सही या हसन के सिवा और किसी पर अमल दुरुस्त नहीं इल्ला यह कि इस में एहतियात हो मसलन बैअ या निकाह की कराहत में कोई हदीस ज़ईफ़ वारिद हो। (शरह मुस्लिम, अबू ज़करिया यहया बिन शर्फ़ नौवी, जि: १)

२६) हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जब वही आती थी उसे मैं भी लिखा करता था। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वही आती तो आप को सख़्त तकलीफ़ होती थी और मोतियों की तरह पसीना छूटने लगता था। वही का सिलसिना जब बन्द हो जाता तो मैं शाने की हड्डी या ठीकरा लेकर ख़िदमत में हाज़िर होता। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लिखवाते जाते और मैं लिखता जाता। क़ुरआन के वज़न का यह असर होता कि लिखते लिखते मेरा पावँ टूटता हुआ मेहसूस होने लगता और मैं दिल में कहता कि मैं अब अपने पावँ पर कभी चल न सकूंगा। जब मैं किताबत से फ़ारिग़ हो चुकता तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते: पढ़ कर सुनाओ। मैं पढ़ता जाता और जहाँ कोई लग़ज़िश रह जाती उसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुरुस्त फ़रमा देते। इस के बाद मैं उसे लेकर लोगों के पास आता। (औसत)

२७) एक अन्सारी ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! जब आप की बातें सुनता हूँ तो बड़ी प्यारी लगती हैं मगर याद नहीं रहतीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: अपने दाएं हाथ से मदद लो यानी लिखने का इशारा फरमाया। (तिर्मिज़ी)

२८) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: सहाबए किराम में मुझ से ज़्यादा हदीस जानने वाला कोई न था। सिर्फ़ अब्दुल्लाह इब्ने उमर थे क्योंकि वह लिख लिया करते थे और मैं लिखता न था। (बुख़ारी, तिर्मिज़ी)

२९) हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे यहूदियों का रस्मुल ख़त (सुरियानी) सीखने का हुक्म देकर फ़रमाया: मुझे यहूदी मुन्शी पर एतिबार नहीं है। चुनान्चे मैं ने आधे महीने में ज़बान की पूरी पूरी महारत हासिल करली और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से मैं ही इस ज़बान में लिखता पढ़ता। (बुख़ारी शरीफ़, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

३०) मिर्क़ात का क़ौल है कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हदीस लेकर भी नाज़िल होते थे। (नुज्हतुल क़ारी)

३१) हदीस लिखने का काम अहदे रिसालत में ही शुरू हो चुका था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने सैंकड़ों हदीसें लिखीं। उन के मजमूए का नाम सादिक़ा था। हदीसों का एक संग्रह हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने तरतीब दिया था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत सअद बिन उबादा, हज़रत अबू हुरैरा, समुरा बिन जुन्दब रिज़्वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन ने दफ़्तर के दफ़्तर हदीसें लिखीं या लिखवाई थीं। (बुख़ारी, तब्क़ाते इब्ने सअद वग़ैरा)

३२) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हयाते मुबारका के अख़ीर दिनों में बहुत सी हदीसों का एक सहीफ़ा लिखवा कर हज़रत अम्र बिन हज़्म रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ भिजवाया था। (नुज्हतुल क़ारी)

३३) सब से ज़्यादा हदीस रिवायत करने वाले हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। उन की रिवायत की हुई हदीसों की तादाद सिर्फ़ पांच हज़ार तीन सौ चौहत्तर है। (उम्दतुल क़ारी, जि: १)

३४) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से दो हज़ार दो सौ छियासी हदीसें मरवी हैं। (उमदतुल क़ारी, जि: १)

३५) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से दो हज़ार दो सौ दस हदीसें मरवी हैं। (उमदतुल क़ारी, जि: १)

३६) उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा से पांच हदीसें मरवी हैं। उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा से साठ, उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से दो सौ अड़सठ, उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा से पैंसठ, उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना बिन्ते हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा से छिहत्तर, उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा से ग्यारह, उम्मुल मोमिनीन हज़रत जवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा से सात, उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा से दस हदीसें मरवी हैं। (नुज्हतुल कारी)

३७) हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम अपने असहाब से फ़रमाते थे कि हदीस एक दूसरे से बयान करते रहो। अगर ऐसा न करोगे तो चली जाएंगी। (नुज्हतुल कारी)

३८) रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ अल्लाह! मेरे जानशीनों पर रहमत नाज़िल फ़रमा। लोगों ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! आप के जानशीन कौन हैं? फ़रमायाः वह लोग जो मेरे बाद आएंगे, मेरी हदीसों को रिवायत करेंगे और लोगों को उन की तालीम देंगे। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस शख़्स को तरो ताज़ा रखे जिस ने मेरी हदीस सुनी फिर उसे याद किया ताकि दूसरों तक पहुंचाए। (अबू दाऊद, किताबुल इल्म)

३९) हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से एक हज़ार पांच सौ चालीस हदीसें मरवी हैं। (उमदतुल कारी, जिः १)

४०) हदीस की तीन क़िस्में हैं: रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ौल व फ़ेअल व हाल और तक़रीर को मरफ़ूअ, सहाबी के क़ौल व फ़ेअल को मौक़ूफ़ और ताबिई के क़ौल व फ़ेअल को मक़तूअ कहते हैं। (नुज़्हतुल कारी)

४१) राफ़ज़ियों ने मौला अली और अहले बैते अतहार रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अज्मईन की तारीफ़ में तीन लाख के क़रीब हदीसें घड़ी हैं। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

४२) यह जो सिहाहे सित्ता मशहूर हैं उन में जामेअ सही बुख़ारी, सही मुस्लिम, जामेअ तिर्मिज़ी, सुनने अबू दाऊद, निसाई और इब्ने माजा शामिल हैं। (नुज्हतुल कारी)

४३) उलमाए किराम का क़ौल है कि दीन का चौथाई हिस्सा हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है। (नुज्हतुल कारी)

४४) मुतलक़ फ़िक़्ह के बारे में कहा गया है कि इसे बोया हज़रत

अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद ने, सींचा अलक़मा ने, काटा इब्राहीम नख़ई ने, गाहा हम्माद ने, पीसा अबू हनीफ़ा ने, गूंधा अबू यूसुफ़ ने, रोटी पकाई इमाम मुहम्मद ने और सारी दुनिया उन की रोटी खाती है। रिज़्वानुल्लाहि तआला अलैहिम अज्मईन। (नुज़्हतुल क़ारी)

४५) हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम के पास बहुत सी हदीसें लिखी हुई थीं, जिन्हें आप तलवार के पर तले रखते थे और लोगों को सुनाया करते थे। (नुज्हतुल क़ारी)

४६) फ़न्ने हदीस में बहुत सी किताबें लिखी गईं मगर किताबुल मसाबीह तमाम किताबों की जामेअ है। इस के लेखक हुसैन बिन मसऊद रहमतुल्लाहि अलैहि हैं। आप की कुन्नियत मुहम्मद है, लक़ब फ़र्राअ क्योंकि पोस्तीन की तिजारत करते थे। (नुज्हतुल क़ारी)

४७) मिशकात शरीफ़ में पांच हज़ार नौ सौ उनन्चास हदीसें हैं। (नुज्हतुल क़ारी)

४८) हज़रत इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि एक सौ चौरानवे हिजरी में बुख़ारा शहर में पैदा हुए। दस साल की उम्र में आप को हदीस हासिल करने का शौक़ पैदा हुआ। बचपन में आप की आँखें जाती रही थीं। इस वजह से वालिदा साहिबा को बहुत मलाल रहता था। ख़्वाब में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को देखा कि वह फ़रमाते हैं: अल्लाह तआला ने तेरे बेटे की आँखों में रौशनी अता फ़रमाई। सुब्ह उठीं तो देखा कि बेटे की दोनों आँखें रौशन हैं। (नुज्हतुल क़ारी)

४९) हज़रत इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि ने बादशाहे वक़्त की तरफ़ से तंग हो कर ख़ुद ही अपनी वफ़ात की दुआ की थी। तहज्जुद के वक़्त दुआ के दूसरे ही दिन विसाल हो गया। (नुज्हतुल क़ारी)

५०) हज़रत इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अट्ठारा हज़ार मुहद्दिसीन से हदीसें नक़्ल की हैं। एक लाख मुहद्दिसीन आप के शागिर्द हैं। (नुज्हतुल क़ारी)

५१) हज़रत इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाहि अलैहि से एक बार कोई हदीस पूछी गई। आप ने तमाम रात वह हदीस तलाश करने के लिये किताबों का मुतालिआ शुरू किया। किसी ने खजूरों की एक टोकरी बराबर में रख दी और वह एक एक खजूर खाते रहे और हदीस ढूंढते रहे। सुब्ह को हदीस मिल गई। टोकरी ख़त्म हो गई। इसी वजह से आप की वफ़ात हुई। (नुज्हतुल क़ारी)

५२) इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं हदीस का इल्म हासिल करने के लिये दो बार मिस्र, दो बार जज़ीरा गया। चार साल हिजाज़ में

रहा, कूफ़ा और बग़दाद कितनी बार गया उस का शुमार नहीं। (नुज़्हतुल क़ारी)

५३) इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि ने मीरास में बहुत सी दौलत पाई थी मगर बड़ी ज़ाहिदाना ज़िन्दगी बसर करते थे। चौबीस घन्टों में दो तीन बादाम पर गुज़ारा करते थे। कभी सिर्फ़ सूखी घास पर। चालीस बरस तक बिना शूरबे के सूखी रोटी खाई। (नुज़्हतुल क़ारी)

५४) इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि तीर अन्दाज़ी में बहुत माहिर थे। आप का तीर बहुत कम ख़ता करता था। (नुज़्हतुल क़ारी)

५५) इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि की फ़य्याज़ी का यह आलम था कि कभी कभी एक दिन में तीन तीन सौ दिरहम सदक़ा कर दिया करते थे। (नुज़्हतुल क़ारी)

५६) इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि रोज़ाना एक ख़त्म, दस पारे और चार सौ आयतों की तिलावत करते थे। (नुज़्हतुल क़ारी)

५७) इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि के दफ़्न के बाद क़ब्रे शरीफ़ से मुश्क की ख़ुश्बू उठती थी। लोग दूर दूर से आकर मज़ारे पाक की मिट्टी ले जाने लगे जिस से गढ़ा हो गया। अक़ीदत मन्दों ने लकड़ी का घेरा बना दिया। लोग उस घेरे के बाहर की मिट्टी ले जाने लगे। (फ़तहुल बारी)

५८) इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि की लिखी दूसरी किताबों की गिनती बीस है। (नुज़्हतुल क़ारी)

५९) इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि को छः लाख हदीसें ज़ुबानी याद थीं इन में से चुन चुन कर सोलह साल में जामेअ बुख़ारी तय्यार की। (नुज़्हतुल क़ारी)

६०) अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी के शुमार के मुताबिक़ सही बुख़ारी में कुल मिला कर नौ हज़ार बयासी हदीसें हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

६१) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: सुनो! बहुत जल्द मुझ से रिवायतें बयान की जाएंगी और वह फैलेंगी इस लिये याद रखो मेरी जो हदीस क़ुरआन के मुताबिक़ हो वह तो मेरा कलाम होगा और जो क़ुरआन के ख़िलाफ़ हो वह हरगिज़ मेरा कलाम न होगा। इसी लिये उलमा ने यह नतीजा निकाला कि हदीस चाहे वह किसी दर्जे की क्यों न हो, क़ुरआन की नासिख़ नहीं हो सकती। (तफ़सीरे नईमी)

६२) फ़िक़्ह के माहिरीन फ़रमाते हैं कि अवाम के सामने फ़िक़्ही पहेलियाँ न पेश करो और उन से ऐसी बातें न करो जो उन की समझ से बालातर हों कि इस से उन के दिलों में सन्देह और शक पैदा होंगे और यह भी अल्लाह

की राह से फेरने की एक सूरत होगी। (तफ़सीरे नईमी)

६३) एक बार इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि की किसी बाग़ में दावत थी। ज़ुहर की नमाज़ के बाद नफ़्ल पढ़नी शुरू की। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो अपने कुर्ते का दामन उठाया और अपने एक साथी से कहाः देखो तो मेरे कुर्ते के अन्दर कुछ है। उन्हों ने देखा कि एक भिड़ है जिस ने सोलह जगह डंक मारा है और यह सारी जगहें सूज गई हैं। किसी ने कहा कि पहली बार जब उस ने डंक मारा था तो नमाज़ क्यों नहीं तोड़ दी। फ़रमायाः मैं एक सूरत पढ़ रहा था उसे पूरी किये बिना नमाज़ तोड़ने को जी नहीं चाहा। (क़स्तलानी, जिः १)

६४) हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु से एक सौ बयालीस हदीसें मरवी हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

६५) मशहूर मुहद्दिस हज़रत हम्माद बिन सलमा रहमतुल्लाहि अलैहि रोज़ाना पचास आदमियों के रोज़ा इफ़्तार कराने का एहतिमाम करते थे। (नुज़्हतुल क़ारी)

६६) हदीस में आया है कि अल्लाह तआला और फ़रिश्ते और जितनी मख़लूक़ ज़मीन और आसमान में है, यहाँ तक कि च्यूंटी अपने सूराख़ में और मछली दरिया में दुआ मांगती है उस शख़्स के लिये जो दीन का इल्म सीखता है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

६७) इमाम ज़ुहरी रहमतुल्लाहि अलैहि की लिखी हुई हदीसों के ज़ख़ीरे कई ऊँटों पर लादे गए। इमाम ज़ुहरी बड़े मुहद्दिसीन के शैख़ हैं। आप का नाम अबू बक्र मुहम्मद बिन मुस्लिम बिन उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन शहाब ज़ुहरी (वफ़ातः एक सौ चौबीस हिजरी) है। आप ने इस लगन और मेहनत से हदीसें जमा कीं कि मदीनए मुनव्वरा के एक एक अन्सारी के घर जा जाकर मर्द, औरत और बच्चे बूढ़े जो मिल जाता उस से यहाँ तक कि पर्दा नशीन औरतों से भी पूछ पूछ कर हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हालात और अक़वाल सुनते और लिखते। (नुज़्हतुल क़ारी)

६८) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि उलमा के वास्ते मोमिनीन पर सात सौ दर्जे ज़्यादा हैं एक से दूसरे दर्जे तक पांच सौ बरस की राह है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

६९) हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम ने फ़रमाया कि आलिम बेहतर है साइम व क़ायम मुजाहिद से। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७०) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह

तआला जिस के साथ भलाई करना चाहता है उसे दीन की समझ अता फ़रमाता है और दुनिया की नफ़रत उसके दिल में पैदा कर देता है और दुनिया की बुराइयाँ उस के सामने खोल देता है। (बेहकी)

७१) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि एक फ़कीह शैतान पर हज़ार आबिद से भारी है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७२) हदीस में है कि दो ख़स्लतें मुनाफ़िक़ में जमा नहीं हो सकतीं: एक अच्छी सीरत यानी नेक खुल्क़, दूसरी दीन में फ़कीह होना। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७३) रसूले मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि हर दीन का एक सुतून होता है और इस्लाम का सुतून फ़िक़्ह है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७४) हज़रत अबू ज़ैद मरूज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि ने बयान किया कि मैं एक दिन मताफ़ में रुक्न के बीच सोया हुआ था कि मेरा मुक़द्दर जागा। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया: ऐ अबू ज़ैद! कब तक शाफ़ई की किताबें पढ़ोगे, मेरी किताब क्यों नहीं पढ़ते? मैं ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! आप की कौन सी किताब है? फ़रमाया: मुहम्मद बिन इस्माईल (इमाम बुख़ारी) की जामेअ। (मुक़द्दमा फ़त्हुल बारी)

७५) हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि का इरशाद है कि अगर किसी आलिम को देखो कि वह तावीलात की तरफ़ ज़्यादा पलटता है तो समझ लो कि उसे कुछ मालूम नहीं। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७६) हज़रत अबू बक्र वर्राक़ रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि लोग तीन तरह के होते हैं: एक उलमा, दूसरे उमरा, तीसरे फ़ुक़रा। उलमा बिगड़ें तो लोगों का दीन बिगड़ता है और अगर उमरा तबाह हों तो मख़लूक़ की मआश और कस्ब व हुनर तबाह होते हैं और अगर फ़ुक़रा बिगड़ें तो दिल ख़राब और ख़स्ता हो जाते हैं। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७७) हज़रत सुफ़ियान सूरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि अज़ीज़ तरीन मख़लूक़ पांच हैं: एक आलिमे ज़ाहिद, दूसरा फ़कीह सूफ़ी, तीसरा तवन्गर मुतवाज़ेअ, चौथा दुरवेश शाकिर और पांचवाँ शरीफ़ सुन्नी। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली)

७८) हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौल है कि क़ुरआन की तालीम से इन्सान का मर्तबा और फ़िक़्ह से इज़्ज़त और हदीस से दलील की क़ुव्वत और लुग़त की वज़ाहत से क़ल्बी सुकून और हिसाब से मतानते राए हासिल होती है। (रिसालए क़ुशैरिया)

७९) इल्म अस्ल में दो हैं: रूह का इल्म और जिस्म का इल्म। रूह का

इल्म दीन का इल्म है और जिस्म का इल्म तिब है। इल्म हासिल करना नफ़्ल पढ़ने से बेहतर है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

८०) सहाबए किराम के हालात में सब से पहली किताब इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि (वफ़ातः दो सौ छप्पन हिजरी) ने लिखी जिस का नाम अस्माइस्सहाबा था। (उस्वए सहाबा)

८१) हज़रत इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि जब सोलह साल के हुए, तमाम हदीस की किताबें आप को याद थीं। (तब्क़ातुल कुबरा, जिः १)

८२) अलजामेअ सही यानी बुख़ारी वह किताब है जिसे अहले इल्म क़ुरआने मजीद के बाद इस आसमान के नीचे सब से ज़्यादा सही किताब मानते हैं। इस किताब को इमाम बुख़ारी से उन के नव्वे हज़ार शागिर्दों ने पढ़ा, सुना और रिवायत किया। (नुज़्हतुल क़ारी)

८३) इस वक़्त तक सही बुख़ारी की जो शरहें और हाशिये लिखे गए हैं उन की तादाद कम व बेश दो सौ के क़रीब है। (नुज़्हतुल क़ारी)

८४) हज़रत इमाम दाऊद रहमतुल्लाहि अलैहि की किताबे हदीस पांच लाख हदीसों में से चुनाव के बाद तरतीब दी गई। (नुज़्हतुल क़ारी)

८५) हदीस में है कि जिस आलिम से कोई दीन की बात पूछी गई और उस ने नहीं बताई तो अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसे आग की लगाम लगाएगा। (तफ़सीरे कबीर)

८६) सहाबा के अहद से लेकर तक़रीबन तेरा सौ बरस तक हदीस का इन्कार करने वाला कोई न हुआ। पहला मुन्किरे हदीस नाम निहाद क़ुरआनी फ़िर्क़े का बानी अब्दुल्लाह चकड़ालवी है जो चकड़ाला ज़िला मियांवाली, पंजाब में पैदा हुआ। यह बहुत मालदार और लंगड़ा था। (तफ़सीरे नईमी)

८७) उलमा दुनिया का तावीज़ हैं। उलमा के उठने से इस्लाम उठ जाएगा और क़ियामत बरपा हो जाएगी। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

८८) आलिम का गुनाह जाहिल के गुनाह से बदतर है। (तफ़सीरे नईमी)

८९) शुरू में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुहर्रिर यहूदी था जो रसूले मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से इब्रानी और सुरियानी ज़बानों में अहकाम की ख़त व किताबत करता था मगर अबू नुज़ैर की जिला वतनी पर यह मुहर्रिर उन के साथ चला गया। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को इब्रानी और सुरियानी ज़बानें सीखने का हुक्म दिया। (तफ़सीरे नईमी)

९०) मुहम्मद बिन सअद बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि की बड़ी किताब

अत्तब्क़ातुल कबीर इस्लामी तारीख़ का स्रोत समझी जाती है। इब्ने सअद एक सौ पैंसठ हिजरी में बसरा में पैदा हुए। इब्तिदाई तालीम के बाद बग़दाद आ गए। हारून रशीद का ज़माना था। इब्ने सअद ने बग़दाद और हिजाज़ में बड़े उलमा और मुहद्दिसीन से इस्तिफ़ादा किया। वापस आकर मुहम्मद उमर वाक़िदी के शागिर्द और ख़ास भरोसे वाले साथी बने। सन दो सौ तीस हिजरी में वफ़ात पाई। इब्ने सअद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरते तय्यिबा जितनी तफ़सील से बयान करते हैं उतनी तफ़सील किसी और किताब में नहीं मिलती। अहदे रिसालत के बाद वह एक मक़ाम के तअय्युन के साथ सहाबा और ताबिईन के हालात तब्क़ा ब तब्क़ा बयान करते हैं। आख़िर में ख़्वातीन का ज़िक्र करते हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

९१) सहाबए किराम की तादाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते तय्यिबा के आख़िरी साल हज्जतुल वदाअ में तक़रीबन एक लाख थी इन में ग्यारह हज़ार आदमी ऐसे थे जिन के नाम व निशान आज तहरीरी सूरत में तारीख़ के पन्नों पर इस लिये मौजूद हैं कि यह वह लोग हैं जिन में हर एक ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफ़आल और वाक़िआत में से कुछ न कुछ हिस्सा दूसरों तक पहुंचाया। (उस्वए सहाबा)

९२) सहाबए किराम में जिन असहाब की सब से ज़्यादा रिवायतें हैं वह दर्ज ज़ेल हैं:

नंबर शुमार इस्मे सहाबा वफ़ात तादाद रिवायात

१- अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु (सन ५६ हिजरी) पांच हज़ार तीन सौ चौहत्तर (५३७४)।

२- हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा (सन ५८ हिजरी) दो हज़ार दो सौ दस (२२१०)।

३- हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा (सन ६८ हिजरी) एक हज़ार छः सौ साठ (१६६०)।

४- हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा (सन ७३ हिजरी) एक हज़ार छः सौ तीस (१६३०)।

५- हज़रत जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु (सन ७८ हिजरी) एक हज़ार पांच सौ चालीस (१५४०)।

६- हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु (सन ९३ हिजरी) दो हज़ार दो सौ छियासी (२२८६)।

७- हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु (सन ७४ हिजरी) एक

हज़ार एक सौ सत्तर (११७०)।

९३) मसानीद में सब से बड़ी इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाहि अलैहि की मुस्नद है जो छः जिल्दों में है और इन में से हर जिल्द मिस्र के बारीक टाइप में पांच पांच सौ पन्नों से कम न होगी। (नुज़्हतुल क़ारी)

९४) अवस्ता ज़रतुश्ती धर्म की किताब है। मुहक़्क़िक़ीन की राए है कि इस किताब में सिर्फ वह क़दीम तरीन हिस्सा, जो गाथा के नाम से है, ज़रतुश्त के हक़ीक़ी और अस्ल कलाम पर आधारित है बाक़ी सब बाद में मिलाया गया है।

९५) हिन्दू धर्म और बौध धर्म के आवागवन के अक़ीदे के मुताबिक़ जब इन्सान की ज़िन्दगी का सिलसिला ख़त्म हो जाता है और निजात का आख़िरी दौर इन्सान को नसीब होता है इसे वह अपनी इस्तिलाह में निर्वाण कहते हैं। बुध मत के मानने वालों का अक़ीदा है कि गौतम बुध ने अपनी ज़िन्दगी के एक के बाद एक कई दौर ख़त्म किये थे और उन्हें अपनी रूहानी ताक़त से पिछली ज़िन्दगियों के हालात याद रहे। उन के शागिर्दों ने उन हालात को इकट्ठा कर लिया। ऐसे तमाम जमा शुदा वाक़िआत और रिवायात की कुल तादाद पांच सौ पचास है और संग्रह का नाम जातक है।

९६) रामायण मन्ज़ूम किताब है जिस में राम चन्द्र के हालात दर्ज हैं। राम के मरने के कई सौ साल बाद हद से बढ़े हुए अक़ीदत मन्दों ने उन के बारे में यह अक़ीदा घड़ लिया कि उन के अन्दर विष्णू ने औतार ले लिया था।

९७) भागवत गीता सिरी क्रिष्ण की नसीहतों पर आधारित एक मन्ज़ूम किताब है इस में सिरी क्रिष्ण के बारे में अजीब और मुतज़ाद ख़्यालात मिला दिये गए हैं।

९८) किताबुल मसाबीह के लेखक हुसैन इब्ने मसऊद हैं। आपकी कुन्नियत अबू मुहम्मद है, लक़ब फर्राअ है क्योंकि पोस्तीन की तिजारत करते थे। हिरात और सरख़िस के बीच एक बस्ती है बग़्व, वहाँ के रहने वाले थे। ख़्वाब में नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तू ने मेरी सुन्नत ज़िन्दा की, अल्लाह तुझे ज़िन्दा रखे। लिहाज़ा आप का ख़िताब हुआ मुहिय्युस्सुन्नह। शाफ़ई मज़हब के मानने वाले थे। हमेशा रूखी रोटी या ज़ैतून या किशमिश से रोटी खाई। अस्सी बरस की उम्र पाकर सन ५१६ हिजरी में वफ़ात पाई। आप ने मसाबीह, शरहुस सुन्नह, तफ़सीरे मुआलिमुत तन्ज़ील, किताबुत तहज़ीब, फ़तावाए बग़वी वग़ैरा किताबें लिखीं। (नुज़्हतुल क़ारी)

९९) सही मुस्लिम शरीफ के लेखक इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज नेशापुरी रहमतुल्लाहि अलैहि हैं। बनी क़ुशैरा क़बीले के हैं। आप ने बहुत सी किताबें

लिखीं। मुस्लिम शरीफ़, मुस्नदे कबीर, जामेअ कबीर, किताबुल इलल, औहामुल मुहद्दिसीन, किताबुल तमीज़, तब्क़ातुत ताबिईन, किताबुल मुख़फ़र वग़ैरा। इन सब में मुस्लिम शरीफ़ ज़्यादा मशहूर और मोअतबर है। इस में तीन लाख हदीसों से चुन कर चार हज़ार हदीसें जमा की गई हैं। रजब सन दो सौ इकसठ हिजरी में वफ़ात हुई। (नुज़्हतुल क़ारी)

१००) हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि का पूरा नाम अबू अब्दुल्लाह मालिक बिन अनस अस्बही है। आप मज़हबे मालिकी के इमाम हैं। तबए ताबिईन में से हैं। आप इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम से पहले गुज़रे और आप की किताब मुअत्ता इमामे मालिक इन दोनों की किताबों से पहले लिखी गई। मगर बुख़ारी और मुस्लिम का रुत्बा हदीस के फ़न में आला माना जाता है। बड़े ज़बरदस्त मुहद्दिस फ़क़ीह और आशिक़े रसूल हैं। मदीनए मुनव्वरा में रहे। सिवा एक हज के कभी मदीने शरीफ़ से बाहर नहीं निकले। इस शहरे पाक में कभी ख़च्चर या घोड़े पर सवार नहीं हुए हालांकि आप के पास घोड़े बहुत थे। आप की विलादत शरीफ़ सन १०३ हिजरी और वफ़ात सन १७६ हिजरी में हुई। मज़ारे पाक मदीनए मुनव्वरा में जन्नतुल बक़ीअ में है। (नुज़्हतुल क़ारी)

१०१) इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है। नाम मुहम्मद इद्रीस बिन अब्बास बिन उस्मान बिन शाफ़ेअ बिन साइब बिन उबैद बिन अब्दे यज़ीद बिन हाशिम बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन अब्दे मुनाफ़ है। इस तरह आप हाशमी व मुत्तलिबी हैं। शाफ़ेअ इब्ने सायब की निस्बत से आप का लक़ब शाफ़ई हुआ और आप के सिलसिलए मज़हब का नाम भी शाफ़ई। शाफ़ेअ की वालिदा ख़ालिदा बिन्ते असद हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम की ख़ाला हैं। साइब जंगे बद्र में मक्के के काफ़िरों के अलमदार थे जो मुसलमानों की क़ैद में आए और फ़िदिया देकर रिहाई पाई। बाद में इस्लाम लाए। इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि की विलादत ऐन इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि की वफ़ात के दिन सन एक १५० हिजरी में मक़ामे अस्क़लान या मक़ामे मिना में हुई। मक्कए मुअज़्ज़मा में परवरिश पाई। ५४ साल की उम्र में सन २०४ हिजरी में मिस्र में वफ़ात पाई। जब आप मुसीबत में होते तो बग़दाद शरीफ़ में हज़रत इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि के मज़ारे पाक पर हाज़िर होकर दो रकअत नफ़्ल अदा करके हुज़ूर इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि के तवस्सुल से दुआ करते। रब तआला मुसीबत दूर कर देता। ख़ुद फ़रमाते हैं: इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि

की क़ब्र दुआ की कुबूलियत के लिये तिर्याक़ है। (तफ़सीरे नईमी)

१०२) हम्बली मज़हब के इमाम हज़रत अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन मुहम्मद बिन हम्बल बिन बिलाल बिन सअद बिन इद्रीस बिन अब्दुल्लाह बिन हबान बिन सअद बिन रबीआ बिन नज़ार बिन मअद बिन अदनान हैं। बड़े मुहद्दिस, फ़क़ीह और मुज्तहिद हैं। बग़दाद शरीफ़ में सन १६४ हिजरी में विलादत हुई। इल्म हासिल करने के लिये कूफ़ा, बसरा, शाम, मक्कए मुअज़्ज़मा और मदीनए मुनव्वरा वग़ैरा गए। इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि व इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाहि अलैहि व अबू दाऊद रहमतुल्लाहि अलैहि वग़ैरा आप के शागिर्द हैं। साढ़े सात लाख हदीसों से छाँट कर मुस्नदे अहमद बिन हम्बल तय्यार फ़रमाई। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु आप के हम्बली मज़हब के मानने वाले हैं। जुम्ए के दिन चाश्त के वक़्त सन २४१ हिजरी में वफ़ात पाई। आप पर पच्चीस लाख मुसलमानों ने नमाज़ पढ़ी। वफ़ात के दिन बीस हज़ार काफ़िर मुसलमान हुए। क़ुरआन मख़लूक़ है या क़दीम है इस मस्अले पर आप का शाहे बग़दाद मामून रशीद से इख़्तिलाफ़ हो गया था। आप फ़रमाते कि क़ुरआन अल्लाह का कलाम है इस लिये क़दीम है। हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि ने आप की वह क़मीस धोकर पी जिस में आप के कोड़े मारे गए थे। २३० बरस के बाद आप की क़ब्रे शरीफ़ खुल गई तो आप का जिस्मे मुबारक और कफ़ने पाक वैसा का वैसा मेहफ़ूज़ था। (नुज़्हतुल क़ारी)

१०३) तिर्मिज़ी शरीफ़ के लेखक अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा बिन सूरह बिन ज़ुहाक सलमा हैं। तिर्मिज़ में सन २२९ हिजरी में पैदा हुए। शाफ़ई मज़हब के मानने वाले थे। सन २७९ हिजरी में वफ़ात पाई। (नुज़्हतुल क़ारी)

१०४) हज़रत अबू दाऊद सुलैमान बिन अशअस बिन इस्हाक़ बिन बिशर खुरासान इलाक़े में हिरात के क़रीब सीस्तान में जिसे सिज्हिस्तान कहते हैं, सन २०२ हिजरी में पैदा हुए। आप ने पांच लाख हदीसों में से चार ४८०० हदीसें जमा फ़रमाईं। सन २७५ हिजरी में बसरा में वफ़ात पाई। वहीं मज़ार शरीफ़ है। (नुज़्हतुल क़ारी)

१०५) सिहाहे सित्ता में की एक किताब निसाई के लेखक का नाम अबू अब्दुर्रहमान बिन अहमद बिन शुऐब बिन बहर बिन सिनान निसाई है। खुरासान के इलाक़े में एक बस्ती है निसा, वहीं के रहने वाले थे। आप की विलादत सन २१५ हिजरी और वफ़ात सन ३१३ हिजरी में हुई। (नुज़्हतुल क़ारी)

१०६) हदीस की किताब इब्ने माजा हज़रत मुहम्मद बिन यज़ीद बिन माजा रबीई की लिखी हुई है। क़ज़्वीन के रहने वाले थे। विलादत सन २०९ हिजरी

और वफ़ात २७३ हिजरी की है। आप के यहाँ हदीसें ग़ैर सही ज़्यादा हैं इसी वजह से कुछ लोगों ने इब्ने माजा की जगह दारिमी या मुअत्ता को सिहाहे सित्ता में शामिल किया है। (नुज़्हतुल क़ारी)

१०७) दारिमी शरीफ़ के लेखक अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान बिन फ़ज़्ल बिन बहराम हैं। दारिम इब्ने मालिक क़बीले से हैं। इसी लिये दारिमी कहलाते हैं। आप का वतन समरक़न्द था। विलादत १८१ हिजरी में हुई और वफ़ात २५० हिजरी में। आप की वफ़ात की ख़बर पर इमाम बुख़ारी बहुत रोए थे। आप के शागिर्द इमाम मुस्लिम, अबू दाऊद और तिर्मिज़ी वग़ैरा मशहूर हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

१०८) दारक़ुतनी नामी किताब के लेखक हज़रत अबुल हसन बिन अली बिन उमर हैं। बग़दाद के एक मुहल्ले दारक़ुतन के रहने वाले थे। आप अपने ज़माने के मुहद्दिस और अस्माउर रिजाल के हाफ़िज़ थे। आप के शागिर्दों में अबू नुऐम, हाकिम, इमाम अस्फ़राइनी वग़ैरहुम जैसे बड़े मुहद्दिसीन हैं। आप की विलादत सन ३०५ हिजरी और वफ़ात सन ३८५ हिजरी बग़दाद शरीफ़ में हुई। (नुज़्हतुल क़ारी)

१०९) मशहूर किताब बेहिक़ी के लेखक का नाम अबू बक्र अहमद बिन हुसैन है। नीशापुर के इलाक़ा बेहिक़ के क़रीब जज़र गावँ में पैदा हुए। आप उन सात लेखकों में से हैं जिन की तहरीर से मुसलमानों ने बहुत फ़ायदा उठाया। तीस साल तक मुसलसल रोज़ेदार रहे। शाफ़ई मज़हब के मानने वाले थे। सने विलादत ३८४ हिजरी और साले वफ़ात ४५८ हिजरी है।(नुज़्हतुल क़ारी)

११०) हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि रमज़ान में इकसठ क़ुरआन ख़त्म किया करते थे। तीस दिन में, तीस रात में और एक तरावीह में। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब)

१११) हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि ने क़ुरआने शरीफ़ नमाज़े इशा की एक रकअत में ख़त्म किया है। (हयाते इमामे आज़म)

११२) जिस वक़्त इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि हुज़ूर रसूले मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ए मुबारक में गए और कहा: अस्सलामु अलैका या सय्यिदिल मुरसलीन! जवाब आया: वअलैकस्सलाम या इमामुल मुस्लिमीन! (हयाते इमामे आज़म अबू हनीफ़ा)

११३) हज़रत इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि एक रात में तीन सौ रकअत अदा करते थे फिर हर रात पांच सौ रकअत अदा करने लगे फिर हर रात में एक हज़ार रकअत अदा करने लगे। (तफ़सीरे नईमी)

११४) हज़रत दाऊद ताई रहमतुल्लाहि अलैहि का कहना है कि मैं बीस साल इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि की ख़िदमत में रहा, कभी उन्हें नंगे सिर और पावँ दराज़ करते नहीं देखा। (हयाते इमामे आज़म अबू हनीफ़ा)

११५) हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि जब अपना क़र्ज़ वसूल करने किसी क़र्ज़दार के मकान पर जाते तो उस के घर के साए तक में न खड़े होते। (तफ़सीरे नईमी)

११६) एक बार कूफ़े में किसी की बकरी खो गई। हज़रत इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि ने लोगों से पूछा कि एक बकरी ज़्यादा से ज़्यादा कितनी मुद्दत तक ज़िन्दा रह सकती है। लोगों ने बताया कि सात साल तक। यह सुन कर आप ने सात साल तक उस शहर का गोश्त खाना तर्क फ़रमा दिया। (हयाते इमामे आज़म अबू हनीफ़ा)

११७) ईंटों को बाँस के ज़रिये गिनने का तरीक़ा सब से पहले इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि ही ने इख़्तियार किया था। (अनवारे औलिया)

११८) हज़रत इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि के विसाल का वक़्त आया तो आप सज्दे में चले गए और उसी हालत में आप की रूह परवाज़ कर गई। (हयाते इमामे आज़म अबू हनीफ़ा)

११९) हज़रत इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि के जनाज़े की नमाज़ छः बार पढ़ी गई और जितने भी आदमियों ने पढ़ी उस का जब अन्दाज़ा लगाया गया तो पचास हज़ार से ज़्यादा तादाद साबित हुई। (हयाते इमामे आज़म अबू हनीफ़ा)

१२०) हज़रत इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि ने पचपन हज अदा फ़रमाए। (हयाते इमामे आज़म अबू हनीफ़ा)

१२१) हज़रत इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि ने तीन सौ ताबिईन से इल्म हासिल किया। आप के हदीस के शुयूख़ की तादाद चार हज़ार थी। (हयाते इमामे आज़म अबू हनीफ़ा)

१२२) हज़रत इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि ने पैंतालीस बरस इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी है। (हयाते इमामे आज़म)

१२३) हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि पन्द्रह साल की उम्र में फ़तवे देने लगे थे। (तफ़सीरे नईमी)

१२४) हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अलैहि को तीन लाख हदीसें ज़बानी याद थीं। (तफ़सीरे नईमी)

१२५) हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अलैहि जब तक

बग़दाद में रहे वहाँ की रोटी हरगिज़ न खाई। आप फ़रमाते थे बग़दाद की ज़मीन को हज़रत अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ग़ाज़ियों पर वक़्फ़ फ़रमा दिया है इसी वास्ते आप मूसिल से आटा मंगवा कर उस की रोटी खाते थे। (तफ़सीरे नईमी)

१२६) हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु सिर्फ़ एक हदीस सुनने के लिये एक माह का सफ़र तय करके गए। (नुज़्हतुल क़ारी)

१२७) हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि रजब सन १५० हिजरी में ग़ज़ा मक़ाम पर पैदा हुए। सात साल की उम्र में मुअत्ता इमामे मालिक ज़बानी याद कर ली थी। (तफ़सीरे नईमी)

१२८) हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि के दादा हज़रत साइब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबी थे। बद्र की जंग के सिलसिले में ईमान लाए थे। इब्ने कल्बी ने ज़िक्र किया है कि यह रसूले मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हम शबीह थे। (तफ़सीरे नईमी)

१२९) हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि क़याफ़ा शनासी के फ़न में माहिर थे इसी को इल्मे फ़िरासत भी कहते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१३०) दुनियाए इस्लाम में अबू अब्दुल्लाह कुन्नियत वाले चार ज़बरदस्त फ़क़ीह गुज़रे हैं: पहले अबू अब्दुल्लाह इमामे मालिक, दूसरे अबू अब्दुल्लाह इमामे सुफ़ियान सूरी, तीसरे अबू अब्दुल्लाह इमामे शाफ़ई और चौथे अबू अब्दुल्लाह इमामे अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अलैहिम अज्मईन। (तफ़सीरे नईमी)

१३१) यह जो मशहूर है कि इमामे शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि की वालिदा से इमामे मुहम्मद ने निकाह फ़रमा लिया था और इस वजह से इल्मी मुज़ाकिरात में इमामे मुहम्मद इमामे शाफ़ई से दरगुज़र फ़रमाते थे। यह वाक़िआ बिल्कुल ग़लत है। इमामे शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि की वालिदा क़बीला अज़्द (यमन) में ही रहीं या वह मक्का आती जाती रहीं। उन के इराक़ सफ़र करने की कोई रिवायत सही तारीख़ में नहीं मिलती। (तफ़सीरे नईमी)

१३२) इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अलैहि की पैदाइश बग़दाद में सन १६४ हिजरी में हुई थी। (तफ़सीरे नईमी)

१३३) इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अलैहि के पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तीन मूए मुबारक थे। आप ने अपने बेटे को वसियत की कि एक मुए मुबारक दाएं आँख पर और एक बाएं आँख पर और एक ज़बान पर रख देना। (तफ़सीरे नईमी)

१३४) जब शरीफ़ अबू जअफ़र बिन अबी मूसा की क़ब्र इमाम अहमद

बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अलैहि के पहलू में खोदी गई तो हज़रत इमाम की क़ब्र का पहलू भी खुल गया। देखा तो कफ़न भी वैसा ही था और जसदे मुबारक भी वैसा ही मेहफ़ूज़ था। यह वाक़िआ आप के दफ़्न से दो सौ तीस बरस बाद पेश आया था। (तफ़सीरे नईमी)

१३५) इमामे आज़म अबू हनीफ़ा, इमाम शाफ़ई, इमाम मालिक और इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अलैहिम और तमाम तब्क़ों के मशाइख़ के सर मुंडे हुए थे। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

१३६) हज़रत इमामे मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि तीन साल तक माँ के पेट में रहे। (तफ़सीरे नईमी)

१३७) रिसालए कुशैरिया के लेखक इमाम अबुल क़ासिम अब्दुल करीम बिन हुवाज़िन अलकुशैरी रहमतुल्लाहि अलैहि (विलादतः ३७३ हिजरी, वफ़ातः ४६५ हिजरी) एक मुफ़स्सिर, तारीख़दाँ, अदीब और शायर होने के साथ साथ अपने ज़माने के मशहूर सूफ़िया में से थे। यह शैख़ अबू अली दक़्क़ाक़ के मुरीद थे और इन्हों ने अपने शैख़ की वफ़ात के बाद शैख़ अबू अबदुर्रहमान अस्सलमी से इस्तिफ़ादा किया था। रिसालए कुशैरिया के अलावा बारह मशहूर किताबों के लेखक हैं। खुसूसन उन की तफ़सीरे अलकबीर की बड़े बड़े आलिमों जैसे कि इब्ने ख़लकान और इमाम सुयूती वग़ैरा ने बड़ी तारीफ़ की है। इस तफ़सीर का नाम उन्हों ने अत्तैयसीर फ़ी इल्मित तफ़सीर रखा है। (रिसालए कुशैरिया)

१३८) सब से पहली तफ़सीर जो तसव्वुफ़ के रंग में लिखी गई वह अबू मुहम्मद सहल बिन तस्तरी (वफ़ातः २८३ हिजरी) की है। मगर यह निहायत मुख़्तसर सी दो सौ पन्नों की किताब है। दूसरी तफ़सीर अबू अब्दुर्रहमान मुहम्मद बिन अलहुसैन अस्सलमी (वफ़ातः ४१२ हिजरी) की हक़ाइकुत तफ़सीर है जिन पर बहुत से लोगों ने एतेराज़ किये हैं। (रिसालए कुशैरिया)

१३९) कुरआने मजीद की सब से पहली और मुकम्मल सूफ़ियाना तफ़सीर कुशैरी की लताइफुल इशारात ही है। उन के बाद अलग़ज़ाली ने सिर्फ़ सूरए इख़लास की तफ़सीर तसव्वुफ़ के रंग में लिखी। (रिसालए कुशैरिया)

१४०) किरामिया फ़िर्के की बुनियाद अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन किराम ने डाली। उस का बाप एक अंगूर के बाग़ में रखवाले का काम करता था जिस से उसे किराम कहा गया। यह दरअस्ल सिजिस्तान का रहने वाला था। शहर बद्र हुआ तो ग़रजिस्तान चला गया। शुमीन और अफ़शीन के लोगों को उस की ज़ाहिरी इबादत से धोखा हुआ और वह उस के मोतक़िद हो गए। उस के

अक़ीदे यह थे: ईमान कम होता है न बढ़ता है। अगर कोई केवल ज़बान से ईमान ले आए, चाहे दिल में कुफ़्रिया अक़ीदे क्यों न रखता हो, वह मोमिन है। दूसरे अजसाम की तरह अल्लाह भी एक जिस्म है। अल्लाह तआला (मआज़ल्लाह) अर्श पर बैठा हुआ है और वह अपनी ज़ात के एतिबार से ऊपर की जहत में है। वह अर्श की ऊपरी सतह को छू रहा है और एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल होता है। नीचे उतरता है और ऊपर भी चढ़ता है। किरामिया के बारह समुदाय हैं मगर किराम के ज़्यादा क़रीब सिर्फ़ हैसिमया फ़िर्क़ा है। यह लोग मुहम्मद बिन अलहैसिम के मानने वाले हैं। (रिसालए क़ुशैरिया)

१४१) मोतज़िला और किरामिया वग़ैरा के मुक़ाबले में सलफ़ की कसीर तादाद इस बात की क़ाइल है कि अल्लाह तआला की अज़ली सिफ़ात हैं जैसी कि इल्म, क़ुदरत, हयात, इरादा, समअ, बसर वग़ैरा और उन के नज़्दीक सिफ़ाते ज़ातिया और फ़ेअलिया में कोई इम्तियाज़ नहीं किया जाता। इस के अलावा वह यह भी कहते हैं कि अल्लाह तआला के हाथ पावँ और चेहरा वग़ैरा भी हैं। (रिसालए क़ुशैरिया)

१४२) सब से पहली किताब जिस में मुस्तक़िल फ़न की हैसियत से तसव्वुफ़ के बहुत से मसाइल पर बहस की गई है, किताबुल लम्अ है। इस के मुसन्निफ़ का नाम अबू नस्र अब्दुल्लाह बिन अली बिन मुहम्मद बिन यहया अस्सिराज रहमतुल्लाहि अलैहि हैं। इन्हें ताऊसुल फ़ुक़रा के नाम से पुकारा जाता है। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब)

१४३) अबू अली अलहसन बिन अली अद्दक़्क़ाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि बड़े ज़बरदस्त ज़ाहिद गुज़रे है। सय्यिद अली हजवेरी रहमतुल्लाहि अलैहि ने कशफ़ुल महजूब में इन का नाम अलहसन बिन मुहम्मद अली दिया है। दक़्क़ाक़ दक़ीक़ यानी आटा फ़रोश को कहते हैं। इस पेशे की वजह से यह नाम पड़ा। इन का क़ौल है कि जिस शख़्स ने दुनिया की ख़ातिर किसी के सामने तवाज़ेअ की, उस का दो तिहाई दीन जाता रहा। क्योंकि उस ने ज़बान और अरकान से उस के सामने अपने आप को झुकाया है और अगर दिल से उस की ताज़ीम का अक़ीदा रखे या दिल से उस के सामने झुके तो उस का सारा दीन जाता रहा। (कशफ़ुल महजूब)

१४४) इमाम अबू इस्हाक़ इस्फ़राइनी मुतकल्लिम उसूली और शाफ़ई मज़हब के मानने वाले थे। अपने ज़माने में ख़ुरासान के शैख़ थे और इज्तिहाद के मर्तबे को पहुंच गए थे। उन का लक़ब रुक्नुद्दीन है। उन की बहुत सी किताबें हैं जिन में से एक अलजामेअ फ़ी उसूलिद्दीन व रद्दे अलल मुल्हिदीन

पांच जिल्दों में है। उन्हों ने फ़िक़ह के उसूल पर शरह भी लिखी है। तक़रीबन अस्सी बरस की उम्र में ४१५ हिजरी में नीशापुर में वफ़ात पाई और उन्हें अस्फ़रायन ले जाकर दफ़्न किया गया। (रिसालए कुशैरिया)

१४५) सहाबा की सोहबत में रहने वालों को ताबिईन कहा गया। उन्हों ने इस नाम को बड़ा शर्फ़ वाला समझा। फिर उन के बाद के लोगों को तबअ ताबईन कहा गया। इस के बाद के लोगों में इख़्तिलाफ़ पैदा हुआ और अलग अलग मरातिब पैदा हो गए। चुनान्चे उन ख़ास क़िस्म के लोगों को, जिन्हें दीनी कामों से ख़ास लगाव था, ज़ाहिद और आबिद कहने लगे। फिर बिदअतें रूनुमा होने लगीं। हर फ़िर्क़ा दावा करने लगा कि उन में ज़ाहिद पाए जाते हैं। चुनान्चे अहले सुन्नत में से उन ख़ास लोगों ने जिन्हों ने अपने नफ़्स को अल्लाह तआला के लिये वक़्फ़ कर दिया था और अपने दिलों को ग़फ़लत के तारी होने से मेहफ़ूज़ रखा था, अपने लिये अलग नाम तसव्वुफ़ रख लिया। इन बुज़ुर्गों के लिये यह नाम दूसरी सदी हिजरी से पहले मशहूर हो चुका था। (रिसालए कुशैरिया)

१४६) हज़रत इमाम हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि ताबिईन की पहली सफ़ में से हैं। नामे नामी हसन और कुन्नियत अबू सईद है। एक सौ तीस सहाबा की ज़ियारत की। हज़रत हसन बसरी की वालिदा हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की कनीज़ थीं। इन की वालिदा इन्हें छोड़ कर कहीं काम को चली जातीं और यह रोने लगते तो उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा अपनी नूरानी छाती इन के मुंह में दे देतीं। उम्मुल मोमिनीन की करामत कि दूध उतर आता और यह ख़ूब पीते। (रिसालए कुशैरिया)

१४७) हज़रत अत्तार बिन अबी रियाह रज़ियल्लाहु अन्हु बड़े दर्जा के ताबिईन में हैं। बीस साल तक मस्जिद में मोतकिफ़ रहे। सत्तर हज और सौ उमरे किये। (रिसालए कुशैरिया)

१४८) एक बार लोगों ने हज़रत इब्राहीम अदहम रहमतुल्लाहि अलैहि से पूछा क्या कारण है कि हमारी दुआयें क़ुबूल नहीं होतीं। आप ने फ़रमाया तुम अल्लाह को जानते हो लेकिन उस की इताअत नहीं करते, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहचानते हो लेकिन उन की पैरवी नहीं करते, अल्लाह तआला की क़ुरआने करीम पढ़ते हो मगर उस पर अमल नहीं करते, अल्लाह तआला की नेअमतें खाते हो मगर शुक्र नहीं करते, जानते हो कि दोज़ख़ गुनहगारों के लिये है मगर उस से ज़रा भी नहीं डरते, शैतान को दुशमन समझते हो मगर उस से दूर नहीं भागते, मौत को बरहक़ समझते हो मगर कोई सामान नहीं

करते, अज़ीज़ रिश्तेदारों को अपने हाथों ज़मीन में दफ़्न करते हो लेकिन इब्रत नहीं पकड़ते। भला जो शख़्स इस तरह का हो उस की दुआ कैसे क़ुबूल हो सकती है। (अनवारे औलिया अज़ रईस अहमद जअफ़री)

१४६) हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रहमतुल्लाहि अलैहि का नाम कुछ लोग शअबान बिन इब्राहीम बताते हैं और कुछ लोग फ़ैज़ बिन इब्राहीम। यह तसव्वुफ़ में फ़ौक़ियत रखने वाले और इल्म व अदब में यकताए रोज़गार थे। इन्हों ने २४५ हिजरी में वफ़ात पाई। इन का कहना था कि कलाम का आधार चार चीज़ों पर है: रब्बे जलील की मुहब्बत, दुनिया (क़लील) से बुग्ज़, क़ुरआन (तन्ज़ील) की ताबेअदारी और तब्दीली (तेहवील का डर) यानी इस बात से डरते रहना कि कहीं अल्लाह तआला मौजूदा हालते ईमान से बदल कर उसे कुफ़्र की हालत में न कर दे। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब)

१५०) हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ डाकू थे और अबी वर्द और सरख़िस के दरमियानी इलाक़ों में डाके डालते थे। एक लड़की से उन्हें इश्क़ हो गया। एक बार दीवार पर चढ़ कर उस के पास जा रहे थे तो उन के कानों में क़ुरआने मजीद की तिलावत की आवाज़ आई। पढ़ने वाला पढ़ रहा था: क्या मोमिनों के लिये वक़्त नहीं आया कि उन के दिल आजिज़ी करें? इस पर उन्हों ने कहा: ऐ मेरे रब! हाँ वक़्त आ गया है। फिर यह वापस चले आए। इन्हों ने एक रात वीराने में गुज़ारी। वहाँ कुछ मुसाफ़िर लोग थे उन में से एक ने कहा: यहाँ से चले जाओ। औरों ने कहा: सुब्ह तक यहीं रुको क्योंकि रास्ते में फ़ुज़ैल है वह तुम्हें लूट लेगा। इस पर फ़ुज़ैल ने तौबा करली और आख़िर दम तक मक्कए मुकर्रमा में रहे। (अनवारे औलिया)

१५१) हज़रत अबू मेहफ़ूज़ मअरूफ़ बिन फ़ेरोज़ कर्ख़ी रहमतुल्लाहि अलैहि मशाइख़े किबार में से थे। आप की दुआ में बड़ी तासीर थी। लोग इन की क़ब्रे शरीफ़ के तवस्सुल से शिफ़ा पाते हैं। आप की वफ़ात २०० हिजरी में हुई। मअरूफ़ कर्ख़ी रहमतुल्लाहि अलैहि के वालिदैन ईसाई थे। (अनवारे औलिया)०

१५२) हज़रत सरी सक़्ती रहमतुल्लाहि अलैहि हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैहि के ख़ालू और उस्ताद थे। आप का पूरा नाम अबुल हुसैन सरी बिन अलमुग़ालिस अलसक़्ती था। बाज़ार में कबाड़ की तिजारत करते थे। हज़रत जुनैद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं मैं ने सरी सक़्ती से ज़्यादा इबादत करने वाला किसी को नहीं देखा। अठानवे साल उन पर बीत गए मगर सिवाए मौत के मर्ज़ के उन्हें कभी लेटा हुआ नहीं देखा। आप की वफ़ात २५७ हिजरी में हुई। (अनवारे औलिया)

१५३) हज़रत अबू नस्र बिशर बिन अलहारिस अलहाफ़ी रहमतुल्लाहि अलैहि दरअस्ल मरौ के थे, बग़दाद में रिहाइश इख़्तियार कर ली थी। आप की वफ़ात सन २२७ हिजरी में हुई। आप बड़ी शान वाले थे। फ़रमाते थे कि जो शख़्स चाहे कि लोग मुझे जानें वह आख़िरत का मज़ा हासिल नहीं कर सकता। (अनवारे औलिया)

१५४) हज़रत अबू सुलैमान दाऊद बिन नुज़ैर ताई रहमतुल्लाहि तआला अलैहि बड़ी शान के बुज़ुर्ग थे। फ़रमाते थे दुनिया से रोज़ा रखो और मौत से रोज़ा खोलो और लोगों से इस तरह भागो जिस तरह दरिन्दों से भागते हो। आप की वफ़ात सन १६५ हिजरी में हुई। (अनवारे औलिया)

१५५) हज़रत अबू अली शफ़ीक़ बिन इब्राहीम बल्ख़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ख़ुरासान के मशहूर मशाइख़ में से थे। हज़रत हातिमे असम रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के उस्ताद थे। आप का कहना था इन्सान का तक़्वा तीन बातों से मालूम होता हैः वह क्या लेता है, किन चीज़ों से अपने आप को रोकता है और क्या बातें करता है। (अनवारे औलिया)

१५६) हज़रत अबू यज़ीद तैफ़ूर बिन ईसा बुस्तामी रहमतुल्लाहि अलैहि के दादा पहले मजूसी थे फिर इस्लाम लाए। यह तीन भाई थेः आदम, तैफ़ूर और अली। तीनों बड़े ज़ाहिद और इबादत गुज़ार थे। इन में अबू यज़ीद सब से ज़्यादा जलीलुल क़द्र थे। आप की वफ़ात सन २६१ हिजरी में हुई। (अनवारे औलिया)

१५७) हज़रत अबू मुहम्मद सहल बिन अब्दुल्लाह तस्तरी रहमतुल्लाहि अलैहि सूफ़ियों के इमामों में से थे। बड़ी करामतों वाले बुज़ुर्ग थे। छः सात साल की उम्र में कुरआन हिफ़्ज़ कर लिया था। साल भर रोज़े से रहते। आप की वफ़ात सन २८३ हिजरी में हुई। किसी शख़्स ने आप से वसियत की फ़रमाइश की तो फ़रमायाः तेरी निजात चार बातों में हैः कम खाना, कम मिलना जुलना, कम सोना और कम बोलना। (अनवारे औलिया)

१५८) हज़रत हातिमे असम रहमतुल्लाहि अलैहि कहा करते थे हर रोज़ शैतान मुझ से कहता हैः तू क्या खाएगा, क्या पहनेगा, कहाँ रहेगा? मैं जवाब देता हूँः मौत खाऊँगा, कफ़न पहनूंगा और क़ब्र में रहूंगा। (अनवारे औलिया)

१५९) तसव्वुफ़ के बारे में मुख़्तलिफ़ बुज़ुर्गों के मुख़्तलिफ़ कथन हैंः अबू मुहम्मद जरीरी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमायाः तसव्वुफ़ हर आला ख़ुल्क़ में दाख़िल होने और हर ज़लील ख़ुल्क़ से निकलने का नाम है। हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमायाः तसव्वुफ़ यह है कि हक़ तआला तुझे

तेरी ज़ात से फ़ना कर दे और अपनी ज़ात के साथ ज़िन्दा रखे। हुसैन बिन मन्सूर रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमायाः सूफ़ी की ज़ात यकता होती है, न कोई अल्लाह के सिवा उसे क़ुबूल करता है और न यह अल्लाह के सिवा किसी को क़ुबूल करता है। हज़रत अम्र बिन उस्मान मक्की रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौल है कि तसव्वुफ़ यह है कि बन्दा हर वक़्त इस हालत में रहे कि तू किसी चीज़ का मालिक न बने और न कोई चीज़ तेरी मालिक बने। हज़रत मअरूफ़ कर्ख़ी रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौल है कि तसव्वुफ़ हक़ाइक़ पर अमल करने और लोगों की चीज़ों से नाउम्मीदी का नाम है। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब)

१६०) तौहीद के मुताल्लिक़ बेहतरीन क़ौल वह है जो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः पाक है वह ज़ात जिस ने मख़लूक़ को अपने जानने की सिर्फ़ एक राह बताई है और वह यह है कि वह उस की मअरिफ़त से आजिज़ है। (तफ़सीरे नईमी)

१६१) हज़रत इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी रहमतुल्लाहि अलैहि (वफ़ातः ३३३ हिजरी) मशाइख़े किबार में से बहुत बड़े मुहक़्क़िक़, मुदक़्क़िक़ और मुतकल्लिमीन के इमाम हैं। मुसलमानों के अक़ीदों की आप ने दुरुस्ती फ़रमाई और बातिल अक़ीदे वालों के रद में किताबुत तौहीद, किताबुल मक़ालात, किताबुल औहामिल मोतज़िला और किताबुर्रद अलक़ुरामता वग़ैरा कई किताबें लिखीं। इन के अलावा तावीलातिल क़ुरआन आप की ऐसी तसनीफ़ है जो अपनी नज़ीर नहीं रखती। आप का मज़ारे मुबारक समरक़न्द में है। (रिसालए क़ुशैरिया)

१६२) लोगों ने शैख़ सअदुद्दीन अमवी रहमतुल्लाहि अलैहि से पूछा कि आप ने शैख़ मुहियुद्दीन अरबी को कैसा पाया? फ़रमायाः वह एक अथाह मौजज़न समुन्द्र हैं। फिर पूछा कि शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी को क्या पाया? उन्हों ने फ़रमायाः उन की पेशानी में नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुताबिअत का नूर कुछ और ही चीज़ है। (रिसालए क़ुशैरिया)

१६३) हज़रत नूरुद्दीन अब्दुर्रहमान जामी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अरबी और फ़ारसी में उलूम व फ़ुनून की ५४ किताबें लिखीं जो आप के तख़ल्लुस जामी के आदाद हैं। (रिसालए क़ुशैरिया)

१६४) हज़रत उमर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को पहली सदी हिजरी का मुजद्दिद कहा जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

१६५) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का क़ौल है कि इल्म के तीन हरूफ़ हैं। ऐन इल्लिय्यीन से, लाम लुत्फ़े इलाही से और मीम मुल्क या मुल्क यानी

बादशाही से निकला है। इल्म की ऐन आलिम को इल्लियीन से बलन्द मकाम पर पहुंचा देती है, लाम लतीफ बना देता है और मीम मख्लूक का मालिक कर देती है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१६६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कौल है कि जो शख्स इल्म को मेहफ़ूज़ रखना चाहे वह पांच बातों की पाबन्दी करे: एक, रात की नमाज़ चाहे दो रकअत हों। दो, हमेशा बावुज़ू रहना। तीन, ज़ाहिरी व बातिनी तक़्वा। चार, महज़ परहेज़गारी की नियत से खाने पीने की तदबीर। पांच, मिस्वाक। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१६७) हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया जिस ने तकल्लुफ़न समाअ को चाहा उस के लिये यह फ़ितना होगा मगर जिसे खुद बख़ुद यह चीज़ हासिल हो जाए उस के लिये समाअ राहत है। आप ने यह भी फ़रमाया कि समाअ के लिये तीन चीज़ों की ज़रूरत है: ज़बान, मकान, इख़्वान यानी दोस्त। (रिसालए कुशैरिया)

१६८) हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैहि का कहना है कि जब तुम किसी मुरीद को देखो कि उसे समाअ से मुहब्बत है तो समझ लो कि अभी उस में बातिल का कुछ हिस्सा बाक़ी है। (रिसालए कुशैरिया)

१६९) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी सरह वही हैं जो हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के रज़ाई भाई और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कातिबे वही थे। वही की किताबत के सिलसिले में मुर्तद हो कर मुश्रिकों से जा मिले। एक मुद्दत तक मुर्तद रहने के बाद फ़त्हे मक्का के दिन अपने क़त्ल किये जाने के ख़ौफ़ से रूपोश हो गए। फिर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की सिफ़रिश के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उस वक़्त से पुख़्ता मुसलमान हो गए। बड़े बड़े कारनामे अन्जाम दिये, उन में से फ़त्हे मिस्र और तस्ख़ीरे नोबिया (मौजूदा हबशा) हैं। अपनी दुआ के मुताबिक़ ठीक नमाज़ की हालत में फ़ज्र का सलाम फेरते वक़्त वफ़ात पाई। रज़ियल्लाहु अन्हु। (रिसालए कुशैरिया)

१७०) हज़रत राबिआ बसरिया रज़ियल्लाहु अन्हा चार बरस की उम्र में चूल्हे की आग देख कर रोती थीं कि कहीं मैं वह तिन्का न होऊँ जिस से आग रौशन की जाती है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१७१) हज़रत इमामे मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक हज के बाद दूसरा हज न किया कि कहीं मदीने से बाहर मौत न आ जाए। (तफ़सीरे नईमी)

१७२) हज़रत इमामे मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कभी मदीनए मुनव्वरा में

घोड़े पर सवार न हुए। हमारे इमामे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु जब हाज़िर हुए तो मदीने की हुदूद में इस्तन्जे को न बैठे बल्कि इतने दिन खाना पीना ही तर्क कर दिया ताकि पेशाब पाख़ाने की हाजत ही न हो। इसी लिये आप ने वहाँ अपना कियाम मुख़्तसर किया। (तफ़सीरे नईमी)

१७३) जब लोग इमामे मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि से हदीस सुनने की फ़रमाइश करते तो पहले आप ग़ुस्ल फ़रमाते, सफ़ेद लिबास पहनते, सर पर अमामा बांधते, चादर ओढ़ते, ख़ुश्बू लगाते, कुर्सी रखवाते फिर आप बाहर तशरीफ़ लाते और कुर्सी पर बैठते। ऊद और अम्बर की धूनी लगाई जाती और फिर भरपूर वक़ार के साथ दिल लगा कर हदीसे मुबारक पढ़ते। उलमा बयान करते हैं कि इमामे मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि ने यह तरीक़ा हज़रत सईद बिन मुसय्यब रज़ियल्लाहु अन्हु से पाया था। (नुज्हतुल कारी)

१७४) हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि से एक बार पूछा गया कि लोगों का आम तौर पर ख़्याल है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कोई काम बिना फ़ायदे का नहीं है। फिर इस हदीस का क्या मतलब है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक कबीले के घूरे पर पहुंचे और वहाँ आप ने खड़े हो कर पेशाब किया। इस से क्या फ़ायदा हासिल हुआ? इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि ने जवाब दिया: इस से बहुत बड़ा फ़ायदा है जो तुम्हें मालूम नहीं है। अरब मुल्क में यह मशहूर था कि अगर किसी की कमर में दर्द हो तो खड़े हो कर पेशाब करने से दर्द जाता रहता है। चूंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कमर में दर्द रहता था इस लिये आप ने अरब के तजर्बे के लिहाज़ से ऐसा किया लेकिन यह आप की आदत थी, ऐसा कहीं मन्कूल नहीं है। (तफ़सीरे नईमी)

१७५) हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अलैहि के नफ़्स ने एक बार बेमौक़ा ठन्डा पानी मांगा। आप ने तीन साल तक ठन्डा पानी ही न पिया। फिर फ़रमाया: अगर अब तू ऐसा करेगा तो छः साल तक ठन्डा पानी छोड़ दूँगा। (तफ़सीरे नईमी)

१७६) फ़ुक़्हाए किराम का इरशाद है कि हदीस पर अमल करना भी उतना ही ज़रूरी है जितना कुरआने मजीद पर अमल करना क्योंकि कुरआने मजीद और हदीस एक ज़बान एक ही लब से और एक ही दहन से मिले। जिन अल्फ़ाज़ के बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमा दिया कि यह कुरआन है, हम ने उन्हें कुरआन मान लिया और जिन कलिमात के बारे में फ़रमा दिया कि यह हदीस है, हम ने उन्हें हदीस मान लिया। ज़बान एक है

मगर कलाम की किस्में दो। बुलाने वाले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ही हैं, कभी अपना नाम लेकर कभी रब का नाम लेकर। (तफ़सीरे नईमी)

१७७) हज़रत मुहियुद्दीन इब्ने अरबी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया: मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हदीस पहुंची कि जो لا اله الا الله सत्तर बार कहे उस की मग़फ़िरत हो जाएगी और जिस के लिये पढ़ा जाए उस की भी मग़फ़िरत हो जाएगी। मैं ने यह कलिमा सत्तर हज़ार बार पढ़ा था मगर किसी ख़ास शख़्स की नियत नहीं की थी। एक दावत में गया वहाँ एक नौजवान मौजूद था जो कशफ़ में मशहूर था। यह जवान खाना खाते खाते रोने लगा। मैं ने वजह पूछी तो बताया कि मैं अपने माँ बाप को अज़ाब में देख रहा हूँ। मैं ने अपने दिल में इस कलिमे का सवाब उस के माँ बाप को बख़्श दिया। फ़ौरन नौजवान हंसने लगा और कहा: अब मैं अपनी माँ को अच्छी हालत में देखता हूँ। (नुज्हतुल क़ारी)

१७८) कुछ हदीसों में आया है कि बुध के दिन नाख़ुन तरशवाने से सफ़ेद दाग़ की बीमारी (बर्स) हो जाती है। अल्लामा इब्नुल हाज ने इस ख़्याल से कि यह हदीस सही नहीं है, बुध के दिन नाख़ुन तरशवा लिये। उन्हें सफ़ेद दाग़ की बीमारी हो गई। ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और इब्नुल हाज से फ़रमाया: क्या तुम ने नहीं सुना था कि मैं ने इस से मना किया है। अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! वह हदीस मेरे नज़्दीक साबित नहीं। फ़रमाया: इतना काफ़ी था कि वह हदीस मेरे नाम से तुम्हारे कान तक पहुंची। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना दस्ते मुबारक उन के बदन पर फेरा, वह फ़ौरन अच्छे हो गए। उसी वक़्त तौबा की कि अब मैं कभी हदीस सुन कर मुख़ालिफ़त नहीं करूँगा। (नुज्हतुल क़ारी)

१७९) बुख़ारी शरीफ़ की सौ से ज़्यादा शरहों में अल्लाह तआला ने दो शरहों को सब से ज़्यादा मक़बूलियत अता फ़रमाई। एक फ़त्हुल बारी दूसरी उम्दतुल क़ारी जो ऐनी के नाम से मशहूर हैं। (नुज्हतुल क़ारी)

१८०) बुख़ारी शरीफ़ की मशहूर शरह फ़त्हुल बारी अल्लामा शहाबुद्दीन अबुल फ़ज़्ल अहमद बिन अली बिन हजर अस्क़लानी ने लिखी। आप शअबान ७७३ हिजरी में मिस्र में पैदा हुए और वहीं ज़िल हिज्ज ८५२ हिजरी में विसाल फ़रमाया। वहीं दैलमी की बग़ल में दफ़न हुए। यह शरह १७ जिल्दों में है। पच्चीस साल में मुकम्मल हुई। (नुज्हतुल क़ारी)

१८१) बुख़ारी शरीफ़ की एक और मशहूर शरह उम्दतुल क़ारी अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी के समकालीन अल्लामा बद्रुद्दीन अबू मुहम्मद महमूद बिन

अहमद बिन मूसा ऐनी ने लिखी है। आप के वालिद क़ाज़ी शहाबुद्दीन अहमद हल्ब के रहने वाले थे। वहाँ से हिजरत करके ऐने नाब आ गए थे जो हल्ब से तीन मन्ज़िल की दूरी पर है। यहीं अल्लामा ऐनी १७ रमज़ान ७६२ हिजरी में पैदा हुए। काफ़ी ज़िन्दगी मिस्र में गुज़ारी। वहीं मंगल की रात चार ज़िल हिज्जा सन ८५५ हिजरी में विसाल फ़रमाया। आप ने अपनी शरह उन्तीस साल में पूरी की। (नुज़्हतुल क़ारी)

१८२) हज़रत इब्राहीम नख़ई रहमतुल्लाहि अलैहि इराक़ के मशहूर फ़क़ीह गुज़रे हैं। इन्हें खरी खोटी हदीसों का परखने वाला कहा जाता है। आप सन ५० हिजरी में पैदा हुए और सन ९६ हिजरी में विसाल फ़रमाया। हज़रत इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि को सोलह साल इन का ज़माना नसीब हुआ। (नुज़्हतुल क़ारी)

१८३) बाज़ रिवायतों से यह साबित होता है कि हर हज़ार साल के बाद तज्दीदे दीन के लिये अल्लाह तआला एक मुजद्दिद मबऊस फ़रमाता है। चुनान्चे उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद दूसरे हज़ार साल के मुजद्दिद हज़रत इमामे रब्बानी शैख़ अहमद फ़ारूक़ी सरहिन्दी रहमतुल्लाहि अलैहि (विलादतः चौदा शव्वाल सन ९७१ हिजरी) ही हैं। इसी लिये आप को मुजद्दिदे अल्फ़ सानी कहा जाता है। मशहूर बुज़ुर्ग ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने ख़ुतूत में शैख़ सरहिन्दी के बारे में पेशगोई करते हुए उन्हें मुस्तक़बिल का ऐसा रौशन चराग़ क़रार दिया था जिस के नूर से ज़ुल्मतें काफ़ूर हो जाएंगी। बिलआख़िर वह बशारत पूरी हुई। (नुज़्हतुल क़ारी)

१८४) हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमतुल्लाहि अलैहि और हज़रत शफ़ीक़ बल्ख़ी रहमतुल्लाहि अलैहि की मक्कए मुअज़्ज़मा में मुलाक़ात हुई। हज़रत इब्राहीम ने पूछाः ऐ शफ़ीक़ बल्ख़ी, तुम ने यह मर्तबा कैसे पाया? हज़रत शफ़ीक़ ने जवाब दियाः एक मर्तबा मेरा गुज़र एक बयाबान से हुआ, वहाँ मैं ने एक परिन्दा देखा जिस के दोनों बाज़ू टूट गए थे। मेरे दिल में यह वसवसा पैदा हुआ कि देखूँ तो सही इसे रिज़्क़ कैसे मिलता है। मैं वहाँ बैठ गया। कुछ देर बाद एक परिन्दा आया जिस की चोंच में एक टिड्डी थी और उस ने वह परिन्दे के मुंह में डाल दी। मैं ने दिल में सोचा कि वह राज़िक़े कायनात जब परिन्दे के ज़रिये से दूसरे परिन्दे का रिज़्क़ पहुंचा देता है तो मेरा रिज़्क़ भी मुझे हर हाल में पहुंचा सकता है लिहाज़ा मैं ने सब कारोबार छोड़ दिये और इबादत में मसरूफ़ हो गया। हज़रत इब्राहीम बिन अदहम ने कहाः

ऐ शफ़ीक बल्ख़ी! तुम ने मजबूर व मअज़ूर परिन्दा बनना पसन्द किया और तन्दुरुस्त परिन्दा बनना पसन्द न किया कि तुम्हें बलन्द मकाम नसीब होता। क्या तुम ने यह फरमाने नबवी नहीं सुना कि ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है। मोमिन तो हमेशा बलन्दीये दर्जात की तमन्ना करता है। यहां तक कि वह अबरार की सफ़ में जगह पाता है। हज़रत शफ़ीक बल्ख़ी अलैहिर्रहमा ने यह सुनते ही हज़रत इब्राहीम बिन अदहाम रहमतुल्लाहि अलैहि के हाथों को चूमा और कहा: बेशक आप मेरे उस्ताद हैं। (तज़्किरतुल औलिया)

१८५) सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने बारह बरस की डूबी हुई बारात को सही सलामत निकाला था। और वह लोग बहुत अर्से ज़िन्दा रहे। इस बारात के दूल्हा का नाम सय्यिद कबीरुद्दीन है और लकब दरियाई दूल्हा है और अब उन्हें शाह दौला कहा जाता है। उन की कब्र शरीफ़ गुजरात पाकिस्तान में हर ख़ास व आम की ज़ियारत गाह है। आप की उम्र शरीफ़ लग भग छः सौ बरस की हुई। आप हुज़ूर ग़ौस पाक रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़लीफ़ा हैं और आप ने एक बार हुज़ूर ग़ौस समदानी मेहबूबे सुब्हानी रज़ियल्लाहु अन्हु को वुज़ू कराते हुए आप के क़दम शरीफ़ से टपकते हुए क़तरों के पांच चुल्लू पी लिये। फ़ी चुल्लू सौ साल अता हुए। जो उम्र अपनी गुज़ार चुके थे वह इस के अलावा। आप की वफ़ात सन एक हज़ार हिजरी के बाद है। (मक़ामाते महमूद)

१८६) उम्मते मुहम्मदिया में हमेशा चालीस अबदाल, सात अमना, तीन खुलफ़ा, एक कुतुब रहेंगे जिन की बरकत से आलम में बारिशें आएंगी, लोगों को रिज़्क मिलेंगे। बाक़ी औलिया अल्लाह तो गिनती से बाहर हैं। कुतुब के ज़रिये आलम का मरकज़ क़ायम है। दाहिने इमाम की बरकत से आलमे अरवाह, बाएं इमाम की बरकत से आलमे अजसाम क़ायम है। औताद की बरकत से चार रास्ते मश्रिक़, मग़रिब, जुनूब, शिमाल क़ायम हैं। अबदाल की बरकत से सातों इक़लीम मेहफ़ूज़ हैं। (तफ़सीरे अराइसुल बयान)

१८७) हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ सय्यिद निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही रहमतुल्लाहि अलैहि का मज़ार जहाँ है उस के आस पास कई कई मील तक बेशुमार क़ब्रें हैं क्योंकि छः सौ बरस से यह अकीदा तमाम हिन्दुस्तान के मुसलमानों में पाया जाता है कि जो शख़्स हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ के पड़ोस में दफ़्न होगा अल्लाह तआला उस की मग़फ़िरत फ़रमाएगा। (अनवारे औलिया)

१८८) हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम के मुबारक दौर में एक डाकू था हारिसा इब्ने बद्र तैमी बसरी जिस ने बसरा में बड़ा उधम मचा रखा था। उसे अल्लाह तआला ने तौबा की तौफ़ीक़ दी। उस ने कुछ क़ुरैशी

लोगों से कहा कि मैं तौबा करता हूँ मुझे असदुल्लाह हज़रत हैदरे कर्रार अली इब्ने अबी तालिब ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन से माफ़ी दिला दो। किसी ने हिम्मत न की। वह डाकू सईद इब्ने कैस हमदानी के पास यह अर्ज़ लेकर हाज़िर हुआ। उन्हों ने हारिसा को कूफ़ा ले जाकर दरबारे हैदरी के किसी कोने में छुपा दिया और खुद अमीरुल मोमिनीन की ख़िदमत में हाज़िर हुए और डाकुओं के अहकाम पूछे। मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने यह हुक्म बताया कि जो डाकू पकड़े जाने के पहले तौबा करले उसे माफ़ी है। सईद ने कहा: अगर्चे हारिसा बद्री ही क्यों न हो? फ़रमाया: अगर्चे हारिसा बद्री ही हो। सईद बोले: हारिसा निकल आ और अमीरुल मोमिनीन के आगे पेश होजा। चुनान्चे हारिसा निकल आया। सईद ने कहा: हुज़ूर यह हारिसा है, तौबा करके हाज़िर हुआ है। चुनान्चे अमीरुल मोमिनीन ने उसे अमान दे दी। हारिसा बाद में मुख़्लिस दीनदार हो गए। (तफ़सीरे रूहुल मआनी)

१८९) हज़रत अमीर हसन उला सज्ज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि पर हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ महबूबे इलाही रहमतुल्लाहि अलैहि की ख़ास नज़र थी। आप ने हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ के इरशादात फ़वाइदुल फ़वाद के नाम से जमा किये। हज़रत अमीर ख़ुसरौ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते थे कि मेरी सब किताबें हसन के नाम होतीं और यह किताब मेरे नाम होती तो मेरे लिये बड़े फ़ख़्र की बात होती। हज़रत ख़्वाजा हसन ने सारी ज़िन्दगी शादी नहीं की। आख़िर उम्र में दौलत आबाद चले गए, वहीं इन्तिक़ाल हुआ। (अनवारे औलिया)

१९०) एक दिन सख़्त बारिश हो रही थी। अन्धेरी रात थी। हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ महबूबे इलाही रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने एक ख़ास ख़ादिम को बुला कर फ़रमाया कि दिल्ली के उस किनारे जमना पार एक कुतुब तशरीफ़ फ़रमा हैं उन्हें खीर खिला आओ। ख़ादिम ने अर्ज़ किया: हुज़ूर जमना जोश पर है, कोई किश्ती वग़ैरा भी नहीं है, मैं उस पार कैसे पहुंचूंगा। फ़रमाया: जमना से कह देना कि मैं उस के पास से आया हूँ जो कभी अपनी बीवी के पास नहीं गया। मुझे रास्ता दे। ख़ादिम हैरत में पड़ गया। सोचा कि आप साहिबे औलाद हैं। बीवी साहिबा घर में हैं, फिर यह क्या फ़रमा रहे हैं। मगर अदब के मारे कुछ न कहा और चल दिये। दरिया से वही कहा जो हज़रत ने बताया था। नदी में ख़ुश्क रास्ता बन गया। उस तरफ़ जाकर उन बुज़ुर्ग को खीर खिलाई। जब वापस होने लगे तो उन्हों ने फ़रमाया: जमना से यह कह देना कि मैं उस के पास से आ रहा हूँ जिस ने कभी कुछ खाया पिया ही नहीं। ख़ादिम की हैरत और बढ़ गई कि मेरे सामने खीर खाई और यह फ़रमा रहे

हैं। दरिया पर आकर वही कहा जो बुज़ुर्ग ने फ़रमाया था। दरिया ने राह दे दी। ख़ादिम हज़रत सुल्तानुल औलिया के पास आ गए मगर हैरत बाक़ी थी। एक दिन मौक़ा पाकर हज़रत महबूबे इलाही से पूछ ही लिया कि सरकार यह क्या माजरा था। फ़रमायाः हम अपने नफ़्स के लिये कुछ नहीं करते। जो करते हैं रब के लिये करते हैं। उस के लिये खाते हैं, उसी के लिये पीते हैं और उसी के लिये बीवी से मिलते हैं। (मल्फ़ूज़ाते इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरेलवी)

१९१) यह जो कहा जाता है कि हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर रहमतुल्लाहि अलैहि ने बारह बरस कुंवें में लटक कर चिल्ला किया कि कुंवें से बाहर आए ही नहीं। यह बिल्कुल मन घड़त बात है। अगर बाबा फ़रीदुद्दीन ने ऐसा किया तो उन दिनों की नमाज़ें जमाअत के साथ कैसे अदा की होंगी? (तफ़सीरे नईमी)

१९२) सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि एक इस्तिक़ामत हज़ार करामत से अफ़ज़ल है। फ़कीह अबुल्लैस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि फ़र्ज़ के तौर पर दस चीज़ों की मुहाफ़िज़त इस्तिक़ामत की अलामत है। (१) ग़ीबत से ज़बान की हिफ़ाज़त यानी एक मुसलमान दूसरे की ग़ीबत न करे। (२) बदगुमानी से परहेज़ क्योंकि अल्लाह तआला का कौल है मुसलमानो! गुमान से बचते रहो क्योंकि गुमान गुनाह का सबब हो जाता है। (३) किसी का मज़ाक़ उड़ाने से परहेज़। (४) मुहारिम से निगाह बचाना। (५) सच बोलना। अल्लाह तआला का क़ौल है जब तुम कोई बात कहो तो इन्साफ़ से कहा करो। (६) अल्लाह की राह में ख़र्च करना। (७) फ़ुज़ूल ख़र्ची से परहेज़। (८) अपने लिये तकब्बुर पसन्द न करना। (९) पंजगाना नमाज़ की मुहाफ़िज़त। (१०) अहले सुन्नत व जमाअत के तरीके पर क़ायम रहना। (तन्बीहुल ग़ाफ़िलीन, तफ़सीरे नईमी)

१९३) हज़रत इब्राहीम ख़व्वास रहमतुल्लाहि अलैहि मुतवक्किलीन के सरदार थे कि कभी घर न बनाया, न सामान रखा। इस के बावजूद सुई धागा, कैंची और कूज़ा साथ रखते थे। किसी ने पूछा कि यह सामान भी क्यों रखा है? फ़रमायाः कूज़ा वुज़ू के लिये। सुई धागा फटा कपड़ा सी कर तन ढाँपने के लिये ताकि नमाज़ दुरुस्त हो। (तफ़सीरे नईमी)

१९४) हज़रत अबू बक्र बिन क़व्वाम रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमायाः मअबूद की इज़्ज़त की क़सम! मुझे वह हाल अता हुआ है कि अगर बग़दाद को कहूँ कि मराकश की जगह चला जा या मराकश को कहूँ कि बग़दाद की जगह चला जा तो ऐसा ही हो। (तफ़सीरे नईमी)

१९५) एक औरत सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में

अपना लड़का लेकर हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि मेरे बच्चे को आप से दिली लगाव है इस लिये इसे मैं आप के सिपुर्द करती हूँ। वह बच्चा सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के पास रहने लगा। आप ने उसे बुज़ुर्गों के तरीक़े पर मुजाहिदे और रियाज़तें करने का हुक्म दिया। कुछ दिनों के बाद माँ अपने बच्चे से मिलने आई तो देखा कि वह बहुत दुबला हो गया है और देखा कि जौ की रोटी खा रहा है। फिर जब वह सरकार ग़ौसे पाक की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो देखा कि आप के सामने बर्तन में मुर्ग़ की हड्डियाँ रखी हुई हैं। वह बोली: मेरे सरदार, आप ख़ुद तो मुर्ग़ खाते हैं और मेरे बेटे को जौ की रोटी खिलाते हैं। तब ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना मुबारक हाथ उन हड्डियों पर रखा और फ़रमाया: उस रब के हुक्म से खड़ा हो जा जो बोसीदा हड्डियों को ज़िन्दा फ़रमाएगा। वह मुर्ग़ फ़ौरन ज़िन्दा हो गया और बाँग देने लगा। आप ने औरत से फ़रमाया: जब तेरा बेटा इस दर्जे को पहुंच जाएगा तो फिर जो जी चाहे खाएगा। (बहजतुल असरार)

१९६) एक दिन हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु मदर्से में वुज़ू फ़रमा रहे थे कि अचानक एक चिड़िया ने आप के कपड़ों पर बीट कर दी। आप ने नज़र उठा कर देखा तो चिड़िया मुर्दा होकर नीचे गिर पड़ी। (बहजतुल असरार)

१९७) सय्यिदुना ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: फ़ना की हालत औलिया और अबदाल की हालतों की इन्तिहा है। फिर उन्हें तकवीन यानी कुन कहना अता किया जाता है तो उन्हें जिस चीज़ की हाजत होती है, वह सब कुछ अल्लाह की मर्ज़ी से हो जाता है। चुनान्चे हक़ तआला का इरशाद है कि ऐ इब्ने आदम! मैं अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई मअबूद नहीं है। मैं वह हूँ कि किसी चीज़ को कहता हूँ हो जा तो वह हो जाती है। तू भी मेरी इताअत कर मैं तुझे भी ऐसा कर दूँगा कि तू भी किसी चीज़ को कहेगा कि हो जा तो वह हो जाएगी। (फ़ुतूहुल ग़ैब, बहजतुल असरार)

१९८) सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी रहमतुल्लाहि अलैहि हनफ़ी मज़हब रखते थे। ख़ुरासान में चौदा रजब ५२७ हिजरी को पैदा हुए। आप के वालिद हज़रत ग़यासुद्दीन हुसैनी सय्यिद थे और वालिदा माजिदा मोहतरमा माहे नूर हसनी सय्यिदा थीं। (हमारे ख़्वाजा)

१९९) मशहूर है कि ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि की वफ़ात के बाद आप की पेशानी पर यह नक़्श ज़ाहिर हुआ: हबीबुल्लाह माता फ़ी हुब्बिल्लाह यानी अल्लाह का हबीब अल्लाह की मुहब्बत में दुनिया से रुख़सत हुआ। (हमारे ख़्वाजा)

२००) हज़रत सूफ़ी हमीदुद्दीन नागोरी रहमतुल्लाहि अलैहि सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के मुमताज़ ख़ुलफ़ा में से हैं। आप ने फ़रमायाः दिल्ली की फ़त्ह के बाद पहला बच्चा जो मुसलमानों के घर में पैदा हुआ वह मैं हूँ। यह सन ५७१ या ५७२ हिजरी बैठता है। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

२०१) हज़रत सूफ़ी हमीदुद्दीन नागोरी रहमतुल्लाहि अलैहि अपने पीर व मुर्शिद ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि की मस्जिद अजमेर शरीफ़ में इमामत फ़रमाते थे। जब आप तकबीरे तहरीमा कहते तो हर मुक़्तदी को अर्शे आज़म नज़र आता था। हर शख़्स इसे अपनी ख़ुद की करामत समझता था। एक रोज़ आप मस्जिद में मौजूद न थे किसी दूसरे बुज़ुर्ग ने नमाज़ पढ़ाई। उस दिन किसी को अर्श नज़र नहीं आया तब यह राज़ खुला कि अर्श का जलवा महज़ आप की बदौलत नज़र आता था। (तफ़सीरे नईमी)

२०२) हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि के गंजे शकर मशहूर होने की वजह यह है कि एक सौदागर ऊँटों पर शकर लाद कर मुलतान से दिल्ली जा रहा था। रास्ते में पाक पट्टन पहुंचा तो हज़रत ने पूछा कि ऊँटों पर क्या है? सौदागर ने मज़ाक़ में कहा कि नमक है। यह सुन कर हज़रत ने कहाः अच्छा तो नमक ही होगा। जब मन्ज़िल पर पहुंच कर सौदागर ने माल देखा तो सब नमक निकला। वह वापस आया और ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन के क़दमों पर गिर कर माफ़ी मांगी। आप ने फ़रमायाः अगर शकर थी तो शकर ही होगी। चुनान्चे वह नमक फिर शकर बन गया। (तफ़सीरे नईमी)

२०३) हज़रत मख़दूम अशरफ़ जहाँगीर रहमतुल्लाहि अलैहि सिमनान के बादशाह थे जो अब एक मामूली क़स्बे की हैसियत से ईरान की हुकूमत में शामिल है। आप ने दस साल हुकूमत के बाद तख़्त व ताज छोड़ दिया और हिन्दुस्तान चले आए। (अनवारे औलिया)

२०४) हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि (वफ़ातः सन १०१३ हिजरी) हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़ सानी शैख़ अहमद सरहिन्दी रहमतुल्लाहि अलैहि के पीर व मुर्शिद थे। आप की बातिनी तरबियत बराहे रास्त सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और ख़्वाजा ख़्वाजगान हज़रत बहाउद्दीन नक़्शबन्द रहमतुल्लाहि अलैहि की रूहानियत से हुई। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

२०५) हज़रत हाजी वारिस अली शाह के दादा परदादा नीशापूर के इज़्ज़तदार सादात में से थे। हज के पहले सफ़र में आप ने आम लिबास तर्क कर दिया और फिर हमेशा एहराम पहने रहे। (अनवारे औलिया)

२०६) हज़रत ग़ौस पाक रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मेरी आँख लौहे

मेहफ़ूज़ में रहती है और मैं अल्लाह के उलूम के समुन्द्रों में ग़ोते लगाता हूँ। (बहजतुल असरार)

२०७) हज़रत अली दाता गंज बख़्श हजवेरी रहमतुल्लाहि अलैहि औलियाए मुतक़द्दिमीन में से हैं। सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि आप के मज़ारे पाक पर हाज़िर हुए, वहाँ चिल्ला किया और रुख़सती के वक़्त हज़रत की शान में यह शेअर फ़रमायाः

गंज बख़्शे फ़ैज़े आलम, मज़हरे नूरे ख़ुदा
नाक़िसाँ रा पीरे कामिल, कामिलाँ रा रहनुमा (अनवारे औलिया)

२०८) अल्लामा जलालुद्दीन रूमी शरीअत के राज़ों से वाकिफ़ और तरीक़त की गहराइयों को जानने वाले हैं। आम तौर पर मौलाना रूम के लक़ब से जाने जाते हैं। कमसिनी ही में तीन चार रोज़ के बाद केवल एक बार कुछ खाते थे और किरामन कातिबीन वग़ैरा को पांच साल की उम्र में देख लिया करते थे। कुनिया (तुर्की) में आप का मज़ारे मुबारक है। (अनवारे औलिया)

२०९) हज़रत बहाउद्दीन ज़करिया मुलतानी रहमतुल्लाहि अलैहि का मर्तबा यह है कि एक बार जब वह हज़रत क़ुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि अलैहि से मुलाक़ात को आए तो वापसी के वक़्त हज़रत क़ुत्बे काकी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने मुबारक हाथों से उन के जूते दुरुस्त किये। (सैरुल औलिया)

२१०) हुज़ूर ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे जब तुम अल्लाह तआला से कोई चीज़ तलब करो तो मेरे वसीले से तलब करो। (बहजतुल असरार)

२११) हज़रत सय्यिद अहमद कबीर रिफ़ाई रहमतुल्लाहि अलैहि सन ५५५ हिजरी में हज से फ़ारिग़ होकर हुज़ूर सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत के लिये मदीनए मुनव्वरा हाज़िर हुए और मज़ारे अक़दस के सामने खड़े होकर इल्तिजा कीः सरकार अपने दस्ते अक़दस को अता फ़रमायें ताकि मैं उन का बोसा ले सकूँ। इस अर्ज़ पर सरकार सय्यिदिल अबरार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मज़ारे मुबारक से अपना दस्ते मुबारक निकाला जिसे उन्हों ने चूमा। उस वक़्त कई हज़ार की भीड़ मस्जिदे नबवी में मौजूद थी जिन्हों ने इस वाक़ए को देखा। उन लोगों में हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नाम भी ज़िक्र किया जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

२१२) हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि अपने मुर्शिद ख़्वाजा उस्मान हरवनी रहमतुल्लाहि अलैहि (जिन्हें आम तौर पर हारूनी लिखा

जाता है) के साथ मक्कए मुअज़्ज़मा से मदीनए मुनव्वरा के लिये रवाना हुए। जब रौज़ए रसूल की ज़ियारत से मुशर्फ हुए तो ख़्वाजा उस्मान हरवनी ने उन से कहा कि सलाम अर्ज़ कर। ख़्वाजा अजमेरी ने सलाम अर्ज़ किया। रौज़ए अनवर से आवाज़ आई: वअलैकुमुस्सलाम या क़ुत्बुल मशाइख़े लिलबर्रि वलबहर। (अनीसुल अरवाह)

२१३) हज़रत ख़्वाजा उस्माने हरवनी रहमतुल्लाहि अलैहि हज़रत हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी रहमतुल्लाहि अलैहि के मुरीद और ख़लीफ़ा और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि के पीर व मुर्शिद हैं। आप का विसाल मक्के में हुआ और मज़ारे पाक मस्जिदे जिन्न के क़रीब था जिसे नज्दी हुकूमत ने तोड़ कर रोड में मिला दिया। (तफ़सीरे नईमी)

२१४) हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रहमतुल्लाहि अलैहि ने ज़ाहिरी व बातिनी उलूम में कमाल हासिल किया। चालीस साल तक रात दिन अपनी पीठ दीवार से नहीं लगाई और दोज़ानू के सिवा बैठे नहीं। (अनवारे औलिया)

२१५) हज़रत अबू बक्र अब्बास रहमतुल्लाहि अलैहि ने चालीस बरस तक पहलू ज़मीन से नहीं लगाया। यहाँ तक मुराक़िबे में बैठे कि आँखों की बीनाई जाती रही और बीस साल अन्धे रहे। दिन रात में पांच सौ रकअतें और तीस हज़ार बार सूरए इख़लास पढ़ा करते थे। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब)

२१६) हज़रत अबू मुहम्मद हरीरी रहमतुल्लाहि अलैहि एक बरस कअबतुल्लाह में रहे, न कभी किसी से बात की न पावँ फैलाए। (तफ़सीरे नईमी)

२१७) हज़रत अताई सलमी रहमतुल्लाहि अलैहि को ऐसा ख़ौफ़े इलाही था कि चालीस बरस न हंसे और न सिर उठा कर आसमान देखा। (रिसालए क़ुशैरिया)

२१८) जब तक हज़रत बिशर हाफ़ी रहमतुल्लाहि अलैहि बग़दाद में ज़िन्दा रहे, किसी चौपाए जानवर ने आप की ताज़ीम के सबब राह में लीद न की क्योंकि आप नंगे पावँ रहते थे। एक दिन एक चौपाए ने रास्ते में लीद कर दी तो उस का मालिक यह बात देख कर घबरा गया कि हो न हो आज यक़ीनन हज़रत बिशर हाफ़ी दुनिया से पर्दा फ़रमा गए वरना यह जानवर कभी रास्ते में लीद न करता। थोड़ी देर के बाद उस ने सुन लिया कि हज़रत का विसाल हो गया। (तज़्किरतुल औलिया)

२१९) जिन दिनों हुसैन मन्सूर हल्लाज रहमतुल्लाहि अलैहि रियाज़त करते थे, उन दिनों बीस बरस तक एक ही दलक़ (कुर्ता) पहने रहते थे। एक रोज़ ख़ादिमों ने ज़बरदस्ती उस दलक़ को बदन पर से उतार लिया। उस में इतनी

बड़ी बड़ी जुएं थीं कि एक जूँ को तोला गया तो छः रत्ती वज़न की निकली। (तज़्किरतुल औलिया)

२२०) इस्लाम के सब से पहले क़ाज़िउल कुज़ात क़ाज़ी अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि हुए। यह हारून रशीद की ख़िलाफ़त का ज़माना था। (तफ़सीरे नईमी)

२२१) ख़्वाजा उस्माने हरवनी रहमतुल्लाहि अलैहि ने दस बरस तक ख़ुद को खाना न दिया। बस सात रोज़ के बाद एक घूँट पानी पी लिया करते थे। (तज़्किरतुल औलिया)

२२२) हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि ने सत्तर साल तक रात को आराम न किया और न पीठ ज़मीन से लगाई। सत्तर साल तक आप का वुज़ू हाजते इन्सानी के सिवा न टूटा। आम तौर पर आँखें बन्द रखते थे, नमाज़ के वक़्त खोलते। (हमारे ख़्वाजा)

२२३) मख़दूम शाह मीना लखनवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने दूध पीने की तमाम मुद्दत में यह मामूल रखा कि अगर उन की दाया बेवुज़ू होती तो आप दूध न पीते। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

२२४) हज़रत मुजद्दिदे सरहिन्दी रहमतुल्लाहि अलैहि ने वसियत की थी कि मेरी बेटी हमल से है। मेरी वफ़ात के बाद उन के बेटा होगा। उस बच्चे से मेरी क़ब्र पर पेशाब करा दिया जाए। फिर क़ब्र धो दी जाए। क्योंकि मैं ने सारी सुन्नतों पर तो अमल किया, एक नवासे से पेशाब करा लेने की सुन्नत अदा न हो सकी। यह सुन्नत मेरी क़ब्र पर अदा कराई जाए। (तफ़सीरे नईमी)

२२५) इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि के छोटे भाई हामिद ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि बड़े कामिल वली थे। यह इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ते थे। उन्हों ने वालिदा से शिकायत की कि हामिद भाई मुझ में क्या ख़राबी देखते हैं कि मेरे पीछे नमाज़ नहीं पढ़ते? इमाम हामिद ने अर्ज़ कीः उन का जिस्म नमाज़ में रहता है मगर दिल किताबों में यानी नमाज़ में किरअत के वक़्त फ़िक़्ही उलझनों में रहते हैं। वालिदा ने फ़रमायाः यह मर्ज़ तो तुम में भी है, वह तो नमाज़ में मस्अले ढूँढता है और तुम उस में ऐब ढूँढते हो। तो वह तुम से बेहतर है। (तफ़सीरे नईमी)

२२६) शैख़ इब्ने मुहम्मद जुवैनी रहमतुल्लाहि अलैहि अपने घर आए तो देखा कि उन के फ़रज़न्द इमाम अबुल मआली को कोई दूसरी औरत दूध पिला रही है। आप ने उस से बच्चा छीन लिया और बच्चे के मुंह में उंगली डाल कर तमाम दुध की उलटी करा दी। और फ़रमायाः अच्छे दूध से शराफ़त पैदा

होती है और जान निकलते वक़्त आसानी। जब इमाम अबुल मआली रहमतुल्लाहि अलैहि जवान हुए तो कभी मुनाज़िरे में दिल तंग हो जाते थे और फ़रमाते थे कि शायद उस दूध का कुछ असर मेरे पेट में रह गया है जिस का यह नतीजा है। (रूहुल बयान)

२२७) हज़रत सरी सक़ती रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे: अपने ज़माने में चार लोग परहेज़गार गुज़रे हैं: हुज़ैफ़ा मरअशी, यूसुफ़ बिन अस्बात, इब्राहीम बिन अदहम और सुलैमान अलख़व्वास। (तफ़सीरे नईमी)

२२८) अबदाल को अबदाल इस लिये कहते हैं कि उन्हों ने बुरी सिफ़ात को अच्छी सिफ़ात से बदल दिया है और यह इन्सानी सिफ़ात से बाहर आए हुए हैं। (तफ़सीरे नईमी)

२२९) ख़तीब ने तारीख़े बग़दाद में एक किताब से नक़्ल किया है कि नुक़बा ३०० हैं, नुजबा ७०, अबदाल ४०, अख़ियार ७, औताद ४ और ग़ौस एक है। नुक़बा का मस्कन मग़रिब और नुजबा का मस्कन मिस्र और अबदाल का मस्कन शाम और अख़ियार ज़मीन में घूमते रहते हैं। औताद ज़मीन के गोशों में हैं और ग़ौस का मस्कन मक्कए मुकर्रमा है। जब कोई मुश्किल आन पड़ती है तो नुक़बा दुआ करते हैं और इस मुश्किल के आसान होने के लिये रब की बारगाह में आजिज़ी करते हैं। उन के बाद नुजबा, उन के बाद अख़ियार, उन के बाद औताद। अगर उन की दुआएं क़ुबूल हो जाएं तो ठीक वरना ग़ौस आजिज़ी करते हैं, गिड़गिड़ाते हैं और सवाल पूरा होने से पहले ग़ौस की दुआ क़ुबूल कर ली जाती है। (तफ़सीरे नईमी)

२३०) हज़रत शैख़ अहमद सरहिन्दी मुजद्दिदे अल्फ़ सानी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया: मैं रब तबारक व तआला को इस तरह से पहचानता हूँ कि वह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रब है। (तफ़सीरे नईमी)

२३१) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: जहाँ चालीस नेक मुसलमान जमा होते हैं वहाँ कोई वली ज़रूर होता है। (मिरक़ात)

२३२) सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: जब तक शैख़ में बारा ख़सलतें न हों वह सज्जादे पर न बैठे। दो ख़सलतें ख़ुदा की कि सत्तार और ग़फ़्फ़ार हो। दो ख़सलतें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कि शफ़ीक़ और रफ़ीक़ हो। दो हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की कि सादिक़ और मुसद्दिक़ हो। दो हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की कि नेकी का हुक्म देने वाला हो और बुराई से हटाने वाला हो। दो हज़रत

उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की कि खाना खिलाए और रात भर बेदार रहे। दो हज़रत मौला अली मुश्किल कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु की कि आलिम और बहादुर हो। (बहजतुल असरार)

२३३) मख़दूम जहानियाँ जहाँ गश्त रहमतुल्लाहि अलैहि ने ख़ज़ानए जलाली में लिखा है कि नेकियों और बदियों में मकान की बुज़ुर्गी, ज़माने की बुज़ुर्गी और इन्सान की बुज़ुर्गी का भी एतिबार है। मकान की बुज़ुर्गी जैसे कि मक्कए मुकर्रमा कि एक नेकी का सवाब एक लाख के बराबर होता है। ज़माने की बुज़ुर्गी जैसे माहे रजब और जुम्ए का दिन कि इस ज़माने में एक नेकी सत्तर नेकियाँ लाती है और एक बदी सत्तर बदियों के अज़ाब की बुनियाद बनती है। इन्सान की बुज़ुर्गी जैसे कि फ़ातिमी सादात और उलमा कि अगर यह एक नेकी करें तो दूसरों के मुक़ाबले में दोगुना सवाब पाएं और अगर एक गुनाह करें तो दूसरों से बढ़ कर अज़ाब पाएं। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

२३४) हज़रत अबू क़ासिम गुरगानी रहमतुल्लाहि अलैहि जिन्नों और इन्सानों के पीर थे इस के बावजूद आप फ़रमाया करते थे हमारा जी चाहता है कि दुनिया में हमारा कोई ऐसा मुरीद हो कि हम उस की खाल उतार कर उस में भुस भरवा कर धूप में लटका दें ताकि दुनिया को यह मालूम हो जाए कि मुरीदी किसे कहते हैं। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

२३५) शहीद को नबी से बहुत क़ुर्ब हासिल है कि पैग़म्बर की नींद वुज़ू नहीं तोड़ती और शहीद की मौत ग़ुस्ल नहीं तोड़ती। नबी के फ़ुज़्लाते शरीफ़ा उम्मत के लिये पाक और शहीद के जिस्म का ख़ून पाक यानी अगर नबी का पेशाब या शहीद का ख़ून लगा कपड़ा कुंवें में गिर जाए तो कुंवाँ नापाक नहीं होता। नबी वफ़ात के बाद ज़िन्दा, शहीद भी शहादत के बाद ज़िन्दा। नबी को वफ़ात के बाद रिज़्के इलाही मिलता है और शहीद को भी। नबी क़ब्र के सवालात से मेहफ़ूज़, शहीद भी। अल्लाह ने ज़मीन पर नबी के जिस्म को खाना हराम फ़रमाया है, शहीद का गोश्त और ख़ून भी ज़मीन नहीं खा सकती। शहीद भी मौत से पहले जन्नत में अपना मक़ाम देख लेता है। शहीद सत्तर आदमियों की शफ़ाअत करेगा। (तफ़सीरे नईमी)

२३६) हज़रत हबीबे अजमी रहमतुल्लाहि अलैहि अपना लिबास रास्ते पर छोड़ कर कहीं चले गए। हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि वहाँ आए और लिबास पहचान कर हिफ़ाज़त के लिये वहाँ खड़े हो गए ताकि कोई उठा कर न ले जाए। जब हज़रत हबीब अजमी वापस आए तो हज़रत हसन बस्री को सलाम किया और कहा: इमाम आप यहाँ क्यों खड़े हैं? हज़रत हसन बस्री

ने फ़रमायाः तुम्हारे कपड़ों की हिफ़ाज़त के लिये। तुम किस के भरोसे पर यहाँ कपड़े छोड़ गए थे? हबीब अजमी ने अर्ज़ कियाः उस के भरोसे पर जिस ने आप को यहाँ हिफ़ाज़त के लिये लाकर खड़ा किया है। (गुल्दस्ताए तरीक़त)

२३७) हज़रत शैख़ मुहियुद्दीन अकबर रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम सुन्नतों पर अमल किया सिवाए इसके कि मेरी कोई बेटी न थी जिस का निकाह मैं अपने किसी अज़ीज़ के साथ कर देता। (तफ़सीरे नईमी)

२३८) हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमतुल्लाहि अलैहि ने तवाफ़ करते हुए एक शख़्स को कहाः तुझे मालूम होना चाहिये कि जब तक तू यह छः घाटियाँ तय न करले, तू नेकों का रुतबा हासिल नहीं कर सकता। (१) नाज़ और नेअमत का दरवाज़ा बन्द कर और सख़्ती का दरवाज़ा खोल दे। (२) इज़्ज़त का दरवाज़ा बन्द कर और ज़िल्लत का दरवाज़ा खोल दे। (३) आराम और राहत का दरवाज़ा बन्द कर और कोशिश का दरवाज़ा खोल दे। (४) नींद का दरवाज़ा बन्द कर और बेदारी का दरवाज़ा खोल दे। (५) मालदारी का दरवाज़ा बन्द कर और फ़क्र का दरवाज़ा खोल दे। (६) उम्मीद का दरवाज़ा बन्द कर और मौत की तय्यारी का दरवाज़ा खोल दे। (तफ़सीरे नईमी)

२३९) हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थेः अल्लाह को दोस्त रखने की निशानियाँ यह हैं कि वह अख़लाक़, अफ़आल, अवामिर और सुनन में अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताबेअदारी करे। (तफ़सीरे नईमी)

२४०) हज़रत अबू अली फ़ुज़ैल बिन अयाज़ ख़ुरासानी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैंः जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से मुहब्बत रखता है तो उस के ग़म को ज़्यादा कर देता है और जब किसी बन्दे पर ग़ज़ब फ़रमाता है तो उस पर दुनिया को कुशादा कर देता है। (कशफ़ुल महजूब)

२४१) हज़रत हातिम असम रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैंः जो शख़्स हमारे मज़हब में दाख़िल हुआ उस में मौत की चारों ख़सलतें पाई जानी चाहियें: सफ़ेद मौत यानी भूख, सियाह मौत यानी मख़लूक़ की तरफ़ से अज़ियत बरदाश्त करना, सुर्ख़ मौत यानी ख़्वाहिशात की मुख़ालिफ़त में ऐसा अमल जो हर तर की खोट से पाक हो और सब्ज़ मौत यानी चीथड़े पर चीथड़ा लगाना। (गुल्दस्ताए तरीक़त)

२४२) हज़रत यहया बिन मआज़ राज़ी (वफ़ातः २५८ हिजरी) रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थेः तव्वाबीन की भूख तहरीक के तौर पर होती है, ज़ाहिदीन

की भूख सियासते नफ़्स के तौर पर और सिद्दीक़ीन की भूख करामत की मूजिब बनती है। और फ़रमायाः वक़्त का फ़ौत हो जाना मौत से ज़्यादा सख़्त है क्योंकि वक़्त के फ़ौत हो जाने से अल्लाह से ताल्लुक़ टूटता है और मौत से मख़लूक़ से रिश्ता टूट जाता है। और फ़रमायाः ज़ुह्द तीन चीज़ों का नाम है: क़िल्लत, ख़लवत और भूख। (कशफ़ुल महजूब)

२४३) हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैहि से किसी ने तसव्वुफ़ के बारे में पूछा तो फ़रमायाः तसव्वुफ़ यह है कि हक़ तआला तुझे तेरी ज़ात से फ़ना कर दे और अपनी ज़ात के साथ ज़िन्दा रखे। (कशफ़ुल महजूब)

२४४) हज़रत हुसैन बिन मन्सूर रहमतुल्लाहि अलैहि से किसी ने सूफ़ी के बारे में पूछा तो फ़रमायाः सूफ़ी की ज़ात यकता होती है न कोई अल्लाह के सिवा उसे क़ुबूल करता है और न यह अल्लाह के सिवा किसी को क़ुबूल करता है। (रिसालए क़ुशैरिया)

२४५) हज़रत अबू हमज़ा बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थेः सच्चे सूफ़ी की निशानी यह है कि मालदार होने के बावजूद वह फ़क़ीर बन जाए और बाइज़्ज़त होने के बावजूद हक़ीर बने और शोहरत के बावजूद अपने आप को छुपाए और झूटे सूफ़ी की निशानी यह है कि वह मोहताजी के बाद मालदार बने, हक़ीर होने के बाद इज़्ज़त दार बने और गुमनाम होने के बाद शोहरत वाला हो। (रिसालए क़ुशैरिया)

२४६) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं कब अपने अहबाब से मिलूँगा? सहाबा ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह हमारे माँ बाप आप पर क़ुरबान क्या हम आप के अहबाब नहीं हैं? फ़रमायाः तुम मेरे असहाब हो। मेरे अहबाब तो वह लोग हैं जिन्हों ने मुझे नहीं देखा मगर मुझ पर ईमान लाए। मुझे उन से मिलने का बहुत शौक़ है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

२४७) इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि समाअ को हराम क़रार नहीं देते मगर अवाम के लिये मकरूह बताते हैं। चुनान्चे अगर कोई शख़्स गाने का पेशा इख़्तियार करले या लहव व लअब के तौर पर समाअ में लगा रहे तो उस की शहादत क़ुबूल नहीं की जाएगी। इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि गाने बजाने को उन चीज़ों में शुमार करते हैं जिन से मुरव्वत साक़ित हो जाती है। (रिसालए क़ुशैरिया)

२४८) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कुछ आसार मरवी हैं जिन में उन्हों ने समाअ को जाइज़ क़रार दिया है। (रिसालए क़ुशैरिया)

२४९) हज़रत अबू अली दक़्क़ाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे: अवाम के लिये समाअ हराम है इस लिये कि उन के नफ़्स अपनी हालत पर रहते हैं। ज़ाहिदों के लिये मुबाह है क्योंकि उन्हें मुजाहिदात हासिल हैं और हमारे मुरीदों के लिये मुस्तहब ताकि उन के दिल ज़िन्दा रहें। (रिसालए क़ुशैरिया)

२५०) एक बार किसी ने हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रहमतुल्लाहि अलैहि से समाअ के बारे में सवाल किया तो फ़रमाया: हक़ तआला की तरफ़ से वारिद होने वाली कैफ़ियत है जो दिलों को बेचैन करके हक़ तआला की तरफ़ ले जाती है। चुनान्चे जो हक़ तरीक़े पर उस की तरफ़ कान लगाता है वह हक़ीक़त को पा लेता है और जो अपने नफ़्स से उस की तरफ़ कान लगाता है वह ज़न्दीक़ हो जाता है। (रिसालए क़ुशैरिया)

२५१) हज़रत अबू बक्र शिब्ली रहमतुल्लाहि अलैहि से समाअ के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया: ज़ाहिर में तो यह फ़ितना है और बातिन में इब्रत। लिहाज़ा जो इस इशारे को पाले उस के लिये इब्रत का सुनना जाइज़ है वरना उस ने फ़ितने को दावत दी और मुसीबत को मोल लिया। (रिसालए क़ुशैरिया)

२५२) हज़रत अबू अली दक़्क़ाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं: समाअ अगर शरीअत के मुताबिक़ न हो तो ज़ंग है और अगर हक़ की तरफ़ न हो तो बेवक़ूफ़ी है और अगर इब्रत की वजह से न हो तो फ़ितना है। (रिसालए क़ुशैरिया)

२५३) कहा जाता है कि समाअ की दो क़िस्में हैं एक क़िस्म वह है जिस में इल्म और होशमन्दी दोनों की शर्त ज़रूरी है लिहाज़ा इस क़िस्म के शख़्स के लिये शर्त यह है कि वह अस्माओ सिफ़ात को जानता हो वरना वह कुफ़्रे महज़ में मुब्तिला हो जाएगा। और दूसरी क़िस्म हाल और कैफ़ियत की शर्त के साथ समाअ की है। इस क़िस्म के शख़्स के लिये शर्त है कि वह हालते बशरी से फ़ना हो चुका हो और अहकामे हक़ीक़त के ज़ाहिर होने की वजह से वह नफ़्स के आसार से पाक हो। (रिसालए क़ुशैरिया)

२५४) एक दिन अबू अली रूदबारी रहमतुल्लाहि अलैहि से समाअ के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया: काश कि हम इस से हमेशा के लिये पूरी तरह निजात पा जाते। (सबए सनाबिल शरीफ़)

२५५) हज़रत अबू उस्मान हैरी फ़रमाते हैं: समाअ की तीन क़िस्में हैं: एक क़िस्म मुरीदों और नौसिखियों के लिये है। वह समाअ के ज़रिये अहवाले शरीफ़ा को दावत देते हैं मगर इस में फ़ितने और रियाकारी का ख़तरा होता है। दूसरी क़िस्म सादिक़ीन के लिये है वह इस के ज़रिये अपने अहवाल में इज़ाफ़ा करना चाहते हैं और इस से ऐसा कलाम सुनाते हैं जो उस के वक़्त

के मुताबिक़ हो और तीसरी क़िस्म अहले इस्तिक़ामत आरिफ़ीन के लिये है। यह वह लोग होते हैं जो इन हरकात और सुकून को जो उन के दिलों पर वारिद होते हैं, अल्लाह पर तरजीह नहीं देते। (रिसालए क़ुशैरिया)

२५६) हज़रत अबुल हारिस अलऔसी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं: मैं ने इब्लीस को ख़्वाब में देखा कि वह औलास में किसी मकान की छत पर है और एक छत पर मैं हूँ और इब्लीस के दाएं बाएं लोग है जिन्हों ने साफ़ सुथरे कपड़े पहन रखे हैं। इब्लीस ने उन में से एक जमाअत से कहा गाना गाओ। उन्हों ने गाने गाए और गाना इतना उम्दा था कि मैं बहक गया और चाहा कि अपने आप को छत पर से फेंक दूँ। इस के बाद शैतान ने कहा: नाचो। सब ने बहुत उमदा नाचा। इस के बाद इब्लीस ने मुझ से कहा: ऐ अबुल हारिस, मुझे तो सिर्फ़ यही चीज़ मिलती है जिस के ज़रिये मैं तुम लोगों के अन्दर घुस सकता हूँ। (गुल्दस्तए तरीक़त)

२५७) हज़रत बहलूल दाना रहमतुल्लाहि अलैहि क़ब्रस्तान में रहते थे। एक दिन हज़रत सरी सक़ती रहमतुल्लाहि अलैहि ने पूछा: आप शहर में क्यों नहीं रहते? फ़रमाया: मैं ऐसे लोगों में रहता हूँ कि उन के पास बैठता हूँ तो मुझे तकलीफ़ नहीं देते और ग़ायब होता हूँ तो मेरी ग़ीबत नहीं करते। (गुल्दस्तए तरीक़त)

२५८) हज़रत सरी सक़ती रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है कि मैं ने हज़रत जुरजानी रहमतुल्लाहि अलैहि के पास सत्तू देखे जिन से वह भूख मिटा लेते। मैं ने कहा: आप खाना और दूसरी चीज़ें क्यों नहीं खाते? फ़रमाया: मैं ने रोटी चबाने और सत्तू खाने के बीच नव्वे तस्बीहों का फ़र्क़ पाया, लिहाज़ा चालीस साल से मैं ने रोटी नहीं चबाई। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब)

२५९) हज़रत अबू हम्माद असवद रहमतुल्लाहि अलैहि ने तीस बरस तक मस्जिदे हराम में वक़्त गुज़ारा, इस अर्से में किसी ने उन्हें खाते पीते नहीं देखा और उन की कोई घड़ी अल्लाह के ज़िक्र से ख़ाली नहीं हुई। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब)

२६०) हज़रत सुल्तानुल आरिफ़ीन बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अलैहि से एक तेली की बीवी ने पूछा: हज़रत आप दाढ़ी अच्छी है या मेरे बैल की दुम? आप ने फ़रमाया: माई अगर मुझे ईमान पर ख़ातिमा नसीब हो जाए तो मेरी दाढ़ी तेरे बैल की दुम से कहीं बेहतर है और अगर ख़ातिमा बिलख़ैर मयस्सर न हो तो तेरे बैल की दुम मेरी दाढ़ी से अफ़ज़ल है कि फिर दोज़ख़ मेरे लिये है उस के लिये नहीं। वह तो ख़ाक कर दिया जाएगा। (शरह फ़िक़्हे अकबर, मुल्ला अली क़ारी)

२६१) कहते हैं कि जब हज़रत राबिआ बसरिया रज़ियल्लाहु अन्हा के शौहर वफ़ात पा गए तो हज़रत हसन बसरी और उन के कुछ साथी राबिआ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अन्दर आने की इजाज़त चाही। उन्हों ने इजाज़त दे दी और सामने पर्दा डाल कर उस के पीछे बैठ गईं। हज़रत हसन बसरी बोले: आप के ख़ाविन्द गुज़र चुके हैं अब आप को दूसरा निकाह करना चाहिये। राबिआ बोलीं: हाँ हाँ ज़रूर मगर तुम में सब से बड़े आलिम से निकाह करूँगी। लोगों ने कहा कि हम में सब से बड़े आलिम हसन हैं। राबिआ ने कहा: ऐ हसन! अगर तुम मेरी चार बातों का जवाब दे दोगे तो मैं तुम्हारी हो चुकी। हसन बोले: अगर अल्लाह की मदद शामिले हाल रही तो ज़रूर जवाब दूंगा। राबिआ ने कहा: अच्छा यह बताओ कि मैं जब मर कर दुनिया से उठूंगी तो ईमान के साथ जाऊँगी या नहीं? हसन बोले: यह तो ग़ैब की बात है जिस का हाल अल्लाह ही को मालूम है। फिर बोलीं: क़ब्र में जब मुन्कर नकीर सवालात करेंगे तो मैं उन के सवालों का सही जवाब दे पाऊँगी या नहीं? हसन ने कहा: ग़ैब की बात अल्लाह ही जानता है। फिर फ़रमाया: मेहशर में जब नामए आमाल दिये जाएंगे तो मेरा नामए आमाल दाएं हाथ में होगा या बाएं में? हसन ने जवाब दिया: यह भी ग़ैब की बात है जिसे सिर्फ़ अल्लाह ही जानता है। फिर पूछा: जिस दिन लोगों में यह पुकार दी जाएगी कि आज एक फ़िर्क़ा जन्नती है और एक दोज़ख़ी, उस दिन मैं कौन से फ़िर्क़े में रहूँगी? हसन ने कहा: यह भी ग़ैब जानने वाले रब के इल्म में है। राबिआ बोलीं: जिस जान के साथ चार तरह के ग़म लगे हुए हैं उस को निकाह से क्या ख़ास दिलचस्पी हो सकती है? फिर हसन से बोलीं: अल्लाह तआला ने अक़्ल के कितने हिस्से किये हैं? हसन ने कहा: दस, नौ मर्दों के लिये, एक औरतों के लिये। फिर पूछा: शहवत के कितने हिस्से हैं? जवाब दिया: दस, नौ औरतों के लिये और एक मर्दों के लिये। यह सुन कर राबिआ ने कहा: ऐ हसन! मैं एक हिस्सा अक़्ल रखने के बावजूद नफ़्सानी ख़्वाहिशात के नौ हिस्सों की हिफ़ाज़त पर कुदरत रखती हूँ और तुम नौ हिस्सा अक़्ल रखते हुए एक हिस्सा ख़्वाहिश के दबाने पर क़ादिर नहीं हो। इस पर हज़रत हसन बस्री रहमतुल्लाहि अलैहि बहुत रोए और वहाँ से रुख़सत हो गए। (सब्अ सनाबिल शरीफ़)

२६२) हज़रत मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि हज़रत हसन बस्री रहमतुल्लाहि अलैहि के समकालीन हैं। आप के वालिद एक बार किश्ती में सफ़र कर रहे थे। बीच दरिया में पहुंच कर जब मल्लाह ने किराया तलब किया तो फ़रमाया: मेरे पास देने को कुछ भी नहीं है। यह सुन कर मल्लाह ने

आप को बुरा भला कहा और इतना मारा पीटा कि आप बेहोश हो गए। जब होश आया तो मल्लाह ने दोबारा किराया मांगा और कहा अगर तुम ने किराया न दिया तो मैं तुम्हें दरिया में फेंक दूँगा। उसी वक़्त अचानक कुछ मछलियाँ मुंह में एक एक दीनार दबाए हुए पानी के ऊपर आईं और आप ने एक मछली के मुंह से दीनार लेकर किराया अदा कर दिया। मल्लाह यह हाल देख क़दमों में गिर पड़ा। आप कश्ती से दरिया में उतर गए और पानी में चलते हुए नज़रों से ओझल हो गए। इसी वजह से लफ़्ज़ दीनार आप के नाम का हिस्सा बन गया। (तज़्किरतुल औलिया)

२६३) शैख़ हज़रत अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की मजलिसे वअज़ में चार सौ लोग क़लम दवात लेकर बैठते थे और जो कुछ सनते थे उसे लिख लेते थे। (अख़बारुल अख़ियार)

२६४) सरकारे बग़दाद ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के साहबज़ादे सैफ़ुद्दीन अब्दुल वहाब रहमतुल्लाहि अलैहि ने बताया कि कोई महीना ऐसा नहीं था जो अपने आने से पहले ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु अन्हु के पास न आता हो। फिर अगर अल्लाह तआला ने उस में कुछ बुराई मुक़द्दर कर रखी होती तो वह बुरी शक्ल में आता और अगर उस में अच्छाई, नेअमत, सलामती और ख़ैर होती तो वह अच्छी शक्ल में आता। (फ़तावा करामाते ग़ौसिया)

२६५) सय्यिदुत ताइफ़ा हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु अन्हु सरकारे बग़दाद रज़ियल्लाहु अन्हु से दो सौ बरस पहले गुज़रे हैं। एक दिन आप मुराक़िबे में थे कि अचानक सर उठाया और फ़रमायाः मुझे आलमे ग़ैब से मालूम हुआ है कि पांचवीं सदी में वस्त में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलादे अतहार में से एक क़ुत्बे आलम पैदा होगा जिन का लक़ब मुहियुद्दीन और इस्मे गिरामी सय्यिद अब्दुल क़ादिर होगा और वह ग़ौसे आज़म होंगे। उन की पैदाइश गीलान में होगी। (तफ़रीहुल ख़ातिर)

२६६) हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि का नामे मुबारक हसन और कुन्नियत अबू सईद थी। वालिद का नाम यसार और वालिदा का नाम बीबी ख़ैरा था जो उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की कनीज़ थीं। आप के वालिद सन बारह हिजरी में सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के दस्ते हक़ परस्त पर इस्लाम में दाख़िल हुए। हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के विसाल से दो साल पहले मदीनए मुनव्वरा में पैदा हुए थे। विलादत

के बाद आप को सय्यिदुना उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में लाया गया तो आप ने अपने हाथ से इन के मुंह में खजूर का रस टपकाया और फ़रमाया: इस बच्चे का नाम हसन रखो क्योंकि यह ख़ूबसूरत चेहरे वाला है। हज़रत ख़्वाजा हसन बस्री जिन दिनों दूध पीते थे और उन की वालिदा किसी काम में लगी होतीं और यह रोते तो उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा अपनी छाती उन के मुंह में दे देतीं। अल्लाह की कुदरत कि उन की छाती से दूध निकल आता। ख़्वाजा हसन बस्री रहमतुल्लाहि अलैहि ने एक सौ तैंतीस सहाबए किराम को पाया था। आप की वफ़ात चार रजब सन ११९ हिजरी में हुई और मज़ार शरीफ़ बसरा में है। (सैरुल औलिया लेखक ख़्वाजा अमीर खुर्द किरमानी निज़ामी)

२६७) हज़रत ख़्वाजा अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रहमतुल्लाहि अलैहि ख़्वाजा हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि के जानशीन और ख़लीफ़ा थे। आप की कुन्नियत अबुल फ़ज़्ल थी। बसरा के रहने वाले थे। आख़िर उम्र में मफ़लूज हो कर रह गए थे। एक दिन नमाज़ का वक़्त आ गया, आप के पास कोई न था जो आप को वुज़ू कराता। यहाँ तक कि नमाज़ का वक़्त जाने लगा, आप ने रब की बारगाह में दुआ की: ऐ अल्लाह मुझे इतनी ताक़त अता फ़रमा कि मैं वुज़ू करलूँ। उस के बाद जो तेरा हुक्म हो वह मेरे सर आँखों पर। चुनान्चे आप उसी वक़्त सेहतमन्द हो गए। जब अपने दिल जैसा वुज़ू करके अपने बिस्तर पर आए तो फिर उसी तरह मफ़लूज हो गए। आप ने सात सफ़र एक सौ १७७ हिजरी में वफ़ात पाई। मज़ारे पाक बसरा शहर में है। (सैरुल औलिया)

२६८) हज़रत ख़्वाजा फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि की कुन्नियत अबू अली और अबुल फ़ज़्ल है। आप का अस्ल वतन कूफ़ा था। विलादत समरकन्द या बुख़ारा में हुई। आप को ख़िलाफ़त ख़्वाजा अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रहमतुल्लाहि अलैहि से थी। कहते हैं कि ख़्वाजा फ़ुज़ैल बिन अयाज़ ने हरम शरीफ़ में एक क़ारी की ज़बान से सूरए अलक़ारिआ सुनी और एक नअरा मार कर जान नज़्र कर दी। तीन रबीउल अव्वल १८७ हिजरी को मक्कए मुकर्रमा में जन्नतुल मुअल्ला में उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा की क़ब्रे शरीफ़ के पास दफ़्न हुए। (सैरुल औलिया)

२६९) अमीर खुर्द किरमानी अपनी किताब सैरुल औलिया में लिखते हैं कि हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रज़ियल्लाहु अन्हु ने भाग कर हज़रत सय्यिदुना लूत अलैहिस्सलाम के मज़ार के क़रीब एक ग़ार में वफ़ात पाई। जब आप की वफ़ात का वक़्त क़रीब पहुंचा तो ग़ैब से आवाज़ आई: आगाह रहो

कि ज़मीन के लिये अमान का सबब आज वफ़ात पा गया। हाफ़िज़ इब्ने हजर कहते हैं कि आप की वफ़ात १६२ हिजरी में हुई। क़ब्र शरीफ़ मुल्के शाम में बताई जाती है। (सैरुल औलिया)

२७०) ख़्वाजा हुज़ैफ़ा अलमरअशी रहमतुल्लाहि अलैहि का लक़ब सदीदुद्दीन था। मरअश शाम के क़रीब एक शहर का नाम है। आप का सने वफ़ात चौदह शव्वाल २५२ हिजरी है। मज़ार मरअश शहर में है। (सैरुल औलिया)

२७१) हज़रत ख़्वाजा हुबैरा बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि का लक़ब अमीनुद्दीन था। बसरा में १६७ हिजरी में पैदा हुए। सतरह साल की उम्र में तमाम उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी हासिल कर लिये। सात शव्वाल २८७ हिजरी को एक सौ बीस साल की उम्र में बसरा में वफ़ात पाई। (सैरुल औलिया)

२७२) हज़रत ख़्वाजा ममशाद दीनोरी रहमतुल्लाहि अलैहि का लक़ब करीमुद्दीन मुन्इम था। आप दीनोर के रहने वाले थे जो हमदान और बग़दाद के दरमियान एक शहर है। आप बहुत मालदार थे और ज़रूरत मन्दों की ज़रूरतें पूरी करते थे, इस लिये आप का लक़ब मुन्इम पड़ गया। आप की वफ़ात चौदह मुहर्रम २९९ हिजरी को हुई। मज़ार दीनोर शहर में है। (सैरुल औलिया)

२७३) हज़रत ख़्वाजा अबू इस्हाक़ चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि का लक़ब शर्फुद्दीन या शरीफ़ुद्दीन था। ख़ुरासान के क़रीब मशहूर शहर चिश्त में पैदा हुए। आप के शैख़ ख़्वाजा ममशाद दीनोरी रहमतुल्लाहि अलैहि ने आप से पूछा: तुम्हारा नाम क्या है? आप ने जवाब दिया: अबू इस्हाक़ शामी। शैख़ ने फ़रमाया: आज से तुम्हें अबू इस्हाक़ चिश्ती कहेंगे इस लिये कि चिश्त वालों को तुम से हिदायत मिलेगी और तुम्हारा सिलसिला क़ियामत तक चिश्तिया कहलाएगा। आप की वफ़ात चौदह रबीउल अव्वल ३२९ हिजरी हो हुई। (सैरुल औलिया)

२७४) हज़रत ख़्वाजा क़ुदवतुद्दीन अबू अहमद चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि छः रमज़ान २६० हिजरी को क़स्बा चिश्त में पैदा हुए। सात साल की उम्र से आप ने ख़्वाजा अबू इस्हाक़ चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि की ख़िदमत में हाज़िरी दी और अपने मुर्शिद से ज़ाहिरी व बातिनी उलूम हासिल किये। आप की वफ़ात तीन जमादिउल आख़िर ३५५ हिजरी को हुई। मज़ारे पाक चिश्त में है। (सैरुल औलिया)

२७५) हज़रत ख़्वाजा नासिहुद्दीन अबू मुहम्मद चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि शबे आशूरा ३३१ हिजरी में पैदा हुए। आप के वालिद का नाम ख़्वाजा अबू अहमद अबदाल चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि था। ख़्वाजा नासिहुद्दीन अबू मुहम्मद चिश्ती बहुत मुजाहिदे करते थे। एक बार नदी किनारे बैठे अपनी

गुदड़ी में पैवन्द लगा रहे थे कि बादशाह आया और उस ने दीनारों की एक थैली आप को पेश की। आप ने इन्कार किया, बादशाह ने इसरार किया। आप ने कहा: हमारे बुज़ुर्गों का यह तरीक़ा नहीं है इस लिये मैं नहीं लेता। जब बादशाह ने बहुत मजबूर किया तो आप ने नदी की तरफ़ मुंह फेरा। नदी से सैंकड़ों मछलियाँ दीनार मुंह में दबाए पानी की सतह पर आ गई। आप ने फ़रमाया: जिस शख़्स के पास ग़ैब से इतना ख़ज़ाना मौजूद हो वह तुम्हारी एक थैली की क्या क़द्र करे। आप की वफ़ात चौदह रबीउल अव्वल ४११ हिजरी को हुई। मज़ारे पाक क़स्बा चिश्त में है। (सैरुल औलिया)

२७६) हज़रत ख़्वाजा अबू यूसुफ़ चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि चिश्त में पैदा हुए। आप का लक़ब नासिरुद्दीन था। ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबू मुहम्मद चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि आप के पीर व मुर्शिद और मामूँ थे। आप का नसब तेरा वास्तों से सय्यिदुना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलता है। कहते हैं कि ख़्वाजा अबू यूसुफ़ चिश्ती को कुरआन याद न था जिस की वजह से आप बहुत परेशान रहते थे। एक रात इसी फ़िक्र में सो गए। ख़्वाब में अपने मुर्शिद ख़्वाजा अबू मुहम्मद चिश्ती को देखा कि फ़रमाते हैं: तुम्हारा क्या हाल है? मैं तुम्हें परेशान देखता हूँ। अर्ज़ किया: मेरी परेशानी का सबब कलामुल्लाह का याद न होना है। फ़रमाया: एक सौ मर्तबा सूरए फ़ातिहा पढ़ लिया करो। इस की बरकत से तुम्हें कलामुल्लाह याद हो जाएगा। जागने पर आप ने ऐसा ही किया। चुनान्चे अल्लाह तआला के करम से आप को पूरा कुरआन हिफ़्ज़ हो गया। आप का विसाल चार रजब ४४६ हिजरी को हुआ। मज़ारे पाक शहर चिश्त में है। (सैरुल औलिया)

२७७) ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी रहमतुल्लाहि अलैहि का लक़ब नय्यरुद्दीन था। आप ४६२ हिजरी में ज़िन्दना मक़ाम पर पैदा हुए। आप अकसर रोते रहते और बेहोश हो जाते। किसी ने पूछा: आप इतना क्यों रोते हैं? फ़रमाया: जब रब के इस फ़रमान का ख़्याल आता है कि हम ने जिन्न व इन्स को नहीं पैदा किया मगर सिर्फ़ इबादत के लिये, तो ताब नहीं रहती इस ख़्याल से कि मेरी पैदाइश तो इबादत के लिये हुई है और मैं ज़ैद व अम्र में लगा रहता हूँ। आप का विसाल दस रजब ६१२ हिजरी को हुआ। मज़ारे मुबारक शहर ज़िन्दान में है। (सैरुल औलिया)

२७८) सिलसिलए चिश्त के बड़े बुज़ुर्ग हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि अलैहि की कुन्नियत अबुन्नूर या अबुल मन्सूर है। नेशापूर के मज़ाफ़ात में एक मौज़अ है हारवन, आप वहीं सन ५२६ हिजरी में पैदा हुए।

कई साल तक मुजाहिदा किया। और इस अर्से में कभी पेट भर खाना नहीं खाया। आप की वफ़ात पांच शव्वाल ६१७ हिजरी को हुई। मज़ारे पाक मक्कए मुकर्रमा में है। (सैरुल औलिया)

२७६) हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन सिज्ज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि ख़्वाजा उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि अलैहि के मुरीद और ख़लीफ़ा थे। आप के वालिद का नाम ख़्वाजा ग़यासुद्दीन सिज्ज़ी था। आप की विलादत ५३७ हिजरी में सिज्ज़ में हुई। १३ साल की उम्र में वालिदे मोहतरम के हमराह ख़ुरासान की जानिब हिजरत की। इल्मे दीन हासिल करने के लिये समरक़न्द और बुख़ारा का सफ़र किया। हारवन शहर में अपने मुर्शिदे गिरामी शैख़ उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि अलैहि की ख़िदमत में चौबीस साल तक रहे। हज को तशरीफ़ ले गए। मदीनए मुनव्वरा से हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए। एक अन्दाज़े के मुताबिक़ ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि के हाथ पर नव्वे लाख से ज़्यादा लोगों ने इस्लाम क़ुबूल किया। आप की वफ़ात सुल्तान अल्तमश के दौर में हुई। विसाल यकुम रजब और छः रजब के दरमियान किसी तारीख़ में हुआ। साले वफ़ात ६३३ हिजरी है। मज़ारे पाक शहर अजमेर में ज़ियारतगाहे ख़लाइक़ है। (सैरुल औलिया)

२८०) हज़रत ख़्वाजा कुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि अलैहि का नसब हज़रत इमाम जअफ़रे सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलता है। आप सन ५८२ हिजरी में क़स्बए ओश में पैदा हुए। आप डेढ़ साल के थे कि आप के वालिद सय्यिद कमालुद्दीन अहमद बिन सय्यिद मूसा का विसाल हो गया। आप ने क़ाज़ी हमीदुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि के हाथ पर क़ुरआने मजीद हिफ़्ज़ किया। जब आप का विसाल हुआ तो दिल्ली के सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश ने आप को गुस्ल दिया। इस के बाद आप के ख़लीफ़ा ख़्वाजा अबू सईद तबरेज़ी ने आप की वसियत सुनाई कि मेरे जनाज़े की नमाज़ वह शख़्स पढ़ाए जिस ने कभी हराम के लिये कमरबन्द न खोला हो और जिस की अस्त्र की सुन्नत और जमाअत की पहली तकबीर कभी फ़ौत न हुई हो। यह सुन कर थोड़ी देर तक ख़ामोशी रही फिर सुल्तान अल्तमश आगे बढ़े और फ़रमाया: मैं चाहता था कि मेरा हाल कभी किसी पर ज़ाहिर न हो लेकिन मेरे शैख़ ने ज़ाहिर कर ही दिया। हज़रत क़ुतुब साहब की वफ़ात चौदह रबीउल अव्वल ६३४ हिजरी को हुई। मज़ारे मुबारक दिल्ली शहर के बाहर महरौली में है। (सैरुल औलिया)

२८१) बाबा फ़रीदुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि का नाम मसऊद और लक़ब फ़रीदुद्दीन था। आप का सिलसिलए नसब अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े

आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु तक पहुंचता है। आप के दादा काज़ी शुऐब हलाकू के ज़माने में अपना वतन छोड़ कर लाहौर तशरीफ़ लाए थे। बाबा फ़रीद रहमतुल्लाहि अलैहि की विलादत ५८४ हिजरी में मुल्तान में हुई और वफ़ात पांच मुहर्रम ६६४ हिजरी को हुई। मज़ारे मुबारक अजोधन (पाक पट्टन) में है। (सैरुल औलिया)

२८२) हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन मेहबूबे इलाही रहमतुल्लाहि अलैहि बदायूं में सन ६३६ हिजरी में पैदा हुए। वालिद माजिद का नाम अहमद बिन अली था। सोलह साल की उम्र में दिल्ली आ गए। आप के खुलफ़ा में ख़्वाजा बुरहानुद्दीन ग़रीब, शैख़ नसीरुद्दीन महमूद चराग़ दिल्ली, मौलाना शम्सुद्दीन यहया, शैख़ कुतुबुद्दीन मुनव्वर हांसवी, शैख़ हुसामुद्दीन मुल्तानी, मौलाना फ़ख़रुद्दीन ज़रादी, मौलाना अलाउद्दीन और मौलाना शहाबुद्दीन बड़े नामी गिरामी मशाइख़ गुज़रे हैं। आप का विसाल ७२५ हिजरी में हुआ। मज़ारे पाक दिल्ली में है। वह पूरा इलाक़ा बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन कहलाता है। आप की दरगाह से मुल्हिक़ मस्जिद में तब्लीग़ी जमाअत (अहले हदीस) मलाइना ने अपना मरकज़ बना रखा है और अल्लाह के घर में गुमराही की फ़ैक्ट्री खोल रखी है। (सैरुल औलिया)

२८३) हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि के चहीते ख़लीफ़ा और ख़्वाजा मुन्तजिबुद्दीन ज़रज़री बख़्श के बड़े भाई ख़्वाजा बुरहानुद्दीन ग़रीब का नाम मुहम्मद था। हज़रत निज़ामुद्दीन मेहबूबे इलाही रहमतुल्लाहि अलैहि ने आप को शैख़ बुरहानुद्दीन नाम अता फ़रमाया। आप का लक़ब ग़रीब और ख़िताब असदुल औलिया था। आप सन ६५४ हिज्री में शहर हांसी (हरियाना) में पैदा हुए। आप का नसब ग्यारह वास्तों से इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि से मिलता है। शैख़ बुरहानुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि ने तेरा साल की उम्र में यह अहद किया कि शादी नहीं करूँगा। अगर रात को कभी बदख़्वाबी हो जाती तो उस दिन रोज़े की नियत कर लेते। कुछ दिन बाद इन की वालिदा को इन की शादी की फ़िक्र हुई। इन्हों ने बज़ाहिर इन्कार नहीं किया मगर खाने में इतनी कमी कर दी कि इन की ग़िज़ा सात लुक़्मों तक रह गई और कमज़ोरी इतनी बढ़ गई कि आसमान की तरफ़ देखना चाहते तो बड़ी कोशिश करनी पड़ती। इन की यह हालत देख कर वालिदा ने इन की शादी का ख़्याल दिल से निकाल दिया। आप को कीमिया का बड़ा शौक़ था। मुर्शिद की तलाश में दिल्ली आए और हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन मेहबूबे इलाही रहमतुल्लाहि अलैहि के दामन से जुड़ गए। एक बार हज़रत निज़ामुद्दीन

रहमतुल्लाहि अलैहि के सामने हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अलैहि का ज़िक्र हुआ तो उन्हों ने फ़रमायाः हमारे पास भी एक बायज़ीद है। किसी मुरीद ने पूछाः वह कहाँ है? फ़रमायाः जमाअत ख़ाने में। इक़बाल ख़ादिम दौड़ कर जमाअत ख़ाने में आए तो देखा वहाँ शैख़ बुरहानुद्दीन के सिवा कोई न था। आप सन ७१८ हिजरी में दौलत आबाद तशरीफ़ लाए। फिर ख़ुल्दाबाद आकर मुस्तक़िल क़ियाम फ़रमाया। आप का विसाल बारह सफ़र सन ७३८ हिजरी को हुआ। (सैरुल औलिया)

२८४) हज़रत ख़्वाजा मुन्तजिबुद्दीन ज़रज़री बख़्श रहमतुल्लाहि अलैहि दक्कन के बहुत मशहूर बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। आप शैख़ बुरहानुद्दीन ग़रीब के छोटे भाई थे। कहते हैं कि आप के पास हर सुब्ह व शाम ग़ैब से सोने की एक थैली आती थी जिसे आप सदक़ा व ख़ैरात में ख़र्च कर देते थे इस लिये आप का लक़ब ज़रज़री बख़्श पड़ गया। आप हज़रत मेहबूबे इलाही रहमतुल्लाहि अलैहि के हुक्म से सन ६९२ हिजरी में सतरह साल की उम्र में दिल्ली से दक्कन आए। आप के साथ सात सौ औलियाए किराम थे। ख़ुल्दाबाद में आप का क़ियाम सतरह साल रहा। सन ७०९ हिजरी में चौंतीस साल की उम्र में विसाल हुआ। (सैरुल औलिया)

२८५) ख़्वाजगाने चिश्त के आख़िरी बुज़ुर्ग हज़रत ख़्वाजा सय्यिद ज़ैनुद्दीन मौलाना दाऊद शीराज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि को बाईसवाँ ख़्वाजा कहा जाता है। आप का नाम सय्यिद दाऊद और लक़ब ज़ैनुद्दीन है। आप ख़्वाजा हुसैन बिन महमूद शीराज़ी के फ़रज़न्द हैं। आप सन ७०१ हिजरी में शहर शीराज़ में पैदा हुए। आप ने पच्चीस रबीउल अव्वल ७७१ हिजरी को अस्र की नमाज़ पढ़ने की हालत में विसाल फ़रमाया। (सैरुल औलिया)

२८६) मशहूरे ज़माना किताब सब्ए सनाबिल शरीफ़ के मुसन्निफ़ हज़रत मीर अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाहि अलैहि के बड़े शहज़ादे हज़रत मीर अब्दुल जलील बिलग्रामी रहमतुल्लाहि अलैहि बारह साल हालते जज़्ब में जंगलों में घूमते रहे। इस अर्से में ख़्वाजा ख़िज़्र ने आप की रूहानी तरबियत फ़रमाई फिर आप आलमे होश में आकर उत्तर प्रदेश के एक तारीख़ी मक़ाम अतरंजी खेड़ा में आकर ठहरे। १०१७ हिजरी में आप मारेहरा तशरीफ़ लाए। मारेहरा के रईस चौधरी वज़ीर मुहम्मद ख़ाँ कंबोह ने आप की ख़ानक़ाह और मस्जिद बनवा दी। आप ने अपनी हयाते मुबारका में अपनी मिस्वाक ख़ानक़ाह के आंगन में गाड़ कर यह हिदायत दी थी कि मेरी क़ब्र इस के पास बनवाना और उस पर छत न बनाना। मिस्वाक ने एक पेड़ की शक्ल इख़्तियार कर

ली। इस की ख़ासियत यह थी कि जिस औरत के कच्चे हमल गिर जाते हों उसे इस पीलू के दरख़्त की ढाई पत्ती खिला दी जाए तो अल्लाह के हुक्म से उसे सही सलमात बच्चा मिल जाता। मुजाविरों ने पैसे के लालच में इन पत्तियों को बेचना शुरू कर दिया जिस की नहूसत यह हुई कि पीलू का यह दरख़्त सूख गया। हज़रत मीर रहमतुल्लाहि अलैहि के नाम से असर, आसेब, सेहर और जिन्नात की शोरिश का इलाज किया जाता है। जिन्नों के बादशाह सिकन्दर शाह ने हज़रत मीर अब्दुल जलील बिलग्रामी रहमतुल्लाहि अलैहि के हाथ पर यह मुआहिदा किया है कि जिस जगह आप की औलाद या ख़ुलफ़ा पहुंच जाएंगे हम वहाँ से अपना असर उठा लेंगे। आप के मज़ार शरीफ़ पर जला हुआ चराग़ भी सेहर व आसेब से हिफ़ाज़त के काम आता है। लोग नया चराग़ ले जाकर मज़ार शरीफ़ के पास रख देते हैं और वहाँ जला हुआ चराग़ लाकर घर में जलाते हैं। सुना है मौजूदा मुजाविर इन चराग़ों की भी तिजारत करने लगे हैं। (नज़्मी)

२८७) सिलसिलए बरकातिया मारहरा शरीफ़ के इमाम हुज़ूर साहिबुल बरकात सय्यिद शाह बरकतुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि दौरे आलमगीरी के बहुत बड़े सूफ़ी बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। हिन्दुस्तान में तसव्वुफ़ के सिलसिले की आप एक अहम कड़ी हैं। रात दिन में सिर्फ़ दो सांसें लेते थे। आप की विलादत छब्बीस जमादिउल आख़िर सन १०७० हिजरी में हुई। आप छब्बीस साल तक मुसलसल रोज़े से रहे। अरबी, फ़ारसी, हिन्दुस्तानी और संस्कृत ज़बानों के जय्यद आलिम थे। वैद पुरानों पर भी काफ़ी गहरी नज़र थी। फ़ने मौसीकी में भी दस्तरिस थी। फ़ारसी और अरबी में इश्क़ी तख़ल्लुस करते थे। ब्रज भाषा के भी साहबे दीवान शायर थे पैमी तख़ल्लुस करते थे। आप के हिन्दी दीवान पैम प्रकास पर कई लोगों ने डाकट्रेट हासिल की है। आप की और भी कई किताबें तसव्वुफ में मशहूर हैं। हज़रत का विसाल शबे आशूरा सन ११४२ हिजरी में हुआ। आप का आसताना दरगाह शाह बरकतुल्लाह के नाम से दुनिया भर में मशहूर है। (तारीख़ ख़ानदाने बरकात अज़ हज़रत औलादे रसूल मुहम्मद मियाँ रहमतुल्लाहि अलैहि)

२८८) मख़दूम शाह बरकतुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि के बड़े फ़र्ज़न्द हज़रत शाह आले मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि बड़े मुस्तजाबुद्दावत बुज़ुर्ग थे। आप को बड़ी सरकार या सरकारे कलाँ कहा जाता है। आप की विलादत अट्ठारा रमज़ान ११११ हिजरी में अवध के क़स्बा बिलग्राम में हुई। अबुल बरकात लक़बे मुबारक है। अपने वालिदे गिरामी हुज़ूर शाह बरकतुल्लाह

रहमतुल्लाहि अलैहि के बड़े चहीते फ़र्ज़न्द थे। मुकम्मल अट्ठारा बरस तक आप रियाज़त और मुजाहिदे में मशगूल रहे। तीन साल कामिल एतिकाफ़ में गुज़ारे। जौ की रोटी से इफ़्तार फ़रमाते थे। बयान किया गया है कि शदीद रियाज़त के सबब आप के तालू में गढ़ा पड़ गया था। (तज़्किरा मशाइख़े क़ादिरया रिज़विया मुसन्निफ़ा मौलाना अब्दुल मुज्तबा रिज़वी)

२८६) हुज़ूर ताजदारे बग़दाद सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाहि अलैहि के हाथों शाह बरकतुल्लाह मारहरवी रहमतुल्लाहि अलैहि को सात मन्के भिजवाए थे और कहलवाया था: यही प्याम यही रिसाला, कहियो बरकात मारेहरा वाला। दरअस्ल यह इस ख़ानदान में सात क़ुतुबों के पैदा होने की बशारत थी। इन में से तीसरे क़ुतुब हुज़ूर असदुल आरिफ़ीन सय्यिदुना शाह हमज़ा रहमतुल्लाहि अलैहि हैं। पहले दो क़ुतुब ख़ुद शाह बरकतुल्ला रहमतुल्लाहि अलैहि और आप के फ़रज़न्दे अकबर शाह आले मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि हैं। शाह हमज़ा की विलादत चौदह रबीउल आख़िर सन ११३१ हिजरी की है। ग्यारह साल की उम्र तक अपने जद्दे करीम हज़रत शाह बरकतुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि की ख़िदमत में ज़ेरे तरबियत रहे। आप के कुतुब ख़ाने में मुख़्तलिफ़ उलूम व फ़ुनून की सोलह हज़ार किताबें थीं जो आप के मुतालए से गुज़र चुकी थीं। तसव्वुफ़ से आप को ख़ास लगाव था। अपने दादा हुज़ूर साहबुल बरकात रहमतुल्लाहि अलैहि का उर्स बड़ी शान से करते थे। सौ से ज़्यादा अक़साम के खाने पकवाते। फ़ारसी में आप का तख़ल्लुस ऐनी था। आप का मन्ज़ूम करदा क़सीदा ग़ौसिया दुनिया भर में पढ़ा जाता है जिस का मतलअ यह है:

ग़ौसे आज़म बमन बे सरो सामाँ मददे
क़िब्लए दीं मददे कअबए ईमाँ मददे

शाह हमज़ा का विसाल चौदा मुहर्रम ११६८ हिजरी को हुआ। (तारीख़े ख़ानदाने बरकात)

२६०) हज़रत शम्सुद्दीन अबुल फ़ज़्ल सय्यिद आले अहमद अच्छे मियाँ मारहरवी रहमतुल्लाहि अलैहि की विलादत अट्ठाईस रमज़ान ११६० हिजरी को मारेहरा में हुई। तारीख़ी नाम सुल्तान मशाइख़े जहाँ है। अपने वालिद माजिद शाह हमज़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के विसाल के बाद सज्जादए बरकातिया पर मस्नद नशीन हुए। सन बारा सौ पैंतीस हिजरी में अपने विसाल तक पूरे सैंतीस बरस इस नूरानी मस्नद को ज़ीनत बख़्शी। आप सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ात में फ़ना थे। दिन भर मख़लूक़े ख़ुदा की ख़िदमत में

मसरूफ़ रहते और रात भर ख़ालिके कायनात की ख़िदमत में सज्दए बन्दगी गुज़ारते। अपने छोटे भाई शाह आले बरकात सुथरे मियाँ साहब रहमतुल्लाहि अलैहि के सब से छोटे बेटे शाह ग़ुलाम मुहियुद्दीन अमीर आलम रहमतुल्लाहि अलैहि से सरकारे बग़दाद रज़ियल्लाहु अन्हु के नामे नामी की निस्बत से इतनी मुहब्बत फ़रमाते थे कि जब तक उन्हें दस्तरख़्वान पर न बिठा लेते खाना शुरू न करते। आप ने अलग अलग उलूम व फ़ुनून का ख़ुलासा एक किताबी सूरत में तय्यार कराया जिसे आईने अहम्मदी का नाम दिया गया। यह मजमूआ तीस या साठ जिल्दों में था। (मदाइहे हुज़ूर नूर मुसन्निफ़ा मरहूम ग़ुलाम शब्बर बदायूनी)

२६१). आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि के पीर व मुर्शिद ख़ातिमुल अकाबिरे हिन्द हुज़ूर सय्यिद शाह आले रसूल अहमदी रहमतुल्लाहि अलैहि अपने जद्दे बुज़ुर्गवार शम्से मारहरा हुज़ूर अच्छे मियाँ रहमतुल्लाहि अलैहि की करामतें बयान करते हुए कहते हैं: हम उन्हें आपा जान कहते थे। उन दिनों हमारा बचपन था। हम उन की ख़िदमत में जाते और अर्ज़ करते: हम नहाना चाहते हैं आप पानी बरसा दीजिये। सरकार अच्छे मियाँ रहमतुलाहि तआला अलैहि मुस्कुरा कर फ़रमाते: जाओ परनालों से कहो कि आपा जान कहती हैं बरस पड़ो बच्चे नहायेंगे। हम परनालों के नीचे जाते और कहते: एक परनालो! आपा जान ने कहलाया है बरसने लगो हम नहाएंगे। हमारी बात ख़त्म होते ही परनालों से पानी गिरना शुरू हो जाता और हम जी भर के नहाते। फिर हम दादा हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होते और कहते: आप ने ज़रूर ऊपर अपने आदमी बिठा रखे हैं। दादा हज़रत फ़रमाते: जाकर देख क्यों नहीं आते। हम जब छत पर जाते तो कोई नज़र न आता छत और परनाले बदस्तूर सूखे मिलते। (मदाइहे हुज़ूर नूर, ग़ुलाम शब्बर बदायूनी)

२६२) हज़रत शाह ग़ुलाम मुहियुद्दीन अमीर आलम रहमतुल्लाहि अलैहि सरकार आले अहमद अच्छे मियाँ रहमतुल्लाहि अलैहि के बड़े चहीते भतीजे थे। आप की विलादत १२२३ हिजरी की है। अवध के नवाब वाजिद अली शाह के वालिद नवाब अमजद अली शाह की सरकार में नायब वज़ीर रहे। एक बार नवाब अमजद अली शाह ने शाहे ईरान को किसी ख़त में पीर व मुर्शिद के लक़ब से मुख़ातिब किया। वहाँ से इताब नामा आया कि तुम ने हमें ऐसे अलक़ाब से कैसे मुख़ातिब किया जो सिर्फ़ मौला अली के लिये लिखा और बोला जाता है। नवाब साहब काफ़ी परेशान हो गए। तभी हज़रत अमीर आलम ने उन से फ़रमाया: लाइये इस इताब नामा का जवाब हम लिखे देते हैं। आप

ने शाहे ईरान को लिखाः हम ने तो सही लिखा था मगर आप के पढ़ने वाले ने ग़लती से पैरवे मुर्शिद की जगह पीर व मुर्शिद पढ़ लिया। नवाब अमजद अली शाह इस बात पर बेहद खुश हुए और उसी वक़्त अपने दोनों बाज़ू बन्द खोल कर हज़रत अमीर आलम की नज़्र कर दिये। (नज़्मी)

२६३) ख़ानदाने बरकात, मारेहरा शरीफ़ के आख़िरी क़ुतुब हज़रत सय्यिद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी मियाँ रहमतुल्लाहि अलैहि अपने दादा और मुर्शिद हुज़ूर सय्यिदुना शाह आले रसूल अहमदी रहमतुल्लाहि अलैहि की एक करामत नक़्ल करते हैं कि आप की रूहे मुबारक के परवाज़ करने के बाद भी आप के मुबारक होंटों की हरकत बन्द न हुई और यह आप की वही हालत थी जो हयाते मुबारका में इस्मे ज़ात पढ़ने की वजह से आप का मअमूल और आदत बन गई थी। नूरी मियाँ साहब फ़रमाते हैं: मैं ने सर और ठोड़ी को रुमाल से बांध दिया था मगर इस से कुछ हासिल न हुआ। आख़िरकार मैं ने दिल से अर्ज़ की तो हरकत बन्द हो गई। ग़ुस्ल के बाद फिर होंटों की हरकत शुरू हो गई। मैं ने फिर अर्ज़ की तो फिर हरकत बन्द हो गई। दफ़्न से पहले जब चेहरा मुबारका खोला तो फिर होंटों को हरकत में देखा फिर अर्ज़ किया तो हरकत बन्द हो गई। (सिराजुल अवारिफ़)

२६४) हज़रत सय्यिद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी रहमतुल्लाहि अलैहि की विलादत १६ शव्वाल १२५५ हिजरी की है। हज़रत का लक़ब मियाँ साहब आप के दादा जान और मुर्शिद ख़ातिमुल अकाबिर शाह आले रसूल अहमदी रहमतुल्लाहि अलैहि का मर्हमत फ़रमाया हुआ था। आप का तारीख़ी नाम मज़हर अली था। सरकार नूर के वालिदे माजिद सय्यिद शाह ज़हूर हसन रहमतुल्लाहि अलैहि हुज़ूर शाह आले रसूल अहमदी के बड़े शहज़ादे थे। आप की रूहानी तरबियत जद्दे करीम शाह आले बरकात सुथरे मियाँ और वालिदे माजिद हुज़ूर ख़ातिमुल अकाबिर के साए में हुई। बारह बरस की उम्र में वालिदे माजिद से ही बैअत और ख़िलाफ़त हासिल हुई। सरकार, नूर का विसाल ग्यारह रजब सन तेरा सौ चौबीस हिजरी को मारेहरा शरीफ़ में हुआ। (अहले सुन्नत की आवाज़, खुसूसी शुमारा अकाबिर मारहरा हिस्सा २)

बरहवाँ अध्याय

नमाज़, अज़ान और वुज़ू

१) शबे मेअराज से पहले दो नमाज़ें फ़र्ज़ थीं: एक गुरूबे आफ़ताब से पहले और एक तुलूए आफ़ताब से पहले। इब्ने जौज़ी ने मक़ातिल बिन सुलैमान से नक़्ल किया है कि इस्लाम के शुरू में अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर दो रकअतें सुब्ह को और दो रकअतें शाम को फ़र्ज़ की थीं। (सुबुलल हुदा वर्रशाद, अल्लामा मुहम्मद बिन यूसुफ़ सालिही अश्शामी, जि: २)

२) नमाज़ के औक़ात सब से पहले हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने मुक़र्रर फ़रमाए। (तफ़सीरे नईमी)

३) वुज़ू की आयत मदीनए तय्यिबा में नाज़िल हुई लेकिन वुज़ू के फ़र्ज़ होने का हुक्म पहली नमाज़ की फ़र्ज़ियत के साथ दिया गया। हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बग़ैर वुज़ू के कोई नमाज़ अदा नहीं की। (ज़ियाउन्नबी, जि: २)

४) हज़रत अब्दुल्लाहि इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: एक फ़रिश्ता उस मर्द या औरत के साथ रहता है जो बावुज़ू बिस्तर पर जाए। यह फ़रिश्ता उस के जागने तक उस की मग़फ़िरत के लिये अल्लाह तआला से दुआ करता रहता है। (इब्ने हबान)

५) हज़रत मआज़ इब्ने जबल रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स वुज़ू करके बिस्तर पर जाए और रात को उठ कर अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ करे तो वह दुआ ज़रूर क़ुबूल की जाती है। (अबू दाऊद)

६) मेअराज की शब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नमाज़ें फ़र्ज़ की गईं। उस के दूसरे दिन ज़वाल के वक़्त अल्लाह तआला ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भेजा ताकि वह नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नमाज़ के औक़ात और नमाज़ की कैफ़ियत के बारे में अल्लाह के फ़रमान से आगाह करें। चुनान्चे दो रोज़ जिब्राईले अमीन अलैहिस्सलाम हर नमाज़ के वक़्त तशरीफ लाते रहे। वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इमामत कराते और सहाबए किराम की नूरानी जमाअत उन औक़ात में अपने हादी व मुर्शिद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इक्तिदा में नमाज़ अदा करती। (ज़ियाउन्नबी, जि: २)

७) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जिब्राईल ने मेरी

इमामत कराई बैतुल्लाह शरीफ़ के पास। इमाम शाफ़ई, तहावी और बेहक़ी रहमतुल्लाहि अलैहिम के अल्फ़ाज़ में बैतुल्लाह शरीफ़ के दरवाज़े के पास दो मर्तबा। पहले दिन जिब्रईल ने मुझे ज़ुहर की नमाज़ उस वक़्त पढ़ाई जब सूरज ढला और साया सिर्फ़ एक तस्मे के बराबर था। और मुझे अस्र की नमाज़ पढ़ाई जब हर चीज़ का साया उस की मिस्ल हो चुका था और मुझे मग़रिब की नमाज़ पढ़ाई जिस वक़्त रोज़ादार रोज़ा इफ़्तार करता है। मुझे इशा की नमाज़ पढ़ाई जब शफ़क़ ग़ायब हो जाती है और मुझे सुब्ह की नमाज़ पढ़ाई जब रोज़ेदार पर खाना पीना हराम हो जाता है यानी सुब्ह सादिक़ के तुलूअ के फ़ौरन बाद। दूसरे दिन फिर जिब्रईल आए और उन्हों ने मुझे उस वक़्त ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई जब हर चीज़ का साया उस की एक मिस्ल के बराबर हो चुका था। और अस्र की नमाज़ पढ़ाई जब कि हर चीज़ का साया उस की दो मिस्ल हो चुका था। मग़रिब की नमाज़ पढ़ाई जिस वक़्त रोज़ेदार इफ़्तार करता है और इशा की नमाज़ पढ़ाई जब रात का पहला, तीसरा हिस्सा गुज़र चुका था और मुझे सुब्ह की नमाज़ पढ़ाई जब सुब्ह की रौशनी फैल चुकी थी। फिर जिब्रईल मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुए और कहा: या रसूलल्लाह! आप से पहले गुज़रे हुए नबियों की नमाज़ों का यही वक़्त था और हर नमाज़ का वक़्त इन वक़्तों के बीच है जिन में दो रोज़ मैं ने आप की जमाअत कराई है। (सुबुलल हुदा वर्रशाद मुसन्निफ़ा इमाम यूसुफ़ अस्सालिही अश्शामी, जि: ३)

८) चाँद ग्रहण की नमाज़ सलातुल ख़ुसूफ़ की शुरूआत माहे जमादिउल आख़िर सन ५ हिजरी से हुई। (ज़ियाउन्नबी, जि: ४)

९) एक रोज़ हादिये बरहक़ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में तन्हा तशरीफ़ फ़रमा थे तभी हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु हाज़िर हुए और पास आ बैठे। रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: ऐ अबू ज़र मस्जिद में हाज़िरी के कुछ आदाब हैं। उन्हों ने अर्ज़ किया: वह क्या हैं? फ़रमाया: जब मस्जिद में दाख़िल हो तो दो रकअत नमाज़ अदा करो। चुनान्चे हज़रत अबू ज़र उठे और दो रकअत तहिय्यतुल मस्जिद अदा की। (ज़ियाउन्नबी, जि: ४)

१०) क़िब्ले की तब्दीली का हुक्म रजब या शअबान सन दो हिजरी में नाज़िल हुआ। नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बिशर बिन बरा बिन मअरूर रज़ियल्लाहु अन्हु के घर दावत में गए हुए थे। वहाँ ज़ुहर का वक़्त हो गया और लोगों को नमाज़ पढ़ाने खड़े हुए। दो रकअतें पढ़ा चुके थे कि तीसरी रकअत में यकायक वही के ज़रिये क़िब्ला बदलने का हुक्म नाज़िल

हुआ और उसी वक़्त आप और आप की इक़्तिदा में तमाम लोग बैतुल मक़दिस से कअबे की तरफ़ फिर गए। इस के बाद मदीना और अतराफ़ में आम मनादी करा दी गई। बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक जगह मनादी की आवाज़ इस हालत में पहुंची कि लोग रुकू में थे हुक्म सुनते ही सब के सब उसी हालत में कअबे की तरफ़ मुड़ गए। ख़्याल रहे कि बैतुल मक़दिस मदीना के उत्तर में है जब कि कअबा दक्षिण में है। लिहाज़ा क़िब्ला तब्दील करने में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चल कर मुक़्तदियों के आगे आना पड़ा होगा और मुक़्तदियों को सिर्फ़ रुख़ ही न बदलना पड़ा होगा बल्कि कुछ न कुछ उन्हें भी चल कर अपनी सफ़ें दुरुस्त करनी पड़ी होंगी। (अतलसे सीरते नबवी)

११) मस्जिद क़िब्लतैन को मस्जिद बनी सलमा भी कहा जाता है क्योंकि यह बनू सलमा के मुहल्ला में वाक़े है। यह मस्जिद बीरे रोमा के क़रीब है। इसे मस्जिदे क़िब्लतैन इस लिये कहा जाता है कि इस में एक नमाज़ दो क़िब्लों की तरफ़ मुंह करके पढ़ी गई थी। कुछ नमाज़ बैतुल मक़दिस की तरफ़ और कुछ बैतुल्लाह की तरफ़। (अतलसे सीरते नबवी)

१२) फ़ज्र की नमाज़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने पढ़ी जब आप की तौबा क़ुबूल हुई। ज़ुहर की नमाज़ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पढ़ी हज़रत इस्माईल का फ़िदिया दुम्बे की सूरत में आने पर। अस्र की नमाज़ हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम ने पढ़ी जब सौ बरस के बाद आप ज़िन्दा हुए। मग़रिब की नमाज़ हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने पढ़ी अपनी तौबा क़ुबूल होने पर मगर चार रकअत की नियत बांधी थी, तीन रकअत पर सलाम फेर दिया क्योंकि थक गए थे। लिहाज़ा मग़रिब में तीन रकअतें ही रह गईं। इशा की नमाज़ हमारे आक़ा व मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ी। कुछ उलमा ने फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने पढ़ी जब आग लेने तूर पर गए वहाँ नबुव्वत मिल गई। वापसी में अपनी बीवी को ख़ैरियत से पाया कि बच्चा पैदा हो चुका था। (तफ़सीरे नईमी)

१३) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मर्द की नमाज़ मस्जिद में बाजमाअत, घर में और बाज़ार में पढ़ने से पच्चीस दर्जा बढ़ कर है और यह यूँ है कि जब अच्छी तरह वुज़ू करके मस्जिद के लिये निकला तो जो क़दम चलता है उस का दर्जा बलन्द होता है और गुनाह मिटता है और जब वह नमाज़ पढ़ता है तो मलाइका उस पर बराबर दुरूद भेजते रहते हैं जब तक कि वह अपने

मुसल्ले पर है और वह हमेशा नमाज़ में है जब तक नमाज़ का इन्तिज़ार कर रहा है। (मुस्लिम, अबू दाऊद, इब्ने माजा, तिर्मिज़ी)

१४) निसाई में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करके फ़र्ज़ नमाज़ को गया और मस्जिद में नमाज़ पढ़ी उस की मग़फ़िरत हो जाएगी।

१५) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस ने नमाज़ छोड़ दी गोया उस का माल और अहल व अयाल सब कुछ ख़त्म हो गया। (तबरानी)

१६) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स सच्चे दिल और सही अक़ीदे के साथ रमज़ान में क़ियाम करले यानी तरावीह पढ़े तो उस के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। (मुस्लिम शरीफ़)

१७) हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हम सहाबए किराम हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में बीस रकअत तरावीह और वित्र पढ़ते थे। (बेहक़ी)

१८) हदीस शरीफ़ में है कि शरई सबब से अगर मुसल्ली इमाम से नाराज़ हों तो ऐसे इमाम के पीछे नमाज़ मकबूल नहीं होती। (बहवालए दुर्रे मुख़्तार मअ शामी, जि: १)

१९) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिवायत किया कि हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि औरत की नमाज़ घर के अन्दर (दालान) में अफ़ज़ल है उस नमाज़ से जो सहन में हो और उस की नमाज़ अन्दर की कोठरी में बेहतर है उस नमाज़ से जो दालान में हो। (अबू दाऊ, मिश्कात शरीफ़)

२०) दुर्रे मुख़्तार में है कि कुरआने शरीफ़ में देख कर नमाज़ पढ़ाना या देख कर सुनना दोनों सूरतों में नमाज़ फ़ासिद हो जाती है। (रद्दुल मोहतार, जि: १)

२१) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला जन्नत में उस मर्द या औरत के लिये एक घर तअमीर करता है जो मग़रिब की नमाज़ के बाद बीस रकअत नफ़्ल अदा करता है। (तिर्मिज़ी)

२२) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब इमाम रुकू करने के बाद समिअल्लाहु लिमन हमिदह कह कर सर उठाए तो तुम कहो रब्बना लकल हम्द। जो शख़्स इस

तरह करेगा अल्लाह तआला उस के सारे पिछले गुनाह माफ़ फ़रमा देगा। (बुख़ारी शरीफ़, मालिक)

२३) हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बेशक अल्लाह और उस के फ़रिश्ते रहमत भेजते हैं उन लोगों पर जो सफ़ की ख़ाली जगहों को पुर कर देते हैं। (अहमद, इब्ने माजा)

२४) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो आदमी सफ़ की ख़ाली जगह को पुर करदे अल्लाह तआला उस के दर्जे को बलन्द फ़रमाएगा और जन्नत में उस के लिये घर तअमीर फ़रमाएगा। (तबरानी)

२५) हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह की बारगाह में सब से पसन्दीदा क़दम उस आदमी का है जो चल कर सफ़ की ख़ाली जगह को पुर करदे। (अबू दाऊद)

२६) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जिस ने किसी सफ़ को पुर कर दिया तो अल्लाह तआला उसे अपनी रहमत से जोड़ देगा और जिस ने सफ़ को काट दिया तो अल्लाह तआला उसे अपनी रहमत से काट देगा। (निसाई)

२७) हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो नमाज़ी फ़ज्र की नमाज़ के बाद अपनी जगह बैठा रहे और दस मर्तबा यह पढ़ेः لا الٰه الا اللّٰه وحدہٗ لا شریک له له الملک وله الحمد یحیٖ ویمیت بیده الخیر وهو علیٰ کلّ شیئ قدیر۔ तो वह शैतान की शरारत से मेहफ़ूज़ रहता है। उस के दस दर्जे बढ़ाए जाते हैं और उस के नामए आमाल में दस नेकियाँ लिखी जाती हैं और दस गुनाह मिटा दिये जाते हैं। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

२८) हज़रत अबुद्दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स चाश्त की दो रकअत पढ़ता है उस का नाम ग़ाफ़िलों में नहीं लिखा जाता और जो शख़्स चार रकअत चाश्त पढ़े उस का नाम पाकबाज़ और मुसल्लीन में लिखा जाता है और छः रकअत चाश्त पढ़ने वाला दिन भर हर तरह के रंज व ग़म से मेहफ़ूज़ रहता है, उस का नाम परहेज़गारों में दर्ज किया जाता है। और जो शख़्स चाश्त की बारह रकअतें पढ़े उस के लिये (जन्नज में) एक महल तअमीर किया जाता है। (तबरानी)

२९) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तीन आदमी ऐसे हैं जिन की नमाज़ कुबूल नहीं होती। पहला जो किसी क़ौम की इमामत के लिये आगे बढ़े इस हाल में कि लोग उसे नापसन्द करते हों। दूसरा जो आदमी नमाज़ को बिला उज़्र क़ज़ा करने के बाद पढ़े और तीसरा वह शख़्स जो आज़ाद आदमी को अपना गुलाम बना ले। (अबू दाऊद)

३०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस की नमाज़ उसे बेहयाई और बुराई से न रोके उस की नमाज़ कोई नमाज़ नहीं है। (अलहदीस)

३१) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब बन्दा खुले तौर पर नमाज़ पढ़ता है तो ख़ूब अच्छी तरह पढ़ता है और जब पोशीदा तौर पर पढ़ता है तब भी अच्छी तरह पढ़ता है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरा यह बन्दा सच्चा है। (इब्ने माजा, मिश्कात)

३२) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद नक़्ल करते हैं: जिस शख़्स ने कोई कपड़ा दस दिरहम में ख़रीदा और उस में एक दिरहम हराम का है तो जब तक उस के जिस्म पर वह कपड़ा रहेगा अल्लाह तआला उस की नमाज़ कुबूल नहीं करेगा। (अहमद, मिश्कात)

३३) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला उस शख़्स की नमाज़ कुबूल नहीं करता जिस के पेट में हराम हो। (इहयाउल उलूम)

३४) हज़रत रवाबिसता रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सफ़ाई व पाकीज़गी के तमाम मसाइल दरियाफ़्त किये हैं यहाँ तक कि उस मैल के बारे में पूछा है जो नाखुनों के अन्दर हुआ करता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब में फ़रमाया: जिस काम में शक और शुबह हो उसे उस काम के मुक़ाबले में तर्क कर दो जिस में शक या शुबह न हो। (तिर्मिज़ी)

३५) हज़रत मुआविया बिन अलहिकम रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ अदा कर रहा था कि किसी को छींक आ गई। मैं ने यरहमुकल्लाह कह दिया। लोग मुझे घूर घूर कर देखने लगे। मैं ने कहा: मेरी क्या शामत आ गई? मुझे तुम लोग इस तरह क्यों घूर घूर कर देख रहे हो? बस लोगों ने अपनी रानों पर हाथ मारना शुरू कर दिया। फिर जब मैं ने मेहसूस किया कि लोग मुझे ख़ामोश करना चाहते हैं

तो मैं ख़ामोश हो गया। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ चुके तो मेरे माँ बाप उन पर कुरबान हों, मैं ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बेहतर तालीम देने वाला मुअल्लिम न पहले देखा न बाद में। बख़ुदा मुझे झिड़का न मारा और न गाली दी बल्कि फ़रमायाः देखो नमाज़ नाम है तस्बीह व तकबीर और तिलावते कुरआन का, इस लिये इस में आम इन्सानी गुफ़्तगू ज़ेब नहीं देती। बस इसी किस्म की बातें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई। (मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

३६) हज़रत हिकम बिन हज़्न रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: मैं ने जुम्आ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वअज़ सुना। उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम असा या कमान पर टेक लगाए हुए खड़े थे। पहले आप ने अल्लाह तआला की हम्द बयान की और उस की तारीफ़ की, चन्द हल्के फुल्के और पाकीज़ा कलिमात इरशाद फ़रमाए फिर फ़रमायाः लोगो तुम्हें जो अहकाम दिये जाते हैं उन की पूरी तामील तुम्हारी कुदरत से बाहर है अल्बत्ता अमल में मियाना रवी क़ायम रखो और खुश रहो। (अबू दाऊद)

३७) हज़रत अबू रिफ़ाअह अलअदवी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुत्बए जुम्आ फ़रमा रहे थे। मैं उसी मौक़े पर हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुआः या रसूलल्लाह! यह ग़रीबुद दयार दीन के बारे में कुछ पूछना चाहता है। उसे मालूम नहीं दीन क्या है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुत्बा छोड़ कर मेरे पास ही तशरीफ़ ले आए। एक आहनी पायों की कुर्सी पर बैठ कर मुझे समझाते रहे और फिर खुत्बे के लिये वापस तशरीफ़ ले गए। (मुस्लिम, निसाई)

३८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (कभी कभी) इतना लम्बा कियाम फ़रमाते कि आप के पाए मुबारक सूज जाते थे। आप से अर्ज़ किया गया कि हुज़ूर आप के रब ने आप को तमाम गुनाहों से मामून कर रखा है फिर कियाम में इतना इन्हिमाक क्यों है? फ़रमायाः क्यों मैं शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूँ? (तिर्मिज़ी, नसाई, शैख़ैन)

३९) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: रसूलुल्लाह जब कोई नफ़्ल नमाज़ पढ़ते तो उस की मुदाविमत (हमेशगी) को पसन्द फ़रमाते थे और जब नींद या किसी तकलीफ़ की वजह से रात का कियाम न हो सकता तो दिन के वक़्त बारह रकअतें अदा फ़रमा लेते। जहाँ तक मुझे इल्म है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक रात में पूरा कुरआन कभी नहीं पढ़ा और किसी रात में सुब्ह तक कियाम नहीं फ़रमाया और

रमज़ान के सिवा किसी पूरे माह के रोज़े नहीं रखे। (मुस्लिम, अबू दाऊद, निसाई)

४०) कअबा को मुंह करने के यह मानी नहीं कि कअबा नाक की सीध में रहे बल्कि पेशानी का कोई हिस्सा उस तरफ़ होना काफी है। लिहाज़ा कोई शख़्स अगर निस्फ़ ज़ाविया क़ायमा यानी पैंतालीस डिगरी से कम कअबा से हट कर नमाज़ पढ़ ले तो नमाज़ हो जाएगी। (तफ़सीरे नईमी)

४१) चार सूरतों में ग़ैर क़िब्ला की तरफ़ नमाज़ हो जाती है: (१) नमाज़ी जंगल या अन्धेरे में हो और क़िब्ले की सिम्त का पता न चले इस सूरत में जिधर दिल गवाही दे उधर मुंह करके नमाज़ पढ़ ले। (२) मुसाफ़िर सवारी पर नफ़्ल पढ़े तो नियत के वक़्त कअबे को रुख़ करे फिर जिधर भी रुख़ हो जाए नमाज़ पढ़ता रहे। (३) सख़्त जंग की हालत में जब कअबे की तरफ़ नमाज़ पढ़ने का मौक़ा न मिले। (४) लशकर के भागते वक़्त कि जब ख़ुदा नख़्वास्ता इस्लामी लश्कर शिकस्त खाकर भागे और नमाज़ का वक़्त आ जाए। (तफ़सीरे नईमी)

४२) यहूदियों की नमाज़ में रुकूअ नहीं होता। (तफ़सीरे नईमी)

४३) सारी इबादतों में नमाज़ का दर्जा सब से अफ़ज़ल है। (तफ़सीरे नईमी)

४४) कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि इस्लाम के शुरू में हर नमाज़ के लिये अलग वुज़ू फ़र्ज़ था, बाद में मन्सूख़ हो गया। और जब तक हदस यानी पेशाब या पाख़ाना वाक़े न हो एक ही वुज़ू से फ़रायज़ और नवाफ़िल पढ़े जा सकते हैं। (नुज़्हतुल क़ारी)

४५) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तमाम साल में पांच चिल्ले मरवी हैं: (१) एक चिल्ला हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का जमादिउल आख़िर की बीस तारीख़ से माहे रजब के ख़त्म तक। (२) एक चिल्ला हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का शअबान की बीस तारीख़ से ईदुल फ़ित्र की रात तक। (३) एक चिल्ला हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का ज़िलहज्ज की पन्द्रहवीं से मुहर्रमुल हराम की पच्चीस तक। (४) एक चिल्ला हज़रत सय्यिदुना मूसा अलैहिस्सलाम का यकुम ज़िल क़अदा की रात से ले कर ईदुल अज़्हा की रात तक। (५) एक चिल्ला ख़ुद सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपना रमज़ान की बीस तारीख़ से माहे शव्वाल के आख़िर तक। (सबए सनाबिल शरीफ़)

४६) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: हम हबशा की तरफ़ हिजरत से पहले मक्के में नमाज़ की हालत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम करते थे और आप जवाब देते थे। जब हम हबशा की हिजरत से वापस आए फिर हम ने सलाम किया तो आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब नहीं दिया बल्कि नमाज़ से फ़ारिग़ होकर इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह ने नमाज़ की हालत में सलाम कलाम से मना फ़रमाया है। (तफ़सीरे नईमी)

४७) इस्लाम के शुरू में मेअराज से पहले तेरह बरस तक कोई इबादत न थी सिर्फ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मानना इबादत था। उस वक़्त फ़ौत होने वाले मोमिन सब जन्नती थे। (तफ़सीरे नईमी)

४८) उलमा फ़रमाते हैं कि दूसरी मस्जिदों में पहली सफ़ का दायाँ हिस्सा बाएं से अफ़ज़ल होता है मगर मस्जिदे नबवी में बायाँ हिस्सा दाएं से अफ़ज़ल है क्योंकि वह रौज़ए मुतह्हरा से करीब है। (तफ़सीरे नईमी)

४९) एक आराबी मस्जिद में दाख़िल हुआ और उस ने हल्की नमाज़ पढ़ी। इस पर हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम उस पर कोड़ा लेकर खड़े हो गए और फ़रमायाः नमाज़ दोहरा। उस ने नमाज़ इत्मिनान से दोहराई फिर उन्हों ने उस से पूछा कि यह बेहतर है या पहली नमाज़? उस ने जवाब दियाः पहली नमाज़ क्योंकि वह मैं ने ख़ुदा के लिये पढ़ी थी और यह कोड़े के ख़ौफ़ से पढ़ी है। (तफ़सीरे नईमी)

५०) शरहे मुहज़्ज़ब में है कि जो शख़्स रोज़ा और नमाज़ में से किसी की कसरत करना चाहे तो नमाज़ की कसरत अफ़ज़ल है अल्बत्ता एक दिन का रोज़ा दो रकअत नमाज़ से अफ़ज़ल है। (तफ़सीरे नईमी)

५१) हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिदे नबवी की तामीर के बाद सन एक हिजरी में ख़्वाब में अज़ान देखी। वही अज़ान इस्लाम में राइज हुई। (बुख़ारी)

५२) इस्लाम में पहले सिर्फ़ तौहीद का अक़ीदा फ़र्ज़ हुआ फिर सूरए मुज़्ज़मिल वाली नमाज़ यानी रात की, फिर पंजगाना नमाज़ के फ़र्ज़ होने के बाद रात की नमाज़ की फ़र्ज़ियत मन्सूख़ हो गई। फिर हिजरत के बाद रोज़े और ज़कात वग़ैरा फ़र्ज़ हुए। (तफ़सीरे नईमी)

५३) फ़िक़्ह के माहिरों का क़ौल है कि सूरज चमकने से बीस मिनट तक सज्दा हराम है। (तफ़सीरे नईमी)

५४) कुछ उलमा ने कहा है कि सज्दा एक लाख बीस हज़ार बरस की इबादत के बराबर है और यह इस लिये कि इब्लीस ने, जब कि वह जन्नत का ख़ाज़िन था, अल्लाह तआला की चालीस हज़ार बरस इबादत की थी और चालीस हज़ार बरस फ़रिश्तों का उस्ताद रहा था और चालीस हज़ार बरस ज़मीन में जिहाद करता रहा था। जब उस ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को

एक सज्दा न किया तो अल्लाह तआला ने उस की सारी इबादत उस के मुंह पर मार दी। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५५) सब से पहले अज़ान हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने मेअराज की रात बैतुल मक़दिस में दी जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सारे नबियों को नमाज़ पढ़ाई मगर मुसलमानों में हिजरत के बाद शुरू हुई। सब से पहले फ़ज्र के वक़्त अज़ान दी गई। (तफ़सीरे नईमी)

५६) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चार मुअज़्ज़िन थेः पहले हज़रत बिलाल बिन रुबाह, इन की वालिदा का नाम हमामा था। यह इस्लाम के पहले मुअज़्ज़िन हैं। सन २० हिजरी में दमिश्क़ में विसाल फ़रमाया। दूसरे इब्ने मक्तूम, इन का नाम उमर था और अकसर के नज़्दीक यह मदीनए मुनव्वरा में अज़ान दिया करते थे। तीसरे सअद बिन आइज़, यह अम्मार बिन यासिर के आज़ाद किये हुए गुलाम थे। यह मस्जिदे क़ुबा में अज़ान देते थे। चौथे अबू महज़ूरा, इन का नाम सुलैमान था और कुछ ने जाबिर बताया है और कुछ ने समरह बिन मुऐर कहा है। (तफ़सीरे नईमी)

५७) नमाज़ के अलावा नौ जगह अज़ान कहना मुस्तहब हैः बच्चे के कान में, आग लगते वक़्त, जंग में, जिन्नात के ग़ल्बे के वक़्त, ग़म ज़दा और गुस्से वाले के कान में, मुसाफ़िर जब रास्ता भूल जाए, मिर्गी वाले के पास, मय्यत को दफ़्न करने के बाद क़ब्र पर। (तफ़सीरे नईमी)

५८) अगर पूरी क़ौम की नमाज़ रह जाए तो क़ज़ा बाजमाअत अदा की जाएगी और इसके लिये अज़ान और इक़ामत भी होगी। (तफ़सीरे नईमी)

५९) तहज्जुद कम से कम दो रकअतें या चार रकअतें और ज़्यादा से ज़्यादा आठ रकअतें हैं। सुन्नत यह है कि दो दो रकअत की नियत से पढ़ी जाए। जो शख़्स तहज्जुद की नमाज़ का आदी हो उसके लिये तहज्जुद छोड़ना मकरूह है। (तफ़सीरे नईमी)

६०) हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि जिस की नमाज़ उसे बेहयाई और ममनूआत से न रोके वह नमाज़ ही नहीं है। (तफ़सीरे नईमी)

६१) नमाज़ में सारी मख़लूक़ात की इबादत जमा है। वह इस तरह कि दरख़्त हर वक़्त क़ियाम में हैं, चौपाए रुकूअ में, सांप बिच्छू वग़ैरा हर वक़्त सज्दे में और मेंडक वग़ैरा हर वक़्त क़अदे में। (तफ़सीरे नईमी)

६२) हमेशा वुज़ू से रहने वाला आदमी दिमाग़ी बीमारियों में कम मुब्तिला होता है। और नमाज़ का पाबन्द शख़्स तिल्ली की बीमारियों और जुनून वग़ैरा से मेहफ़ूज़ रहता है। (तफ़सीरे नईमी)

६३) मस्जिद की झाड़ू जन्नत की हूरों का मेहर है। (तफ़सीरे नईमी)

६४) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: जब इन्सान वुज़ू में हाथ धोता है तो उसके हाथों से किये हुए सारे गुनाहे सग़ीरा माफ़ हो जाते हैं। और जब कुल्ली करता है तो मुंह से किये हुए सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं। जब मुंह धोता है तो आँखों से किये हुए सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं। सर का मसह करता है तो सर के गुनाह (बद गुमानी, बुरे ख़्यालात वग़ैरा) माफ़ हो जाते हैं। जब पावँ धोता है तो पावँ के किये हुए गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

६५) अज़ान की शुरूआत सन एक हिजरी में हुई। अज़ान के जो कलिमात आज कल अदा किये जाते हैं वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़्वाब में अता हुए। (तफ़सीरे नईमी)

६६) सन दो हिजरी माहे शअबान रोज़ दो शम्बा नमाज़े ज़ुहर से अल्लाह तआला ने कअबे की तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया। कुछ रिवायतों में आया है कि १५ रजब सन दो हिजरी दो शम्बा के दिन क़िब्ला तबदील किया गया। (तफ़सीरे नईमी)

६७) वुज़ू की आयत नमाज़ फ़र्ज़ होने के बरसों बाद नाज़िल हुई मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबए किराम को वुज़ू का क़ानून पहले ही सिखा चुके थे। नमाज़ हिजरत से दो साल पहले शबे मेअराज में फ़र्ज़ हुई मगर वुज़ू की आयत सूरए मायदा में आई। सूरए मायदा का नुज़ूल सन ५ हिजरी से शुरू हुआ। इन सात आठ बरसों में मुसलमानों ने नमाज़ें वुज़ू के बिना नहीं पढ़ीं। उस ज़माने में क़ुरआन ने वुज़ू नहीं कराया बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वुज़ू कराया। (तफ़सीरे नईमी)

६८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: नमाज़ जन्नत की कुन्जी है और नमाज़ की कुन्जी तहारत। (तफ़सीरे नईमी)

६९) हदीस में है कि हर चीज़ की एक अलामत होती है। ईमान की अलामत नमाज़ है। (तफ़सीरे नईमी)

७०) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जो बन्दा नमाज़ पढ़ कर उस जगह जब तक बैठा रहता है, फ़रिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं। उस वक़्त तक कि वह शख़्स बेवुज़ू हो जाए या उठ खड़ा हो। (तफ़सीरे नईमी)

७१) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जिस ने चालीस दिन फ़ज्र और इशा की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी उसे अल्लाह

तआला दो बराअतें (छुटकारे) अता फ़रमाएगा। एक नार से दूसरे निफ़ाक़ से। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७२) जो शख़्स साल भर अज़ान कहे और उस पर उजरत तलब न करे तो क़ियामत के दिन वह बुलाया जाएगा और जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा किया जाएगा और उससे कहा जाएगा जिस के लिये तू चाहे शफ़ाअत कर। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७३) हदीस में है कि मुअज़्ज़िनों का हश्र यूँ होगा कि जन्नत की ऊँटनियों पर सवार होंगे। उन के आगे हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु होंगे। सब के सब ऊँची आवाज़ से अज़ान कहते हुए आएंगे। लोग उन की तरफ़ नज़र करेंगे। पूछेंगे: यह कौन लोग हैं? कहा जाएगा: यह उम्मते मुहम्मदिया के मुअज़्ज़िन हैं। लोग ख़ौफ़ में हैं और इन को ख़ौफ़ नहीं, लोग ग़म में हैं और इन्हें ग़म नहीं। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७४) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अज़ान और इक़ामत के बीच की दुआ रद नहीं की जाती। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७५) हदीस में है कि जिस ने इशा की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी उस ने गोया आधी रात क़ियाम किया और जिस ने फ़ज्र की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी उस ने गोया पूरी रात क़ियाम किया। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बाजमाअत नमाज़ पढ़ना अकेले नमाज़ पढ़ने से २७ दर्जे अफ़ज़ल है। (बुख़ारी शरीफ़)

७७) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मर्दों की सफ़ों में बेहतर पहली सफ़ है और सब से कमतर पिछली सफ़ और औरतों की सफ़ों में बेहतर पिछली है और कमतर पहली। (तफ़सीरे नईमी)

७८) इमाम अबू दाऊद ताई रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक बाजमाअत नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

७९) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: वुज़ू मोमिन का मुहाफ़िज़ है। (तफ़सीरे नईमी)

८०) जो शख़्स हमेशा वुज़ू से रहता है, अल्लाह तआला उसे सात ख़सलतों की इज़्ज़त बख़्शता है। अव्वल फ़रिश्ते उस की सोहबत से रग़बत रखते हैं, दूसरे आमाल के लिखने वालों का क़लम हमेशा सवाब लिखने में जारी रहता है। तीसरे उस के बदन के तमाम आज़ा (अंग) तस्बीह करते हैं। चौथे उससे पहली तकबीर फ़ौत नहीं होती। पांचवें फ़रिश्ते उसकी हिफ़ाज़त करते हैं उस के सोते वक़्त देव और परियों से। छटे अल्लाह तआला उस पर

जान निकलने की मुश्किल आसान कर देता है। सातवें यह कि वह अल्लाह तआला की अमान में रहता है जब तक वुज़ू से रहे। (सब्अ सनाबिल शरीफ़)

८१) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस किसी को मुसीबत पहुंचे और वह बेवुज़ू हो तो वह मलामत न करे मगर अपने नफ़्स को। (बुख़ारी)

८२) बुज़ुर्गों का कौल है कि जिस्म की नमाज़ आदमी को गुनाहों और ममनूअ बातों से रोकती है, नफ़्स की नमाज़ बुरी आदतों और बुरे ताल्लुक़ात से मना करती है, दिल की नमाज़ फ़ुज़ूल बातों के ज़हूर और ग़फ़लत में पड़े रहने से रोकती है, रूह की नमाज़ ग़ैरों की तरफ़ मुतवज्जह होने से रोकती है, सिर्री नमाज़ मासिवा अल्लाह की तरफ़ इल्तिफ़ात से रोकती है और नमाज़े ख़फ़ी सालिक को दुई के शुहूद और अनानियत के ज़हूर से गुज़ार देती है। (सब्अ सनाबिल शरीफ़)

८३) मग़रिब और इशा के बीच जागना सुन्नते मुअक्कदा है। (तफ़सीरे नईमी)

८४) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि एक दिन नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद से निकल रहे थे कि शैतान आप को मिल गया। आप ने फ़रमायाः मस्जिद की तरफ़ आने का सबब क्या है? शैतान बोलाः ख़ुदा ले आया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क्या काम था? वह बोलाः ताकि आप मुझ से कुछ सवाल करें। इब्ने अब्बास का कौल है कि अव्वल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह पूछाः ऐ मलऊन तू मेरी उम्मत को जमाअत की नमाज़ से क्यों रोकता है? बोलाः जब आप की उम्मत जमाअत से नमाज़ पढ़ने का इरादा करती है तो मुझे बुख़ार चढ़ आता है जो उस वक़्त तक नहीं उतरता जब तक नमाज़ी अपने अपने घरों को न सिधारें। आप ने फ़रमायाः कुरआन पढ़ने से क्यों रोकता है? जवाब दियाः मैं कुरआन पढ़ते वक़्त रांगे की तरह पिघल जाता हूँ। आप ने फ़रमायाः जिहाद से क्यों रोकता है? अर्ज़ कियाः जब मुसलमान जिहाद को निकलते हैं तो उन की वापसी तक मेरे पैरों में बेड़ियाँ पड़ जाती हैं। आप ने फ़रमायाः हज से क्यों रोकता है? शैतान बोलाः जब लोग हज का सफ़र करते हैं तो मेरी गर्दन में तौक़ पड़ जाता है और जब कोई सदक़ा देने का इरादा करता है तो मेरे सर पर आरा रख दिया जाता है जो ककड़ी की तरह मुझे बीच से चीर डालता है। (ज़ोहरतुर रियाज़)

८५) पन्द्रह शअबान सन दो हिजरी चार रकअत वाली नमाज़े ज़ुहर या

अस्र के वक़्त दो रकअत के ख़त्म के बाद नमाज़ की हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि इमामत बनी इस्राईल से बनी इस्माईल में मुन्तकिल हो चुकी है लिहाज़ा क़िब्लए अव्वल बैतुल मक़दिस के बजाय बैतुल्लाह क़िब्ला मुक़र्रर होने का हुक्म सादिर हो जाता तो क्या ही अच्छा होता। तभी हज़रत जिब्रईले अमीन अलैहिस्सलाम तहवीले क़िब्ला का हुक्म लेकर हाज़िर हुए। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बाक़ी की दो रकअतें बैतुल मक़दिस से बैतुल्लाह की तरफ़ घूम कर अदा फ़रमाईं जिस की वजह से पहली सफ़ आख़िरी सफ़ और आख़िरी सफ़ पहली बन गई। (तफ़सीरे नईमी)

८६) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैंने उस्तुवानए हन्नानह को ज़िन्दगी की दुआ देनी चाही कि लोग उस के फल खाएं मगर उस ने क़ुबूल न किया। जन्नत में जाना भी मन्ज़ूर न किया बल्कि दरख़्वास्त की कि या रसूलल्लाह आप नमाज़ पढ़ाने मुसल्ले पर या ख़ुत्बे के लिये मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा होंगे लिहाज़ा मुझे मिम्बर और मुसल्ले के बीच दफ़्न करा दीजिये ताकि मैं हर हाल में क़दमे मुबारक के नीचे रह सकूँ। (तफ़सीरे नईमी)

८७) सुब्ह की सुन्नत और फ़र्ज़ के बीच बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम की मीम के साथ अल्हम्दु लिल्लाह का लाम मिला कर चालीस रोज़ तक पढ़ना दुनियावी मुरादों के हुसूल के लिये बेहतरीन नुस्ख़ा है। (मज्मूअए आमाल)

८८) जब फ़रिश्तों ने अल्लाह तआला से हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बारे में अर्ज़ किया था: क्या तू ज़मीन में ऐसे को मुक़र्रर करता है जो उस में फ़साद पैदा करेगा तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ। फिर कुछ को हलाक कर डाला और कुछ की तौबा क़ुबूल कर ली। चुनान्चे उन्हीं में से मुन्कर नकीर हैं और उन को उस चश्मे में वुज़ू करने का हुक्म दिया जो अर्श के नीचे से निकला है। फिर हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने उन्हें दो रकअत नमाज़ पढ़ाई। यह वुज़ू और बाजमाअत नमाज़ की अस्ल है। (तफ़सीरे नईमी)

८९) नमाज़े जनाज़ा बाजमाअत चार तकबीरों के साथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने शुरू फ़रमाई। (तफ़सीरे नईमी)

९०) अज़ान के लिये सब से पहले हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने मीनार तामीर कराया। (तफ़सीरे नईमी)

९१) ज़मानए रिसालत में आज कल की मस्जिदों की तरह मेहराब की अलामत नहीं थी बल्कि जब हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु अन्हु वलीद बिन अब्दुल मलिक की तरफ़ से मदीने के गवर्नर थे तो मस्जिदे

नबवी की तामीर के सिलसिले में मेहराब बनवाई थी। (तफ़सीरे नईमी)

९२) इस्लाम की तारीख़ में हज़रत असद बिन ज़ुरारा रज़ियल्लाहु अन्हु पहले शख़्स थे जिन्हों ने मदीने में जुम्आ क़ायम किया था। उन के इन्तिक़ाल के बाद जब जुम्ए की अज़ान होती तो हज़रत कअब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु उन पर रहमत की दुआ करते थे। उन के बेटे ने एक रोज़ इस की वजह पूछी तो बोले कि वह पहले शख़्स थे जिन्हों ने हमें जुम्ए के लिये जमा किया। उस वक़्त हमारी तादाद सिर्फ़ चालीस थी। (अबू दाऊद)

९३) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जुम्ए के दिन और रात में चौबीस घन्टे में कोई घन्टा ऐसा नहीं है जिस में अल्लाह तआला जहन्नम से छः लाख लोगों को आज़ाद न करता हो जिन पर जहन्नम वाजिब हो गया था। (तफ़सीरे नईमी)

९४) पंजगाना नमाज़ में पहली सफ़ को और जनाज़े की नमाज़ में आख़िरी सफ़ को तमाम सफ़ों पर फ़ज़ीलत हासिल है। (तफ़सीरे नईमी)

९५) मेहराब के मानी हैं आलए हर्ब यानी लड़ने का हथियार। मस्जिद को भी मेहराब कहते हैं क्योंकि वह शैतान से लड़ने की जगह है। (तफ़सीरे नईमी)

९६) मस्जिदे हराम (मक्कए मुकर्रमा) में नमाज़ी के सामने से गुज़रना गुनहगार नहीं बनाता मगर यह हुक्म मस्जिदे नबवी के लिये नहीं है। (तफ़सीरे नईमी)

९७) नमाज़ बिना वुज़ू नहीं होती मगर अज़ान वुज़ू के बग़ैर दी जा सकती है। (तफ़सीरे नईमी)

९८) वुज़ू के बाद दो मुख़्तसर रकअतें पढ़ना मुस्तहब है चाहे जो वक़्त हो (मकरूह औक़ात के अलावा) और इसमें तहय्यतुल वुज़ू की नियत करे। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो मेरे इस वुज़ू की तरह वुज़ू करे फिर दो रकअत नमाज़ पढ़े जिसमें वह अपने जी में सिवाए ख़ैर के और बात न करता हो तो अल्लाह उसके सारे अगले पिछले गुनाह बख़्श देता है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

९९) वुज़ू में चार आज़ा (अंगों) का धोना फ़र्ज़ हुआ। इस की वजह यह बताई जाती है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम मम्नूआ दरख़्त की तरफ़ अपने दोनों पैरों से चल कर गए थे। दोनों आँखों से उसे देखा था। दोनों हाथों से उस में से लिया था और उस के पत्ते उन के सर में छू गए थे। (नुज़्हतुल क़ारी)

१००) एक बार हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए। उन के पास सोने का एक तख़्त था जिस के

पाए चाँदी के थे और उस में जगह जगह याकूत और मोती जड़े हुए थे और उस पर सुन्दुस और इस्तब्रक़ का फ़र्श बिछा हुआ था। मक्के के पहाड़ी इलाक़ में आकर ज़मीन पर ठहरे और हज़रत नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम किया और उस तख़्त पर बिठाया। उस वक़्त उनके साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते थे। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने ज़मीन पर अपना बाज़ू जो मारा तो पानी का एक चश्मा जारी हो गया, फिर हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने वुज़ू किया इस तरह कि अपने आज़ा (अंग) तीन तीन बार धोए, तीन बार कुल्ली की, तीन बार नाक में पानी डाला फिर पढ़ाः अशहदु अन ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू इन्नका मुहम्मदुर रसूलुल्लाहि बअसका बिलहक़्क़ि। (यानी मैं गवाही देता हूँ कि खुदाए वहदहू ला शरीक के सिवा कोई मअबूद नहीं है और बेशक आप मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुदा के रसूल हैं आप को हक़ के साथ भेजा गया है।) फिर हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा उठये और आप भी ऐसा ही कीजिये जैसा मैंने किया है। चुनान्चे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी वैसा ही किया। इस के बाद हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहाः जो आप की तरह यह अमल करेगा उस के सारे अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और उस का गोश्त और ख़ून दोज़ख़ पर हराम हो जाएगा। (नुज़्हतुल मजालिस)

१०१) ख़तीब को ख़ुत्बे की हालत में ख़ुत्बे के अलावा बात चीत करनी जाइज़ है। (तफ़सीरे नईमी)

१०२) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआला ने एक फ़रिश्ता पैदा किया है जो अर्श के नीचे क़ायम है। उस के चालीस हज़ार सींग हैं, एक सींग से दूसरे सींग तक हज़ार बरस की राह है। हर सींग पर फ़रिश्तों की चालीस हज़ार सफ़ें हैं। यह फ़रिश्ता जुमए के दिन सज्दा करता है और दुआ मांगता है कि इलाही उम्मते मुहम्मदिया में जो शख़्स जुम्आ अदा करे उस के गुनाह माफ़ कर दे। उस के जवाब में अल्लाह तआला फ़रमाता हैः ऐ फ़रिश्तो, तुम गवाह रहो मैंने जुमए की नमाज़ अदा करने वालों को बख़्श दिया। (कन्ज़ुल अख़बार)

१०३) औरतों के लिये हमेशा फ़ज्र की नमाज़ अव्वल वक़्त में पढ़ना मुस्तहब है, बाक़ी नमाज़ों में बेहतर है कि मर्दों की जमाअत का इन्तिज़ार करें। जब जमाअत हो जाए तब पढ़ें। (दुर्रे मुख़्तार, फ़तावए रिज़विया, जिः २)

१०४) हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब तरावीह को

बाजमाअत कर दिया तो इमाम एक एक रकअत में सौ सौ आयतें पढ़ता था, इस लिये सहाबए किराम खड़े खड़े इस क़दर थक जाते थे कि लकड़ी के सहारे की ज़रूरत होती थी और सहर के वक़्त फ़ारिग़ होकर वापस आते थे। (मुअत्ता इमाम मालिक)

१०५) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः नमाज़ खुदा की रज़ामन्दी, पैग़म्बरों की सुन्नत, फ़रिश्तों की मुहब्बत का बाइस, मअरिफ़त का नूर, ईमान की जड़, दुआ और आमाल की कुबूलियत का सबब, माल और कमाई में बरकत का साधन, खुदा के दुशमनों के मुक़ाबले में हथियार, शैतान के बेज़ार होने की इल्लत, नमाज़ी और मौत के फ़रिश्ते के बीच शफ़ीअ, क़ियामत तक क़ब्र का चराग़, मेहशर के दिन सर का साया और ताज, बदन का लिबास, नमाज़ी और दोज़ख़ में मज़बूत आड़, खुदा के सामने हुज्जत, तराज़ू में बोझल, पुले सिरात से गुज़र जाने का बाइस और जन्नत की कुन्जी है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१०६) कुछ उलमा का क़ौल है कि रुकूअ एक और सज्दे दो हैं हालांकि दोनों फ़र्ज़ हैं। इस का सबब यह है कि रुकूअ उबूदियत का मुद्दई है और सज्दे उस के गवाह हैं और शरई गवाही दो की मानी जाती है। (तफ़सीरे नईमी)

१०७) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब अज़ान होती है तो शैतान भाग जाता है ताकि अज़ान न सुने। जब अज़ान ख़त्म हो जाती है तो लौट आता है। फिर इक़ामत के वक़्त चला जाता है इक़ामत ख़त्म हाते ही लौट आता है और नमाज़ियों के दिलों में वसवसे डालना शुरू कर देता है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१०८) मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी हैः अगर नमाज़ी के सामने से गुज़रने वाला यह जान लेता कि उस पर कितना गुनाह है तो बेशक उसे चालीस रोज़ तक खड़ा रहना अच्छा मालूम होता इस बात से कि नमाज़ी के सामने से गुज़रे। (बुख़ारी शरीफ़)

१०९) हदीस में इरशाद है कि चढ़े दिन तक फ़ज्र के बाद सोए रहना रिज़्क़ रोक देता है यानी ऐसे शख़्स को जो सुब्ह के बाद बिस्तर पर ख़र्राटे लेता हो, उस के लिये रोज़ी तंग हो जाती है। (तफ़सीरे नईमी)

११०) शरई सफ़र की मुसाफ़त तीन मन्ज़िल क़रार पाई है और मन्ज़िल का अन्दाज़ा फ़ुक़्हाए किराम ने बीस मील किया है लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस से बहुत कम फ़ासले पर भी क़स्र नमाज़ साबित है। (तफ़सीरे नईमी)

१११) इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक सफ़र में क़स्र नमाज़ मुस्तहब नहीं वाजिब है। (तफ़सीरे नईमी)

११२) हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: काफ़िर और मोमिन में तर्के नमाज़ का फ़र्क़ है। (तफ़सीरे नईमी)

११३) हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मुअज़्ज़िनों की गर्दनें क़ियामत के दिन सबसे ऊँची होंगी। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

११४) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: जिस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुअज़्ज़िन को अशहदु अन्ना मुहम्मदुर रसूलुल्लाह कहते हुए सुनते तो फ़रमाते: मैं ही हूँ वह शख़्स। (तफ़सीरे नईमी)

११५) हज़रत सहल बिन तस्तरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं इबादत तीन चीज़ों से होती है: ज़िन्दगी, अक़्ल और कुव्वत से। अगर तुम्हें यह डर हो कि भूखे रहने से कमज़ोर हो जाओगे और ताक़त जवाब दे जाएगी तो भी खाना न खाओ क्योंकि भूखे कमज़ोर का बैठ कर नमाज़ पढ़ना पेट भरे ताक़तवर के खड़े होकर नमाज़ पढ़ने से ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

११६) हज़रत ख़्वाजा सरी सक़ती रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया: दो रकअत नफ़्ल नमाज़ जो तुम ख़ुलूस से एकान्त में अदा करो, यह उस से अच्छा है कि तुम सत्तर या सात सौ हदीसें आला सनद के साथ लिखो। (रिसालए कुशैरिया)

११७) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स जुमए के दिन ग़ुस्ल करता है तो उस के तमाम गुनाह झड़ जाते हैं और जब मस्जिद की तरफ़ चलता है तो हर क़दम के बदले बीस साल की इबादत का सवाब लिखा जाता है। और जब नमाज़ पढ़ लेता है तो दो सौ बरस के आमाल की नेकियाँ मिलती हैं। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

११८) हज़रत सईद बिन मुसय्यब रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि जुमए की नमाज़ नफ़्ल हज से बेहतर है। (तफ़सीरे नईमी)

११९) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कोहे क़ाफ़ के परे सफ़ेद चाँदी के रंग की एक ज़मीन है जिस में किसी तरह का सब्ज़ा नहीं उगता। यह ज़मीन दुनिया से सात हिस्से बड़ी है। इस में फ़रिश्ते रहते हैं। अगर कोई एक सुई फेंके तो फ़रिश्ते पर गिरे। हर फ़रिश्ते के हाथ में चालीस फ़रसख़ लम्बा झन्डा है, हर झन्डे पर कलिमए तय्यिबा लिखा हुआ है। तमाम

फ़रिश्ते जुम्ए की रात को कोहे क़ाफ़ के चारों तरफ़ जमा होकर निहायत आजिज़ी से अल्लाह तआला से उम्मते मुहम्मदिया की सलामती चाहा करते हैं और सुब्ह होते ही यह कहते हैं कि इलाही जो शख़्स ग़ुस्ल करे और जुम्ए में हाज़िर हो उस के गुनाह माफ़ कर दे। फिर यह सब मिलकर ऊँची आवाज़ से रोते हैं। उस वक़्त अल्लाह तआला फ़रमाता है: ऐ फ़रिश्तो, तुम क्या चाहते हो? अर्ज़ करते हैं: हम उम्मते मुहम्मदिया की मग़फ़िरत चाहते हैं। इरशाद होता है: अच्छा हम ने उन्हें बख़्शा। (मजालिसुल अबरार)

१२०) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: जो शख़्स पहली साअत में जुम्ए के लिये जाता है उसे ऊंट की क़ुरबानी का, दूसरी साअत में जाने वाले को गाए की क़ुरबानी का, तीसरी साअत में जाने वाले को दुम्बे की क़ुरबानी का, चौथी साअत में जाने वाले को मुर्ग़ ख़ैरात करने का, पांचवीं साअत में जाने वाले को अन्डा सदक़ा देने का सवाब मिलता है। फिर जब इमाम ख़ुत्बे के लिये मिम्बर की तरफ़ आता है तो सहीफ़े लपेट दिये जाते हैं, क़लम उठा लिये जाते हैं और फ़रिश्ते मिम्बर के क़रीब आकर ख़ुत्बा सुनते हैं। अब जो शख़्स आया है गोया सिर्फ़ नमाज़ के लिये आया है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१२१) पहले ज़माने में यह हाल था कि फ़ज्र के बाद जुम्ए की नमाज़ में जाने वालों से तमाम रास्ते भरे रहते थे और लोग ईद की तरह चराग़ जला कर जामेअ मस्जिद की तरफ़ जाया करते थे। बाद में यह तरीक़ा ख़त्म हो गया। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१२२) हदीस शरीफ़ में है कि जो मुसलमान जहन्नम में जाएगा उस के पूरे बदन को आग खा जाएगी सिवाए उन आज़ा (अंगों) के जिन से वह सज्दा करता था। अल्लाह तआला ने इन अंगों का खाना आग पर हराम कर दिया है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१२३) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब किसी को मस्जिद में ख़रीदो फ़रोख़्त करते देखो तो कहो अल्लाह तेरी तिजारत में नफ़ा न दे। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१२४) हदीस शरीफ़ में है एक ज़माना ऐसा आएगा कि मस्जिदों में दुनिया की बातें होंगी। तुम उन के साथ न बैठना कि अल्लाह तआला को उन से कुछ काम नहीं। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१२५) शैतान मलऊन का क़ौल है कि लोगों के आमाल में सब से ग़ज़बनाक मेरे लिये दो चीज़ें हैं एक अय्यामे बैज़ यानी चाँद की तेरहवीं, चौदहवीं और पन्द्रहवीं तारीख़ के रोज़े दूसरे चाश्त की नमाज़। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१२६) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अगर किसी को जुम्ए के दिन रोज़ा रखना हो तो एक दिन पहले भी रोज़ा रखे या उस के बाद रोज़ा रखे, यानी फ़क़त एक रोज़ा रखना मकरूह है। (तफ़सीरे नईमी)

१२७) यह मस्अला अवाम में ग़लत मशहूर है कि अपना पराया सत्र देखने से वुज़ू में ख़लल आता है। अल्बत्ता पराया सत्र जान बूझ कर देखना हराम है और नमाज़ में और भी ज़्यादा हराम। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१२८) मर्द मोमिन के लिये एतिकाफ़ की सब से अच्छी जगह मस्जिदे हराम (मक्कए मुअज़्ज़मा) है फिर मस्जिदे नबवी फिर बैतुल मक़दिस, इस के बाद शहर की जामेअ मस्जिद फिर अपने मुहल्ले की मस्जिद। (तफ़सीरे नईमी)

१२९) वुज़ू की शुरूआत में हाथ धोने, कुल्ली करने और नाक में पानी डालने का एक फ़ायदा यह भी है कि पानी में तीन वस्फ़ हैंः रंग, बू और मज़ा। हाथ में पानी लेने से रंग मालूम हो गया, कुल्ली करने से मज़े का पता चल गया और नाक में पानी लेने से बू मालूम हो गई। (नुज़्हतुल क़ारी)

१३०) फ़ज्र की शुरूआत सुब्ह सादिक़ से होती है और जब तक सूरज न निकले इस का वक़्त रहता है। (तफ़सीरे नईमी)

१३१) ज़ुहर की शुरूआत उस वक़्त होती है जब सूरज निस्फ़ुन्नहार से ढलने लगे और इन्तिहा उस वक़्त होती है जब हर चीज़ का साया उस के बराबर या दुगना हो जाए। (तफ़सीरे नईमी)

१३२) अस्र की शुरूआत ज़ुहर का वक़्त ख़त्म होने के बाद होती है और इन्तिहा सूरज ग़ुरूब होने पर। (तफ़सीरे नईमी)

१३३) मग़रिब की शुरूआत सूरज ग़ुरूब होने के बाद होती है और इन्तिहा शफ़क़ ग़ायब होने पर। (तफ़सीरे नईमी)

१३४) इशा की शुरूआत शफ़क़ ग़ायब होने के बाद होती है और इन्तिहा फ़ज्रे सानी यानी सुब्हे सादिक़ के तुलूअ होने तक। (तफ़सीरे नईमी)

१३५) ताजदारे दो आलाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी उम्मत के सवाब मुझे दिखाए गए, इन में वह सवाब भी शामिल था जो मस्जिद में झाड़ू देने वाले का होता है। (तफ़सीरे नईमी)

१३६) क़स्र नमाज़ के लिये मुसाफ़त की हद साढ़े सत्तावन मील है, रेल में हो चाहे पैदल। (तफ़सीरे नईमी)

१३७) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईदैन की नमाज़ जंगल में अदा करते थे जब कि मस्जिदे नबवी बेहतरीन मस्जिद है। (तफ़सीरे नईमी)

१३८) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुल तीस हज़ार नमाज़ें पढ़ी हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१३९) नमाज़ में तकबीरे तहरीमा यानी वह तकबीर जिस के ज़रिये नमाज़ में दाख़िल होते हैं, सारे इमामों के नज़्दीक फ़र्ज़ है। (तफ़सीरे नईमी)

१४०) सलाम इमामे शाफ़ई, इमामे मालिक और इमामे अहमद रहमतुल्लाहि अलैहिम के नज़्दीक फ़र्ज़ और इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक वाजिब है। (तफ़सीरे नईमी)

१४१) अगर औरत सज्दे में सो जाए तो वुज़ू जाता रहता है और अगर मर्द सज्दे में सो जाए तो वुज़ू नहीं जाता क्योंकि मर्द सज्दे में ग़ाफ़िल सो ही नहीं सकता वरना लुढ़क जाएगा। (तफ़सीरे नईमी)

१४२) जब नबीये मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में बैठते तो दोनों हाथों से घुटने बांध लेते। (तफ़सीरे नईमी)

१४३) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि एक कुंवें का हरीम दस हाथ है कि इस हद में दूसरा कुंवाँ न खोदा जाए। (तफ़सीरे नईमी)

१४४) हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक तयम्मुम वुज़ू की तरह मुकम्मल तहारत है लिहाज़ा एक तयम्मुम से एक वक़्त में भी चन्द नमाज़ें पढ़ सकते हैं और एक वक़्त के तयम्मुम से कई वक़्त की नमाज़ें भी पढ़ी जा सकती हैं क्योंकि इसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वुज़ू क़रार दिया है तो जो हुक्म वुज़ू का है वही इस का हुक्म होगा। इमामे शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक तयम्मुम तहारत की ज़रूरत है कि वक़्त निकल जाने से टूट जाता है और एक तयम्मुम से चन्द नमाज़ें नहीं पढ़ सकते। (तफ़सीरे नईमी)

१४५) मेअराज की रात की सुब्ह हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दो दिन नमाज़ पढ़ाई। सब से पहले ज़ुहर पढ़ाई। यह वाक़िआ बैतुल्लाह के दरवाज़े से सट कर हुआ जहाँ अब भी लोग नफ़्ल नमाज़ पढ़ते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१४६) नमाज़ में जिस ने रुकूअ पा लिया उस ने रकअत पा ली। (तफ़सीरे नईमी)

१४७) लेट कर नमाज़ पढ़ने वाले कअबे की तरफ़ पावँ करे और तकिये पर सर रखे ताकि उस का मुंह कअबे की तरफ हो जाए। (तफ़सीरे नईमी)

१४८) शबे मेअराज अगले पैग़म्बरों ने नबीये मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे बैतुल मक़दिस में नमाज़ अदा की। हज्जतुल वदाअ में पिछले

पैग़म्बरों ने भी सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हज किया। (तफ़सीरे नईमी)

१४९) चलती रेल में सिवाए फ़र्ज़ और वित्र सब नमाज़ें जाइज़ हैं। लेकिन फ़ज्र की सुन्नतें नहीं पढ़ सकते। (तफ़सीरे नईमी)

१५०) नमाज़े तहज्जुद बहुत आला इबादत है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पंजगाना के अलावा यह भी फ़र्ज़ थी। (तफ़सीरे नईमी)

१५१) हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जो शख़्स इमाम के पीछे तिलावत करे उस के मुंह में पत्थर हों। (तफ़सीरे नईमी)

१५२) एक सहाबी ने नबीये मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे सूरए फ़ातिहा पढ़ी तो दूसरे सहाबी ने उन्हें रोका। उन्हों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शिकायत की। फ़रमायाः वह ठीक कहते हैं इमाम की क़िरअत मुक़्तदी की क़िरअत है। (तफ़सीरे नईमी)

१५३) एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ाई तो कुछ सहाबा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे सूरए फ़ातिहा पढ़ी। सलाम फेरने के बाद नबीये मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम मुझ से क़ुरआन में क्यों झगड़ते हो। (तफ़सीरे नईमी)

१५४) इमाम शअबी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं: बद्र वाले सत्तर सहाबा से मैं मिला हूँ वह सब मुक़्तदी को क़िरअत से मना करते थे। (तफ़सीरे नईमी)

१५५) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: जो इमाम के पीछे तिलावत करे उस का मुंह आग से भर जाए। (तफ़सीरे नईमी)

१५६) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अल्क़मा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: जो इमाम के पीछे तिलावत करे उस के मुंह में ख़ाक। (तफ़सीरे नईमी)

१५७) हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: जो इमाम के पीछे तिलावत करे उस की नमाज़ ही नहीं होती। (तफ़सीरे नईमी)

१५८) जिस शख़्स की अगली रकअतें जमाअत से रह गई हों तो जब वह अपनी रकअतें पूरी करे तो क़िरअत करे क्योंकि अब वह मुक़्तदी नहीं है। (तफ़सीरे नईमी)

१५९) मुसाफ़िर इमाम के पीछे मुक़ीम मुक़्तदी ने नमाज़ पढ़ी तो जब यह अपनी दो रकअतें पूरी करे तो उन्हें बिना तिलावत अदा करे। (तफ़सीरे नईमी)

१६०) तयम्मुम में नियत शर्त है, वुज़ू में शर्त नहीं। (तफ़सीरे नईमी)

१६१) मुसलमान अगर जंगल में भी नमाज़ पढ़े तो अज़ान कह ले ताकि उस

जंगल के घास तिन्के कंकर उस के ईमान के गवाह बन जाएं। (तफ़सीरे नईमी)

१६२) चन्द सूरतों में नमाज़ तोड़ देना चाहिये। एक, माँ के बुलाने पर नफ़्ल नमाज़ तोड़ दे जब कि उसे ख़बर न हो कि मेरा बेटा नमाज़ पढ़ रहा है। दो, अगर कोई शख़्स बेख़बरी में छत से या कुवें में गिरा जा रहा हो तो नमाज़ तोड़ दे और उसे बचाए। तीन, अगर नमाज़ी का घोड़ा भागा जाता है या रेल गाड़ी छूटी जा रही है, यह नीचे नमाज़ पढ़ रहा है, मगर इन सूरतों में नमाज़ टूट जाएगी, दोबारा पढ़नी होगी। (शामी)

१६३) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबीये मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अपनी सफ़ें बराबर करो क्योंकि सफ़ों की बराबरी भी नमाज़ का क़ियाम है। (और नमाज़ की दुरुस्ती है) (तफ़सीरे नईमी)

१६४) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत की अलामतों में से एक अलामत यह भी है कि लोग एक दूसरे की इमामत से इन्कार करेंगे और उन को इमामत करने वाला नहीं मिलेगा। (तफ़सीरे नईमी)

१६५) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः जो शख़्स इमाम से पहले उठता बैठता हो उस की पेशानी (के बाल) शैतान के हाथ में हैं। (तफ़सीरे नईमी)

१६६) मिस्वाक में दस ख़सलतें हैंः एक, मुंह को पाक करती है। दो, रब को खुश करती है। तीन, शैतान को तकलीफ़ देती है। चार, किरामन कातिबीन को दोस्त बनाती है। पांच, दांतों को मज़बूत करती है। छः, बलग़म को दूर करती है। सात, सांस को खुश्बूदार बनाती है। आठ, तल्ख़ी को बुझाती है। नौ, नज़र को तेज़ करती है। दस, कीने को दूर करती है। (तफ़सीरे नईमी)

१६७) इहयाउल उलूम में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह रिवायत हैः आप ने फ़रमाया तुम्हारा मुंह क़ुरआन का रास्ता है तो इसे मिस्वाक से खुश्बूदार रखा करो।

१६८) बज़ाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि की रिवायत है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद हैः इस में शक नहीं कि बन्दा जब मिस्वाक करता है फिर खड़े हो कर नमाज़ पढ़ता है तो फ़रिश्ता पीछे खड़ा हुआ उस की क़िरअत सुनता रहता है और उस के करीब होता जाता है यहाँ तक कि उस के मुंह पर अपना मुंह रख देता है। (तफ़सीरे नईमी)

१६९) सही मुस्लिम शरीफ़ में आया है कि अगर लोगों को मस्जिद के अन्दर पहली सफ़ में बैठने का सवाब मालूम हो जाए तो उस के लिये कुरआ डाला करें। (तफ़सीरे नईमी)

१७०) हज़रत सलमाने फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब कोई शख़्स किसी खुली ज़मीन पर होता है और वहाँ नमाज़ पढ़ता है तो उस के साथ दो फ़रिश्ते नमाज़ पढ़ते हैं और जब वह अज़ान और तकबीर भी कह लेता है तो उस के साथ इतने फ़रिश्ते नमाज़ पढ़ते हैं कि उन की सफ़ के किनारे नज़र नहीं आते। उस के रुकूअ पर रुकूअ और सज्दे पर सज्दे करते हैं और उस की दुआओं पर आमीन कहते हैं। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

१७१) सय्यिदुना इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो कोई सुब्ह की नमाज़ के बाद उसी जगह आफ़ताब निकलने तक बैठा रहे और जब सूरज सवा नेज़े पर आ जाए तो उठ कर दो रकअत नमाज़ पढ़े। हक़ तआला उस नमाज़ की हर रकअत के बदले में जन्नत में हज़ार हवेलियां अता करेगा। हर एक हवेली में हज़ार हज़ार हूरें होंगी और हज़ार हज़ार ख़ादिम होंगे जो जनाबे किब्रिया में रुजूअ करने वाले होंगे और वह शख़्स मख़लूक़ का मोहताज हरगिज़ न होगा। (तफ़सीरे नईमी)

१७२) अज़ान में दो फ़र्ज़ हैं: अव्वल हय्या अलस्सलाह, दूसरा हय्या अलल फ़लाह। और दस सुन्नतें हैं: अव्वल बावुज़ू होना, दूसरे ऊंचाई पर खड़े होना, तीसरे, मस्जिद में दाएं जानिब खड़ा होना, चौथे, दाएं बाएं गर्दन घुमाना, पांचवें, अंगलियां कानों में डालना, छटे, क़िबले की तरफ़ मुंह होना, सातवें सही अज़ान कहना, आठवें, सब कलिमात अज़ान के अलग अलग अदा करना, नवें, उंगलियां कानों में हिलाना, दसवें, बाहर सहन में खड़े रहना। (तफ़सीरे नईमी)

१७३) अज़ान में तेरह कलिमाते कुफ़्र हैं: एक, अल्लाह को मद से बोलना, दो, अकबर को अकबार पढ़ना, तीन, अशहदु को अशहादु पढ़ना, चौथे, अशहदु को असहदु यानी सीन से पढ़ना, पांचवें, हय्या को छोटी हा से पढ़ना, छटे, छोटी हा को बड़ी हा से पढ़ना, सातवें, लाइलाहा इल्लल्लाह को बिना तशदीद के बोलना, आठवें, शहादतैन को बिना अलिफ़ के बोलना, नवें, मुहम्मद को मुहाम्मद बोलना, दसवें, अन को अन्ना पढ़ना, ग्यारहवें, फ़लाह को मद से न पढ़ना, बारहवें, अस्सलाह को मद से बोलना, तेरहवें, हय्या को बिना तशदीद बोलना। (तफ़सीरे नईमी)

१७४) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़त्हे मक्का के दिन पांचों नमाज़ें एक ही वुज़ू से पढ़ीं। (तफ़सीरे नईमी)

१७५) इमाम नीशापूरी ने लिखा है कि आदम अलैहिस्सलाम रात के वक़्त उतरे थे। जब फ़ज्र तुलूअ हुई तो उन्हों ने तारीकी से रौशनी में निकल आने के शुक्रिये में दो रकअत नमाज़ अदा की। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर चार चार फ़िक्रें इकट्ठी हो गई थीं: ज़िब्ह की फ़िक्र, फ़िदिये की फ़िक्र, हुक्म की बजा आवरी की फ़िक्र और ग़ुरबत की फ़िक्र। जब अल्लाह तआला ने उन्हें इन फ़िक्रों से रिहाई दी तो उन्हों ने ज़वाल के बाद शुक्र के तौर पर चार रकअत नमाज़ अदा की। हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को चार चार तारीकियों ने घेर लिया था: अपनी क़ौम पर ग़ुस्सा करने की तारीकी, रात की तारीकी, समुन्द्र की तारीकी और मछली के पेट की तारीकी। कुछ ने कहा है कि जिस मछली के पेट में वह थे, वह दूसरी मछली के पेट में थी। अल्लाह तआला ने जब उन्हें अस्र के वक़्त इस से निकाला तो उन्हों ने चार रकअत नमाज़ अदा की। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने से उलूहियत की नफ़ी के शुक्र में अल्लाह के लिये दो रकअत नमाज़ अदा की और उन की वालिदा ने ख़ुदा के लिये उलूहियत साबित करने के शुक्र में एक रकअत अदा की। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने चार फ़िक्रों से रिहाई पाने के शुक्रिये के तौर पर चार रकअतें अदा की थीं। वह फ़िक्रें यह हैं: रास्ता गुम होने की फ़िक्र, बकरियों के भाग जाने की फ़िक्र, सफ़र की फ़िक्र और अपनी ज़ौजा की फ़िक्र जब उन के ज़चगी का दर्द शुरू हुआ। (नुज़्हतुल मजालिस)

१७६) शैतान अज़ान से ऐसे भागता है जैसे चोर कोतवाल से। कुछ ने कहा अज़ान में चूंकि नमाज़ के लिये बुलावा होता है और नमाज़ में सज्दा है इस से उसे अपना क़िस्सा याद आता है जो कि आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा न करने से वह रांदए बारगाहे इलाही हुआ। इस लिये अज़ान नहीं सुनना चाहता। कुछ ने कहा है इस लिये कि अज़ान की गवाही आख़िरत में न देनी पड़े। (तफ़सीरे नईमी)

१७७) जब इमाम के साथ एक ही आदमी हो तो वह इमाम की दाईं तरफ़ खड़ा हो, जवान हो या नाबालिग़। अब अगर एक और शख़्स आ जाए तो वह इमाम की बाईं तरफ़ अल्लाहु अकबर कहे। अब इमाम को चाहिये कि एक क़दम आगे बढ़ जाए या दोनों मुक़्तदी पीछे हट जाएं। (तफ़सीरे नईमी)

१७८) अगर थूक में ख़ून निगला और थूक ज़्यादा है तो वुज़ू नहीं टूटा और अगर ख़ून ज़्यादा है तो वूज़ू टूट गया। (तफ़सीरे नईमी)

१७९) इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक जनबी और हैज़ व निफ़ास वाली औरत को न कुरआने मजीद की तिलावत जाइज़, न

छूना जाइज़, न लिखना जाइज़। दूसरे अज़कार के पढ़ने लिखने की इजाज़त है। (तफ़सीरे नईमी)

१८०) मिस्वाक ज़्यादा से ज़्यादा एक बालिश्त लम्बी और छोटी उंगली के बराबर मोटी हो। हदीस में है कि एक बालिश्त से ज़्यादा लम्बी मिस्वाक पर शैतान बैठता है। पीलू, ज़ैतून वग़ैरा की हो, किसी ख़ुश्बूदार या फलदार दरख़्त की न हो। इस्तेमाल से पहले मिस्वाक धोएं और मिस्वाक करने के बाद भी धोलें और किसी मेहफ़ूज़ जगह खड़ी करके रखें। रेशा ऊपर की तरफ़ रहें। (तफ़सीरे नईमी)

१८१) मेअराज से पहले भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबए किराम नमाज़ पढ़ते थे। हदीसे हिरा के कुछ तरीक़े में यह है कि इक़रा नाज़िल होने के बाद जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने ज़मीन पर पावँ मारा जिस से चश्मा जारी हो गया और उसी से वुज़ू किया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम देखते रहे। फिर हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः आप भी वुज़ू कर लें। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वुज़ू फ़रमाया। फिर जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने दो रकअत कअबे की तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ी। उन के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी पढ़ी। फिर दौलत कदे पर तशरीफ़ लाए और उम्मुल मोमिनीन ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा को हुक्म दिया। उन्हों ने वुज़ू किया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी। उम्मतियों में नमाज़ पढ़ने का शर्फ़ सब से पहले हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा को ही हासिल हुआ और उन के बाद हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम को। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो शम्बे को अव्वल रोज़ में नमाज़ पढ़ी और हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उसी रोज़ आख़िरी हिस्से में और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मंगल के दिन। (तफ़सीरे नईमी)

१८२) मेअराज से पहले सिर्फ़ तहज्जुद फ़र्ज़ था वह भी बाद में उम्मत के लिये मन्सूख़ हो गया। (तफ़सीरे नईमी)

१८३) नमाज़ की पांच वक़्तों के साथ तख़सीस की वजह यह है कि ज़ुहर के वक़्त जहन्नम भड़काई जाती है, तो जिस ने उस वक़्त नमाज़ पढ़ी वह अपने गुनाहों से ऐसा निकल आया गोया आज ही पैदा हुआ है। और अस्र के वक़्त हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने दरख़्त में से गेहूँ खाया था तो जिस ने उस वक़्त नमाज़ पढ़ी अल्लाह ने उस का बदन दोज़ख़ पर हराम कर दिया। मग़रिब के वक़्त अल्लाह ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा क़ुबूल की

थी तो जिस ने उस वक़्त नमाज़ पढ़ी वह खुदा से कुछ न मांगेगा जो उसे अता न हो जाए। इशा और सुब्ह का वक़्त क़ब्र और क़ियामत की तारीकी से मिलता जुलता है तो जिस ने इशा अपने वक़्त पर पढ़ी या उस के पढ़ने के लिये चला अल्लाह तआला उस की क़ब्र में और क़ियामत में नूर अता फ़रमाएगा और जिस ने फ़ज्र की नमाज़ वक़्त पर पढ़ी अल्लाह तआला उसे दोज़ख़ और निफ़ाक़ से निजात इनायत करेगा। (नुज़्हतुल मजालिस)

१८४) नुज़्हतुल मजालिस में अल्लामा अब्दुर रहमान सफ़्वी शाफ़ई ने फ़रमाया मैं ने हनफ़िया की किताब ततार ख़ानिया में देखा है: जिस की औरत नमाज़ न पढ़ती हो उसे चाहिये कि तलाक़ दे दे। अगर्चे उस के मेहर देने से आजिज़ हो क्योंकि अपने ज़िम्मे उस का मेहर लेकर खुदा से मिलना एक बेनमाज़ी औरत से सोहबत करने से बेहतर है।

१८५) शुरू में नमाज़ दो दो रकअत थी। जब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने तशरीफ़ लाए और इत्मिनान हो गया तो मग़रिब के अलावा और नमाज़ों में दो रकअत का इज़ाफ़ा फ़रमाया। मग़रिब में इस लिये इज़ाफ़ा नहीं फ़रमाया कि यह दिन की नमाज़ का वित्र है। (तफ़सीरे नईमी)

१८६) शुरू शुरू में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कअबे की तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ते थे फिर मक्के ही में बैतुल मक़दिस की तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ने का हुक्म हो गया। मक्के में तीन साल तक बैतुल मक़दिस की तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ते रहे। (तफ़सीरे अज़ीज़ी)

१८७) अगर किसी शख़्स की नियत नमाज़ की तौहीन या तहक़ीर की है और वह यह सोच कर कि नमाज़ ऐसी कोई बड़ी शान वाली चीज़ नहीं है कि टोपी पहनी जाए, इस नियत से नंगे सर नमाज़ पढ़े तो यह कुफ़्र है। (बहारे शरीअत, जि: ३)

१८८) पूरी हयाते तय्यिबा में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पांच बार नमाज़ में सहव वाक़ेअ हुआ। अव्वल नमाज़े ज़ुहर या कुछ रिवायतों के मुताबिक़ अस्र की नमाज़ में पांच रकअतें पढ़ीं, दूसरे नमाज़े ज़ुहर में दो रकअत पर सलाम फेर दिया, तीसरे क़अदए ऊला तर्क हो गया, चौथे, क़िरअत के दौरान आयत छूट गई, पांचवें एक बार मग़रिब में दो ही रकअत पर सलाम फेर दिया था। (तफ़सीरे नईमी)

१८९) शैतान की ज़ुर्रियत की मुख़्तलिफ़ जमाअतें हैं, उन के नाम और काम अलग अलग हैं, चुनान्चे वुज़ू में बहकाने वाली जमाअत का नाम वल्हान है और नमाज़ में वरग़लाने वाली जमाअत का नाम ख़न्ज़िब है। (तफ़सीरे नईमी)

१९०) जो कोई नमाज़ के बाद दायाँ हाथ सर पर रख कर २१ बार या कविय्यो पढ़ कर दम कर लिया करे, इन्शा अल्लाह उस का हाफ़िज़ा कवी होगा। (तफ़सीरे नईमी)

१९१) रुकूअ मुस्तकिल इबादत नहीं है, सिर्फ़ नमाज़ ही में इबादत है और सज्दा नमाज़ के अलावा भी इबादत है जैसे शुक्र का सज्दा, तिलावत का सज्दा, तौबा और इस्तिग़फ़ार का सज्दा। (तफ़सीरे नईमी)

१९२) कअबे को मुंह या पीठ करके इस्तंजा करना हराम है। (तफ़सीरे नईमी)

१९३) गुस्ल में तीन फ़र्ज़ हैं: कुल्ली करना, नाक में पानी डालना और तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना। (तफ़सीरे नईमी)

१९४) इस्लाम में गुस्ल चार तरह के हैं: फ़र्ज़, सुन्नत, मुस्तहब और मुबाह। फ़र्ज़ गुस्ल तीन हैं: जनाबत से, हैज़ से और निफ़ास से। सुन्नत गुस्ल पांच हैं: जुम्ए का गुस्ल, ईदैन का गुस्ल, इहराम के वक़्त का गुस्ल, अरफ़े के दिन का गुस्ल। मुस्तहब गुस्ल बहुत हैं: मुसलमान होते वक़्त, मुर्दे को नहला कर, कुरबानी के दिन, तवाफ़े ज़ियारत के लिये, मदीनए मुनव्वरा हाज़िरी के वक़्त वग़ैरा वग़ैरा। मुबाह गुस्ल जो ठन्डक के लिये किया जाए। (तफ़सीरे नईमी)

१९५) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: जन्नत में पहले नबी और रसूल जाएंगे फिर बैतुल्लाह के मुअज़्ज़िन यानी हज़रत बिलाल, फिर बैतुल मक़दिस के मुअज़्ज़िन, फिर सारे मुअज़्ज़िन। (तफ़सीरे नईमी)

१९६) हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम फ़रमाते हैं: अगर रब मुझे जन्नत और मस्जिद में जाने का इख़्तियार दे तो मैं जन्नत की बजाए मस्जिद को इख़्तियार करूं। (तफ़सीरे नईमी)

१९७) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बालिग़ औरत का सर सत्र है, जिस का ढकना नमाज़ में फ़र्ज़ है लिहाज़ा ऐसे बारीक दुपट्टे में जिस में सर या सर के बाल नज़र आएं, नमाज़ नहीं होगी। (तफ़सीरे नईमी)

१९८) हदीस में है कि अमामे की नमाज़ बिना अमामे की नमाज़ से सत्तर दर्जे अफ़ज़ल है। (तफ़सीरे नईमी)

१९९) फ़ुक़्हा फ़रमाते हैं: चटाई और जो चीज़ ज़मीन में से उगी हो उस पर नमाज़ अफ़ज़ल है क्योंकि इस में इन्किसारी का इज़्हार है। (तफ़सीरे नईमी)

२००) इमाम का सुतरा (आड़) जमाअत का सुतरा होता है, इस के आगे से गुज़रना जाइज़ है। जानवर और इन्सान का सुतरा हो सकता है। (तफ़सीरे नईमी)

२०१) नमाज़ में कोई वाजिब रुक्न छूट जाए तो सज्दए सहव वाजिब है और अगर जान बूझ कर छोड़ा है तो नमाज़ का दोहराना वाजिब है। (तफ़सीरे नईमी)

२०२) नमाज़ के अरकान को इत्मिनान से अदा करना कि हर रुक्न में तीन तस्बीहों के बराबर ठहरना तअदीले अरकान कहलाता है। यह इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक फ़र्ज़ है। इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक तअदील वाजिब है कि जिस के रह जाने से नमाज़ नाक़िस वाजिबतुल इआदा (लौटाए जाने के क़ाबिल) होती है। लेकिन फ़र्ज़ अदा हो जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

२०३) फ़र्ज़ की पहली दो रकअतों में क़ुरआन पढ़ना फ़र्ज़ है, बाक़ी में नफ़्ल। (तफ़सीरे नईमी)

२०४) नमाज़ में क़िब्ले की तरफ़ मुंह होना शर्त है और तकबीरे तहरीमा रुक्न। अगर कोई तकबीर पहले कह दे और क़िब्ले को रुख़ बाद में करे तो नमाज़ नहीं होगी। (तफ़सीरे नईमी)

२०५) अगर जुम्ए की जमाअत जारी है और इमाम आख़िर अत्तहियात में हो तो जमाअत के लिये भागना फ़र्ज़ है वरना बिला ज़रूरत दौड़ते हुए नमाज़ के लिये आने को मना किया गया है। (तफ़सीरे नईमी)

२०६) तहज्जुद की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी जा सकती है शर्त यह है कि इस जमाअत का एहतिमाम न किया जाए। अगर इत्तिफ़ाक़ से दो चार नमाज़ी जमा होजाएं और जमाअत करलें तो कोई क़बाहत नहीं है। (तफ़सीरे नईमी)

२०७) माल के चोर से नमाज़ का चोर बदतर है क्योंकि माल का चोर अगर सज़ा पाता है तो कुछ नफ़ा भी उठा लेता है मगर नमाज़ का चोर सज़ा पूरी पाएगा और नफ़ा कुछ हासिल न होगा। इस के अलावा माल का चोर बन्दे का हक़ मारता है, नमाज़ का चोर अल्लाह का हक़। माल का चोर यहाँ सज़ा पाकर आख़िरत में सज़ा से बच जाता है मगर नमाज़ के चोर को यह सहूलत नहीं है। कुछ सूरतों में माल के चोर को माल का मालिक माफ़ भी कर सकता है लेकिन नमाज़ के चोर की माफ़ी की कोई सूरत नहीं है। यहाँ नमाज़ की चोरी का मतलब है नाक़िस नमाज़ पढ़ना। (तफ़सीरे नईमी)

२०८) नमाज़ में कपड़े समेटना, रोकना सब मना है। लिहाज़ा आस्तीन या पांयचे चढ़ा कर या पाजामे पर लंगोट बांध कर नमाज़ पढ़ना मना है। ऐसे ही धोती बांध कर नमाज़ पढ़ना मना है कि इन सब में कपड़े का रोकना है। हाँ अगर पाजामे के नीचे लंगोट बंधा हो तो मना नहीं। (तफ़सीरे नईमी)

२०९) सुन्नत यह है कि सज्दे में जाते वक़्त ज़मीन से क़रीब वाला अंग

ज़मीन पर पहले रखे कि पहले घुटने फिर हाथ फिर नाक फिर पेशानी रखे और सज्दे से उठते वक़्त इस का उलट करे कि पहले पेशानी उठाए फिर नाक फिर हाथ फिर घुटने। (तफ़सीरे नईमी)

२१०) मस्जिद में अपने लिये कोई जगह ख़ास कर लेना कि और जगह नमाज़ में दिल ही न लगे, मकरूह है। हाँ शरई ज़रूरत के लिये जगह मुक़र्रर करना जाइज़ है जैसे इमाम के लिये मेहराब मुक़र्रर है और कुछ मस्जिदों में मुकब्बिरों के लिये इमाम के पीछे की जगह। (तफ़सीरे नईमी)

२११) अगर नमाज़ में हाह मुंह से निकल जाए तो नमाज़ जाती रहेगी कि इस में तीन हर्फ़ अदा हो गए। अगर फ़क़त हा निकला तो नमाज़ मकरूह होगी। (तफ़सीरे नईमी)

२१२) मुस्तहब यह है कि क़ियाम में सज्दे की जगह पर निगाह रखे, रुकूअ में पावँ की पुश्त पर, सज्दे में नाक के बांसे पर और तशह्हुद यानी अत्तहियात में गोद पर। हर नमाज़ का यही हुक्म है। हाँ हरम शरीफ़ में नमाज़ी क़ियाम में कअबए मुअज़्ज़मा को देखे। (तफ़सीरे नईमी)

२१३) अगर नमाज़ी को नमाज़ की हालत में सांप या बिच्छू नज़र आए तो वह उसे मार सकता है। अगर थोड़ी सी हरकत में मार दिया तो नमाज़ नहीं टूटेगी और अगर इस के लिये क़िब्ले से सीना फिर गया या लगातार तीन क़दम चलना पड़ा या तीन चोटें मारनी पड़ीं तो नमाज़ टूट जाएगी और उसे दोहराना पड़ेगा, अल्बत्ता वह शख़्स नमाज़ तोड़ने का गुनहगार न होगा। (तफ़सीरे नईमी)

२१४) तीन वक़्त वह हैं जिन में फ़र्ज़ या नफ़्ल हर नमाज़ मना है: सूरज निकलने का वक़्त, निस्फ़ुन्नहार और सूरज डूबने का वक़्त। पांच वक़्त वह हैं जिन में सिर्फ़ फ़र्ज़ की इजाज़त है, नफ़्ल मना है: सुब्ह सादिक़ से तुलूए आफ़ताब तक, नमाज़े अस्र के बाद से सूरज डूबने तक, फिर सूरज डूबने के बाद से मग़रिब के फ़र्ज़ पढ़ने तक, जुम्ए के ख़ुत्बे के वक़्त, ईद के दिन ईद की नमाज़ से पहले। (तफ़सीरे नईमी)

२१५) इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे कि मेरा खाना नमाज़ बन जाए यह अच्छा होगा मगर मेरी नमाज़ मेरा खाना बन जाए यह बुरा। (तफ़सीरे नईमी)

२१६) नमाज़ की तकबीर के बाद जमाअत से जुड़े हुए दूसरी नमाज़ पढ़नी हराम है, लिहाज़ा फ़ज्र की सुन्नतें इस हालत में जमाअत से दूर हट कर पढ़ सकता है जब कि जमाअत मिलने की उम्मीद हो क्योंकि यह सुन्नतें बहुत

अहम हैं यहाँ तक कि उलमा ने फ़रमाया कि बड़ा मुफ़्ती जिसे फ़तवों का बहुत काम रहता हो वह तमाम सुन्नतें छोड़ सकता है सिवाए फ़ज्र की सुन्नतों के। (तफ़सीरे नईमी)

२१७) तहज्जुद से पहले सो लेना ज़रूरी है अगर कोई बिल्कुल न सोया तो उस के नवाफ़िल तहज्जुद नहीं माने जाएंगे। जिन बुज़ुर्गों के मुताल्लिक़ यह मशहूर है कि उन्हों ने इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी है जैसे सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु, वह हज़रात इस क़दर ऊंघ लेते थे जिस से तहज्जुद दुरुस्त हो जाए और वुज़ू भी न जाए। लिहाज़ा इन बुज़ुर्गों पर यह एतिराज़ नहीं कि उन्हों ने तहज्जुद क्यों न पढ़ी। हज़रत अबू दरदाअ, हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी वग़ैरहुम सहाबा जो रात रात भर जागते थे उन का भी यही अमल था। (तफ़सीरे नईमी)

२१८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब तुम में से कोई सोता है तो शैतान उस के सर की गुद्दी में तीन गांठें लगा देता है। हर गांठ पर यही डालता है कि अभी रात बहुत है सोता रह। फिर अगर वह बन्दा जाग जाए और अल्लाह का ज़िक्र करे तो एक गांठ खुल जाती है। फिर अगर वह वुज़ू करे तो दूसरी गांठ खुल जाती है फिर अगर नमाज़ पढ़े तो तीसरी गांठ खुल जाती है और वह खुश दिल, पाक नफ़्स सुब्ह करता है वरना पलीद तबियत और सुस्त सुब्ह पाता है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

२१९) किसी ने हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु अन्हु को वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा, पूछा: क्या गुज़री। फ़रमाया: इबादतें ज़ाया हो गईं, इशारात फ़ना हो गए, सिर्फ़ तहज्जुद की रकअतें काम आईं। (तफ़सीरे नईमी)

२२०) वित्र में उलमा के तीन इख़्तिलाफ़ हैं: एक यह कि वित्र सुन्नत हैं या वाजिब? हमारे यहाँ वाजिब हैं। दूसरे यह कि वित्र एक रकअत है या तीन रकअत? हमारे यहाँ यानी हनफ़ियों में तीन रकअत हैं। तीसरे यह कि अगर तीन रकअत है तो एक सलाम से है या अलग सलाम से है, हमारे यहाँ एक सलाम से है। चौथे यह कि वित्र में दुआए कुनूत रुकूअ के बाद है या रुकूअ से पहले? हमारे यहाँ रुकूअ से पहले है। पांचवें यह कि वित्र में दुआए कुनूत हमेशा पढ़ी जाए या सिर्फ़ रमज़ान के आख़िरी १५ दिन? हमारे यहाँ हमेशा पढ़ी जाएगी। (तफ़सीरे नईमी)

२२१) कुनूते नाज़िला की वजह उन सत्तर क़ारियों की शहादत थी जो निहायत बेरहमी से क़त्ल किये गए थे। यह हज़रात बड़े ग़रीब सहाबा थे जो दिन में लकड़ियां जमा करके बेचते और जो कुछ मिलता उस से असहाबे

सुफ़्फ़ा के लिये खाना तय्यार करते थे, रात इबादत में गुज़ारते। इन्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नज्दियों में तब्लीग़ के लिये भेजा। जब यह बीरे मऊना पर पहुंचे जो मक्कए मुअज़्ज़मा और अरफ़ान के बीच है जहाँ बनी हुज़ैल रहते थे तो आमिर बिन तुफ़ैल ने क़बीलए बनी सुलैम, असिय्यह, रअल, ज़कवान, क़अरह के साथ इन्हें घेर लिया और सब को शहीद कर दिया। सिर्फ़ हज़रत कअब बिन ज़ैद अन्सारी बचे जिन्हें वह मुर्दा समझ कर सख़्त ज़ख़्मी हालत में छोड़ गए थे, फिर यह ग़ज़वए ख़न्दक़ में शहीद हुए। क़त्ल का यह वाक़िआ सन चार हिजरी में हुआ था। इन्हीं शहीदों में आमिर बिन फ़हीरह भी थे जिन्हें फ़रिश्तों ने दफ़्न किया, किसी को उन की लाश न मिली। इस वाक़ए पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सख़्त सदमा हुआ जिस पर आप ने एक माह तक क़ुनूते नाज़िला पढ़ी। इसी मौक़े पर एक वाक़िआ यह भी हुआ कि क़बीलए उज़्ल और क़अरह ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आकर अर्ज़ की कि हम मुसलमान हो चुके हैं। हमारी तालीम के लिये कुछ उलमा दीजिये। तो आप ने छः सहाबा को उन के साथ भेज दिया जिन का अमीर हज़रत आसिम इब्ने साबित को बनाया। उन काफ़िरों ने मक़ामे रजीअ में पहुंच कर हज़रते आसिम को क़त्ल कर दिया और हज़रत ख़ुबैब और ज़ैद बिन सदानह को क़ैद करके मक्कए मुअज़्ज़मा में फ़रोख़्त कर दिया। पहले वाक़ए का नाम बीरे मऊना कांड है और दूसरे का नाम रजीअ कांड है। यह दोनों कांड एक ही माह में हुए यानी हिजरत से ३६ माह बाद माहे सफ़र में। इन दोनों कांडों की बिना पर क़ुनूते नाज़िला पढ़ी गई। (तफ़सीरे नईमी)

२२२) बुज़ुर्गाने दीन फ़रमाते हैं: दो ज़ानू बैठ कर जुम्ए का ख़ुत्बा सुनना बेहतर है। पहले ख़ुत्बे में हाथ बांधे, दूसरे में ज़ानुओं पर हाथ रखे तो इन्शा अल्लाह दो रकअत का सवाब मिलेगा क्योंकि जुम्ए का फ़र्ज़ ख़ुत्बा ज़ुहर की फ़र्ज़ की दो रकअतों की जगह है। (तफ़सीरे नईमी)

२२३) एक अन्दाज़े के मुताबिक़ नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तक़रीबन पांच सौ जुम्ए पढ़े हैं इस लिये कि जुम्आ हिजरत के बाद शुरू हुआ जिस के दस साल बाद आप की हयाते ज़ाहिरी रही। इस अर्से में इतने ही जुम्ए होते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

२२४) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ईदुल फ़ित्र कभी न छोड़ी। बक़्र ईद हज में छोड़ी क्योंकि हाजी पर बक़्र ईद की नमाज़ नहीं है। (तफ़सीरे नईमी)

२२५) ईदगाह का मिम्बर मर्वान इब्ने हकम ने ईजाद किया। (तफ़सीरे नईमी)

२२६) अज़ान और तकबीर सिवाए नमाज़े पंजगाना और जुमए के किसी नमाज़ के लिये नहीं है। (तफ़सीरे नईमी)

२२७) इस्तिस्क़ा यानी रब से पानी तलब करना सुन्नत है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी तो फ़क़त दुआ फ़रमाई और कभी इस के लिये नमाज़े इस्तिस्क़ा भी पढ़ी। अब भी हर तरह जाइज़ है। बेहतर यह है कि जब बारिश के लिये दुआ करनी हो तो पहले तौबा करें फिर सदक़ा ख़ैरात दें। अगर रोज़ा भी रखें तो बेहतर है। फिर मामूली लिबास पहन कर आजिज़ी करते हुए नंगे सर नंगे पावँ ईदगाह या किसी मैदान में जमा हों। जानवर और कमज़ोर बच्चे भी साथ ले जाएं। काफ़िर और मुश्रिकों को हर गिज़ साथ न लें। फिर वहाँ नमाज़े इस्तिस्क़ा अदा करें और दुआ करें। तीन दिन तक यह अमल करें। बारिश के लिये यह दुआ बहुत ही नफ़ा पहुंचाने वाली है: अल्लाहुम्मा अग़िस्ना ग़ैसम मुग़ीसन हनीअम मरीअन मरीअन ग़दक़न मुहल्ललन सह्हन समअन। अगर यह अल्फ़ाज़ भी कह लिये जाएं तो बेहतर है: नाफ़िअन ग़ैरा दार्रिन आजिलन ग़ैरा आजिलिन। (तफ़सीरे नईमी)

२२८) उलमा फ़रमाते हैं कि जो मुस्तहब को हल्का जानेगा वह सुन्नत से मेहरूम कर दिया जाएगा और जो सुन्नत को हल्का जाने या इस में सुस्ती करे, वह फ़राइज़ से मेहरूम हो जाएगा और जो फ़राइज़ से मेहरूम है वह मअरिफ़त से दूर होगा और जब मअरिफ़त दिल से निकली तब अहले मअरिफ़त से मुहब्बत छूटी और इस के छूटने से बदअक़ीदगी पैदा होगी। (तफ़सीरे नईमी)

२२९) मर्दों के लिये फ़ज्र के अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ने के बजाए ताख़ीर करना मुस्तहब है यानी इतनी ताख़ीर करना कि अस्फ़ार हो जाए यानी इतना उजाला फैल जाए कि ज़मीन रौशन हो जाए और आदमी एक दूसरे को आसानी से पहचान सकें। (रद्दुल मोहतार)

२३०) मुसलमान का एक सज्दा फ़रिश्तों की बहुत सी इबादतों से अफ़ज़ल माना गया है क्योंकि फ़रिश्तों के लिये कोई रुकावट नहीं और मोमिनों के लिये हज़ार रुकावटें हैं। (तफ़सीरे नईमी)

२३१) इबादतों में बदनी इबादतें सब से अफ़ज़ल और बदनी इबादत में नमाज़ और नमाज़ में सज्दा सब से आला है। क़ियामत के दिन कोई इबादत न होगी मगर रब का जमाल देख कर मुसलमान उसे सज्दा करेंगे। बाक़ी इबादतें हर वक़्त हर जगह हो सकती हैं मगर नमाज़ और सज्दे के लिये वक़्त और जगह मुक़र्रर है, उसी के लिये सिम्त भी। (तफ़सीरे नईमी)

२३२) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तक ज़मीन वालों का क़िब्ला कअबतुल्लाह रहा मगर मूसा अलैहिस्सलाम से ईसा अलैहिस्सलाम तक बैतुल मक़दिस क़िब्ला बना। मगर यहूदियों ने इस का पश्चिमी हिस्सा और ईसाइयों ने पूर्वी हिस्सा अपनाया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नबुव्वत के ज़हूर के बाद और मेअराज की रात में जो सज्दे सुजूद किये वह बैतुल्लाह ही की तरफ़। मेअराज की रात में जब बैतुल मक़दिस में तमाम नबियों रसूलों की इमामत फ़रमाई तो यह नमाज़ बैतुल मक़दिस की तरफ़ हुई। मेअराज के बाद जब तक मक्कए मुअज़्ज़मा में क़ियाम रहा, बैतुल मक़दिस की तरफ़ इस तरह रुख़े अक़दस करते कि कअबा भी सामने आ जाता। मदीनए मुनव्वरा पहुंच कर इस तरह दो क़िब्लों का जमा करना संभव न था इस लिये बैतुल मक़दिस की तरफ़ नमाज़ होती रही। मगर सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यही लगन थी कि हमारा क़िब्ला कअबा हो चुनान्चे हिजरत से एक साल साढ़े पांच माह बाद १५ रजब पीर के दिन मस्जिदे बनी सलमा में मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ा रहे थे। ज़ुहर के फ़र्ज़ की दो रकअतें बैतुल मक़दिस की तरफ़ मुंह करके हो चुकी थीं कि ठीक नमाज़ की हालत में हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अल्लाह का हुक्म सुनाया और सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा समेत कअबे की तरफ़ रुख़ फेर लिया। यह नमाज़ नमाज़े क़िब्लतैन हुई और मस्जिदे बनी सलमा जामेअ क़िब्लतैन कहलाई। यह मस्जिद अब तक मौजूद है और इस का यही नाम है। फ़क़ीरे बरकाती ने अस्ल मस्जिद की ज़ियारत की है और वहाँ नवाफ़िल भी पढ़े हैं। इस में उत्तर और दक्षिण की तरफ़ दो मेहराबें भी हैं। हमारे आक़ा व मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लक़बे मुबारक नबिय्युल क़िब्लतैन भी है यानी दो क़िब्लों वाले पैग़म्बर। (तफ़सीरे अहमदी, तफ़सीरे अज़ीज़ी वग़ैरा)

२३३) जब जंगल में क़िब्ले का पता न चले तो जिधर दिल गवाही दे उधर ही मुंह करके नमाज़ पढ़ ले कि वही नमाज़ी का क़िब्ला है। अगर नमाज़ की हालत में क़िब्ले की सही सिम्त पता चले तो पिछली नमाज़ दुरुस्त है और अब उस वक़्त से अपना रुख़ बदल ले। (तफ़सीरे नईमी)

२३४) लेट कर नमाज़ पढ़ते वक़्त, मय्यित को नहलाते वक़्त और मय्यित को पूरब रुख़ क़ब्रस्तान की तरफ़ ले जाते वक़्त कअबे को पावँ कर देना जाइज़ है। (तफ़सीरे नईमी)

२३५) बुख़ारी शरीफ़ में है: बन्दा नवाफ़िल से रब का प्यारा बन जाता है

जिस से कि रब उस का कान हो जाता है जिस से वह सुनता है, उस की आँख हो जाता है जिस से वह देखता है, उस के हाथ हो जाता है जिस से वह पकड़ता है और उस के पावँ हो जाता है जिस से वह चलता है।

२३६) जिस शख़्स के हाथ और पावँ न हों उस पर वुज़ू के वक़्त दो ही फ़र्ज़ हैं: मुंह धोना और सर का मसह करना। (तफ़सीरे नईमी)

२३७) ख़ुदकुशी करने वाले पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाए, हाँ अपने माँ बाप के क़ातिल पर नमाज़े जनाज़ा न पढ़ो, वैसे ही दफ़्न कर दो। (तफ़सीरे नईमी)

२३८) मर्द अपने बीवी बच्चों के मुक़ीम होने से मुक़ीम माना जाएगा लिहाज़ा जहाँ किसी की बीवी मुक़ीम हो कर मौजूद हो वहाँ पहुंच कर यह शख़्स मुक़ीम होगा न कि मुसाफ़िर और नमाज़ पूरी पढ़ेगा न कि क़स्र। (तफ़सीरे नईमी)

२३९) एक बार हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु के घर सहाबए किराम की दावत थी। खाने के बाद शराब का दौर चला। इतने में मग़रिब का वक़्त आ गया। एक बड़े रुत्बे वाले सहाबी इमाम बने। उन्हों ने नमाज़ में सूरए काफ़िरून पढ़ी मगर नशे की हालत में हर जगह ला भूल गए यानी ला अअबुदो की जगह अअबुदो मा तअबुदुन पढ़ गए। तब क़ुरआन की यह आयत उतरी जिस का तर्जमा है कि नशे की हालत में नमाज़ के क़रीब न जाओ। इसके बाद शराब का इस्तेमाल कम हो गया। लोग या तो इशा के बाद पीते थे या फ़ज्र के बाद क्योंकि ज़ुहर से इशा तक लगातार नमाज़ों की वजह से उन्हें शराब पीने का मौक़ा नहीं मिलता था। फिर अत्बान इब्ने मालिक ने कुछ लोगों की दावत की जिनमें सअद बिन अबी वक़्क़ास भी थे। खाने के बाद शराब का दौर चला। नशे में यह लोग आपस में लड़ पड़े और ज़ख़्मी हो गए। यह मुक़द्दमा बारगाहे नबवी में पेश हुआ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दुआ की कि मौला शराब के बारे में बयान नाज़िल फ़रमा। तब वहीये इलाही उतरी और शराब बिल्कुल हराम कर दी गई। (रूहुल मआनी, तफ़सीरे नईमी)

२४०) हदीस शरीफ़ में है कि जुम्ए की रात में अपनी बीवी के साथ सोने वाले को दो सवाब मिलते हैं एक अपने ग़ुस्ल का दूसरा बीवी के ग़ुस्ल का। (तफ़सीरे नईमी)

२४१) क़ुरआने मजीद में जिस सलाते वुस्ता का ज़िक्र है यानी बीच की नमाज़, उस से मुराद अस्र है। इस की कुछ दलीलें यह हैं: एक, ख़न्दक़ के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़े अस्र क़ज़ा हो गई तो फ़रमाया कि इन काफ़िरों ने हमें सलाते वुस्ता से रोक दिया। दो, रब ने क़ुरआन में

अस्र के वक़्त की क़सम याद फ़रमाई है। तीन, हदीस शरीफ़ में है कि जिस शख़्स की नमाज़े अस्र रह गई तो गोया उस का माल और घर बरबाद हो गया। चार, नमाज़े अस्र में दिन रात के फ़रिश्ते जमा होते हैं कि दिन के जा नहीं पाते और रात के आ जाते हैं। पांच, अस्र ही की नमाज़ हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम से रह गई थी कि आप घोड़ों में मशग़ूल हो कर यह नमाज़ न पढ़ सके थे। छः, अस्र से पहले दिन की दो नमाज़ें हैं एक नाक़ाबिले क़स्र और दूसरी क़सरी यानी ज़ुहर। और इस के बाद रात की दो नमाज़े हैं एक नाक़ाबिले क़स्र यानी मग़रिब दुसरी क़सरी यानी इशा तो गोया अस्र की नमाज़ बिल्कुल बीच की नमाज़ है। सात, मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम की अस्र के लिये डूबा हुआ सूरज वापस किया गया। आठ, क़ब्र में नकीरैन के सवाल के वक़्त मुर्दे को अस्र का वक़्त मेहसूस होता है तो वह अर्ज़ करता है कि पहले मुझे अस्र पढ़ लेने दो फिर सवालात करना। गोया इस नमाज़ की पाबन्दी उस आख़िरी इम्तिहान में मदद देगी। नौ, तमाम नमाज़ों के औक़ात मेहसूस होते हैं पर अस्र का वक़्त मेहसूस नहीं होता लिहाज़ा इस की पाबन्दी ज़रूरी। देखो, पौ फटने से फ़ज्र, सूरज ढलने से ज़ुहर, सूरज डूबने से मग़रिब और शफ़क़ ग़ायब होने से इशा का वक़्त आता है मगर अस्र के वक़्त कोई निशानी नहीं है। (तफ़सीरे कबीर)

२४२) नमाज़ की बहुत सी क़िस्में हैं: एक, नमाज़े पंजगाना। दो, नमाज़े जुम्आ। तीन, वित्र। चार, ईदैन। पांच, नमाज़े मन्नत। छः नमाज़े नफ़्ल। फिर नफ़्ल नमाज़ की बहुत सी क़िस्में हैं: एक तहय्यतुल मस्जिद। दो, तहय्यतुल वुज़ू। तीन, नमाज़े इशराक़। चार, नमाज़े चाश्त। पांच, सफ़र की नमाज़। छः वापसी की नमाज़। सात, इस्तिख़ारे की नमाज़। आठ, सलातुत तस्बीह। नौ, हाजत की नमाज़। दस, नमाज़े अव्वाबीन। ग्यारह, सलातुल असरार यानी नमाज़े ग़ौसिया। बारह, नमाज़े तौबा। तेरह, ग़ायब की नमाज़। चौदह, नमाज़े तरावीह। पन्द्रह, नमाज़े क़ज़ाए उम्री। सोलह, सूरज ग्रहण और चन्द्र ग्रहण की नमाज़। सत्तरह, बारिश की नमाज़। अट्ठारह, नमाज़े तहज्जुद। (तफ़सीरे नईमी)

२४३) सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं, नमाज़ें पांच हैं: एक, सर की नमाज़ जिस में ग़ैब का मुशाहिदा है। दो, नफ़्स की नमाज़ जिस से नफ़्स की ख़्वाहिशें बुझ जाएं। तीन, नमाज़ें क़ल्ब जिस में कश्फ़ के अनवार ज़ाहिर हों। चार, रूह की नमाज़ जिस में विसाल हो। पांच, बदन की नमाज़ जिस में हवास की हिफ़ाज़त हो। (तफ़सीरे नईमी)

२४४) बहुत कम लोग जानते हैं कि जुमए का दिन वहम परस्त मसीहियों

के यहाँ मन्हूस समझा जाता है और शादी ब्याह के मामले में इस दिन से ख़ास तौर पर बचा जाता है। नहूसत की दलील यह दी जाती है कि इब्नुल्लाह (मआज़ल्लाह) को इसी दिन सूली पर चढ़ाया गया था। कुरआने मजीद ने जुम्ए के दिन का ख़ास तौर पर ज़िक्र करके मसीहियों का भरपूर रद फ़रमाया है। (तफ़सीरे नईमी)

२४५) इस्लाम के शुरू के दिनों में मदीनए मुनव्वरा में जुम्ए का ख़ुत्बा नमाज़ के बाद होता था। (तफ़सीरे नईमी)

२४६) हदीस शरीफ़ में है कि इमाम के साथ तकबीरे ऊला में शरीक होना हज़ार हज और उमरे से बेहतर है और इतना सवाब मिलता है गोया उहद पहाड़ के बराबर सोना मिस्कीनों को ख़ैरात किया। फिर हर रकअत के बदले एक साल की इबादत का अज्र इनायत होता है और नमाज़ी के लिये ख़लासी के दो परवाने लिखे जाते हैं, एक आग से दूसरा निफ़ाक़ से निजात का। ऐसा आदमी जन्नत में अपना ठिकाना अपनी आँखों से देख कर दुनिया से उठेगा और बिला हिसाब जन्नत में जाएगा। (मजालिसुल अनवार)

२४७) हदीस में है कि तहारत पर हमेशगी करना रोज़ी में कुशादगी पैदा करता है गोया जो शख़्स हमेशा पाक साफ़ और बावुज़ू रहना अपनी आदत बना ले उसे रिज़्क़ की तंगी नहीं होती। (तफ़सीरे नईमी)

२४८) अगले ज़माने में शैतान मुजस्सम नज़र आया करता था। एक शख़्स ने उसे देख कर कहा: मैं तुझ जैसा बनना चाहता हूँ। शैतान बोला: आज तक यह फ़रमाइश मुझ से किसी ने नहीं की, आख़िर तुम्हें ऐसी क्या ज़रूरत है? जवाब दिया: मैं इसे पसन्द करता हूँ। शैतान ने कहा: मुझ जैसा बनना चाहते हो तो नमाज़ों में काहिली करते रहो और झूटी क़सम की परवाह न किया करो। उस शख़्स ने कहा: मैं ख़ुदा से अहद करता हूँ कि कभी नमाज़ तर्क नहीं करूंगा और न क़सम खाऊंगा। इब्लीस कहने लगा: तेरे सिवा फ़रेब देकर मुझ से किसी ने नसीहत हासिल नहीं की। आज से मैं किसी आदमी को नसीहत नहीं करूंगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

२४९) मख़दूमे मिल्लत शैख़ मीना लखनवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया: सूफ़ी को एक करवट से दूसरी करवट बदलना बिना वुज़ू के हराम है कि अगर जान उसी वक़्त निकल जाए तो रूह जिस्म से बेवुज़ू निकलेगी। और जो शख़्स बावुज़ू रहता है और इस हालत में उसे मौत आती है तो उसे शहादत का मर्तबा दिया जाता है। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

२५०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: नमाज़ में दो

मूज़ियों को मार दिया करो, एक सांप को दूसरे बिच्छू को। (तफ़सीरे नईमी)

२५१) एक शख़्स अस्र की नमाज़ के बाद अकसर दो रकअत नफ़्ल पढ़ता था। उस ने अपने इस अमल के बारे में हज़रत सईद बिन मुसय्यब रज़ियल्लाहु अन्हु से सवाल कियाः क्या अल्लाह तआला मुझे इस नमाज़ की वजह से अज़ाब देगा? हज़रत ने फ़रमायाः नहीं, नफ़्ल पर तो अल्लाह तआला तुझे अज़ाब नहीं देगा लेकिन सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुख़ालिफ़त की वजह से अल्लाह तआला ज़रूर तुझे अज़ाब देगा। (मुस्नदे दारिमी)

२५२) रात के वक़्त आठ रकअत से ज़्यादा और दिन के वक़्त में चार रकअत से ज़्यादा एक सलाम से नफ़्ली नमाज़ पढ़ना हनफ़ी उलमा के नज़्दीक मकरूह है। इस लिये मकरूह है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन से इस का कोई सुबूत नहीं है। (तफ़सीरे नईमी)

२५३) एक बार हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दरिया के किनारे जा रहे थे कि आप की नज़र एक सफ़ेद नूरानी रंग के जानवर पर पड़ी। आप ने मुलाहिज़ा फ़रमाया कि वह जानवर दरिया की कीचड़ में लोट पोट रहा है जिस से उस का बदन मैला हो जाता है। वह जानवर वहाँ से निकल कर दरिया में नहाता है जिस से वह फिर से उजला हो जाता है। यही अमल उस जानवर ने पांच बार किया। हज़रत रूहुल्लाह अलैहिस्सलाम को जानवर की हरकत पर हैरत हुई। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने आप को हैरत में देख कर अर्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के नबी, यह जानवर जो आप को दिखाया गया है यह उम्मते मुहम्मदिया के नमाज़ियों की मिसाल है और यह दरिया उन की नमाज़ों की मिसाल है। यह कीचड़ में लोटना उन के गुनाहों की मिसाल है। जिस तरह यह जानवर कीचड़ में लोटा और नहा कर पाक साफ़ हो गया, उसी तरह उम्मते मुहम्मदिया के गुनहगार इन पांच नमाज़ों के सबब अपने गुनाहों से पाक साफ़ हो जाएंगे। (नुज़्हतुल क़ारी)

२५४) हज़रत सय्यदुना अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो कोई अल्लाह तआला के लिये चालीस दिन तकबीरे ऊला के साथ बा जमाअत नमाज़ पढ़े उस के लिये दो आज़ादियाँ लिख दी जाती हैं एक नार से दूसरी निफ़ाक़ से। (तिर्मिज़ी)

२५५) ईदैन और जुम्आ के लिये जमाअत भी शर्त है। इस्लामी बहनों को जमाअत से नमाज़ अदा करना गुनाह है इस लिये उन पर ईद की नमाज़ नहीं है और जुम्आ की जगह वह हस्बे मामूल ज़ुहर पढ़ें। वह पांचों वक़्त की नमाज़

तन्हा अपने घर में ही पढ़ें, बल्कि अन्दर के कमरे में पढ़ें तो ज़्यादा बेहतर है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः औरत का दालान (यानी बड़े कमरे) में नमाज़ पढ़ना सहन में पढ़ने से बेहतर है और कोठरी में पढ़ना दालान से बेहतर है। (अबू दाऊद)

२५६) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स वुज़ू करके मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिये निकले, यह उस के लिये एक हज के बराबर है। (तफ़सीरे नईमी)

२५७) कअबे को मुंह करना सिर्फ़ नमाज़ में फ़र्ज़ है। तिलावते क़ुरआन, वुज़ू, क़ुरबानी के वक़्त सुन्नत, शैतान को कंकरियाँ मारने के वक़्त मकरूह और पेशाब पाख़ाने की हालत में हराम है। (तफ़सीरे नईमी)

२५८) हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला ने बैतुल मअमूर की एक जानिब सफ़ेद चांदी का मीनार पैदा किया है जिस की लम्बाई सौ बरस की राह है। जुम्ए के दिन हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम इस मीनार पर चढ़ कर अज़ान देते हैं, हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम मिम्बर पर चढ़ कर ख़ुत्बा पढ़ते हैं, हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम इमाम बनते हैं और दूसरे फ़रिश्ते मुक़्तदी। नमाज़ के बाद हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम कहते हैं कि इस अज़ान से जो सवाब हासिल हुआ है मैं ने उम्मते मुहम्मदिया के मुअज़्ज़िनों को बख़्शा, हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम कहते हैं कि मैं ने ख़ुत्बे का सवाब रूए ज़मीन के ख़तीबों को बख़्शा, हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम कहते हैं मैं ने इमामत का अज्र जुम्ए के इमामों को हिबा किया, दूसरे फ़रिश्त कहते हैं कि हम ने जमाअत का सवाब उन लोगों के नाम किया जो इमाम के पीछे जुम्ए की नमाज़ अदा करते हैं। इस के बाद अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ फ़रिश्तो, क्या तुम हमारे सामने अपनी सख़ावत का इज़्हार करना चाहते हो? हमें अपनी इज़्ज़तो जलाल की क़सम, आज हम ने उन तमाम नमाज़ियों को बख़्श दिया जो हमारा इरशाद बजा लाने और हमारे हबीब की इक़्तिदा करने की नियत से जुम्आ अदा कर चुके। (ज़ुब्दतुल वाइज़ीन)

२५९) हज़रत सईद इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु रमज़ान में इमामत फ़रमाते तो एक रात में आप हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की क़िरअत करते, दूसरी रात में हज़रत ज़ैद इब्ने साबित रज़ियल्लाहु अन्हु की, तीसरी रात में किसी और सहाबी की। इस तरह पूरे रमज़ान हर रात नई क़िरअत होती थी। (तफ़सीरे नईमी)

२६०) एक दिन हज़रत अबू तल्हा अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु अपने बाग़ में नमाज़ पढ़ रहे थे। एक चिड़िया उड़ती हुई आई और बाग़ चूंकि घना था और खजूरों की शाख़ें आपस में मिली हुई थीं, उन में फंस गई और निकलने की राह ढूंडने लगी। हज़रत अबू तल्हा को अपने बाग़ की शादाबी और चिड़िया की उछल कूद का मन्ज़र पसन्द आया और उसे थोड़ी देर तक देखते रहे, फिर नमाज़ की तरफ़ तवज्जह की तो यह याद न आया कि कितनी रकअतें पढ़ी हैं। दिल में यह कहा कि इस बाग़ ने यह फ़ितना पैदा किया। फ़ौरन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और वाक़िआ बयान करने के बाद कहा: या रसूलल्लाह! मैं इस बाग़ को सदक़ा करता हूँ। (उस्वए सहाबा)

२६१) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: वुज़ू के लिये एक शैतान है जिस का नाम वल्हान है जो आदमी को वुज़ू और पानी ज़ाया करने में वसवसे डालता है। (तफ़सीरे नईमी)

२६२) कल क़ियामत में मुअज़्ज़िन के ईमान की गवाही हर वह ज़र्रा देगा जो उस की अज़ान सुना करता था। (तफ़सीरे नईमी)

२६३) काफ़िर पर मुसलमान होते ही नमाज़ फ़र्ज़ है, नमाज़ सीखने का ज़माना घटाया न जाएगा। अगर ज़ुहर के वक़्त ईमान लाया तो उसी वक़्त नमाज़ पढ़े। जमाअत में इमाम के पीछे खड़ा हो जाए। अगर नमाज़ सीखने में कुछ दिन लगें तो उन दिनों की नमाज़ क़ज़ा करे। हाँ अगर औरत हैज़ की हालत में मुसलमान हुई है तो उस पर पाक होने के बाद ही नमाज़ फ़र्ज़ होगी। (तफ़सीरे नईमी)

२६४) शरीअत में चोरी सिर्फ़ माल की होती है, तरीक़त में चोरी आमाल की भी होती है। हदीस शरीफ़ में है कि सब से बुरा चोर वह है जो अपनी नमाज़ में चोरी करे। सहाबए किराम ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! नमाज़ में चोरी कैसे होती है? फ़रमाया: नमाज़ में रुकूअ और सज्दा पूरा न करना नमाज़ की चोरी है। (रूहुल बयान)

२६५) रब फ़रमाता है: अगर तुम पानी न पाओ तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो। पानी न पाने की कई सूरतें हैं पानी मौजूद न हो, पानी का कुंवां हो मगर डोल और रस्सी न हो, पानी पर दुशमन या साँप का क़ब्ज़ा हो, पानी मौजूद है, क़ब्ज़ा भी है मगर बीमारी की वजह से इस्तेमाल नहीं कर सकते, इन तमाम सूरतों में तयम्मुम जाइज़ है। (तफ़सीरे नईमी)

२६६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स जमाअत

से अलग होगा अल्लाह तआला उस से कलिमए शहादत रोक लेगा। आप ने फ़रमायाः मेरे पास मीकाईल और जिब्रईल आए और यह कहा कि अल्लाह तआला सलाम के बाद फ़रमाता है कि आप की उम्मत में जो जमाअत को छोड़ने वाला होगा उसे जन्नत की ख़ुश्बू तक न मिलेगी, चाहे उस के अमल कितने ही ज़्यादा क्यों न हों। जमाअत तर्क करने वाला दुनिया और आख़िरत दोनों में मलऊन है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

२६७) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कोहे बैतुल मक़दिस की तरफ़ गए तो आबिदों की एक जमाअत देखी जो इन्तिहा दर्जे की कोशिश से अल्लाह की इबादत में मसरूफ़ थी। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछाः आप लोग कौन हैं? अर्ज़ कियाः हम आप की उम्मत में हैं और सत्तर बरस से इबादत कर रहे हैं। सब्र हमारा लिबास, घास हमारी ख़ुराक और बारिश हमारा पानी है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बहुत ख़ुश हुए। अल्लाह तआला ने वही भेजीः ऐ मूसा, उम्मते मुहम्मदिया के लिये एक ख़ास दिन मुक़र्रर किया गया है उस में दो रकअतें पढ़ लेनी इस सत्तर बरस की इबादत से अफ़ज़ल हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहाः इलाही वह कौन सा दिन है? इरशाद हुआः जुम्ए का। मूसा अलैहिस्सलाम ने इस दिन के मिलने की आरज़ू की। हुक्म हुआः सनीचर तुम्हारे लिये है, इतवार ईसा के लिये, पीर इब्राहीम के लिये, मंगल ज़करिया के लिये, बुध यहया के लिये, जुमेरात आदम के लिये, जुम्आ मुहम्मद और उन की उम्मत के लिये। अला नबिय्यिना व अलैहिमुस्सलाम। (ज़ुब्दतुल वाइज़ीन)

२६८) रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआला ने कई बातों में हमें लोगों पर फ़ज़ीलत दी है। उन में यह तीन बातें हैं: एक, हमारी सफ़ें फ़रिश्तों की सफ़ों की तरह की गईं। दो, हमारे लिये तमाम ज़मीन मस्जिद कर दी गई। तीन, जब हम पानी न पाएं ज़मीन की मिट्टी हमारे लिये पाक करने वाली बना दी गई। (सही मुस्लिम शरीफ़)

२६९) उम्मते मुहम्मदिया के ख़साइस में से पांच नमाज़ें भी हैं। पिछली उम्मतों में चार नमाज़ें थीं, इशा की नमाज़ नहीं थी। सब से पहले हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इशा की नमाज़ अदा की। हदीस में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः इशा की नमाज़ में ताख़ीर करो (एक तिहाई रात तक) इस लिये कि तुम्हें पिछली उम्मतों की नमाज़ों पर फ़ज़ीलत दी गई है। (तफ़सीरे नईमी)

२७०) हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम से रिवायत है कि फ़रमायाः सब से पहले जिस नमाज़ में हम ने रुकूअ किया वह अस्र की

नमाज़ थी। (तफ़्सीरे नईमी)

२७१) एक रिवायत में आया है कि बनी इस्राईल में एक शख़्स था जिस ने हज़ार साल तक ख़ुदा की राह में जिहाद किया था और अपने जिस्म से हथियार न उतारे थे। सहाबा कहते लगेः क्या हम में से किसी में इतनी ताक़त है जो ऐसा कर सकें। उस वक़्त सूरए क़द्र नाज़िल हुई कि शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है और इस एक रात में क़ियाम करना हज़ार महीने राहे ख़ुदा में जिहाद करने से अफ़ज़ल है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

२७२) एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछाः कल तुम मुझ से पहले जन्नत में कैसे दाख़िल हो गए? उन्हों ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, मेरा मअमूल है कि जब अज़ान कहता हूँ तो दो रकअत नमाज़ लाज़मी तौर पर पढ़ लेता हूँ और जिस वक़्त वुज़ू टूट जाता है उसी वक़्त फ़ौरन वुज़ू कर लेता हूँ। (मुस्तदरक, हाकिम, जिः ३)

२७३) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पांचों वक़्त मिस्वाक फ़रमाते थे और फ़रमातेः अगर उम्मत पर बोझ न होता तो मैं पंजगाना नमाज़ के साथ मिस्वाक करने का भी हुक्म देता। (उस्वए सहाबा)

२७४) हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस शिद्दत के साथ मिस्वाक का इस्तेमाल अपने ऊपर लाज़िम किया कि हमेशा कान पर क़लम की तरह मिस्वाक रखे रहते थे। (अबू दाऊद)

२७५) कुछ लोग शबे क़द्र या रमज़ान के आख़िर में जो नमाज़ क़ज़ाए उमरी के नाम से पढ़ते हैं और यह समझते हैं कि उम्र भर की क़ज़ा नमाज़ों के लिये यह काफ़ी है, यह बिल्कुल ग़लत और बातिल ख़्याल है। (क़ानूने शरीअत)

२७६) उलमाए अहले सुन्नत ने हर मुसलमान के पीछे नमाज़ पढ़ने को जाइज़ क़रार दिया है चाहे सालेह (नेक) हो चाहे फ़ासिक अल्बत्ता फ़ासिक़े मोअल्लिन को इमाम बनाना गुनाह है और उस के पीछे नमाज़ पढ़नी मकरूहे तहरीमी कि पढ़नी गुनाह और फेरनी वाजिब। अगर जुम्ए में दूसरा इमाम न मिल सके तो जुम्आ पढ़ें कि वह फ़र्ज़ है। इसी तरह अगर उस के पीछे न पढ़ने में फ़ितना हो तो पढ़ लें बाद में दोहरा लें। (फ़तावए रज़विया)

२७७) हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैंः मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नमाज़ में इधर उधर देखने के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमायाः यह एक तरह की चोरी है जो शैतान बन्दे की

नमाज़ में से कर लेता है। (बुख़ारी शरीफ़)

२७८) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: लोग यह क्या करते हैं कि नमाज़ में अपनी नज़र आसमान की तरफ़ उठाते हैं। फिर इस के बारे में आप की गुफ़्तगू बहुत सख़्त हो गई यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: इस से बाज़ आएं वरना उन की बीनाइयाँ ले ली जाएंगी। (बुख़ारी)

२७९) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम में से जो कोई अपना सर इमाम से पहले उठा लेता है वह इस बात का ख़ौफ़ नहीं करता कि अल्लाह उस का सर गधे का सा सर बना दे या अल्लाह उस की सूरत गधे की सी सूरत कर दे। (बुख़ारी शरीफ़)

२८०) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सात हड्डियों पर सज्दा करूं और (नमाज़ की हालत में) न बाल दुरुस्त करूं न लिबास। (बुख़ारी शरीफ़)

२८१) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सज्दों में एतिदाल करो और कोई शख़्स अपनी दोनों कोहनियाँ (ज़मीन पर) इस तरह न बिछाए जिस तरह कुत्ता बिछा लेता है। (बुख़ारी शरीफ़)
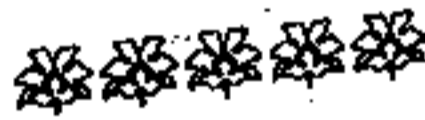
तेरहवाँ अध्याय

माहे रमज़ान, रोज़ा और एतिकाफ़

१) रोज़ा नबुव्वत के पन्द्रहवें साल यानी दस शव्वाल सन दो हिजरी में फ़र्ज़ हुआ। तफ़सीरे कबीर और तफ़सीरे अहमदी में है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक हर उम्मत पर रोज़े फ़र्ज़ रहे। चुनान्चे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर कमरी महीने की तेरहवीं, चौदहवीं और पन्द्रहवीं के रोज़े और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत पर आशूरे का रोज़ा फ़र्ज़ रहा। बाज़ रिवायतों में है कि सब से पहले हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने रोज़े रखे। (तफ़सीरे नईमी, जिः २)

२) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सरकारे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जब माहे रमज़ान शुरू होता है तो आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयातीन ज़न्जीरों में जकड़ दिये जाते हैं। (अनवारुल हदीस)

३) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जो शख़्स ईमान के साथ सवाब की उम्मीद से रोज़ा रखेगा तो उस के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और जो ईमान के साथ सवाब की नियत से रमज़ान की रातों में क़ियाम यानी तरावीह की नमाज़ पढ़ेगा तो उस के भी अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और जो ईमान के सवाब की नियत से शबे क़द्र में क़ियाम करेगा उस के भी अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे। (मुस्लिम शरीफ़)

४) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब माहे रमज़ानुल मुबारक की पहली रात होती है तो शयातीन और सरकश जिन्न क़ैद कर लिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं, इन में से कोई दरवाज़ा खोला नहीं जाता और जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, इन में से कोई दरवाज़ा बन्द नहीं किया जाता और पुकारने वाला पुकारता हैः ऐ भलाई तलब करने वाले मुतवज्जह हो और ऐ बुराई का इरादा रखने वाले बुराई से दूर रह और अल्लाह तबारक व तआला बहुत से लोगों को दोज़ख़ से आज़ाद करता है और हर रात ऐसा ही होता है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

५) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः रमज़ान आया, यह बरकत का महीना है। अल्लाह

तबारक व तआला ने इस के रोज़े तुम पर फ़र्ज़ किये। इस में आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और सरकश शयातीन को तौक़ पहना दिये जाते हैं और इस में एक रात ऐसी होती है जो हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है जो इस की बरकतों से मेहरूम रहा वह बेशक मेहरूम रहा। (निसाई)

६) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सरकार नबीये मुकर्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः मेरी उम्मत को रमज़ान शरीफ़ में पांच चीज़ें मख़सूस तौर पर दी गई हैं जो पहली उम्मतों को नहीं मिलीं। एक यह कि उन के मुंह की बू अल्लाह तआला के नज़्दीक मुश्क से ज़्यादा पसन्दीदा है और दरिया की मछलियां इफ़्तार के वक़्त तक दुआ करती हैं और जन्नत हर रोज़ उन के लिये सजाई जाती है। फिर हक़ तआला इरशाद फ़रमाता हैः क़रीब है कि मेरे बन्दे मशक़्क़तें अपने ऊपर से फेंक कर तेरी (जन्नत की) तरफ़ आएं और सरकश शयातीन को क़ैद कर दिया जाता है कि वह रमज़ान में उन बुराइयों की तरफ़ नहीं पहुंच सकते और रमज़ान की आख़िरी रात में रोज़ादारों के लिये मग़फ़िरत की जाती है। सहाबए किराम ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! क्या मग़फ़िरत की रात शबे क़द्र है? फ़रमायाः नहीं।, बल्कि मज़दूर का काम ख़त्म होने के वक़्त मज़दूरी दे दी जाती है। (बेहक़ी)

७) हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रमज़ानुल मुबारक के क़रीब इरशाद फ़रमायाः रमज़ान का महीना आ गया है जो बड़ी बरकत वाला है। रब तबारक व तआला इस में तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह होता है और अपनी ख़ास रहमत नाज़िल फ़रमाता है, ख़ताओं को माफ़ करता है, दुआ क़ुबूल करता है, तुम्हारे तनाफ़ुस (दूसरे के हिर्स में काम करने को तनाफ़ुस कहते हैं) को देखता है और मलाइका से फ़ख़्र करता है। पस अल्लाह को नेकी दिखलाओ। बद नसीब है वह शख़्स जो इस माह में भी अल्लाह की रहमत से मेहरूम रह जाए। (तबरानी)

८) हदीसे पाक में आया है कि रमज़ान शरीफ़ की हर रात आसमानों में सुब्हे सादिक़ तक एक पुकारने वाला यह पुकारता है कि ऐ भलाई के मांगने वाले भलाई मांगना ख़त्म कर और ख़ुश हो जा कि तेरी दुआ क़ुबूल हो चुकी है। और ऐ शरीर, शर से बाज़ आ जा और इबरत हासिल कर। है कोई मग़फ़िरत का तालिब कि उस की तलब पूरी की जाए। है कोई तौबा करने वाला कि उस की तौबा क़ुबूल की जाए। है कोई दुआ मांगने वाला कि उस की दुआ क़ुबूल की जाए। है कोई साइल कि उस का सवाल पूरा किया जाए।

अल्लाह तबारक व तआला रमज़ानुल मुबारक की हर शब में इफ़्तार के वक़्त साठ हज़ार गुनहगारों को दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमा देता है और ईद के दिन सारे महीने के बराबर गुनाहों की बख़्शिश की जाती है। (ज़वाजर)

९) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जो शख़्स जान बूझ कर बिना शरई उज़्र के एक दिन भी रमज़ान का रोज़ा छोड़े फिर ग़ैर रमज़ान का रोज़ा चाहे तमाम उम्र रखे तो उस का बदल नहीं हो सकता। (अहमद, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा, दारिमी, बुख़ारी शरीफ़)

१०) एक मौके पर सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जब रमज़ान की पहली रात होती है तो अल्लाह तआला अपनी मख़लूक़ की तरफ़ नज़रे करम फ़रमाता है और जब अल्लाह तआला किसी बन्दे की तरफ़ नज़रे करम फ़रमाए तो उसे कभी अज़ाब न देगा। और हर रोज़ दस लाख गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और जब उन्तीसवीं रात होती है तो महीने भर में जितने आज़ाद हुए उन के मज्मूए के बराबर एक रात में आज़ाद करता है। फिर जब ईदुल फ़ित्र की रात आती है तो मलाइका ख़ुशी करते हैं और अल्लाह तआला अपने नूर की ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और फ़रिश्तों से कहता है: ऐ गिरोहे मलाइका, उस मज़दूर का क्या बदला है जिस ने काम पूरा कर लिया। मलाइका अर्ज़ करते हैं: उस को पूरा पूरा अज्र दिया जाए। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़रमाता है: तुम गवाह रहना कि मैं ने सब को बख़्श दिया। (अस्बहानी बहवालए बहारे शरीअत)

११) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ख़ुद हक़ तआला और उस के फ़रिश्ते सेहरी खाने वालों पर रहमत नाज़िल करते हैं। (तबरानी)

१२) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सब्र ईमान का आधा हिस्सा है और रोज़ा सब्र का आधा हिस्सा। इन्सान का हर अमल मज़ालिम के बदले में जाता रहता है मगर रोज़ा किसी के बदले में ज़ाया नहीं होता बल्कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन यह फ़रमाएगा कि रोज़े को मुझ से ताल्लुक़ है इस के ज़रिये कोई अपना बदला नहीं ले सकता। (अल हदीस)

१३) हज़रत सहल बिन तस्तरी रहमतुल्लाहि अलैहि हर १५ दिन के बाद एक बार खाना खाते और जब माहे रमज़ान आता तो ईदुल फ़ित्र तक कुछ न खाते। इस के बावजूद आप रोज़ाना चार सौ रकअतें नमाज़ पढ़ते थे। अरबाबे इल्म बयान करते हैं कि आप जिस दिन पैदा हुए तो रोज़े से थे और जिस

दिन दुनिया से रुख़सत हुए उस दिन भी रोज़े से थे। किसी ने पूछा यह किस तरह? बताया गया कि उन की पैदाइश का वक़्त सुब्हे सादिक़ था और शाम तक उन्हों ने दूध न पिया और वह दुनिया से रुख़सत हुए तो वह रोज़े की हालत में थे। यह बात हज़रत अबू तल्हा मालिकी रहमतुल्लाहि अलैहि ने बयान फ़रमाई। (कश्फ़ुल महजूब)

१४) सय्यिदुल तायफ़ा हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैहि हमेशा रोज़ा रखते थे लेकिन अल्लाह वाले दोस्तों में से कोई आता तो उस की वजह से रोज़ा खोल देते और फ़रमाते थे कि ऐसे दोस्तों के साथ खाने की फ़ज़ीलत कुछ रोज़े की फ़ज़ीलत से कम नहीं है। (अवारिफ़ुल मआरिफ़)

१५) हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमतुल्लाहि अलैहि रमज़ान में अव्वल से आख़िर तक कुछ न खाते थे हालांकि शदीद गर्मी का ज़माना होता और रोज़ाना गेहूं की मज़दूरी को जाते थे और जितनी मज़दूरी मिलती थी वह सब फ़क़ीरों में बाँट देते थे और रात भर इबादत करते और नमाज़ें पढ़ते यहाँ तक कि दिन निकल आता और वह लोगों की नज़रों के सामने रहते थे और लोग उन्हें देखा करते कि वह कुछ खाते पीते नहीं हैं और रात को सोते भी नहीं हैं। (अहकामुस सियाम वल एतिकाफ़ लेखक सूफ़ी शब्बीर अहमद चिश्ती)

१६) हज़रत शैख़ अबू नस्त्र सिराज रहमतुल्लाहि अलैहि जिन्हें ताऊसुल फ़ुक़रा कहा जाता है, जब रमज़ान आया तो बग़दाद पहुंचे और मस्जिदे शअरीज़ियह में क़ियाम फ़रमाया तो उन्हें अलग कोठरी दी गई और दुर्वेशों की इमामत उन के सिपुर्द कर दी गई। चुनान्चे ईद तक उन्हों ने इमामत फ़रमाई और तरावीह में पांच ख़त्म किये और हर रात ख़ादिम उन की कोठरी में एक रोटी ले जाता। जब ईद का दिन आया तो वह नमाज़ पढ़ा कर चले गए तो ख़ादिम ने कोठरी में नज़र डाली तो तीसों रोटियां यूँही अपनी जगह पर थीं। (कश्फ़ुल महजूब)

१७) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सरकार नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जो शख़्स रोज़ादार का रोज़ा खुलवाए तो उस को भी रोज़ादार के बराबर सवाब मिलता है और रोज़ादार के सवाब में भी कुछ कमी नहीं होती। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

१८) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो फ़ी सबीलिल्लाह एक दिन का रोज़ा रखे तो अल्लाह तआला उस के और दोज़ख़ की आग के बीच इस क़दर ख़न्दक़ बनाता है जिस क़दर आसमान और ज़मीन के बीच की दूरी है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

१९) हज़रत अब्बास बिन हनीफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैं ने सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु से रजब के रोज़े की कैफ़ियत पूछी तो उन्हों ने कहा कि मैं ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से सुना वह कहते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोज़ा रखते थे तो गुमान होता था कि अब इफ़्तार ही नहीं करेंगे और जब छोड़ते थे तो गुमान होता था कि अब रोज़ा ही न रखेंगे। (अबू दाऊद)

२०) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोज़ा रखते थे तो मेहसूस होता था कि रखते ही चले जाएंगे और जब छोड़ते थे तो यह गुमान होता था कि अब न रखेंगे। मैंने उनको रमज़ान के अलावा कभी पूरे महीने का रोज़ा रखते हुए न पाया, न किसी और महीने में इतने रोज़े रखते जितना कि शअबान में रखते थे। (अबू दाऊद)

२१) हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिस ने रमज़ान का रोज़ा रखा उस के बाद शव्वाल के छः रोज़े रखे तो वह साइमुद दहर है यानी उस ने पूरी ज़िन्दगी रोज़े में गुज़ारी। (तिर्मिज़ी)

२२) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बन्दे के आमाल अल्लाह तआला के सामने पीर और जुमेरात को पेश किये जाते हैं तो मैं पसन्द करता हूँ कि मेरे आमाल इस हाल में पेश किये जाएं कि मैं रोज़े से हूँ। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

२३) अय्यामे बैज़ यानी हर माह की तेरहवीं, चौदहवीं और पन्द्रहवीं तारीख़ के रोज़ों की बड़ी फ़ज़ीलत आई है। शैख़ अबू नस्र रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु की सनद से फ़रमाया कि तेरह तारीख़ का रोज़ा तीन हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर है और चौदह तारीख़ का रोज़ा दस हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर है और पन्द्रहवीं का रोज़ा एक लाख तेरह हज़ार रोज़ों के बराबर है। (निसाई शरीफ़)

२४) हज़रत सईद इब्ने अबी हिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की उन्हों ने फ़रमाया कि सरकार नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे इन तीन बातों की वसियत की कि मरते दम तक महीने के तीन रोज़े (यानी अय्यामे बैज़ के रोज़े) रखूं और मरने से पहले चाश्त और वित्र की नमाज़ न छोडूं। (ग़ुनियतुत तालिबीन)

२५) रोज़े की हालत में औरत का बोसा लिया या छुआ या मुबाशिरत की

या गले लगाया और यह सब करने में अन्ज़ाल हो गया तो रोज़ा टूट जाएगा। (बहारे शरीअत)

२६) औरत को कपड़े के ऊपर से छुआ और कपड़ा इतना मोटा है कि बदन की गर्मी मेहसूस नहीं होती तो रोज़ा फ़ासिद नहीं हुआ अगर्चे अन्ज़ाल हो गया। (बहारे शरीअत)

२७) नाक में बलग़म जमा हो गया और सांस के ज़रिये खींच कर निगल लिया तो रोज़ा न गया। अपना ही थूक हाथ पर लेकर निगल लिया तो रोज़ा जाता रहा। (बहारे शरीअत)

२८) मुसाफ़िर ने इक़ामत की, हैज़ो निफ़ास वाली औरत पाक हो गई, मरीज़ था अच्छा हो गया, काफ़िर था मुसलमान हो गया और मज्नून को होश आ गया, नाबालिग़ था बालिग़ हो गया, इन सब सूरतों में जो कुछ दिन का हिस्सा बाक़ी रह गया हो उसे रोज़े की तरह गुज़ारना वाजिब है। (बहारे शरीअत)

२९) पांच महीनों का चाँद देखना फ़र्ज़े किफ़ाया है: शअबान, रमज़ान, शव्वाल, ज़ी क़अदा, ज़िल हज्जा। शअबान का इस लिये कि अगर रमज़ान का चाँद देखते वक़्त अब्र या ग़ुबार हो तो यह तीस रोज़े पूरे करके रमज़ान शुरू करें। और रमज़ान का रोज़ा रखने के लिये और शव्वाल का रोज़ा ख़त्म करने के लिये और ज़ी क़अदा का ज़िल हज्जा के लिये और ज़िल हज्जा का बक़्र ईद के लिये। (फ़तावए रज़विया, बहारे शरीअत)

३०) हज़रत सय्यिदुना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः रमज़ान के (आख़िरी) दस दिनों के एतिकाफ़ का सवाब दो हज और दो उमरों के बराबर है। (बेहक़ी)

३१) हज़रत इमाम ज़ोहरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत से काम कभी करते और कभी छोड़ देते थे लेकिन जब से मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तब से अख़ीर ज़िन्दगी तक कभी भी रमज़ान के आख़िरी दस दिनों का एतिकाफ़ नहीं छोड़ा। (इब्ने माजा)

३२) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं कि एतिकाफ़ करने वाले के लिये नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एतिकाफ़ करने वाला गुनाहों से बचा रहता है और उस के लिये (बग़ैर किये भी) उतनी ही नेकियाँ लिखी जाती हैं जितनी करने वाले के लिये लिखी जाती हैं। (इब्ने माजा)

३३) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स अपने भाई के किसी काम के लिये चले फिरे और कोशिश करे उस के लिये दस बरस के एतिकाफ़ से अफ़ज़ल है और जो शख़्स एक दिन का भी एतिकाफ़ अल्लाह की रज़ा के वास्ते करता है तो हक़ तआला उस के और जहन्नम के बीच तीन ख़न्दकें आड़ फ़रमा देता है जिन की मुसाफ़त आसमान और ज़मीन के बीच की दूरी से भी ज़्यादा है। (तबरानी, बेहक़ी)

३४) एतिकाफ़ के चार अरकान हैं: पहला रुक्न नियत या शर्त है। दूसरा रुक्न मोअतकिफ़ का होना ज़रूरी है। तीसरा रुक्न मस्जिद का होना है। चौथा रुक्न एतिकाफ़ करने वाले का मस्जिद में रहना है। (अहकामुस सियाम वल एतिकाफ़)

३५) शबे क़द्र की अलामत यह है कि वह रात खुली और चमकदार होती है, साफ़ शफ़्फ़ाफ़, न ज़्यादा गर्मी और न ज़्यादा सर्दी बल्कि मुअतदिल, गोया उस में चाँद खिला हुआ है। उस रात सुब्ह तक आसमान के सितारे शयातीन को नहीं मारे जाते। इस की अलामतों में यह भी है कि इस के बाद सुब्ह को सूरज बग़ैर शुआअ के तुलूअ होता है बिल्कुल हमवार टिकिया की तरह होता है जैसा कि चौदहवीं रात का चाँद। अल्लाह अज़्ज व जल्ल ने इस दिन के आफ़ताब के तुलूअ के वक़्त शैतान को इस के साथ निकलने से रोक दिया। (दुर्रे मन्सूर)

३६) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा: या रसूलल्लाह अगर मुझे शबे क़द्र का पता चल जाए तो मैं क्या दुआ मांगूं? फ़रमाया: यह दुआ मांगो: अल्लाहुम्मा इन्नका अफ़ुव्वुन तुहिब्बुल अफ़्वा फ़अफ़ु अन्नी। यानी ऐ अल्लाह, तू बेशक माफ़ करने वाला है और पसन्द करता है माफ़ करने को पस माफ़ कर दे मुझे भी। (अहमद, इब्ने माजा, तिर्मिज़ी, मिशकात)

३७) हज़रत सय्यिदुना जिब्रईल अलैहिस्सलाम के छः सौ बाज़ू हैं, उन में से दो कभी नहीं खुलते मगर शबे क़द्र में यह दोनों बाज़ू मश्रिक़ और मग़रिब से भी बढ़ जाते हैं। फिर हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम फ़रिश्तों को कहते हैं कि खड़े बैठे अल्लाह का ज़िक्र करने वालों, नमाज़ अदा करने वालों को सलाम व मुसाफ़हा करें और जो दुआ मांगते हों उस पर आमीन कहें। (ग़ुनियतुत तालिबीन)

३८) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो लोग जमा हो कर अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का ज़िक्र करते हैं और सिवाए रज़ाए इलाही के उन का कोई और मक़सद नहीं

होता तो आसमान से एक पुकारने वाला पुकारता है कि खड़े हो जाओ तुम्हारी मग़फ़िरत हो गई और तुम्हारे गुनाहों को नेकियों से बदल दिया गया। (इमाम अहमद)

३९) सन दो हिजरी में मोमिनों पर रोज़े फ़र्ज़ और सदक़ए फ़ित्र वाजिब हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

४०) महीनों में सिर्फ़ रमज़ान का नाम क़ुरआन में लिया गया है। (तफ़सीरे नईमी)

४१) फ़ुक़्हा का क़ौल है कि अगर किसी ने नज़्र मानी कि मैं रमज़ान बाद अल्लाह के लिये इस साल के बेहतरीन दिनों में रोज़े रखूंगा तो उस पर ज़िल हज्जा के पहले दस दिन के रोज़े वाजिब होंगे क्योंकि सारे साल में यह दस रोज़े सब से बेहतर हैं। (तफ़सीरे नईमी)

४२) हदीस में है कि जिस ने ज़िलहज्जा के अरफ़े का रोज़ा रख लिया, अल्लाह तआला उसे सात बरस के रोज़ों का सवाब अता करता है और उस का नाम क़ानितीन में लिखता है। (तफ़सीरे नईमी)

४३) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः शबे क़द्र में चार झन्डे नाज़िल होते हैं: एक लिवाउल हम्द, दूसरा लिवाउल रहमत, तीसरा लिवाउल मग़फ़िरत, चौथा लिवाउल करामत। हर झन्डे के साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होते हैं और हर झन्डे पर कलिमए तय्यिबा लिखा होता है। लिवाउल हम्द आसमान और ज़मीन के बीच, लिवाउल मग़फ़िरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ए पाक के ऊपर, लिवाउल रहमत कअबए मुअज़्ज़मा पर और लिवाउल करामत बैतुल मक़दिस के गुम्बद पर गाड़ा जाता है और हर झन्डा मुसलमानों के दरवाज़े पर ७० बार सलाम करने आता है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

४४) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: जो शख़्स लैलतुल क़द्र में इतनी देर इबादत के लिये खड़ा रहा जितनी देर चरवाहा बकरी दोह ले, तो वह अल्लाह तआला के नज़्दीक बारह माह के रोज़े रखने वाले से बेहतर है। (तफ़सीरे नईमी)

४५) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआला ने एक फ़रिश्ता पैदा फ़रमाया है और उस के चार मुंह बनाए हैं, एक मुंह से दूसरे मुंह तक अस्सी हज़ार बरस की राह है। उस फ़रिश्ते का एक मुंह सज्दे में है जो क़ियामत तक रहेगा। इस मुंह से सज्दे की हालत में ही फ़रिश्ता यूँ कहता है: इलाही मैं तेरी तस्बीह करता हूँ, तेरा जमाल निहायत अज़ीमुश्शान

है। दूसरे मुंह से जहन्नम की तरफ़ देख कर कहता है: उस पर अफ़सोस जो इस में दाख़िल हुआ। तीसरे मुंह से जन्नत की तरफ़ देख कर कहता है: इस में दाख़िल होने वाले को मुबारकबाद। चौथे मुंह से अर्शे इलाही की तरफ़ देख कर कहता है: इलाही रहम कर और उम्मते मुहम्मदिया में जो रमज़ान के रोज़ेदार हैं उन्हें अज़ाब न दे। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

४६) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला किरामन कातिबीन को रमज़ान में हुक्म देता है कि उम्मते मुहम्मदिया की नेकियाँ लिखो और बदियाँ लिखनी छोड़ दो। (ज़ोहरतुर रियाज़)

४७) रोज़े तीन तरह के होते हैं: अवाम का रोज़ा, ख़वास का रोज़ा और अख़स्सुल ख़वास का रोज़ा। अवाम का रोज़ा यह है कि पेट और शर्मगाह को उस की ख़्वाहिशों से रोका जाए। ख़वास का रोज़ा यह है कि तमाम अंग गुनाहों से बाज़ रहें। अख़स्सुल ख़वास का रोज़ा यह है कि दिल तमाम दुनियवी और दीनी फ़िक्रों और अल्लाह के सिवा हर एक से रुका रहे। यह रोज़ा नबियों और सिद्दीक़ों का होता है। (ज़ुब्दतुल वाइज़ीन)

४८) तीस रोज़े फ़र्ज़ होने में कुछ उलमा के क़ौल के मुताबिक़ यह हिकमत है कि आदम अलैहिस्सलाम के पेट में गेहूँ के दाने तीस रोज़ तक रहे थे। फिर जब उन की तौबा क़ुबूल हुई तो अल्लाह तआला ने तीस रोज़ों का हुक्म दिया, इन में रातें भी शामिल थीं। उम्मते मुहम्मदिया पर सिर्फ़ दिन को रोज़ा फ़र्ज़ किया गया। (बहजतुल अनवार)

४९) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला को रोज़ेदार का तना हुआ पेट तमाम बर्तनों से ज़्यादा पसन्द है। (तफ़सीरे नईमी)

५०) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स रमज़ान के महीने में इल्मे दीन की मजलिस में हाज़िर हुआ, उस के नामए आमाल में हर क़दम के बदले एक साल की इबादत लिखी जाती है और वह अर्श के नीचे मेरे साथ रहेगा। (ज़ख़ीरतुल आबिदीन)

५१) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि इब्ने आदम के कुल अमल उस के लिये हैं मगर रोज़ा सिर्फ़ मेरे लिये है और मैं ख़ुद ही इस का बदला दूंगा। (बुख़ारी शरीफ़)

५२) हदीस में है कि जो औरत रमज़ान में अपने ख़ाविन्द की मर्ज़ी पर चलेगी उसे हज़रत मरयम और आसिया का सा सवाब मिलेगा। (तफ़सीरे नईमी)

५३) हदीस में है कि जो शख़्स रमज़ान में पाबन्दी से साथ जमाअत के साथ नमाज़ पढ़े, अल्लाह तआला उसे क़ियामत के दिन हर रकअत के बदले

अपनी नेअमतों से भरा हुआ एक शहर अता करेगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५४) जिस ने रमज़ान में किसी मुसलमान भाई की हाजत पूरी की, क़ियामत में अल्लाह तआला उस की हज़ार हाजतें पूरी करेगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५५) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: क़ब्रों से उठने के वक़्त तीन फ़िर्क़ों से फ़रिश्ते मुसाफ़हा करेंगे: एक शहीद, दूसरे रमज़ान में इबादत करने वाले और तीसरे अरफ़े के दिन रोज़ा रखने वाले। (ज़ुब्दतुल वाइज़ीन)

५६) कहा गया है कि सौम में तीन हुरूफ़ हैं: सॉद दलालत करता है नफ़्स की सियानत पर यानी गुनाहों से हिफ़ाज़त, वाव नफ़्स की विलायत पर कि अंगों को इताअत पर लगाए और मीम रोज़े की हमेशगी पर मौत के वक़्त तक। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

५७) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: भूखे पेट हंसना पेट भरे रोने से अच्छा है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५८) हदीस शरीफ़ में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने सफ़र और इक़ामत में हर माह की १३, १४, १५ तारीख़ों के रोज़े तर्क न फ़रमाते और आप फ़रमाते कि यह रोज़े मेरे हैं, जो कोई यह रोज़ रखे, वह दस हज़ार साल की इबादत का सवाब पाएगा। यह रोज़े दिलों को मुनव्वर और चेहरों को नूरानी करते हैं। ऐसा रोज़ेदार कल हश्र के दिन जन्नती ऊंटनियों पर सवार होगा और उस का चेहरा चौदहवीं के चाँद से ज़्यादा रौशन होगा। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

५९) किसी ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से पूछा: मैं नफ़्ली रोज़ा किस तरह रखूं? फ़रमाया: अगर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का रोज़ा रखना चाहो तो एक दिन रोज़ा रखो दूसरे दिन खोल दो और अगर उन के बेटे हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का रोज़ा रखना चाहो तो हर माह के पहले तीन रोज़े रखो और अगर ख़ातूने जन्नत हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा का रोज़ा रखना चाहो तो दो रोज़ रोज़े रखो और एक रोज़ खोल दो। और अगर उन के बेटे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का रोज़ा रखना चाहो तो हमेशा रोज़ेदार रहो। और अगर रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रोज़ा रखना चाहो तो हर माह की १३, १४ और १५ के रोज़े रखो इस लिये कि हदीस में आया है कि जो शख़्स अय्यामे बैज़ का पहला रोज़ा रखता है, उस के तिहाई गुनाह बख़्श दिये जाते हैं और जो दो रोज़े रखता है उस के दो तिहाई गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं और जब वह तीसरे दिन का रोज़ा रखता

है तो वह तमाम गुनाहों से ऐसे पाक हो जाता है जैसा उस दिन माँ के पेट से पैदा हुआ हो। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

६०) शैतान मलऊन का कौल है कि लोगों के आमाल में मुझे सब से ज़्यादा गुस्सा दिलाने वाली दो चीज़ें हैं: एक अय्यामे बैज़ के रोज़े दूसरे नमाज़े चाश्त। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

६१) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर किसी को जुम्ए के दिन का रोज़ा रखना हो तो एक दिन पहले भी रोज़ा रखे या इस के बाद रोज़ा रखे। (यानी फ़कत एक रोज़ा रखना मकरूह है।) (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

६२) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अरफ़े का रोज़ा मैदाने अरफ़ात में रखने से मना फ़रमाया है। (तफ़सीरे नईमी)

६३) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर मेरी उम्मत को यह मालूम हो जाए कि रमज़ान क्या है तो मेरे उम्मती यह तमन्ना करें कि सारा साल रमज़ान ही हो जाए। (ज़ुब्दतुल वाइज़ीन)

६४) एक रिवायत है कि अल्लाह तआला रमज़ान में अर्श के उठाने वाले फ़रिश्तों को हुक्म देता है कि अपनी अपनी इबादतें छोड़ कर रोज़ेदारों की दुआओं पर आमीन कहो। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

६५) जिस साल नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल हुआ था उस साल आप ने बीस रोज़ का एतिकाफ़ फ़रमाया था। (बुख़ारी शरीफ़)

६६) नफ़्ल एतिकाफ़ यह है कि इन्सान जब भी मस्जिद में आए तो दाएं पावँ से दाख़िल हो और यह कह लें कि मैं ने एतिकाफ़ की नियत की। अब जब तक वह मस्जिद में रहेगा, एतिकाफ़ का सवाब पाएगा। दूसरे मस्जिद में खाना पीना भी जाइज़ हो जाएगा, तीसरे मस्जिद में सो सकेगा, चौथे मस्जिद में दुनिया की बातें कर सकेगा। (बहारे शरीअत)

६७) शरीअत में इबादत की नियत से मस्जिद में ठहरने का नाम एतिकाफ़ है। यह बहुत पुरानी इबादत है, पिछले नबियों रसूलों के दीन में भी जारी थी। (तफ़सीरे नईमी)

६८) एतिकाफ़ करने वाला ऐसे भिखारी की तरह है जो ग़नी के दरवाज़े पर अड़ कर बैठ जाए और कहे कि मैं तो लेकर ही टलूंगा। (तफ़सीरे नईमी)

६९) इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक रोज़े में दोपहर के बाद मिस्वाक करना मम्नूअ और मकरूह है। इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक बिला कराहत जाइज़ है बल्कि वुज़ू की सुन्नत है। (तफ़सीरे नईमी)

७०) रोज़े नबुव्वत के १५ वें साल यानी दस शव्वाल सन दो हिजरी को फ़र्ज़ हुए। पहले सिर्फ़ एक रोज़ा यानी आशूरे के दिन का फ़र्ज़ हुआ था फिर यह मन्सूख़ हो कर चाँद की १३ वीं, १४ वीं और १५ वीं तारीख़ों के रोज़े फ़र्ज़ हुए। फिर यह भी मन्सूख़ होकर माहे रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुए मगर लोगों को इख़्तियार था कि चाहे रोज़ा रखें चाहे फ़िदिया अदा करें यानी हर रोज़े के बदले आधा साअ यानी १७५ रुपया अठन्नी भर गेहूँ सदक़ा करें। फिर यह इख़्तियार मन्सूख़ हो कर रोज़े लाज़िम हुए मगर यह पाबन्दी रही कि रात को सोने से पहले जो चाहे खा लो, सोकर कुछ भी नहीं खा सकते। फिर सुब्ह तक खाने पीने का इख़्तियार दिया गया मगर औरत से हमबिस्तरी फिर भी हराम रही। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक़िआ पेश आने पर रात में यह भी हलाल कर दिया गया। (तफ़सीरे अहमदी)

७१) इन्सानों के तीसरे बादशाह तहमूरस के ज़माने में सख़्त कहत साली हुई तो मालदारों को रोज़े का हुक्म दिया गया और उन से कहा गया कि तुम दोपहर का खाना फ़क़ीरों को दो ताकि शाम को तुम और वह दोनों खाना खा सकें। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

७२) नमाज़ सज्दा वग़ैरा फ़रिश्ते और दूसरी मख़लूक़ भी अदा करते हैं मगर रोज़ा सिर्फ़ इन्सानों ही की इबादत है। फ़रिश्ते और दूसरी मख़लूक़ बल्कि जिन्नात पर भी रोज़ा फ़र्ज़ नहीं। (तफ़सीरे नईमी)

७३) माहे रमज़ान के कुल चार नाम हैं: माहे सब्र, माहे मवासात, माहे वुसअते रिज़्क और माहे रमज़ान। रमज़ान या तो रहमान की तरह अल्लाह का नाम है। चूंकि इस माह में रात दिन अल्लाह की इबादत होती है इस लिये इसे माहे रमज़ान यानी अल्लाह का महीना कहा जाता है। हदीस में आया है कि यह न कहो कि रमज़ान आया और रमज़ान गया बल्कि यूं कहो कि माहे रमज़ान आया और गया। या यह रमज़ाउन से मुश्तक़ है। रमज़ाउन ख़रीफ़ मौसम की बारिश को कहते हैं इस से ज़मीन धुल जाती है और रबीअ की फ़स्ल ख़ूब होती है। चूंकि यह महीना भी दिल के गर्द व गुबार को धो देता है और इस से आमाल की खेती हरी भरी रहती है इस लिये इसे रमज़ान कहा गया। या यह रमज़ुन से बना है जिस के मानी हैं गर्मी या जलना। चूंकि इस ज़माने में मुसलमान भूख और प्यास की शिद्दत बरदाश्त करते हैं या यह गुनाहों को जला डालता है इस लिये इसे रमज़ान कहते हैं। कुछ ने कहा कि जब महीनों के नाम रखे गए तो जो महीना जिस मौसम में पड़ा उस का नाम उसी मुनासिबत से रख दिया गया। जो महीना गर्मी में था उस को रमज़ान

कह दिया गया। इस महीने का दूसरा नाम माहे सब्र है। रोज़ा सब्र है जिस की जज़ा रब है। और रोज़ा इसी महीने में रखा जाता है इस लिये इसे माहे सब्र कहा गया। मवासात के मानी हैं भलाई करना। चूंकि इस महीने में सारे मुसलमानों से ख़ास कर करीबी रिश्तेदारों से भलाई करना ज़्यादा सवाब का काम है इस लिये इसे माहे मवासात कहते हैं। इस में रिज़्क की फ़राख़ी भी होती है कि ग़रीब भी नेअमतें खा लेते हैं। इसी लिये इस का नाम माहे वुसअते रिज़्क रखा गया। (तफ़सीरे नईमी)

७४) रमज़ान में पांच हुरूफ़ हैं: रे, मीम, ज़ॉद, अलिफ़, नून। रे से मुराद है रहमते इलाही, मीम से मुराद है मुहब्बते इलाही, ज़ॉद से मुराद है ज़माने इलाही, अलिफ़ से मुराद है अमाने इलाही, नून से मुराद है नूरे इलाही। रमज़ान में पांच इबादतें मख़सूस हैं: रोज़ा, तरावीह, तिलावते कुरआन, एतिकाफ़ और शबे क़द्र की इबादत। जो कोई सच्चे दिल से यह पांच इबादतें अदा करे वह इन पांच इन्आमों का मुस्तहिक है जो रमज़ान के हुरूफ़ से मन्सूब हैं। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७५) रमज़ान के चाँद में एक मुसलमान की गवाही भी मानी जा सकती है। अगर क़ाज़ी उस की गवाही को न माने तो सिर्फ़ उस देखने वाले पर ही रोज़ा वाजिब होगा मगर शव्वाल के चाँद में कम से कम दो गवाह ज़रूरी हैं क्योंकि पहले इबादत में दाख़िल होना था और यहाँ फ़र्ज़ से निकलना है और इबादत का सुबूत आसान है। (तफ़सीरे नईमी)

७६) अगली शरीअतों में इफ़्तार के बाद इशा तक खाना पीना और औरतों से हमबिस्तरी करना हलाल था। नमाज़े इशा के बाद यह सब चीज़ें रात में भी हराम हो जाती थीं। इस्लाम के शुरू में भी यही हुक्म रहा। फिर सरमह इब्ने कैस अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक़िआ पेश आजाने से सुब्ह तक खाना पीना दुरुस्त हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

७७) सरमह इब्ने कैस अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक़िआ यूँ है कि आप बड़े मेहनती इन्सान थे, दिन भर मेहनत करते थे, थक जाते थे। एक दिन रोज़े की हालत में काम किया, रात को घर आए। बीवी से खाना मांगा, वह पकाने में मसरूफ़ हुई, यह लेट गए। थके तो थे ही, आँख लग गई। जब बीवी ने खाना तय्यार कर लिया और उन्हें बेदार किया तो उन्हों ने खाने से इन्कार कर दिया क्योंकि सोने के बाद खाना हराम हो चुका था। हज़रत सरमह ने उसी हालत में दूसरा रोज़ा रख लिया जिस से बहुत कमज़ोर हो गए। दोपहर को ग़शी आ गई। इस वाक़ए के बाद सुब्ह तक खाना पीना हलाल कर

दिया गया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

७८) जैसे सुब्ह से रोज़ा शुरू कर देना फ़र्ज़ है, ऐसे ही रात आने पर इफ़्तार करना फ़र्ज़ है। कुछ सूरतों में खाना पीना शरई फ़र्ज़ है। एक जब भूख प्यास की शिद्दत से जान जाने का ख़तरा हो क्योंकि जान की हिफ़ाज़त फ़र्ज़ है। दूसरे, रोज़ा इफ़्तार के वक़्त कि रोज़े पर रोज़ा रखना हराम है। तीसरे जब किसी को सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हुक्म दें और हुक्म भी शरई हो, महज़ मशवरा न हो। मरन व्रत रख कर जान देना या भूख हड़ताल करना सख़्त मना है। (तफ़सीरे नईमी)

७९) बीसवीं रमज़ान की अस्र से ईद का चाँद देखने तक एतिकाफ़ करना सुन्नते मुअक्कदा अलल किफ़ाया है कि अगर एक बस्ती में एक ने कर लिया तो सब बरी हो गए। (तफ़सीरे नईमी)

८०) एतिकाफ़ में औरतों से हमबिस्तरी करना, लिपटना चिपटना, बोसा वग़ैरा सब हराम है। (तफ़सीरे नईमी)

८१) सुन्नत एतिकाफ़ की मुद्दत नौ या दस दिन है इस में रोज़ा भी शर्त है। फ़र्ज़ एतिकाफ़ नज़्र का एतिकाफ़ है इस की मुद्दत कम से कम एक दिन है, इस में भी रोज़ा शर्त है। (बहारे शरीअत, शामी वग़ैरा)

८२) नफ़्ली रोज़ा भी शुरू कर देने से वाजिब हो जाता है और इस का पूरा करना फ़र्ज़ हो जाता है। (तफ़सीरे नईमी)

८३) रोज़ए विसाल यानी रोज़े पर रोज़ा रखना मना है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह हुक्म जारी नहीं। आप ने सब से पहले सात दिन का रोज़ा रखा फिर पांच दिन का फिर तीन दिन का। जब सहाबए किराम ने भी ऐसा रोज़ा रखना चाहा तो उन्हें मना फ़रमा दिया और फ़रमायाः तुम में कौन हम जैसा है? हमें तो रब खिलाता पिलाता है। (तफ़सीरे नईमी)

८४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जन्नत में एक नहर का नाम रजब है इस का पानी दुध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है। अल्लाह तआला इस में से उसे पिलाएगा जिस ने रजब में एक दिन का भी रोज़ा रखा होगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

८५) सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैंः रजब अल्लाह का, शअबान मेरा और रमज़ान मेरी उम्मत का महीना है। (तफ़सीरे नईमी)

८६) मशायख़ ने लिखा है कि शबे क़द्र में हर चीज़ सज्दा करती है यहाँ तक कि दरख़्त ज़मीन में गिर जाते हैं और फिर अपनी जगह खड़े हो जाते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

८७) हज़रत दाऊद ताई रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक बार मुझे रमज़ान की पहली रात में नींद का ग़लबा हुआ। ख़्वाब में मुझे जन्नत दिखाई दी। मैं ने अपने आप को जन्नत में याकूत और मोतियों की एक नहर के किनारे बैठा हुआ देखा और वहाँ जन्नत की हूरें नज़र पड़ीं जिन के चेहरे सूरज से ज़्यादा चमक रहे थे। मैं ने कहा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह। इस के जवाब में उन्हों ने भी कलिमए शहादत दोहराया और कहा कि हम ख़ुदा की तारीफ़ करने वालों, रोज़ेदारों और रमज़ान में रुकूअ और सुजूद करने वालों के लिये हैं। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

८८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जन्नत चार तरह के आदमियों की मुश्ताक़ है: क़ुरआने मजीद पढ़ने वालों की, बेहूदा बातों से ज़बान को रोकने वालों की, भूखों को खाना खिलाने वालों की और रमज़ान के रोज़ेदारों की। (रौनक़ुल मजालिस, गुल्दस्तए तरीक़त)

८९) हदीस शरीफ़ में है कि जब रमज़ान शरीफ़ का चाँद नज़र आता है तो अर्श, कुर्सी और फ़रिश्ते बलन्द आवाज़ से कहते हैं: उम्मते मुहम्मदिया को उस बुज़ुर्गी की बशारत हो जो अल्लाह तआला ने उन के लिये रख छोड़ी है और उन के लिये शैतान को छोड़ कर चाँद, सूरज, सितारे, परिन्दे, मछलियां और हर जानदार रात दिन मग़फ़िरत मांगता है और पहली तारीख़ की सुब्ह को अल्लाह तआला एक एक करके सब को बख़्श देता है। और अल्लाह तआला फ़रिश्तों को हुक्म देता है कि तुम रमज़ान में अपनी इबादत और तस्बीह का सवाब उम्मते मुहम्मदिया के नाम कर दो। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

९०) हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि जब रमज़ान में रोज़ेदार नींद से जागता है और बिस्तर पर करवटें बदलता है तो एक फ़रिश्ता कहता है: ख़ुदा तुझे बरकत दे और तुझ पर रहम करे, उठ खड़ा हो। फिर जब वह नमाज़ की नियत से खड़ा हो जाता है तो बिस्तर उसके लिये दुआ करता है और कहता है: इलाही इसे जन्नत के उमदा फ़र्श इनायत फ़रमा। फिर जब वह कपड़े पहनता है तो वह यह दुआ करता है कि इलाही इसे जन्नत का लिबास अता फ़रमा। जब वह जूते पहनता है तो जूते कहते हैं कि इलाही तू इसे पुले सिरात पर साबित क़दम रख। जब पानी का बरतन लेता है तो वह बरतन यह दुआ करता है कि इलाही तू इसे जन्नत के कूज़े अता फ़रमा। जब वुज़ू करता है तो पानी यह दुआ करता है कि इलाही इसे गुनाहों और ख़ताओं से पाक साफ़ कर दे। जब नमाज़ के लिये खड़ा होता है तो घर यह दुआ करता है कि

इलाही तू इस की कब्र को फ़राख़ और लहद को नूरानी कर दे और अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा। फिर अल्लाह तआला उस पर रहमत की नज़र फ़रमाता है और दुआ के वक़्त यह फ़रमाता है कि ऐ बन्दे तेरी तरफ़ से दुआए हाजत, हमारी तरफ़ से कुबुलियत, तेरी तरफ़ से सवाल हमारी तरफ़ से अता, तेरी तरफ़ से इस्तिग़फ़ार, हमारी तरफ़ से बेशुमार मग़फ़िरत। (ज़ुब्दतुल वाइज़ीन)

६१) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रमज़ान की फ़ज़ीलत व बरकत के बारे में सवाल किया गया तो आप ने फ़रमायाः रमज़ान की पहली रात में मोमिन बन्दा अपने गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसे आज माँ के पेट से पैदा हुआ है। दूसरी रात में उस की और उस के मुसलमान माँ बाप की मग़फ़िरत हो जाती है। तीसरी रात में फ़रिश्ता अर्श के नीचे से पुकारता है कि अब नए सिरे से अमल कर क्योंकि तेरे पिछले गुनाह माफ़ हो चुके हैं। चौथी रात में उसे तौरात, इन्जील, ज़बूर और कुरआने मजीद पढ़ने का सवाब मिलता है। पांचवीं रात में अल्लाह तआला उसे उस शख़्स का सवाब अता करता है जिस ने मस्जिदे नबवी, मस्जिदे हराम और मस्जिदे अक़सा में नमाज़ अदा की हो, छटी रात में बैतुल मअमूर के तवाफ़ करने वाले की बराबर सवाब मिलता है और तमाम पत्थर और ढेले उस की मग़फ़िरत चाहते हैं, सातवीं रात में इतना सवाब मिलता है गोया हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाकात और फ़िरऔन के मुक़ाबले में उन की मदद की। आठवीं रात में उसे इतना सवाब मिलता है जितना हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मिला। नवीं रात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इबादत का सवाब मिलता है, दसवीं रात में दीन दुनिया की बेहतरी इनायत करता है, ग्यारहवीं रात में दुनिया से इस तरह अलग हो जाता है गोया आज माँ के पेट से पैदा हुआ है, बारहवीं रात में यह फ़ज़ीलत मिलती है कि उस का चेहरा कियामत के दिन चौदहवीं के चाँद की तरह रौशन रहेगा। तेरहवीं रात की बरकत से कियामत में उसे हर तरह की बुराई से अम्न मिलेगा। चौदहवीं रात की इबादत से फ़रिश्ते उस की इबादत की गवाही देंगे और अल्लाह तआला कियामत के हिसाब से आज़ाद कर देगा। १५ वीं रात में फ़रिश्ते और अर्श और कुर्सी उठाने वाले फ़रिश्ते उस पर रहमत भेजते हैं, सोलहवीं रात में अल्लाह तआला दोज़ख से आज़ादी और जन्नत में दाखिल होने का परवाना लिख देता है, १७ वीं रात में नबियों के बराबर सवाब मिलता है, १८ वीं रात में एक फ़रिश्ता पुकारता है कि ऐ खुदा के बन्दे तुझ से और तेरे माँ बाप से खुदा रज़ी है। १६ वीं रात में अल्लाह तआला जन्नतुल

फ़िरदौस में उस के दर्जे बलन्द कर देता है, बीसवीं रात में शहीदों और नेकों का सवाब मिलता है, इक्कीसवीं रात में अल्लाह तआला उस के लिये जन्नत में एक महल तय्यार करता है, २२ वीं रात में यह बरकत हासिल होती है कि वह क़ियामत के दिन हर तरह के ग़म और अन्देशे से बेख़ौफ़ रहेगा। २३ वीं रात में अल्लाह तआला उस के लिये जन्नत में एक शहर तय्यार करता है, २४ वीं रात में चालीस साल की इबादत का सवाब मिलता है, २५ वीं रात में उस से क़ब्र का अज़ाब उठा लिया जाता है, २६ वीं रात में चालीस साल की इबादत का सवाब मिलता है, २७ वीं रात की फ़ज़ीलत से वह पुले सिरात पर से कौंदती हुई बिजली की तरह गुज़र जाएगा, २८ वीं रात में अल्लाह तआला उस के लिये जन्नत में हज़ार दर्जे बलन्द कर देता है, २९ वीं रात में हज़ार मक़बूल हज का सवाब मिलता है, तीसवीं रात में अल्लाह तआला फ़रमाता है: ऐ मेरे बन्दे जन्नत के मेवे खा और सलसबील के पानी में नहा और आबे कौसर पी। मैं तेरा रब हूँ और तू मेरा बन्दा। (नुज़्हतुल मजालिस)

९२) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस ने रमज़ान के बाद शव्वाल के छः रोज़े रख लिये वह गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसे माँ के पेट से आज ही पैदा हुआ है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

९३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स रमज़ान के पूरे रोज़े रख कर शव्वाल के छः रोज़े रखता है अल्लाह तआला उसे छः पैग़म्बरों का सवाब देता है जिन में पहले हज़रत आदम हैं, दूसरे हज़रत यूसुफ़, तीसरे हज़रत यअक़ूब, चौथे हज़रत मूसा, पांचवें हज़रत ईसा, छटे हज़रत मुहम्मद, अला नबिय्यिना व अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम। (ज़ुब्दतुल वाइज़ीन)

९४) हदीस शरीफ़ में है कि क़ियामत के दिन रमज़ान निहायत अच्छी सूरत में हो कर अल्लाह तआला को सज्दा करेगा। वहाँ उसे हुक्म होगा: ऐ रमज़ान, मांग क्या मांगता है और जिस ने तेरा हक़ अदा किया हो उस का हाथ पकड़ ले। रमज़ान अपना हक़ अदा करने वालों का हाथ पकड़ कर हुज़ूर में खड़ा हो जाएगा। फिर हुक्म होगा: ऐ रमज़ान, तू क्या चाहता है? रमज़ान अर्ज़ करेगा: इलाही जिस ने मेरा हक़ अदा किया है उस के सर पर इज़्ज़त और वक़ार का ताज रख दे। चुनान्चे अल्लाह तआला उसे एक हज़ार ताज अता फ़रमाएगा और सत्तर हज़ार गुनाहे कबीरा करने वालों की बाबत उस की शफ़ाअत क़बूल फ़रमाएगा और ऐसी एक हज़ार हूरों के साथ उस का निकाह कर देगा जिन में एक एक हूर के आगे सत्तर सत्तर हज़ार लौंडियां होंगी। फिर

उसे बुराक़ पर सवार करा के पूछेगाः ऐ रमज़ान, अब तू क्या चाहता है? रमज़ान अर्ज़ करेगाः इलाही इसे अपने पैग़म्बर के पड़ोस में जगह दे। तो अल्लाह तआला उसे फ़िरदौस में भेज देगा और इरशाद फ़रमाएगा कि ऐ रमज़ान अब क्या चाहता है? रमज़ान कहेगाः इलाही तू ने मेरी हाजत तो पूरी कर दी लेकिन इस शख़्स का सवाब और इज़्ज़त किधर है? चुनान्चे अल्लाह तआला उसे सुर्ख़ याक़ूत और सब्ज़ ज़ेबरजद के सौ शहर कि हर शहर में एक हज़ार महल होंगे और इनायत करेगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

९५) रोज़ा रखने की मन्नत मानी तो काम पूरा हो जाने के बाद उस का रखना वाजिब हो गया। (क़ानूने शरीअत)

९६) अगर किसी ने नफ़्ल रोज़ा रख कर तोड़ दिया तो अब उस की क़ज़ा वाजिब है। (क़ानूने शरीअत)

चौदहवाँ अध्याय

हज और उमरा

१) हज्जतुल वदाअ को मुख़्तलिफ़ नामों से जाना जाता है: हज्जतुल वदाअ, हज्जतुत तमाम, हज्जतुल बलाग़ और हज्जतुल इस्लाम। इन अय्याम में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर सरकार नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो ख़िताबात फ़रमाए हैं उन में साफ़ साफ़ बता दिया कि इस मक़ाम पर मेरी तुम से यह आख़िरी मुलाक़ात है। इन ख़ुत्बों में सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को अल्विदाअ कहा है इस लिये इस हज को हज्जतुल वदाअ कहा जाता है। (ज़ियाउन्नबी, जि: ४)

२) हज्जतुल वदाअ में क़ुरबानी से फ़ारिग़ होने के बाद नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सर मुंडाने के लिये हज्जाम को तलब किया जिस का नाम मुअम्मर बिन अब्दुल्लाह बिन नज़लह और कुन्नियत अबू तल्हा थी। (ज़ियाउन्नबी, जि: ४)

३) अवाम में जो यह मशहूर है कि जो हज जुम्ए वाले दिन आए वह हज्जे अकबर होता है, यह बे अस्ल है। (अहसनुल बयान)

४) सरकार नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो माले हराम लेकर हज को जाता है और जब लब्बैक कहता है तो हातिफ़े ग़ैबी उसे जवाब देता है: न तेरी लब्बैक क़ुबूल न ख़िदमत पज़ीर और तेरा हज तेरे मुंह पर मर्दूद है यहां तक कि तू माले हराम जो कि तेरे क़ब्ज़े में है उस के मुस्तहिक़ीन को वापस कर दे। (फ़तावए रज़विया, जि: १०)

५) हज हमेशा से कअबे का ही हुआ। बैतुल मक़दिस का हज कभी नहीं हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

६) रजब सन ९ हिजरी में ग़ज़वए तबूक पेश आया, उसी साल हज फ़र्ज़ हुआ। मुसलमानों का पहला तीन सौ हाजियों का क़ाफ़िला हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की अमारत में रवाना हुआ। इस हज के बाद काफ़िरों को आइन्दा हरम में दाख़िल होने की मुमानिअत सादिर हो गई। यही आख़िरी हज था जिस में मुसलमानों के साथ हज में काफ़िर भी शरीक थे। (तफ़सीरे नईमी)

७) एहराम की हालत में औरत से हमबिस्तरी हराम है मगर निकाह हराम नहीं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा से एहराम की हालत में निकाह फ़रमाया था। (तफ़सीरे नईमी)

८) हज्जतुल वदाअ सन दस हिजरी में वाक़ेअ हुआ। (बुख़ारी शरीफ़)

९) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुज़्दलिफ़ा से मिना में आए और जमरए अक़बा में कंकरियाँ फेंक कर अपने मकान पर तशरीफ़ लाए फिर आप ने हज्जाम को बुलाया और सरे मुबारक के दाएं तरफ़ से बाल मुंडवाए और हज़रत अबू तल्हा अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु को अता फ़रमाए। इस के बाद सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बाएं तरफ़ के बाल मुंडवा कर अबू तल्हा अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हा को अता फ़रमाए और इरशाद फ़रमायाः यह तमाम लोगों में तक़सीम कर दो। (तफ़सीरे नईमी)

१०) अगर कोई हाजी मुर्तद होकर दोबारा ईमान लाए तो उस पर हज दोबारा करना फ़र्ज़ है। (तफ़सीरे नईमी)

११) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमरए क़ज़ा के मौक़े पर तवाफ़ में रमल किया यानी तीन चक्करों में अकड़ कर चले ताकि उस वक़्त के काफ़िर मोमिनों को कमज़ोर न समझ लें। लेकिन सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह अदा क़ियामत तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सारी उम्मत के लिये सुन्नत हो गई। (तफ़सीरे नईमी)

१२) एहराम की हालत में सिर्फ़ ख़ुश्की के जानवरों का शिकार हराम है। दरियाई शिकार जाइज़ है। शर्त यह है कि हाथ या नेज़े से न किया जाए। (तफ़सीरे नईमी)

१३) एहराम या हरम वाले मुसलमान का शिकार और ज़िब्ह किया हुआ जानवर कुछ इमामों के नज़्दीक मुर्दार से भी बदतर है। (तफ़सीरे नईमी)

१४) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तमाम उम्र में चार उमरे किये हैं और सब ज़िल क़अदा के महीने में। अव्वल, ज़िल क़अदा में हुदैबिया के साल हज के हमराह उमरे की नियत की थी, दूसरे साल ज़िल क़अदा के महीने में, तीसरे एक उमरा जिअराना से जहाँ हुनैन की ग़नीमतें तक़सीम की गई थीं। यह भी ज़िल क़अदा ही का महीना था। चौथे हज्जे वदाअ के साथ। (तफ़सीरे नईमी)

१५) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स हज के वास्ते आया और फिर उस ने मेरी ज़ियारत की तो उस ने मुझ को गोया हयात में देख लिया। (बुख़ारी शरीफ़)

१६) एहराम की हालत में मछली का शिकार किया जा सकता है। (बुख़ारी शरीफ़)

१७) एहराम की हालत में मूज़ी जानवरों जैसे कि चील, कौआ, दीवाना कुत्ता, शेर, भेड़िया वग़ैरा का शिकार किया जा सकता है। (बुख़ारी)

१८) हरम की सीमाएं जिन में शिकार करना हराम है यह हैं: मक्कए मुअज़्ज़मा से पूरब की तरफ़ छः मील, मग़रिब की तरफ़ बारह मील, दक्षिण की तरफ़ अट्ठारह मील और उत्तर की तरफ़ चौबीस मील। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

१९) हज के लफ़्ज़ी मानी हैं इरादा करना या किसी के पास आना जाना। शरीअत में ख़ास अरकान का नाम हज है क्योंकि इस में बैतुल्लाह का इरादा भी है और वहाँ बार बार हाज़िरी भी और उस के गिर्द बार बार चक्कर भी। कुछ लोगों ने कहा है कि हज के मानी हैं मुंडना। चूंकि इस में सर मुंडाया जाता है या हाजी के गुनाह ऐसे गिर जाते हैं जैसे हजामत से बाल, इस लिये इसे हज कहते हैं। (तफ़सीरे कबीर)

२०) ज़मानए जाहिलियत में हज के ज़माने में उमरा करना सख़्त गुनाह समझते थे और कहते थे कि जब ऊँटों के ज़ख़्म अच्छे हो जाएं और माहे सफ़र आ जाए तब उमरा हलाल है। इस्लाम ने यह अक़ीदा तोड़ा और उमरे को हज में दाख़िल फ़रमाया। (तफ़सीरे दुर्रे मन्सूर)

२१) हज व उमरे के चार तरीक़े हैं: एक इफ़राद बिल हज। दो, इफ़राद बिल उमरा, तीसरा, क़िरान और चौथा तमत्तुअ। इफ़राद बिल हज यह है कि सिर्फ़ हज का एहराम बांध कर वही अदा करे, उस के साथ उमरा न करे। इस का एहराम दसवीं ज़िलहज्जा को तवाफ़े ज़ियारत से खुलेगा चाहे कभी बांधा हो। इफ़राद बिल उमरा यह है कि सिर्फ़ उमरे का एहराम बांधे और उमरा ही करे या तो उस साल हज करे ही नहीं या घर लौट आए और फिर नए सफ़र से हज करे। इस वापसी का नाम इल्माम है। अगर उसी सफ़र में उसी साल हज कर लिया तो तमत्तुअ हो गया। इस का एहराम मक्कए मुअज़्ज़मा पहुंच कर उमरे के अरकान यानी तवाफ़ और सई करते ही खुल जाता है। क़िरान यह है कि हज और उमरा दोनों को एक ही एहराम में जमा कर ले यानी दोनों का एहराम बांध कर मक्कए मुअज़्ज़मा पहुंच कर पहले तवाफ़ और सई उमरा के लिये करे फिर हज का तवाफ़े क़ुदूम और सई करे फिर एहराम पर ही क़ायम रह कर आठवीं ज़िलहज्जा से दसवीं ज़िलज्जा तक अरकाने हज यानी क़ियामे मिना और वक़ूफ़े अरफ़ात व मुज़दलिफ़ और दोबारा मिना में हाज़िर होकर शैतान को कंकरियाँ मार कर क़ुरबानी करे और सर मुंडवाए और फिर तवाफ़े ज़ियारत करके एहराम खोल दे। तमत्तुअ की दो सूरतें हैं। एक क़ुरबानी वाला दूसरा बिना क़ुरबानी का। क़ुरबानी वाले तमत्तुअ

का तरीक़ा यह है कि पहले सिर्फ़ उमरे का एहराम बांधे और हज के महीनों में उमरा करके बिना एहराम खोले मक्के में रहे और आठवीं ज़िलहज्जा को उस एहराम पर हज का एहराम भी बांध कर हज भी अदा करे। बिना कुरबानी का तमत्तुअ यह है कि पहले सिर्फ़ उमरे का एहराम बांधे और मक्कए मुअज़्ज़मा पहुंच कर उमरा करके एहराम खोल दे फिर आज़ादी से रहे और आठ तारीख़ को हज का एहराम बांध कर हज करे। (तफ़सीरे नईमी)

२२) मक्के वालों बल्कि मीक़ात वालों के लिये न तमत्तुअ है न क़िरान क्योंकि उन्हें ज़मानए हज में उमरा करना ही मना है। अगर वह लोग तमत्तुअ या क़िरान कर भी लें तो उन पर कफ़्फ़ारे की कुरबानी वाजिब होगी न कि शुक्र की क्योंकि उन्हों ने यह जुर्म कर लिया, लिहाज़ा वह इस कुरबानी से खुद कुछ भी नहीं खा सकते। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

२३) ज़बीहे की दो क़िस्में हैं: ज़बीहए आदत और ज़बीहए इबादत। ज़बीहए आदत तो वह है जो हम दिन रात खाने के लिये जानवरों को ज़िब्ह करते हैं। उन पर न अज़ाब है न सवाब। ज़बीहए इबादत वह है कि जो रब को राज़ी करने के लिये किया जाए। इस ज़बीहे की दो क़िस्में हैं: ज़बीहए जियानत और ज़बीहए शुक्र। ज़बीहए जियानत तो हज और उमरे में होता है जब कोई वाजिब छूट जाए, इस ज़बीहे की न तारीख़ मुक़र्रर है न इस में से खुद खा सकता है। शुक्र का ज़बीहा तीन तरह का है: बच्चे का अक़ीक़ा, बक़्र ईद की कुरबानी और तमत्तुअ या क़िरान का ज़बीहा। इस ज़बीहे की तारीख़ भी मुक़र्रर है और ज़बीहा करने वाला खुद भी खा सकता है। (तफ़सीरे नईमी)

२४) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने में हज तवाफ़ और अरफ़ात में ठहरने का नाम था। फिर ज़मानए इब्राहीमी से इस में रमी, कुरबानी, सफ़ा और मरवा की सई का इज़ाफ़ा हुआ। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में तवाफ़े कुदूम, तवाफ़े वदाअ और अकड़ कर चलने का इज़ाफ़ा हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

२५) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस को वुसअत हो और वह कुरबानी न करे वह चाहे यहूदी हो कर मरे चाहे नसरानी हो कर। (तफ़सीरे नईमी)

२६) मशअरे हराम, मुज़्दलिफ़ा में एक पहाड़ का नाम है, इसी को क़ुज़ह और मीक़दह भी कहते हैं। ज़मानए जाहिलियत में लोग अरफ़ात से वापस आकर तमाम रात इस पर आग जलाते थे। इस्लाम ने हुक्म दिया कि यह बेहूदा बात है, यहाँ आकर अल्लाह का ज़िक्र करो। (तफ़सीरे नईमी)

२७) आठवीं ज़िलहज्जा को यौमुत तरविया, नवीं को यौमे अरफ़ा और दसवीं को यौमुन नहर कहते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

२८) जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को बैतुल्लाह बनाने का हुक्म दिया गया तो आठवीं ज़िलहज्जा को आप ने ग़ौर किया और रब से अर्ज़ किया कि मुझे इस की क्या उजरत मिलेगी? हुक्मे इलाही हुआ कि इस के अव्वल तवाफ़ में तुम्हारी सारी ख़ताएं माफ़ हो जाएंगी। अर्ज़ किया: मौला कुछ और दे। फ़रमाया: तुम्हारी औलाद में भी जो तवाफ़ करेगा उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे। अर्ज़ किया: इलाही कुछ और दे। हुक्म हुआ कि हाजी तवाफ़ करते वक़्त जिस के लिये भी दुआ करेगा उस की भी मग़फ़िरत कर दी जाएगी। अर्ज़ किया: बस बस मुझे यही काफ़ी है। चूंकि इस तारीख़ को आदम अलैहिस्सलाम ने ग़ौर व फ़िक्र किया था इस लिये इस दिन का नाम यौमुत तरविया हुआ। दूसरे यह कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आठवीं ज़िलहज्जा को ख़्वाब देखा था जिस में बेटे की कुरबानी का हुक्म था। दिन भर ग़ौर किया कि यह सच्चा ख़्वाब है या फ़कत मेरा वहम। यह दिन ग़ौर में गुज़रा। नवीं रात को फिर यही ख़्वाब देखा तो पहचान लिया कि यह सच्चा ख़्वाब है। इस लिये आठवीं ज़िलहज्जा का नाम यौमुत तरविया यानी ग़ौर करने का दिन और नवीं ज़िलहज्जा का यौमे अरफ़ा यानी पहचानने का दिन रखा गया। तीसरे यह कि मक्के वाले आठवीं ज़िलहज्जा को मिना में दुआएं सोचा करते थे कि कल अरफ़ात में रब से क्या क्या मांगेंगे। लिहाज़ा इस का नाम यौमुत तरविया यानी दुआएं सोचने का दिन पड़ा। चौथे यह कि मक्के वाले आठवीं ज़िलहज्जा को अपने जानवरों को भी पानी पिलाया करते थे और अरफ़ात में अपने पीने के लिये जमा कर लेते थे इस लिये इस का नाम यौमुत तरविया यानी पानी पिलाने का दिन रखा गया। (तफ़सीरे कबीर)

२९) यौमे अरफ़ा के दस नाम हैं: अरफ़ा, यौमे अयास, यौमे अकमाल, यौमे इत्माम, यौमे रिज़वान, यौमे हज्जे अकबर, शफ़अ, वित्र, शाहिद, मशहूद। यह सब नाम कुरआने मजीद में आए हैं। (तफ़सीरे कबीर)

३०) हज में तवाफ़ के दौरान रुक्ने यमानी और हजरे असवद के बीच रब्बना आतिना (आख़िर तक) दुआ ज़रूर मांगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: रुक्ने असवद पर उसी दिन से एक फ़रिश्ता बैठा हुआ है जब से आसमान और ज़मीन बने हैं और आमीन आमीन कह रहा है। दूसरी रिवायत में है कि रुक्ने यमानी पर ७० फ़रिश्ते आमीन कहते रहते हैं। (तफ़सीरे नईमी)

३१) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि मिना

को मिना इय लिये कहते हैं कि जब आदम अलैहिस्सलाम तौबा कुबूल होने के बाद अरफ़ात से यहाँ पहुंचे तो हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः कुछ तमन्ना करो। आप ने जन्नत की आरज़ू की। लिहाज़ा इस का नाम मिना हुआ यानी ख़्वाहिश की जगह। (तफ़सीरे नईमी)

३२) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जिस ने हज किया और मेरी ज़ियारत न की उस ने मुझ पर ज़ुल्म किया। (तफ़सीरे नईमी)

३३) सय्यिदुना मौला अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम फ़रमाते हैं: क़ियामत के दिन हजरे असवद के आँखें और मुंह होगा और यह हाजियों की शफ़ाअत करेगा। (तफ़सीरे नईमी)

३४) कुरबानी की सुन्नते इब्राहीमी को एहतिमाम और पाबन्दी के साथ ज़िन्दा करने की बुनियाद सन दो हिजरी में मदीनए मुनव्वरा में पड़ी। (नुज्हतुल क़ारी)

३५) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमेशा दो अबलक़ मेंढे कुरबान फ़रमाया करते थे, एक अपनी तरफ़ से और दूसरा अपने उम्मतियों की तरफ़ से जिन को नादारी या फ़रामोशी की वजह से कुरबानी की तौफ़ीक़ हासिल नहीं हुई। (बुख़ारी शरीफ़)

३६) मुज़्दलिफ़ा का दूसरा नाम जमअ भी है। इस का सबब एक तो यही है कि लोग दुनिया के कोने कोने से आकर यहाँ जमा होते हैं। दूसरी वजह यह है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा ने यहाँ इकट्ठे रात गुज़ारी थी। (नुज्हतुल क़ारी)

३७) हज़रत अली इब्ने अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: जब हज की आयत नाज़िल हुई और हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबए किराम से फ़रमाया कि हज करना फ़र्ज़ है तो हज़रत अक़रअ बिन हाबिस रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! क्या हर साल फ़र्ज़ है? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ामोश रहे। उन्हों ने फिर यही पूछा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फिर ख़ामोश रहे। उन्हों ने फिर यही सवाल किया तब फ़रमायाः अगर हम अभी हाँ कह देते तो हर साल फ़र्ज़ हो जाता। हज उम्र में एक बार फ़र्ज़ है। (तफ़सीरे ख़ाज़िन)

३८) जिइरानह एक औरत रीतह बिन्ते सअद का लक़ब था। यह वही औरत थी जो दिन भर सूत कात कर रात को तोड़ देती थी। यहाँ से ही हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जंगे हुनैन के बाद उमरा किया। यहाँ से सत्तर नबियों ने उमरा किया है जिसे आज बड़ा उमरा कहा जाता है। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

३९) जब सन ६ हिजरी में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की

सरकर्दगी में सूरए बराअत का एलान किया गया और फ़रमाया गया कि अगले साल से कोई मुश्रिक हज न करेगा और न कोई नंगे होकर कअबे का तवाफ़ करेगा, तो अरब के मुश्रिकों ने मक्के के मुसलमानों से कहा: तुम ने हमें हज से तो रोक दिया, इस का अंजाम भी देख लेना। हज में तिजारत का सामान हम ही बाहर से लाते हैं, तुम्हारी आमदनी हमारे ही ज़रिये होती है, अगर हम ने आना छोड़ दिया तो तुम भूखे मर जाओगे। इस पर कुछ मक्के वाले परेशान हुए तब सूरए तौबा की यह आयत नाज़िल हुई: रिज़्क़ देने वाला अल्लाह है उसी पर तवक्कुल करो, वह तुम्हें पहले से ज़्यादा रोज़ी अता फ़रमाएगा। (तफ़सीरे कबीर, ख़ाज़िन, रूहुल मआनी)

४०) माहे ज़िलहज्जा का पहला अशरा बहुत ही अज़मतों वाला है। इमाम नीशापूरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि इसी अशरे में मूसा अलैहिस्सलाम ने रब से पहला कलाम किया, इसी अशरे में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा कुबूल हुई, इसी अशरे में हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का ज़िब्ह और फ़िदिये का वाक़िआ पेश आया, इसी अशरे में हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने तूफ़ान से नजात पाई। इसी अशरे में बैअते रिज़वान, सुलहे हुदैबिया, फ़त्हे ख़ैबर की बशारत हुई। (ज़ुब्दतुल वाइज़ीन)

४१) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: वह दिन जिस में अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ख़ता माफ़ की थी, वह ज़िलहज्जा का पहला दिन था। इस दिन रोज़ा रखने वाले के तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं। दूसरें दिन हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की दुआ कुबूल हुई और अल्लाह तआला ने उन्हें मछली के पेट से निकाला। इस दिन रोज़ा रखने वाले को उस शख़्स का सवाब मिलता है जिस ने साल भर की इबादत में एक पल खुदा की नाफ़रमानी न की हो। तीसरे दिन हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम की दुआ कुबूल हुई। इस दिन रोज़ा रखने वाले की तमाम दुआएं कुबूल होती हैं। चौथे दिन हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए। इस दिन रोज़ा रखने वाले को ख़ौफ़ और फ़क्र से निजात मिलती है और क़ियामत के दिन नेकों की राह नसीब होती है। पांचवें दिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए। इस दिन रोज़ा रखने वाला निफ़ाक़ से आज़ाद और क़ब्र के अज़ाब से मेहफ़ूज़ रहता है। छटे दिन अल्लाह तआला ने अपने नबी के लिये ख़ैर के दरवाज़े खोले। इस दिन रोज़ा रखने वाले की तरफ़ अल्लाह तआला रहमत की नज़र से देखता है और फिर कभी अज़ाब नहीं करता। सातवें दिन दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द होते हैं। इस दिन

रोज़ा रखने वाले पर मुश्किलों के तीस दरवाज़े बन्द होते हैं और आसानियों के तीस दरवाज़े खुल जाते हैं। आठवाँ तरविया का दिन है। इस दिन रोज़ा रखने वाले को इतना सवाब मिलता है कि उस का अन्दाज़ा अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं कर सकता। नवाँ दिन अरफ़े का है। जो शख़्स इस दिन रोज़ा रखेगा एक पिछले साल और एक अगले साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाएगा। दसवां दिन क़ुरबानी का है। इस दिन जो शख़्स क़ुरबानी करता है, ख़ून की पहली बूंद के साथ उस के और उस के घर वालों के तमाम गुनाह अल्लाह तआला माफ़ कर देता है। और जो इस दिन मोमिन को खाना खिला दे या ख़ैरात करे, क़ियामत के दिन अम्न के साथ उठेगा और मीज़ान कोहे उहद से भारी हो जाएगी। (नुज़्हतुल मजालिस)

४२) सय्यिदुना उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बक़्र ईद के अशरे में हर रोज़े का सवाब एक माह के बराबर होता है और आठवीं ज़िलहज्जा का रोज़ा एक साल के बराबर और नवीं ज़िलहज्जा का रोज़ा दो साल के बराबर। (तफ़सीरे नईमी)

४३) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः आठवीं ज़िलहज्जा का रोज़ा रखने वाले को रब तआला सब्रे अय्यूब का सवाब अता करता है और नवीं ज़िलहज्जा का रोज़ा रखने वाले को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का सवाब अता करता है। (तफ़सीरे कबीर)

४४) इमाम नहरानी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया कि एक तन्नूर वाले ने एक ऊँट की रस्सी को तन्नूर में जलाना चाहा मगर वह न जली। बहुत कोशिश करने पर भी वह कामयाब न हुआ। ग़ैब से आवाज़ आई कि यह उस ऊँट की रस्सी है जिस पर दस बार हज किया गया इसे आग कैसे जलाएगी। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

४५) कहा गया है कि एक हज्जे मक़बूल बीस जिहादों से अफ़ज़ल है। (तफ़सीरे नईमी)

४६) उलमाए किराम फ़रमाते है कि जिस ऊँट पर सात हज कर लिये जाएं अल्लाह तआला उसे जन्नत के बाग़ों में चरने की इजाज़त देता है। (तफ़सीरे नईमी)
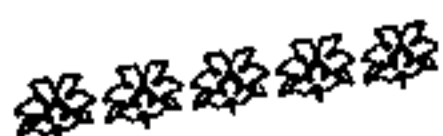
पन्द्रहवाँ अध्याय

ज़कात, सदक़ा व ख़ैरात

१) मुसलमान रिआया बैतुल माल में जो रक़म जमा कराती है उसे ज़कात व उश्र कहते हैं। यह ज़कात व उश्र मर्दों, औरतों और बच्चों (बच्चों पर सिर्फ़ उश्र) सब पर फ़र्ज़ है और ज़िम्मी रिआया जो रक़म बैतुल माल में जमा कराती है उसे जिज़िया कहा जाता है। (ज़ियाउन्नबी, जि: ४)

२) हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक जिज़िये के एतिबार से ग़ैर मुस्लिमों को तीन हिस्सों में तक़सीम किया गया है: दौलतमन्द तब्क़ा, औसत आमदनी वाला तब्क़ा और फ़ुक़रा। दौलतमन्द तब्क़े पर अड़तालीस दिरहम सालाना यानी चार दिरहम माहवार, औसत आमदनी वाले तब्क़े पर चौबीस दिरहम सालाना यानी दो दिरहम माहवार और फ़ुक़रा पर बारह दिरहम सालाना यानी एक दिरहम माहवार। (ज़ियाउन्नबी, जि: ४)

३) मुसलमानों के पास अगर मवेशी हों जैसे भेड़, बकरियाँ, गायें, भैसें, घोड़े और ऊँट तो उन की ज़कात भी मुसलमानों को अदा करनी पड़ती है हालांकि ज़िम्मी रिआया से मवेशियों पर किसी तरह का लगान या टैक्स वुसूल नहीं किया जाता। (ज़ियाउन्नबी, जि: ४)

४) मुसलमान औरत अगर साहिबे निसाब हो या मुसलमान बच्चा अगर साहिबे निसाब हो तो उसे भी लाज़मी तौर पर अपने माल की ज़कात और उश्र देना पड़ता है। इन के बरअक्स किसी ज़िम्मी औरत और बच्चे से कोई जिज़िया नहीं लिया जाता। (ज़ियाउन्नबी, जि: ४)

५) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: साज़ो सामान की कसरत से कोई शख़्स ग़नी नहीं होता। ग़नी वह है जो दिल का ग़नी हो। (शैख़ैन, तिर्मिज़ी)

६) फ़िरऔन बहुत सख़ी था। उस के मत्बख़ में रोज़ाना एक हज़ार बकरे कटते थे। जब उस की हलाकत का वक़्त क़रीब आया तो हामान ने उसे ख़ैरात बन्द कर देने की सलाह दी। चुनान्चे उस ने कम करते करते आख़िर ख़ैरात बन्द कर दी यहाँ तक कि उस के डूबने के दिन उस की रसोई में सिर्फ़ एक बकरा ज़िब्ह हुआ था और वह भी सिर्फ़ अपने घर के इस्तेमाल के लिये। इतने दिन तक उसे उस की ख़ैरात ही बचाए रही। (तफ़सीरे नईमी)

७) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई चीज़ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास तोहफ़े के तौर पर भेजी। आप ने उसे लौटा दिया।

सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा: उसे क्यों लौटाया? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! क्या यह आप ही का इरशाद नहीं है कि हमारे लिये यही बेहतर है कि हम किसी से भी कोई चीज़ न लें। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: इस का मतलब यह है कि सवाल नहीं होना चाहिये और जो बिना मांगे मयस्सर आए वह तो अल्लाह तआला की देन है जिस से उस ने तुम्हें नवाज़ा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है आइन्दा मैं किसी से खुद कोई चीज़ तलब नहीं करूंगा और जो चीज़ बिना मांगे मेरे पास आएगी उसे क़ुबूल करने में कोई उज़्र न होगा। (मालिक, शैख़ैन, तिर्मिज़ी)

८) वफ़ात से एक रोज़ पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से दरियाफ़्त फ़रमाया: ऐ आयशा, वह दीनार कहाँ हैं? हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़ौरन उठीं और आठ दीनार जो रखे हुए थे ले आईं और आक़ा की बारगाह में पेश कर दिये। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दीनारों को कुछ देर तक उलटते पलटते रहे। फिर फ़रमाया: ऐ आयशा, अगर मैं यह दीनार अपने घर में छोड़ कर अपने रब से मुलाक़ात करूं तो मेरा रब क्या फ़रमाएगा कि मेरे बन्दे को मुझ पर भरोसा नहीं था। आयशा, इन को फ़ौरन मिस्कीनों में बाँट दो। चुनान्चे आप ने अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में जो आख़िरी पूंजी थी उसे निकाल कर मोहताजों में तक़सीम कर दिया। (ज़ियाउन्नबी, जि: ४)

९) वह ज़ाते अक़्दस जिसे अल्लाह तआला ने ज़मीन के सारे ख़ज़ानों की कुंजियाँ अता फ़रमाई थीं उस के घर की कैफ़ियत यह थी कि ज़िन्दगी की आख़िरी रात में चराग़ में तेल नहीं था। हज़रत सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं: मैं ने अपना चराग़ अपनी एक पड़ोसन की तरफ़ भेजा और कहलवाया कि अपनी तेल की कुप्पी से चन्द क़तरे इस चराग़ में डाल दो ताकि आज की रात गुज़र जाए। (तारीख़े अलख़मीस, जि: २)

१०) हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इन्सान का अपनी ज़िन्दगी के अय्याम में एक दिरहम सदक़ा करना मरने के वक़्त सौ दिरहम सदक़ा करने से बेहतर है। (तर्मिज़ी)

११) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सख़ी अल्लाह तआला से क़रीब है, जन्नत के क़रीब है, लोगों के क़रीब है और दोज़ख़ से दूर है। और बख़ील अल्लाह तआला से दूर है, जन्नत से दूर है, लोगों से दूर है और जहन्नम से क़रीब है और जाहिल

सख़ी खुदा के नज़्दीक इबादत गुज़ार बख़ील से कहीं बेहतर है। (तिर्मिज़ी)

१२) एक हदीस में आया है कि कोई वली ऐसा नहीं हुआ कि जिस में अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने दो आदतें पैदा न कर दी होंः एक सख़ावत दूसरी खुश ख़ल्क़ी। (कन्ज़ुल अअ्माल)

१३) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और बोलाः या रसूलल्लाह! मेरी माँ का अचानक इन्तिक़ाल हो गया। मेरा ख़्याल है कि अगर वह कुछ बोल सकतीं तो ज़रूर मुझे सदक़ा ख़ैरात करने का हुक्म देतीं। आप फ़रमाएं अब अगर मैं उन की तरफ़ से कुछ सदक़ा ख़ैरात करूं तो क्या इस का सवाब उनको मिलेगा? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उसे इस का सवाब ज़रूर मिलेगा। (बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम)

१४) हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम्हारे मरहूमीन सदक़ा और ख़ैरात के सबब क़ब्र की तपिश से मेहफ़ूज़ रहते हैं। (तबरानी)

१५) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब कोई शख़्स अपने किसी नेक काम का सवाब किसी गुज़रे हुए शख़्स को पेश करता है तो उस सवाब को हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम एक नूरानी रकाबी में रख कर उस शख़्स की क़ब्र पर ले जाते हैं और उसे ख़बर करते हैं कि तुम्हारे फ़ुलाँ फ़ुलाँ रिश्तेदार ने यह तोहफ़ा तुम्हें भेजा है इसे क़ुबूल करो। यह सुन कर वह मुर्दा बहुत खुश होता है और उस के पड़ोसी जो ऐसे तोहफ़े से मेहरूम रहे बहुत ग़मगीन होते हैं। (तबरानी)

१६) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद हैः बहुत जल्द लेग ऐसा वक़्त देख लेंगे कि इन्सान अपनी ज़कात का सोना लेकर मुस्तहिक़ तलाश करता फिरेगा और कोई लेने वाला न मिलेगा। (बुख़ारी व मुस्लिम)

१७) हज़रत सुफ़ियान सूरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जो शख़्स हराम माल से सदक़ा देता है वह उस शख़्स जैसा है जो नापाक कपड़े को पेशाब से धोता है जिस से और भी नापाक हो जाता है। (कीमियाए सआदत)

१८) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सदक़ा अदा करना हर मुसलमान पर ज़रूरी है। सहाबा ने पूछाः अगर वह इस क़ाबिल न हो? फ़रमायाः अपने हाथों से कोई काम करे और उस कमाई से अपने आप को नफ़ा पहुंचाए और कुछ सदक़ा करे। अर्ज़ कियाः अगर इस का मक़दूर न हो? फ़रमायाः किसी हाजतमन्द की मदद करे। पूछाः अगर इस की भी

इस्तिताअत न रखता हो? फ़रमायाः अम्र बिल मअरूफ़ करे। सवाल कियाः अगर यह भी न कर सके? फ़रमायाः आपने आप को शर पहुंचाने से बाज़ रखे, यही उस का सदक़ा है। (शैख़ैन)

१९) हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ कियाः मैं जाहिलियत के दिनों में कई एक नेक काम करता था जैसे कि नमाज़, ग़ुलामों की रिहाई और सदक़ा वग़ैरा। अब इस्लाम लाने के बाद क्या मुझे उन नेकियों का सवाब मिलेगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो नेकियाँ तुम कर चुके हो उन्ही की बरकत से तुम मुसलमान हुए हो। (शैख़ैन)

२०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मिस्कीन को सदक़ा देना तो एक सदक़े का सवाब है लेकिन किसी ज़ी रहम (रिश्तेदार) को देना दोहरा सवाब है, एक तो सदक़े का दूसरा सिलए रहमी का। (निसाई)

२१) कलामे पाक में १५० जगह ख़ैरात की ताकीद आई है। (तफ़सीरे नईमी)

२२) हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु अपने क़बीलए तय का सदक़ा लेकर हाज़िर हुए तो चूंकि इस्लाम में यह पहला सदक़ा था इस लिये इसे देख कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा के चेहरे ख़ुशी से चमक उठे। (नुज़्हतुल क़ारी)

२३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सदक़ए फ़ित्र देने वाले को हर दाने के बदले में सत्तर हज़ार महल मिलेंगे जिन की लम्बाई मश्रिक़ से मग़रिब तक होगी। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

२४) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सदक़ए फ़ित्र इस लिये वाजिब किया गया है कि जो कुछ रोज़े की हालत में लग्व और बेहूदगी की जाती है उस के बदले मसाकीन को खाना खिलाना चाहिये। (तफ़सीरे नईमी)

२५) हज़रत अब्दुल मुत्तलिब इब्ने रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सदक़े के अमवाल लोगों के मैल होते हैं यह मुहम्मद और आले मुहम्मद के लिये जाइज़ नहीं हैं। (तफ़सीरे नईमी)

२६) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने जब कभी खाना लाया जाता तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूछ लेते कि यह सदक़ा है या तोहफ़ा। अगर कोई कह देता कि यह सदक़ा है तो सहाबा से फ़रमाते तुम लोग खाओ। और अगर वह कह देता कि पेशकश है तो अपना दस्ते मुबारक बढ़ा कर नोश फ़रमाना शुरू कर देते। (नुज़्हतुल क़ारी)

२७) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हदिया कुबूल फ़रमाते थे और इस का इवज़ भी पूरा अता फ़रमाया करते थे। (तफ़सीरे नईमी)

२८) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: न ग़नी के वास्ते सदक़ा लेना जाइज़ है और न तन्दुरुस्त के वास्ते जो मेहनत कर सकता हो। (तफ़सीरे नईमी)

२६) रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है: तालिबे इल्म पर एक दिरहम ख़र्च करने वाले को इतना सवाब मिलता है गोया उस ने कोहे उहद के बराबर सोना ख़ैरात किया। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

३०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: सदक़ा सत्तर बलाओं को टालता है इन में सब से कम दर्जे की बला जुज़ाम और बर्स है। (जामए सग़ीर)

३१) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब आदमी मर जाता है तो उस के सारे आमाल मुन्क़तअ हो जाते हैं मगर तीन चीज़ें बाक़ी रह जाती हैं: पहली सदक़ए जारिया, दूसरी नेक औलाद जो वालिदैन के लिये दुआ करती रहे और तीसरी इल्म जो उस के बाद लोगों को फ़ायदा पहुंचाए। (तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन)

३२) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स किसी नंगे को कपड़ा देगा अल्लाह तआला उसे जन्नत के सब्ज़ लिबास अता करेगा। जो किसी भूखे को खाना खिलाएगा उसे जन्नत के मेवे दिये जाएंगे। जो किसी प्यासे को पानी पिलाएगा उसे जन्नत की खुशबू और शराब से सैराब किया जाएगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

३३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अपनी ज़िन्दगी में एक दिरहम ख़ैरात करना मौत के वक़्त सौ दिरहम देने से अफ़ज़ल है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

३४) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस किसी ने किसी मुसलमान को पेट भर खाना खिलाया, अल्लाह तआला उसे दोज़ख़ से दूर रखेगा और उस के और जहन्नम के बीच ऐसी ख़न्दक़ें बना देगा कि हर ख़न्दक़ के बीच पांच सौ बरस की राह का फ़ासला होगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

३५) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सख़ावत के दरख़्त की जड़ जन्नत में और इस की टहनियाँ दुनिया में झुकी हुई हैं जो इस की एक टहनी को पकड़ लेगा वह टहनियों टहनियों जन्नत में पहुंच जाएगा और कंजूसी के

दरख़्त की जड़ बीच दोज़ख़ में और इस की शाख़ें दुनिया में फैली हुई हैं एक ही टहनी सीधी दोज़ख़ में पहुंचा देगी। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

३६) हदीस में है कि ऊपर का (देने वाला) हाथ नीचे के (लेने वाले) हाथ से बेहतर होता है। (बुख़ारी शरीफ़)

३७) हदीस में इरशाद है कि ग़रीबों और बेवाओं की ख़िदमत करने वाला वही दर्जा रखता है जो अल्लाह तआला की राह में जिहाद करने वाले का या रात भर नमाज़ पढ़ने और दिन भर रोज़ा रखने वाले का होता है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

३८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिसे अल्लाह तआला ने माल अता किया और उस ने माल की ज़कात न दी तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उस माल को एक ख़ौफ़नाक सांप की शक्ल में ज़ाहिर करेगा जिस के सर पर बाल खड़े होंगे और जिस की आँखों के ऊपर दो सियाह नुक़्ते होंगे। यह सांप उस के गले का हार बनाया जाएगा और सांप उस के दोनों जबड़ों को पकड़ कर रखेगा फिर कहेगा कि मैं हूँ तेरा माल, मैं हूँ तेरा ख़ज़ाना। (मिश्कात शरीफ़)

३९) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस मुसलमान ने कोई दरख़्त लगाया और उस का फल आदमियों और जानवरों ने खाया तो उस लगाने वाले के लिये बड़ा सवाब और सदक़ा है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

४०) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद हैः जिब्रईल अलैहिस्सलाम मुझे पड़ोसी पर एहसान की यहाँ तक वसियत करते रहे कि मुझे ख़्याल हुआ कि पड़ोसी को मेरा वारिस ही करके छोड़ेंगे। (बुख़ारी शरीफ़)

४१) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद हैः अगर किसी के पास ज़मीन हो तो उसे चाहिये कि उस की काश्त करे वरना अपने किसी भाई को दे दे। (तफ़सीरे नईमी)

४२) हदीस में है कि बेवा औरत और मिस्कीन के साथ सुलूक करने वाला ऐसा है जैसे अल्लाह की राह में जिहाद करने वाला या तमाम रात नवाफ़िल पढ़ने वाला और दिन को रोज़ा रखने वाला। (तफ़सीरे नईमी)

४३) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि साज़ो सामान की बोहतात से कोई ग़नी नहीं होता। ग़नी वह है जो दिल का ग़नी हो यानी अल्लाह की राह में ख़र्च कर सकता हो। (तफ़सीरे नईमी)

४४) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम में का कोई शख़्स अपने से अमीर की तरफ़ देखे तो चाहिये कि फिर अपने से ग़रीब की

तरफ़ भी ख़्याल करे। (तफ़सीरे नईमी)

४५) रसूले मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम उस से रहम के साथ पेश आओ जो तुम से कटे, उसे दो जो तुम्हें मेहरूम रखे और उसे माफ़ कर दो जो तुम पर ज़ुल्म करे। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

४६) रसूले मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम में सब से अच्छा शख़्स वही है जो सब से अच्छे अख़लाक़ वाला हो। (बुख़ारी शरीफ़)

४७) दिरहम और दीनार यानी मालो ज़र में गिरफ़्तार जिस क़दर इन्सान हैं जिन के दिलों पर दुनियवी माल की हविस क़ब्ज़ा कर चुकी है, उन के लिये अल्लाह तआला की लअनत और फिटकार है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

४८) मालो ज़र रखने वाला ग़नी नहीं होता बल्कि ग़नी वह है जो दिल का ग़नी हो यानी तवन्गरी दिल से होती है न कि मालो ज़र से। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

४९) हदीस में है कि ग़नी की सही तारीफ़ यह है कि दूसरों के पास जो कुछ है उस से फ़ायदा उठाने की ख़्वाहिश दिल में न रखे यानी ग़ैरों के माल से बेनियाज़ होना ही हक़ीक़त में ग़नी होना है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५०) हदीस में है कि यक़ीनी नफ़ा देने वाली तिजारत सख़ावत है यानी अल्लाह की राह में देना अकारत नहीं जाता, इस में नफ़ा ही नफ़ा है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५१) सख़ावत के लिये सब से ज़्यादा नुक़्सान देने वाली चीज़ है सख़ावत करने के बाद एहसान जताना। उलमा ने कहा है एहसान जताना सख़ावत का सूद है जो हराम है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५२) हदीस में है कि पाकीज़ा बात और नर्मी का जवाब साइल का सदक़ा है। अगर जेब ख़ाली हो तो मीठी बात ख़ैरात का नेअमुल बदल होती है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५३) मोमिन के लिये इस में इस्लामी ख़ू का शाइबा भी न होगा कि वह पेट भर खाए और उस का पड़ोसी भूखा हो गोया हमसाए की ख़बरगीरी मोमिन पर वाजिब और लाज़िम है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५४) हदीस में है कि जो शख़्स अता करने और मना करने और मुहब्बत करने में सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ामन्दी चाहता हो वही ईमान में कामिल होता है। यानी उस की अता और मना और मुहब्बत और कीना में किसी ग़ैरे ख़ुदा का दख़्ल और नफ़्स की ख़ुशनूदी मुराद न हो। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५५) हदीस में है कि जो शख़्स बेकसों पर रहम नहीं करता उस पर अल्लाह तआला भी रहम और रहमत नहीं फ़रमाता यानी रब्बे करीम के रहम

को करीब लाने वाली चीज़ उस की नादार मख़लूक़ पर रहम करना है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमेशा ग़रीबों और मिस्कीनों से इस तरह पेश आते थे कि वह लोग अपनी ग़रीबी को रहमत समझने लगते और अमीरों को हसरत होती थी कि हम ग़रीब क्यों न हुए। (नुज़्हतुल क़ारी)

५७) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ हुआ करती थीः ऐ मेरे रब मुझे मिस्कीन ज़िन्दा रख, मिस्कीन उठा और मिस्कीनों के साथ ही मेरा हश्र कर। (नुज़्हतुल क़ारी)

५८) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं ने जन्नत के दरवाज़े पर खड़े हो कर देखा कि उस में ज़्यादा ग़रीब और मिस्कीन थे और मालदार दरवाज़े पर रोक दिये गए थे। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५९) एक बार रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शहादत की उंगली और बीच की उंगली को मिला कर फ़रमायाः मैं और यतीम की परवरिश करने वाला जन्नत में इन दो उंगलियों की तरह क़रीब होंगे। (बुख़ारी शरीफ़)

६०) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम को रोज़ी और मदद तुम्हारे बूढ़ों और कमज़ोरों की बदौलत दी जाती है। गोया बूढ़ों की ख़िदमत अल्लाह तआला के रहम का वसीला है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

६१) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स पांच चीज़ें रोकेगा, अल्लाह तआला उस से पांच चीज़ें रोक लेगा। एक, जो ज़कात रोकेगा, अल्लाह तआला आफ़तों से उस के माल की हिफ़ाज़त को रोक लेगा। दो, जो ज़मीन की पैदावार का दसवाँ हिस्सा रोक लेगा, अल्लाह तआला उस की तमाम कमाई की बरकत रोक लेगा। तीन, जो सदक़ा रोकेगा, अल्लाह उस की आफ़ियत को रोक लेगा। चार, जो सिर्फ़ अपने नफ़्स के लिये दुआ करेगा, अल्लाह तआला उस से क़ुबूलियत को रोक लेगा। पांच, जो नमाज़ के लिये जमाअत में हाज़िर होने से रुकेगा, अल्लाह तआला उस से ईमान के कमाल को रोक लेगा। यानी उस का ईमान क़ामिल न होगा। (ज़ुब्दतुल वाइज़ीन)

६२) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: सदक़ा सत्तर बलाओं को दफ़ा कर देता है, उन में सब से हल्की बला कोढ़ की बीमारी है। (बुख़ारी शरीफ़)

६३) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने इब्लीस से पूछा कि तेरा सब से ज़्यादा मेहबूब लोगों में कौन है? उस ने कहा कंजूस मुसलमान इस लिये कि उस की इबादत और बन्दगी अल्लाह तआला के दरबार में हरगिज़ क़ुबूल नहीं। हज़रत

ईसा अलैहिस्सलाम ने पूछाः लोगों में तेरा सब से बड़ा दुशमन कौन है? उस ने कहाः नाफ़रमान सख़ी। इस लिये कि उस की सख़ावत की वजह से उस के सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (सब्ए सनाबिल शरीफ़)

६४) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सदक़ा देना अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्योंकि इस में छः बातें हैं: तीन दुनिया में और तीन आख़िरत में। दुनिया में तो यह है कि रिज़्क़ बढ़ता है, माल में ज़ियादती होती है, बस्तियाँ आबाद होती हैं। और जो आख़िरत में हैं वह यह हैं: पर्दा पोशी होगी, सर पर साया होगा और आग से बचाव होगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

६५) शौहर पर कुछ लाज़िम नहीं कि वह औरत की ज़कात अदा करे। अगर न देगा तो उस पर इल्ज़ाम नहीं। ज़ेवरात की मालिका औरत जिस पर ज़कात फ़र्ज़ है उसे लाज़िम है जहाँ से जाने ज़कात दे अगर्चे ज़ेवर ही फ़क़ीर को दे या बेच कर उस की क़ीमत से अदा करे। (बहारे शरीअत)

६६) माँ बाप को ज़कात, फ़ित्रा और कोई वाजिब सदक़ा देना जाइज़ नहीं. ऐसे ही बीवी और अपनी औलाद को। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

६७) सारा माल ख़ैरात कर देना मना है कि इस में अपनी और अपने बीवी बच्चों की हक़ तलफ़ी होती है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

६८) हदीस में है कि जो कोई मुहब्बत से यतीम के सर पर हाथ फेरेगा उसे हर बाल के बदले नेकी मिलेगी। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

६९) अबू दाऊद में हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बुख़्ल से बचो। पिछली उम्मतें बुख़्ल की वजह से हलाक हुईं।

७०) मुख़्तलिफ़ बख़ीलों की सज़ाएं मुख़्तलिफ़ हैं। जानवरों का बख़ील क़ियामत में जानवर लादे रहेगा और दोज़ख़ में उन से रौंदा जाएगा। सोने चाँदी का बख़ील दाग़ा जाएगा, दूसरे तिजारती मालों के बख़ील को तौक़ पहनाया जाएगा। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७१) हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम की निस्बत रुकूअ की हालत में चाँदी का छल्ला ज़कात में देने की जो बात मशहूर है वह ख़्याली बात है। मौला अली पर कभी ज़कात फ़र्ज़ ही नहीं हुई, आप की ज़िन्दगी फ़क़्र और फ़ाक़े में गुज़री। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७२) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो मुसलमान पौदा लगाता है या खेती करता है और उस में से परिन्दे या इन्सान जो कुछ भी खा लेते हैं वह उस के लिये सदक़ा हो जाता है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७३) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बेहतरीन सदक़ा वह है जो आदमी को ग़नी रहने दे। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

७४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में सदक़ए फ़ित्र सिर्फ़ छुहारा, मुनक़्क़ा और जौ था, गेहूँ न था। गेहूँ की शुरूआत हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने से हुई। (तफ़सीरे नईमी)

७५) सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं जो चाहता है कि फ़रिश्तों के साथ उड़े वह मेहरबानी में सूरज की तरह, पर्दा पोशी में रात की तरह, आजिज़ी में ज़मीन की तरह, बुर्दबारी में मय्यत की तरह और सख़ावत में जारी नहर की तरह रहे। (तफ़सीरे नईमी)

७६) हज़रत अबुल दहदाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हो कर अर्ज़ कियाः या हबीबल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरे पास दो बाग़ हैं अगर उन में से एक सदक़ा कर दूं तो क्या मुझे उस जैसा बाग़ जन्नत में मिलेगा? फ़रमायाः हाँ। अर्ज़ कियाः मेरे साथ मेरी बीवी उम्मे दहदाह भी उस बाग़ में होगी? फ़रमायाः हाँ। अर्ज़ कियाः मेरे बच्चे भी मेरे साथ होंगे? फ़रमायाः हाँ। हज़रत अबू दहदाह ने उन में से बेहतरीन बाग़ हुनैनिया ख़ैरात कर दिया। उस में छः सौ दरख़्त थे। उन के बाल बच्चे उसी बाग़ में रहते थे। आप उस बाग़ के दरवाज़े पर पहुंचे और बीवी को आवाज़ दीः ऐ दहदाह की माँ! यहाँ से निकल चलो, मैं ने यह बाग़ रब के हाथ बेच दिया, अब यह बाग़ हमारा न रहा। उस पाक बीवी ने कहाः मुबारक हो कि तुम ने बेहतरीन गाहक के हाथ बड़े ही नफ़ा का सौदा किया। (तफ़सीरे कबीर)

७७) क़र्ज़े हसन उर्दू में उसे कहते हैं जिस का क़र्ज़ लेने वाले पर तक़ाज़ा न हो, अगर वह दे दे तो ठीक वरना माफ़। (तफ़सीरे नईमी)

७८) बुज़ुर्गों का कहना है कि हर ख़र्च का मसरफ़ अलग अलग है। सदक़ात का मसरफ़ फ़ुक़रा, हदिये का मसरफ़ रिश्तेदार और अहले क़राबत, जान का मसरफ़ जिहाद का मैदान, साँस का मसरफ़ ज़िक्रे रहमान और सारी नेकियों का मसरफ़ अल्लाह व रसूल की रज़ा। (तफ़सीरे नईमी)

७९) मकहूले शामी कहते हैं कि सदक़ा करते वक़्त जहन्नम रब से दरख़्वास्त करता है कि मौला मुझे शुक्र के सज्दे की इजाज़त दे कि उम्मते मुहम्मदिया में से एक शख़्स मुझ से आज आज़ाद हुआ क्योंकि मुझे मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हया आती है कि उन के उम्मती को जलाऊँ मगर तेरी इताअत ज़रूरी है। (रूहुल बयान)

८०) हज़रत नाफ़ेअ जो सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के गुलाम हैं और इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि के उस्ताद, जब उन की वफ़ात का वक़्त करीब आया तो दोस्तों से कहा कि मेरी चारपाई की जगह खोदो। जगह खोदी गई तो वहाँ एक मटका निकला जिस में बीस हज़ार दिरहम थे। फ़रमाया कि मेरे दफ़्न के बाद इन्हें ख़ैरात कर देना। लोगों ने पूछा: यह माल कैसा है? फ़रमाया: मैं ने अल्लाह के हुकूक़ और बीवी के हुकूक़ कभी न मारे मगर यह माल इस लिये जमा रखा कि मेरे दिल को सुकून रहे। इस के ज़रिये ज़कात देता रहूं और वक़्त पड़ने पर किसी के सामने हाथ न फैलाना पड़े। अब जब कि यह तीनों चीज़ें ख़त्म हो रही हैं तो इसे रब के बैंक में जमा कर देना। (तफ़सीरे रूहुल मआनी)

८१) ग़ज़वए तबूक के मौक़े पर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबए किराम को चन्दा देने का हुक्म दिया ताकि जिहाद पर ख़र्च हो। सब से पहले हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अपना सारा माल यहाँ तक कि सुई धागा भी लेकर हाज़िर हुए जिस की क़ीमत चार हज़ार दिरहम थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने सारे माल का आधा लेकर हाज़िर हुए। जब हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा: तुम ने घर वालों के लिये क्या छोड़ा? अर्ज़ किया: अल्लाह और उस का रसूल घर वालों के लिये काफ़ी है और जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि तुम ने घर में क्या छोड़ा तो अर्ज़ किया कि उतना ही जितना यहाँ हाज़िर किया। फ़रमाया: तुम दोनों में वही फ़र्क़ है जो तुम्हारे कलामों में फ़र्क़ है। हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने दस हज़ार ग़ाज़ियों को जिहाद का सामान दिया जिस पर दस हज़ार दीनार ख़र्च किये और एक हज़ार दीनार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर किये। इस के अलावा तीन ऊँट उन के सामान के साथ और पचास घोड़े भी पेश किये। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम जो चाहो करो, तुम जन्नती हो चुके। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु चार हज़ार दिरहम लाए और अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! मेरे पास आठ हज़ार दिरहम थे आधे यहाँ लाया आधे घर में रखे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो लाए और जो घर छोड़ आए अल्लाह दोनों में बरकत दे। उन के माल में इतनी बरकत हुई कि कुछ रिवायतों में है कि उन की चार बीवियाँ थीं। उन की वफ़ात के बाद उन्हें आठवाँ हिस्सा मीरास मिली तो एक बीवी के हिस्से में अस्सी हज़ार दिरहम आए। हज़रत आसिम बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हु एक

सौ वसक़ खजूरें लाए। एक वसक़ साठ साअ और एक साअ साढ़े चार सेर का। मगर हज़रत अबू अक़ील अन्सारी जिन का नाम हिजाब या सहल बिन राफ़ेअ है, वह एक साअ खजूरें लाए और बोलेः या रसूलल्लाह! आज रात मैं ने बाग़ में पानी देने की मज़दूरी की, रात भर की मज़दूरी दो साअ खजूरें हुईं। एक साअ मैं ने घर पर छोड़ दीं, एक साअ यहाँ लाया हूं। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन के इस मामूली सदक़े की ऐसी क़दर फ़रमाई कि फ़रमायाः इन खजूरों को सारे जमा शुदा माल पर छिड़क दो ताकि यह सब में शामिल हो जाएं। (तफ़सीरे रूहुल बयान, रूहुल मआनी, ख़ाज़िन, तफ़सीरे कबीर)

८२) एक बार मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम के घर खाना न था। आप ने मजबूर होकर हज़रत बीबी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की क़मीस छः दिरहम में फ़रोख़्त कर दी। पैसे लेकर आ ही रहे थे कि कोई साइल मिल गया। सब दिरहम उसे अता फ़रमा दिये। आगे बढ़े कि एक शख़्स ऊँटनी बेचता हुआ मिला। आप ने उस से उधार ख़रीद ली। लेकर चले ही थे कि एक ख़रीदार मिल गया जिस ने बहुत नफ़े से ख़रीद ली। आप ने चाहा कि क़र्ज़ख़्वाह का क़र्ज़ अदा कर दें। बाज़ार में बहुत तलाश किया मगर न पाया। तब आकर यह वाक़िआ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया। आप ने फ़रमायाः साइल जन्नत के मालिक रिज़वान थे और बेचने वाले हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम और ख़रीदार हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

८३) इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक ज़मीन की हर पैदावार पर ज़कात वाजिब है, चाहे पैदावार थोड़ी हो या बहुत। चाहे सड़ने गलने वाली हो या बाक़ी रहने वाली। लिहाज़ा ग़ल्ला, फल, तरकारियाँ सब में ज़कात वाजिब है। (तफ़सीरे नईमी)

८४) अगर किराए की जगह में खेती की गई तो बीज वाले पर ज़कात है न कि ज़मीन के मालिक पर। यानी जिस की पैदावार उसी पर ज़कात। (तफ़सीरे नईमी)

८५) नज़्र पूरी करना फ़र्ज़ है शर्त यह है कि अल्लाह के लिये हो और जिन्से वाजिब से हो यानी ऐसी चीज़ की नज़्र माने जो शरीअत में वाजिब है जैसे नमाज़, रोज़ा, हज, कुरबानी वग़ैरा। औलिया के नाम की नज़्र, ऐसे ही ग़ैर वाजिब काम की नज़्र का पूरा करना वाजिब नहीं, जैसे मस्जिदों में चराग़ जलाने की नज़्र, वहाँ झाड़ू देने की नज़्र या किसी वली के आस्ताने तक पैदल सफ़र करने की नज़्र कि यह काम शरीअत में कहीं वाजिब नहीं हैं। (तफ़सीरे नईमी)

८६) आम फ़कीरों के मुक़ाबले में ग़रीब उलमा, दीन के तालिब इल्म और

मुदर्रिसीन को ख़ैरात देना अफ़ज़ल है जिन्हों ने अपने को दीनी ख़िदमत के लिये वक़्फ़ कर दिया है। अगर उन की ख़िदमत न की गई और वह रोज़ी रोटी के लिये मजबूर हो गए तो दीन का सख़्त नुक़सान होगा। (तफ़सीरे नईमी)

८७) हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: जो मुसलमान भीक न मांगने का अहद करले मैं उस के लिये जन्नत का ज़ामिन हूँ। (मिश्कात किताबुज़ ज़कात)

८८) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने चालीस हज़ार दीनार (लगभग एक लाख रुपये से ज़्यादा) ख़ैरात किये, दस हज़ार दीनार दिन में, दस हज़ार दीनार रात में, दस हज़ार छुपवाँ और दस हज़ार खुल्लम खुल्ला। (बैज़ावी, मदारिक)

८९) गिरवी रखी हुई चीज़ की ज़कात किसी पर नहीं। क्योंकि मालिक का उस पर क़ब्ज़ा नहीं और क़र्ज़ ख़्वाह की उस पर मिल्कियत नहीं। हाँ जब गिरवी रखने वाला अपना माल छुड़ा ले तब उस पर पिछले सालों यानी क़र्ज़ के ज़माने की ज़कात भी वाजिब होगी मगर क़र्ज़ अलग करके। (तफ़सीरे नईमी)

९०) अगर सय्यिद किसी ग़ैर सय्यिद औरत से निकाह कर ले तो औलाद सय्यिद है कि उन्हें ज़कात लेना हराम है और अगर ग़ैर सय्यिद किसी सय्यिद औरत से निकाह करले तो औलाद सय्यिद न होगी, उन्हें ज़कात हलाल। सय्यिद की औलाद हर हाल में सय्यिद है चाहे लौंडी से हो या ग़ैर सय्यिद औरत से। (अहकामुल क़ुरआन)

९१) कअब अहबार से रिवायत है कि एक बार हज़रत बी बी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बीमार हो गईं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन से पूछा कि दुनिया की चीज़ों में से तुम्हारा दिल किस चीज़ को चाहता है? जवाब दिया: अनार को। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कुछ देर के लिये सोच में पड़ गए क्योंकि उन के पास कौड़ी पैसा न था। फिर बाज़ार में आए और एक दिरहम उधार लेकर अनार ख़रीदा और घर की तरफ़ चले। रास्ते में एक बीमार आदमी को सड़क पर पड़ा देखा। आप ठहर गए और उस से पूछा: तेरा दिल किस चीज़ को चाहता है? उस ने कहा: ऐ अली, मैं पांच दिन से यहाँ पड़ा हूँ, बहुत से आदमी मेरे पास से गुज़रे मगर किसी ने मेरी तरफ़ निगाह न की। मेरा दिल अनार खाने को चाहता है। हज़रत अली अपने दिल में कहने लगे कि अगर मैं इसे अनार खिला दूँ तो फ़ातिमा मेहरूम रही जाती हैं और अगर मना कर दूं तो अल्लाह की नाफ़रमानी होती है जो फ़रमाता है कि साइल को न झिड़को। चुनान्चे आप ने अनार तोड़ कर उस बीमार को

खिलाया और वह उसी वक़्त तन्दुरुस्त होकर उठ बैठा। उधर सदक़े की बरकत से बीबी फ़ातिमा को सेहत हासिल हो गई। हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम शर्माए हुए घर में दाख़िल हुए। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा उन्हें देख कर खड़ी हो गईं। हज़रत अली ने उन्हें सारा माजरा सुनाया। वह बोलीं: आप ग़मगीन क्यों होते हैं। अल्लाह तआला के इज़्ज़त और जलाल की क़सम, उधर आप ने उस बीमार को अनार खिलाया, इधर मेरे दिल से उस की ख़्वाहिश जाती रही। हज़रत अली इस बात से बहुत ख़ुश हुए। इतने में किसी ने ज़ंजीर खटखटाई। हज़रत अली ने फ़रमाया: कौन? जवाब आया: सलमान फ़ारसी, ज़रा दरवाज़ा खोलिये। आप ने दरवाज़ा खोला, देखा कि हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में कपड़े से ढका हुआ एक थाल है। सलमान ने वह थाल हज़रत अली के सामने रख दिया। हज़रत अली ने पूछा: यह कहाँ से आया? सलमान ने फ़रमाया: अल्लाह तआला की तरफ़ से रसूल को और रसूल की तरफ़ से आप को हदिया भेजा गया है। कपड़ा उठा कर देखा तो नौ अनार थे। उस वक़्त हज़रत अली ने फ़रमाया कि अगर यह हदिया अल्लाह की तरफ़ से होता तो दस अनार होते क्योंकि अल्लाह तआला का क़ौल है कि जो एक नेकी करता है उसे दस मिला करती हैं। सलमान यह सुन कर हंस पड़े और अपनी आस्तीन में से एक अनार निकाल कर थाल में रख दिया और बोले: ऐ अली! ख़ुदा की क़सम अनार तो दस ही थे लेकिन मैं ने आप का इम्तिहान लेने की नियत से एक छुपा लिया था। (रौज़तुल मुत्तक़ीन)

९२) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अपनी तरफ़ से और अपने गुज़रे हुओं की तरफ़ से सदक़ा दिया करो चाहे एक घूंट पानी ही क्यों न हो और अगर यह भी मयस्सर न हो तो क़ुरआने मजीद की एक आयत सिखा दिया करो और अगर यह भी मालूम न हो तो मग़फ़िरत और रहमत की दुआ मांगा करो क्योंकि अल्लाह तआला ने क़ुबूलियत का वादा फ़रमा लिया है। (हयातुल क़ुलूब)

९३) सदक़ा चार तरह का है: एक के बदले दस गुना सवाब मिलता है, दूसरे के बदले सत्तर हिस्से, तीसरे के बदले सात सौ हिस्से, चौथे के बदले सात हज़ार। पहला सदक़ा यह है कि फ़क़ीरों को कुछ दे दिया जाए। दूसरा सदक़ा यह है कि अपने मोहताज रिश्तेदारों को दे, तीसरा यह कि अपने मोहताज भाई को दे, चौथा यह कि तालिबे इल्म की नज़्र करे। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

९४) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने रिवायत की कि एक नबी ने अर्ज़ किया: इलाही मोमिन बन्दे पर, जो तेरा फ़रमाँ बरदार और गुनाहों से

दूर रहता है, ज़्यादा मुसीबतें क्यों पड़ती हैं और काफ़िर जो नाफ़रमान और सरासर गुनहगार है, अकसर बलाओं से मेहफ़ूज़ क्यों रहता है और उस पर दुनिया क्यों फ़राख़ कर दी जाती है। अल्लाह तआला ने वही नाज़िल की कि बन्दे भी मेरी मिल्क हैं और बला भी। मोमिन के ज़िम्मे कुछ गुनाह होते हैं इस लिये मैं उस से दुनिया समेट कर किसी बला में डाल देता हूं ताकि गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाए और काफ़िर कुछ नेकियाँ कर लिया करता है। उस के सिले में उस की रोज़ी फ़राख़ कर देता हूँ और बलाएं दफ़ा कर देता हूँ ताकि क़ियामत के दिन गुनाहों की पूरी सज़ा दूँ। (तफ़सीरे नईमी)

९५) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सब्र तीन तरह का होता है: एक मुसीबत पर, दूसरा ताअत पर और तीसरा मअसियत पर। पहले को तीन सौ दर्जे, दूसरे को छः सौ दर्जे और तीसरे को नौ सौ दर्जे मिलेंगे। एक दर्जे से दूसरे दर्जे तक इतना फ़ासला होगा जितना आसमान और ज़मीन या सातवीं ज़मीन से पहली ज़मीन या पहली ज़मीन से अर्श के बीच फ़ासला है। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

९६) कुरआने मजीद में ७० या ७५ जगह सब्र का ज़िक्र आया है। (तफ़सीरे नईमी)

९७) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम में से किसी का अपनी बीवी से मुबाशिरत करना भी सदक़ा है। सहाबा ने अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल! कोई अपनी शहवत पूरी करेगा और उसे अज्र भी मिलेगा? फ़रमाया: अगर वह हराम मुबाशिरत करता तो क्या वह गुनहगार न होता। इसी तरह वह जाइज़ मुबाशिरत करने पर अज्र का मुस्तहिक़ है। (तफ़सीरे नईमी)

९८) फ़ुक़हाए किराम ने लिखा है कि जो काफ़िर अहले हर्ब में से न हों बल्कि ज़िम्मी हों उन के लिये सदक़ात जाइज़ हैं। (तफ़सीरे नईमी)

९९) एक शख़्स ने जंगल में देखा कि एक कुत्ता प्यासा है, प्यास के मारे दम निकला जा रहा है। उस ने टोपी को डोल बनाया और अमामा को रस्सी और एक कुंएं से पानी खींच कर कुत्ते को पिलाया, उस की जान बच गई। उस ज़माने के पैग़म्बर को हुक्म हुआ: जाओ उस शख़्स से कहो हम ने तेरे सारे गुनाह माफ़ किये, तेरी यह ख़ैरात हमें पसन्द आई। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१००) एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास दीन की ख़िदमत के लिये चन्दा हो रहा था। मालदार सैंकड़ों रुपये ला रहे थे। एक शख़्स दो सेर गेहूँ लाया, लोग हंसने लगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हंसने की क्या बात है? तुम ने अपनी हैसियत के मुताबिक़ दिया

और उस ने अपनी हैसियत से। उस की ग़रीबी की वजह से सब से पहले उस की ख़ैरात मक़बूल हुई। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१०१) ख़ैरात जैसे माल की होती है ऐसे ही और तरह की भी होती है: किसी ने कोई अच्छी बात कही जैसे ख़ुद भी नेक काम में चन्दा दिया और दूसरों से भी चन्दा देने को कहा तो उस की यह नेक बात भी ख़ैरात में गिनी जाएगी। दो शख़्सों में इन्साफ़ करना या किसी की मदद करना भी ख़ैरात है। कलिमा शरीफ़ का ज़िक्र करना, मस्जिद की तरफ़ नमाज़ के लिये जाना भी ख़ैरात है। रास्ते से तकलीफ़ देने वाली चीज़ दूर करना भी ख़ैरात है, जितने नवाफ़िल हैं चाहे नमाज़ हो या रोज़ा हो या कुछ और हों, सब ख़ैरात है। (गुल्दस्तए तरीक़त)

१०२) तिर्मिज़ी शरीफ़ में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मोमिन में दो ख़सलतें जमा नहीं होतीं: एक बुख़्ल, दूसरी बद ख़ुल्क़ी। (तफ़सीरे नईमी)
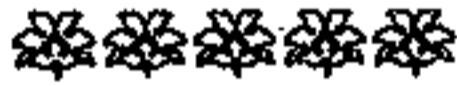
सोलहवाँ अध्याय

हुस्ने सुलूक, रिश्तेदारों व आम इन्सानों के अधिकार

१) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुनाः अल्लाह तआला ने फ़रमायाः मैं ही अल्लाह हूँ और मैं ही रहमान हूँ। मैं ने रहम (रिश्तेदारी) को पैदा किया। मैं ने इस का नाम अपने नाम से निकाला है। जो इसे जोड़ेगा मैं उसे जोड़ूंगा और जो इस से क़त्ए ताल्लुक़ करेगा मैं भी उसे टक्ड़े टुकड़े कर दूंगा। (तिर्मिज़ी)

२) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वही से सरफ़राज़ होने से पहले ही सिलए रहमी पर अमल पैरा थे। इस का सुबूत उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा की गवाही है कि ग़ारे हिरा में हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने आकर सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहली वही सुनाई और नबुव्वत का बार आप पर डाला गया। इस की वजह से आप पर एक बेचैनी सी तारी थी। आप घर तशरीफ़ लाए और जो वाक़िआ पेश आया था उस से उम्मुल मोमिनीन को आगाह किया और कहा कि मुझे अपनी जान का ख़ौफ़ है। उस वक़्त आप को तसल्ली देते हुए उम्मुल मोमिनीन ने जो बातें कहीं वह यह थींः हरगिज़ नहीं हो सकता, अल्लाह तआला आप को कभी रंजीदा नहीं करेगा क्योंकि आप रिश्तेदारों के साथ अच्छा बर्ताव करते हैं, बेसहारों को सहारा देते हैं, मोहताजों के लिये कमाते हैं, मेहमानों की तवाज़ोअ करते हैं और ज़रूरत मन्दों की मदद करते हैं। (बुख़ारी शरीफ़)

३) सुल्हे हुदैबिया (सन छः हिजरी) के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुख़्तलिफ़ सलातीन के पास ख़ुतूत इरसाल किये जिन में उन्हें इस्लाम की दअवत दी। जब आप का नामए मुबारक हिरक़िल के पास पहुंचा तो उस ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में जानने की ग़र्ज़ से अपने दरबारियों से कहा कि मक्का के किसी आदमी को दरबार में पेश करो। उन्हों ने अबू सुफ़ियान को पेश किया जो उस वक़्त तक ईमान नहीं लाए थे। बादशाह ने उन से बहुत से सवाल किये जिन में से एक सवाल यह भी था कि तुम्हारे नबी तुम्हें किस बात का हुक्म देते हैं? अबू सुफ़ियान ने जवाब दियाः वह हमें नमाज़, ज़कात, सिलए रहमी और पाक दामनी का हुक्म देते हैं। (मुस्लिम शरीफ़)

४) सय्यिदुना अम्र बिन अम्बसा रज़ियल्लाहु अन्हु से एक तवील हदीस

मरवी है जिस में इस्लाम के जुम्ला उसूल व आदाब बयान किये गए हैं। वह फ़रमाते हैं: मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। यह आग़ाज़े नबुव्वत का ज़माना था। मैं ने अर्ज़ किया: आप क्या हैं? फ़रमाया: मैं नबी हूँ। मैं ने अर्ज़ किया: नबी किसे कहते हैं? फ़रमाया: मुझे अल्लाह तआला ने भेजा है। मैं ने कहा: अल्लाह तआला ने आप को क्या चीज़ देकर भेजा है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने मुझे रिश्तों को जोड़ने और बुतों को तोड़ने के लिये भेजा है और इस बात के लिये भेजा है कि अल्लाह तआला को एक समझा जाए और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराया जाए। (मुस्लिम शरीफ़)

५) सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है: एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल मुझे ऐसा अमल बताइये जिस से मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊं। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह की इबादत करो, उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओ, नमाज़ क़ाइम करो, ज़कात दो और रिश्तेदारों के साथ अच्छा बर्ताव करो। (बुख़ारी शरीफ़)

६) सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर किसी सुल्तान पर गुस्सा सवार हो तो समझ लो कि उस पर शैतान मुसल्लत हो गया है। (अहमद कबीर)

७) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जानते हो कि ग़ीबत क्या चीज़ है? सहाबा ने अर्ज़ किया: अल्लाह और रसूल ही बेहतर जानें। फ़रमाया: किसी का अपने भाई के बारे में ऐसी बात बयान करना जो उसे नागवार हो। एक शख़्स ने अर्ज़ किया: अगर वाक़ई उस में वह बात मौजूद हो जो मैं कहता हूं? फ़रमाया: तुम जो कुछ कहो अगर वह वाक़ई उस में मौजूद है तो यह ग़ीबत होगी और अगर उस में वह बात न हो तो यह बोहतान होगा। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

८) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: मैं ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह हज़रत सफ़िया (उम्मुल मोमिनीन) की मज़म्मत के लिये तो उन का पस्ता क़द होना ही काफ़ी है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम ने ऐसी बात कही है कि अगर इसे समुन्द्र में मिला दिया जाए तो वह उसे भी गदला कर देगी। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

९) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बदतरीन रिबा (सूद) किसी मुसलमान की इज़्ज़त पर हमला करना है। (अबू दाऊद)

१०) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है: चुग़ल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा। (शैख़ैन, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

११) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक कबूतर बाज़ को किसी कबूतर के पीछे जाते देखा तो फ़रमाया: शैतान के पीछे शैतान लगा हुआ है। (अबू दाऊद)

१२) जो शख़्स किसी जानदार पर निशाना बाज़ी की मश्क़ करे उस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लअनत फ़रमाई है। (शैख़ैन, निसाई)

१३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मोमिन न लअन तअन करता है, न बेहयाई, न फ़हशगोई। (गाली गलोच) (तिर्मिज़ी)

१४) नबीये रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मोमिन को गाली देना फ़िस्क़ और उस से जंग करना कुफ़्र है। (शैख़ैन, तिर्मिज़ी, निसाई)

१५) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर किसी को फ़ासिक़ कहा जाए और वह दर अस्ल ऐसा न हो तो यह अल्फ़ाज़ पलट कर कहने वाले पर ही आएंगे। (बुख़ारी शरीफ़)

१६) जब बन्दा किसी पर लअनत करता है तो वह लअनत आसमान की तरफ़ जाती है और आसमान के दरवाज़े उस लअनत को रोकने के लिये बन्द हो जाते हैं। फिर वह ज़मीन की तरफ़ आती है तो ज़मीन के दरवाज़े भी उस के लिये बन्द हो जाते हैं। फिर वह दाएं बाएं जाती है और जब उसे कोई ठिकाना नहीं मिलता तो उस की तरफ़ जाती है जिस पर लअनत की गई है। अगर वह वाक़ई उस का मुस्तहिक़ हुआ तो ठीक वरना लअनत करने वाले पर पलट जाती है। (अबू दाऊद)

१७) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मुसाफ़हा किया करो इस से बाहमी रंजिश दूर हो जाती है और एक दूसरे को हदिया भेजा करो इस से बाहमी मुहब्बत क़ाइम रहती है और कीना दूर होता है। (मालिक)

१८) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: वह हम में से नहीं जो हमारे छोटों पर रहम न करे और हमारे बड़ों की इज़्ज़त न करे और नेक बातों का हुक्म न दे और बुरी बातों से न रोके। (तिर्मिज़ी)

१९) हज़रत हुसैन बिन मन्सूर हल्लाज रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया: ख़ुल्क़ उस को कहते है कि जफ़ाए ख़ल्क़ का असर न हो। (नफ़हातुल इन्स)

२०) हज़रत अबुल हसन ख़िरक़ानी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया: उस के दिल में ख़ुदा की मुहब्बत नहीं होती जो अल्लाह की ख़ल्क़ पर शफ़क़्क़त नहीं करता। (नफ़हातुल इन्स)

२१) हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम फ़रमाते हैं कि मैं ने नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि जब कोई मुसलमान अपने मुसलमान भाई की सुब्ह के वक़्त अयादत करता है तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उस के लिये मग़फ़िरत व रहमत की दुआ करते हैं और जो शाम के वक़्त अयादत करता है उस के लिये सत्तर हज़ार फ़रिश्ते सुब्ह तक दुआए मग़फ़िरत करते हैं और उस के लिये जन्नत में एक बाग़ है। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स मरीज़ की अयादत को जाता है तो वह रहमत के दरिया में ग़ोता ज़न होता है और जब बैठ जाता है तो रहमत के दरिया में सर से पावँ तक उतर जाता है। (अहमद, मालिक)

२२) हज़रत अहमद ख़िज़रविया रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने मुरीदों से हिदायत के तौर पर फ़रमायाः जिस का ख़ुल्क़ जितना ज़्यादा अच्छा है उतना वह अल्लाह से करीब तर है। (तज़्किरतुल औलिया)

२३) हज़रत अबू क़ासिम जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमायाः ख़ुल्क़ शामिल है सख़ावत, उल्फ़त, नसीहत और शफ़क़्क़त पर। (इहयाउल उलूम)

२४) हज़रत अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद सहल रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमायाः किसी का मर्तबा नमाज़ रोज़े से बलन्द हो न ख़ैरात और मुजाहिदात की ज़ियादती से बल्कि उमदा अख़लाक़ से। (तबक़ातुल कुबरा)

२५) हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी हैः क़ियामत के दिन तुम में से उसी शख़्स को मुझ से क़रीब जगह मिलेगी जो ज़्यादा ख़ुश अख़लाक़ होगा। (तबक़ातुल कुबरा)

२६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी हैः किसी मुसलमान की बेइज़्ज़ती या बेहुरमती हो रही हो और दूसरा मुसलमान उस की मदद न करे तो दूसरे मौक़े पर जब कि उसे मदद की ज़रूरत होगी तो अल्लाह तआला उस की कोई मदद न करेगा और जब किसी मुसलमान की बेइज़्ज़ती या बेहुरमती के वक़्त दूसरा मुसलमान उस की मदद करेगा तो दूसरे मौक़े पर जब ख़ुद उसे मदद की ज़रूरत होगी तो अल्लाह तआला उस की इमदाद फ़रमाएगा। (अबू दाऊद)

२७) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स अपने किसी भाई की आबरू का बचाव करेगा, अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उस के चेहरे से आग को दूर कर देगा। (तिर्मिज़ी)

२८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हिदायत के बाद वही

क़ौम गुमराही की तरफ़ आती है जिस में झगड़े की आदत पैदा हो जाती है। इस के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ी: (तर्जमा) ऐ रसूल! यह लोग महज़ झगड़ने के लिये आप पर ज़र्बुल मिस्ल चस्पां करते हैं, यह लोग हैं ही झगड़ालू। (तिर्मिज़ी)

२९) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह के नज़्दीक सब से ज़्यादा नफ़रत के क़ाबिल वह लोग हैं जो झगड़ने में सब से बढ़ चढ़ कर हैं। (शैख़ैन, तिर्मिज़ी, निसाई)

३०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है, न उस पर ज़ुल्म करता है, न उसे हलाकत में जाता देख कर छोड़ देता है। जो शख़्स अपने भाई की हाजत रवाई करेगा अल्लाह तआला उस की हाजत रवाई फ़रमाएगा। जो शख़्स किसी मुसलमान की एक तकलीफ़ दूर करेगा, अल्लाह तआला हश्र के दिन उस की तकलीफ़ दूर फ़रमाएगा और जो उस की पर्दा पोशी करेगा अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा। एक रिवायत में है: जो शख़्स किसी मज़लूम के साथ चल कर जाए और उस का हक़ साबित कर दे तो अल्लाह तआला उसे उस दिन साबित क़दम रखेगा जिस दिन बहुत से क़दम फिसल जाएंगे। (शैख़ैन, तिर्मिज़ी)

३१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: हश्र के दिन तीन तरह के आदमियों का मैं मुख़ालिफ़ होउंगा: एक वह शख़्स जो मुझ से कोई मुआहिदा करे फिर अहद को तोड़े, दूसरे वह जो किसी आज़ाद को बेच कर उस के दाम खा जाए और तीसरे वह जो किसी मज़दूर से मुआमला तय करे, उस से मेहनत तो पूरी ले मगर उस की उजरत पूरी न दे। (बुख़ारी)

३२) नबीये क़रीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला भी ग़ैरतमन्द है और मोमिन भी ग़ैरतमन्द होता है और मोमिन का हराम काम करना ख़ुद अल्लाह तआला के लिये भी बाइसे ग़ैरत है। (शैख़ैन, तिर्मिज़ी)

३३) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स अपनी दो टांगों की बीच की चीज़ (शर्मगाह) की और दो जबड़ों के बीच की चीज़ (ज़बान) की ज़मानत दे मैं उस के लिये जन्नत की ज़मानत देता हूं। (बुख़ारी शरीफ़, तिर्मिज़ी)

३४) हदीस में है कि जो शख़्स वलीमे में बुलाया जाए और न जाए वह अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी करता है और जो शख़्स बिना बुलाए घुस जाए वह दाख़िल होते वक़्त चोर और निकलते वक़्त डाकू होता है। (शैख़ैन, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

३५) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कानों का ज़िना शहवानी बात चीत सुनना है, हाथ का ज़िना उधर बढ़ना है और पावँ का ज़िना उधर चलना है। (शैख़ैन)

३६) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह शेअर पढ़ा करते थे: ऐ अल्लाह! तेरी मग़फ़िरत तो है ही बड़े गुनाहों के लिये वरना छोटे गुनाहों के इर्तिकाब से तेरा कौन बन्दा बच सका है? (तिर्मिज़ी)

३७) अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ आदम के बेटे! जब तक तू मुझे पुकारता रहेगा और मुझ से अच्छाई की उम्मीद रखता रहेगा, मैं तेरे गुनाहों को छुपाता रहूंगा चाहे वह कैसा ही गुनाह हो। ऐ बनी आदम! अगर तेरे गुनाह आसमान की ऊंचाइयों तक भी पहुंच जाएं और तू मुझ से मग़फ़िरत का तलबगार हो तो मुझे पर्वाह न होगी और मैं तेरी मग़फ़िरत कर दूंगा, चाहे वह कैसा ही गुनाह हो। और अगर ज़मीन के घेरे के बराबर भी गुनाह का बोझ लेकर तू मेरे पास आए बशर्ते कि तू ने किसी को मेरा शरीक न किया हो तो मुझे पर्वाह न होगी बल्कि उसी मिक़दार के मुताबिक़ बराबर मग़फ़िरत अता कर दूंगा। (तिर्मिज़ी)

३८) एक शख़्स था जिस ने अपने ऊपर गुनाह करके बड़ी ज़ियादतियाँ की थीं। जब उस का आख़िरी वक़्त आया तो उस ने अपने बेटों को वसियत की: जब मैं मर जाऊं तो मुझे जला कर चक्की में बारीक पीस डालना और हवा में उड़ा देना क्योंकि अगर मुझ पर अल्लाह ने क़ाबू पा लिया तो मुझे ऐसी सज़ा देगा जो किसी को भी न दी होगी। जब वह मर गया और उस की वसियत पूरी कर दी गई तो अल्लाह तआला ने ज़मीन को हुक्म दिया कि वह तमाम ज़र्रे जो तेरे अन्दर हैं यकजा कर ले। जब ज़मीन ने हुक्म की तअमील की तो वह मुर्दा सामने हाज़िर था। अल्लाह तआला ने उस से पूछा: तू ने ऐसी वसियत क्यों की थी? उस ने अर्ज़ किया: मौला, सिर्फ़ तेरा ख़ौफ़ था। आख़िर अल्लाह तआला ने उस की मग़फ़िरत फ़रमा ही दी। (शैख़ैन, मुअत्ता, निसाई)

३९) हज़रत अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं: मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिम्बर पर यह आयत तिलावत करते सुना: (तर्जमा) खुदा तरस के लिये दो जन्नतें हैं। मैं ने अर्ज़ किया: अगर्चे वह खुदा तरस ज़िना और चोरी कर चुका हो? सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूसरी बार यही आयत पढ़ी। मैं ने फिर वही सवाल किया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीसरी बार यही आयत तिलावत फ़रमाई। मैं ने फिर यही सवाल किया। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हाँ हाँ अगर्चे अबू

दरदा को नागवार हो। (अहमद, तफ़सीरे कबीर)

४०) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा को मुख़ातब करके फ़रमायाः ऐ लोगो! तक़्वा को अपनी तिजारत बना लो तो तुम्हारे पास बिना माल और बिना दुकान रिज़्क़ आएगा। इस के बाद सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ीः (तर्जमा) जो अल्लाह तआला का तक़्वा रखेगा अल्लाह तआला उस के लिये सबील पैदा फ़रमा देगा और वहाँ से रिज़्क़ पहुंचाएगा जहाँ उस का गुमान भी न हो। (हदीस शरीफ़)

४१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम एक ऐसे दौर में हो कि अगर कोई शख़्स अहकामे इलाही का दसवाँ हिस्सा भी छोड़ दे तो बर्बाद हो जाए। फिर वह ज़माना आने वाला है कि अगर कोई अहकामे इलाही के दसवें हिस्से के बराबर भी अमल करे तो उस की निजात हो जाएगी। (हदीस शरीफ़)

४२) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अपने भाई की मदद करो चाहे वह ज़ालिम हो या मज़लूम। यह सुन कर एक शख़्स ने कहाः या रसूलल्लाह! मैं मज़लूम की तो मदद कर सकता हूँ लेकिन यह फ़रमाइए कि ज़ालिम की मदद कैसे होगी? फ़रमायाः उसे ज़ुल्म से रोक दो यही उस की मदद है। (बुख़ारी शरीफ़)

४३) हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ने सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना है कि जब दो मुसलमान अपनी तलवारें लेकर मुक़ाबले पर आ जाते हैं तो क़ातिल और मक़्तूल दोनों जहन्नम में जाते हैं। मैं ने या किसी और ने दरियाफ़्त कियाः या रसूलल्लाह! एक तो क़ातिल हुआ लेकिन मक़्तूल का क्या क़ुसूर? फ़रमायाः उस ने भी तो अपने साथी को क़त्ल करने का इरादा किया था। (हदीस शरीफ़)

४४) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस के दिल में राई बराबर भी तकब्बुर होगा वह जन्नत में नहीं जाएगा। एक शख़्स ने पूछाः इन्सान तो यह पसन्द करता है कि उस का कपड़ा जूता अच्छा हो। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह जमील है और जमाल को पसन्द करता है। यह किब्र नहीं बल्कि हक़ का इन्कार और लोगों को हिक़ारत की निगाह से देखना किब्र है। (मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

४५) सहाबए किराम की नज़र में सरकार नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़्यादा कोई मेहबूब न था लेकिन जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखते तो खड़े न होते थे इस लिये कि उन्हें इल्म था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम इसे पसन्द नहीं फ़रमाते। (तिर्मिज़ी)

४६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स यह पसन्द करता हो कि लोग उस के लिये तअज़ीमन खड़े हो जाया करें उसे अपना ठिकाना जहन्नम में बना लेना चाहिये। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

४७) एक शख़्स ने पूछाः या रसूलल्लाह! बाज़ औक़ात इन्सान छुपा कर नेक अमल करता है लेकिन जब वह ज़ाहिर हो जाता है तो उसे ख़ुशी होती है। यह रियाकारी तो नहीं? फ़रमायाः उस के लिये दोहरा अज्र है। एक पोशीदा रखने का और दूसरा ज़ाहिर हो जाने का। (तिर्मिज़ी)

४८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं तुम्हें अकबरुल किबाइर यानी सब से बड़े गुनाहों की निशानदही न कर दूं? यह तीन बार दोहराने के बाद फ़रमायाः यह गुनाह हैं: अल्लाह के साथ शरीक करना, वालिदैन की नाफ़रमानी और सुन लो झूटी गवाही और झूटा बयान भी। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस वक़्त टेक लगाए हुए थे फिर उठ बैठे और उस की (यानी झूटी गवाही और झूटे बयान की) इतनी बार तकरार फ़रमाते रहे कि लोग दिल में कहने लगे कि काश हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब बस फ़रमाएं। (शैख़ैन, तिर्मिज़ी)

४९) एक शख़्स ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कबाइर (बड़े गुनाहों) के बारे में पूछा कि वह कौन कौन से हैं? सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः वह नौ हैं। (१) शिर्क (२) सेहर (३) क़त्ल (४) सूद ख़ोरी (५) यतीम का माल खाना (६) जिहाद के मौक़े पर फ़रार इख़्तियार करना (७) पाक दामन औरतों पर तोहमत लगाना (८) वालिदैन की नाफ़रमानी करना (९) कअबतुल्लाह में हुरमत के ख़िलाफ़ काम करना चाहे ज़िन्दों के ज़रिये से या मुर्दों के। (रज़ीन)

५०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः चार ख़सलतें ऐसी हैं जो किसी के अन्दर इकट्ठी हों तो वह मुनाफ़िक़ होता है और अगर किसी में एक ख़सलत हो तो उस में निफ़ाक़ की एक ख़सलत होगी यहाँ तक कि वह उसे तर्क कर दे। वह यह हैं: (१) जब अमीन बनाया जाए तो ख़यानत करे। (२) बात करे तो झूट बोले। (३) जब मुआहिदा करे तो अहद शिकनी करे। (४) जब झगड़े तो हद से तजावुज़ कर जाए। (मालिक)

५१) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! इब्ने जदआन जाहिलियत में सिलए रहमी करता था और मिस्कीनों को खाना खिलाता था। क्या उस के यह

आमाल उसे कुछ नफ़ा पहुंचाएंगे? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः नहीं! क्योंकि उस ने एक दिन भी यह नहीं कहाः ऐ मेरे रब क़ियामत के दिन मेरे गुनाह बख़्श दे। (मुस्लिम शरीफ़)

५२) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दीन नाम है बहीख़्वाही का। लोगों ने पूछाः किस की बहीख़्वाही का या रसूलल्लाह? फ़रमायाः अल्लाह तआला की, उस की किताब की और उलिल अम्र की। और मुसलमान तो दूसरे मुसलमान का भाई है। वह न तो उस की मदद से मुंह मोड़ सकता है न उस से झूट बोलता है और न उस पर ज़ुल्म करता है। तुम में हर शख़्स दूसरे का आइना है लिहाज़ा जब उसे तकलीफ़ में देखे तो उसे दूर करे। (तिर्मिज़ी)

५३) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मोमिन मोमिन के लिये एक ऐसी इमारत है जिस का एक हिस्सा दूसरे से मज़बूत जुड़ा हुआ है। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाते हुए अपने एक पंजे को दूसरे पंजे में डाल लिया। (शैख़ैन, तिर्मिज़ी)

५४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स किसी को हिदायत की दावत देता है उस का अज्र वैसा ही है जैसे उस पर अमल करने वाले का, बग़ैर इस के कि अमल करने वाले के अज्र में कोई कमी हो। और जो किसी गुमराही की तरफ़ दावत दे उस का गुनाह भी वैसा ही है जैसे उस पर अमल करने वाले का, बग़ैर इस के कि अमल करने वाले के बोझ में कोई कमी आए। (शैख़ैन, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

५५) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बाहमी यगानिगत, मुहब्बत व रहमत और लत्फ़ो करम में ईमान वालों की मिसाल एक जिस्म की तरह है कि अगर एक अंग में कोई तकलीफ़ हो तो सारा शरीर ही शब बेदारी और बुख़ार में उस का शरीक हो जाता है। (शैख़ैन)

५६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अगर कोई मुसलमान अपने मुसलमान भाई से मुहब्बत रखता हो तो उसे बता देना चाहिये कि मैं तुम से मुहब्बत करता हूं। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

५७) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बदतरीन ख़सलत वाला वह शख़्स है जो हरीस और बेसब्र हो या बुज़दिल और बेहया हो। (अबू दाऊद)

५८) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दग़ाबाज़, कंजूस और एहसान जताने वाला जन्नत में नहीं जाएगा। (तिर्मिज़ी)

५९) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी हैः अपने दोस्त से एतिदाल के साथ मुहब्बत करो। हो सकता है कि वह किसी दिन

तुम्हारा दुशमन हो जाए और अपने दुशमन से दुशमनी भी एतिदाल के साथ रखो, हो सकता है किसी रोज़ वह तुम्हारा दोस्त हो जाए। (तिर्मिज़ी)

६०) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआला ने वही फ़रमाई है कि तुम सब ऐसा इन्किसार पैदा करो कि कोई एक दूसरे पर न ज़ियादती करे और न फ़ख़्र। (अबू दाऊद)

६१) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआला क़ियामत के दिन फ़रमाएगाः मेरी ख़ातिर आपस में मुहब्बत करने वाले लोग कहाँ हैं? आज मैं उन्हें अपने सायए रहमत में लूंगा जब कि मेरे साए के सिवा कोई और साया मौजूद नहीं है। (मालिक, मुस्लिम)

६२) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद हैः बेहतरीन अमल है अल्लाह तआला के लिये मुहब्बत करना और अल्लाह तआला ही के लिये दुशमनी रखना। (अबू दाऊद)

६३) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआला के कुछ बन्दे ऐसे भी हैं जो नबी या शहीद तो नहीं मगर अम्बिया और शुहदा को भी उन का मर्तबा देख कर रश्क आएगा। लोगों ने पूछाः या रसूलल्लाह! वह कौन लोग हैं? इरशाद हुआः यह वह लोग हैं जो आपस में रूह की वहदत की वजह से मुहब्बत रखते हैं, न रिश्ते दारी को उस में दख़ल होता है न माली लेन देन को। ख़ुदा की क़सम उन के चेहरे पूरे पूरे रौशन होंगे और यह नूर पर ही क़ाइम होंगे। दूसरे लोग ख़ौफ़ और हुज़्न में गिरफ़्तार होंगे और इन को कोई ख़ौफ़ न होगा। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत तिलावत फ़रमाई जिस का तर्जमा हैः अल्लाह के दोस्तों को कोई ख़ौफ़ होगा न कोई हुज़्न। (अबू दाऊद)

६४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रात को भूखा सोने से मना फ़रमाया है। आप ने फ़रमायाः इस से बुढ़ापा जल्द आता है। (बुख़ारी शरीफ़)

६५) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में एक शख़्स ने बाएं हाथ से खाना शुरू किया। आप ने फ़रमायाः सीधे हाथ से खा। वह बोलाः मेरा सीधा हाथ मुंह तक नहीं आता। फ़रमायाः अब तक तो आता था अब न आएगा। ऐसा ही हुआ। (तफ़सीरे नईमी)

६६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस तरह ज़मानए जाहिलियत की दूसरी बुरी रस्मों का ख़ात्मा फ़रमाया उसी तरह मुतअ की शर्मनाक रस्म का भी ख़ात्मा कर दिया। एक मर्द और औरत का बाहमी रज़ामन्दी से एक मुकर्ररा मुद्दत तक एक मुतअय्यिन रक़म के बदले मियां बीवी

की तरह एक साथ मुबाशिरत को मुतअ कहते हैं। ग़ज़वए ख़ैबर के मौक़े पर सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह एलान कर दिया कि मुतअ हराम है। (ज़ियाउन्नबी, जि: ४)

६७) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो जिब्रईल अलैहिस्सलाम को बुला कर फ़रमाता है कि मैं फ़ुलाँ से मुहब्बत रखता हूँ तुम भी उस से मुहब्बत रखो। फिर जिब्रईल अलैहिस्सलाम भी उस से मुहब्बत करते हैं और वह आसमान में पुकार कर बता देते हैं कि अल्लाह तआला फ़ुलाँ बन्दे से मुहब्बत करता है लिहाज़ा तुम भी उस से मुहब्बत करो। ग़र्ज़ आसमान वाले भी उस से मुहब्बत करने लगते हैं। इस के बाद मक़बूलियत का परवाना ज़मीन पर नाज़िल होता है और जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से दुशमनी रखता है तो जिब्रईल अलैहिस्सलाम को बुला कर बता देता है कि मैं फ़ुलाँ शख़्स से दुशमनी रखता हूँ, तुम भी उस से दुशमनी रखो। चुनान्चे जिब्रईल अलैहिस्सलाम भी उस से बुग़्ज़ करने लगते हैं और आसमान वालों को निदा देकर बताते हैं कि अल्लाह तआला फ़ुलाँ बन्दे से दुशमनी रखता है, तुम भी उस से दुशमनी रखो। चुनान्चे आसमान वाले भी उस से दुशमनी रखने लगते हैं और फिर उस के लिये बुग़्ज़ का परवाना ज़मीन पर नाज़िल होता है। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

६८) एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछाः क़ियामत कब आएगी? सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम ने उस के लिये क्या तय्यारी कर रखी है? उस ने जवाब दियाः और कुछ तो नहीं बस इतनी सी बात है कि मैं अल्लाह तआला और उस के रसूल से मुहब्बत रखता हूँ। फ़रमायाः फिर तुम उसी के साथ रहोगे जिस से मुहब्बत रखते हो। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मुझे सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस इरशाद से कि तुम उसी के साथ रहोगे जिस से मुहब्बत रखते हो, जितनी खुशी हुई उतनी किसी चीज़ से नहीं हुई क्योंकि मैं हुज़ूर से और हज़रत अबू बक्र व उमर से मुहब्बत रखता हूँ और मुझे यक़ीन है कि इस मुहब्बत की वजह से मेरा हश्र भी इन्हीं बुज़ुर्गों के साथ होगा अगर्चे मेरे अमल उन जैसे नहीं हैं। (शैख़ैन, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

६९) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं तुम्हें बता न दूँ कि अल्लाह तआला के नज़्दीक सब से ज़्यादा मेहबूब कौन है? लोगों ने कहाः ज़रूर इरशाद हो। फ़रमायाः सब से ज़्यादा अल्लाह तआला के नज़्दीक भी वही है जो इन्सानों को सब से ज़्यादा मेहबूब हो। फिर फ़रमायाः क्या मैं बता न दूँ

कि अल्लाह तआला की नज़र में सब से ज़्यादा नफ़रत के क़ाबिल कौन है? लोगों ने कहा: हाँ इरशाद हो। फ़रमाया: जो इन्सानों की निगाह में सब से ज़्यादा नफ़रत के क़ाबिल है वही अल्लाह तआला के नज़्दीक भी ज़्यादा नफ़रत के क़ाबिल है। (हदीस शरीफ़)

७०) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बता दूं जिस का दर्जा नमाज़, रोज़ा और सदक़े से अफ़ज़ल है? लोगों ने अर्ज़ की: ज़रूर इरशाद हो। फ़रमाया: आपस में सुलह रखना क्योंकि आपसी लड़ाई झगड़ा तबाह करने वाली चीज़ है। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

७१) हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: जिस वक़्त मैं सफ़र पर जा रहा था उस वक़्त सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो आख़िरी वसियत फ़रमाई वह यह थी कि ऐ मआज़, लोगों के साथ अपने अख़लाक़ अच्छे रखो। (मुअत्ता इमाम मालिक)

७२) सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: अल्लाह ने मुझे भेजा ही इस लिये है कि हुस्ने अख़लाक़ को कमाल तक पहुंचाऊं। (अबू दाऊद)

७३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मोमिन महज़ अपने हुस्ने अख़लाक़ की वजह से हमेशा दिन में रोज़ा रखने वाले और हमेशा रात में जाग कर अल्लाह की इबादत करने वाले के दर्जे को पा लेता है। (अबू दाऊद)

७४) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस के अख़लाक़ सब से बेहतर हों और जो अपने बाल बच्चों पर सब से ज़्यादा मेहरबान हो वही ईमान में भी सब से ज़्यादा कामिल है। (तिर्मिज़ी)

७५) हज़रत अक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! निजात क्या है? फ़रमाया: अपनी ज़बान पर क़ाबू रखो, तुम्हारा घर कुशादा रहे और अपनी ख़ताओं पर आँसू बहाओ। (तिर्मिज़ी)

७६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: क़ियामत के दिन अच्छे अख़लाक़ से ज़्यादा कोई चीज़ भी मोमिन की मीज़ान में ज़्यादा वज़न नहीं रखती और अल्लाह तआला बेहया और बेहूदा बातें करने वाले से बुग्ज़ रखता है। (तिर्मिज़ी)

७७) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मोमिन के लिये अपने आप को ज़लील करना अच्छा नहीं है। सहाबए किराम ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! अपने आप को ज़लील करना क्या है? फ़रमाया: ख़ुद को ऐसी आज़माइशों में डालना जो बर्दाश्त से बाहर हों। (तिर्मिज़ी)

७८) हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा को इस मज़मून का ख़त लिखाः मुझे कोई नसीहत लिख कर भेजें लेकिन वह लम्बी चौड़ी न हो। उम्मुल मोमिनीन ने लिखाः अम्मा बअद, मैं ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुनाः जो शख़्स इन्सानों की नाराज़गी के मुक़ाबले में अल्लाह की रज़ा जूई करता है तो लोगों की सख़्ती दूर करने के लिये अल्लाह काफ़ी हो जाता है और जो अल्लाह की नाराज़गी के मुक़ाबले में इन्सानों की रज़ा जूई करता है तो अल्लाह उसे इन्सानों के ही हवाले कर देता है। वस्सलामु अलैका। (तिर्मिज़ी)

७६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुझे सब से ज़्यादा मेहबूब और हश्र के दिन सब से ज़्यादा क़रीब वह लोग होंगे जो अख़लाक़ में सब से ज़्यादा बेहतर हों और मेरी निगाह में सब से ज़्यादा नापसन्द और हश्र के दिन मुझ से ज़्यादा दूर वह लोग होंगे जो ज़्यादा बकवास करते हों और बे वजह कलाम को तूल देते हों और तकब्बुर करते हों। (तिर्मिज़ी)

८०) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद हैः नेकी हुस्ने अख़लाक़ का नाम है और गुनाह वह है जो तुम्हारे दिल पर असर करे और तुम्हें यह पसन्द न हो कि दूसरों को उस का इल्म हो। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

८१) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मोमिन सादा दिल और सख़ी होता है और फ़ाजिर दग़ाबाज़ और बख़ील होता है। (तिर्मिज़ी)

८२) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हया ईमान का ही एक हिस्सा है और ईमान का अन्जाम जन्नत है। फ़हश कलामी बदख़ल्क़ी है और बदख़ल्क़ी का अन्जाम दोज़ख़ है। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

८३) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बेहयाई जिस चीज़ में शामिल होगी उसे ऐब वाला बना देगी और हया जिस चीज़ में शामिल होगी उसे सजावट वाला बना देगी। (तिर्मिज़ी)

८४) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हर दीन का एक ख़ास अख़लाक़ी मिज़ाज होता है। इस्लाम का अख़लाक़ी क़िवाम हया है। (मालिक)

८५) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी हैः इन्सान अपने दोस्त के दीन (तरीक़ए ज़िन्दगी) पर हुआ करता है इस लिये हर शख़्स को यह देख लेना चाहिये कि वह किस से दोस्ती कर रहा है। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

८६) नबीये रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बाहमी अफ़्वो दरगुज़र से काम लिया करो इस से आपस के कीने दूर हो जाते हैं। (अल हदीस)

८७) सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह के नज़्दीक हश्र के दिन सब से बदतर उसे पाओगे जो दोरुख़ी पालीसी वाला होगा कि इधर उस का कुछ और रुख़ और उधर कुछ और। (निसाई)

८८) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: संजीदगी अल्लाह तआला की तरफ़ से होती है और जल्द बाज़ी शैतान की तरफ़ से। (तिर्मिज़ी)

८९) एक शख़्स ने नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने एक दूसरे शख़्स की तारीफ़ की। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बार फ़रमाया: तुम ने अपने रफ़ीक़ की गर्दन काट डाली। फिर फ़रमाया: अगर तुम्हें अपने भाई की तारीफ़ ही करनी पड़े तो यूं कहो: मेरा गुमान फ़ुलाँ के बारे में यह है और हक़ीक़ते हाल का इल्म अल्लाह ही को है। किसी की तारीफ़ में अल्लाह तआला से आगे मत बढ़ जाओ। तुम्हें अगर किसी के बारे में तारीफ़ के क़ाबिल होने का यक़ीन है तो बस इतना कह दो: मेरे ख़्याल में वह ऐसा है। (शैख़ैन, अबू दाऊद)

९०) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो नर्मी से मेहरूम हुआ वह सारी ख़ूबियों से मेहरूम हुआ। (मुस्लिम, अबू दाऊद)

९१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: जो शख़्स कोई इमारत बनाए और उस में ज़ुल्मो ज़ियादती न हो या कोई दरख़्त लगाए और उस में कोई ज़ुल्म और ज़ियादती न हो तो जब तक अल्लाह की मुख़लूक़ उस से फ़ायदा उठाती रहेगी उस के लिये सवाब जारी रहेगा। (अल हदीस)

९२) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला का इरशाद है कि जब फ़र्ज़न्दे आदम यह कहता है कि यह नामुराद ज़माना तो दर अस्ल मुझे अज़ियत देता है। लिहाज़ा कोई ज़माना को नामुराद न कहे क्योंकि ज़माना मैं ख़ुद ही हूँ यानी रात और दिन को मैं ही गर्दिश देता हूँ। (शैख़ैन, अबू दाऊद, मुअत्ता)

९३) हवा एक आदमी की चादर उड़ाने लगी तो उस ने हवा पर लअनत की। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हवा पर लअनत न करो यह तो मामूर और मुसख़्ख़र है यानी अपने इरादे से नहीं चलती। जो शख़्स किसी पर लअनत करे और वह उस का मुस्तहिक़ न हो तो वह लअनत करने वाले पर पलट आती है। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

९४) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मरे हुओं को बुरा भला न कहो कि वह जो कुछ आगे भेज चुके हैं उधर ही जा चुके हैं। (बुख़ारी शरीफ़, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

९५) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद हैः इल्म का स्रोत्र बनो और हिदायत की शम्अ, घर का टाट बनो और रात का चराग़, हमवार दिल और कोहना पोश (पुराना लिबास पहनने वाला) बनो। इस तरह आसमान वालों में तो पहचान लिये जाओगे और ज़मीन वालों से पोशीदा रहोगे। (दारमी)

९६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुर्दों की नेकियों का ज़िक्र करो और बुराइयों के ज़िक्र से परहेज़ करो। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

९७) हज़रत इमरान बिन हिसीन रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैंः एक सफ़र के मौक़े पर सरकार नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक अन्सारिया औरत भी अपनी ऊंटनी पर सवार थी। उस की किसी बात से तंग आकर उस ने अपनी ऊंटनी पर लअनत भेजी। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सुना तो फ़रमायाः इसे नीचे उतार कर छोड़ दो यह मलऊना है। हज़रत इमरान बिन हिसीन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैंः इस वक़्त मेरी आँखों के सामने वह मन्ज़र है कि वह औरत पैदल चली जा रही है और कोई उस की तरफ़ ध्यान नहीं देता। (मुस्लिम, अबू दाऊद)

९८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि हसद और रश्क सिर्फ़ दो मौक़ों पर मुज़िर हो सकता है। एक तो ऐसे आदमी से जिसे अल्लाह ने हिकमत दी हो और वह उसी के मुताबिक़ फ़ैसले देता हो और उस की तालीम देता हो। दूसरे उस आदमी से जिसे अल्लाह तआला ने माल दिया हो और वह उसे अल्लाह की राह में फ़ना करने को तय्यार रहता हो। (शैख़ैन)

९९) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः हसद से बचो, यह नेकियों को इस तरह खा जाता है जिस तरह आग लकड़ी को। (अबू दाऊद)

१००) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जानते हो मुफ़लिस किसे कहते है? लोगों ने अर्ज़ कियाः हम में तो मुफ़लिस उसे कहा जाता है जिस के पास न रुपया पैसा हो न माल और अस्बाब। फ़रमायाः नहीं बल्कि मुफ़लिस वह है जो क़ियामत में अपनी नमाज़, रोज़ा और ज़कात लेकर आएगा। लेकिन दुनिया में किसी को गाली दी होगी, किसी पर बोहतान लगाया होगा, किसी का नाहक़ माल खाया होगा और किसी को मारा होगा, किसी का ख़ून बहाया होगा। नतीजा यह होगा कि उन में से किसी को फ़ुलाँ नेकी दी जाएगी और किसी को फ़ुलाँ। (इस तरह होते होते) उस के ज़िम्मे जो हक़ आता है अगर चुकाए जाने से पहले ही उस की नेकियाँ ख़त्म हो गईं तो उन लोगों की ख़ताएं उस के हिस्से में आती जाएंगी और आख़िर कार उसे जहन्नम में डाल दिया जाएगा। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

१०१) जहालत के साथ जो इबादत करता है उस का फ़साद उस की इस्लाह से ज़्यादा होता है और जो अपनी गुफ़्तगू का मुक़ाबला अपने अमल से करे उस की गुफ़्तगू कम हो जाती है। सिर्फ़ वहीं गुफ़्तगू होती है जहाँ मुफ़ीद हो और जो शख़्स झगड़ों को दीन का मक़सद बनाता है उस की राय बदलती रहती है। (दारमी)

१०२) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बदगुमानी से बचो क्योंकि यह सब से बड़ा झूट है। टोह भी न लिया करो। ख़ुदग़र्ज़ी, हसद, बुग्ज़ और दुशमनी न किया करो। अल्लाह के बन्दे और भाई भाई बने रहो जैसा कि हुक्मे इलाही हैः मुसलमान मुसलमान का भाई है। एक मुसलमान दूसरे पर ज़ुल्म नहीं करता, उसे बेयारो मददगार नहीं छोड़ता और उस की तहक़ीर नहीं करता। फिर अपने दिल की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमायाः तक़्वा इस जगह होता है, इस जगह होता है, इस जगह होता है। किसी की तरफ़ से शर होने के लिये इतना ही काफ़ी है कि वह अपने मुसलमान भाई की तहक़ीर करे। हर मुसलमान का ख़ून, आबरू और माल दूसरे मुसलमान पर हराम है। अल्लाह तुम्हारे जिस्मों, शक्लों और अमलों को नहीं देखता बल्कि तुम्हारे दिलों को देखता है। (निसाई)

१०३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मोमिन के लिये यह हलाल नहीं कि दूसरे मोमिन से तीन दिन से ज़्यादा तअल्लुक़ तोड़े रहे। अगर तीन दिन हो जाएं तो चाहिये कि वह उस से मिले और उसे सलाम करे। अगर वह सलाम का जवाब दे दे तो दोनों ही अज्र में शरीक रहेंगे और अगर वह जवाब न दे तो ख़ुद गुनाह की लपेट में आ जाएगा। (अबू दाऊद)

१०४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः मुझे इल्म है कि सब से आख़िरी जन्नती और सब के बाद दोज़ख़ से निकलने वाला कौन होगा? एक शख़्स होगा जो क़ियामत के दिन हाज़िर किया जाएगा और कहा जाएगा कि इस के छोटे छोटे गुनाह पेश करो और बड़े गुनाहों को अलग रखो। फिर उस के छोटे गुनाह पेश किये जाएंगे और पूछा जाएगाः तुम ने फ़ुलाँ दिन फ़ुलाँ फ़ुलाँ गुनाह और फ़ुलाँ फ़ुलाँ दिन फ़ुलाँ फ़ुलाँ गुनाह किये थे? वह कहेगाः हाँ। उसे इन्कार की मजाल न हो सकेगी। वह इस ख़ौफ़ से कांप रहा होगा कि देखिये बड़े बड़े गुनाहों की बारी कब आती है। फिर उस से कहा जाएगाः जाओ तुम्हारी हर बुराई के बदले वैसी ही नेकी लिख दी गई है। यह सुन कर वह बोल उठेगाः मौला, मैं ने तो और भी बहुत से गुनाह किये हैं जो यहाँ अभी मेरे सामने नहीं आए हैं। यह फ़रमाने के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

को ऐसी हंसी आई कि दन्दाने मुबारक ज़ाहिर हो गए। (हदीस शरीफ)

१०५) सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार मिम्बर पर चढ़ कर ज़ोरदार आवाज़ में पुकार कर फ़रमायाः ऐ वह लोगो जो ज़बान से इस्लाम लाए हो और दिल में अभी ईमान नहीं उतरा है, मुसलमानों को अज़िय्यत न पहुंचाओ, उन को शर्मिन्दा न करो और उन के पर्दे की बातों के पीछे न पड़ो। जो शख़्स अपने मुसलमान भाई के पर्दे की बातों के पीछे पड़ता है अल्लाह तआला उस की पर्दा दरी करके रुस्वा करेगा चाहे वह अपने घर में क्यों न बन्द हो। (तिर्मिज़ी)

१०६) हज़रत नाफ़ेअ रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने एक दिन कअबे को देख कर फ़रमायाः तेरी शान और तेरा एहतिराम ज़बरदस्त है लेकिन अल्लाह तआला की नज़रों में एक मुसलमान का एहतिराम तुझ से भी ज़्यादा है। (तिर्मिज़ी)

१०७) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बुरा शगुन लेना शिर्क है। आप ने यह बात तीन बार फ़रमाई। (तिर्मिज़ी)

१०८) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से काहिनों (जादूगरों) के बारे में पूछा गया तो सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उस में कोई हक़ीक़त नहीं है। लोगों ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! यह लोग बाज़ औक़ात कुछ बातें बताते हैं जो सच्ची निकलती हैं। फ़रमायाः एक आध सच्ची बात शैतान उड़ा लेता है और उसे अपने दोस्त के कान में डाल देता है और उस के साथ सौ झूट मिला देता है। (शैख़ैन)

१०९) हज़रत क़तन इब्ने क़बीसा रज़ियल्लाहु अन्हु अपने वालिद से नक़्ल करते हैं कि नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अयाफ़ह (परिन्दों के ज़रिये फ़ाल लेने की एक सूरत है जिस में परिन्दों को उड़ा कर या उस के खुद बखुद उड़ने और उस की आवाज़ के ज़रिये अच्छी या बुरी फ़ाल निकाली जाती है) और तुरुक़ (कंकरियां मार कर फ़ाल लेना या रेत पर लकीरें खींचने को तुरुक़ कहते हैं जैसा कि रमल के जानने वाले रेत पर लकीरें खींच कर ग़ैब की बातें जानने का दावा करते हैं) और बुरा शगुन लेना यह सब चीज़ें सेहर, कहानत या शैतानी कामों में से हैं। (अबू दाऊद)

११०) हज़रत जुबैर बिन मुत्इम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुनाः क़त्ए रहमी करने वाला जन्नत में नहीं जाएगा। (बुख़ारी शरीफ़)

१११) हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमायाः ज़ुल्म करने से बचो इस लिये कि ज़ुल्म क़ियामत वाले दिन के अन्धेरों का बाइस होगा और बुख़्ल से बचो इस लिये कि इसी हिर्स ने तुम से पहले के लोगों को हलाक किया। (मुस्लिम शरीफ़)

११२) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बुख़्ल और हिर्स और ईमान कभी एक दिल में इकट्ठे नहीं हो सकते। (बुख़ारी शरीफ़)

११३) एक हदीस शरीफ़ का मफ़हूम हैः अल्लाह तआला का अपने बन्दों से इरशाद हैः तुम दूसरों पर ख़र्च करते रहो, मैं तुम पर ख़र्च करता रहूंगा। (सुनन निसाई)

११४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमायाः ऐ अबूज़र, मुझे पसन्द नहीं कि मेरे पास कोहे उहद के बराबर सोना हो और तीसरे दिन तक उस में से एक अशरफ़ी भी मेरे पास बच जाए। सिवाए उस के जो क़र्ज़ अदा करने के लिये हो। तो ऐ अबूज़र, मैं उस माल को दोनों हाथों से अल्लाह की मख़लूक़ में तक़सीम करके उठूंगा। (बुख़ारी)

११५) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐसे शख़्स के दौलतमन्द होने में कोई हर्ज नहीं जिस के माल में हक़दारों का हक़ निकलता हो। (अल हदीस)

११६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी हैः किसी इन्सान का गुनाह साबित होने के लिये इतना ही काफ़ी है कि उस की तरफ़ उंगलियां उठने लगें (कि यह बड़ा अच्छा आदमी है) सहाबए किराम ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! अगर्चे वह इशारा नेकी की वजह से हो? फ़रमायाः अगर नेकी की वजह से हो तब भी वह उस के लिये शर है सिवाए उस के जिस पर अल्लाह तआला का ख़ास करम हो और अगर वह इशारा किसी शर की वजह से हो फिर तो शर है ही। (कबीर)

११७) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दूसरे गुनाहों के मुक़ाबले में क़त्ए रहमी और बग़ावत ऐसे गुनाह हैं कि रब तआला उन के करने वालों को दुनिया ही में अज़ाब देता है, आख़िरत में उन पर जो सज़ा होगी वह तो होगी ही। (तिर्मिज़ी)

११८) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ

और अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! मेरे हुस्ने सुलूक का सब से ज़्यादा हक़दार कौन है? फ़रमाया: तेरी माँ। उस ने फिर पूछा: उस के बाद कौन? फ़रमाया: तेरी माँ। उस ने दरियाफ़्त किया: फिर कौन? आप ने फ़रमाया: तेरा बाप। एक दूसरी रिवायत में बाप के बाद क़रीबी रिश्तेदार का भी ज़िक्र है। (मुस्लिम)

११९) हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: पड़ोसी तीन तरह के और तीन दर्जे के होते हैं। एक वह पड़ोसी जिस का सिर्फ़ एक ही हक़ हो और वह हक़ के लिहाज़ से सब से कम दर्जे का पड़ोसी है और दूसरा वह पड़ोसी जिस के दो हक़ हों और तीसरा वह जिस के तीन हक़ हों तो एक हक़ वाला वह मुश्रिक (ग़ैर मुस्लिम) पड़ोसी है जिस से कोई रिश्तेदारी भी न हो। (तो उस का सिर्फ़ पड़ोसी होने का हक़ है) और दो हक़ वाला वह पड़ोसी है जो पड़ोसी होने के साथ साथ मुस्लिम भी हो। उस का एक हक़ मुसलमान होने की वजह से होगा और दूसरा पड़ोसी होने की वजह से। और तीन हक़ वाला पड़ोसी वह है जो पड़ोसी भी हो और मुस्लिम भी हो और रिश्तेदार भी हो तो उस का एक हक़ मुसलमान होने का होगा, दूसरा हक़ पड़ोसी होने का और तीसरा हक़ रिश्तेदारी का होगा। (मुस्नदे बज़ार)

१२०) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अपने भाई की मुसीबत पर ख़ुशी का इज़्हार न किया करो वरना उसे तो अल्लाह तआला आफ़ियत दे देगा और तुम्हें उसी में मुब्तिला कर देगा। (तिर्मिज़ी)

१२१) चार बातें बड़ी बदबख़्ती की हैं: (१) आँसू का न निकलना (२) दिल का सख़्त होना (३) आरज़ुओं का दराज़ होना और (४) दुनिया की हवस होना। (रज़ीन)

१२२) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: जो शख़्स लोगों को फांसने के लिये ख़ुश बयानी का फ़न सीखता है, अल्लाह तआला उस के जुर्म की तलाफ़ी के लिये कोई क़ीमत और मुआवज़ा क़ुबूल न फ़रमाएगा। (अबू दाऊद)

१२३) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मोमिन वह है कि वह दूसरों से और दूसरे उस से मानूस हों। जिस में यह दोनों बातें न हों वहाँ कौन सी ख़ैर हो सकती है। (अहमद, कबीर)

१२४) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कौन यह कलिमे क़ुबूल करता है जिन पर वह ख़ुद अमल करे या किसी अमल करने वाले को बता दे? हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: मैं या रसूलल्लाह। सरकार सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने मेरा हाथ पकड़ कर पांच बातें बताईं: (१) हराम बातों से बचो तो सब से बड़े आबिद बन जाओगे। (२) अल्लाह तआला ने जो कुछ किस्मत में लिख दिया है उस पर शाकिर और राज़ी रहो तो सब से ज़्यादा गनी बन जाओगे। (३) अपने पड़ोसी के साथ हुस्ने सुलूक करो तो मोमिन बन जाओगे। (४) इन्सानों के लिये वही पसन्द करो जो अपने लिये करते हो तो मुस्लिम बन जाओगे। (५) ज़्यादा हंसा न करो क्योंकि हंसी से दिल मुर्दा हो जाता है। (तिर्मिज़ी)

१२५) अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है: मेरे रब ने मुझे इन नौ बातों का हुक्म दिया है: (१) ज़ाहिर और बातिन हर हाल में अल्लाह का डर हो (२) खुशी और गुस्से में अदल बाकी रहे (३) गिना और फ़क्र हर एक में मियाना रवी बाकी रहे (४) कतए रहमी करने वाले के साथ भी सिलए रहमी हो (५) मेहरूम रखने वाले को भी हक दिया जाए (६) ज़ियादती करने वाले से दरगुज़र हो (७) ख़ामोशी में फ़िक्र हो (८) गुफ़्तगू में ज़िक्रे इलाही हो (९) निगाह में इबरत पज़ीरी हो और अम्र बिल मअरूफ़ हो। (रज़ीन)

१२६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मोमिन एक बिल से दो बार डसा नहीं जाता। (शैख़ैन, अबू दाऊद)

१२७) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: निकाह मेरी सुन्नत है लिहाज़ा जो मेरी सुन्नत पर अमल नहीं करता वह मुझ से नहीं। (इब्ने माजा)

१२८) सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: एक औरत दूसरी औरत से इस तरह घुल मिल कर न रहे कि वह उस की तारीफ़े अपने शौहर से इस तरह बयान करे गोया वह उसे देख रहा है। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

१२९) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब तुम में से कोई अपनी रफ़ीकए हयात से मवासिलत करे तो बे लिबास ऊंटों की तरह नंगापन इख़्तियार न करे बल्कि पर्दे का ख़्याल रखे। (बज़ार)

१३०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: औरत गर्भ के दिनों से बच्चा जनने बल्कि दूध छुड़ाने तक ऐसी है जैसे सरहद की फ़ी सबीलिल्लाह निगरानी करने वाला। अगर वह इस दौरान मर जाए तो वह भी शहीद का अज्र और सवाब हासिल करेगी। (कबीर)

१३१) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर मैं किसी को किसी के आगे सज्दा करने का हुक्म देता तो बीवी को हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सज्दा करे। (तिर्मिज़ी)

१३२) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो औरत ऐसी

हालत में मरे कि उस का शौहर उस से राज़ी रहा तो वह जन्नत में दाख़िल हो गई। (तिर्मिज़ी)

१३३) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि बेहतरीन औरत कौन सी है? फ़रमाया: वह जिसे शौहर देखे तो ख़ुश हो जाए और जब वह हुक्म दे तो बजा लाए और ख़ुद उस की अपनी ज़ात और अपने माल के बारे में भी शौहर जिस बात को नापसन्द करे उस की मुख़ालिफ़त न करे। (निसाई)

१३४) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर औरत पांच नमाज़ें अदा करे और रमज़ान के रोज़े रखे और अपनी इस्मत को मेहफ़ूज़ रखे और अपने शौहर की फ़रमाँबरदारी करती रहे तो उसे कहा जाएगा कि जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जा। (अल हदीस)

१३५) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरी इस वसियत को क़ुबूल करो और औरतों के साथ दानिशमन्दी और रहम दिली से सुलूक करो क्योंकि औरत की ख़िल्क़त टेढ़ी पसली से हुई है। पसली की हड्डी जितनी ऊपर होती है उतनी ही ज़्यादा टेढ़ी होती है अगर उसे सीधा करने की कोशिश करोगे तो उसे तोड़ कर रख दोगे और अगर उसे छोड़ दोगे तो वह टेढ़ी ही रहेगी। लिहाज़ा उन के साथ अच्छे सुलूक की मेरी वसियत को याद रखो। (यानी उन से उसी टेढ़ के रहते हुए फ़ायदा उठाओ और सीधा करके तोड़ने की कोशिश मत करो) एक दूसरी रिवायत में है कि औरत को तलाक़ देना ऐसा ही है जैसे पसली की टेढ़ी हड्डी को सीधा करने के लिये तोड़ डालना। (अल हदीस)

१३६) एक सहाबीये रसूल ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! बीवी का शौहर पर क्या हक़ है? फ़रमाया: जब तुम खाओ तो उसे भी खिलाओ, जब तुम पहनो तो उसे भी पहनाओ। उस के चेहरे पर न मारो और उस की फ़ज़ीहत न करो। अगर तम्बीह के लिये उस से अलाहिदगी इख़्तियार करनी पड़े तो यह घर के अन्दर ही हो (यानी ख़फ़ा होकर घर न छोड़ो) (अल हदीस)

१३७) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरे बाद मर्दों के लिये जो सब से ज़्यादा नुक़सान पहुंचाने वाला इम्तिहान है वह औरतों का वुजूद है। (अल हदीस)

१३८) मेहर की तीन किस्में हैं: (१) मेहरे मुअज्जल (२) मेहरे मुअज्जिल (३) मेहरे मुत्लक़। मेहरे मुअज्जल वह मेहर है कि ख़लवत से पहले देना क़रार पाया हो। मेहरे मुअज्जिल वह मेहर है कि जिस में अदायगी के लिये कोई मीआद मुक़र्रर हो। मेहरे मुत्लक़ वह मेहर है कि न ख़लवत से पहले देना

क़रार पाया हो और न कोई मीआद मुक़र्रर हो और यही मेहर हमारे हिन्दुस्तान में चलता है। मेहरे मुअज्जल वुसूल करने के लिये औरत ख़ुद को शौहर से रोक सकती है और मुअज्जल में मीआद पूरी होने के बाद मांग कर सकती है मगर अपने आप को इस के लिये रोक नहीं सकती। मेहरे मुतलक़ का मौत या तलाक़ से पहले मुतालिबा नहीं हो सकता, न औरत इस के लिये अपने नफ़्स को रोक सकती है। (फ़तावए रज़विया, जि: ५)

१३९) हिन्दुस्तान में आम दस्तूर है कि जब औरत मरने लगती है तो उस से मेहर माफ़ कराते हैं हालांकि मर्ज़ुल मौत में माफ़ी दूसरे वारिसों की इजाज़त के बिना सही नहीं है। यानी बीवी ने माफ़ भी कर दिया तो ऐसी हालत में वारिसों की इजाज़त के बिना माफ़ नहीं होगा। (फ़तावए रज़विया)

१४०) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बीवी को शौहर की इजाज़त के बिना ग़ैर औरत के पास जाने से मना फ़रमाया है। (अल हदीस)

१४१) मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मोमिन के लिये तक़्वल्लाह (अल्लाह से डरना) के बाद सब से बड़ी नेअमत वह सालेह बीवी है कि शौहर जो हुक्म दे उसे बजा लाए, उसे शौहर देखे तो ख़ुश हो जाए। शौहर क़सम खाए तो वह उसे पूरा कर दे और शौहर ग़ैर हाज़िर हो तो अपनी ज़ात और शौहर के माल में ख़ैरख़्वाही का पूरा हक़ अदा करे। (कुज़्वैनी)

१४२) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक औरत आई और कहा: मेरा शौहर सफ़वान बिन मअतल है। जब मैं नमाज़ पढ़ती हूँ तो मुझे मारता है और रोज़ा रखती हूँ तो तुड़वा देता है और ख़ुद हर सुब्ह की नमाज़ सूरज निकलने के बाद पढ़ता है। सफ़वान भी सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ही मौजूद था। जब उस से सूरते हाल पूछी गई तो कहने लगा: या रसूलल्लाह, यह कहती है कि मैं नमाज़ पढ़ती हूँ तो यह मुझे मारता है। इस की हक़ीक़त यह है कि यह नमाज़ में दो दो सूरतें पढ़ती है और मैं इसे मना करता हूँ। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर क़ुरआन की एक ही सूरत होती तो लोगों के लिये काफ़ी होती। फिर बोला: इस का कहना है कि जब रोज़ा रखती हूँ तो उसे तुड़वा देता है। तो अस्ल बात यह है कि यह रोज़ा रखना शुरू कर देती है और मैं एक नौजवान आदमी हूँ और मुझे सब्र नहीं होता। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: शौहर की इजाज़त के बिना औरत रोज़ा न रखे। फिर वह कहने लगा: इस का यह कहना है कि मैं सूरज निकलने से पहले नमाज़े फ़ज्र अदा नहीं करता। बात यह है कि हम ऐसे घराने से तअल्लुक़ रखते हैं जिस की

यह आदत मशहूर थी कि सूरज निकलने से पहले हम लोगों की आँख ही नहीं खुलती। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अच्छा अब पहले ही जाग कर नमाज़ अदा कर लिया करो। (अबू दाऊद)

१४३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब तुम्हारे हुक्काम बेहतरीन लोग हों और दौलत मन्द फ़य्याज़ लोग हों और हुकूमत उमूरे शूरा पर हो तो उस ज़मीन की पीठ उस की गोद से (यानी ज़िन्दगी मौत से) बेहतर है। और जब दबतरीन लोग हुक्काम हों और दौलत मन्द कन्जूस हों और हुकूमत के मुआमलात औरतों के सिपुर्द हो जाएं तो ज़मीन की गोद ज़मीन की पीठ से (यानी मौत ज़िन्दगी से) बेहतर है। (तिर्मिज़ी)

१४४) नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: इमामों को गालियां न दो बल्कि उन के लिये दुआए ख़ैर करो क्योंकि तुम्हारी इस्लाह भी उन ही की इस्लाह से जुड़ी हुई है। (कबीर, औसत)

१४५) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरी उम्मत में दो तरह के लोग ऐसे हैं जिन्हें मेरी शफ़ाअत नसीब नहीं होगी: एक तो ज़ालिम और ग़ासिब इमाम, दूसरे वह ख़ुद पसन्द जो दीन (निज़ामे इज्तिमाअ) से निकल जाएं। (कबीर, औसत)

१४६) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स जमाअत से बालिश्त भर भी अलग हुआ उस ने इस्लाम का कलावा अपनी गर्दन से उतार फेंका। (अबू दाऊद)

१४७) नबीये रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: मेरी उम्मत का इज्तिमाअ गुमराही पर न होगा लिहाज़ा तुम लोग जमाअत से जुड़े रहो क्योंकि जमाअत के साथ अल्लाह तआला की मदद होती है। (कबीर)

१४८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: भेड़ बकरी की तरह इन्सान के भी भेड़िये होते हैं और इन्सान का भेड़िया शैतान है। दूर और किनारे रहने वाली बकरी को भेड़िया उठा ले जाता है लिहाज़ा तफ़रीक़ से बचो और जमाअत से, अवाम से और मस्जिद से जुड़े रहो। (अहमद, कबीर)

१४९) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: इस्लाम की चक्की चल पड़ी है लिहाज़ा जिधर अल्लाह की किताब ले जाए उधर तुम भी घूम जाओ। सुनो, किताबुल्लाह और हुकूमत बहुत जल्द अलग अलग हो जाएंगी। उस वक़्त तुम किताबुल्लाह को न छोड़ना। सुनो, बहुत जल्द तुम पर ऐसे अमीर मुसल्लत होने वाले हैं जिन के फ़ैसले तुम्हारे लिये कुछ और होंगे और अपने लिये कुछ और। उन की नाफ़रमानी करोगे तो वह तुम्हें क़त्ल कर

देंगे और अगर इताअत करोगे तो गुमराह कर देंगे। सहाबा ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! उस वक़्त हमारा अमल कैसा हो? फ़रमाया: वही जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के असहाब का था। उन्हें आरों से चीरा गया और सूली पर लटकाया गया। अल्लाह की इताअत में मर जाना उस की नाफ़रमानी में ज़िन्दा रहने से बेहतर है। (कबीर)

१५०) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जहाँ तक हो सके हाकिमों के पास न जाया करो। अगर ऐसा करना ही पड़े तो मेरी सुन्नत से मुंह न मोड़ो और उन्हें अल्लाह से डरने का हुक्म सुनाने में तलवार और कोड़े से न डरो। (औसत)

१५१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: आख़िर ज़माने में ज़ालिम उलिल अम्र, फ़ासिक वज़ीर, ख़यानत करने वाले क़ाज़ी और झूटे फ़क़ीह होंगे। तुम में से जो कोई भी ऐसा दौर देखे वह न उन का मुहस्सिल बने, न नक़ीब और न सिपाही। (अल हदीस)

१५२) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम में से हर शख़्स राई (हाकिम) की हैसियत रखता है और उस से उस की रैय्यत के बारे में पूछा जाएगा। इमाम एक हाकिम है और उस से उस की रैय्यत के बारे में पूछा जाएगा। मर्द भी अपने बाल बच्चों का हाकिम है और उस से उस की रैय्यत के बारे में पूछा जाएगा। औरत भी अपने शौहर के घर की हाकिम है और उस से उस की रैय्यत के बारे में सवाल किया जाएगा। नौकर भी अपने आक़ा के माल का हाकिम है और उस से उस की रैय्यत के बारे में बाज़पुर्स होगी। रावी कहते हैं: मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इन तमाम हाकिमों और रैय्यत का ज़िक्र सुना और मुझे ख़्याल आता है कि मैं ने नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह भी कहते सुना है कि आदमी अपने बाप के माल का भी हाकिम है और उस से इस की भी बाज़पुर्स होगी। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम में से हर शख़्स हाकिम है और अपने दायरे में अपनी रैय्यत के बारे में जवाबदेह है। (शैख़ैन, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

१५३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: अदल करने वाले अल्लाह के दाईं तरफ़ नूरानी मिम्बरों पर बैठेंगे और अल्लाह के तो दोनों ही हाथ दाहिने हैं। यह लोग जब तक अपने ओहदे पर रहते हैं अपने फ़ैसलों में अपने बाल बच्चों के मुआमले में भी अदल ही से काम लेते हैं। (अबू दाऊद)

१५४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिसे अल्लाह तआला किसी रैय्यत का हाकिम बनाए और वह अपने फ़र्ज़ में ख़यानत करके

मरे तो अल्लाह तआला उस पर जन्नत हराम कर देगा। (अबू दाऊद)

१५५) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हश्र के दिन अल्लाह तआला का सब से ज़्यादा मेहबूब और अल्लाह के हुज़ूर सब से करीब बैठने वाला शख़्स इमामे आदिल होगा और सब से ज़्यादा काबिले नफ़रत और सब से ज़्यादा दूर जगह पाने वाला शख़्स ज़ालिम इमाम होगा। (अबू दाऊद)

१५६) नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक़दाम बिन मअदी कर्ब के कन्धों पर हाथ मार कर फ़रमाया: ऐ मक़दाम, अगर कहीं के अमीर या मुन्शी या चौधरी बने बिना मर जाओ तो समझो कि तुम ने फ़लाह हासिल कर ली। (अबू दाऊद)

१५७) सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ अब्दुर्रहमान, कभी इमारत (हाकिम बनने) की तलब न करो। अगर तुम्हें मांगने से इमारत मिली तो नफ़्स के फन्दों में आ जाओगे और अगर बे मांगे मिली तो अल्लाह तआला की तरफ़ से तुम्हारी मदद होगी। (अबू दाऊद)

१५८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम लोगों में बहुत जल्द इमारत (हाकिम बनने) की हिर्स पैदा होने लगेगी लेकिन ऐसी इमारत हश्र के दिन निदामत बनेगी। यह दूध पिलाने वाली तो बड़ी अच्छी है मगर दूध छुड़ाते वक़्त बड़ी बुरी होती है। (बुख़ारी शरीफ़, निसाई)

१५९) एक सहाबी अपने दो चचा ज़ाद भाइयों के साथ सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए। उन में से एक ने अर्ज़ की: या रसूलल्लाह! आप अपने अता शुदा इख़्तियारात से मुझे भी कहीं की इमारत सिपुर्द कर दीजिये। दूसरे शख़्स ने भी ऐसी ही दरख़्वास्त पेश की। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़सम ख़ुदा की मैं इस ओहदे पर किसी ऐसे शख़्स को मुक़र्रर न करूंगा जो इस की तलब या हिर्स रखता हो। (शैख़ैन, अबू दाऊद, निसाई)

१६०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है: जब अल्लाह तआला किसी अमीर की भलाई चाहता है तो उसे एक मुख़्लिस वज़ीर भी दे देता है। अमीर अगर कुछ भूल भी जाए तो वह वज़ीर उसे याद दिला देता है और अगर याद रखे तो मदद देता है और अगर किसी अमीर की भलाई मक़सूद न हो तो उस के लिये एक बुरा वज़ीर पैदा कर देता है जो भूलते वक़्त कुछ याद नहीं दिलाता और अगर याद रहे तो कुछ मदद नहीं पहुंचाता। (अबू दाऊद, निसाई)

१६१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सुन लो, बहुत

जल्द कुछ नालायक़ अमीर होंगे। जो शख़्स उन के पास जाए और उन के झूट की तस्दीक़ करके उन के ज़ुल्म में मदद करे, वह मुझ से और मैं उस से अलग होऊंगा और वह मेरे हौज़ पर सैराब होने के लिये नहीं आ सकेगा। लेकिन जो इन अमीरों के पास जाकर न इनके मज़ालिम में हाथ बटाएगा और न इन की झूटी बातों को सच्चा बताएगा वह मेरा और मैं उस का होऊंगा और वह हौज़ से सैराब होने के लिये मेरे पास पहुंच जाएगा। (तिर्मिज़ी, निसाई)

१६२) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ अल्लाह, जो शख़्स मेरी उम्मत के किसी मुआमले का अमीर हो और वह लोगों को मशक़्क़त में डाले तो तू भी उसे मशक़्क़त में डाल और जो अमीर उन से नर्मी का बर्ताव करे तो तू भी उस के साथ नर्मी का सुलूक फ़रमा। (मुस्लिम)

१६३) हज़रत उमरे फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने एक ख़ुत्बे में फ़रमायाः मैं अपने अम्माल को इस लिये नहीं भेजता कि तुम्हारे जिस्मों को मार कर तकलीफ़ पहुंचाएं या तुम्हारा माल छीन लें। जिस के साथ ऐसा हो वह मेरे सामने मुआमला पेश करे ताकि मैं उस आमिल से क़िसास लूँ। यह सुन कर हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु बोलेः अगर कोई आमिल अदब सिखाने के लिये ऐसा करे तब भी क्या आप उस से क़िसास लेंगे। फ़रमायाः क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, क़िसास फिर भी लूंगा। मैं ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तो यहाँ तक देखा है कि खुद अपनी ज़ात से भी क़िसास लिया है। (अबू दाऊद)

१६४) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः उस उम्मत में कोई बरकत नहीं हो सकती जिस में इन्साफ़ से फ़ैसले न होते हों और जिस में कमज़ोर कोई परेशानी उठाए बिना अपना हक़ ज़बरदस्त से वुसूल न कर ले। (कबीर)

१६५) सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स अपनी हाजत और ज़रूरत हाकिम तक न पहुंचा सकता हो उस की हाजत वहाँ तक पहुंचाने वाले का अज्र यह है कि अल्लाह तआला उसे उस दिन साबित क़दम रखेगा जिस दिन (यानी हश्र के दिन) क़दमों में लग़ज़िश पैदा होगी। (बज़ार)

१६६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरा जो उम्मती कहीं का अमीर बनने के बाद लोगों की उसी तरह निगहदाश्त न करेगा जिस तरह वह अपनी या अपने बाल बच्चों की निगहदाश्त करता है तो वह जन्नत की ख़ुश्बू भी न सूंघ सकेगा। (औसत सग़ीर)

१६७) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो मुसलमानों का अमीर हो उस की ज़रूरतों पर अल्लाह तआला नज़र भी न डालेगा जब तक कि वह लोगों की ज़रूरतों पर नज़र न रखे। (कबीर)

१६८) मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है: जो किसी हाकिम की किसी मुआमले में ख़ैरख़्वाही करना चाहे वह उसे खुल्लम खुल्ला रुस्वा न करे बल्कि उस का हाथ पकड़ कर तन्हाई में ले जाए (और समझा दे) अगर वह मान जाए तो ठीक वरना समझाने वाला तो अपना फ़र्ज़ पूरा कर चुका। (अहमद, मुअत्ता)

१६९) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो इमाम के पास जाए वह या तो अच्छी बात कहे या ख़ामोश रहे यानी हर हाँ में हाँ न मिलाए और बुरी बात ज़बान से न निकाले। (औसत)

१७०) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ख़लीफ़ा के लिये अल्लाह तआला के माल में से दो प्याले से ज़्यादा लेना जाइज़ नहीं। यानी एक प्याला तो उस के और उस के बाल बच्चों के लिये और दूसरा वह जो लोगों के सामने रखे। (अहमद)

१७१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अगर तुम पर कोई हबशी ग़ुलाम भी, जिस का सर मुवेज़ मुनक़्क़े की तरह छोटा हो, अमीर बना दिया जाए तो जब भी वह किताबुल्लाह के मुताबिक़ चलाए उस की सुनते रहना और इताअत करना। (बुख़ारी)

१७२) मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो मेरी इताअत करता है वह अल्लाह तआला का मुतीअ है और जो मेरा नाफ़रमान है वह अल्लाह तआला का भी नाफ़रमान है और जो अमीर का इताअत गुज़ार है वह मेरा फ़रमाँ बरदार है और जो अमीर की नाफ़रमानी करे वह मेरा भी नाफ़रमान है। (हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत)

१७३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: इमाम एक सिपर है जिस की पनाह में जंग की जाती है और जिस के ज़रिये बचाव किया जाता है। पस अगर वह अल्लाह से डरने का हुक्म दे और अदल क़ाइम रखे तो उस के लिये अज्र है और अगर इस के अलावा कुछ कहे तो उस का बोझ उसी पर होगा। (शैख़ैन, निसाई)

१७४) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुसलमान पर अमीर की बात सुनना और उस की इताअत करना वाजिब है चाहे उसे पसन्द हो या नापसन्द। हाँ अगर उसे गुनाह का काम करने का हुक्म दिया जाए तो

उसे सुनना और उस पर अमल करना वाजिब नहीं। (मालिक)

१७५) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरे बाद कुछ लोग ऐसे तुम्हारे अमीर होंगे जो सुन्नत को हटा कर बिदअतें जारी करेंगे और नमाज़ के औक़ात में ताख़ीर करेंगे। मैं ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! अगर ऐसे लोग मुझे मिलें तो क्या करूं? फ़रमाया: ऐ उम्मे अब्द के फ़र्ज़न्द, मुझ से पूछते हो कि ऐसी सूरत में क्या करूँ? अरे अल्लाह का जो नाफ़रमान हो उस की इताअत कैसी? (कुज़वैनी)

१७६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मुसलमानों पर अमीर की बात सुनना और उस की इताअत वाजिब है तन्गी में भी, फ़राख़ी में भी, ख़ुशी में भी और नाख़ुशी में भी और अपने आप पर तर्जीह देने में भी। (मुस्लिम शरीफ़, निसाई)

१७७) ताजदारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम्हारे बेहतरीन इमाम वह हैं जिन से तुम और जो तुम से मुहब्बत रखते हों। तुम उन्हें और वह तुम्हें दुआए ख़ैर से याद करते हों। बदतरीन इमाम वह हैं जिन से तुम और जो तुम से बुग्ज़ रखते हों और जिन पर तुम और जो तुम पर मलामत और लअनत करते रहते हों। सहाबए किराम ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! क्या हम ऐसे इमामों से नाता न तोड़ लें या जंग का एलान न कर दें? सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बार फ़रमाया: जब तक तुम में इक़ामते सलात करते रहें उस वक़्त तक ऐसा मत करो। फिर फ़रमाया: जिस पर कोई अमीर मुक़र्रर कर दिया जाए और वह उस अमीर को कोई गुनाह करते देखे तो उस गुनाह को तो ज़रूर बुरा समझे लेकिन उस की इताअत से अपना हाथ न खींचे। (मुस्लिम शरीफ़)

१७८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है: तीन तरह के आदमी हैं जिन से अल्लाह तआला हश्र के दिन बात भी नहीं करेगा न उन की तरफ़ निगाह उठा कर देखेगा न उन्हें पाक करेगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अज़ाब होगा। एक वह शख़्स जो किसी बयाबान में ज़रूरत से ज़्यादा पानी पर क़ाबिज़ हो और मुसाफ़िरों को पानी न लेने दे। दूसरा वह शख़्स जो अस्र के बाद कोई सौदा यह कह कर बेचे कि ख़ुदा की क़सम मैं ने तो इतने में ख़रीदा है और ख़रीदार उसे सच्चा समझ कर ख़रीद ले हालांकि उस ने ग़लत क़सम खाई थी। तीसरा वह शख़्स जो किसी इमाम की बैअत महज़ दुनिया के लिये करे यानी अगर वह इमाम उस का दुनियवी मुतालिबा

पूरा कर दे तो फिर उस के साथ वफ़ा करे अगर उसे कुछ न दे तो बेवफ़ाई पर उतर आए। (शैख़ैन, अबू दाऊद, निसाई)

१७९) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो क़ौम बदअहदी करती है उस पर दुश्मन मुसल्लत कर दिया जाता है। (अबू दाऊद)

१८०) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सच बोलना नेकी है और नेकी जन्नत में ले जाती है और झूट बोलना फ़िस्क़ो फ़ुजूर है और फ़िस्क़ो फ़ुजूर दोज़ख़ में ले जाता है। (मुस्लिम)

१८१) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: जब बन्दा झूट बोलता है तो उस की बदबू से फ़रिश्ता एक मील दूर हट जाता है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

१८२) हज़रत सफ़वान बिन सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया: क्या मोमिन बुज़दिल हो सकता है? फ़रमाया: हाँ हो सकता है। फिर अर्ज़ किया गया: क्या मोमिन बख़ील हो सकता है? फ़रमाया: हाँ हो सकता है। फिर पूछा गया: क्या मोमिन झूटा हो सकता है? फ़रमाया: नहीं। (मिशकात, बैहक़ी)

१८३) हज़रत सय्यदुना उमरे फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार मजूस का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया: समझ में नहीं आता कि इन लोगों के साथ क्या तरीक़ा अपनाऊं? हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ बोले: मैं ने सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना है कि उन के साथ वही मुआमला करो जो अहले किताब के साथ होता है। (मालिक)

१८४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ग़द्दारी (मुआहिदे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी और बद अहदी) करने वालों के लिये क़ियामत के दिन एक झन्डा नसब किया जाएगा और यह बताया जाएगा कि फ़ुलाँ शख़्स की बद अहदी का यह निशान है। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

१८५) सफ़वान बिन उमय्या ने कल्दह को सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में कुछ दूध, पेवसी और सब्ज़ी लेकर भेजा। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस वक़्त वादी के बालाई हिस्से में तशरीफ़ रखते थे। कल्दह का बयान है: मैं बिना इजाज़त लिये अन्दर दाख़िल हो गया और सलाम भी नहीं किया। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बाहर वापस जाओ और पहले अस्सलामु अलैकुम कह कर पूछो क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ? यह

वाक़िआ सफ़वान के इस्लाम लाने के बाद का है। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

१८६) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ फ़र्ज़न्द, जब तुम अपने घर के अन्दर दाख़िल हो तो पहले सलाम कर लिया करो। यह सलाम तुम्हारे लिये और तुम्हारे घर वालों के लिये भी बरकत का बाइस होगा। (तिर्मिज़ी)

१८७) हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः गुफ़्तगू से पहले सलाम होता है। (तिर्मिज़ी)

१८८) हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जो शख़्स दोपहर से पहले चार रकअतें चाश्त की पढ़े तो गोया उस ने शबे क़द्र में पढ़ीं और दो मुसलमान मुसाफ़हा करें तो कोई गुनाह बाक़ी न रहे मगर झड़ जाएगा। (बेहक़ी)

१८९) हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है वह कहते हैं मैं ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछाः क्या सहाबए किराम में मुसाफ़हे का दस्तूर था? हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः हाँ। (बुख़ारी शरीफ़)

१९०) हज़रत अता ख़ुरासानी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः आपस में मुसाफ़हा करो दिल की अदावत जाती रहेगी और आपस में तोहफ़ा का लेन देन करो मुहब्बत पैदा होगी और दुश्मनी ख़त्म हो जाएगी। (अल-अतिय्यतुन नूरिया फ़िल अहादीसिन नबविया, लेखक अल्लामा शब्बीर अहमद चिश्ती)

१९१) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब दो मुसलमान मिले और एक ने दूसरे से मुसाफ़हा किया तो अल्लाह तआला के ज़िम्मए करम पर है कि उन की दुआ कबूल करे और हाथ जुदा न होने पाएं कि उन की मग़फ़िरत फ़रमा दे। (इमाम अहमद)

१९२) एक शख़्स आया और उस ने सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अन्दर आने की इजाज़त चाहते हुए यूँ कहाः मैं अन्दर आ जाऊँ? नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने ख़ादिम से कहाः बाहर जाकर उसे इजाज़त लेने का तरीक़ा बता दो। उस से कहो पहले अस्सलामु अलैकुम कहे फिर पूछे क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ? उस शख़्स ने यह बात बाहर ही से सुन ली और वहीं से बोलाः अस्सलामु अलैकुम, क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ? सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इजाज़त दे दी और वह अन्दर आ गया। (अबू दाऊद)

१९३) क़ैस बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि सरकार

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार हमारे ग़रीबख़ाने पर तशरीफ़ लाए और बाहर ही से फ़रमाया: अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह। मेरे वालिद सअद ने धीमी आवाज़ से सलाम का जवाब दिया। मैं ने अपने वालिद से कहा: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए हैं। अन्दर आने की इजाज़त क्यों नहीं देते? उन्हों ने कहा: छोड़ो भी। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हम पर बार बार सलामती भेजने दो। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर फ़रमाया: अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह। सअद ने फिर धीरे से जवाब दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फिर तीसरी बार सलाम कह कर वापस होने लगे तो सअद पीछे हुए और अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! मैं हुज़ूर का सलाम सुन रहा था और धीरे से जवाब भी देता रहा। मैं चाहता था कि हुज़ूर बार बार हम पर सलामती भेजते रहें। इस के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सअद के साथ वापस आए और सअद ने गुस्ल का पानी तय्यार करने का हुक्म दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गुस्ल फ़रमाया और सअद ने ज़अफ़रान से रंगी हुई एक चादर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पेश की। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह ओढ़ ली और हाथ उठा कर यूँ दुआ फ़रमाई: ऐ अल्लाह, आले सअद पर अपनी रहमतें और बरकतें नाज़िल फ़रमा। इस के बाद सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खाना नोश फ़रमाया। फिर जब वापस होने का इरादा किया तो सअद ने एक गधा तय्यार किया और उस पर नर्म छोरदार चादर का गद्दा बिछा दिया और अपने बेटे कैस से कहा: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जाओ। मैं ने अदब की वजह से इन्कार किया तो फ़रमाया: या तो तुम भी मेरे साथ सवार हो जाओ या फिर वापस जाओ। आख़िर मैं वापस आ गया। (अबू दाऊद)

१६४) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कुछ बच्चों के पास से गुज़रे तो उन को सलाम किया और कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी ऐसा ही किया करते थे। (शैख़ैन, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

१६५) हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम से नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: आने वालों में अगर पूरी जमाअत हो तो एक आदमी का सलाम करना सब की तरफ़ से काफ़ी है। और इसी तरह एक आदमी का सलाम का जवाब दे देना तमाम अहले मेहफ़ल की तरफ़ से किफ़ायत करता है। (अबू दाऊद)

१६६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला के सब से ज़्यादा करीब वह होता है जो सलाम करने में पहल करे। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

१९७) हदीस शरीफ़ में है कि सवार पैदल चलने वाले को, खड़ा हुआ बैठे हुए को और कम संख्या बड़ी संगत को सलाम करे।

१९८) एक शख़्स ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा: क्या मैं अपनी माँ से भी अन्दर आने की इजाज़त लिया करूँ? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हाँ, उस ने कहा: मैं उसी के साथ एक ही घर में रहता हूँ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: फिर भी इजाज़त ले कर अन्दर आओ। अर्ज़ किया: उस की ख़िदमत भी मैं ही करता हूँ। फ़रमाया फिर भी इजाज़त ले लिया करो। क्या तुम यह पसन्द करते हो कि किसी वक़्त उसे नंगे देख लो? अर्ज़ किया: नहीं। फ़रमाया: फिर इजाज़त ले लिया करो। (मालिक)

१९९) एक सहाबी की रिवायत है: मेरे वालिद के ज़िम्मे जो कर्ज़ था उस के बारे में कुछ पूछने के लिये मैं सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। दस्तक दी तो फ़रमाया: कौन है? मैं ने कहा: मैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी मैं कहते हुए बाहर तशरीफ़ लाए। यानी इस मैं के जवाब को पसन्द नहीं फ़रमाया: (शैख़ैन, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

२००) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर कोई शख़्स किसी के घर में बिना इत्तिलाअ के अचानक घुस आए तो घर वालों के लिये उस की आँख फोड़ देना रवा है। (शैख़ैन, अबू दाऊद, निसाई)

२०१) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैं ने एक शख़्स को सरकार नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह सवाल करते सुना कि अगर कोई आदमी अपने भाई या दोस्त से मिले तो क्या उस के लिये झुकना भी चाहिये? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: नहीं। (तिर्मिज़ी)

२०२) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब कोई छींक मार कर अल्हम्दु लिल्लाह कहे तो हर सुनने वाले मुसलमान को इस के जवाब में यरहमुकल्लाह कहना हक़ हो जाता है और जमाही शैतानी अमल है। अगर नमाज़ में जमाही आए तो जहाँ तक हो सके दबा लो और हा हा न करो। यह शैतान की तरफ़ से होता है जिस पर ख़ुद शैतान हंसता है। एक दूसरी रिवायत में है कि जब जमाही आए तो मुंह पर हाथ रख लो और हाह हाह करने से शैतान अन्दर से हंसता है। (शैख़ैन, अबू दाऊद, निसाई)

२०३) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सलाम अल्लाह तआला के मुबारक नामों में से है जिसे उस ने ज़मीन पर रख दिया है लिहाज़ा इसे आपस में फैलाओ। अगर एक मुसलमान कुछ लोगों के पास से गुज़रता हुआ

उन्हें सलाम करे और वह उस के सलाम का जवाब दे दें तो उस मुसलमान का एक दर्जए फ़ज़ीलत उन लोगों से ज़्यादा हो जाता है क्यों कि इस ने उन लोगों को सलाम याद दिलाया। अगर लोग उस के सलाम का जवाब न दें तो उस का जवाब वह देता है जो उन सब से बेहतरीन और पाकीज़ा तर है। (यानी अल्लाह तआला और उस का मुक़र्रब फ़रिश्ता) (कबीर)

२०४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः सब से ज़्यादा आजिज़ वह है जो दुआ से आजिज़ हो और सब से ज़्यादा बख़ील वह है जो सलाम में बुख़्ल करे। (कबीर)

२०५) हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया एक शख़्स अल्लाह तआला के लिये एक काम करता है और लोग उस से उस काम की वजह से मुहब्बत करते हैं। आप ने फ़रमायाः यह मोमिन के लिये दुनिया में नक़द बशारत है। (इब्ने माजा)

२०६) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब भी दो मुसलमान बाहम मिलते हैं और मुसाफ़हा करते हैं तो जुदा होने से पहले तक के सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

२०७) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः रास्तों पर बैठने से बचो। यह सुन कर कुछ लोगों ने कहाः या रसूलल्लाह! हमें बाज़ औक़ात बात सुनने के लिये रास्तों पर ही बैठना पड़ता है। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अगर तुम्हें मजबूरी से ऐसा करना पड़े, तो रास्ते के हुक़ूक़ भी अदा किया करो। लोगों ने पूछाः रास्ते के हक़ क्या हैं? फ़रमायाः निगाहें नीची रखना, ईज़ा रसानी से बचना, सलाम का जवाब देना, अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर का ख़्याल रखना। अबू दाऊद की एक दूसरी रिवायत में यह भी कहा गया हैः मुसीबत के मारों की मदद करना और भटके हुओं को राह बताना। (शैख़ैन, अबू दाऊद)

२०८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेहफ़िल में किसी आदमी को उठा कर अपने लिये जगह न पैदा करो बल्कि ज़रा फैल कर कुशादगी पैदा कर लो तो अल्लाह तआला तुम्हारे लिये कुशादगी पैदा फ़रमा देगा। (शैख़ैन, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

२०९) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद हैः अगर कोई शख़्स मेहफ़िल से उठ कर कहीं चला जाए और फिर वापस आए तो वही उस जगह का ज़्यादा हक़दार है। (मुस्लिम, अबू दाऊद)

२१०) सहाबए किराम से रिवायत है कि हम लोग जब सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस में आते तो किनारे बैठ जाया करते थे। (अबू दाऊद)

२११) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है: दो आदमियों के बीच इजाज़त बिना नहीं बैठना चाहिये। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

२१२) जो शख़्स बीच हलके में जाकर बैठे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस पर लअनत फ़रमाई है। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

२१३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है: मोमिन पर मोमिन के ६ हक़ हैं: (१) बीमार हो तो अयादत करे (२) मरे तो जनाज़े में शिर्कत करे (३) दावत करे (बुलाया जाए) तो आ जाए (४) मिले तो सलाम करे (५) छींके तो यरहमुकल्लाह करे (६) सामने या पीठ पीछे हो तो उस की ख़ैर ख़्वाही करे। (मालिक, निसाई)

२१४) सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर कोई शख़्स किसी दूसरे से कोई बात करके चला जाए तो वह बात अमानत की एक क़िस्म में दाख़िल है। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

२१५) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: किसी बूढ़े मुसलमान, हामिले क़ुरआन और आदिल सुल्तान की ताज़ीम करना भी अल्लाह तआला ही की ताज़ीम है बशर्ते कि उस में न ग़ुलू हो न कमी। (बल्कि एतिदाल मल्हूज़ रहे) (अबू दाऊद)

२१६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो नौजवान किसी बूढ़े की उस के बुढ़ापे की वजह से ताज़ीम करता है तो अल्लाह तआला उस के बुढ़ापे के लिये किसी को मुक़र्रर कर देता है जब वह बूढ़ा हो। (तिर्मिज़ी)

२१७) एक बूढ़ा शख़्स सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिलने के लिये आया। लोगों ने उसे जगह देने में कोताही की। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो छोटों पर रहम और बड़ों की इज़्ज़त न करे वह मेरी जमाअत से बाहर है। (तिर्मिज़ी)

२१८) जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु काशानए नबुव्वत में दाख़िल हुए तो वहाँ बैठने की कोई जगह न थी। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी रिदाए मुबारक उन की तरफ़ फेंक दी और फ़रमाया: इस पर बैठ जाओ। हज़रत जरीर ने वह चादर ली और चूम कर सीने से लगा ली और कहा: या रसूलल्लाह! अल्लाह आप का इकराम फ़रमाए, जिस तरह आप ने मेरा इकराम फ़रमाया है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब किसी क़ौम का कोई बाइज़्ज़त आदमी आए तो उस का इकराम किया करो। (औसत, बज़ाज़ नजफ़ी)

२१९) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस के साथ नेक सुलूक किया जाए और वह जज़ाकल्लाहु ख़ैरन (अल्लाह तुम्हें बेहतर जज़ा दे) कह दे तो यह बड़ी काफ़ी तारीफ़ है। (तिर्मिज़ी)

२२०) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद हैः जिसे कोई अतिया मिले वह उस का बदला भी दे और अगर उसे यह मयस्सर न हो तो सना और तारीफ़ ही कर दे क्योंकि सना उस का शुक्रिया है और इसे दबाए रखना नाशुक्री है। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

२२१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान हैः जो इन्सान का शुक्र अदा नहीं करता वह अल्लाह तआला का भी शुक्र गुज़ार नहीं। (तिर्मिज़ी)

२२२) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः किसी के झूटे होने के लिये इतना ही काफ़ी है कि (जो सुने उसे बिना तहक़ीक़) बयान करता फिरे। (मुस्लिम, अबू दाऊद)

२२३) एक सहाबी ने अपनी कमसिनी का वाक़िआ बयान करते हुए कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे ग़रीबख़ाने पर तशरीफ़ लाए। मेरी वालिदा ने मुझे यह कह कर बुलायाः आओ तुम्हें एक चीज़ दूं। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछाः क्या देने का इरादा है? बोलीं: खजूर। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अगर तुम उसे कुछ न देतीं तो तुम्हारे आमाल में एक झूट लिख दिया जाता। (अबू दाऊद)

२२४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ लोगो, झूट बोलने पर तुम्हें क्या चीज़ उभारती है? झूट भी ऐसा मुसलसल कि जैसे परवाने एक के बाद एक आग में गिर रहे हों। आदम के बेटे से हर झूट का हिसाब लिया जाएगा। सिर्फ़ तीन मौक़े छूट वाले हैं: (१) बीवी को खुश रखने के लिये (२) जंग के मौक़े पर क्योंकि जंग नाम ही है फ़रेब का (३) दो मुसलमानों में सुलह कराने के लिये। (तिर्मिज़ी)

२२५) एक शख़्स ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह, मेरी मइय्यत का सब से ज़्यादा हक़दार कौन है? फ़रमायाः तुम्हारी माँ। उस ने पूछाः उस के बाद कौन? तुम्हारी माँ। उस ने फिर पूछाः उस के बाद? फ़रमायाः तुम्हारा बाप। (शैख़ैन)

२२६) कलीब के दादा ने नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दरियाफ़्त कियाः मैं किस किस के साथ हुस्ने सुलूक करूँ? फ़रमायाः अपनी माँ, बाप, बहन, भाई और क़रीबी मौला के साथ। यही ज़रूरी हक़ और सिलए रहमी है। (अबू दाऊद)

२२७) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक शख़्स ने आकर दरियाफ़्त कियाः मेरे पास दौलत भी है और औलाद भी और मेरे माँ बाप को भी मेरे माल की ज़रूरत है। फ़रमायाः तुम अपने माल समेत अपने बाप के हो और तुम्हारी औलाद तुम्हारी बेहतरीन कमाई में शामिल है लिहाज़ा अपनी औलाद की कमाई में से खा सकते हो। (अबू दाऊद)

२२८) बेटियों के तअल्लुक़ से मुसलमानों के कुछ हुक़ूक़ हैंः (१) बेटी के पैदा होने पर रंज ज़ाहिर न करे बल्कि इसे अल्लाह की नेअमत जाने। (२) सीना पिरोना कातना खाना पकाना सिखाए। (३) सूरए नूर की तालीम दे। (४) लिखना न सिखाए कि फ़ित्ने का एहतिमाल है। (५) बेटों से ज़्यादा बेटियों की दिल जूई और ख़ातिर दारी रखे कि उन का दिन बहुत थोड़ा होता है। (६) कुछ देने में उन्हें और बेटों को कांटे की तौल बराबर रखे। (७) जो कुछ दे तो पहले बेटियों को दे फिर बेटों को। (८) नौ बरस की उम्र से न अपने पास सुलाए न ही भाइयों के पास सोने दे। (९) नौ बरस की उम्र से ही ख़ास निगहदाश्त शुरू कर दे। (१०) शादी बरात में जहाँ नाच गाना हो हरगिज़ न जाने दे अगर्चे अपने भाई के यहाँ ही क्यों न हो। गाना सख़्त संगीन जादू है और इन नाज़ुक शीशों को थोड़ी सी ठेस बहुत है। (११) घर में लिबास और ज़ेवर से आरास्ता करे कि पयाम रग़बत के साथ आएं। (१२) जब बराबर का जोड़ मिले तो निकाह में देर न करे। (१३) जहाँ तक हो सके बारह बरस की उम्र में ही निकाह कर दे। (१४) किसी फ़ासिक़, फ़ाजिर ख़ुसूसन बद मज़हब के निकाह में न दे। (मशअलतुल इरशाद हुक़ूक़िल इबाद लेखक इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ मुहद्दिस बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि)

२२९) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैंः मेरे पास एक औरत सवाल करती हुई आई। उस के साथ दो लड़कियाँ भी थीं। मेरे पास उस वक़्त एक छुहारे के सिवा कुछ भी न था। मैं ने वही उसे दे दिया। उस ने उस के दो हिस्से किये और अपनी दोनों लड़कियों को दे दिये और ख़ुद कुछ न खाया और चली गई। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो मैं ने इस वाक़ए का आप से ज़िक्र किया। फ़रमायाः जो इन मअसूम बच्चियों के सिलसिले में किसी आज़माइश में पड़े और इन के साथ हुस्ने सुलूक का हक़ अदा करे तो वह लड़कियाँ उस के लिये आग से बचाव का ज़रिया बन जाएंगी। (शैख़ैन, तिर्मिज़ी)

२३०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं तुम्हें सब से अफ़ज़ल सदक़ा (कारे ख़ैर) बताता हूँ, तुम्हारी वह बेटी जिस की किफ़ालत तुम

करो और तुम्हारे सिवा उस का कोई कमाने वाला न हो। (कुज़वैनी)

२३१) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: जो दो लड़कियों की उन के जवान होने तक किफ़ालत करे वह क़ियामत के दिन इन उंगलियों की तरह मेरे साथ होगा। (तिर्मिज़ी, मुस्लिम)

२३२) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ,उमदा तर्बियत से बेहतर कोई तोहफ़ा नहीं जो बाप अपनी औलाद को दे सके। (तिर्मिज़ी)

२३३) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम में बेहतरीन इन्सान वह है जो अपने बाल बच्चों के लिये बेहतरीन हो और मैं अपने बाल बच्चों के हक़ में तुम से बेहतर हूँ। (तिर्मिज़ी)

२३४) नबीये मुकर्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: वह शख़्स रुस्वा हुआ, ज़लील हुआ, बे इज़्ज़त हुआ। लोगों ने अर्ज़ की: कौन या रसूलल्लाह? फ़रमाया: वह जिस ने अपने माँ बाप दोनों को या किसी एक को बुढ़ापे की हालत में पाया और उन की ख़िदमत करके जन्नत में दाख़िल होने का मौक़ा हासिल न किया। (मुस्लिम शरीफ़)

२३५) एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा: क्या मेरे वालिदैन के मरने के बाद भी कोई ऐसा हुस्ने सुलूक है जो मैं करूँ तो वालिदैन ही के साथ हुस्ने सुलूक में गिना जाए? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हाँ, उन के लिये दुआ और इस्तिग़फ़ार किया करो, जो अहद वह पूरा न कर सके हों उन को तुम पूरा करो, उन की वजह से जिस के साथ सिलए रहमी हो सकती थी वह करो और उन के मुख़लिसों का इकराम क़ाइम करो। (अबू दाऊद)

२३६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन तशरीफ़ फ़रमा थे कि आप के रिज़ाई वालिद आए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने कपड़े का एक गोशा उन के लिये बिछा दिया और वह उस पर बैठ गए। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिज़ाई वालिदा आईं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस कपड़े का दूसरा गोशा उन के लिये बिछा दिया और वह वहाँ बैठ गईं। फिर आप के रिज़ाई भाई आए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हो गए और उन्हें अपने सामने बिठा लिया। (अबू दाऊद)

२३७) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम अपने माँ बाप के साथ हुस्ने सुलूक करो तो तुम्हारी औलाद तुम्हारे साथ हुस्ने सुलूक करेगी और तुम ख़ुद पाक दामन रहो तो तुम्हारी औरतें भी पाक दामन रहेंगी। (औसत)

२३८) एक शख़्स ने नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपनी सख़्त

दिली की शिकायत की। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस का यह इलाज बताया कि यतीम के सर पर रहमत का हाथ फेरो और मिस्कीन को खाना खिलाओ। (अहमद)

२३९) एक शख़्स ने सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दरियाफ़्त किया: या रसूलल्लाह, मैं ने बाज़ बड़े गुनाह किये हैं क्या उन की तौबा हो सकती है? नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा: क्या तुम्हारी कोई माँ ज़िन्दा है? अर्ज़ किया नहीं। पूछा: क्या कोई ख़ाला है? कहा: हाँ। फ़रमाया: बस उस के साथ हुस्ने सुलूक करो। (यही बड़े गुनाह की तौबा है) (तिर्मिज़ी)

२४०) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मुसलमानों में सब से बेहतरीन घर वह है जिस में कोई यतीम हो और उस के साथ उम्दा सुलूक किया जाता हो। और बदतरीन घर वह है जहाँ कोई यतीम हो और उस के साथ बुरा सुलूक किया जाता हो। (कुज़वैनी)

२४१) नबीये मुकर्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं और वह औरत इन दो उंगलियों (बीच की और उस के पास वाली) की तरह हश्र के दिन क़रीब क़रीब होंगे यानी वह औरत जो बेवा हो गई हो इज़्ज़त और दौलत रखती हो (बिन बाप के बच्चों की ख़िदमत करते करते) उस के चेहरे का रंग बदल गया हो और वह दूसरी शादी से रुकी रहे यहाँ तक कि वह बच्चे जुदा हो जाएं या मर जाएं। (अबू दाऊद)

२४२) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बेवा और मिस्कीन के लिये कोशिश करने वाला ऐसा ही है जैसे अल्लाह की राह में जिहाद करने वाला। मुझे ख़्याल आता है कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया था जैसे सारी रात कियाम करने वाला और हमेशा रोज़ा रखने वाला। (शैख़ैन, तिर्मिज़ी, निसाई)

२४३) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो यह पसन्द करता है कि अल्लाह तआला उस की रोज़ी में कुशादगी पैदा फ़रमाए और उस की ज़िन्दगी दराज़ हो तो वह सिलए रहमी करे। (बुख़ारी शरीफ़, तिर्मिज़ी)

२४४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: रिश्तेदारों से बुरा सुलूक करने वाला जन्नत में नहीं जाएगा। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

२४५) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कोई गुनाह ऐसा नहीं है जिस के करने वाले को आख़िरत के हिसाब किताब के साथ साथ दुनियवी सज़ा देने में भी जल्दी की जाए बजुज़ बग़ावत और क़त्ए रहमी के। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

२४६) एक शख़्स ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मेरे कुछ करीबी रिश्तेदार हैं जिन के साथ मैं सिलए रहमी करता हूँ मगर मेरे साथ वह क़तए रहमी करते हैं। मैं उन के साथ हुस्ने सुलूक करता हूँ मगर वह मेरे साथ बदसुलूकी करते हैं। मैं उन की बातों पर हिल्म से काम लेता हूँ मगर वह मुझ से उजडपन करते हैं। हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अगर सही यही है जो तुम ने कहा तो गोया तुम उन के मुंह पर ख़ाक डालते हो और जब तक इस रविश पर क़ाइम रहोगे अल्लाह तआला की तरफ़ से एक मददगार फ़रिश्ता तुम्हारे साथ रहेगा। (मुस्लिम शरीफ़)

२४७) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के यहाँ एक बकरी ज़िब्ह हुई। जब इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा आए तो उन्हों ने कहाः हमारे यहूदी पड़ोसी का हिस्सा भेजा? बार बार पूछा। फिर फ़रमायाः मैं ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना है कि जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने मुझे पड़ोसी के बारे में इस क़दर वसिय्यत की कि मुझे गुमान होने लगा कि यह पड़ोसी को वारिस ही बना देंगे। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

२४८) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक आदमी आया और अपने पड़ोसी की शिकायत करने लगा। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः वापस जाओ और सब्र से काम लो। वह आदमी दो या तीन बार सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास फिर आया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः वापस जाकर अपना माल व अस्बाब सड़क पर डाल दो। उसने ऐसा ही किया। अब जो लोग उधर से गुज़रते उससे इस का सबब पूछते और वह पूरा क़िस्सा बयान कर देता। नतीजा यह हुआ कि लोग उस पड़ोसी को कोसने और बद दुआएं देने लगे कि ख़ुदा उस के साथ भी ऐसा ही करे। आख़िर वह पड़ोसी उस के पास आकर कहने लगाः ख़ुदा के वास्ते तुम वापस चलो। मुझ से अब तुम्हें कोई शिकायत का मौक़ा नहीं मिलेगा। (अबू दाऊद)

२४९) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बख़ुदा वह मोमिन नहीं, बख़ुदा वह मोमिन नहीं, बख़ुदा वह मोमिन नहीं। अर्ज़ किया गयाः कौन या रसूलल्लाह? फ़रमायाः वह जिस के शर से उस का पड़ोसी मेहफ़ूज़ न हो। (शैख़ैन)

२५०) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मुझ पर उस का ईमान ही नहीं जो ऐसी हालत में मरे कि उस का पेट तो भरा हुआ हो और उस के बग़ल में उस का पड़ोसी भूखा हो और उसे उस के भूखे होने का इल्म भी हो। (कबीर)

२५१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है: पड़ोसी के हक़ का दायरा दाएं बाएं आगे पीछे चालीस चालीस घर तक वसीअ होता है। (अल हदीस)

२५२) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तीन मुसीबतें बड़ी सख़्त होती हैं एक यह कि किसी हाकिम के साथ तुम हुस्ने सुलूक करो तो वह शुक्र गुज़ार न हो। और बुरा सुलूक करो तो वह माफ़ न करे। दूसरे वह पड़ोसी जो तुम्हारी कोई नेकी देखे तो उसे दफ़न कर दे और कोई बुराई देखे तो उस की इशाअत करता फिरे। तीसरे वह औरत कि जब तुम घर आओ तो तुम्हें ईज़ा पहुंचाए और जब तुम बाहर हो तो तुम्हारी ख़यानत करे। (कबीर)

२५३) एक शख़्स ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! एक औरत है जिस की नमाज़, रोज़ा और सदक़े की कसरत मशहूर है मगर वह अपनी ज़बान से अपने पड़ोसी को ईज़ा पहुंचाती है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: वह जहन्नमी है। फिर उस ने अर्ज़ किया: एक दूसरी औरत है जिस के बारे में मशहूर है कि वह नमाज़ रोज़े से बहुत कम तअल्लुक़ रखती है और सिर्फ़ पनीर के टुकड़े सदक़े में देती है लेकिन अपनी ज़बान से अपने पड़ोसियों को दुख नहीं देती। फ़रमाया: वह जन्नती है। (अहमद, बज़ाज़)

२५४) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को चूमा। उस वक़्त अक़रअ बिन हाबिस रज़ियल्लाहु अन्हु भी मौजूद थे। वह बोले: मेरे दस बच्चे हैं लेकिन मैं ने आज तक किसी को नहीं चूमा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अक़रअ की तरफ़ देख कर फ़रमाया: जो रहम नहीं करता उस पर भी रहम नहीं किया जाता। (शैख़ैन, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

२५५) सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक देहाती आकर कहने लगा: आप लोग बच्चों को चूमते हैं लेकिन हम लोग तो कभी नहीं चूमते। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर तुम्हारे दिल से अल्लाह तआला रहम का जज़्बा निकल ले तो मैं क्या कर सकता हूँ। (शैख़ैन)

२५६) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब अल्लाह तआला ने मख़लूक़ात को पैदा फ़रमाया तो अपनी किताब में जो उस के अर्श के ऊपर रखी है यह लिख दिया: मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब रहा करेगी। (शैख़ैन, तिर्मिज़ी)

२५७) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ

और अर्ज़ की: या रसूलल्लाह! अपने ख़ादिम और गुलाम की ग़लतियाँ हमें किस हद तक माफ़ कर देनी चाहियें? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ामोश रहे और कोई जवाब नहीं दिया। उस शख़्स ने दोबारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में यही अर्ज़ किया। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फिर ख़ामोश रहे। फिर जब तीसरी बार उस ने अर्ज़ किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: हर रोज़ सत्तर बार। (सुनने अबू दाऊद)

२५८) हज़रत कअब बिन अजरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिदायत फ़रमाई कि अपनी बांदियों को बर्तन तोड़ने पर सज़ा न दिया करो इसलिये कि बर्तनों की भी उम्रें मुक़र्रर हैं तुम्हारी उम्रों की तरह। (दैलमी)

२५९) हदीस शरीफ़ में एक सहाबी फ़रमाते हैं: हम लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में ग़ैर ज़रूरी तौर पर अपनी औरतों को कुछ कहने और उनसे बेतकल्लुफ़ी करने से बचते थे कि हमारे बारे में कोई चीज़ नाज़िल न हो जाए फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से तशरीफ़ ले गए तो हम लोगों ने बात की और हम बेतकल्लुफ़ी से पेश आने लगे। (बुख़ारी शरीफ़)

२६०) हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पास से गुज़रे। उस वक़्त मैं पेट के बल लेटा हुआ था। आप ने क़दमे मुबारक से मुझ हिलाया और फ़रमाया: ऐ जुन्दब (अबूज़र ग़िफ़ारी का अस्ल नाम) यह दोज़ख़ियों के लेटने का तरीक़ा है। (इब्ने माजा)

२६१) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बच्चे को देखा जिस के सर पर कुछ बाल तो मूंड दिये गए थे और कुछ छोड़ दिये गए थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को मना किया और हिदायत फ़रमाई कि या तो पूरा सर मूंडा जाए या पूरे सर पर बाल छोड़ दिये जाएं। (मुस्लिम शरीफ़)

२६२) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं यह बात सुन्नत से साबित है कि जब कोई शख़्स बैठे तो अपने जूते उतार ले और उन्हें अपने पहलू में रख ले यानी जूते पहन कर न बैठे कि यह आदाबे मजलिस का तक़ाज़ा है और तहज़ीब व शायस्तगी की निशानी भी। इस के अलावा जूतों को बाएं पहलू की तरफ़ रखे ताकि दाएं पहलू की तकरीम बरक़रार रहे। (अबू दाऊद)

२६३) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: किसी गुलाम और ममलूक के लिये बड़ी अच्छी और कामयाबी की बात है कि अल्लाह उसे ऐसी हालात में उठाए कि वह अपने रब का इबादत गुज़ार और अपने आक़ा का फ़रमाँ बरदार हो। (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

२६४) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कोई गुलाम जब अपने मालिक और आक़ा की भलाई और वफ़ादारी करे और ख़ुदा की इबादत भी अच्छी तरह करे तो वह दोहरे सवाब का हक़दार होगा। (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

२६५) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक शख़्स के हाथ में सोने की अंगूठी देखी तो उस के हाथ से निकाल कर फेंक दी और फ़रमाया: तुम में से किसी का यह हाल है कि वह अपनी ख़्वाहिश से दोज़ख़ का अंगारा लेकर अपने हाथ में पहन लेता है। (मुस्लिम शरीफ़)

२६६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: तुम लोग अपने लिये इस को लाज़िम जानो कि सच ही बोलो क्योंकि सच्चाई तुम को नेकूकारी की तरफ़ ले जाएगी और नेकूकारी तुम्हें जन्नत में पहुंचा देगी और जो शख़्स हमेशा सच बोलता रहता है और सच्चाई की तलाश में रहता है तो अल्लाह तआला के दरबार में उसके लिये सिद्दीक़ का लक़ब लिख दिया जाता है और तुम लोग झूट से बचते रहो क्योंकि झूट तुम्हें बदकारी की तरफ़ ले जाएगा और बदकारी तुम्हें जहन्नम में पहुंचा देगी और जो शख़्स मुसलसल झूट बोलता रहता है और झूट का ही तलबगार रहता है यहाँ तक कि वह अल्लाह तआला की बारगाह में कज़्ज़ाब लिख दिया जाता है। (तिर्मिज़ी)

२६७) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सूद खाने में तिहत्तर गुनाह हैं। सब से अदना गुनाह यह है कि उस ने अपनी माँ के साथ ज़िना किया। (बुख़ारी शरीफ़)

२३८) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो चाहे कि उस के रिज़्क और उम्र में बरकत हो वह रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक करे। (मुस्लिम व बुख़ारी)

२६९) हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: रिश्तों को काटने वाला जन्नत में नहीं जाएगा। (मुस्लिम व बुख़ारी)

२७०) इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जो अल्लाह तआला के नाम पर तुम से मांगे उसे ज़रूर दो और जो रिश्तेदारी का वास्ता देकर मांगे उसे ज़रूर दो। (ख़ाज़िन)

२७१) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक करने वाला फ़क़ीरी और बुरे ख़ातिमा से मेहफ़ूज़ रहेगा। (तफ़सीरे कबीर)

२७२) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः रहम अर्श से लटा हुआ है और पुकार रहा है जिस ने मुझे जोड़ा अल्लाह उसे अपने से मिलाएगा और जिस ने मुझे तोड़ा अल्लाह उसे अपने से जुदा कर देगा। (मुस्लिम व बुख़ारी)
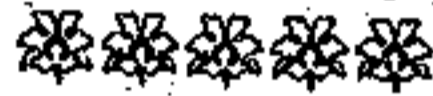
सत्तरहवाँ अध्याय

सतरंगी मालूमात

१) एक रोज़ हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मस्जिद में तन्हा बैठे हुए देखा तो इन लम्हों को ग़नीमत जान कर कुछ सवालात किये:

अबूज़र: या रसूलल्लाह! अल्लाह के नज़्दीक कौन से आमाल सब से पसन्दीदा है?

सरकार रहमते आलाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम: अल्लाह तआला पर ईमान और अल्लाह के रास्ते में जिहाद।

अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु: किस मोमिन का ईमान ज़्यादा मुकम्मल है?

सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम: जो अख़लाके हसना से मुज़य्यन हो वह ज़्यादा कामिल है।

अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु: मुसलमानों में कौन अफ़ज़ल है?

सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम: जिस की ज़बान और हाथ से मुसलमान मेहफ़ूज़ रहें।

अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु: कौन सी हिजरत अफ़ज़ल है?

सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम: जिस ने बदी को तर्क कर दिया।

अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु: जो किताब अल्लाह तआला ने आप पर उतारी है उस में सब से अफ़ज़ल आयत कौन सी है?

सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम: आयतुल कुर्सी।

अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु: या रसूलल्लाह! अम्बिया की तादाद कितनी थी?

सरकार रहमते आलाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम: एक लाख चौबीस हज़ार।

अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु: इन में से रसूलों की तादाद कितनी थी?

सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम: तीन सौ तेरह।

अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु: या रसूलल्लाह! मुझ कुछ वसियत फ़रमाएं।

सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम: मैं तुम्हें अल्लाह तआला से डरने की वसियत करता हूँ। यह तक़वा तुम्हारे हालात को मुज़य्यन कर देगा।

अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु: या रसूलल्लाह! और वसियत फ़रमाएं।

सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम: ख़ामोशी इख़्तियार करो। ज़्यादा हंसने से परहेज़ करो, यह दिलों को मुर्दा कर देता है और चेहरे की

नूरानियत ख़त्म कर देता है।

अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु: या रसूलल्लाह! कुछ और वसियत फ़रमाएं।

सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमः मिस्कीनों से मुहब्बत और उन के पास बैठने को महबूब जानो।

अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु: और या रसूलल्लाह।

सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमः सच कहा करो चाहे कड़वा हो।

अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु: या रसूलल्लाह! और वसियत फ़रमाएं।

सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमः अल्लाह के मुआमले में किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करो। (अतलसे सीरते नबवी)

२) सरकार रहमते आलाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जब तुम से मेरी कोई हदीस बयान की जाए तो अगर वह कुरआने मजीद के मुआफ़िक़ हो क़बूल करलो वरना उसे छोड़ दो। (सबए सनाबिल शरीफ़)

३) सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरी उम्मत तिहत्तर फ़िर्क़ों पर तक़सीम हो जाएगी इनमें निजात पाने वाला सिर्फ़ एक गिरोह होगा। सहाबए किराम ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, वह कौन लोग हैं? फ़रमायाः एहले सुन्नत व जमाअत। (सबए सनाबिल शरीफ़)

४) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः किसी बीमारी का एक दूसरे को उड़ कर लगना और हाम्मह यानी उल्लू को मन्हूस समझना और यह अक़ीदा रखना कि वह जिस घर पर बैठ जाए वह वीरान हो जाता है या घर का कोई आदमी मर जाता है और सफ़र के महीने को मन्हूस जानना इन सब की कोई हक़ीक़त नहीं है। एक देहाती ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! तो फिर उन ऊंटों के बारे में क्या कहा जाएगा जो हिरन की तरह रेगिस्तान में दौड़ते फिरते हैं लेकिन जब कोई खुजली वाला ऊंट उन में मिल जाता है तो दूसरों को भी खुजली वाला बना देता है। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अच्छा यह बताओ कि पहले ऊंट को किस ने खुजली वाला बनाया। (बुख़ारी शरीफ़)

५) लुक़मान हकीम ने अपने बेटे से कहा थाः ऐ बेटे, लोगों से जिस बात का वादा किया गया था उसे बहुत दिन गुज़र गए लेकिन वह आख़िरत की तरफ़ तेज़ी से जा रहे हैं। जब से तुम्हारा वुजूद हुआ तुम दुनिया को पीछे छोड़ते जा रहे हो। वह घर जिस की तरफ़ तुम जा रहे हो उस घर से ज़्यादा

क़रीब है जिस से तुम निकल रहे हो। (रज़ीन)

६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब तुम किसी को यह कहते सुनो कि लोग तो बर्बाद हो गए तो समझ लो कि सब से ज़्यादा बर्बाद होने वाला वह ख़ुद है। (मुस्लिम, मुअत्ता, अबू दाऊद)

७) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः किब्र और नख़्वत करने वाले लोग क़ियामत के दिन च्यूंटियों की शक्ल में उठाए जाएंगे यानी जितने बड़े बनते थे उतने ही छोटे बना दिये जाएंगे। (बर्ज़न्जी)

८) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः औरत को उमूमन चार वुजूह से निकाह में लाया जाता है। माल, ख़ानदान, हुस्न और दीन। लिहाज़ा तुम दीन वाली औरत ही हासिल करो, अल्लाह तुम्हारा भला करे। (शैख़ैन, अबू दाऊद, निसाई)

९) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस ने शादी की उस ने आधा ईमान हासिल कर लिया। अब दुसरे आधे में उसे तक़्वल्लाह यानी अल्लाह का ख़ौफ़ इख़्तियार करना चाहिये। (औसत)

१०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तीन बातें ऐसी हैं जो अगर यक़ीन और हुस्ने नियत से की जाएं तो अल्लाह तआला पर यह हक़ हो जाता है कि उस की मदद फ़रमाए और उसमें बरकत अता फ़रमाए। (१) जो शख़्स यक़ीन और हुस्ने नियत के साथ किसी क़ैदा को आज़ाद कराने की कोशिश करे। (२) जो मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करे और (३) जो शादी करे। इन तीनों में से हर एक काम में मदद और बरकत देना अल्लाह तआला के ज़िम्मे एक ज़रूरी हक़ हो जाता है अगर हुस्ने नियत और यक़ीन मौजूद हो। (औसत सग़ीर)

११) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः निकाह अलल एलान किया करो और मसाजिद में किया करो और दफ़ के ज़रिये एलान किया करो। (तिर्मिज़ी) रज़ीन की रिवायत में यह भी है कि हलाल (निकाह) और हराम (ख़ुफ़िया आशनाई) के बीच फ़र्क़ ही एलान का है। (औसत)

१२) बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि एक अन्सारी के घर में एक लड़की की रुख़सती हुई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क्या खेल वग़ैरा तुम्हारे साथ नहीं? अन्सारी तो खेल को पसन्द करते हैं।

१३) सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछाः उस यतीमा का क्या हुआ? हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहाः हम ने उसे उस के शौहर के पास रुख़सत कर दिया। फ़रमायाः तुम ने कोई औरत उस के साथ न कर दी जो ज़रा गाती और दफ़ बजाती हुई साथ जाती। अर्ज़ किया:

ऐसे गीत के बोल क्या होने चाहियें? फ़रमायाः यह शेअर गाती हुई जातीः (तर्जमा) हम तुम्हारे घर आए, हम तुम्हारे दुवारे आए। तुम हम पर सलमाती भेजो और हम तुम पर। अगर लाल सोना न होता तो तुम्हारे देहात में कौन आता और अगर गन्दुमी रंग के गेहूं न होते तो तुम्हारी दोशीज़ाएं गुदाज़ न होतीं। (औसत)

१४) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अगर कोई शख़्स किसी औरत को निकाह का पैग़ाम दे और यह मुमकिन हो कि वह उस की कोई ऐसी चीज़ (हुस्न) देख ले जो अपने अन्दर अज़्दवाजी कशिश रखती हो तो उसे देख लेना चाहिये। एक शख़्स ने किसी अन्सारी औरत को निकाह का पैग़ाम दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछाः क्या तुम ने उसे देखा है? अर्ज़ कियाः नहीं। फ़रमायाः जाकर उसे देख लो क्योंकि बाज़ औक़ात अन्सारी की आँख में कुछ ख़राबी भी होती है। (अबू दाऊद, मुस्लिम, निसाई)

१५) सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बन्दे के लिये अल्लाह तआला के इल्म में कोई मर्तबा मुक़र्रर होता है और बन्दा आमाल के सबब उस रुत्बे को नहीं पहुंच पाता तो बदन या माल या औलाद में उसे आज़माता है फिर उसे सब्र देता है यहाँ तक कि उसे उसी रुत्बे को पहुंचा देता है जो अल्लाह के इल्म में है। (अहमद, अबू दाऊद)

१६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जब क़ियामत के दिन बला वालों को सवाब दिया जाएगा तो आफ़ियत वाले तमन्ना करेंगे कि काश दुनिया में कैंचियों से उन की खालें काटी जातीं। (तिर्मिज़ी)

१७) सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब मोमिन एक दस्तर ख़्वान पर एक साथ खाने के लिये बैठते हैं तो दो आदमियों का खाना तीन के लिये और तीन का चार के लिये काफ़ी हो जाता है।(अल हदीस)

१८) अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने एक शख़्स ने डकार ली। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अपनी डकार को रोको (यानी कम खाओ तो डकार नहीं आएगी) क्योंकि दुनिया में ज़्यादा खाने वाला हश्र के दिन ज़्यादा भूखा रहेगा। (तिर्मिज़ी)

१९) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः पेट से ज़्यादा बुरा कोई बर्तन नहीं है जो इन्सान भरता हो। आदम के बेटे को कमर सीधी रखने के लिये चन्द लुक़्मे काफ़ी हैं। अगर इस से ज़्यादा खाना ज़रूरी हो तो (अपने पेट का) तिहाई हिस्सा खाने से पुर करे और एक तिहाई हिस्सा पानी के लिये रखे और एक तिहाई साँस के लिये। (तिर्मिज़ी)

२०) सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब (दावत वग़ैरा के मौके पर) दस्तर ख़्वान बिछाया जाए तो कोई आदमी दस्तर ख़्वान उठाए जाने से पहले न उठ खड़ा हो बल्कि उस का पेट भर गया हो तब भी उस वक़्त तक हाथ न रोके जब तक तमाम लोग फ़ारिग़ न हो जाएं। इस तरह करने से उस का साथी शर्मिन्दा होता है और वह भी अपना हाथ खींच लेता है हालांकि बहुत मुमकिन है कि उसे अभी और खाने की ज़रूरत हो। (कुज़वैनी)

२१) हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हा सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई। उन के बदन पर बारीक कपड़े थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन की तरफ़ से मुंह फेर लिया और फ़रमायाः ऐ अस्मा, जब औरत जवान हो जाए तो उस के लिये चेहरे और हाथों के सिवा और कुछ नज़र आना दुरुस्त नहीं। (ऐसा कहते हुए चेहरे और हथेलियों को सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इशारे से बताया) (अबू दाऊद)

२२) एक सहाबीये रसूल एक बार सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उस वक़्त उन के जिस्म पर बहुत मामूली लिबास था। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछाः तुम्हारे पास कुछ माल भी है? उन्हों ने अर्ज़ कियाः हाँ। पूछाः किस तरह का माल है? अर्ज़ कियाः हर तरह का माल अल्लाह तआला ने मुझे दे रखा है। ऊंट, गाय, बकरी, घोड़े और ख़ुद्दाम वग़ैरा सब कुछ है। फ़रमायाः जब अल्लाह ने तुम्हें इतना कुछ दिया है तो उस के इनआम और इकराम का लिबास से भी कुछ इज़्हार होना चाहिये। (अल हदीस)

२३) कई सहाबियों के बेटे अपने बापों के हवाले से मरफ़ूअन रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो मुआहिदा करने वाले पर ज़ुल्म करे या मुआहिदे में कोई कमी पैदा करे या उस की बर्दाश्त की ताक़त से ज़्यादा बोझ उस पर डाले या उस की ख़ुश दिली के बिना उस से कुछ वुसूल करे तो क़ियामत के दिन मैं उस की तरफ़ से वकील होऊंगा। (अबू दाऊद)

२४) जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसैलमा कज़्ज़ाब का ख़त पढ़ा (सुना) तो क़ासिदों से पूछाः तुम दोनों का क्या अक़ीदा और ख़्याल है? बोलेः वही जो मुसैलमा का है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अगर क़ासिदों को क़त्ल किया जा सकता तो मैं तुम दोनों की गर्दनें उड़ा देता। (अबू दाऊद)

२५) अगर औरत किसी को मुसलमानों के मुक़ाबले में पनाह दे तो जाइज़ है। (अबू दाऊद)

२६) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ख़्वाब तीन तरह के होते हैंः (१) सालेह ख़्वाब तो अल्लाह तआला की तरफ़ से बशारत होती है। (२) ग़म अंगेज़ ख़्वाब जो शैतान की तरफ़ से होते हैं। (३) हदीसुन नफ़्स ख़्वाब जो अपने ख़्यालात का अक्स होता है। लिहाज़ा अगर कोई नागवार बात नज़र आए तो वह उठ कर नमाज़ अदा करे और उस का ज़िक्र किसी से न करे। (अबू दाऊद)

२७) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी हैः अच्छे ख़्वाब अल्लाह की जानिब से और परेशान करने वाले ख़्वाब शैतान की जानिब से होते हैं। पस जब तुम्हें नागवार ख़्वाब नज़र आए तो अपनी बाईं जानिब तीन बार थुक थुका दो और उस से अल्लाह की पनाह मांगो (यानी अऊज़ु बिल्लाह वग़ैरा पढ़ लो) तो वह ख़्वाब कोई नुक़सान नहीं पहुंचाएगा। (निसाई)

२८) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरे बाद नबुव्वत की कोई ख़ुसूसियत मुबश्शिरात के सिवा बाक़ी न रहेगा। सहाबा ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! यह मुबश्शिरात क्या चीज़ है? फ़रमायाः (सालेह) अच्छे ख़्वाब। (मालिक, अबू दाऊद, बुख़ारी)

२९) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमायाः मैं ने ख़्वाब देखा कि मेरे हुजरे में तीन चाँद गिरे हैं। मैं ने यह ख़्वाब अपने बाबाजान सय्यिदुना सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु से बयान किया तो वह ख़ामोश रहे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब वफ़ात पाकर मेरे हुजरे में दफ़न हुए तो मेरे बाबाजान ने फ़रमायाः उन तीन चाँदों में से एक यह है जो सब से बेहतर चाँद है। (इसके बाद दूसरे दो चाँद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और फिर हज़रत उमरे फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा दफ़न हुए।) (मालिक, कबीर)

३०) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआला ने बीमारी भी पैदा की है और दवा भी। हर मर्ज़ की दवा होती है लिहाज़ा दवाएं इस्तेमाल किया करो। हाँ हराम चीज़ों को दवा के तौर पर इस्तेमाल न करो। (अबू दाऊद)

३१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः दवा इस्तेमाल किया करो। अल्लाह तआला ने हर बीमारी के लिये दवा भी पैदा की है। सिर्फ़ एक बीमारी की दवा नहीं है और वह बीमारी है बुढ़ापा। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

३२) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेअदा बदन का

हौज़ है जिस से सैराब होने के लिये रगें मिली हुई हैं। अगर मेअदा दुरुस्त है तो यह रगें भी जामे सेहत पीकर वापस होती हैं वरना बीमारी के घूंट पीकर लौटती हैं। (औसत)

३३) अबू ख़ुज़ामह रज़ियल्लाहु अन्हु ने दरियाफ़्त किया: या रसूलल्लाह, हम लोग झाड़ फूंक भे करते हैं और दवाएं भी इस्तेमाल करते हैं और बचाव की दूसरी तदबीरें भी कर लेते हैं। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की राए में क्या यह चीज़ें कज़ा और कदर पर असर अन्दाज़ होती हैं? फ़रमाया: जो कुछ तुम करते हो यह भी कज़ा और कदर में शामिल है। (अबू दाऊद)

३४) हज़रत मुआविया बिन अल हिकम रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! मैं बहुत करीबी दौर में जाहिलियत से जुड़ा हुआ रहा हूँ और अब अल्लाह तआला ने मुझे इस्लाम से सरफ़राज़ किया है। हमारी कौम में बाज़ लोग काहिनों के पास जाते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम न जाओ। (मुस्लिम, अबू दाऊद, निसाई)

३५) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़हरीले गोश्त के असर से बचने के लिये अपने सरे मुबारक पर पछना लगवाया था। मुअम्मर का बयान है कि मैं ने भी किसी तरह के ज़हर के असर के बिना पछना लगवा लिया। नतीजा यह हुआ कि मेरी याद रखने की कुव्वत ख़त्म हो गई यहाँ तक कि नमाज़ में सूरए फ़ातिहा तक में भूल होने लगी। (अबू दाऊद)

३६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स इल्मे नुजूम से अल्लाह तआला के बताए हुए मकसद के अलावा फ़ायदा उठाता है वह गोया सहर (जादू) से फ़ायदा उठाता है। नुजूमी एक तरह का साहिर है और साहिर काफ़िर। (अबू दाऊद)

३७) सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं तकिया लगा कर नहीं खाता। (बुख़ारी व मुस्लिम) इस हदीस से यह साबित होता है कि लेट कर खाना या एक हाथ का सहारा ज़मीन पर लगा कर खाना, दीवार वग़ैरा से तकिया लगा कर खाना, पालती मार कर या खड़े होकर खाना, बिला उज़्र यह सब सूरतें मकरूह हैं और अगर कोई उज़्र हो तो माफ़ी है। (इब्ने माजा)

३८) ख़ज़ानतुर रिवायात में लिखा है कि एक बार सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चार ज़ानू बैठ कर खाना खा रहे थे तभी वही नाज़िल हुई: आजिज़ी से बैठ कर खाना खाओ। फिर आप ने कभी चार ज़ानू बैठ कर खाना नहीं खाया।

३९) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सरकार

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी किसी खाने को बुरा नहीं कहा और अगर भूख होती तो आप खा लेते वरना छोड़ देते। आप ने फ़रमाया: अपने खाने को अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ से गलाओ और खाकर (फ़ौरन) न सो जाया करो, इस से दिल सख़्त हो जाता है। (अल हदीस)

४०) हुज़ूर सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि बदतरीन इन्सान वह है जो अपने ग़ुलाम को मारे और अपने अतिय्ये को रोके रखे और तन्हा खाना खाए। और फ़रमाया: बेहतरीन खाना वह है जिस में ज़्यादा हाथ पड़ें। दीनी भाइयों के साथ खाना शिफ़ा है। (अल हदीस)

४१) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर दुनियादार आदमी के पास माल से भरे हुए दो जंगल हों तब भी वह तीसरे जंगल की आरज़ू करेगा और ऐसे लालची आदमी का पेट क़ब्र की मिट्टी के सिवा कोई और चीज़ नहीं भर सकती। (बुख़ारी व मुस्लिम)

४२) हज़रत कअब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि सरकार सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: दो भूखे भेड़िये जिन्हें कबरियों में छोड़ दिया जाए वह इतना नुक़सान नहीं पहुंचाते जितना कि माल और मन्सब का लालच इन्सान के दीन को नुक़सान पहुंचाता है। (तिर्मिज़ी)

४३) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: दिरहम और दीनार के बन्दे पर लअनत की गई है। (तिर्मिज़ी)

४४) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: आदमी बूढ़ा होता है और उस की दो बातें जवान रहती हैं। माल का लालच और लम्बी उम्र की आरज़ू। (बुख़ारी व मुस्लिम)

४५) हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने फ़रमाया: हिर्स की पैरवी हक़ से बेराह करती है। (तब्क़ातुल कुब्रा)

४६) हज़रत इमाम जअफ़रे सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: लालच इन्सान को ज़लील और उस के यक़ीन को ख़राब करती है। (तज़्किरतुल औलिया)

४७) हज़रत अबू सईद हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: हिर्स व लालच आलिम को बदनुमा बना देती है। (तब्क़ातुल कुब्रा) और आप से पूछा कि अस्ल दीन क्या है? फ़रमाया: वरअ। साइल ने सवाल किया: वरअ को तबाह कौन करता है? लालच। (तज़्किरतुल औलिया) आप ख़ुदा की क़सम खाकर कहते

को कि जिस शख़्स ने घर (माल) की हिफ़ाज़त की वो अल्लाह के [illegible]। (कन्ज़ुल उम्माल)

४८) हज़रत सबीत बिन शुरैत रज़ि. रसूलुल्लाह अलैहि से एक शख़्स ने कहा कि मुझे कुछ वसीयत फ़रमाइये। फ़रमाया: दिल को किसी का [illegible] और पेट को हराम का बर्तन न बना। (कन्ज़ुल उम्माल)

४९) हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स अल्लाह तआला पर तवक्कुल करे और तमाम कामों को रब के सिपुर्द कर दे तो अल्लाह तआला उस के लिये काफ़ी है। (इब्ने माजा)

५०) हज़रत उमरे फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ने नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि अगर तुम लोग अल्लाह तआला पर तवक्कुल कर लो जैसा कि तवक्कुल का हक़ है तो वह तुम्हें इस तरह रोज़ी देगा जिस तरह परिन्दों को देता है कि सुब्ह को भूखे निकलते हैं और शाम को पेट भरे वापस लौटते हैं। (तिर्मिज़ी)

५१) हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हलाल को अपने ऊपर हराम कर लेने और माल को ज़ाया कर देने का नाम तर्के दुनिया नहीं है बल्कि दुनिया से बे रग़बती यह है कि जो कुछ माल व दौलत तेरे हाथ में है उस पर भरोसा न कर बल्कि उस पर भरोसा कर जो अल्लाह के दस्ते क़ुदरत में है। (तिर्मिज़ी)

५२) हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मोमिन का मुआमला अजीब है कि उस के हर काम में भलाई है और यह शर्फ़ मोमिन के अलावा किसी और को हासिल नहीं है। अगर उसे ख़ुशी का मौक़ा नसीब हो और वह उस पर अल्लाह का शुक्र बजा लाए तो इस में उस के लिये बेहतरी है और अगर कभी मुसीबत पहुंचे और वह उस पर सब्र करे तो इस में उस के लिये बेहतरी है। (मुस्लिम शरीफ़)

५३) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला का क़ौल है कि तीन चीज़ों की मुहाफ़िज़त करने वाला मेरा सच्चा दोस्त और उन्हें ज़ाया करने वाला मेरा पक्का दुश्मन है। वह तीन चीज़ें हैं: नमाज़, रोज़ा और नापाकी का ग़ुस्ल। (तोहफ़तुल वाइज़ीन)

५४) हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: आदमी की नेक बख़्ती यह है कि जो कुछ अल्लाह तआला ने उस के लिये मुक़द्दर कर दिया है उस पर राज़ी रहे और आदमी

की बदबख़्ती यह है कि वह अल्लाह तआला से भलाई मांगना छोड़ दे और आदमी की बदबख़्ती यह भी है कि अल्लाह तआला ने उस के बारे में जो कुछ मुक़द्दर कर दिया है वह उस पर आज़ुर्दा हो। (अहमद, तिर्मिज़ी)

५५) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमायाः अगर तू इतनी नमाज़ पढ़ ले कि तेरी पीठ झुक जाए और इस क़दर रोज़े रखे कि बाल की तरह बारीक और दुबला हो जाए तो जब तक हराम से परहेज़ न करेगा यह रोज़ा नमाज़ कुछ मुफ़ीद न होगा और न ही क़ुबूल होगा। (अल अतिय्यतुन नूरिया फ़िल अहादीसिन नबविया लेखक अल्लामा शबबीर अहमद चिश्ती)

५६) हज़रत यहया बिन मआज़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमायाः इबादत ख़ज़ानए ख़ुदा है और दुआ उस की कुन्जी है और लुक़मए हलाल इस कुन्जी के दन्दाने हैं। (अल अतिय्यतुन नूरिया फ़िल अहादीसिन नबविया लेखक अल्लामा शब्बीर अहमद चिश्ती)

५७) हज़रत सहल तस्तरी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमायाः कोई शख़्स ईमान की हक़ीक़त को नहीं पहुंच सकता मगर चार चीज़ों की बदौलतः (१) सब फ़राइज़ सुन्नत की रिआयत के साथ अदा करे। (२) हलाल लुक़मा ज़ुहद के साथ खाए। (३) ज़ाहिर और बातिन दोनों हालतों में बुरे काम छोड़ दे। (४) मरते दम तक इसी रविश पर क़ाइम रहे। (अल अतिय्यतुन नूरिया फ़िल अहादीसिन नबविया)

५८) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैंः शुबह का एक दिरहम अस्ल मालिक को लौटा देना लाख दिरहम सदक़ा देने से ज़्यादा मुझे पसन्दीदा है। (अल अतिय्यतुन नूरिया फ़िल अहादीसिन नबविया)

५९) हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मैं ने तुम लोगों को क़ब्रों की ज़ियारत से रोका था तो अब मैं तुम्हें इजाज़त देता हूँ कि ज़ियारत किया करो इस लिये कि क़ब्रों की ज़ियारत करना दुनिया से बेज़ार करता है और आख़िरत की याद दिलाता है। (इब्ने माजा)

६०) हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि जब बग़दाद में तशरीफ़ रखते थे तो फ़रमायाः मैं हज़रत इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि से बरकत लेता हूँ, उन की क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत करता हूँ और जब मुझे कोई हाजत पेश आती है तो दो रकअत नमाज़ पढ़ कर उन की क़ब्र के पास जाता हूँ और वहाँ अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ तो फ़ौरन हाजत रवाई हो जाती है। (अल ख़ैरातुल हसनात, उर्दू अनुवाद)

६१) हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते

हैं: जब तुम अपने उमूर में हैरान और परेशान हो जाओ तो असहाबे कुबूर से मदद तलब करो। (अन्फ़ासुल आरिफ़ीन)

६२) हज़रत ज़ैद बिन अरकम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो अपनी मूंछ न काटे वह हम में से नहीं यानी हमारे तरीक़े के ख़िलाफ़ हैं (तिर्मिज़ी, निसाई)

६३) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मूंछें कतरवाओ और दाढ़ियां बढ़ाओ इस तरह मजूसियों की मुख़ालिफ़त करो। (मुस्लिम)

६४) हुज़ूर सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब किसी आदमी की मूंछें बढ़ी हुई देखते तो कैंची और मिस्वाक लेते, फिर मिस्वाक मूंछों पर रख कर बाक़ी काट देते। (नुसरतुल मुल्हिम फी सुबुलतिल मुस्लिम)

६५) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने बुख़ार का ज़िक्र किया गया तो एक शख़्स ने बुख़ार को बुरा कहा। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बुख़ार को बुरा मत कहो इस लिये कि वह मोमिन को गुनाहों से इस तरह पाक करता है जैसे आग लोहे के मैल को पाक करती है। (मिश्कात व इब्ने माजा)

६६) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूरए निसा की तफ़सीर में फ़रमायाः शहद की मक्खी के अलावा बाक़ी मक्खियां जहन्नम में दाख़िल होंगी। आप का इरशाद है कि मोमिन की मिसाल शहद की मक्खी की तरह है। वह अपने छत्ते से निकलती है फिर वह पाकीज़ा चीज़ें खाती है फिर खाया हुआ गिरा देती है (यानी बीट वग़ैरा कर देती है), न किसी को नुक़सान पहुंचाती है न तोड़ फोड़ करती है। पस मोमिन भी अपने काम से काम रखता है और किसी को अज़ियत में नहीं डालता और हलाल रिज़्क खाता है। मोमिन की मिसाल सोने के उस सुर्ख़ टुकड़े की तरह है जिसे आग में डाला जाए लेकिन न उस का रंग बदले न उस के वज़न में कमी हो। पस मोमिन भी उसी तरह है। (मुस्तदरक)

६७) हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः शहद हर बीमारी के लिये शिफ़ा है और कुरआन सीनों में पाई जाने वाली हर बीमारी के लिये शिफ़ा है। पस तुम्हारे लिये ज़रूरी है कि कुरआन और शहद से शिफ़ा हासिल करो। (इब्ने माजा, हाकिम)

६८) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स हर महीने में तीन दिन सुब्ह नहार मुंह शहद चाट लिया करे तो उसे कोई बड़ी बीमारी लाहिक़ नहीं होगी। (इब्ने माजा)

६९) मक्खियों की जिस जमाअत से शहद की मक्खी का तअल्लुक़ है उस की बीस हज़ार क़िस्में हैं उन में चार ख़ास शहद की मक्खियाँ हैं जिन के साइंसी नाम (१) ऐप्स सीराना (२) ऐप्स मेलीफ़ेरा (३) ऐप्स डोरसेटा और (४) एप्स फ़लोरिया। इन में ऐप्स सीराना और एप्स मेलीफ़ेरा ऐसी शहद की मक्खियाँ हैं जिन्हें बोक्स में पाल कर रख जा सकता है और दीगर दो क़िस्में खुले आसमान के नीचे छत्ता बनाती हैं। (शहद की मक्खी, क़ुरआन, हदीस और साइन्स, मक़ाला प्रिन्सिपल मेहमूद परवेज़ अन्सारी)

७०) हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम फ़रमाते हैं: तुम लोगों में इस तरह रहो जैसे परिन्दों में शहद की मक्खी रहती है। और फ़रमाते हैं: सब से बेहतर खाने की चीज़ शहद है जो एक कीड़े (शहद की मक्खी) का लुआब है। मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि ने शहद की मक्खी के क़त्ल को हराम क़रार दिया है। सही क़ौल के मुताबिक़ इस का खाना हराम है। नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस के क़त्ल से मना फ़रमाया है। इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक शहद की मक्खी को बेचना जाइज़ नहीं है जब कि इमामे शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़्दीक बेच सकते हैं। बशर्ते कि ख़रीदार को मक्खियों की तादाद का इल्म हो और छत्ते के साथ बेचा जाए। (शहद की मक्खी, क़ुरआन, हदीस और साइन्स, मेहमूद परवेज़ अन्सारी)

७१) नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला की तमाम व कमाल रहमत का इल्म अगर काफ़िर को हो जाए तो वह जन्नत से कभी ना उम्मीद न हो और उस के कुल अज़ाब का इल्म अगर मोमिन को हो जाए तो वह कभी आग से अपने आप को मेहफ़ूज़ न समझे। (शैख़ैन, तिर्मिज़ी)

७२) एक बार हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमरे फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए और तीन बार आवाज़ देकर अन्दर आने की इजाज़त चाही। हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु किसी काम में मसरूफ़ थे इस लिये जवाब न दे सके। जब अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु वापस होने लगे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर आए और फ़रमाया: वापस क्यों जा रहे हो? उन्हों ने कहा: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि तीन बार इजाज़त तलब करने के बाद जवाब न मिले तो वापस हो जाओ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: इस हदीस के लिये कोई गवाह लाओ वरना तुम्हें इबरत बनाकर रख दूंगा। अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु या उबई बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु ने गवाही दी तो अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु की जान छूटी। बाज़ रिवायतों में आया है कि

हज़रत उबई बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा। ऐ इब्ने ख़त्ताब, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्हाब के लिये अज़ाबे जान मत बनो। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः मैं तुम पर ग़लत हदीस बयान करने का इत्तिहाम नहीं लगाता। मुझे यह डर रहता है कि लोग सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ झूटी बातें मन्सूब न करने लगें। (निसाई)

७३) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली चीज़ (मौत) को अकसर व बेशतर याद किया करो। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से ही मरवी है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम में कोई मौत की आरज़ू न करे (इस लिये कि) वह या तो नेकूकार होगा तो मुमकिन है कि उस के नेक अमल में ज़ियादती हो जाए और अगर बदकार होगा तो हो सकता है कि आइन्दा तौबा करके अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी हासिल कर ले। (बुख़ारी शरीफ़)

७४) हज़रत मुआविया बिन अल हिकम रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: मेरी एक लौंडी थी जो मेरे गल्ले को उहद और जुवानिया की तरफ़ ले जाकर चराया करती थी। एक दिन ऐसा हुआ कि वह बाहर निकली और एक भेड़िया हमारे ग़ल्ले में से एक बकरी ले भागा। मैं भी आख़िर इन्सान हूँ और इन्सानों ही की तरह सदमा भी होता है। मैं ने लौंडी को सिर्फ़ एक थप्पड़ मार दिया। फिर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। चूंकि यह हरकत मुझ पर बहुत शाक़ थी, मैं ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मैं इसे आज़ाद न कर दूं? फ़रमायाः उसे यहाँ ले आओ। चुनान्चे मैं ले आया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस से पूछाः अल्लाह कहाँ है? उस ने कहा। आसमान में। फिर पूछाः मैं कौन हूँ? वह बोलीः अल्लाह के रसूलः सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः यह ईमान वाली है इसे आज़ाद कर दो। (मस्लिम, अबू दाऊद, निसाई)

७५) हज़रत मुसअब बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! आज़माइशों में सख़्ती किस इन्सान के साथ होती है। फ़रमायाः अम्बिया के साथ फिर जो उन से मुशाबह हो, फिर जो उन से निस्बतन कम मुशाबह हो। हर शख़्स की आज़माइश उस के दीन के मुताबिक़ होती है। अगर वह अपने दीन में पक्का हो तो वैसी ही सख़्त उस की आज़माइश भी होगी और अगर उस के दीन में ढीला पन है तो उसी के मुताबिक़ अल्लाह उस की आज़माइश

करेगा। बन्दे के साथ आज़माइशों का यह सिलसिला इसी तरह काइम रहता है यहाँ तक कि वह ज़मीन पर इस तरह चलता फिरता है कि उस पर कोई गुनाह का बोझ नहीं होता। (तिर्मिज़ी)

७६) जहाज़-रानी की शुरूआत अमीरुल मोमिनीन हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में हुई। (तफ़सीरे नईमी)

७७) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हलाल की कमाई से शहद ख़रीद कर बारिश के पानी में मिला कर पीने से हर बीमारी से शिफ़ा है। (कन्ज़ुल अम्माल)

७८) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: पहलू के दर्द का सबब गुर्दे की नस है। जब वह हरकत करती है तो इन्सान को तकलीफ़ होती है और इस का इलाज गर्म पानी और शहद से करो। (मुस्तदरक)

७९) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: शिफ़ा तीन चीज़ों में है: शहद पीने में, लगाने में और आग से दाग़ने में। मगर मैं अपनी उम्मत को दाग़ने से मना करता हूँ। (बुख़ारी शरीफ़)

८०) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स हर माह तीन दिन सुब्ह शहद चाटेगा तो उसे कोई बड़ी बीमारी नहीं लगेगी। (इब्ने माजा)

८१) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बुरी नज़र, डंक मारने और पहलू के फोड़े के लिये झाड़ फूंक की रुख़सत दी है। (सही मुस्लिम)
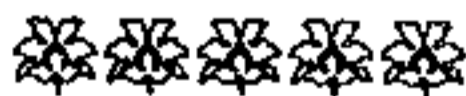
अहम हवाले

१) कन्ज़ुल ईमान उर्दू अनुवाद कुरआने मजीद - आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ बरकाती मुहद्दिसे बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि

२) ख़ज़ाइनुल इरफ़ान हिशिया कन्ज़ुल ईमान - सद्रुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि अलैहि।

३) सही बुख़ारी, जिल्दः १-६, अंग्रेज़ी अनुवाद डॉकटर मुहम्मद मुहसिन ख़ाँ।

४) सही मुस्लिम, जिल्दः १ -४, अंग्रेज़ी अनुवाद अब्दुल हमीद सिद्दीकी।

५) सुनने अबू दाऊद, जिल्दः १ - ३, अबू दाऊद अल्लामा सुलैमान इब्ने अअद सिजिस्तानी अंग्रेज़ी अनुवाद अहमद हसन।

६) सुनने निसाई शरीफ़, जिल्दः १ - ३, अनुवाद वहीदुज़्ज़माँ।

७) सुनने इब्ने माजा, जिल्दः १ - २, अनुवाद अब्दुल हकीम ख़ाँ अख़्तर शाहजहाँपूरी रहमतुल्लाहि अलैहि।

८) मुअत्ता इमाम मालिक, अनुवाद मुहम्मद रहीमुद्दीन।

९) मिश्कातुल मसाबीह, जिल्दः १ - ४, अंग्रेज़ी अनुवाद फ़ज़लुल करीम।

१०) सीरते रसूले अरबी : अल्लामा नूर बख़्श तवक्कुली

११) सीरते इब्ने हिशाम कामिल (उर्दू अनुवाद) अल्लामा अबू मुहम्मद अब्दुल मलिक बिन हिशाम

१२) तफ़सीरे नईमी - मुफ़्ती अहमद यार ख़ाँ रहमतुल्लाहि अलैहि

१३) मिन्हाजुस सालिकीन अनुवाद तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन - फ़कीह अबुल्लैस समरकन्दी रहमतुल्लाहि अलैहि।

१४) रिसालए कुशैरिया : इमाम अबुल क़ासिम अब्दुल करीम बिन हवाज़िन कुशैरी रहमतुल्लाहि अलैहि

१५) मदारिजुन नबुव्वत - अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि।

१६) सबए सनाबिल शरीफ़ - मीर अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाहि अलैहि।

१७) आदाबुस्सालिकीन - सय्यिदुना आले अहमद अच्छे मियाँ मारहरवी रहमतुल्लाहि अलैहि।

१८) जाअल हक़ - मुफ़्ती अहमद यार ख़ाँ रहमतुल्लाहि अलैहि।

१९) मुकाशिफ़तुल क़ुलूब - इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि।

२०) तज़्किरए ग़ौसिया - शैख़ ग़ौसि अली शाह क़लन्दर पानीपती रहमतुल्लाहि अलैहि

२१) तज़्किरतुल औलिया - शैख़ फरीदुद्दीन अत्तार रहमतुल्लाहि अलैहि

२२) सिराजुल अवारिफ़ फ़िल वसाया वल मआरिफ़ - सय्यिदुना अबुल हुसैन अहमदे नूरी मियाँ साहब रहमतुल्लाहि अलैहि

२३) तारीख़े जदवलिया

२४) नुज़्हतुल क़ारी शरहे बुख़ारी - मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ साहब अमजदी बरकाती रहमतुल्लाहि अलैहि

२५) नुज़्हतुल मजालिस-अल्लामा अब्दुर रहमान सफ़वी शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि

२६) बहारे शरीअत - सद्रुश शरीआ अल्लामा मुहम्मद अमजद अली साहब रहमतुल्लाहि अलैहि।

२७) तोहफ़तुल वाइज़ीन - मुहम्मद अब्दुल अहद रहमतुल्लाहि अलैहि

२८) गुल्दस्तए तरीक़त (तफ़सीरे सूरए यूसुफ़) सय्यिद अब्दुल्लाह शाह साहब नक़्श बन्दी रहमतुल्लाहि अलैहि

२९) अस्सीरतुन नबविया- अल्लामा अहमद ज़ैनी दिहलान रहमतुल्लाहि अलैहि

३०) ज़ियाउन्नबी, जिल्दः१-४, पीर करम अली शाह अज़हरी रहमतुल्लाहि अलैहि

३१) जज़्बुल क़ुलूब - शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि

३२)) हदीसे दिफ़ाअ - मेजर जनरल मुहम्मद अकबर ख़ाँ

३३) हिन्दुस्तानी मुफ़स्सिरीन और उनकी अरबी तफ़सीरें - डॉकटर सालिम क़िदवाई

३४) सय्यारा डाइजेस्ट, क़ुरआन नम्बर।

३५) सय्यारा डाइजेस्ट, रसूलुल्लाह नम्बर।

३६) उस्वए सहाबा - अब्दुस्सलाम नदवी।

३७) उस्वए रसूल और तज़्कियए नफ़्स - रियाज़ अहमद ख़ाँ।

३८) इस्तिक़ामत डाइजेस्ट, कानपुर - अक़ाइद नम्बर।

३९) इस्तिक़ामत डाइजेस्ट, कानपुर - मुहम्मद रसूले अरबी नम्बर।

४०) इस्लाम में हलाल और हराम - यूसुफ़ करज़ावी।

४१) तर्बईदुल लहफ़ान मिन मकाइदिश शैतान- सूफ़ी शब्बीर अहमद चिश्ती

४२) तफ़सीरे अज़ीज़ी-शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि

४३) कससुल अम्बिया - अल्लामा हबीब अहमद

४४) हयाते इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि - मुहम्मद मुजाहिद हुसैन हबीबी

४५) सीरतुल मुस्तफ़ा- अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी साहब रहमतुल्लाहि अलैहि

४६) कानूने शरीअत- काज़ी शम्सुद्दीन अहमद जौनपूरी रज़वी
४७) दअवतुर रुसुल इलल्लाह - मुहम्मद अहमद अदवी
४८) अतलसुल कुरआन, उर्दू अनुवाद, दक्तूर शौकी अबू ख़लील
४६) अतलसे सीरते नबवी, उर्दू अनुवाद, दक्तूर शौकी अबू ख़लील
५०) मोजमुल बल्दान- याकूत हमवी
५१) अत्तबरी
५२) ज़ुरकानी- मुहम्मद बिन हुसैन बिन मसऊद बग़वी
५३) दलाइलुन नबुव्वत- अबू बक्र अल बेहकी
५४) अश्शर्फुल मुअबद लि आले मुहम्मद- अल्लामा यूसुफ बिन इस्माईल नबहानी
५५) उर्दू दायरए मआरिफे इस्लामिया।
५६) अशरए मुबश्शिरा - बशीर साजिद।
५७) ख़ैरुल बशर के चालीस जाँनिसार - तालिब हाशिमी
५८) सफ्तुल सफ्वत
५६) रौज़ुर रय्याहीन
६०) अलइहया उलूमुद्दीन - इमाम ग़ज़ाली
६१) फ़तावल इस्लाम - सवाल व जवाब
६२) रियाज़ुस सालिहीन
६३) अलफ़र्ज बअदल बशारत - हज़रत अबू बक्र इब्ने अबिद्दुनिया
६४) इम्ताउल अस्माअ - अल्लामा मक्रेज़ी
६५) सुबुलुल हुदा वर्रिशाद - अल्लामा मुहम्मद बिन यूसुफ अश्शामी
६६) ज़ियाउल कुरआन
६७) तफ्सीरे सावी
६८) अख़बारुल अख़ियार
६६) फ़तावा करामाते ग़ौसिया
७०) तफ्रीहुल ख़्वातिर
७१) सैरुल औलिया - ख़्वाजा अमीर ख़ूर्द करमानी निज़ामी
७२) अनवारुल हदीस
७३) अवारिफ़ुल मआरिफ
७४) अहकामुस सियाम वलएतिकाफ़ - सूफ़ी शब्बीर अहमद चिश्ती
७५) गुनियतुत तालिबीन
७६) नफ़्हातुल इन्स

७७) तब्क़ाते कुब्रा

७८) मश्अलतुल इरशाद इलल हुकूकुल इबाद - इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि

७९) अलअतिय्यतुन नूरिया फी अहादिसिन नबविया-सूफी शब्बीर अहमद चिश्ती

८०) अनफ़ासुल आरिफीन

८१) शहद की मक्खी, कुरआन, हदीस और साइन्स - प्रिन्सिपल मेहमूद परवेज़ अन्सारी

८२) ख़साइसे कुब्रा - अल्लामा जलालुद्दीन सियूती रहमतुल्लाहि अलैहि

८३) आँ हुज़ूर के नक़्शे क़दम पर - प्रोफेसर अब्दुर रहमान अब्द

८४) मक़्तले इमाम अबू इस्हाक अस्फ़रायनी

८५) नसीमुल फ़िक्र फी बयानुज़्ज़िक्र - सूफी शब्बीर अहमद चिश्ती

८६) बहजतुल मजालिस - इब्ने अब्द रब्बह

८७) तवारीख़े हबीबे इलाहा - मुफ़्ती इनायत अहमद काकौरवी

८८) तारीख़े अर्ज़ु कुरआन - सय्यिद सुलैमान नदवी

८९) ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब- अल्लामा मुहम्मद इब्ने अब्दु बाक़ी ज़ुरक़ानी मालिकी

९०) मवाहिबे लदुनिया - अल्लामा कुस्तलानी

९१) रहमते दारैन के सौ शेदाई - तालिब हाशिमी

इन के अलावा वह बेशुमार रिसाले और किताबें जो मैं ने इस किताब को तय्यार करने के सिलसिले में पिछले तीस चालीस बरसों में पढ़ीं मगर जिन के नाम इस वक़्त मेरे ज़हन में नहीं हैं।